भ्रवस्थान श्रीमन्त सेठ विताससय रुक्ष्मीचन्द्र, जन-साहित्योद्धारसम्बन्ध्यापीयय अस्तरनी (जसर)



मुहर —

टी एव पारीउ, ४४७७,

स्वस्द्रक प्रिंतिम प्रम, असम्मन् (बगर)

### THE

# **ŞAŢKHAŅ**DĀGAMA

OF

## PUSPADANTA AND BHŪTABALI

זוררו ווי

THE COMMINTALY DRAVAGE OF STREETS

VOL IV

## KŞETRA-SPARSANA-KĀLĀNUGAMA

I'dite!

with introduction translation not a unit in lexes

BY

HIRALAL JAIN WA II B

C. P Inducational Service King I Iwart Colly America

ASSISTED IS

I an lit Hiralat Selbanta Stant i Sis at etta

Hith the contra on of

la it Devakinandana Silhana Sik tri Dr A N Urative

15 41

Shrimanta Seth Shital rai Laxmichandra

A A I I have

AMRAOTI I \*

1942

Price upor ten en r

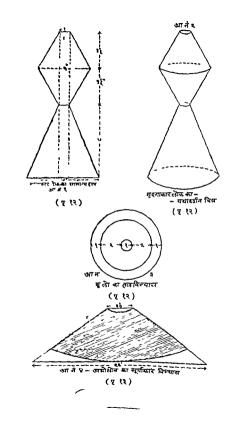
Int' the byChrimant Cott Chitannia Laximoanina,
Is abt in 11' fora Fi the thore,
AFPAOTI (Boor)



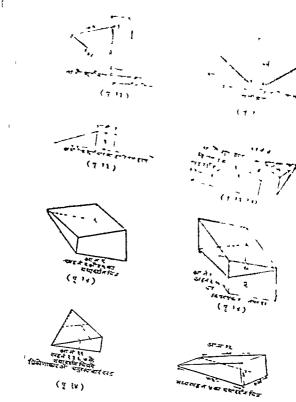
Printed by—
T Bi Patil, Manager,

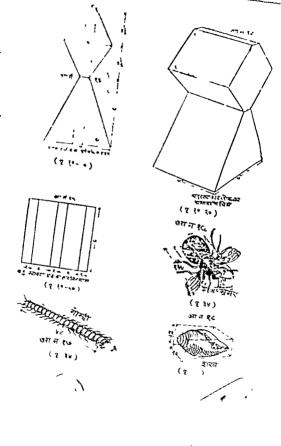
Fasanati I sinting From,

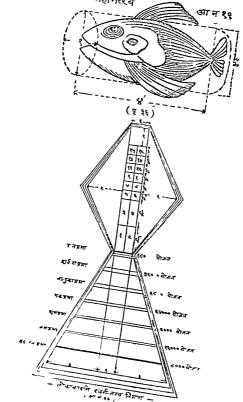
AMRAOTI ( Borar )



<sub>e</sub> )







# विपय सूची

		प्रष्ठ	1		48		
	शक् क्थन	<b>₹</b> -₽		२			
	<b>`,</b>		1	मृल, अनुवाद और टिप्पण	1-855		
	`		Ì	े क्षेत्रा <u>न</u> ुगम	१-१३८		
	प्रस्तावना		1	स्परीनानुगम	१३९-३००		
	Introduction	1- v		बालानुगम	388-866		
	Mathematics of Dhavala 1- ( with index )	-xxiv		ą			
	(by Dr A N Singh)			परिशिष्ट	१–४२		
ł	मिद्दात और उनके आययनका		1	क्षेत्रप्ररूपणा सूत्रपाठ	*		
	अनिवार	₹		स्पर्शनप्ररूपणा सूत्रपाठ	4		
₹	राजा-समाधान	१६		बालप्रस्तपणा सूत्रपाठ	<b>१</b> ३		
ł	निपय-परिचय	२३	3	अप्रतरण-गाथाम् ची	२६		
į	विषय-सूचा	₹0	ą	न्यायोक्तियां	२७		
١	শুদ্ধিদন	49	8	प्रयोक्षेग्व	२८		
i	भेत्र <del>-र</del> ागन-कार्यमाणदगर चार्ट २९	રુ અ આ	ч	पारिभाषिक शब्दसूची	₹०-8२		
चित्र सुची							

ŧ	मृदगातार लोकका सामा व दश्य भुान पृष्ठ	1	į	यष्ट्र म	
₹	मृदगावार टे। उसा यपादरीन चित्र 🚜	]₹₹	साटन १, ३, ६ व ७ व ययादरा-	1	
₹	मृदगात्रार टाउँ रा तंत्रीन्यास "	}	चित्रमें त्रिकोणाकार और चतुग्याकार		
	अग्रेडोररा मूर्पारार रियास "	Į –	खड	"	
4	अधालाक मृपाकार विवासका वचादर्शन	12	मध्यस्वद्र न ४ या यथादरीन चित्र	,,	
	चित्र "	!₹	चतुरसाकार नीकका पूर्वपश्चिम दृश्य	**	
ξ	अधोराप्र सूपामार वि वासमा (समीहत)	₹¥	,, ,, ययारशन चित्र	,,	
	वित्र ,,	१५	<sub>!! ॥</sub> यात7ियान	n	
ঙ	,, ,, ,, का उपरितन दृश्य	₹ Ę	भ्रमर चित्र	,,	
ረ	अंग्रेटोक स्पाकार कियासका खड	\$ 0	गाम्टी 🕠	#	
	दशन चित्र "	१८	राख "	,,	
	खडन २ और ५ या यथादशन चित्र "		महामस्य "	,	
٥	संदर्भ २ और ५ का एक्पर एक स्व	₹०	राक्रकारामें स्वग-नरक विभाग	n	
	नेपर दृश्य ।				



## माक् कथक

पद्भागमारा तीसम भाग अवार १९४१ में प्रशक्ति हुआ था। यर प्रम हाने होने उसम चैचा भार भी तैवार होतर पारतीरे हायमें पटन रहा है। इन सिद्धान्त प्राचीना समाजमें आहर और प्रचार देगारर हमें अपने ध्येपनी सफलनाता सनोप है। विद्वसमाज अब इस आर निता। उत्तम अह तपर हो उटा है इसमा आभाव इसीसे निया जा सम्ता है कि इसी अन्य पानमें हमें इस सिद्धानोद्धारने वार्थमें परिनाचार्यस्य भगारक चारुसानिनी खामी तथा पर्चोसी ष्ट्रपाने मूनविना संस्थातका पूर्ण सन्योग प्राप्त हो गया है, निमम अब सिद्धानसपरा मून पाठ यहानी तारपरीय प्रतियोंके मिरान परते ही निधन किया जाना है। इस कारण अब इतर प्रति-योंके मिला प्रकाशित यरनेत्री आवस्यस्ता नहीं रही। इसी बीच दितीय सिद्धान्तमय ययापणासूत और उसका दौरा। जय-रापके प्रकारानके रियो भी। एक नहीं अनेक सम्याए उसका हो उसी हैं, आर <sup>के</sup>नसफ, र रस, ने उस ओर बार्य प्रारंभ भी बर दिया है। उप शोलापर मर्गाय सेट सम्मी मारामजी दोर्यात साथार्गे जो सिद्धा ताद्धारमात्री पड था, उसरी उनेर सुवाय उत्तरितास सठ गुणबस्दर्जान सुत्यपस्या वर्षे महाप्रगार निमित्त एक समिति सुमगठित वर दी है। यही नहीं, थीयक मनवानी हेगडने तीना सिद्धातोंने मारपाठनो ताडपत्रीय प्रतिपत्रि अनुसार प्रकारित धगनरी भी एक स्वीम प्रस्तुन वो है। साहित्याद्वारक महत्त्व और उमरी अध्ययनाका अनुमय ष्ट्रंभे शालपुरम् अत्यन्त धर्मानुगणी मन्नचारी जीवगण गीतमचद्दणी दोशीने गर्मार विचार और विद्यानमार प्रधात ' जन सन्वति साक्षर सर' या आयोगन रिया है, और उसरे जिप अपनी अस्स तीम हजारना दान भी द दिया है। इस सनना नेन बहत निमार आर सर्जी पानी है. निसरी पूर्नि धार धार ही हो सरती है तथा समाजन सहयागपर अन्तरिन है। निच उसके अनान जो एक 'नीकान केन अध्याला' के सावालनका निध्य किया गया था, उसका मेरे मियमित्र टॉ.० आदिनाय भीननाय उपात्याय और भेरे सम्पादनरामें कार्य प्रारंभ होगण है, और टस माणवा प्रथम पुष्प, उत्त मिद्धानप्रयोगी हो वादिवा प्राचीन प्रामाणिक प्रथ 'निणयाणावि ' (निगमप्रनित्त ) गुरणानित है । इस प्रमार या सिद्धालोद्धारमा अयात महागूण कार्य अर अनेक य ग्रेंड्राम सम्हान ना रहा है, निससे हमें अब अपना बोन कुछ हत्या हुआ प्रतीन हाने ट्या है। स्मरी हमें प्रसनना है।

तिन्त गतिये साथ गति-अवश्मेषे प्रयासिक भा संस्था अभार नहीं है। प्रश्नीत्व सिद्धान्त मत्यादी धर्मित बासहिद्धिये पत्नी भाग्ने उपयामितारा अनुसर परने पत्न दी मिन्टियर वैत वर्ष गत्य सातिने अवसी गत्न वेदन्त भाग्नेसिक्स तह प्रयास भाग्न सन्द्रमण्यात्र नार्यो सेहा हाम्बी पूर्व गत्न वात्रावसी सीमिटिन परना आवण्य समार्थ हस्सा औरस्था प्रयास पर्या पर्याप्त विद्योत पर्याप्त किता हिन्तु, मोरेसा चैन सिद्धान विद्याद्यस्त स्थान अस्पर प्रसानामार्थी --- नं- - पूर्विक्त कि है कि गुल्ये के बक्त मान है कि गुल्य الما الله المراوع المر म --- म का का का ना ना मानिक में बारी है। यो का का का ना मानिक में र गान्य ना हो होता भागा पार्ट पर अरु शिक्ते प्रमुख से प्रवेशकी आता मा -- --- कि -- लाके कि दा प्राचीत प्रमान्तिये क्षेत्र परान्त ा ८० - र े रहि । उद्यारी स्परीत्रशासमा वारे। हमी तार कर जा जा जाता है। कि साथ अस्ति अस्ति अस्ति विकास अस्ति विकास अस्ति विकास अस्ति विकास अस्ति विकास अस्ति विकास ें के के एक के उत्तरण पर प्रतिषक्ष परी किला, किंचे र र र र प्रार्थिता के सपति व्यक्तियो - । ए स्सेंद्रग्रहाही, और उटले र १६ र्ष**्तिमारे, व स्थापन**ि सिंदा रूर र 📑 र र भ तत्र ,ता है सिल्हा सपा समें पडी - व बर लव्यक रण ह विकास प्रतिक्या, सा र अस्य सर्वरच्यात्न मृद्यात् पुर 

े ८० ब्रास्त न संयम विद्रालय किये ः हर च च रहार वर्ग प्राप्त TO THE PLE PLET A FORT en e traifielent m 132 AFT 4 11 H ( 137 B) 11 ml 7 m - 11 to # 7 81

र कर्तु । वस्त्रासम्बद्धाः स्वर

F \* 5 # # 5 # 1 \$0 11 1 1 KIT 15 17 tor treather प्रमुख काणी विद्वारणी मीन प्रमामाण्य भाई है—कात, स्वर्गन की बहान होंग सामा है, १८५ घर १८२ गुर पत्र जात है। इसने दोसमें समझ स्थान हैं है, १८४ वर ११५ पत्र नासकात जात है। दिया अनुस्तमें अपने स्वर स्वर्गने कि एक मार्च है। १८५ अर ८६ गुर के लेंद्र इस मार्च के हिन्दा अनुस्तमें अपने स्वर्गने हैं। इस सम्बद्ध है। १९५ अर २७६ है। इस सम्बद्ध मार्च के पत्र मार्च हैं। इस सम्बद्ध मार्च के पत्र मार्च हैं। इस सम्बद्ध मार्च के पत्र स्वर्गने हैं। इस सम्बद्ध मार्च के पत्र स्वर्गने हैं। स्वर्गन

हा भव रिनिज्ञों विधित् सम्मा व सम्माने हमें पुत हमार वाहेज में प्राप्त कामान सदस्य पार्थिद हो। विश्व प्रियम् पार्थित पार्थित पार्थित स्वाप्त स्वित्य प्राप्त स्वत्य प्राप्त कामान में निर्माण प्राप्त प्राप्त स्वत्य सम्मान स्वाप्त स्वित्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वत्य सम्मान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वत्य सम्मान स्वाप्त स्वाप्त स्वत्य सम्मान स्वाप्त स्वत्य सम्मान स्वाप्त स्वत्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वत्य स्वयः स्

सन भागरी प्रस्तावनारे भीना हमने एवं पश्चानसभासनशा लग्ध भी राग पा निसमें इस समय त्रवं आर हर चारीम पदाओं र उत्तर दियं सर्व प्रीसमालाचकोन इस लग्ध पर



HEATER



## INTRODUCTORY

The present comme contains three prindpants, asmely, behetra. Spiritia and halo ent of the cold prindpant of Braffbigs of which the name is Not and Drays-primare face already been published in the presence three solutions while the list three namely. Antity, Bhiva and Alpa-behutra the going to be included in the next volume.

The habetra retrip no contains 92 Saters and concerns itself with the determination of the volume of space that living beings occurs and the amous conditions of life and existence. The Satras combine themselves to the treatment of the subject under the usual fourteen sources stores ( Genasti mas ) and the fourteen soul-quests ( Margant-athanas ) but the commentator introduces top other conditions of life which have to be taken into con ideration. These fall under three main classes namely. the place of habitation of the beings (Srasthana) their expansion (Samu del 2 a) and their journes for rebirth (Upapada) The first of these moludes the usual place of habitati n ( Stastl it a-mastl ina) and places of occa Michal rints ( lil arre 11-41 rethings ) The expansion of the soul-substance beroil ite a unt solume (Samud, htts) may be due to pain (Vedana) or passion (hast as abor for a temporary transformation of p rsonahty(Vikriva) er for a visit to the next place of birth just before death ( Maranantika) or ly efforgence of lastre for evil or good ( Taijaen ), or for reaching a learn d person for the temoral of a doubt in knowledge in the case of sunts ( Al ur ska ), or for getting rid of the remaant karmir bonds in the case of an all-knowing saint (herali-samud hera) Thus the commentator calcu lates the volume of spars occupied by the hving beings in these ten different conditions under the different spiritual stages and soul-quests

The spittal units adopted for these measurements refixe namely, (1) the entire universe (Satva-loka) (2) the lever universe (Adholoka), (3) the universe (Inflores-loka), (4) the middle world (Madhyrloka) and (7) the human world (Manusa 1)ka. To make this estandards did not mad prove the commentator divides the limitless space into two, norm a the Al klastic which is pure void in limitless and the Lokakasta which is directed in the middle of the former which is in a matter subset of the three which is the limit shaped of the three which is in a matter subset of the line which is the second adopted as the largest weaper can be treatment of volume. As regards the shape and

volume of this universe, the commentator is confronted with two directors views. According to one view it is in the form of three conical frusts with a common cricular section in the middle, while according to the other term it is in the form of three frusta of pyramids with a common rectargular base in the middle. Virasena with his philosophic ireight, discriminating penius and mathematical skill ultimately rejects the former view and adopts the latter His conclusions are that the entire universe ( LoLaksia) has a total height of 14 rayjus and is in its volume 73,343 cubic raises, con sisting of the lower universe which is 196 cubic rajius and the upper universe which is 147 cubic rajjus. Between the lower and the upper universe is the rectangular section called the middle world which is 1 x 7-7 square railor, and which contains in its middle the human world which is a circular 2002 of 45 lakhs of yojanas in diameter. The rayu is thus the standard unit of this spatial measurement and it is only determined as innumerable yojanas long, equal to the smaller side, and - of the larger side of the rectangular middle world, 1 of the height of the lovet or upper world and 1 of the total height of the entire universe. This discu sion as well as similar others bring to light several geometrical problems that confronted our ancient thinkers and their solutions throw a considerable light upon the evolution of mathematical processes and theories in this country. We have tried to illustrate some of these by twenty diagrams in addition to a large number of examples

Under the Sparsana-prarapana wich contains 180 Sutras we find the volumes of space similarly considered from the point of view of the past as well as the future "states of those but", s. in addition to the present to which Kabetra-prarapana confines itself. The question here is the volume of space which beings of different spiritual stages and ecul-quests ever happen to touch under one of the ten conditions mentioned above. In this connection the determination of the number of heavenly luminaries shining above the unimerable i lands and seas gives riso to a number of interesting mathematical exercice of (see, pp. 185-181 of the text.)

In the Kala-pratupana which contains 342 Sut as, the con ideration is of the minimum and maximum periods of time spent by the souls, singly or in aggregates, in the various sprittual stages and soul-quests. of periods of time rises on to a Muhurta (48 Minutes), a day a fortnight, a month a year, a Yuga a Pursanga, a Pursa, and so on to a Palyopama and a Sagaropama and ultimately to an Utsarpini and Avisarpini which constitute a Kalpa The longest period of time conceived and denominated is a Pudgala-parisationa (for which see p. 350 text and explanatory note)

In interpreting the mathematical parto' these texts I again received very valuable assistance from my collection. Mr. D. Panday, pr. fessor of mathematics in Ring Edward College. Amazon: Without his help here as in the previous volume, it would have been almost an impossible task for me to explain adequately the mathematical portions. As I mettoned in the previous volume, Dr. Avadhesh. Narian single, professor of Mathematics in the Lucknow University and author o' the History of Hissin Mathematics in stakes a keen interest in the mathematical contents of these texts. He has now atdied the mathematical portions of the III volume and has obliged me by writing out a dissertation on the mathematical contents of that volume. The same is being published here under the zaption. 'Mathematics of Diravia' "It is expected that the would continue his valuable study of these texts and the resists might look forward to a very interesting note on the geometries of the pr. out volume in the volume to be used next.

Another topic dealt within the Hindi Introduction of this refumis an answer to the objection raised in a certain quarter that Jama tra ": tions prohibit the study of these bacred. Texts by laymen, and the effe these texts should neither be published in a print d firm nor of ould there be taught in Jains Pathasalas nor should they be allowed to in real anywhere by any body except by the Jama ascetics A critical examination of all the traditions bearing on this subject shows that an injunction are at the study of Suddhanta by the laymen is found in a few tacks dearing with the duties of Jama house-holders. But all these books are four I to have been written by a few obscure and insi atheant writers be o a period subsequent to the I'th century A D Ann it reit'er warn make chear what is meant by Siddhanta er ex at it in a rianum a to make the present texts as we are the stance. the apper of Sold ants. The run : with the statements f the n st a nt a at it Jaan who hasestronger moment l h + adr higher kindly all laymen a y wa himselfias d wn in clear aid u it & commentare that the Sutras a me as

L \_ \_

# MATHEMATICS OF DHAVAL,

mensuration stems as the contract of an analysis of Gantta arithmetic as several Judian mathematics as a sery early due it is also well from a factor of Gantta arithmetic as the factor of Gantta arithmetic arithmetic as the factor of Gantta arithmetic arithmeti It has been known that in India the study of Ginita -arithmetic a ancient Indian mathematicins into a notational and solid contributions to in the contribution of modern arithmetic and alrebra have been accustomed to think that amongst the vary population of India only accust the state of Hindist studied matic matter and were interested in the only ct and that the or and the control of the population of facilities of the flightlightest and the fines did not pay me the control of the con sections of the Population of India e.g. the Blindthists and the James did not pap and the James a tention to It. This view has been held by acholars because muthomatical northward for January and the second mathematicans had been unknown useff puts recently written by Moddhet or Jana mathematicans had been unknown uptil quito recently a study of the Jana canonical works long sign to each that mathematics was held in A study of the Isina canonical works however reveals that mathematics was beld in the Jamas. In fact the knowledge of method times and astronomy ligh asteon 13 the James. In fact the knowledge of methematics and astro-was considered to be one of the principal accomplishments of the Jama exercise 1

No know now that the Jaman had a a bool of mathematics to South Is he And at least one work that too jaints had a shoot of mathematics in South In lia was a many same arranged from the arist of work of the same of the section work of the same to be selected. and at lea tone work-the Ganila-aara-aamgraha iy Mabairiac) iya-of this school and the condition of the strain work of that time. Mahairiachaa in and in the condition of the school and th Was 10 many ways superior to any other existing work of that time and the work although similar in general outline to the work of the work Wrote in 5.00 A. D. and his work although similar in General outline to the works of the Hindy mathematicans like Bridging Spike Sridhirdedyra Outline to the works of the state of the sta the Hindu mathematics as the Bridging of the Studies of the security different and class expensive the problems to the Ganila sate and other is along all different from those in the problems to the Ganila sate and other is the following to the Ganila sate and other is entirely different in detail e K the Problems ; almost all different from those in the Problems ;

Important schools of mathematical literature available at Present we can say that the schools of mathematics flourested at a static public (I atom Vigoros (I From the mathematical literature available at Present we can say that Important schools of mathematics discribed at latellipatra (Later) Union Marker and Frohat J. Association of the places of the places and formation of the places of the places and distribution of the places of th Matheur and irobally also at Henaret Taxin and a me other fixes. Until further explored is a virtule at it in not possible to any precisely what the relation between them we had a had wrong a name of the possible to a sum of form the short and the sea thems. explored is a solid let it is not fossile to say precisely what the relation let need those schools nac. At the same time we find that works coming from the different schools and the same time with the same time time to solid schools. schools was At the same time we do J that works coming from the different Actions of the same time we do J that works coming from the different Actions of the same start share an entransform manner time at though they differ in details. The same share at the same Resemble each other in their Schrist outline Although they diller in delails. This constitution for the agriculture and the ag shops that there was intercommunication between the various schools that cholars and stud nis travelled from one school to another and that di coveres made at the contract of and stade that the verted from one school to another and this of colerior in the school sommunicated throughout the length and breakly of India It a constitute the street of find threen and Jainton Care an impediate to the

study of the sens that the street of Bud Dism and Jainson fear on impediate to the street and an impediate the street and an impediate the summary of the su of Buddhives and Jainives in 1 Pricular is full first numbers. The use of big. numbers within the levelop ment of a mile various in for writing those numbers and

has been responsible for the invention of the decimal place value notation. It is now established beyond doubt that the place value system of notation was invented and Januar the beginning of the Christian Frame the brightest period of Buddhism and Januar has no new notation was an instruction being the property of the development of mathematics from the crude Votice stag. — as found in the Suffaction of Arganatus and Variation has a full control of the faith century—as found in the works of Arganata.

One very significant fact which has escaped the notice of historians of mathe the Jains in the following, whilst the general interature of the Hindus the Buddhists and the Jains a continuous from the third or the fourth century it C. right up to the gap in the mathematical literature. In fact there is hardly any mathematical interature, it is a fragmentary mucestrict Anown as the Bakhshid when the Ary Abhatiya which was composed in 499 A D 1 ho only exception as a fragmentary mucestrict Anown as the Bakhshid manuscript which probably that the fact of the excend or the third cintury A D This manuscript which probably that the first of the tree level of the third cintury A D This manuscript which probably text as the tree level of try abhat; Brahms-upha or Stribas speakin, a Mathematical anithmetic which probably and the stript speakin, a Mathematical anithmetic with the fiftee value animorals as well as the fundamental operations of the mathematical anithmetic with the fiftee value animorals as well as the fundamental operations of the mith maticians were also known and that some types of problems treated by

It has already been pointed out that mathematics as found in the Arya at the state of the properties of no find in its attentions of the entire elementary and for the state of the properties of the state of the solution of the sample and the state of the solution of the sample and the qualitate equations as supplied to the solution of the sample and the qualitate equations as supplied to the state of the state of the state of the sample and the state of the sample and the sample an

Has p. fail reverance to Brahman the Farth the Moon Moreury Venus at the fact of the values and the asteroms Arrabites are forth the scenare as real are an experience. The above that he him to borrow from the man are at the man are at the man to a the hot poy of method which in other countries lead to start a time and are at the man are professionable to the man are at the man are professionable to the man are at the man are at the countries lead to see the countries are at a time are an experienced as the same are at the man are at the same are at the man are at the same are at the

to Arrabbit's a either used the old type of numerals or were not good enough to stand the test of time. I think that 'trya' halase great popularity as a mathematician was magnetizened due to be being the first to write a good test book employin, the place value numerals. Aryabhats was no possible for driving out and killing all previous text books. This explains why we get a series of works from 490 A D on wards while no works belonging to earlier times are available.

Thus we have practically no material to times the development and growth of mathematics in In he before 200 A. D. It because a quistion of peramount importance to hant and trace out works which may give information regarding the knowledge of mathematics in India aniety as India Bud hirt and Juna literatures in general and their religious interatures in particular to find what material we can in order to reconstruct the hirtory of mathematics in India before 500 A. D. In several of the Purranas we have portions desling with mathematics and a tronomy. Likewise in most of the Jair a canonical works there is to be found soom enthematics or most of the Jair at material represents the trichitonal mathematics of India and such materials represents the trichitonal mathematics of India and such materials prescribly should three to four continues of let fain the age of the work in which it is continued. Thus if we examine a religious or philosophical work written in the period 400 to 800 A. D. is matchematical content will belong to 0 A. D. to 40 A. D. d.

It is in the light of the above remarks that we regard the discovery of the Dhavala a commentary on the Satkbandagama, written in the leginning, of the mith century as very important Mr. H. L. Jaina has placed achilars under a regiment debt of creatitude by eliting the work and centurg it published.

### The Jama school of mathematics

Since the discovery and publication of the Gaulta-saca-sampgada by Rangearar in 1919 wholest has surjected the existence of a school of mathematics run exclusively by Jams scholars. A recent study of some of the Jams canonical works has broach to light various references to Jams mithematicans and mathiamatical works. The religious literature of the Jamsius classified unto four group called annuyogs meaning the exposition of the principles (of Jamsius). "One of them is called karananuyogs or gaultanuyogs a the exposition of the principles dependent upon mathematics. This shows the high position accorded to mathematics in Jams religion and I philosophy."

Although the names of several Jaios mathematicians are known their works have been lost. The certific tamong them is Bha Iritāhu who died in 2 c B C. Heit known to be the author of two astronomical works. (1) a commentary on the

See the Introduction by D. D. Smith to the G mits sare-samprahe of, by P age arra.
 Madras. 1919

<sup>2</sup> R Datta The J na achool of Mathematics, Bulletin Cal Math Soc., Vol. VVI (1999) pp 115-145

Suryaprajnapti and (ii) an original werk of 1 the Bha feath shird Sarrh it He is in intone 113 Malayagit (c. 11 0) in his comminity on the Suryaprajagit and has been quoted by Phithytaki (iii) And his faints, were more of his more of Siddha can has been quote by Varthambirs (iii) and his head quotations in Ardhamagi his and Prakert are not with one is shirt in 12 Disquitations a large nomber of a high triving. These quotations with a constrained and their proper places but it must be noted here the they prove large in 1 to 1 the varieties of mathematical works written by I triving. These quotations will be considered with mathematical works written by I triving these provides and 1 to 1 the varieties of Juna cabolars on the title high of Kastra samina and Kasaraa bhasara dealt with mathematics that now his works are area allowed for an original form of few nor mathematics which is of an extremely frauge noticy of an intergeless freightered from a few nor mathematical works such as Sthamanga sutra Tattvarthadhigumi sutra-bhasaya of Umasanti Suryaprajningti Anuyogadvara sutra Tiloka Prajnapti, Trilokasaras, etc. To these may now the allot the Dhavalas.

### The importance of the Dhavala

The Dhavala was written by birasens in the beginning of the minth century Virasena was a philosopher and religious divine. He certainly was not a mathematician The mathematical material contained in the Dhavala may there' 19 be attributed to previous writers especially to the previous comments ore of whom five have been mentioned by Indrauandi in the Sruavatara. These commentators were Kundakunda Shamakunda Tumbulura Samantabhadra an I I appa lava of whom the first flourished about 200 A. D. and the last about 600 A. D. Most of the mathematical material in the Dhavala may therefore be taken to belon, to the period 200 to 600 A D Thus the Dhavala becomes a work of first rate importan e to the hi torian of Indian mathematics, as it supplies informat on about the darkest feriod of the h s ory of Indian Mathematics-the period preceding the fifth century A D The view that the mathematical material in the Dhavala lelongs to the feriod before of 0 A D is corroborated by detailed study. For instance many of the processes described in the Dhavala are not be found in any known mathematical work. Furthermore there is a certain imperfection which one acquainted with the later Indian mathematical works can easily discern The mathematics in the Dhavala lacks the finish and the refinement of the Aryabhatiya and later works.

### Mathematical Content of the Dhavala

Numbers and Notation—The author of the Dhavala is fully conversant with the place value system of notation. Evidence of this is to be found everywhere We quote some enthods of expressing numbers taken from quotations given in the Dhavala—

<sup>1</sup> Bil at Samlits ed by S Drived: Benares 18), p > 0

<sup>2</sup> Etlanks in its commentary on the Sutrakitings Sutra am yadi vayana "anuyogalvathverse °S on tes three rolls regarding permutations and combinations. There rules are affairently taken from some Josan anathematical work.

(h) 45att 6t 4 15 expressed as early-four an handreds early-an thousands sixty-six hundred-thousands, and four kois? four and ninety wights

(m) as thing is expressed as two toles twenty-served ninety-nine thousands

The method wed in (1) is found elements along June interators and at an arms of the place in the Ganita-sara sampenday it shows fruitarity with the place The method used in (1) is found elembers also in Juna literature and at some pieces in the Ganita-zara samprahas it shows fimiliarity with the piece and the smaller denominations are expressed first Tays is not in value notation in (ii) the smaller denominations are expressed first time is not in the smaller denominations. The smaller denomination are expressed first time is not in the contact of actordation with the general fractice current in Sanskrit integrals.

Another is thus led and not ten as 15 generally found in Sanskrit integrals.

Another is a subject to the sans found in Sanskrit integrals in Park in Park.

Another is a subject to the sans in the san \$00ICGS

of notation is hon legt and not ten as a generally found in Sansket Interating a lit list and Prakert honever the scale of hon legt in generally used in (iii) the highest containing and the little and and Frakrit however the scale of hundred is generally used in (iii) the disposed free Quotations (ii) and (iii) are evidently from different different

literature In the Dhavia also the various known that the numbers occur requestiff in almost a state of the also the various known of five-rid, drays a principle of the control of five-rid, drays a principle of the control of the co Big numbers—it is well known that big numbers occur frequently in Jalon Circured The logge t number that is definitely stated in the number of developable in the Dilay like it is stated to be between the sixth-square of developable in the contract of the contrac bumin souls to the Diavelse it is stated to he between the sixth-square of two and continuous to be more precise between kell kell kell seed kells. koti-koti-koti, i .

ad more definitely let meen (10)0000 32 and (100 000 00) and more definitely between (10)00000) and (10000000);

to accust number of such souls known from other works is 70 os 91 62 51 43 71 33 75 e action number of such souls known from other works as 10 ver 10 to 11 are 16 to 37 is 35 50 37 is, This number occupies a mety-time and attends places. It has the same and a such as a such as the same and the sa

of 30 50 30. This number occupies swelly-nine notational places. It has the same of places in the minimum of places in the manual of the month of th ther of potational places as (100 00 000) to but is greater. This is known to the contract of the world inhabited by need and above or of singrals who calculates the area of the world substituted by men and above the larger number of men can not be contained in it and hence that there was

The Pundamental Operations—Nection is found of all the fundamental The Fundamental Operations—Menton is found of all the fundamental operations—Menton in found of all the fundamental operations of the structure of square and the structure of t ons ad litton authraction director multiplication the extraction of square and the faising of numbers to given fowers etc. These operations are decisioned

the sie III p. 1 4 rotes for so 51 f C non tage of a karde p cap.

I He d M th as I why Datts Ji to d S B + S

both with respect to integers and fractions. The theory of init codes described in the Dhavida is somewhat different from what is found in the mathematical works. This theory is certainly primitive and is either than '09 A.D. The fundamental likewhere to be those of (1) the square, (i) the cube (11) the accessive entrance (i) the successive cube (v) the raising of a number to its own power (vi) the square root (vii) the cube root (vii) the successive entrance of the cube of the cube root (viii) the successive entrance of the cube of the cube of the square root of the cube of a square root is the cube of the cube of the cube of the square of sets. The successive squares and enurse roots are as the cube of the square of a set. The successive squares and enurse roots are as the low—

successive squares and square root	
lat square of a means	$(a^{2})^{2} = a^{2}$ $(a^{2})^{2} = a^{4} = a^{3}$ $a^{3}$
2nd square of a means:	(a <sup>7</sup> ) <sup>2</sup> == at == a <sup>3</sup> ,
3rd square of a means	8 <sup>3</sup>
nth square of a means	a <sup>3</sup>
lat square-root of a means	n13
2nd square-root of a means	at"
3rd square root of a means	8 1 2
nth square-root of a means	21" <sup>n</sup>

Vargita-samvargita—The technical term vargita-samvargita has bee used for the raising of a number to its own power. For instance, no it the vargita samvargita of n. In connection with this the Dhavala mentions an operation called Viralana-deya-spread and give? The Viralana (spreading) of a number mean the separating of the number into its unities 1 e. the viralana of n is—

### 1 1 1 1 1 n times.

Deys (giving) insure the substitution of n in the place of I everywhere in the above. The engine-summargits of n is obtained by multiplying together the ne obtained by the viralana-days. The result is the first vargits-summargity of n, i.e.

A further application of the same procedure gives the-

<sup>1</sup> Dharala Vel III p .3

Srd Yarcita-samvarcita of a

$$\left\{ \left( u_{p}\right) _{u_{n}}\right\} \left\{ \left( u_{p}\right) _{u_{n}}\right\}$$

The Dharsh does not contemplate the application of the above more than three The third vargits sameragits has been used very oftent in connection with the theory of very large or infants numbers. That the process public very bin numbers can be seen from the fact that the 3rd vargita-sameragits of 2 to 25,358.

The laws of indices-From the above description is is obvious that the author of the Dhavala was fully conversant with the laws of indices via

Tastances of the use of the above laws are numerous. To quote one interesting case ? It is stated that the 7th varge of 2 diridel by the 6th varge of 2 gives the 6th varge of 2. That is—

The operations of duplation and incidation were considered important when the place value numeral were unknown. There is no tiene of these operations' in the Indian mathematical works. But these processes were considered to be important by the Egyptians and the threaks and were recognised as even in their works on suithment for Dhavalla contains traces of these operations. The consideration of the soccessive squares of 2 or other numbers was nectually mayined by the operation of duplation which must have been current in India before the advent of the place value numerals. Similarly there are traces of the method of meditation. In the Dhavalla we find generalisation of this operation into a theory of logarithms to the base 2 3 4 etc...

Logarithms-The following terms have been defined in the Dhavalat-

(i) Ardhaccheda'of a number is equal to the number of times that it can be halred. Thus the ardhaccheda of 2∞ m. Denoting halbecheda by the abbreviation. As we can write in modern rotation...

Ac of x (or Ac x ) = log x, where the logarithm is to the base ?

(ii) Vargazalaka of a number is the ardhaecheds of the ardhaecheds of that number i a

largafaláki of x = lax = AcAcx = log logx where the logerithm is to the base two.

(iii) Tekaccheda of a number is equal to the number of times that it can be divided by 3 Thus-

1 Dhorals III p 20 ft 2 that p 3 ft 3 that p Iff 4 th Jp of





Practions — Bendes the fundamental arithmetical operations with fractions, knowledge of which has been assumed in the Dharall, we find a number of inte-resting formulae relating to fractions which are not found in any known methema tical work. Amongst these may be mention I the following —

[1] 
$$\frac{n^2}{n \pm (n/p)} = n \mp \frac{n}{p \pm 1}$$
  
[2] Let a number m be divided by the divisors d and d' and let q and

[2]? Let a number m be divided by the divisors d and d' and let q and q' be the quotients (or the fractions). The following formula gives the result when m is divided by  $d \pm d =$ 

$$\frac{m}{d \pm d'} = \frac{q'}{(q/q) \pm 1}$$
or 
$$\frac{1}{1 \pm (q/q)}$$
[3] If  $\frac{m}{d} = q$  and  $\frac{m'}{d} = q'$ , then-
$$d(q-q) + m = m$$

$$4 + \frac{m}{d} = q$$
 then-
$$\frac{m}{d} = \frac{m}{d} = q + \frac{q}{m+1}$$
and 
$$\frac{m}{d} = \frac{m}{d} = q$$
 then-
$$\frac{m}{d} = \frac{m}{d} = \frac{q}{d} = \frac{q}{d}$$
and 
$$\frac{m}{d} = \frac{q}{d} = \frac{q}{d}$$
and 
$$\frac{m}{d} = \frac{q}{d} = \frac{q}{d}$$

$$\frac{m}{d} = \frac{q}{d} = \frac{q}{d}$$

$$\frac{m}{d} = \frac{q}{d} = \frac{q}{d}$$
[6] If  $\frac{m}{d} = q$  and  $\frac{m}{d} = q + d$  then-

0 1 dals 4

<sup>1</sup> Dharala p 46 8 ibid p 47 quoted rerse 2 4 ibid p 46 quoted rerse 24

<sup>5</sup> thid p 46 quoted verse 24 6 thid p 46 quoted verse "5

$$b = b - \frac{b}{\frac{q}{2} + 1}$$

and if 
$$\frac{a}{b'} = q - c$$
 then—

$$b = b + \frac{b}{\frac{q}{a} - 1}$$

(7) If 
$$\frac{a}{b} = q$$
 and  $\frac{a}{b'}$  is another fraction then—  
 $\frac{a}{b} - \frac{a}{b'} = q \left( \frac{b-b}{b'} \right)$ 

[efilial = q and 
$$\frac{a}{b+x}$$
 = q - c then-

$$x = \frac{bc}{q-c}$$

$$\{\mathfrak{g} \in \mathbb{R} \mid \frac{a}{b} = q \text{ and } \frac{a}{b-x} = q + e \text{ then}$$

$$x = \frac{bc}{q+c}$$

[10] If 
$$\frac{a}{b} = q$$
 and  $\frac{a}{b+c} = q$  then—

$$q' = q - \frac{b+c}{b+c}$$
[11] If  $\frac{a}{b} = q$  and  $\frac{b-c}{b-c} = q$  then—

$$q = q + \frac{q_0}{h - q_0}$$

The server care all found in quotations given in the Dharall They are not it as a y know and send only the quotations are from Ardha-Magadhi of from the Te prescription is that they are taken from Jajina works on most of or from the local commentation. They do not represent any essential or note of the min. They are refor of an age when division was considered a commentation. These references are sended and the send of the commentation of the commentation was considered a commentation of the commentat

The rule of three. The rie of three is mentioned and med at several

<sup>4</sup> F6 4462 xm+

Places! The technical terms in connection with the process are first; 1 h. framena the same as found in the known mathematical works. The accesses that and of three was flown and used in India even before the more and even and the line of the force of the force

The Infinite Use of big numbers. The word infinite used in various seases is faon the literature of all ancient Teoples | 1 correct d finition and appreciation of the at two interture of all ancient peoples. I correct o minion and appreciation of the however came much little. It is natural that the correct defaulton was exceed is buship away meet pic numbers or mets accordingly to also, complete to the The following will show that in India the family later to the Philosophy And ionoming will anow that in chain for fa na fa ionogo sew eres in classifying the various notions connected with the term infinite and in rolling the corre I definition of the numerical sistente

The evolution of suitable notation for expressing bg numbers as we it as of the idea of the infinite arise when abstract treatming and if linking revise or tax to suggest the summer arise when accuracy reasoning and trinking reason as a complete the sumber of and parties. on the sea-shore and the Greek I bill sort on it or establish the surface and the creek I bill sort on it or established the surface and the on the sea-succe and the three last solution in the extremely the first solution search the extremely the solution to the extremely th numbers. In In he the Hindu James and Bulliust Philos places well services on formous and stude time climan owns and noticing lines for a mentary for me.

In particular the latest electrons of the purpose in particular the latest electrons. tors and evition anisating symmotrum for the purpose in personal trace of the following beings in the Universe of time in tall of leaf in [ Points or places ] in the Universe and so on Three methods of expressing by numbers were emil Jed -

(1) The place-value notation using the sale of time to the constitution of the constit may is noted that number-names based on the scale of tent were con-it self-sea mumbers as large as 1010

(2) The law of in lices ( carga-simta ga ) was emply yell to give und expressions for hig numbers, e.g. (1) (2)=4

$$\begin{array}{ccc}
(m) & \left\{ \left(z^{2}\right)^{2^{2}} \right\} & \left\{ \left(z^{2}\right)^{-2} \right\} \\
\text{Famina that of } n
\end{array}$$

P. C. is same a Cost of This number from the title of

7 22 d 316 2 m 1 (2 mins) 3. 2 max

(") The logarithm (ardhaccheda) or the logarithm of a logarithm ardhaccheda-salaka) was used to reduce the consideration of big numbers to those of smaller ones, e.g. --

It is no wonder to find that today we take recourse to one or the other of the atore three methods of expressing numbers. The decimal place-value notation has become the common property of all nations. Logarithms are used whenever cal en'stances of the use of the law of indiese to express magnitudes in modern physics is common. For instance, the number's of protons in the Universe has been calculated and expressed as-

And Shower number which gives information regarding the distribution of be mes is extremed in the form-

At the above methods of expressing numbers have been used in the Die a's. It for we that the methods were commonly known before the seventh erstary L. D la lara

<sup>1</sup> Two arm or 12" 2 A expressed in the locumal notation is 15 747 701 186 275 002 577 14 - 34 9 344 717 914 57\* 116 700 866 231 425 076 185 631 031 206 I wi be neer of t at the thord vargita-semvargita of 2 L e. 256256 is greater than t air-ne of g out in the lair ray If we integrate the entire Universe as a chees-board

and the grants to des theremen and if we agree to call any interchange in the position at the fact as a me a section of the state o le encert-

- Classification of the infinite The Dhanda Russ a classification of the Infinite. The term infinity has been used in hierature in agreral songer incoming as full user.

  According to it there are absent kinds of Constitution of the intimite the constant Kings a Constitution of the form infinity has been used in hierafure in solver source that our too solver in solver has been that that
- or may not really be infinite in name. An aggregate of objects which may continue to called as such in ordinary contoraction or by (1) Namananta - Infinite in name An aggregate of objects which may or may not really be intimite might be crited as such in ordinary confersation or by a management of the second of or to theorem persons or in mercature to measure k-reasons to missing makes only to a transfer of the statutes.
- (2) Sthapanananta-Attributed or associated infinity This too is not some of Ject
- the real infinite

  Sthapanananta—Attributed or associated tentity

  The term is tred in cise inhuity is attributed to or associated with This term is a c.f. for Persons who have knowledge of the infinite but do not for the [3] Dravpananta—Infinite in relation to knowledge which is not used time being use that Lbonledge
- tual jurulle as used to mathematica.
- Gananananta\_The numerical infinite This form is used for the (5) Apradesikananta—Dimensionless 1 e infinitely small
- (6) Ekananta-One directional infinity. It is the infinite as observed solving in one direction along a straight line
- (7) U6hayananta Two directional infinite This is illustrated by a ntinued to infinity in both directions to I lane area.
  - (8) Vistarananta—Two dimensional or superficial infinity. This means
- (9) Sarrananta-Statist castority This signifies the three dimensional
- 10) Bhayananta—Infinite in relation to knowledge which is utilited t used for a ferson who has knowledge of the tabulite and who uses that Saswatananta-Everlastin, or in lestrictil lo
- alose hallen nia a comprihensise one including all sens a la which Gananananta (numerical infinite)
- availed shy late I are that in the are a matter well show

of the other infinities enumerated above. For in the other kinded ferfinity "the idea of enumeration is not found. If there also be notated that the interest infinite is describeble at great length and is sumface. This valence is probably read that in Janes literature annula (infinite) was defined more there ignly by the vive writers and had become commonly used and understood. The District has does not contain a definition of avanta. On the other hand operations on and with the annula are frequently mentioned along with numbers called sarakhya'axan' asamkhya'ax

The number samklights analysis and anoths have been used in James the same meaning. In the earliest known times but it seems that if of did not always curry the same meaning. In the earlier works anoths was certainly used in the series of infinity as we define it now, but in the later works anotherance is the place of another for example seconding to the Prilokatora a work written in the 10th century by Nemicandra Parita-another I without and an alle sen Jachanya-anotherance is as very big number but is finite. According to this work numbers may be divided

- (1) Samkbyata which we shill denote by-s
- (11) Asamkhyata which we shall deno e by- a
- ( iii ) Auanta which we shall denote by- A.

The above three kinds of numbers are further sub-divided into three classes as below—

1. Simkhyata (numerable) numbers are of three aidds

- (1) Jaghanya samkhyāta (smallest numérable ) which we shall denote by 9
- (11) Madhyama-samkhyāta (intermediate numerables) which we shall denote by-sm
- (iii) Utkrsta-samkhyāta (the highest num-rable) which we shall denote by-su
- II Asamkhyala (un numerable ) numbers are divided into three classe
  - (1) Panta asamkhyāta (first order nanumerable) which we shall denote by-ap
  - (n) łukta-asamābyāta (medium unnumerable) which we shall denote by-ay
  - ( m ) Asamkhyāts-a amkhyāts ( annumerably-unnumerable ) which we shall denote i y- aa

Each of the above three classes as further sub-divided into three classes, viz. Jaghanus (smalles) Madhyama (intermediate) and Utkrata (highest) Thus we

<sup>1</sup> dile 1

Ma Iliyama-asamkliyata-assamkliyata

Utkrata-asamkhyata-a amkhyata

(ii) lukta-luints (in dium infinite) which we shall I note. At (iii) Ananta Ananta (infin tely infinite) which we shall deact by A4 As in the cas of the asamkhyata numbers esci of these first early dry led into three classes Jaghanya Malijana and Ulke ta a) that we have to following numbers in the Ananta class-

Ananta which we denote by 1 is divided in to three closes -

(1) I arita-inenta (first order infinite) which we are 1.1 mote it. At

Va thyama-parita-ananta Utkesta Parita ananta Jaghanta Julia-ananta

Madi yama-yukta-ananta

Uthreta-jukta-anunta

Jaghans a-ananta-antnia

Madliama-ananta ananta

Numerical value of the Samkhyata ties the laghing a cambbiat i then in ther

Uthreta-ananta-ananta

1

n mber that three them this the

between a fithe tike a ki the number mm 1 1 ) lec 1 1 1 1-

\*Astropate | Sampliana minhe | 11

1,

411

8777

81 m

411

2177

**45**0

441

4

Aju

Atı

A<sub>j m</sub>

Aig

44

A tm

140

Ain

The wilth of any ring whether land or water is double that of the preceding mag The contral core (t.e. the initial circle) is of 100 000 30 ands in diameter and is called

Consider four ephadrical puts each of 100 000 30 yanas in diameter and 1000 So garast deep. Call the e  $A_1$   $B_1$   $C_1$  and  $D_1$  Imagine that  $A_1$  is filled with rape-seeds and furth r rape seed are piled over it in the form of a conical heap the topmest layer con isting of one seed. The total number of seeds required for the operation is— For the cylin lar 19791209 999968 1031

We shall call the process de cribed above by the term overfilling a cylinder with 12, a. raija

Now take the seeds from the above over filled pit and drop them beginning fr m lamitudings one on each concentre ring of land or water of the Universe. The and ref facely being even the last see I would fill on a ring of water Let one rapeseal to Intia B, to denote the end of this operation

in gine a cylinder with the diame er of the boundary of the ring of wa ri owh h the last raje-see! was dropped in the above operation and 1000 3. 21 100, Call the cylinder \ Ima\_ino A to be overfilled with rape-needs. Prop the seek, be, anima after the last ring of water attained in the previous operation \* or a ring steer the fare ring of water attained in the previous operation of the ring of in I and water. This second dropping of seeds will lead to arc, co which the last see i is dropped I" • (1 + m re see) in  $B_1$  to denote the end of this operation

Irs, wo now a cylin for with diameter that of the last ring of water attimed is a -1 it. District p (all this cylinder As Let As be over filled with Lettellation a seel be trypel in ti The second continued to be second of

Lipo winted Locota

Then the Jaghanya-panta-asamkhyata apy is equal to the number of rapeseeds contained in A\* And Hitrata-asamkhyata man man - 1.

Remarks —The control idea in dividing numbers into three classes seem to this. The critant to which numeration i.e. counting can proceed depends on the number-names available in the language or on other methods of expressing numbers. In order therefore to extend the bound of numbers which may be contied or expressed in speech a long series of names of numerical denominations based primarily on the scale of ten was consed in In in. The lim has contented themselves with eighteen demoninations by the help of which numbers up to 10<sup>15</sup> could be expressed in speech. Numbers greater than 10<sup>15</sup> could be expressed by rejetition as we do now when weary million million etc. But it was realised that rejetition was cumbersome. The Buddhists and the Jainas who needed numbers much begger than 10<sup>15</sup> in their philosophy and cosmology coined denominational names for tall greater numbers. We do not possers Jaina chosminational names, but the following series of designmentional names which is of

1 lara ( $\chi_1^2$ ) = 1 lest
2 logs ( $\chi_1^2$ ) = 5 lest
2 logs ( $\chi_1^2$ ) = 5 lest
4 lors ( $\chi_1^2$ ) = 5 lest
4 lors ( $\chi_1^2$ ) = 5 lest
4 lors ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekt of Porsages
6 kayata ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of kayatages
6 kayata ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of kayatages
7 komodage ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of kayatages
9 leadunge ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of komodages
10 leadung ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of leadunges
11 Kahange ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of Palmanges
12 kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 5 lekts of kainange
13 kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kainange
14 kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kainange
14 kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kainange
14 kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kainange
15 lexts of kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kayatage
15 lexts of kayatage ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kayatage
16 Tuttinge ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kayatage
17 larutages ( $\chi_1^2$ ) = 6 lekts of kayatage
18 lexts of kayatage
19 lexts of kayatage
10 lexts of kayatage
10 lexts of kayatage
10 lexts of kayatage
11 lexts of kayatage
12 lexts of kayatage
13 lexts of kayatage
14 lexts of kayatage
15 lexts of kayatage
16 lexts of kayatage
17 lexts of kayatage
18 lexts of kayatage
19 lexts of kayatage
20 lexts of kayatage
21 lexts of kayatage
22 lexts of kayatage
23 lex

18 Atata ( SEE ) = 84 Lakha of Atatengas

19 Amemanga (असमीत ) = 81 Afet s 0 Amema (असम) = 81 Lakhe of Amamanges

oo llala (हाहा ) = 84 Labla of Ral ear

of Hope ( Effet ) = 84 Helps of Helps 3 Hopenda ( Effet ) = 84 Helps

05 Latange ( स्त्रीत ) = १६ Habes 96 Lata ( स्त्रा ) = १६ Labbs of Lalt ngss

| of Mahalatangs (মহাজ্ঞান) = 81 Latas 8 Mahalat (মহাজ্ঞা–81 Lakhnof Mahalata gos og S tikalga (মহিন্দ) = 84 , M i latas

14 Kemila (1973) = 86 Lakte of kemilar gas 30 He teprahelia (1977/237) = 81 Lakte of La Truitanga (1983/17) = 81 Kemilar 16 Truita (1983) = 84 Lakte of Triptangas 31 Ac lapta (1993) = 84 Lakte of

1" Atstange (1972(1)) = 84 Truites

This list is found in the Triloka prayments (6th-6th cent) Harriewine present (6th cent) and papararticle (6th cent), with a few view to the in nece centr. According to a stime neat found in Triloka-pray april there have of According to a stime neat found in Triloka-pray april there have of According to Stimes.

Acelepra es 8121

and that the value will lead us to 'ed de mai places. Acc of ... to Legar these tales, however 81<sup>21</sup> g ere as only sety do, and places of notation. ("ee Dhara. III introduce and footnore p. 34) — Edder.

<sup>1</sup> The Jainan process in this old hierature a list of names denoting long periods of time with the year as the unit. The series is as follows —

```
Roddhist origin is interesting-
```

```
( 10 000 000 )8
                                             abboda
                                                               =
                                         15
                        1
ι
  Fka
                                                                   ( 10 000 000 p
                                         16 nirabbida
                                                               =
2 dasa
                        10
                                                                   ( 10 000 000 )10
                                              ahaha
                                                               =
3 sats
                        100
                                         17
                                                                   ( 10 000 000 11
                                                               =
                                         18 ababa
4 82 23 3
                        1 000
                   --
                                                                   ( 10 000 000 ill
                                              atata
                                                               =
                        10 000
                                         19
5 dass eshases
                   =
                                                                   ( 10 000 000 )13
   Rata sahassa
                        100 000
                                         20
                                              sogandhika
                                                               =
                    =
                                                                   ( 10 000 000 pt
   dava esta-cabasea =
                         1 000 000
                                              uppala
                                          21
                                                               =
                                                                   ( 10 000 000 315
                         10 000 000
    Late
                                              kumuda
                                                               _
    Jakoti
                         ( 10 000 000 )2
                                                                   ( 10 000 000 pt
                    =
                                          23
                                              pundanka
    k tippakoti
                         ( 10 000 000 )3
                    =
                                                                   ( 10 000 000 117
                                              paduma
                                          24
                                                               -
                         ( 10 000 000 )
11
   Dabu.a
                     ==
                                                                   ( 10 000 010 )15
                                              kathāna
                                          25
                                                               =
19
   E anshate
                         ( 10 000 000 ps
                     =
                                                                   ( 10 000 000 )19
                                              mahākathāna
                                          26
13 aktobb m
                     =
                         ( 10 000 000 )s
                                                                   ( 10 000 000 Y)
11 1 maa
                                               asamkhyeya
                         ( 10 000 000 17
```

It will be observed that in the above series as mkhyeya is the last denomiret - This probably implies that numbers beyond the asamkhyeya are beyond numbers rates a e u numerable

The value of assimhlyers must have varied from time to time. Nemicondras as whire an error of different from the mankhyeya diffined above which is 10112

Asarakhyata - As alrea ly mentioned the asamkhyata numbers are divided in the treat el mes and each of them again into three sub-classes. Using the nota t mg ses at we have according to bemicandra-

```
(ap<sub>j</sub>) 15 = 81 + 1,
   Jantanya parita asamkhyata
   3's " rems | erita-examkhyata
                                     (npm)
                                              > apr but < apu
                                              = ay) - 1,
   Urk sta-pari a asamkhyata
                                     (apu)
W 1070-
                                              ارهه ( دراه ) =
   Jestanys-yakta-seemkhyeta
                                     ( ayı )
    ha byem i yakta ammkhyata
                                     (aym) is > ay) but < ayu
    U areta yanta esamkhyata
                                     (avu)
                                              = an - 1.
* lorg-
    J hanva-wimkhyata-menkhyata (anj)
                                              - (py))2
    A. verce-numbhyets aramkhyets (nam) iv > any but < nau'
    I ar a seemabysts smmkbysts
                                     ( But )
                                             - spi - 1
B 1 = 1 = -
    A Manie Er Je hanya parita ananta
```

A non a- The numbers of the anonta class are as fill yer a to 18 1 r a smara [ Att ] is obtained as below -

$$E = \begin{bmatrix} 1 & \cdots & 1 \\ 1 & \cdots & 1 \end{bmatrix} \begin{bmatrix} \{\{aaj\}^{\{aaj\}}\}^{\{\{aaj\}^{\{aaj\}}\}} \end{bmatrix}$$

Let C - B + nx drargad

Let 
$$D = \{(C^r)C^r\}\{(C^r)^{C^r}\} + t$$
 or aggregator

Then factoring partial-entities (Ap. ) =  $\{(D^D)D^D\}$   $\{(D^D)^{D^D}\}$ Malbrama parita-ananta [Arm ] is > Apr tot < Apo

Utlinta-parita-ananta [Apr 1 - Av - 1

- here-Ja hanya-yulta-manta [Acj] - fam g(ari)

Mall rame-yultr-sounts [Aym] is > Ayr lot < Ayu Uthreta yuhta-ananta [Ayu] - AAi - 1 \*)+~--

Jaghanga-ananta ananta [AA] = ( \vi)2 No thyama-ananta-ananta [AAm] is > AAj but < AAn

where-

A Au stan le for Uthreta-ananta-manta, which according to Aem candra is of tain of as Lillows -

$$x = \left[ \left\{ (AA_j)^{AA_j} \right\} \left\{ (AA_j)^{AA_j} \right\} \left[ \left\{ (AA_j)^{AA_j} \right\} \right]$$

$$+ \text{Als frame},$$

$$y = \left\{ \left(x^{x}\right)^{x^{x}} \right\} \left\{ \left(x^{x}\right)^{x^{x}} \right\} + \text{thors inf}$$

1 Tl six dravy sare the spati | pointe of (1) Diarma (2) tharma (3) one Jira

(4) Lobalasa (a) apr tusti ita ( regetable m ule ; and ( 6 ) f ratisti ita ( regetable sonis ) ? The lar a prepates are (1) in tante of a kelya (2) spatial units of the Universe (8) anubl agabandha-all yara aya-atl ana and (4) aribl aga praticebols of 1 ogs 8 There are (1) : !!! a, (2) el l'érans-ransspail ni, els, (8) vans jati (4) pai

gal (5) er v is a kale, and (6) al Lake a Ti cee are (1) Di arma dra ye ( ) adi arma drarya, ( aguru-lagi u guna ar bi 45a pr treted of bott )

Now, the aggregate known as keralajnana is greater than a ani-

= Kevalajnana

Remarks-From the above it follows that-

[1] Jaghanya-pirita-ananta [ apj ] is not infinite unless one or more six dravyas or the one of the four aggregates which have been added to obtain

[11] Utkrsta-ansuta-annuta [ AAu ] is equivalent to the aggregate Accordange The description above seems to imply that the utkinta-ananta unantaand description above seems to imply that the dikinda-adapta-adap as greater than any number r which can be reached by arithmetical operations. It was on grounds usual any number z woich can be reached by arithmetical operations. The to me therefore that Kevalaynana is infinite and hence that utkrota-ansat

Thus the description found in the Trilekasara leaves as in doubt as whether any of the three classes of parita-anants and the three classes of yakta-anants and the three classes of yakta-anants. where any or the three classes of parita-anants and the three classes of yukin-anants and the jaghanya-ananta-anants is actually infinity or not in as much as they are and any signatura-manna-animis is actually infinity or not in as much as they are as and to be the multiples of asamkhyada and even the anortegates that have been added as an also asamkhwata and the state of the s coats on the time industries of asamkingsts and even the a gregates that have been succeeded as a samkingsts only. But the Ananta of the Dhavala is actual infinity for it is are any samulaysts only Hot the Ananta of the Dhavala is actual infinity for isclearly stated that a number which can be exhausted by subtraction cannot be called
ananta 1 % of the contraction of the Dhavala is actual infinity for isananta 1 is further stated in the Dhavals, that by aninta-ananta is always met. anative. At is further stated in the Dhavala, that by substandantial is always mean. the madhyama-ananta-ananta. So the madhyama-ananta-ananta according to the

The following method of comparing two aggregates given in the Dharil in the initiating method of comparing two aggregates given in the University of a that the state of all the past Avasarpais and Utsar prince (i.e. the time-mutants in a kalps which are supposed to form a communicate Franct, the time-makents in a kalps which are supposed to form a communication of the other the angregate of Mithy admits plant the communication of the other than a communicat Then taking one element of the one a seregate of Mithe adrin juva-net other thanks one element of the one a seregate of a corresponding element from the well saking one element of the one a see all a corresponding element from the white the other distributions in this manner the first aggregate is estimated whist the other is not 3. The Dhavda, therefore concludes that the share also warran top other is not - the Dilivila therefore concenues war.

Mulhyadrii -raii is breater that that of all the past time-instanta.

The allowe is nothing but the method of one-to-one correspondence which farms the transfer mothing but the method of one-to-one correspondence was method a strike in makers the ry of infinite cardinals. It may be argued that the method is alpha in to the comparison of finite ardinals. It may be argued that we tee use t f makes to the comparison of finite ar limits also and so was taken fee ups t ( coper us two very be hatte ar had salvo and so was the cores to the comparison of hatte ar had salvo and so was the cores to the comparison of hatter elements

1<sub>1</sub> , 8 1<sub>1</sub> ,

could not be counted in terms of any known num rical denomination. This view-point is further copy oried by the fact that the Jains works for the duration of a time inclusion and is in morber of times is stanted in a halp of Activity-time 10 Ustry in most 10 finite act to halp intelligence and infinite interval of time. According to the latter vi with lag language partial-animata (which according to definition is greater than the aggregate of time instants) is finite.

As already front 1 on the method of one to-one corresponden chas fro ed to be the mail poverful toof r the andy of such the calculation and the disco cry and for that of the front of countries to the front of countries are to the forms.

In the above classification of numbers. I see a primitire attempt to avolve a theory of line intercardual numbers. But it is a re-some sensors defects in the theory. These defects would lead to contradictions. One of these is the assumption of the surface, the number c = 1—where are infinite and a limiting number of a class. On the other hand the Janus convergions that the variets-summargula of a cardinal c (i.e. c) would lead to a new number is justifiedle. But the time that the Ukirats-summhrate of the early Janus hierature corresponds to infinity then the creation of the numbers of the annata class anticipated to some extent the modern theory of line fluct exclusions. Any such attempt at such an early age and stage in the growth of eathernative was bound to be a failure. This wonder is that the attempt was mule stall.

The existence of several hands of infinity was first demonstrated by Boorge Cantor about the middle of the must enth century. He gave a theory of transfinite numbers. Cantor a reservices in the domain of infinite aggregates have provided a sound laws for mathematics, a powerful tool for reserved, and a language for correctly expressing the most abstrace mathematical tides. The theory of transfinite numbers however is at present in an elementary stage. We do not as yet powers a calculus of these numbers and as have not been able to bring them effectively in mathematical analysis.

A. N. Singh, D. Sc. Lucknow University

#### INDEX

(Oming to differing reflection for a service of in the mode of the distribution of Division 1 the firm of the content of the half first of the Sankrit and Frakrit technical terms or "if")

(अञ्चानस-व सकारायंत ) xix fo Annyoga (अञ्चान ) iii
Annyoga (अञ्चान ) iii
Annyoga (अञ्चान ) iii
Apradesikanonta (अञ्चार्यस्य ) xii
Apradesikanonta (अञ्चार्यस्य ) xiii
Arddhaecheda (अचरण्दर ) vii, xii
Arddhaecheda (अचरण्दर ) vii, xii
Arddhaecheda (अचरण्द ) vii xii
Ardha magadhi (अचरण्य ) iii
Aryabhata (अचरण्य ) iiii
Aryabhata (अचरण्य ) iiii
Aryabhatya (अचरण्य ) iiii
Asamkhyata (अचरण्य ) xiv,xvii
Aamkhyata (अचरण्य ) xviii
Atata (अण्ट ) xvii fo xviii
Atataga (अण्ट ) xvii fo
Avibhaga praiichheda (अञ्चान

Avasarpini ( জনদ্ধিনা ) xx, xxi Bappadeva ( মন্তব্ ) iv Benates ( নন্দে ) i Bhadrabahavi Sainhita ( মহনাহ্রী ভবিয়া ) iv

Bhil abihu ( erem ) it Bha aratie i'ra (gereter ) i fi Bhackata ( greet) ( Bhattatpala ( #7 TT ) 17 Bharaban a ( arriar ) vill Brahmarup a ( रचन्त्र ) i n Brhat Samhita ( 47 40 11 ) iv fa Caturti achimia ( नाकेर ) V II Dasa ( दन बर्द दत्त ) रहा। Dera ( 37 ) 11 Dharma ( धन ) xis fo Dhavala ( परन् ) m 17, etc Dravyananta ( रचन र ) xiii Dravya pramana ( - प्रान ) Y Eka ( or ) xrm Ekananta ( जसन्त्र ) XIII Ganita ( ग्रीत ) 1 Gananananta ( गुत्रनायन ) आ। Ganstanuvoga ( गरिताराण ) III Gauta sara samgraha (ग्रीन्यान्सम्) 1 L! T,

Jaghanya anantananta ( अवन्य जननातन) xiv, IV,III Jaghanya asamkhyata asamkhyata ( जव यनसम्यात असम्यात) xv,Xviii etc

```
Jaghanya parita-anaota जवन्यसरीत-अनन )| Madhyama yukta १
         Joghanya panta asamkhyata (क्यन्यतीन / Mahakathana ( महारा
         Jaghanya yukta anunta (जरस्यात अन्त ) Muhalatanga ( सराजा
       Jaghanja jukta asamkhyata (वर्षपुत्र Atalabar (वर्षपुत्र )
                                         xv xix Mahaviracarya ( महावी
       Jambudiipa ( Argin) xii
                         अन्तवान) रह xviii etc | Malayagiti ( मलपिति )।
      Jira ( जीर ) xix fo
      Jirokanda (alisios) v fa
                                               Mithyadrsti Jiva rasi
     Jiva rasi ( जीवसाबि ) v
     halpa ( set ) xix fo, xx xxi
                                              Mysore ( fig ) ,
                                              Nahuta ( नहुन ) xsm
     Kamala ( काउ ) xun fn
    Kamalanga (क्सलीम्) xvii fo
                                              Nalina ( निन्न ) xvii fo
    Acarava bhavana (करणमावना ) । र
                                             Nalinanga ( निन्तान ) xvii f
   Karananus oga (करवात्रयोग ) सा
                                             Namananta (नामानन्त ) प्राप
   Kathana ( क्यान ) xviii
                                            Nayuta ( नपुर ) xun fn
   Lecala juana (क्वण्यान ) xx
                                           Nayutanga ( नपुत्रात ) 2311 fn
  hoti ( vip ) t, xviii
                                           Nemicandra (नापेक्स) प्राप्त,
  Ivotibbarofi ( albadib ) zani
                                           Ninnahuta ( निषद्भ sk निण्डुन )
 Leetra samasa ( सनसमात ) IV
                                          Nirabbuda (Arty, sk faris)
 framuda ($55) xrii fa xriii
                                          Padma (qv ) xvn fn
Lumudanga ( gqciq ) xvu fn
                                         Padmangs ( q-|q ) xvii fo
                                         Paduma (que si que) xem
Kundakunda (3534) ir
Ensamabats ( Ments ) 11
                                        Pakoti (qelfe, ak nejee ) xviii
Lata ( est ) xvn fo
                                        Pali (973) v
                                       Parita ananta (परीर-अन्त ) xiv
atanga ( खतंत ) xvii fo
okalasa (होगगढ ) प्राप्त fo
                                       Pataliputra (qrp 77) 1
                                      Phala ( va ) xi
adhyama-ananta ananta (संपद्ध-अन्त
                                      Prakrit ( Witt ) is v, x
                                     Pramana ( प्रमाण ) xt
idhyama-asamkhyata asamkhyata
                                     Pratisthita ( प्रतिनित्र ) प्राप्त
कार्य अमेल्यान अमेल्यान ) xv xviii etc
                                    Pudgala ( 575 ) xix to
ihyama patita ananta ( क्ष्मूक-पात
                                    Pundanka ( Sertle ) xvm
                                   Purana sum ini
hyama panta asamkhyata ( क्यून
                                   Purva ( Tf ) ven fo
ा-अमस्यात ) xv xviii etc.
                                   I direst on ( Stot ) sent for
il ama i neta ananta ( and da paqpatana kanashati nie eja
                                  hajasarttika ( गामान्त्र ) xvii fa
                                                 at a a Car st Elean
```

Sabasea ( सर्म्म, डो. सरस्य ) प्रशा Samantabhadra (समलमद) ।प Samkhyata ( सन्तान ) xiv, रप Sarvananta ( सर्वानन ) xiii Saswatananta ( शायतानन्त ) xiii Sata ( 47, ak 27 ) xviii Satthandagama (बर्महानम्) ॥। Shamakurda ( बानबुद ) 18 Siddha (faz) xitfn Siddhaerra ( महनेन ) IV Silanka ( Elist ) iv fo Scrandhika (सम्भिन sk साचिक) रहा।। S-syadhyayana ( स्वयाप्यान ) iv fo Stidharacatya ( कायगवार्य ) 1, 11 Sakalpa ( xtem ) xen fo VI ( SIFFIE ) avalara " Sit shache sutta ( स्पानीत सूत्र ) sv Sil aparananta (सपनातल ) पा। Schatztta (gara) it Se var a rapti ( miner? ) iv े serte es sotra (न्याना न्य ) iv fn Varga salaks ( वर्ग छलाना ) था। Tat' vart' ad' icama-autra bhasva ( त्यापः विगमन्त्र मात्य ) iv Tax is ( PT'27) i Trabeges agti (friegeift) ıy xyli fa Tr kate & (frager ) 14, 214, 24, 24 Tres bein (freig) vil Tr" a ( 2"" ) 2711 fo Tr. 4 % (\* 24) xen fo Ten's a (guest) by 1111 ( SECURE ) & 474- J La (Trejs L 22132 ( 123642 ) 14

Uppals ( ওখন, sk বন্দন ) xviii Utkrsta ananta ananta (उत्कृष्ट-अनन्त-जनन) xv, xit Utkrsta asamkhyata asamkhyata ( उन्ह अमन्यात अमन्यात ) xv,xvIII etc Uthreta parita ananta (उत्हप्त प्रति-अन्त) XV XIX Utkrsta parite asamkhyata (उत्तरमाप्त-अमस्यात ) xv, xviii etc. Utkrsta yukta anantaउन्हष्ट युनः अनन्त ) XV, XIX Utkreta vukta asamkhyata ( उन्हर्म अवस्यात ) प्रथ प्रशाह etc. Utsarpını (उन्मर्दिणी) xx, र४। Uttaradhyayana sutra ( उत्तराध्ययनपूत्र ) Vanaspati (वनस्पति) xix fo Varahamihira ( बराहमिहिर् ) 11, 1♥ Varga ( वर्ष ) νι Varga samvarga ( वर्ग सदग ) 💵 Vargita samvargita ( वर्धित सवर्धित ) था। vii, viii, xi, xii fa, xxi Varsa ( 43 ) xvit for Viralana (तिस्त्र) ए। Viralana deya (विस्तन देव) vi Virasena (बोरमेन) iv Vistarananta ( विस्तासन्त ) प्रासं Vyavaharakala ( म्यन्त्र मात्र ) प्राप्त for Yogs (याग) xix fo Yojana (योजन ) xv Yuga ( 34 ) xvit fo

Yuks (57 ) xiv. xv

Yuktananta ( दुवानच ) xiv

## सिद्धान्त और उनके अध्ययनका अधिकार

वैत्यपर्म बान और विरेक्त प्रमान है। यहां मनुष्यते प्रयोक कार्यम कार्यम कार्य है। यहां मनुष्यते के क्षति कार्य के एवं है। यहां मनुष्यते के क्षति कार्य के एवं है। यहां मनुष्यते के क्षति कार्य के हैं। यह उप कार्य है। यह उप कार्य है। यह उप कार्य है। यह उप कार्य के वार्य के किया निर्माण के किया है। यह उप कार्य है। वार्य कार्य कार कार्य का

भिनु धर्मका उदाच दिव और रवक्ष्य स्टेक एनमा निवन नही रहने पाता। क्यों ही में गुर बहलानेकी अभिज्ञाया रहने नाल ज्यानियोंकी इदि हो, और झानपी दीनना होने हुए वे मर्यादामें बाहरवी बाने बहने झुनने जो, खो ही उनमें अनेक विकर्षन कीर तर्कपूर्व बानें विकास भी का गुमते हैं, जो भोरी समाजने वर बरका कभी वभी बड़े बनकेंट कारण कर है। जनतान स्वाच्यावके सम्बचनें भी दसी ही एक बान उत्तक हुई ह जिसका हमें बड़े गर बनना है।

पर्यक्षणमधी इससे पूर्व नीत किंद्र प्रकारित हो चुकी हैं आर अब चीची जिल्हा प्रकारित । मा पृथ्व की है। इस निर्देश ने प्रभाव, स्वाध्य आहे व्यवस देशकर हम अल्डा प्रचार ख्याद्य स्ताद हा गांदि है। तम अर्थास अस्त अपूर्व अस्त त्यात का अनुसन सम्म सहया है दिक्का अर्थ के वह सिद्धा स्थाद कार्यने मुद्देश्य संस्थानका हुए सद्या तमा गया है। प्रकार के अस्त कार्य हम स्वास्त सुद्ध है है रेजी सुद्ध

s स्वयुक्त शृहयात्मा रह याय संयक्षात्रयः । तान क्षेत्र सूरम्थाना वः वसाप्त र म तिकः।

२ साहापदान बाध्यपन संस्थान संग साहारदान

६ बाज्यांभर्म्थामा सूत्रां सारतकात रागमः अन्यराध सारण सिद्धानः यावण कृत

पठन-पाठन का मार्ग मी छोल दिया है।

मधुरा, की ओरसे उसका कार्य भी प्रारम्भ है। गया, तथा सेठ गुजारचदजी शोछापुरकी सहावकते स्वाध्यक्ते सम्बच्धे भी एक सिभिने सुसगिदित हो गई है। श्रीयुक्त मनैयाजी हेगड़ेने तीनों विदन्तिके मृहणाठको ताडपनीय प्रतियोक्ते आधारते प्रकाशित करनेत्री रक्षीम भी प्रस्तुत यो है। प्रशिक्त सिद्धातका स्वाध्याय भी अनेक मिद्रों और शासमडारों व गृहोंने हो गहा है। यही नदी, वर्ष्याय भी अनेक मिद्रों और शासमडारों व गृहोंने हो गहा है। यही नदी, वर्ष्याय भी अनेक मिद्रों और शासमडारों व गृहोंने हो गहा है। यही नदी, वर्ष्यक्रिय मिप्तिकद जैन पर्गशास्त्र प्रमाणको अपनी सर्गत होती परीक्षाके पाठ्यक्रममें सीमिटित कर इन सिद्धातों के सम्बोधिन

इस सन प्रगतिसे निहत्ससार को वटा हुप है। जितु एकाथ विद्वान् अमा ऐसे मी हैं जिहें इन सिद्धार्तोंका यह उद्धार प्रचार उचित नहीं जचना∗। उनके विचारसे न ता इन प्रपोक्त मुदण होना चाहिये, श्रीर न इन्हें निवाल्योंने अन्ययन-अव्यापनका निषय बनाना चाहिये। यहां तक कि गृहस्थानको इनके पृट्ठेकका निषेत्र कर देना चाहिये। उनका यह निके कि लिखन आगम और श्रीक पर निर्मेर है—

- (१) अनेक प्राचीन प्रवेशिय चह उपदेश पाया जाता है कि गृहस्योंको सिद्धारोंके प्रवक्त पटन या अध्ययनका अधिकार नहीं है।
- (२) सिद्धातमा ये दो हो हैं जो कि धनल, जवधबल, महाधनलके रूपमें टीस श्री उपटच्य हैं, बार्ज सभी शाल सिद्धान्तमध नहीं हैं।

प्रयम बानका पुष्टिमें निम्न लिखित प्रयोंके अवतरण दिये गये हैं---

(१) यपुनिद श्रायसचार, (२) श्रुनतागरून पट्मामृतटीका, (३) वागदेक्त भारतच्द्र, (३) गेपारीकृत धर्ममन्द्र श्रावसचार (५) धर्मोपदेशलीक्यवर्गाकर श्रावसागर

<sup>•</sup> देखा प सक्तनाटाल कामी लिखित 'निद्धा तकाम और उनके अध्ययनमा अधिकार', मारना, वी स २४६८

१ िनर्गाहम बारचरिया विवाखजोगमु जन्त्रि अहिषारो । सिद्धत रहस्सान वि अभ्ययन दससिरहान॥१११॥ ( वस्तनिद आस्पन्ति) १ बंग्सचन च मूर्वतिमा त्रीमस्यगेरीमयमस्य । सिद्धान्त्ररहस्यादिष्यस्यया मास्ति दसविरसाम्य ॥

<sup>्</sup> श्वासार-पर्शामनगृहा ) इ. वन्धि विद्यालवामाऽस्य प्रतिमा कार्यसम्बद्धाः

६ वर्षेत्र विकालवामाः स्व बीतमा चार्वमासुन्या । स्वस्यप्रमसिद्गन्तश्रवण माधिकारिया ॥ ५२० ॥ / ज्ञान्तर्वाप्रमाण

च करवनः वीरचराणप्रतिमानारनाद्यः । स ध्यावकस्य निवानसहस्थाव्यवनादिवस् ॥ ७४ ॥ (स्थाता धर्मनेत्रसारनादार)

५ दिरुण्यक्तियमा बरस्या च सस्या । विद्यान्तास्ययन सूत्र्यानमा नाति सन्य ये ॥ (पर्मोपरक्षावस्यासर सास्त्रस्य)

६) हजनिवङ्गत नीतिसार और (७) भाशाधरङ्गत सागारधर्मामृत ।

हन सब मरोंमें वेपट एक ही अर्थका और प्राय उंही शन्दोंने एक ही पद पाप ाता है जिसमें बढ़ा गया है कि देशियत शायक या गृहस्पकी बीरचर्या, सर्वप्रतिमा, विकास ग और सिद्धान्ताहरूपोर खप्ययन करनेका अधिकार नहीं है ।

जिन सात प्रपोर्नेसे गृहस्पको सिद्धान्त अध्ययनका निपेध परनेवाटा एव उद्दूष्टन हिया गय उनमेंसे न ५ और ६ को होडकर क्षेत्र पांच प्रथ इस समय हमोर समान उपस्थित है लिदिएन श्रापकाचारका समय निर्णीत नहीं है तो भी चुकि आशाधरके प्रयोगें उनके सवनर पे जात है और उनके स्वय प्रपोंमें अमितगतिके अपतरण आय है. अत वे इन दोनोंके कीर पीन निकामनी १२ हवी १३ हवी शस्त्रादिमें हुए होंगे । उनके प्रपत्नी बोई टीका भी उपरूप ी है, निससे देखकरा ठाँर अभिप्राय समझमें आ सरता। उनरी गायाकी प्रथम पतिमें बहा गण कि दिनप्रतिमा, व रचवा और तिकालयोग इनमें (देशविरतीका ) अधिशार नहीं है। दूसी के हैं 'सिन्द्रतरहरसाण विभागायण देसविरदाण '। यथार्थन इस पश्चित्री प्रदम परित्री गरिव भादिवारा " से समति नहीं बैटनी, जब तक कि इसके पाठमें हुए परिर्यनादिन किया जाय। सेवतरहरसाण ' का अर्थ हिन्दी अनुवादयने ' सिद्धातने रहस्यता दन्ना ' ऐसा विया है. जे

 डळटने हैं तो सम्पालके उधार्गमें देगते हैं— असागमतकात व सरहण मुनिम्मल होति । सनाइदामरदिये से सम्मल गुणैदन्य ॥ ६ ॥

अर्थात . जब आप्त आगम और तत्वोंने निर्माण श्रद्धा हो जाय और राजा आदिक बोर्ड दोव ी रहें तब सम्बन्ध हुआ समझना चाहिये। अब बचा सिद्धान्त प्रथ आगमसे बाहर है. को रहा अध्ययन प रिचा जाय <sup>है</sup> या शरादि सर दोवोंना परिहार होहर निवल ख़न्ना उ**हे** हिला ेदी उराज हो जाना चाहिये। आगमरी पहिचानने लिये जागेरन गायाने बहा गया है-

शाधरनीके किये गये आस भित है। अयसस्या अभिप्राय समझनेके लिये जब आने पीटेके

भत्ता द्रोमतिमुद्रो प्रकाररनामत्रज्ञिय वयण । अर्थात्, जिसमें के दे दोप पहीं वह आप्त है. अर जिसमें प्रशास शिक्षणी देप न ही ्यचन आगम है। तब क्या आगमको बिता देखे ही उसके पूर्वाण शिवना त्विका कर्व बार कर शक, निर्मा अदान बर एनेका यहाँ जादेश दिया गया है। जैसा हम दर्भेने, अरगम और निर्देशन हारी अर्थके घोतर पर्यापयाची हाए हैं। वहीं इतमें भेद नहीं किया गया। अने देशी नहीं र्नियों में कहा गया है--

भावकी चीरचवाद प्रतिमानायनादित । स्थाबानिकारी विकामसद्दरपाण्यस्य वि च ॥ » भ ॥

( هستلافسختت أ

शाविकाणो सुद्रस्थानां निष्यान्तरपर्वेशसम् । व बाबनीयं पुरनः निक्रान्ताबगपुरनकस् ।!

कामे कागुरवरणे कामवनस्मि तह व सर्जाव । त वन्यिन्यं कीन्द्र निर्णय न वास्त्रिमका ११ ३०० अ

अर्थात्, ज्ञान, जानके टपकरण अर्थात काम्य, और नानवराकी नित्य मन्ति करता है। ज्ञानवित्य है। और मी----

दियमियविस्त मुत्तागुर्रात भवस्यमहरूत बयगः। मजनिजर्गास ज बाहुमाना गाविमा शिल्ला ॥ १००॥

क्षपीत, हित, मिन, प्रिय और मुष्य में अनुसार नान बोजना आदि यसनिवय है। इन गापाओंने जो शान, ब्रामायन्य और हानी का अजा अजा उद्धा पर उन र विनयश उदेशी दिया गया है, तथा जो मुबने अनुसार जनन बोजन का ओदश है, क्या इस निवय के ब्रुट्स सरणमें सिद्धान्त गर्मिन नहीं है। क्या स्वका अर्थ मिद्धान बारव नहीं है। हम आने चड़रा देखेंगे कि सूत्रका अर्थ साक्षात निन सम्प्रास्थ दिया अपना देश निर किर हाहरी वि सम्बन्ध रखनेया सिद्धान अर्थोंने पटनका सुरस्यकों निया निम प्रकार किया जा सहना है।

अत्र श्रुतमागरतीका षट्प्रामृतदीराको टाजिपे । कुदरुराचार्यस्त म्त्रगहुरकी २१ वी

गाया है----

हुइय च बुदालिन सांक्टू अवर मात्रयाण च। मिक्क ममेड पत्ती समिदीमानेण मीणण ॥

इस गायाम आसायने प्यारहर्षा प्रतिमानारी उद्दूष्ट आयक्तने उद्याण कल्लाय है कि वर्ष मायासिनितिया पाउन करता हुआ या मीनसहित मिस्नाने लिये अमन करनेया पान है। हो गायाकी टीखा समायत हो जानेने पासा (क्ष्म प्रसाननाम महाविका) कहके चार आपर उद्दूष्त की गई है, जिनमें चीपी गाया है 'बायच्या च क्याविमान ' आहि । यहा न तो इसकी योई प्रसान है जीर न पाइडगायाम उसके डिप कोई आधार है। यह मा पना नहीं चटना कि कीनसे सालतमाद महाक्षित्रेश स्वामीसे ये या उद्गुत किये गये हैं। जैनसाहित्यों जो समायता स्वामीस है उनकी उत्रूष्ट और प्रसिद स्वाओंने ये यम नहीं याये जारे। प्रभुत इसके उनक रिवर्ष अमहाखायों जैसा हम आगे चडकर देखेंगे, भारको पर ऐसा कोई नियंत्रण नहीं उनाया गया। सन्तर्य वह स्वामाण कही तक प्रमाणिक माना जा सक्ता है यह दासायद ही है।

स्वय बुदबुदाचार्यरी इतनी बिस्तृत रचनाओं में उद्दी भी इस प्रशास्त्र केश्र नियमण <sup>नही</sup> है। इसी मुसारहरूरी गाया ५ और ७ से दिखिये । वहां सद्धा गया है——

> मुनष्य क्रियमणिय झोवापात्रादिबहुविह भाषाः हवाह्य च तहा आआगह् सा हु सिद्गि ॥ ५ त मुनष्यपर्यावगहा सिम्डारिजी हु मा मुणवस्ता ॥ > ॥

कारात, ना बाह जिनकान क्त करे हुए स्प्रोंने नियन आव, अनार आदि सारणी साना प्रवासे अवद्या तथा इयं आर अदेवरा नानना हे बहा सम्याहीत है। स्वाहे कविने कार हुआ सनुष्य निर्माहीट है। यहां शुनमागरता अपना टीसाने वहन हैं / स्वस्थाय विवेद मिला प्रतिवादित ... प पुथान् कानाति वेति स युवान् रकुरं सन्वार्ष्टिर्मन्ति । स्प्रार्थयद्वितस्य युवान् मिम्पारिहिनि ह्यासम्बार्

"वे (धुनमागता) बदा तो वे हो, अहिंद्यु भी बहुत ज्यान थे। अप मज़ेंशं खडन को शिष तो अगेंने भी स्थित है, परन हुंते तो खड़कांके साव धुने तरह माहियां भी दो है। मबते ज्यादा आकरण होने माहियां मा चनकां छोजागान्छ ( हृदियां ) पा शिक्तां के ही जिल्ला में स्थान है। अहरत मैं कहते वि व होंने प्रताक में परन होंने माहियां भी परवा नहीं को । उदाहरणोंके तीरत हम उनती पट्टाइटपीकां में पेश पर सनते हैं। पट्टाइट भाववहुं रहुद्वा अप है, जो एक परनसिंख्यु, य निविध्य और आव्यानिक विचालक थे। उनने मधीने मा तरहते समा प्राव है हो नहीं कि उनकी टीक्से हिमारें एक्सों मा प्राव है हो नहीं कि उनकी टीक्से हिमारें मा सम किये जा एक्से, परत जो पढ़लेंस हो भारी के हो ते को है न कोई बढ़ाना हुए हो लेता है। उत्तेनाहरूकी मा नाजवरणों बादनी पट्टी हो गाया है—

वसनमुख्य धम्मो उवहटा क्रियरोर्ड मिस्यान । त सोक्रम सक्नमे दसगढीना न बहिन्दो ॥

इसरा सीचा अर्थ है कि जिन्देयने शिष्योंने उपदेश दिय है कि धर्म दर्शनस्त्रक है, इसिकेंग्रेज से सम्बन्दर्शनने पहित है उसरी बदना नहीं करनी चादिय। अपानु, वालि तमी बन्दर्शन है अब वह सम्बन्दर्शनने पुरू है।

हम सरवा निरुपत्रव गायाको टीकार्ने कल्लिकान्सम्ब स्थापकमामियाँग सुरी तरह बरस पडते हैं आर कहत हैं----

९ धरमायतारितंत्रह (या. घं.या.) युनिको पु. क २ अतनाहिको जीर फॉनहास च. नाषुरायपमी कृते पु. ४०७-४०० ° कोऽयो त्यानदीन-वृक्षि चेन् वायकस्परनदेश्यधियोन मानवाति, न युस्पादिमा यूनवन्ति र वीर्ष क्रम्पुबमुख्यते तददऽश्तिनदेशक्तरवनेन विषेषनीया । तयापि यदि कराग्रद न मुखीत तदा समर्थेगीकके

रानांद्र गुपाडिप्ताभिर्मुचे वादनीया , वत्र पाप नास्ति !

अर्धात, दर्शनहीन कीन है, जो तीपैरम्मनिमा नहीं मानने, उसे पुष्पादिसे नहीं इनेते बब दे जिनम्दरा उद्धान करें तब आस्तिओं ने चादिए कि युक्तियुक्त नवनोंसे उनका निषेध कों, रिम भी बीदे वे करामद्द न छोड़ें तो समर्थ आस्तिक उनके मुँदगर निष्ठासे छिपटे हुए जूरें मीरे,

सर्चे जग भी पार नहीं । " यह हे कुनसागर निधि भाषाममिति और उन३। आप्तता । ऐसे द्वेपकूर्ण अधील बास्य एक

यह ह दुनसागतास भागामात आर उन रा आसता । एस इन्यूग वरुष्ट अन्तर १०० इन्हें नहीं है जिस साधारण शिष्ट व्यक्ति में मुनसे भी न निकल सर्केने । अब बामरेवजीकमार समस्को छीजिये जिसके ५४७ वें स्टेंग्क 'नास्ति विकास्येगों'

कर बात्यवारिकारिकार संबद्धा जावन जिस्ता पेक्षण व क्यार्ट नास्तावकारण कर्दि गण्डुमें इतिमारे भारी शामरते 'संबद्धात घरण' के अभिकारसे बर्जित किया गया है। बच्चेक्ड में कात्र किमसी १५ दर्भ सा १६ दर्भ सतान्दि अनुनान किया गया है, । उन्हों ' क्याब्या के किया गया है, । उन्हों इस कृषिके त्रियमें वस मयकी मुनिकाम कहा गया है—

र रिन म्मून रुपा स है। उनकी इस कृषिके दिखमें उस प्रवर्क भूमिकामें कहा गया है— "दह संप्रताद साथ प्राप्त मासलदवा ही सस्हत अनुसद है, दोनों प्रवीको आमने

रण्या स्परत राज्या यह बात अच्छी तरह समझे का जाती है। यदिर य बामदेवजीने समें जगह उत्तर अरेक राज्या, प्राप्त और संशोधन आदि किये हैं, पिर भी यह नहीं कहा जा सकता

िरद करण प्रेन हैं। रिप्टन नी दक्षित अच्छा होला, महि प वामदेवजीने अपने प्रवर्षे दण्ड रूप कर के देनी हण

सम् पाँच जना जा सम्मा है हि बाबदेश्याँ हिम दाँके छत्क और विद्यान् थे। एक क्राप्टेंन बेंग्ड्रानी मांच वर्गा स्वामा उम्मा नाम निमे विना ही चुपचाप उमका क्रपालर स्वामा क्रिक्ट करने सा पर दगहें। उनमें बहु उन्होंने क्रिया है स्वाम्य करने क्रपाल के निमान क्रया हमें सामुन है। उनसे बोई छहती वर्ष क्रपाल करने क्रपाल के जिने निमेशन नाम निमान करा गई। है। अतर्व स्वाह है कि स्वाह करने क्रपाल के जिने निमेशन क्रया निमान करा हो है। अतर्व स्वाह है कि

कर हरू है वर जिल्ला "त तपरशास क्षेत्रिये। इसमें उक्त निपधे और मी ' बण उपन्य एक हिला है। तर बहा रूल है हिला

कार्यक्रमा १९ वार स्टार्यक स्थान सम्बाध सम्बद्धाः सिक्टाशासानुस्तकस्य ॥ कार्यः कार्यः स्थानस्य स्टार्यस्य स्वाधिकार्यस्य स्वित्राचित्रस्य सुरियोधि सामने भी तिहाल शाल नहीं पत्र चाहिते।" इसके अनुसार गृहस्य ही नहीं, रिन्तु करमुद्धि मुनि और समाल अकिश्चर भी निश्चक छरेटेमें आयरे। इसरा उत्तर हम स्वम निहाल मदारागुके सम्दोंने हो देश चाहते हैं।

सबीत है ५ है इसकी टीमा है---

े सप्य हमाणि कडु अशिक्शमहाराति " पुत्रदेवाल, शेवस्य मान्यशियकावादिति केनन दाय , सन्त् इदिस्तरवाजुमहामेथित् ।

अपीत्, 'तथ हार्मान कड्ट किंगवायरातान ' हाने मात्र प्राप्त वार घर पार पर, चार दा दीयी सुत्रमें सार, प्रकार ही नहीं थी, उनवा अप वही गर्मिन हो सहन प्राप्त दा करा है। इस प्राप्त सार, प्रकार उप हो दार नहीं है, विभीते, प्रप्त प्राप्त अभिग्न में प्रकार पर प्राप्त के प्रमुख्य के प्रकार के प्रमुख्य के

पूरी बात आवायजीने यंग्ल यही बद्ध दी हो, शो बात भी नही है। बरीतर में हैं। देनिये जो हत प्रवार है 'आवल भीच विकारिहा। 'यहां घ लावार पुत बद्ध है वि—

वपोदेशस्याः निर्देश दृष्टि «स्वार्यः क्षेत्रसिष्यास्त्रकारिः आद्येत्वरावने कारदृष्टवस्यान्यः सन्तर्वदिक्षिति न, स्वयं द्वाप्ये जनानुसदार्वासम्, सर्वदेशसम्बद्धस्यस्थिति । दि विका व सम्पन्नम् ।

कर्यात, जिल प्रकार उद्दार होना है, उसी प्रवार निर्देश किया काणा है, दन पिराव अनुमार तो 'आप' सादका मुक्ते न स्तवन भी उसवा अप स्तवन का सक्त का कि पर बा यही पुतरुष्पाल अवविष्ठ हुआ। इस साम्या आयाय उत्तर देते हैं कि नहीं हुटेट कर क् असाव मान्युदिवाल कामवे अनुमहत्व कामस्य स्वता मान्य प्रवार कर की का मान्य जिलाइक सा जीमा हात है असाव विश्वास भी ताल ही स्वता के का का कर क

अस्त्र अर्थाच्या सम्बद्धिक स्वयः हो हार्या के क्षेत्र सम्बद्धिक सम्बद्धिक स्वयः के क्षेत्र के क्षेत्र सम्बद्धिक स्वयः के क्ष्यं के स्वयः के क्ष्यं के स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

प्राणियोचा उपका वाला फाटन है वयत मण्डिय बांदर तक है गई। सद १ १६

A . A

(2)

षट्खडागमका अस्यावना समानता है, इसकी इसके साथ नहीं । अन किरमे इसका कथन यत्ना नि ४७ है । इसप्रथम

साचार्य समाधान वरते हैं कि-

ंन, वस्य दुमधमानिः स्पष्टीकाणाधस्यात् । प्रतिपात्तस्य दुशुन्सितायविषयनिर्णयोगादन वर् बचमः फल्म् इति यापान् ।

अर्पान्, दुर्गेक शक्ता ठाँक नहीं, क्योंकि, दुर्भेष दीगोंकी उसका मान स्पष्ट हो जाने, गई वसमा प्रयोजन है। न्याय यही कहता है कि निज्ञामित अर्थका निर्णय करा देना ही बन्धक वचनींका पा है।

ासी प्रसार प २०५ पर कहा है कि-• भनत्रगतस्य विस्मृतस्य वा शित्यस्य वभवणादस्य स्वतस्यावतारातः अर्थात् उसे जिस बातवा अभी तक शान नहीं है, अथना होक्त निस्मृत हो गया है, ऐसे शिल्पक प्रश्न वहा इस मूत्रवा

अन्ता हुआ है। प ३२२ पा कहा है द्रामाधकनपान सावानुमहार्थ सम्बन्त । द्वांनी बांबायातः। अस्यायाय विकारगावरान तप्राण्यपभया प्रशुक्तवातः।

अर्पान् उक्त निरूपण द्रव्यार्थिक नयानुसार समस्त प्राणियोकि अनुग्रहके विचे प्रश्च हुआ है। मिन्न मिन्न मनुष्योंकी भिन्न भिन्न प्रकारकी सुद्धि होती है। और इस आर्थ-प्रथकी प्रशृति ती विशाउनर्य अनत प्राणियोंकी अमेक्सने ही हुई है। पु ३२३ पर कहा है कि 'जावारकरन

भाषस्थारकानिरमनाधमाहः ' अर्थान्, अमुद्र बान किमी भी भन्य जीवकी शकाके निवारणार्थ कही गई है। पृ ३७०

पर बदा है---विनित्तवृद्धिजनानुप्रदाय द्वस्यार्थिकनयादणना मन्द्रियामनुप्रदाय प्यायाधिकनयादशना ।

अपान, ताश्म बुद्धित ले मनुष्याके लिये ब्रन्याधिकतमका उपदेश दिया गया है, औ मद बुदिवारीरे जिपे पपार्थाधरमयका । तृतीय माग प् २०७ पर कहा है-

व पुत्रा पदापा वि जिल्लायण समन्त्र सद्बुद्धियलाणुग्याहरूहाण तस्य सामलाहा । अधान, जिन मगशन्त्र बजनामें पुतरुक दावकी समावना भी नहीं बरना चाहिय ब्योंकि, मार्जुद पारेवा उत्तम उपकार हाता है, यही उसका साफल्य है। पृ ४५३ पर वहाँ है-

मुद्दमास्यम्म । १६४म वृषद् " वा सर्वात्र सन्तम्यम्यनात्रिमणागुराह्यामणा सहायणमा ! च्यतः, असुक अत्रास्यास्य प्रमाणानात्र कर्ते । । इत्तरियाः, विक्तार क्यों क्रियात्र इसक टला है। सम्मार, साथ द्वारा अपनामा भाव, नाममी प्रसारक गामका अनुमाद करनामा ।

24 58 7 8 7 7 19 7 mg 7 1

द्वी बन्द्र क क व व वहा है ....

दिमहनुबन्दन किर्मा द २१ रे न समयनवादिस्थलमा राजुतहाथ पात् । व तहसा विद्या अपि

meren, eretrigationes anamiti कर न, प्रकार न दार अन्य आर अ ,शा, एसा दा प्रश्नमारी क्यों निर्देश दिया गया है दै। पुन पृ ११५ पर कहा है—

पुरेण हरत्रपञ्चरद्वियणयपञ्चायपरिणद्ञीत्राणुग्गहकारिणा विणा इदि जागानिद ।

अर्थात्, अमुक प्रकार व पनसे यह ज्ञात वरावा गया है कि जिन समग्रन् इच्यार्षिक और पर्यापार्षिक इन दोनों नववनी ओवोक्स अनुबद्ध वरनेवाले होते हैं।

प १२० पर यहा है---

े हिमद्र जरेसु तीसु सुनासु पाजवनवद्याला । बहून जीवागमणुगाहद्व । सगहरद्यीवाईंश बहून रिन्यररह्मीवामुबन्मादी ।

अर्थात, इन तील सुत्रोमें पर्यायार्थिनवसे क्यों उपदेश दिया गया है ' सुबन उटर है कि जिससे अधिक जीवोंका अनुमह हो सके | सञ्चयहिषकों जीवोंसे विस्तारहिषकां जीव बहुन पाये जाने हैं । प्रदृष्टि पर पाया जाता है—

उत्तमव किमिरि पुणा वि उच्चर घरणभावा । ण भरवृद्धिभविषत्रमयभारणगुवारण वरुनेशरुभारो।

व्यर्थात्, एक भार कही हुई बात यही पुन क्यों दुहर्श जा रही है, इसका तो बोई कड़ मही है ' इसका उत्तर आचार्य देते हैं— गृहीं, मण्युदि भण्यज्ञोंके समावद्वारा उत्तका कड़ पण जाता है।

ये घोडेसे अजनला धवलसिझानके प्रशासित लसीमेंत िये गये हैं। समन्त परज और जयध्यलमेंसे दो पार नहीं, सन्तर्भ असला इस प्रशासित दिय जा सकते हैं जहां हरण धन्त करियात सिस्तामीने यह राएट निजा निर्मा आति रे प्रशासित हिया सिन्तामीने यह राएट निजा निर्मा आति रे प्रशासित हिया है निर्मा लिए, मारसे मार मुद्दि योजे और महामेधायी शिप्पीके समाधानके लिये हुई है, और जनमें जो गुजरानि व निन्तार पाया जाना है यह हसी जदार प्याप्त प्रशिक्त हिया है। हरण धन्यामारे हो सुन्तर अभिन्ति स्वाप्त प्रशासित है। स्वाप्त प्रशासित हमाधान सिंपी सिप्ताम अधिकार प्रशासित हमाधान हमा स्वाप्त सिन्ताम अधिकार सिन्ताम सिन्ता

अब द्वारे सम्बुद्ध रह जाता है पहित्तवर आगाभवनात्र वचन, जो विनवता ११ ही गतादिवा है। बनवा यह निरोमावह भेग समाप्तम मुगन सत्तत करणात्र ५० दो एट है। इससे पूर्वत १९ वें कोनमें ऐक्पनी स्वामिण्य निम्नीतात्र विभाग उद्देश है। तर कारेंद्र ५१ वें कोनमें साववेंत्र हात, होत्, जनात दिन किसान न जनस्य हिसा गया है। इन होनोंने भीच यत्रक वही हम कान हिसानम दिया गया है। हीनमान क्रणाप्तरीत अपने क्षेत्रींतर स्वय टीश भी जिल दी है जिल्ले उत्तर श्लाहमत शिम्प्रण पृष्ट सुन्तर श जाय | उन्होंने अले---

'स्वाक्षप्रिकारी विद्वान्तर-स्वाज्यक विच का अर्थ स्थित है । श्रिष्टान्य वाजानामा क्षे स्थास रहस्तम्य च प्राविजनायान्य मण्यक वार्र आरको नर्ने कारी स्वर्गरित सरव ।

अर्थात्, सूत्रस्य प्रमाणमे अय्यवादा अधिकार मात्रको नही है। अर प्रभ ख उपायिन होता है कि सूत्रस्य प्रमाणम किसे बहना चाहिरे। त्या भरिमेन-किसमेन गीन प्रमा अयुवाल टीकाए सूत्रस्य प्रमाणम हैं, या यित्रक्ति चूर्णिन्त्र वर्गमाणम हैं, या मगरा प्रमान और भूतबिल तथा गुणपर आचार्यों के रचे वर्गमामून आर बयायाम् के सूत्र व सूर्णायण सूत्रम प्रमाणम हैं। या ये सभी सुत्रस्य प्रमाणम हैं। मृतकी मानाच प्रिमाण तो यह है—

• या य समा सूत्रकर परमागम ह • मूत्रका मामा य पारमाया ता यह ६— अल्याहरमयदिग्य मारवद् गृजनित्यम्। अन्याममनत्रयः च मूत्रं गूर्वाददे रिट्ठ वि

इसके अनुसार तो पाणिनिके स्याकरणमून और बाज्यायन के काममून मी मून हैं, और पुष्पदन्त भूतजीव्हत कर्मजासून या पट्खागम और उमाश्वादिक तत्वार्यमून आदि प्रथ सभी हुन कहे जाते हैं। किन्तु यदि जैन आगमानुमार सूत्रका विरोध कर्ष यदा अलेकिन है तो उसकी एक परिमाया हमें शिवकोटि आचायके मणजता आराधनामें मिळनी है जहां करता गया है कि—

सुत्त गणहरकद्विप तहेव पत्तेयबुद्धकद्विष थ । सुदकेप्रिणा कृत्यं स्नभिष्णद्रमपुष्टिकद्विष च ॥ ३४ ॥

इस गापाकी टीका निजयोदयामें यहा है कि तीर्धनरोके कहे हुए लंधकी जो प्रिवित वन्ते हैं वे गणवर हैं, जिहें बिना परोपदेशके स्वय शान उपन्न हो जाय, वे स्वयद्वद है, समस्त युन्तीपक धारक श्रुतकेवर्डों हैं और जिल्होंने दशक्षीका अध्ययन कर दिया है और दियाओंसे बटायमन नहीं होते, वे अमिन्नदशस्त्री हैं। इनमेंसे किसीक हारा भी प्रियत प्रयक्तो सूत्र बहते हैं।

कब यदि हम इस कसेटी पर पट्खरागन सिद्धातको या अन्य उपच्छ प्रयोजो कसे तो ये पर पर्न 'सिक नहीं होते, बयीकि, न तो इनके रचिवता सार्यकर हैं, न प्रयोज उद्दुर न कुन वेचली और न अमिनदराइवी हैं। यरिकानार्यको तो क्वाड आग-पूर्वीका एकरेड़ा हान कावार परमपासे मिला था। यह न होने प्रयोजनेटरेके मयसे पुण्यत और उपक्रक कावार्योको विश्व दिया और उसके आधार पर कुछ मयस्वना पुण्यत तने और युज मुत्रविलेन की, तो पट्खरागन नामसे उपक्रक है और नित पर विज्ञमंदी नीती शतान्दिस बीरिकानार्योज घवल शैरा दिखी। इस प्रशास परि हम आसापराजी हारा उक सुश्को सामाप कर्षमें लेते हैं तो पट्खरागन एजेंके अनुसार तररायंगिनमसूर भी सुत हैं, सर्वायासिह भी सुत ही ठहरता है, वर्गीकि, हमें पट्खरागन सुत्रीन सहस्त क्यातर पाया जाता है, गोमप्रसार भी सुत है, क्यांकि, हमें भी पट्खरागन स्पत्रीन सामस्त अर्थान सुज्ञम्यति सुत्र अपन प्रयास हमें सामसी आसानार्थन परिवार सुत्र हमें भी पट्खरागन के प्रमेगीशन समझ, अर्थान सुज्ञम्यति सुत्र किया गया है, हलादि। पर यदि हम सुत्रा अर्थ मणनी आसानार्थन परिवारसार है, तो ये वोई सी प्रय सुत्र नहीं दिस होंगे। सुत्र विद्वार से सिप्तिसे बचनेरा कोई उपाय उपक्ष नहीं है।

शलकवेवाजितराजस्यप्रवेतामार्गा मित्रवस्य च स्यात् । हीनाऽपि रुप्या रुविमन्तु तद्वद् भाषादसी सान्यप्रहारिकाणाम् ॥ अर्पात्, जिस प्रकार एक मोनी जो कि वाति-रहित है, उसमें भी यदि सर्का के हाए जिस

कर सून ( डोग ) पिरोने योग्य मार्ग कर दिया जाय और उसे कादियाउँ मोनियोंकी मालामें निरो दिया जाय तो वह काति-रहित मोता भी कातिबांक मोनियों के साथ बैमा ही, अर्थान् कानि सहित ही सुरोभित होता है। इसी प्रभार को पुरुष सम्पन्दिष्ट नहीं है वह भी पदि सर्गुरेक बचनोंके द्वार आहतदेनके कहे हुये स्त्रोंमें प्रकेश कलेगा मार्ग मात कर छे, तो बर् सम्पत्त्व रहित होतर भी सम्पन्दिथोंने नयोंने जाननेनाले व्यवहारी लोगोंनी सम्पन्दिनि समान ही सुरोभित होता है। सामारभवेष्ट्रको धीमा भी स्वय आसाधरनीती बनाई हुई है। उस स्रोक्तरी टीकार्ने सूत्रका अर्थ परमागम और प्रोक्तमार्गका अर्थ 'अतल्लास्तरीर छडनेगाय 'हिया गया है, जिसमे स्वट है कि आशा राजीने ही मतानुमार अवितमन्याद्यदिशी ते। बात क्या, सम्पत्रवरहित स्पक्तिको भी परमागमके अन्तरत्तरवज्ञान कानेका पूर्व अविकार है। और भी सागर धर्मापृत्के दूसरे अव्यापके २१ वे स्टाउमें आशाधरकी कहते हैं-

सरवार्ये प्रतिवयः तीर्वक्रयमाहाराय प्राप्तन मही राष्ट्रशावराजित्तमहासम्बोध्सर्तुहेवन । क्रोत वार्वमयार्थेयमहत्त्रवीत्याचीनगाकास्तरः वदास्त्र प्रतिसाममधिमुववस्थस्या निहस्त्यह्या ।। अर्थान्, तीय यान धर्माचार्य व गृहस्याचायने कवनसे जीगादिक पराधोंने निधित करके, एक देशन को धरते, दी असे पूर्व अपराजित महामात्रका धारी और विषया देवताओं का करती

तया अर्गो (हारशांग) व पूर्व। (चीदह पूर्वे) के अर्थसमहत्रा अप्यान वरित्र आप पाखीत्रा भी भगीता पर्वक आतमे प्रतिमायोगको धारण करनेवाटा पुण्यामा और पारोका नष्ट बरता है।

इस पर्येन आशाधरानि अजैनसे जैन बननेके आठ संस्कारी, अदान् अवनर, इन्डाम,

स्वानद्राम, गणवह, पूजागव्य, पुण्यवह, दण्यवा और द्रायोगिनका सक्षेत्रमें निकास सिना है. जिसमें उ होने जैन बानसे पूर ही अर्थान् अपनी अजैन अस्माने ही जैन धुनांगों अदाद बहर अग और चौदह पूरी ' अर्थसम्द्र' में अ प्रान बर स्तेश उपरेण दिया है। दूसरूप, पुण्या

और दृश्यमा कियाओं हा स्वस्य स्वय बीरसेनस्थामीहे जिन्द तथा अपरश्राहे उत्तरमागह स्वित्य जिनसेन स्वामी । महाप्राणमें भी इस प्रवार बनलाण है ---व्यक्ताच्यावयंत्रा वदाना क्रियाध्रय स्वान्त्रः यहा । प्रशासायमग्राया गृह्वना आध्रमहत्य ह

समोध्या पुरुवनास्या विचा पुरुवानुविभिन्नी । बास्वनः पूर्वविद्यानामर्वे समझकारिकः ॥ सणस्य दरम्यालया दिया स्थममयं भुषम् । निद्यान्य ग्रंपदेश समान्यकानम्योश कोश्वर ॥

यहां भी जैन हानते पूर ही गृहरूका अंगोरे अवसमध्या नदा पूर्वेका विदार्भे व द्वार

क्षेत्रेका पूरा अभिकार दिया गया है। ययनि मेभार इन भगनमहभारक बार इस समय इस र सामन वर्ष

है तपापि यह तो सुनिदित है कि प मेनाना या मीहा जिनच उमहारक के शिष्य ने आर उन्होंने अपना यह प्राय ति स, १५४१ में दिसार (पत्राप) प्रगरमें बगुपिद, आशास और समताके प्राचींके आधारसे प्रनामा था । धर्मायदेशप्रियुपर्याकर आवशाचारका तो इमने नाम श्री इसी स्म प्रथम बार देला है, और यहां मी न तो उसके कर्ताका कोई नाम-धाम बनलाया गया और न उसकी किसी प्रति मुद्रित या इस्तिटिबितका उद्घेष किया गया। अनरन इस अनान हुउ शेड प्रथको इम परीक्षा क्या करें ? यह कोई प्राचीन प्रामाणिक प्रय ते। शान नहीं होना । लेक्कन एक वर्तमान रचियेना मुनि सुधर्मसागरकाके लिखे हुए 'सुधर्मश्रायकाचार 'का मन मी ठरूर किया है। कि तु प्राचीन प्रमाणों की ऊड़ायोड़ में उसे छेना इमने ठिचन नहीं समझा। वह त पत्रोंक प्रयोंके आध्यसे ही आजका उनका मत है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गृहस्यको सिद्धा त प्रयोक्ता निवेध करनेवार्ड प्रयोमें कि रचनाओंका समय निश्चयत आत है वे १३ हमी शतान्त्रिस पूर्वकी नहीं हैं। उनमें विदानता अर्थ भी स्पष्ट नहीं किया गया और जहां किया गया है वहां पूर्मपर शिशेष पाया जाता है। कोर्र उचित युक्ति या तर्क भी उनमें नहीं पाया जाता । यह तो सुज्ञात ही है कि जिन प्रयोमें पूर्वापर विरोध या विवेक बैपरील्य पाया जावे वे प्रामाणिक आगम नहीं कहे जा सकते । इन्द्रनादिके बाक्योंका तो सीचे सिद्धात प्रयोंके ही वाक्योंसे किरोप पाया जाना है, अन वह प्रामाणिक किस प्रकार निवा जा सकता है। यथार्थत प्रामाणिक जैन शाखोंकी रचना और शासनके प्रवर्तनका चरमोना कार्य तो उक्त समस्त प्रशेकी रचनासे पूर्ववर्ती ही है। तब क्या कारण है कि इससे पूर्वके प्रशेम हर्ने गृहस्पक्रे सिद्धात अपोंके अध्ययनके सम्बावर्गे किसी नियतणका उद्धेव नहीं मिलता । श्रापकांचारकी सबसे प्रयान, प्राचान, उत्तम और सुप्रसिद्ध प्रय स्थामी सम् तमद्रकृत रानकरण्डशावका वार है, जिसे बादिराजमूरिने ' अश्वयद्यपादर ' और प्रमाच दने ' अडिड सागारमार्गको प्रकाशित करनेवान निर्मल सूर्य ' कहा है । इस प्रयमें शानकोंके अन्ययनवर कोई नियत्रण नहीं लगाया गया, किन्तु इसके विवरीत सम्यादर्शन, ज्ञान और चारित्रको सन्यादन करना ही गृहस्यका सञ्चा धर्म कहा है, त्या ज्ञान-परि•छेदमें, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्र यानुयोगसम्बाधी समरम आगमका स्वरूप दिभाकर यह स्वष्ट कर दिया है कि इनका अध्ययन गृहस्पके छिये हितकारी है। ब यानुयोगका अर्थ भी वहां टीकाकार प्रभाच द्रजाने 'द्र पातुयोग किद्वा तसूत्र' । किया है, जिससे स्पष्ट है कि गृहस्य के सिद्धा ताय्ययनमें उ दें किसी अकार की कैद अभीष्ट नहीं है । इस आनकाचारमें उपनासके दिन गृहस्पनी ज्ञान प्यान परायणे होनेका विशेषक्ष्यमे उपदेश है, तथा उत्हर आवक्रकें विषे सन्द्र या आगमका ज्ञान अच'त आपस्यक बनलाया है-समय यदि जातीत, भ्रेयो ज्ञाता धुन मविति भ, २० ' यदि समय भागम जानीने, आगमदी यदि भवति तदा मुद निश्चवेन ग्रेपो जाता स भवीरे ( प्रभावदक्त दीहा ) धर्मशिक्षादि प्रत्योके विदान् कर्ता अनिवानि आचार्य विकासने ११ इनी शतान्तिलें हुए हैं। हनका बनाया हुआ आवकाचार मी खुब सुविस्तृत सप है। इस मप्ते व होने 'क्रिन-प्रवचनका अभिन 'होना उत्तम धावकवा आवत्यक स्थान माना है। यथा---

षात्रभूतमनाइन्दिर्गुन्युन्तोवन । विनयस्थानिक स्वास्त्र स्वयाच्या ॥ १६, २ छापे प्रथम ट होने मृहरपही आसम्बर्ग अध्ययम् करना भी सावस्थक बताया है— साममाध्यक स्था हम्बागारित्रदिना । विनयस्थिपन बहुमार्यास्थानिन ॥ १६, १० मृहरपत्रो साध्याये उपदेशमें साध्यायये पात्र प्रवर्गमें बाचना, आसाय और खतुनस्थान भी विभान है। स्वास्त्र---

मा १४१म है। यथा---बावना पुरत्यात्राध्वरायद्विदेशा वर्मद्राचा। माञ्चास वच्चा कृष वच्ची ग्रीतिष्ट्यता ॥११ ८१ गृहस्थोंने जहां तत हो तते. स्वर जिनमानार्गे वचनीत्रा पठन और झान माज माना पाहिंय, नर्योद्ध, उनके निता वे कुरवाहुल विशेषस्य प्राप्ति, व आम अहेतरत्र सागा गर्दी वर माने १

कानापरूप न जने म रूप क्षेत्रभ्यर बास्यमयुद्धमानः। इर प्रकृत विद्यति रूप करमणे गण्डी हु समुम्य ॥ १३, ८६ सन्तर्मनेत परिदुशसा परीक्षमा इत्यामनेतम् । पर्योते परिदुशसा परीक्षमा इत्यामनेतम् । पर्योते परिवृत्तमाण्यास्य समस्तरमानीपर्योतं सेतः ॥ १३, ६० स्पार्थन् ५ पूर्ण् है जो स्त्र विनामानास्य यहे हुण सुरोते प्रदूषर दुर्गोत स्वनीस

आश्रप लेते हैं । जिनभगवार्ते वावयते गमान दूसमा अपून नहीं है---सन्वाप व साध्यमान्य जैन सहा अपने बचन परवाद । ३३, ५५

नावपद प्रत्य से भी भूगाभाज पातनत् । तथायरिक्य प्रभाव ग्रमुदार ॥
मृत्रावपदावर्ष भूगाभावदर्वत् विस्तानातः सर्वे वृत्यपेति हे राज्य ॥ ३ ११-वन्
स्ता प्रत्य प्राचेत स्वारामस्यते मृत्रामेतः नियं न वानः मितन्ताययम्बानित्य गृही विया, तित्तु प्रदानाम उत्तरा उपरेण दिवाहि। रमः उत्तर वत्रा हो आप है नियान भागार दुरद्वारायों अपन गृह्याहर्मे जिन्नायस्य बहु ए न्यूबे अब्द हान्यों सम्बन्धाना अस्तर आस्तर आ चरते हैं, अने गृह्याहर्मे जिन्नायस्य बहु ए न्यूबे अब्द हान्यों सम्बन्धाना

१ सस्याम नैमर्पर मेरमाण सोरपुर १९९८ १ अनुसर्भार्थ जैनम्बदाता सम्बर्ध १९७९

खुनावनारों के ऐसे अन्तरण दिये गये हैं, निर्मे कर्मणासून और करायावासून के 'सिद्धान' यहां गया है, तथा अपअस विरे पुणदुन्तवा वह अन्तरण दिया है जहां उ होंने धरण और जयभन्ने मिद्धान्त वहां है। किन्तु इन प्रत्यों के सिद्धान्त वह अन्तरण दिया है जहां ने धरण और जयभन्ने मिद्धान्त वहां है। किन्तु इन प्रत्यों के सिद्धान्त वह जानेसे अय प्रय सिद्धान्त नहीं रहे, यह कौनसे तहने मिद्धान्त नहीं रहे, यह कौनसे तहने मिद्धान्त नहीं रहे यह कौनसे वहने किन्ते वहां गया है कि प्रत्यान मिद्धान्त प्रत्यान किन्ते असिद्धान सिद्धान किन्ते हों है। के स्वतान स्वतान विर्वाद स्वतान स्वतान किन्ते अस्तान स्वतान स्वतान स्वतान किन्ते अस्तान स्वतान स्वतान किन्ते वहां हो सिद्धान स्वतान किन्ते हों होता वा स्वतान किन्ते हमें ऐसा क्षान स्वतान स्वतान किन्ते हमें ऐसा क्षान स्वतान स्वतान किन्ते हमें ऐसा किन्ते हमें ऐसा क्षान किन्ते किन्ते किन्ते किन्ते किन्ते किन्ते किन्ते हमें ऐसा प्रतान हमें सिद्धान स्वतान स्वता

अर १, राम, सिहान, प्रमान, ये मन पर ही आहे बापन हाट है। जाना भी हात्त और रिहानको स्वापना निकार किया है। यो नहीं, सिह्नु मुख्योंना सिद्धातारपत्तरा किया किया करें पर होते हीन वास्त्रीकों भी वे अपना र के स्वापन करें है। किया मिद्धातीं में किया के से मुद्धात करें नाते में सिद्धातार सिद्धात करें नाते में सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें के सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धात करें के सिद्धात करें सिद्धा

क्षुक केप्स्पट्टम है स्मिष्टर्गेत विद्यापन । कथ्य व व सम्मायाय प्रती व वृश्यि सम्प्रतम् ॥ ४ १६४ । इस इसके केर्नेत केल में स्मायाय कियान प्रश्नीय जना मन्ता । जैसे क्या उसके

इस प्रचारि प्रोतिय का रामस्यस्य दिसात धराधिक जरा राजा । प्रेप क्या उप विदार कर विदारों करण समार प्रवासकार परवार । अनुसे र

मी दिन दूत तम ज्यान रामन जैनम अर्थ (क्यांसा अव (त) त कासस मी दो मानना स्व है। मार ते सर स्वस्थाने माणस्य धी सी, वर्णुनार अपि तर मीनित्र के सामने मार्गुन हा तरासन स्वस्थात वा आहे ततावती है। अर्थुन महत्त्व महता मुख्या की तथ समस क्वीरित है, तथ उस बर्णा सामनास अर्थित साम क्षेत्र पाई भी सिद्धान्त प्रथ धारकों ने त्ये क्यों निपिद्ध किय जायगे, यह सगहमें नहीं आता ! सम्पर्भावता निर्मेत्र बनावते थि निद्धान्तका आध्य अस्पत बांडनीय है। समस्त शकाओंका निरारण देशक नि हाकिक अगसी उपक्षिक मिद्धा ताच्यक्ती बक्कर दसग उपाय नहीं । जिन सैद्धान्तिक बातोंके तक विवर्केने विद्वानोंका और जिज्ञासओंका न जाने किया बहुमूल्य समय व्यय इआ बरता है और किर भी वे टीम निर्णय पर नहीं पहच पान, ऐसी अनेक गुलियां इन सिद्धात मपोंमें सुन्ती हुई पनी हैं। उनमे अपने झानको निभन और विश्वतित बतानेका सीधा मार्ग गृहत्य जिलामुओं अर रिवार्धियों से क्यों न बनाया जाय है स्वय धन्नशिसद्वान्तमें बाहीं भी ऐसा नियत्रण नहीं रागाया गया कि ये प्रय मुनियोंको ही पत्ना चाहिये, गृहस्थोंको नहीं। बल्कि, जैसा हम जगर देग चर्क है, जगह जगह हमें आचापका यहां सकत मिछता है कि उन्होंने मनुष्यमात्रका एयार स्वारत वय एवान विया है। उन्होंने जगह जगह यहा है कि 'जिन भगवान सर्वसचीपरारी टाने हैं, और इसिन्ये सुबनी समतदार्गके दिये अमुक बात अमुक रीतिसे बड़ी गई है । यदि मिदान्तोंरी पटनवा निपेर है, तो बट अर्थ या विषय की दृष्टिसे है कि भाषारी दृष्टिसे, यह भी रिवार वर रेना चाहिए । धररादि निद्धान्तवयानी भाषा वहाँ है जो हरहदाचार्यादि आहुन अपकारोंकी रचनाओं में पार्ट जाती है, निसके अनेक ब्यावरण आदि भी हैं। अनुष्य भागानी दृष्टिम नियतम स्मानेका कोई कारण नहीं दिखता। यदि नियसी दृष्टिसे देखा जाय तो यहाजी तत्रवर्चा भी वही है जा हमें तत्त्वार्यमूत्र, सन्वार्यसिद्धि, राजगतिक, गोम्मटसार आदि प्रयोगें निज्ती है। पिर उसी चर्चांशे शृहस्य इन प्रयोगें पट सकता है, रुकित उन प्रयोगें नहीं, यह बैनों बात है । यदि सिद्धान्त-पठनुस्य निरोध है तो ये सब अप भी उस निरोध-कोटिमें आरेंग। जब मिद्धान्ताप्ययनरे निवेरसाउ उपर्युक्त अल्पन आधुनिक पुरुषकीका सिद्धान्तके पूर्यायगाची दान्द आगमम डिडिधिन किया जा सरना है, तब एक अत्यन्त हीन दलाँ के पारण-निमित्त गोम्मरमार व सर्गविमिद्धि जैस प्रयोंको सिद्धानवाह्य वह देना चरममीमाका साहस और भारी अनित्य है। यदार्थन सर्गविसिद्धिमें ता बमग्रामनो ही सर्गोका अक्षरत उसी तमसे संख्य रूपान्तर पाया जाता है. जमा हि धवराडे प्रजाशित भागोंडे सत्रों और उनके नीचे टिप्पणेंमि दिये गये संबायभिद्धिके अवनर्गोमें सहज ही देख सकते हैं । राजवानिक आदि प्रयोगे धवरागाले स्वय बन्ने आदरस अपने मनोंकी पुष्टिमें प्रस्तुत किया है। गोम्मन्सार तो धवनदिका सारभूत भय ही है, जिसकी गायाए की गायाए साथा बहास ही गई हैं। उसने सिद्धान्तरूपसे उद्धेन निय जानेका एक प्रमाण भी ऊपर दिया जा चुका है। एसी अवस्थामें इन पूर्ण वर्षोको ' सिद्धान्त नहीं है ' ऐसा बहना बड़ा ही अनचित्र है ।

में इस रिययरी निगर बराना अनारण्यर समझता हु, क्योंकि, बल निपथने एपेंम न प्राचीन प्रयोग बड ह और न सामाप्य शुक्ति या तक्षका । जान पडता है, जिस प्रकार वैदिय धर्मक इतिहासमें एक समय बेदक अप्ययनका हिजोंने अनिरिक्त दूसरोंकी निरेष निया गया था,



सण्या यही जीवण्या भी नार्ष में भीता ही भीता हो वारी समा वाने छता है, जिसके बण्या मा पूर्ण के ले सब पूर्व प्राणिता हो। यदि हावित्यमान जीतादेशों के दिस गामा नार्यों एक संस्थाने भूतकारिक पूर्ण हुए दिस्तेता व है बाह्य नहीं हुत जान हुए कि सामाय बही है हि 'आमान गाँवे भमाय बाते साम हुम्पेतिसमान स्थान हारों ना भी भमा वर्ष नां वर रेम चारिये '। आधुनिय म बनासाच्या भूममाना तो हुनी निभाव दिस स्थानमार्थ भी होना नहीं है। हुनीचित बही उस भूमिमानाना बोह उद्वेत नहीं हुनी होना।

#### पुस्तर २, ए ४२३

देशका— सबना । देसे प्राप्ति सामेले सवीशिक्षकोक्षक्ष असे भाद प्राणा भी (स्तरपटकी सुनाप सहस्तरह पर २४४४)

समाधात—कानुस प्रशन्म काचात जीवेश सामाच काचार बनगए गए हैं, जितमें समा भी एभी भी लगास एकदिव समेरे समात जीवारी विश्वा है, वेशकिसमुदात वैसी दिगाद करमाजेंदी था दिन गारी है। इसी यरण सारत्यदार इस बन्ध्ये गये दे प्राण्य मार्थ संस्थित मेर, न अनुवादों निजे गये, और न उठ नवरीये दिसारे गये। किन्तु युव मार्थ भवनाम ने ५५ सर जार्टी सार्विनियचीर ही आगाद बन्छाये गये हैं, यहीस सार्थास अवस्पानें हानगा व ने प्रस्ताहत और विजेद करम्योन होनेबाले उठ्य दो प्राणीका उठ्या किया ही गया है।

## वुस्तर २, १ ४३२-४३५

रै श्रंबा—अपने तथा नेकाम न १४, १५, १६ और १० में बेटके आजयमें जो तीन बेद बद दे के। बदो र मार बेद बहना चाहिय। (नानक्यंत्री सर्त्रीत), वह हा १०-११-४१ समाचान—नवाम न १४, १५, १६, १० सन्धा आहारोंमें तथा सससे आमे पीडेके

सम्पान निर्माण का निर्माण का स्थापन का महिता का प्राप्त का स्थापन का महिता का प्राप्त समि आजामि मानदार्थ हो विषया थी गई है। प्रजानमंत्रे लेदा आलापि नैते हम्मेर्या क्षार मानदिव का स्थापन का स्थापन का स्थापन किया है से अलाविक स्थापन के स्थापन का स

## पुस्तर २, पृ ४३४

४ शका — ए० ४३३ पर जो प्रमत्तस्वत पर्योग्त सथा अपयाप्तवत वयन है, उनके यत्र वर्षों नहीं बनाए गए र

समापान — प्रस्तुत प्रयम्भगते उन्हों बनेशो बनाया गया है, जिनवा वर्णन धरला टीकॉर्स पापा जाना है। प्रमत्तस्यत प्रयास तथा अश्यासके आल्यायोंका धरला टीकॉर्स प्रयम नहीं है, अत उनके पृष्यु सन भी नहीं बााय गये । तो भी नित्यक महागदा निरोत्तार्थक लग्नात हमें साधारण . . .

दर्ग प्रकार केन समानके निनाह समर्थने किमी 'सुर 'ने अपने अवानको सुपानेके दिव पर संपर्शन और देन उन्हान्तिके रिगीन यन जार दी, निमाने मनासुमनित सेंगोली एक्ट्रा जापक कर सहाज्ञान प्रवास वामा उपन जार गर्री है। सिद्धानवन की निमित्र और चालुगातने के निपन्ति ने सम्मानकों कि निपन्ति के प्रति किमान निर्माण के निपन्ति ने स्वास करते होती है। ऐसी ही निपास करनाओं का पर क्लान हुए कि एम मिना को में इन उपन्ति मिना कार्योग होता वारिय पा, नहीं हुआ और उपन्ता के क्लान किमी मिना के निपास करनाओं का पर क्लान हुए कि एम मिना के निपास करनाओं का और उपना के कार्योग कि एम मिना के मिना के किसी की महाराज्यों अनिते किसी की महाराज्यों अनिते किसी की महाराज्यों अनिते किसी की महाराज्यों अनिते किसी की सहाराज्यों के किसी किसी के स्वास की साम्म साम्म के नित्र की किसी की सहाराज्यों की साम्म साम्म की की सहाराज्यों की साम कार्यों का साम की साम की साम की कार्यों का साम की साम कार्यों की साम सामान कार्यों कार्यों का साम की साम सामान कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों की साम सामान सामान कार्यों कार्यों कार्यों की साम सामान सामान कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों की सामान सामान सामान कार्यों क

# २ शरा ममाधान

नुष्तरः १, पृष्ठ २३८

है हुद्दा — प्यत्वववर्यन्य बुधवार सार्वे ध्वत्तृत्वातिसामनुस्त्ये हुनि । इस वृत्त्वति ७६ व्ये रूप वर्ष के सद्दा । यसी पूर्वति पी समारा उ ,पापा प्रतीन हुन्ता है । असरी अर्थ ९८ ६ ६४४ ८ ६ वर्ष्य वर्ष के दिया । (सीरामी वर्ष व समारा पुरु ४०-५५-५४)

 खररपाने उसके जीवप्रदेश भी सरीरके भीतर ही भीतर सीप्रतासे अगण बनने छान हैं, विसक्ते कारण उसे पृथिये आदि सब पृथित दूर दिताई देने छाते हैं। यदि इत्येन्द्रियमणाण जीवप्रदेशीकी रियर माना जाय तो उक्त अपरपाने भूमक्डणिदिक पृत्ते हुए दिग्तेना योई बारण नहीं रह जाना। इसाव्येय आपार्थ नहते हैं कि 'आक्रमदेशीके अगण करते समय क्रयेटियमणाण आत्म प्रदेशीन भी अगण स्वीतरास कर देना चाहिये?। आधुनिक मान्यनासम्बर्धी भूमस्यत्रा तो दर्शन मिसीयो निर्मीत अस्तरास्थि भी श्रोत नहीं है। इसाविये यहां उस मूमियनगरा सोई उत्येत नहीं। असीय क्रयों भी होता नहीं है। इसाविये यहां उस मूमियनगरा सोई उत्येत नहीं। असीय क्रयों

#### पुस्तक २, ए ४२३

र शका— नकता न २ में प्राणिके स्वोभिक्ष्याक्ष क्षेत्रना २ प्राप्त में होना चाहिये । (सनवदनी मन्त्रत सामन्त्रत पर १४४५)

समाधान—प्रस्तुत प्रवर्णमें अवर्षान जीवोंने सामाय आद्यार पर गए गए हैं, दिनमें समस सभी पंचीरित्से हमार एंचेन्द्रिय तसने समस्त जीवों ही विश्वा है, वेचलिसमुदार जैसी विशेष करायाओं में दी राग नही है। हसी वर्षण हात्रावर हास वरवार गये र प्राण म मुक्त विशेष से गये, न जनुत्रावर के स्वाप्त में स्वाप्त में प्राप्त में में प्राप्त में में प्राप्त में म

## पुस्तक २, ए ४३१-४३५

र छारा — अपने तथा नकागा । १४, १५, १६ और १७ में बरवे आगण्ये जी तीन पेर महे हे सी बड़ों र भार पेर बहना पाहिये। (नानक्षरजी तर्नाग, वर हा १०-१९-४४)

समाधान—नवसा न १४, १५, १६, १७ सन्धी आन्यर्सि तथा सामे अप्रेस एउई सभी आन्यों में मानेस्था हो विश्वना की गई है। प्रजानस्कि नृत्या आधारमें जैसे हत्योर्स और भावन्तिक्षास्त्र विभाग कर एकर पूचर पर्यात हिन्दा है, तेसा केद अवस्थित केद स्वीत की सामे स्वात कर सामें में भी मानेस दिया है। अन उन्न नवाभी में भी मानेस दिया है। अन उन्न नवाभी में भी मानेस दिया है। अन उन्न नवाभी मानेस दिया है। अन उन्न नवाभी मानेस दिया है। अन उन्न नवाभी मानेस दिया है।

#### पुस्तर २, वृ ४३४

४ श्रीवा — पूर ४२३ पर जो प्रमलस्थन पर्योक्त तथा आपालका करन है, उसे सब वर्षी गृही सनाए गए " (সরवराजी सीमें, दर हा १०-११-১५)

समापान — प्रस्तुत सदस्तमने उत्ती वर्षे से बनाण गया है, जिनहा बान ७ जा है बचे पाया जाता है। प्रमत्तवन प्रयाण तदा अस्यापने अलाहोंडा ध्वाण टीडाने बदन नहीं है, अन उनके पृष्ट् यून भी नहीं बाध्य गरे | तो भी स्पियह प्राण्डण िप्यार्थ व्यवस्त हुन्य स् पाटकों के परिज्ञानार्थ पृ ४३३ पर उनका कपन किया गया है।

#### प्रस्तक २, पृ ४५१

५ ग्रासा—पृ ४५१, यत २१, में प्राणमें अ, दिया है सो नहीं होना चाहिये !

समाधान — निन गुणरंशानों या जीउममाहोनें पर्याप्त और अपूर्याप्त कालमन्य नी आजार सम्पन्न हैं, उनके सामान्य आलार वहते समय पाठकों को अन न हो, इसलिए पूर्याप्त कालमें सम्मन प्राणों के आगे प लिखा गया है। तथा अपूर्याप्त कालमें सम्मन्तित प्राणों के आगे अ दिया गया है। इसी नियमके अनुसार प्रस्तुत यन न ११ में नारक सामान्य निष्यादृष्टियों के आजार प्रस्ट वस्ते समय पूर्याप्त अवस्थामें होनेशाले १० प्राणों के नीचे प् और अपूर्याप्त अस्त्यामें सम्भन क प्राणों क लोग आ लिखा गया है।

#### प्रस्तक २. पृ ६२३

६ ग्रमः—पृ ६२३ के निरागर्थेमें यह और होना चाहिए कि चीद्हों गुगरवानमें पर्वातस्य टदप रहना दे, छेनिन नीरमेर्राणा नहीं आनी ' (स्तनवदन्त मुन्तार, सहानदुर, पर २-४-४१)

समापान—उक्त निरागर्धमें जो बात सवीगिने उद्योक्त विधे कही गई है, बह अवीगि भेपनोक्ते विषे भी उपयुक्त होती है। अतुरा बटी उक्त भागर्धको छेनेने कोई आपत्ति नहीं।

#### पुलक २, ए ६३८

७ पुत्रा—पत्र प्र २५३ वें प्राणके सानेमें ३,२ भी होना चाहिए, क्योंकि, योगके कार्नेमें ६ देग कि दें (स्तापदनी प्रत्याः कहानना पत्र-४-४४)

समापान — येगके राजमें ६ येग दिन जासे ३ और २ प्राण और भी यहनी भारपण प्रतिन देना स्थामतिक दी है। हितु यदार ६ येगोंना जन्देद विश्वामेदरे हैं दिन गा है, गता नि मुग्ने 'अपना तीन योग 'इन वचन से स्पष्ट है, और जिसस कि किन्यप बरो पर स्थितपर्में साट कर दिया गया है (देगों पृ ६३८)। इसी वहल प्राणी

राज्ये र जैर = प्राणिता उद्धेय नहीं हिया गया है।

#### पुनक २, ए ६४८

८ व्हा — प ६४८ पर वेष्यामी अध्यवसम्यत वैवोक्ते आञ्चामे दे िया हैसी इस २ वर इस चित्र (जावस्तरणी सनास प्रमास्तरणी

ममापान-इस्र उत्तर शहा न दे में द दिया गया है।

्रमुन्तर २, ५ ६५८, ६६०

९ शका - प्रण्य ६५४ वर्ग स्थापन ी पहला हिया गया है, उसमें लिया है हिं • क्यांनि सामें बन्नान बाल्यसमुद्रातान समेगीनेवलीका पहीते. स्थेश्त साथ सम्बाध नहीं

#### प्रस्तक २, प् ८०८

१० द्यारा—पृ८०८ पक्ति १० में सान प्राणते आगे दो प्राण और होना चाहिए, क्योंकि, सचेताने अगरील अवस्थामें दो प्राण होने हैं। (स्तवस्त्री मुनार, सहासनुर पत्र १४४१)

यत्र न ४७७ में प्राणने ४-१ प्राण और टिग्ना चाहिए

समुद्धान बहते हैं।

τ

1

( नानश्चरत्री, परीही, पर १०-११-४१ ) समाधान —हतम्ब उत्तर बढी है जो कि समा न २ में दिया गया है ।

यदा है जा कि सका ग र न दिना गया

## पुन्तक ३, प्र २३

**११ श्रम—२<sup>९अ</sup> की बर्ग**नगरा अहोगी यह ग्राह नात नहीं होना, क्योंकि २<sup>९</sup>= २५६ हाला है, और २५६ को बगस्तायर १६, ४ नहीं '

( नमीवन्त्री वशाह मदारनपुर पत्र २४-११-४१ )

समापान —  $2^{1/3}$  वा अर्थ है र वा  $2^{3/3}$  ने प्रमाण बंगे। अब यहि हम अ को ४ के यसर मान छ तो —  $2^{1/3}$  =  $2^{1/2}$  =  $2^{1/2}$  =  $2^{1/2}$  =  $2^{1/3}$  =  $2^{1/3}$  =  $2^{1/3}$  मान छिया है । किन्तु रेसा नहीं है । प्रवक्ति पदिनिके अनुसार  $2^{1/3}$  होना है। अनर्व अनुसरमें उदाहरण- रूपसे जो बान बही गई है उसमें काई दोग नहीं है ।

## पुम्तक ३, ए ३०

१२ प्रहा—ां मेन्द्र सरिया असवद्या निर्माणमें जो अमापेसे सिद्याम प्रकार हो साथ सन्यासे भागत अर्था है। स्थाप सन्यासे भागत अर्था कर्मा है। स्थाप सन्यासे भागत अर्था कर्मा है। स्थाप संअर्था वापसे एड मर्थ कर्मा है। स्थाप संअर्थ वापसे एड मर्थ कर्मा है। स्थाप संअर्थ वापसे हैं। सिम्स कर्मा हो स्थाप कर्मा है। सिम्स कर्मा हो सिम्स कर्मा होना वापसे हैं।

#### पुररा रे, प्र रेप

• के द्वर — प्रकार, राज्यवा स्व की रवा स्व समुभावी कि प्रकार प्रवेश प्रवास समया समया सम्बद्धा ता भारी बर्ग के अस्त्र अस्ति अस्ति सामस्योगी सामस्योगी क्रिका सामस्यास सम्बद्धा स्व

 उस उस दीप-सन्दर्भ भीनी पीरिने उसमेता आगेको बन्ना जांगमा । इस प्रशाद होते होते बन्तिम समुद्र रचगरमागर्स एक अपध्या असके यादा सम्माके समीप और दूसरा उसकी भीतरी सीमांक समान पर जासमा । यहां बान निक्त चित्रसे और भी स्वय हो जासमी ।

मा के कि स्वरंगमणसमुद अन्दर्शने आगे तीन्तरे बक्यर है, और उमीकी बाह्र सीनार राष्ट्रका अन टीम दे । राष्ट्रका प्रदेश और उन्हें के स्वयं करूर पदेशा ही। स्व बद्दि आंगा विस्तर पचास हजार मोजनको १ मान तेनगर वेग्क १+४+८+१६=२९ मोजन रहा।

#### प्रस्तर ३, प्र ४४

१४ ग्रह्म--पुस्तर १ के पूँ ४४ पर केशानारने द्वारा जो यह समझापा गया है नि सहूरी जीवगानित्र वर्णने हुसे भाग अधिक जीवगाविते भागित वर्षनेपा तीवस मागनी जीवगावि प्राप्त होनी है, सा यह बात बढ़ी जिया माजारस समझीन बही आती। इपया समझाये ग निर्मादनी बगान व्यापना प्यापन प्रस्ता १९४१

समाधान—मान टाविय, सवे वावशीस १६ है, १११स वर्गे हुआ १६×१६ = २५६ वाव परि हम १६ वावणीसे वर्ग (२५६) में वावशीस (१६) का मारा देने हैं तो पूर्ण्याह स्वयाद वावशीस मनण हो ज्याशाय है। और यदि वसी वावशीस स्वर्ण है हमान स्वित्र वीवशी (१६ + ८ = २४) का भग वह है। त्रिभागदीन जीवशिसमान, अवाद १६ - ५ = १०ई आता है, जोसे ५५ = १०ई

इसी बानको घरणाकाले क्षेत्रिनि इसा भी समझाया है जिसरा कि अनुवारके संघ वित्र भी दिया गया है। इस चित्रमें साहानीकाली (माननो १६) है, उसको साहा (१६) से बर्गित करनेवर प्रत्यापता क्षेत्र साहास हा का आता है जिसमें अक्समाण दियानेके लिये यदां १६×१२=२५६ खड किये जाने हैं। इस वर्गक्षेत्रमें जब हम सुद्ध के १६ खडेंकि मानक

त १६ × १२ = १५६ वड किर जान है। इस वग्रुप्पत जै हम सह के १६ वडा का माने स

र

र

मिल्लिक किर्मा के स्वास्थित के स्वास्थ्य के स्वास्थ्य

कर दें, ते उभा बरेगीत प्रमान के प्रश्चित स्थाने हैं। से हिन (२४ एक प्रमान) कर दें, ते उभा बरेगीत प्रमान के प्रश्चित हो विचत स्थाने हैं विष्ट हमें सु इ की प्रिमानकीन वर्षीत् देशी स्थानकात कर छेना परेगा, जो कामरीताता त्रिमानकीन (१६-५५) मान है। यही काचन कर्म सुद्ध प्रस्त प्रस्तु पर और जिस्तु द्वारा दियाचे गये विक्षानता अभिनाय है।

पुनन है , पु २०८-२०९ १५ सहा-वर्श आर सी वस्त्रीतिमाती होते के स्थिति कान्यवियों व अस्ता

काण करण ने प्रदेश के प्रवास के प्रवास का स्वास करी है। वह मधी है करों समापना मान से बता रुख करण है, से स्वतं करी प्रजा साम के बारियाँ (अंदो एक), करण मानार प्रवास कर रहे था

समायान — मुल्बरे । नागी व त्यारा प्रमाण छात तिये विश्वभाषियों व कारणका वह ते दे बात जा ज वालियों गुगरव तहा भरा पर मागापालि विश्व कारणका वह ते। तिर्माण विश्व ते प्रमाण वालियों में गुगरव तहा भरा पर मागापालि विश्व कारण वालियों के प्रमाण वालियों के

## ३. विषय-परिचय

की प्रयास पूर्व प्रशासित हो प्रत्यसम्भानं सम्बद्धया और प्रप्रमागानुगर्यम् प्रयास प्रीत्का स्थाप, गुण्यस्य कार्यमारस्यानुसार भेद तथा प्रस्केत गुणस्यस्य व सार्यमा स्थापन्यो जीविक प्रयास व सामा प्रशास वा पुरि है। अब प्रस्तुत सार्ये जीवस्थानस्यथी कोमश तीत प्रयासित प्रशासित यो या स्टी हैं-केमनुम्य, स्थानन्तुस्य और बालगुम्य।

## १ धेत्रानुगम

क्षेत्रानुत्रमें र्वोह निष्म व दिशादिक्षत्रथी क्षेत्रका परिमाण बतलावा गया है। रस सत्यमें प्रध्य प्रध्य यह उठता है कि यह क्षेत्र है यहाँ दसके उत्तरमें अन्त क्षणाणी दो किया हिपे पर्वे हैं । एक छोताराण और दूसमा अछोतारास । छोतारास समस्त आयानार रायमें रिस्त है, पतिनित है और जीवादि पांच दायोंका आधार है। उसने चारों तरक पार सास्ता अवन्ता आकाम अनुसामा है। उक्ता लोकाकारा के रवरा और प्रमाणके सकते दो मत है। एक मनके अनुसार यह लोकाकाश अपने ल्टभागमें सात्रातु चासवाला गोटाशा है। पुन उत्तरशे प्रमसे घटता हुआ अपनी आ ी उंचाह अपीन् सात राष्ट्रार एक राष्ट्र पासवादा रह जाता है। यशीसे पुन उपरकी क्रमसं बन्ता हुआ सारे तान शतु ऊपर जारर पाँच रातु न्यासप्रमाण हो। जाता है और बहासे पुन से ते।न राष्ट्र घरना हुभा अपने सर्वेगरि उद्य भणपूर एक राष्ट्र ब्यासक्टा रह जाना है। इस मनर अनुसार छोररा शारार टॉक अथोभागमें, बेरमन, मध्यमें झहरी और ऊर्धमागमें मुदगरे समान हो जाता है। किनु धरलाकारने इस मतरो स्वकार नहीं दिया है, क्योंकि, ऐसे लोक्से जा प्रमाणी करा पनका जगश्रमी अवाद सात राजुके धनप्रमाण वहा है, वह प्राप्त नहीं होता। यह मान राष्ट्रन दिग्रहान के जिये व दोंने अपने समयके गणिनज्ञानकी विविध और अध्रर्त प्रतिपाना द्वारा इस प्रकारक छोरके अधोमाग व उर्धमागरा धनपछ निराला है जो कुर १६४ १३ १८ धनरात्र होनसे अगारे धन अर्थाद ३४३ धनरात्रसे बहुत होन रह जाना है। इसि वे उटोंने पारका आकार पूर्व-पश्चिम दा दिलामों से ता उपारी अर पूर्वीक समी धन्ता बन्ता हुआ, किनु उत्तर-दीता दी दिना भोने सनत्र सात राजु ही माना है। इस प्रकार यह टोक गोलाक्य न होकर समचतुरसाकर हो जाता है और दो दिशाओंसे उसका आकार बेतामन, इक्ष्म और मुदगर सहा भी दिखा दे अन्य है। ऐसे त्रका प्रमण टीक मेनीका धन 0 = 0 x 0 x 0 = ३४३ धना दु हा आता है। यही होक जीवादि पीचों इन्योंका क्षेत्र है।

पर्दा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त ३४३ घनरापुत्रमाण वेतल अवस्थात प्रदेशानक जन्मन पिभिन क्षेत्रमें अन्तत जांव व अन्त पुत्रल परमाणु केंगे रह सकत हैं! एसरा उच्च यह है कि जीवें और पुत्रल-परमाणुओं अपनिवानक्यसे आयोगात्रमाहन शकि विद्यान है जिसके काम अगुउके अस्मयान्यें मागरें भी अनन्तानक जीवेंको और जीवके भी प्रदेक प्रदेशार अन्त औदारिकादि पुत्रज परमाणुओंश अस्तिव वन जाना है।

ेप रुपांत् गुपासानों से क्षेत्रमा जीवों को क्षेत्र ह मूर्गेमें बनडा दिया गया है कि निष्याणी जीव मर्वजेस्में व अपीनिस्तडी और वेप सासादनसम्बद्धि आदि समस्त बाग्ह गुरासानोंनेने प्रत्येक सुपारपानवर्गा जीव डोकि असङ्घानों मागों, और स्वीनिस्तरण डोस्क असम्बन्धें मागों, अस्य स्वीनिस्तरण डोस्क असम्बन्धें मागों, अस्य स्वानानों के स्वानानों के स्वानानों के स्वानानों के स्वानानों के स्वानानों हिंद डोस्तरों पान क्षेत्रमानके डिप डोस्तरों पान किस्तर्य के सिनापों सम्बन्धा है।

रेक्रामाइनाक्के अपेतामे जीवों हो तीन अवस्थाए हो सकती है (१) स्वस्थान (२) मह **टार और (1) उपपाद । रास्पान भी दो प्रकारका है-अपने स्थायी निवासके क्षेत्रको स्वस्पान**-रगण्यान, क्षेण अपने रिहारेंक रेण्यको विद्यासम्बर्धान बहते हैं। जावके प्रदेशोंका उनके सामावित रण्यत्ये भी र देण्या समुदात यहवाता है। वेदना और पीडाके बारण जान-प्रदेशों ह पैरानेको देरनामाञ्चात बद्दो है। को शदि बचायों र बारम जीव प्रदेशोंके विस्तारको बचायसमुद्रान वरते हैं। इसी प्रकार अपना स्वामाधिक दारीरके आवारको छोजकर आय दारीरावार परिस्तिको दैविनिकरमुद्रान, मरनेके समय आने पूर शरीरको न होन्यर नतीन संपत्तिस्थान तक जीत-करेलों हे विस्ताना माणालिक, तैजगरागिको अप्रशास व प्रशास विविधाको तैनसमुद्धात, कवि प्रत्य मुन्दिने राजा निरम्मार्थ जी प्रदेशों के प्रशास्त्र आहारवसमुदान, और सर्वेडणप्रात केरणोरे प्रदेशिक रेच वर्तक्षय निवित्त दहाकार, वयालाकार, प्रत्याकार, व सीक्कूणारण प्रस्तारका केरिक्रा का बहुते हैं-जैवस अपनी पूर प्रशायको हो दूर तीग्रे समान सीने, स प्रा, दो स तेन मेर एकर अन्य प्रयोग प्रशासन तह गमन करनेका उपराद बहुत है। इंडी न-->रीत् (१) खब्यानस्थयातः (२) विद्यायस्थयातः (१) वेदरासमुद्रातः (४) वयायमपुद्रात (५) «विरम्मुनात (६) माणानिसम्मुनात (७) तेत्रमम्मुदात (८) आदाखसमुद्धात (९) वेविन् सादार और (१०) उपार अन्य लेंदी क्षीत्र । यथ सम्भव अधिक सिन्न सिन्न सुनाहवानी ६ र बारणस्तर है । सुप्रवास इस श्रमणताने वनशता गया है ।

सार, सार्य है। सारान्य १ कामन स्थि प्रशास का पांच प्रवासी सार्य स्थापि हिस्से (१) सारा न र ता स्थाप का है। १ कामन से सामा है। (२) कामन से

के १ र पुरे मण या वगममाण है, और (५) मगुप्तरोक्त को अर्लाह द्वीपन्नमाण, अर्थातु ६५ रण्य स्थापना पर्यापना देव है। रिमी भी एक प्रश्राके जीवेका क्षेत्रमात सतलानेके ियं पराप्या । इस उस पाधिनेपया मध्यन संभिन्ने टेनर उसके क्षेत्रामाहनका विचार मिर्मा । उत्तरम्य-दिस्यम्बरम्बर विषयारियोये क्षेत्रसावियार वस्ते सबय उन्होंने बस-पानकारण ही जिल बरोसी बेंग्बन स्लोबर्ग मनवर पटले यह निर्दिष्ट वर दिया कि निर्मा भी समाने हा गरिका सामावर्ग भाग ही दिल गरेगा। पिर उन्होंने इस दिला बरनेवाटी सुरिनें श्याप्रभागान पराने प्रभागानी यह बड़े तम जीरेंगा निचर निया, नित्रमें होन्द्रिय जीव शाय क्षण यो पात्रा, मंद्रिय गोप्दी तीन कारारी, चतुरित्य समर एक यो पनका और पनेद्रिय मध्य एक हापार माजारा हापा है। अकार बीत प्रलंक बीतका उन्होंने क्षेत्रमितिक सुन व विधान देवर हमा"] में पनपा शिकान, और दिर इस उद्देश असाहनामें जबन असाहनामा अगुल्या अमरणाना भण चोदरर उसका आधा किया जिसने उस संशिक्ते एक जीवकी मापस अर्थात औसन अराष्ट्रा सारत धर्नापुर अगर्द । समन्त प्रत पर्याप्यापी प्रतरीपुरके सायावरें भागसे भाजित जन्मराप्रमान है अर इस्तर बेरा साचानर्स भाग निहार बरता है। अन इस साचानर भागकी इर्नेन्स प्राप्तास माना परने पर रिहा बस्तरपान निष्यार्थियोगका क्षेत्र संस्थात सच्यालगणित जाप्रकारमा होता है, जो धारका असावार्य भाग, और उसी प्रकार अधेखक और उसीक्रेक भी असमयानतं भग, निराणेत्रका समयानां भाग और मनुष्यत्रेक या अगर्दद्वीपसे असरपात गणा होगा ।

## २ स्पर्शनानुगम

रपरीनप्रस्पागि यह बनाया गया है कि भिन्न भिन्न गुगरचानवाले बीव, तथा गति अदि भिन्न भिन्न भागाग्यमानवाल द्वीत तीतो बालीन दूरील दरा कारपालीता। विज्ञा क्षेत्र रपा वर पाते हैं। इसमे स्टट है कि क्षेत्र और रपानित प्रस्तपालीमें बितानता इतनी हो है कि क्षेत्रप्रपाता तो वेबल बनावालाली ही औरभा राजी है, कि तु स्परीनप्रस्पामि कातीत और क्षतानात्रदालका भी, अपीत् तीनो पालीता होता विकास करण किया जाता है।

उन्हर्सार्य — क्षेत्रद्रात्मामे सासादनसम्बग्धि जीगेद्रा क्षेत्र होकरा असहपातग्रे माग भवापा गया है। यह क्षेत्र वतमानदाइने ही साम्य १एमा है, अवान् वत्रेवानमें इस समय स्थान क्षेत्र हा साम्य स्वर्णात्मि व्यासमय द्रावे प्राप्त मान स्वर्णात्मि क्षेत्र हा साम्य स्वर्णात्मि क्षेत्र हा साम्य करते विद्यान है। वहां बाद स्वर्णात्म क्षेत्र स्थानको स्वर्णा मान स्वर्णात्म करते प्राप्त करते विद्यान स्वर्णात्म करते साम्य स्वर्णात्म करते साम्य स्वर्णात्म करते हा साम्य स्वर्णात्म करते साम्य स्वर्णात्म करते साम्य साम्य स्वर्णात्म करते साम्य साम्य स्वर्णात्म करते साम्य सा

भागोंमेंसे आठ भागोंने। स्परा निया है, अर्थान् आठ धनगत्तुप्रमण जमनारीने मन्य रेसा एक भी प्रदेश नहीं है कि निसे अनीनकाउमें सामारनमम्बर्ग्टाट जीवोने (रेव, म्सुप, निर्वेच और भारती, इन सामीने मिटकर ) स्पर्य न किया हो। यह आठ धनगतुक्रना क्षेत्र त्रसनाठके भीतर जदा वहीं नहा हैना चारिए, किन्तु नीचे तीमरी बाउना पृष्टिन टेक्टर जपर सोटटरें अच्युतकत्य तक टेना चाहिये। हमका काण यह है कि मजनवर्षी देव स्वत नीचे तीसरी पृथिया तक निहार बरते हैं, और उपर सीमनीतमानके रिक्टियन तक । किन्तु उपरिम देनोंके प्रयोगमे उपर अञ्चनकत्य तक मा दिश वर मकत हैं [ देग पु २२९]। बनने व्तने क्षेत्रमें तिहार बग्नेक नाग्ण उत्त क्षेत्रका मध्यक्ती एक भी आकर्ण प्रदेश ऐसा नहीं तथा है कि चिमे अनीत का में उक्त गुगन्यानवर्ती देवेंने स्पृण न किया हा। इस प्रकार इस स्पर्श किये गये क्षेत्रको छोजनार्छके चील्ह मागोमेंसे आठ मागप्रमाण स्परानेपृत्र बहते है । मारणाितनत्ममुद्दालकी अपेक्षा उत्त गुगम्यानवर्ती जीवीने द्येवलाउकि चोदह मार्गोन्स बारह भाग स्पर्न क्रिये हैं। इसका अभिप्राय यह है कि उठी पृथियकि सासादनगुणस्यानकी नान्की मण्यजेक तक मारगातिकसमुद्रात वर सकते हैं, और सामार्रमसम्पर्दिष्ट मजनवासी आदि देव आठरी पृथितीके उपर नियमान पृथिताशायिक जारोंमें मारणातिकममुदान वर मकते हैं, या करे हैं। इस प्रकार मेरनटमे ठठी पृथियी तक्के ५ राजु, और उपर रोकान तक्के ७ राजु, दौनी मिटारर १२ राजु हो जाने हैं। यही जारह धनगजुपमाण क्षेत्र जसनाठाके जारह बटे चीदह ( 😚 ) माग, अयरा उसनाठीके चौदह भागोंमेंने बारह भागप्रमाग स्वर्शनक्षेत्र कहा जाना है। इम उक्त प्रशासने बनाठाए गए स्पर्शनक्षेत्रशा यथासमत्र जान छेना चाहिए। ध्यान रानेकी बात येकर इतनी ही है कि वर्तमानकादिक स्थानिकेत तो छोकके असा यानी भागप्रमान ही होना है, किन्तु अनीनकारिक स्परीनक्षेत्र त्रसनाग्रीके चौदह मागोंमेंने ययासमत्र हुँछ, हुँछ। वी क्षदि टेसर है है तर होता है। तथा मिथ्यादृष्टि जीसेंसर मारणात्तिस, बेदना, क्यायमसुद्भा अदिया अरेखा मर एक स्पर्शनक्षत्र हाता है, क्योंति, मारे टोक्में सर्गत ही एकेंद्रिय जीव टसप्टम भेर हर है और गमनागमन कर रहे हैं, अंतरन उनने द्वारा समन्त दोजानारा वर्नमार्ने भी सर्व है एवं है अर अनीतकार्य भी सर्व किया जा चुका है।

चोदह राजु उच्ची छोकताजी अगरिवन है। इसे असनाना मी बहते है, नयोदि, प्रव्यविका सचार इसके ही भीतर होता है। वेनज बुज अवराद है, निनमें कि इसके भी बहर उन्न अगिता रामा जाना संभव है। इस तमनाजीक एक एक राजु छन्द, चीने और माट माग बनार जाने तो चौदह माग होते हैं। उनमेंसे जो जीन निनमें घनगतुक्रमान नेत्रने सर्घ बन्न है। उसका उत्तन ही स्पर्यतनेत्रन माना जाना है। जैसे अहतमें मानादनमन्परहियोंचा नर्घननेत्र आठ बटे (र्रूप) या नाहह बटे चौदह (र्रूप) भाग जनाया गया है। इनमेंसे विहाजचन्यन, चेदना, कपाय और वैक्षियकमुद्धानगत मासादनसन्परहि जीवने उन्न असाजीके चीन्ह

इन एकेजिय भिष्याइष्टि जीविंके अतिरिक्त संगीगिकात्री भगवात् भी प्रवस्तनुद्धानिर स्वत्र रोजिके असरवात यह भागीती और राजपूर्णसमुद्धानके समय सर राजकादावि राज्य करते हैं। तथा उपायद और भारणातिकरमुद्धानवार प्रमाजीविंवा भी प्रमाणांक आरत अस्तित पात्र करते है। यह इस प्रवास्त कि राजके अतित यानवरवाँ रिव्यं नीत्र गित्र मणा वरण किरण नित्र भीता स्वताजीक अत्र रिव्यं असरावींवें उपाय हानेवार है वर नीत नित्र सावय मणा परन प्रस्त सेणा रेना है, उस समय असरावींवें पार्य यहने पर भी वह यानागीते बाहर है, अन्य उत्तर दर्व अस्ता प्रमाणांकी बाहर रहता है। इसी प्रवार प्रमाणांकी रिव्यं विद्या रिवार क्षिता है। अस्ति प्रमाणांकी बाहर रहता है। इसी प्रवार असरावींवें प्रमाणांकी स्वार्य प्रमाणांकी स्वार्य असराव प्रदेशों व स्वार्य सावत्र से उत्तर साव असरावींवें स्वार्य प्रमाणांकी स्वार्य प्रमाणांकी स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्

इस प्रकार चीन्ह गुणरपात्री आर चीहह मागणारप्रातेम उत्तर रक्ष्यानादि दश प्रोत्को मान्य जीवीका रास्ताक्षेत्र इस स्थानक्षरप्राणी बन्त्यवा गया है ।

### स्पर्शनमस्पणाकी कुछ विदेश पान

सामादामावाणि जीवीं न क्षत्र निवाणि एक मामावा आगाता होत्रमामा । उत्तर जानामि पित सामा चारीने मामावा भी गित्रमादा अ स अव्यक्त बात्त्रम् दे हाल निवन्त साम विशेष समावा भी गित्रमादा अ स अव्यक्त बात्त्रम् दे हाल निवन्त साम है आ साम हो यह सवश्या मामा है हि एक चदर परिमाण कर गृत, अलात हा, उद्देश सामावा है ( ६६०७५०००००००००००००००००००००००००००००) साम होते हैं। इस चारी प्रवास परिवाद प्राणाम चार्त्रस्थीकी सामावा गुला कर दला सकत्र ज्यानिक दर्षेत्र प्रमाण निवन्त्र आता है।

स्मी बीचमें परणामाने श्वासिक रहीं संभागताओं उपन बरेके से मून ज्यानेत्व मुनिये बाने बह सिंह दिया दे वि पूर्विन्द्रश्वमाणाश्चान गामान्ये में तुर्व अत्या पावि माने हैं, हमिन द्रश्यम्माणाश्चर परणामा में अनामान हैं वर्ण व स्थानह मोनियों सर्वास काम युग्ने श्चेता अने माने निवास मिति होते हैं, अर्ड क् सामागुनती का रहियार पर भी हरिवास अनिवाहें, स्वीम रहत अर्ज कामान्य हुन्हें हिन्द प्रतिस श्रीमित्र में हिमान मही है। (१९ १९ ०००)

हमी प्रकारण कराने असी उस मानशे प्रीय में इस सामाणा निस्तार ज सन्दर्भ में नारेमी मानेश्वर प्रकार सन्दर्भ स्थान स् सिमानस्थानिको प्रतिकारण स्थान स्थान

वे बदा प्राधित में ते की द्वा प्रवण है-

(१) स्माला अलिलेश एर अन्तर्भ द्वा दे सम प्रचीत 💝 💛

(२<sup>2</sup>)

मायना की भी 'ज्येह पन्तिसममस्विधि कंगेमुहत्तेण कारेण' (इत्यत्र मृ ६ ) इम स्तरेते आत्रासे 'अत्तर्मुहर्ति' इस पदमें पडे हुए जतन् हान्द्रको सामाध्यायक मानकः यह मिद्ध किया है कि अत्तर्मुहर्तिका अभिन्नास मुहर्तिस अभिक्र काठका भी हो सकता है।

(२) दूसरी बात आयतचतुम्य छोकत्सन्यानके उपदेशानी है, तिमक्का अभिप्राय समहतके छिये इसी भागके पृ ११ से २२ तकका अग देशिए। उसमें ज्ञान होता है कि धराजार के सामने विवासन करणातुविभासम्वयी माहित्यमें छोकके आयनचतुम्यानार होनेना विकास प्रतिशेख बुरा भी नहीं मिठ रहा था, तो भी उद्देश प्रत्यसमुद्धानमन केनर्गके क्षेत्रके सामनीय वहां गर्म दे गायाओं के दियों इसी मागके पृ २०-२१) आगण्य यहां मिह त्या है कि छोका आकार आवनचतुष्कोण है, न कि अय आचार्यमि प्रकारित १६२१ देश प्रतिश्व प्रतास प्रतास प्रतास प्रतास प्रतास प्रतास प्रतास प्रतास हो कि छोका आकार आवार वी उनना दाता है कि यदि ऐसा न माना जायगा तो उत्त दानों

गापाओं ने अप्रमाणना और छोरमें ३४३ घनगञ्जों का अमार प्राप्त होगा । इसीएए छारमा आकार आपतच्युग्स ही मानना चाहिए । (३) तीसरी बात स्वयमुरमणसमुदके परमागमें पृथियके अस्तित्व सिद्ध करनेका है विसक्ता बद्धेख करार किया जा चुका है। (इसो पूर्ध्य १५८ १५८ वक्

इस प्रकार वह जोरदार हा नेम कक्त तोनों बातोंका समर्थन बरानेक प्रधान मी उनरी निष्णाना दर्जनिय है। वे लिखने हैं - 'यह ऐसा हा है 'इस प्रकार एकात हठ परड करके अहर्र आप्रद नहीं पराना चाहिए, वर्षोंकि, परमगुरुकोंकी परम्पास आए हुए उपदेशको युक्तिके, बल्ले अपपार्य सिद्ध करना अशक्य है, तथा अती द्विप परार्थोंने छप्तरम जीजोंके द्वार सहस्य अविस्वारी होनेका नियम नहीं है। अत एव पुरातन आचार्योंके व्यारमानवा परिस्थान न वर्षके

देतुबाद ( तर्बनाद ) के अनुमरण करने गाँउ स्थापन शिष्यों के शतुरोधके तथा अनुसन्त किथननी है स्युप्तादनके थिय यह दिशा भी दिखाना चाहिए । (देश) दू १५० १५८) निर्में के शरपानकारणने अन्यानिकारण दूर द्वीप और समुदोंका क्षेत्रपळ अनेक बरण

हानवान स्तपानस्तपन करना निशादन हुए द्वाप आर समुदारा स्वतप्त अनेन परा सुर्वेद्वारा पृषक् पृषक् और सम्मिति निशादनेशी प्रतिवार दी गई हैं, और साप हा यह भी किंद्र किया गया दें कि इस मध्यक्षेत्रमें निनना भाग समुदसे हरा हुआ है । हमा वृ १९४२ थी

बायमार्ग्यामें बादर पृथितीकायिक जीग्रोके स्पर्शत केत्रको बनाउते हुए रतनप्रभादि स<sup>ाती</sup> पृथितियोकी सम्बद्धि चीटाईका भी प्रमाण बनाउपा गया है ।

३ या शतुराम ढळ प्रत्यापनीत समान बाडमस्यापनि भी ओच और आदेशकी बांच्या

निर्मय रिमा रण है, अर्थन् यह बनल्या गया है कि यह जीव किस गुणस्थान या मार्गणास्पानेंग करूसे कम किनने कट तक रहना है, और अधिक से अधिक विन्ते काल रहता है । इस्टरण र्—िय रहि औद नियमक्युमस्पानेंगे किनने काल तक रहते हैं। इस प्रश्नके

			1
	<u>-</u>	सारान	
मार्गणाके	द्येत्र	बर्नेमानशानिक क	1
मार्गणा अवान्तरभेद		मननोड शहरा अमेल्यान्यां माग सर्वेज्य	
वीतः  १० देशसामार्गमा  देव  यद  हह  बदेशस्य  १९ मन्यमार्गमा  (आसम्प	्राप्ताः व व्यवस्याः व व्यवस्याः व्	त्रा वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर	er er , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,



स्पर्शन
मार्गवाहे होत्र श्रीमानगरिक अ
मार्गणा अपान्तर भेर
शिक्षा अस्पावनो माग
" "
वरते होहरा अध्यासां मान होहरा आंख्यातां मान
्रां चार्चा वर्षे । विक्रांति । सर्वे
े जोड़ा अनेहराउना '
्रिट्य शहरा आस्तावर्य " र्यास्तावर्य " र्यास्तावर्य " र्यास्
"अनंस्यात गर्ड , सिन्दोर
्रा १ (स.च.)
THE WIND HALL THE WAY OF THE WAY
अंगरमिकार्यर " "अमस्यात बर्ड
विवास्तात । अन्यात्रवर्षे । सर्वत्रक व्यनस्यात्रवां मात
१९ सम्पन्यमार्ग । ज्यानिक शहरा अनेहमाउनी भाग
सामादनगम्बद्धि सर्वाक
सिम्पारिट हाइवा जमस्यानवो मान सहस्रेड
(क्षी सुरक्षेत
1 1
१ ४ आहासार्याच्या । आहारक अनाहारक
6 1

	मानार्जावाँची व्यवसा	ŧ	ाल एक ब्रीजकी व्येष्सा
रेंग बनायदादिक		बक्यशङ	रनगरात
र्भ दर	सारीष्ट	ब=ईरव	स्रविक देवीय सार्गेसन
', ar	, ,	,,	,, सदग्ह ,,
ti re	,,	"	,, ਚਸ਼ ,,
16 27 18 23	, ,	,, ण्डस्य	,, ये ,,
6 m	, "	",	,, बगस् ,,
। क्रांस्यान करू ४० क्रांस्यान करू ४०	,,	, "	,, ਰੋਕੀਬ <i>,</i> ,
Eccount, End	बन्दर बन्दर्व	बनईसं	<b>अ</b> न्दर्भ व
anstu st. "	- स्तराङ	,,	देशेल क्यागुळास्तिईन
	,,,	×	बनादि बनन
t a total an	बन्दरने दन्ता वर्त सा बस्तदर बन्देंट्री बस्तर	र { बन्नपूर्त एक्स्प्रद्व बन्नपूर्त	कर्न्युर्ते साविक क्यामर सारचेत्रव
क्षास्त्रत <b>दर्</b> इ		,,	,, ਰੇ*ਲ ,,
દુષ્ય દુષ્ય	करणाहर पाना असे मा रहरूदर	1	बनमुख
•	गंहड	वन्दर्त	टब्स क्याहरू <sup>विद</sup> न
्रम्द इ	,	,	हपास्तर <b>ा</b> षक्
	-	, इत्साम्ब	1
	-	#2713	्र अन्द्र अनंकार्यः बागायाः अनंकारमञ्ज्ञातः दनतिये बागिये टात द्यम्, अन्तिद्री

है, स्वरण्य गया है वि माना जीवों शे अपे ग तो मिल्लाइट जीव सर्वशाल ही मिल्लाल गुम विया-गरियय मने रहा है, अप रू ती वालेंसे देवा एक भी समय गड़ी है, जब कि मिश्य हीट जीव न में जार हो। कि शुरु क नीवकी अरेग मिध्यानका वाक तीर प्रकारका होना है-अनारि मत, आि स न कीर सारि मात । जो अभय जीत है, अर्थात् विशालमें भी जिनही साथ सका द्वालि नहीं होता है, रमे जंबने निष्यत्वना वाण आगरि अनत होता है, व्याहि, वनके क्षेत्रपारा न वारी अस्टि, न अता जो आसा सिंग टीट अध्य जीत हैं, बनके विस्तासना हाट अगरिया त है, आगृत् चारियाउसे चात्र सर्याव वशी प्रास्ति न होनेसे सो उनका केपा आपि है, विषु पर परमारो प्राप्त केस विधायक अव हो जातेसे वर क्षेत्रण मान है। धरणको हा प्रकार जीगोने प्रत्नहुम्पता हताल दिवा है, जो कि उस न में ता प्रथम सम्पर्त श एण थे। इस प्रतार सर्व प्रथम सम्पर्तना उत्ताल बलोगी जीवेंदे हारारणानिके द्रशास तर उनके निष्याचका बाठ अनादिनात्त समत्त्वा पाहिए। जिन हे न एक पर परवास्त्रों प्राप्त वर रिया, तथारि परिणामीके सोसारि निमितने जो पिर भी किरणाम प्राप्त हो नारे हैं, उनके किरणाम पार सारिसाल्य माना जाता है, बर्गारि, उनके नियानक अहि और अन, ये होनों पाँच जाने हैं। इस प्रकार जीनोंने भी श्रीराण्यता द्रष्टात धरणकाने दिया है।

प्रान्ते जगरि अन्त अंत अनारिमान किया के कारणे टोडरर सारिमान विष्णाल मुन्तरी ही शिला को गए है, अन उसीनी अनेशा निष्पादित गुजस्थानका जमय और उन्हर

क्रियाहरि गुण्यानम जरूप पर्ण अन्तर्गहर्न बन्त्या गया है, निसम अभिन्नय यह हिन परि वाह सम्मीनभारति। या असन्तममण्डति या सक्तासक या प्रवस्तमक जीर वाउ मनगमा गया है। परिशामोरे निविष्य विध्यानक प्राप्त हुआ और विध्यानकार्य सबसे छोटे अन्तर्साहनेका न तक हरूर पुन साप<sup>नि</sup>र्यापने, वा अमन्तरायस्थाने, वा सम्बद्धान अस्त अन्यतस्थानो प्राप्त हो सपा, तो पन नाथ मियाचरा जरपहर अल्साहरूमान पाया जला है। ऐसे मियाचरी या पत्था ता पत्था पत्था अर्थ पत्था अर्थ अर्थ होती पाय जाते हैं। इसी साहिसाल सुहि-साल वहते हैं, बोर्सिक उसरा आहि अर्थ अर्थ, होती पाय जाते हैं। इसी साहिसाल शादनात्त वरतर, व्याप्त उत्तरा जाः जरजण भूषा पात्र जा है। स्वा सादसात्त्र मिणाच्या उत्तर कृत वर्ग कृत वर्ग अभूतित्विकासमा है। समस् अभिनात यह है कि जर लान्यवा उपाया प्रशास पुर कियानी ही जान हिनो वर पश्चिमो अभिन अध्यक्त पहिजान प्रथम र र सम्पन्न संदर्भ उन सम्पन्न प्रान्तर मेण चन नाता है। (अयुम्लासिनेन-परिकानमन्द्र संतर अस्पन्न हो उन सम्पन्न प्रान्तर मेण चन नाता है। (अयुम्लासिनेन-मारक रिव द्वासिय पू <del>१२५-११२</del>)

सी प्रकार नाम गुग्रस्थानीय भी जल्प और उत्ताप वर्ण बनणय गये हैं।

r

## ४ क्षेत्रानुगम-विषय सूची

				••	
भिम्म न	निषय	पृष्ट न	क्रम स	तिपय	Z3
१ घालाका प्रतिका	१ विषयकी उत्थानिका रकामगलाबरण और पर्वासगलाबिका निर्देश	,	सरपात । घनले इय इत्यलोक	ट लोक घनगेकके माग है, यह बतलाक हो ही प्रमाणलोक या माननेमें युक्ति मायाम, विष्क्रम और	· //
भर्-क्यन ३ धेत्रानुये। उपयोगित ४ निधेपशी	र गडारके अपनारकी ग्र	"	उत्तेषका (३ टोकका न राजुन म स्रोक अ	निरूपम गिनमी तेना शिस प्रन नने पर दो मूत्रगाथा स्माणनाका अनिष्ठा	10-
स्तरप सं पीका नयी	र मेद, तथा निश्ते में सन्तर्भाद रिनिनिन, धदार्थ	<b>ર</b> -૫	पादन १८ अमस्यातः जीव कैसे	मदेशी लोक में अन त रह सकते हैं, इस	₹0~4
योग हा	म, तथा निर्देशहि गण्डारोंमे समयदाध	Ì	थाराशश	परिहार अपगाइना दानिका	22-4
🕶 निषय		6-0	निरुपण		23-4
उसका क्य	री निरन्ति मेद् थीर रुप द्या मध तथा निर्देश	•	अंश उपपा	वस्यान, समुदान र, रन तीन अवस्या र स्वरूपका यणन रस्यान, विद्वारय	-1 <b>1</b> -11
८ विद्यादिष्ट विद्यास १ शेष्ट सर्वे	२ ने धेत्रानुगमनिद्रपु श्रीका क्षेत्र- ने प्रतलेका हा दमकानका नहा	२० ५६ १०	त्स्यस्यान, उपगाद, इन डारा यय स्र दि चीत स्वयानस्य स्वयानस्य	सान समुद्धान श्रीर १ द्दा मदस्यागीके १ समय मिच्यादि १६ जा भ्यमासीके १६१ मिनका, नया स्थान मादि रादि	
4 ± 2 2 2 4	रेष्ट समयन	10-15 5	यो हा प्रमाण ८ स्रवासीक व	निकाण गैर अर्थेशेक्का	1,
केर शहर केर अन नेपालनके क्षालनकार	त्रवर्षितः सूत्रमा जनामका निकालः प्रवर्धः स्वत्रकः त्रितः स्वत्रकः स्व विकासः स्वर्धः इतिकासः स्वर्णस्य	1	प्रमाण विश्वसद्यादिक संवदातवे स विश्वस्थातर संवदात धना	पर्याप्तगतिके सम्बद्धाः विदार रितद्धाः सुम्बद्धाः सुद्धाः सुम्बद्धाः	15
ररहे क्ष्य	वा दिल्य क्रान्	116 20	Ed LEIEL	समाधान रहाण्येचा विधान	11 11
	•			रका∽नका (दिथे'न	•

and the same	
	(n)
i t 77.37	री पूछन
C.	(तरण
(क्राय से	
And And we	र प्राप्त पह १३८
1	े जनमाणित्र ।
EAN LANGE (WALL & )	बादेशमे धेत्रप्रमाणितस्य ५६ ८९ भादेशमे धेत्रप्रमाणितस्य ५६ ८९
	au (filtere)
an matterns at	सामाय सारहियाँहा शेत्र सामाय सारहियाँहा शेत्र
F.S. ELLIN	च्याच्य नार कियाका राज्य
दर शिक्ताहर्वा कर्त्य किस्सा देश स	सामा प्रमारक स्वाहना , मार्गिवाँको स्वाहना जन्म समित्रोंको नेहरी वटमाँके
EA ILL MALLE MALL TO AS RE	मारा निवासी के सुरक्षा यह
कृति मात्राचा स्वतिकाल स्वतिक	सामा प्रवाही भागाहिता १ मध्यम पृथियों हे तेशों वटगाँके भागकारी कमारे मारकारी कप्राधीक स्वाहर्षी बट १८ हिनोव पृथियों के स्वाहर्षी
Alt was state mind of	mean aftiglie enten de
प्राण (द्वार वरम हे देश हर् देव कान्ये कान प्राप्त करम स्ट्रिय कान्ये कान प्राप्त करम	१२ हिनीय पार्याक ज्यारे होंदे मारबादी जयारे स्थापिक मी प्रस्ति
माराम विश्व करायका	क्षेत्र मार्ट्या मी क्षेत्रकार ६०
	कों मार्थ की करणें कों मार्थ प्रतियों के भी परलों के कार्य मार्थ प्रतियों के मार्थ परलों के
	भारवांकी क्राह
। सरावरूपः स्थापार्वाराचार्यस्य गुजानामस्य	
स्वास्त्रवारायाच्ययः स्वरं संयोगस्यते गुज्यान	अर बर्जा के स्थार
	शरबाहा अचार
नारक प्रमान्त बहा गया है, नारक प्रमानत बहा गया है,	
	क्षा नावर्षा प्रविधिक ना
नाएक प्रमान इस बातका निरुप्त इस क्राप्ताक, शरीहोक और इस क्राप्ताक, शरीहोक और	४९ सामर्था पूर्वियोक म ४१ जपार १४८ मार्शवर्षके हेम्प्रके निकाउनेके १४८ मार्शवर्षके हेम्प्रके निकापन
	Rt. Prairie Flat lust
द्व क्रायाचा । हार्या सम्म सम्म नियानेत्वचा प्रमाण सम्म नियानेत्वचा प्रमाणियां निवानेत्वच सम्म १० सहस्परिधि निवानेत्वच सम्म	ाधट नारविषावे शत्र्यः भत्र हिप्त क्रमपत्रवा तिरूपम भः सात्रा प्रिमियमिक नारविष्यावा १५० सात्रा प्रिमियमिक नारविष्यावा १५० सात्रा प्रिमियमिक नारविष्यावा
	धर हिल अवपरीयांके नार्राक्ष्यांका ६५
So alle war	क्षत्रवर्णन क्षत्रवर्णन
ariun all	6134
१० सहस्याराजः सूत्रं १९ सत्तः, चतायन शीर विशेष सम्बद्धां प्रमुख्यात्रं स्वयो सम्बद्धां उत्तय श्रीर उन्हर्य जीवों से उत्तय स्वात्यस्य	्रक्तायाचा वर्षे
Contact and olic greater	क्षत विश्व विश्वाहार मान्य हेन्द्र
जीवीं जी जाय शहे अहत जीवां जी	४० तिर्धेच विश्वाहार हेक्ट्र ४५ तसारावनगुणस्थानसे तकके ४८ व्यासावनगुणस्थान तकके
ह्यवर्गाहनाव प्रमाणवश्चमाण इन् भेजससमुद्धान शेववर्ग प्रमाण इन्हर्मानुकान शेववर्गान हरणा स्वराधिक प्रमाणिक स्वरामा शेवव	४३ ० (त्रावास्त्राचारामसं १००० ४८ ० १ सामायन गुणस्थान तयके स्वतास्यन गुणस्थानयती तिर्ववासा ॥ प्रत्यस्थानयती तिर्ववासा
श्वर्याण्याति होवना प्रमार १२ नेजसमुद्धान रोजना निरुपण ११ स्यामिश्य निरुप स्थानित्य	
६२ मजलतान् । १६ तयातिश्यान्यम् वयन्ताः हेरत्र १५ तडमगुद्धानयम् वयन्ताः	
54 622 MILLY	natification natification
\$ Adladila	
हे बचारसीयः शत्र १६ जनसम्बद्धानम् वे चराहा सेत्र १६ जनसम्बद्धानम् वे चर्चान्यः	70 9 Gran
केर यमस्याजित मोर विका	विष्यादिक गुणस्थान तकक
526 MEGAGIA	andledo a
मानी वात्रप	। १ क्षेत्रका निरूपण
नानी यातः चित्रपातः । ज्यासपुरानमञ्जानमान स्याप्ति	46 61.2
1 SIE LIANT	

मम न	विषय	पृष्ठ न	मम न	नियर	य पृष्ठन
५३ र प्यपर्या क्षेत्र	प्रपचे द्रियतियँचौं का	E <i>0</i>		द्रय और पचेद्रि सभी गुणस्थानी	
( ‡	नुष्यगति )	७३-७७	निरु		4
	रे गुणस्थानसे लेकर	٠, ٠٠		पर्योप्तक पचे दि	य जी जों ने
थयो।गि <u>के</u>	ग्टा गुणस्थान तकके			ा घणन	C3
मनुष्य,	मनुष्यपर्याप्त और		3	<u>कायमार्गणा</u>	८७-१•२
मनुष्यनिय	रिकेक्षेत्रका वर्णन	<b>ড</b> ३		निरायिक, अप	- •
५५ सयोगिके	यलीका देशत्र	७५	नेतर	रायिक, वायुकायि	न ।।पन्न इ. नग्रा
<b>४६ र</b> िच्यपया	प्तिक मनुष्योंका क्षेत्र	७६	वादर	पृथियीकायिक,	यादर
	देवगति )	७७-८१		विक, बादरतेजस	
५७ मिथ्याद्वी	ष्टे बादि चारी गुण	•	वादर	वायुकायिक, बा	द्रयन-
स्थानदर्ती	सामा यहेवाँका क्षेत्र	৩৩		कायिकप्रत्येक्दारी	
५८ भानवास	ी देवोंसे लेक्स बन		इन ।	पाच यादरों के ब	
ध्रयंपकत	को चारा गुणस्यान			पृथियीशायिक,	
वर्ती देवीं		,,		विक, स्हमतेज्ञस	
५९ भ्यनवास	ी, प्यन्तर और			प्रायुकायिक, तः सङ्मोंके पर्याप	
	देवाने शरीरकी			स्वरमान प्रयाप गप्तक जीवॉके	_
ऊषाहरा		৮৫	निम्		द्भत्रका ८५
६० नय धनु	रेश भीर पाच अनुसर		E/ 3727	पण भादि सातौँ अघस	র⊋ <b>স</b> হা
	सी देवोंका क्षेत्र	۷,		तन इपत्माग्मार,।	
२इस	न्द्रयमार्गणा	< <b>१</b> ~८७		वयांके भाषाम.	विष्य स्म
६१ सामान्य	परेदिय, बादर परे			षादस्यका यणन	18-33
श्डिय, ग्	हम परे दिय और इन		६० पृथि	वियों में सवत्र ज	ल नहीं
नाना इ.प. च्याना	याज तथा अपर्याजक			जाता है इस हि	
कावा <del>य १</del>	तित्रोंका यणन			क्र जीवींका सर्वत्र	
५५ वासाय र अल्डॉबर	ममुद्रानगत पत्रेट्रिय प्रमाप, तथा उनका		1	रद्दना समय नहीं	हे, इस
संयानिक	≃माप₁तया उनका प <del>ल</del>			का समाधान	••
	र. स्वस्थान, वेदनासम	< 4		र पृत्रिक्षीकायिक, ायिक, बादर तेत	
द्वान थे	र रशयममदानगत्र			गायर, बाद्द तम वाद्द यनस्पति	
4.560 \$	ं उप थार वाहरपदे		प्रच	र दारी एवं यो स <b>र</b>	जीवींका
<u>ि</u> द्यप्र	नि बीवीर शबदा			-घणन	•1
निवयत		a	७१ यनः	पतिकायिक प्रत्ये	<b>क्या</b> रीट
६४ सामध्य	पयान भैर धपयान			रकी च्यान्य स्वय	
। स्टब्स स्टब्स	य अ दो हा स्वत्नामादि जिलाय			इयपयानकी अधन्य	
4,44,	1771	C	६ इना	मनस्यानगुणी ह	, <b>र</b> स

	ह्ममानुगम-दिगम-ग	ना	मृ म
		1411	=
	षुम । वस म	लपपातराधिका वित्तना व	न्ता
- विषय	103	संविधारातिका विकास	STI
ता म शामको निर्देश निर्मा श्रेष्ट्रमा स्थापको स्थाप श्रेष्ट्रमाय श्रेष्ट्रमा	1 1	die	11
क्षात्वी शिक्षि । रेजविधातमें वर्ष गय श्रवता	ا اد د د د	तहपण 🖘 🖰	रे व ए
हात्रविधानम् वर्षाः इसा-देश्वका श्रवतर्ण	48 10	तहपण तासादमगुणस्यामसे २०केमणे सक्के भीद	हिर्दे ६०'५
इसा-वेटवर्ग ज्या	• 1	Cialles and a second	. 10.
७२ चार्रानगोरमातिशत प्या अवार्षेनगोरमातिशत प्या अवार्षे सूचम तहा बहनेब	١ ووا	रायोगिक यश ते । काययोगी जीयाँका शेष भौतारिक मिश्रकाययोगी	क्रप्या
Maid of	1.	- Dar Bie Heis Idai	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,
बारणरमक युव	(H ) (E	Aladia	C-14-14
७१ बार्स्यागुर्वाधिक वर्ष जीवाँके शत्रका निवाय	" \	. heifteinne,	श्रेष पाय
Midia Sidal Ball daje	r€  €		
श्रीपाँचे श्रेपका निर्मा पर्याप श्रवादर, श्रारम तथा पर्याप	iPt	द्वात आदि पर्दे के साथ जाते से स्त्रोत के जाते से स्त्रोत के चटित नहीं होता है इस	शकावा १०६
श्रीर अपर्याजन पनर श्रीर अपर्याजन पनरा कारिक या निगीत जी	वोक १००	चिति सद्दा बा	• •
हात्रवा मिरुपण हात्रवा मिरुपण	` \	समाधान	काययोगी
रंत्रवा भिरुपण ७ किंग्याट्यपारि वयोगिवर जन्मवादिव और जनव	हियम् <i>न</i>		
अस्वाधिक श्रीर अस्व	444 605	८७ शीरारिक सासादनसम्बन्धिः सम्बन्धिः शोर सर्वो	शिवे पड़ीका
नायांचा हात्र-प		Hidials all	,,
विवाल जाना	•,	हात्र निरूपण	नेची सामा
	१०२-११	हेश्य निहरण १ ८८ भीदारिकमिधवाय इनसम्याहरि औ	र झसयत
	(-,	MAGRAGICA NO	वाद पर
	9 54c	सम्यादि जीयाव वया नहीं वहां,	इस शकाका १०७
७ मिच्यारीर गुणस्यान सर्वामिक्यनी गुणह	वान एव	वयो नहा वया	
11411	≠ म्(चिं	समाधान १०२ ८ मिच्यादि गुण	स्थानसे हेवर
वाया ग्राम जीवा ह	रेत्रवा	१०२ ८ मिध्यादार ज	व गुणस्थान
D		अस्यवार वि	भ्रीयक्वाययोगी १०८
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	ा, सार तथा		
	S. See Bill	जीवां श्रेम ० धेनिविक्तिश	काययोगी सम्बंध
ज्यान्तिव समुद्रातगर मृद्धित जीवाँवे म	सायाम दे १ हन		
कहात्रेयाम प			
यधनयोग व स् द्वावामीना समाध ७९ बायपामी मिट्य	िर जीवीं <b>वा</b>	OF MINISTER ALL	ायोगी भार जाया हाययोगी प्रमुख हत्र
,०० बाववामी विद्य	leis		
श्च	ुक्त होता	सयतीका र	त्त्र <sub>(योगी सिश्वाहरिः, इयाहरिः, अस्पत्</sub>
श्च ८० सासान्त्रगुणस्य	रशास तकके		
- 11211411 A.C.			
हावयाती जीव ८१ बाववाती संव ८५ कोल्परिकवार ८५ कोल्परिकवार	मार्गि मिश्यादृष्टि	व पर्काश	6.
		**	
हायांका श्र <sup>ज्</sup>			
	_	~	

(११	•
कम स	,

## षट्खडागमकी प्रस्तावना

क्रम स	विषय	पृन	प्रम न	विषय	ष्ट्र व
थनियु	५ वेदमार्गणा इधि गुणस्थानसे छेकर चिकरण तकके स्त्रांवेदी उपवेदी जीवोंका क्षेत्र,	i I	१०३ मत्यञ्चानी मिच्यादी	नमार्गणा स्थीर श्रुताइ एजीनोंकाक्षेत्र	6}}
तथा ऑंडा ९४ मिच्या घर्ती संत्र,	तत्सम्बाधी विदेशपता- घणन व्हष्टपादि नी गुणस्यान नपुसकोदी जीवींका तथा तत्सम्बाधी	. 222	१०' अचेतन व अपिनएस हो सक्ती	ं थीर श्रुताश सम्यग्दिष्टयोका है गैरक्षणक्षयीदान्द् परेतु अनुतृत्ति वै गंदी, इस शका	तेत्र ११८ की हेसे
विदेशक ९५ अपना ६ व ९६ क्रोध, क्यायी	ताओका यर्णन त्येदी जीयोका क्षेत्र	222	१०६ विभगहान सासादनः शेत्र, तथा गत विभ	र्गि मिथ्यादृष्टि व सम्यग्दृष्टि जीर्जी स्मस्यानादि पर गहानी मिथ्याद गुरुोकके सस्याद	का इ- ष्टि
रपानरे गुणस्य	त्नसम्यग्दिष्ट गुण ते रेक्ट सनिवृत्तिकरण तन तकके स्रोप, मान, स्रीर रोमक्यायी		मागमें व असरवात रहते हैं, इ रिश्व असयतसा	त्रशावक सक्यात् ग्रेट मनुष्यलेक ग्रुणे क्षेत्रमं ही क साधावाका समाध स्याद्धि गुणस्थान शिणकथायथीतराय	में यों (1न # से
९८ स्ट्रॉस इस दा ९९ 'टोक्डे इनना : मह्त्रमें	मापाद क्यों नहीं कहा, चान्रा समापान दे ससम्यात्ये मागमें' दी पद गुत्रमें बहनेसे 'मानुषसेदके मी सस्	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	छप्रस्य गुर धृत सीर ह संत्र १०८ प्रमचसयत याग्त मन	णस्थान तक मिटि प्रयभिक्तानी जीयोंक स्टेक्स्स्कीणक्य पर्ययकानी जीयोंक	त, हा ११६ ग
वर्ष ५ १स १ सम्बद्धाः स्रमापः	र्ध मार्ग्ने रहते हैं 'यह त्यों नदीं देना चाहिए, एडाडा, तथा इसीके त पड थीर मी श्राका त		नयी देश मयोजन	मीर द्रव्याधिक नामीके कहनेक सयोगिकेवर्स	्रा <b>१</b> २०
हर जु १०१ सहस्य १०२ हरराज्ञ सम्ब	रागी मुश्मसाम्परा विश्वपत्रीचा क्षेत्र शि डीवेचा क्षेत्र नववाणी डीवेची कट से बडा ६म शबाचा हर्ष च सम्मान हुए शिक्षा समापान	<b>?</b>	भीर भवे। होत्र १११ स्यम्यानस्य स्वस्य यत भयोगिवेच	विदेवणी जिनोंक	r r t
	. ८ स.म. सासम्बन्ध	įe1}	रामाधान		१२१

क्षेत्रागुगम-विषय-गूची				(74)	
श्रम स	विषय	पू म	थम न	विषय	पृ म
११९ रायमी	स्मार्गणाः । जीपास समस्तरपा सरे तेवट स्पानि शुणक्यान सकरे	7	दर्शन १ इस श १२४ भव्धु	ार्याप्तक जीवीमें चह राया जाता है, या मर्हे बाबा समाधान दुर्दानी जीवीमें मिष्प	}, <b>१२६</b> ⊓
जीवींबा १११ हम्याचि भयोजन	रेक्ट १ स्पेट्टामार	१ <b>२१</b> <sup>१</sup> १२२	श्यान १२५ भवधि	हेकर शीणक्याय गुण तक्का क्षेत्र निक्रपण दर्घांनी और केयट जीयोंका क्षेत्र	170
पृथक ग्	यारिया देशक की। व निमाणका प्रयोजन स्थीर छेड़ी परचापन	T 31	१२६ इच्छ,	० लेडवामार्गणा नील भौर कापो	१२८ १३१ त
<b>क्या</b> नसे	प्रमासस्यतः ग्रुप त्रेष्टर क्षत्रियुत्तिवरप त्रुप्ति	,	क्तसम्ब इप्रिक	ाले मिष्याद्वश्चित्रासाः १७६६िः, सम्यामिष्या शिर् भसपतसम्पर्गाः १ पूपक् पूपक् क्षेत्र	î X
११६ यरिहारी विक क मुद्धिसय	षणुद्धिसयतः सामा गेर छेद्दोपस्यापन ताँसे पृथामृत क्ये	r	यणन १२७ तेज व मिध्या	ीर पश्चलेखायाली विकेट समस्त	१२८ न
११७ परिदार्श	। शकाका समाधान वेजुद्धिसयमी प्रमच मच सवतीका क्षेत्र	11	१२८ मारणा वेजोलेस	कि जीधीका क्षेत्र तिक समुद्रातगर पापाले निष्पाकी	Ì
<b>११८ स्</b> रमसार चपशामर देख	त्यराय संयमगारे भीर शपक जीवीक	ī	चणन	क्षेत्रमें विशेषता क क, मारणातिक औ	22
और मस	तसयमी, सपमासया यमी मिथ्यादवि जीवे पृथक्षेत्र निकाण		जीवींमें है इस	प्रदेगत पद्मकेरयायाहे कोनसी राशि प्रधान बातका निरूपण	
प्रश्तमें ( है, यह	ग्णावे भेद प्रभेद शीर केस बोधसे प्रयोजन बतावार तत्सम्बन्ध	r	<b>१</b> रीणवर	र गुणस्पानसे छेका स्पन्नके जीवींका देश	· ·
श्वस्थरिम	सामाद्रमसम्यग्टिश ध्याहोष्टे भार मसपत		बर स्तत्र सेत्र नई	यापाले संयोगिकेवर्र भीर भनेदय जीवीक विकास कारण	tat
•	ष्ट जीवीका शेष ९ दशनमार्थणा ती जीवोंमें विष्याद्यी	१२६ १२८ १	१३२ भव्यसि	मञ्यमार्गणा १ क्रिक अधिने मिष्या गुणस्थानसे छेक्ट	! <b>३१∽₹</b> ₹३ :
मुवास्था	रस त्रंकर श्रीणक्याय त.स.क. १४४ सिक्स्पण	१५६	अवेति	स्परी गुणस्थान तक पुणस्थानमें भीजोंका हो	•

पट्चडागमरी प्र	स्तारना
----------------	---------

पृ, च | ममन

विषय

17.

,, १३,

१३७-१३८

ij

11/

१४१-१४५

14

विषय

(44)

क्रमः न

१३३ वस-यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि	१८१ उपराम श्रेणीमे उतरकर
जीवोंकाक्षेत्र १३२	मरनेत्रारे उपदामसम्बद्धाः
१३४ पिहारवास्यस्थान और धेकि	जीवोंके सियाय अन्य उपराम
विकसमुद्धातगत अभाय जीन	सम्यक्त्री जीवींका मरण क्याँ
सामान्यलेक बादि चार	नहीं होता, इस दाकामा
लोबोंके धसख्यात्वे। भागमें	
	समाधान
और मनुष्यलोकसं असच्यात	१४२ सामादनसम्यग्द्रि, सम्य
गुणे क्षेत्रमें रहते हैं, इस वातका	मिथुयादिष्टि और मिथ्यादिष्टि
सप्रमाण निरूपण् "	र्जानीका पृथक पृथक् क्षेत्र
१३५ सादियघ् करनेवाले जीव	निरूपण 🥻
परयोपमुके असक्यातर्वे भाग	१३ सजीमागेणा
मात्र द्वाते है, इस यातका	१४३ सबी जीनोंमें मिथ्यादिए गुण
सयुक्तिकृषणन १३२ १३३	स्थानसे टेक्ट झीणक्याय
१३६ पके दियों में सचित अनन्त	गुणस्थान तकके जीवींका क्षेत्र
सादिवधक्तिमेसे जगमतर्के	१४४ अमधी जीवाँका क्षेत्र
असंख्यातचे भागप्रमाण सादि-	
यधक जीव असोंमें क्यों नहीं	10 -110/2/11-11
उत्पन्न होते, इस दाकाका	१४५ बाहारक जीर्योमे मिथ्यादृष्टि
समाघान ू १३३	
१२ सम्यक्त्वमागेणा १३३-१३६	केवली गुणस्यान तकके
१९७ सामान्य सम्यग्डीए और	जीवोंका क्षेत्र निरूपण
शायिशसम्पन्दि जीवामें	१४६ अनाहारक मिथ्यादि
' असयतसम्यग्द्रि गुणस्थानसे	जीवोंका क्षेत्र
रेकर अयोगिकेयरी गुणस्थान	१४७ धनाहारक सासादनसम्य
तक प्रत्येक शुणस्थानवर्ती	ग्द्राप्टि, असयतमस्यग्द्रप्टि और
जीवाँका क्षेत्र १३३	अयोगिकेनरीका क्षेत्र
१३८ वेदकसम्यग्द्रि जीवीम अस	१४८ भनाद्वारक सयोगिकेवरीका
यत शुणस्यानसे ऐकर	क्षेत्र
श्रमचगुणस्थान तक प्रत्येक	स्पर्शनानुगम
गुणस्थानवर्ती जीवीका क्षेत्र १३६	( લગગાંહનન
१३९ उपदामसम्यग्दरि जीवीमें	' [
अस्यवगुणस्थानसे छेक्ट	निषयमी उत्थानिमा १४
उपद्यातकपाय गुणस्थान	रै धयलाकारका मगलाचरण और
स्रकोट स्रोगीका रेग्स	प्रतिश
१४० मारणानिकसमुद्रात भौर उप	२ स्परानानुगमकी अपेक्षा निर्देश
पाइपइगत असपन उपश्चम	मेर-कथन
सम्यादप्टि चीवीकी सक्याका	व नामस्परान, स्थापनास्पर्धन,
निकपण १३-	
74.	म अन्यरपद्यम्, क्षत्रस्यद्यम्, पाठ

१६२-१६३

	क्षेत्रानुगम विषय-सूचा		
	State of the	A	वृ भ
		विषय	
_	पृम ∤ममम	NGrant	
वित्रय	- 1	वीय निष्पक्ष मनीपृश्विका	240-846
	स्य	ald in	470
h	ध्य १ स	रेचयर त्रायरि	१ ५५०
हपरीन और भाषस्पदान, एड महारके स्परानीका सा	वेच ी∝्र लग	रेचय म्द्रीधम्बदालाकामाँकी वत्परि चोतियी देवाँके विमानीं	_
- mered entiulat	. , and SAR   Se a	म्ह्रोषम्बर्गालामा चोतियी देवाँके विमानाँव	π
कर्म अस्तिमा	100	विशिवा वयाना कर है।	Rξ
एड प्रवारको स्पेडामा स्वरूप श्रीर नपाम श्रान्तानी प्रस्पर्देनशास्त्रको निराणि श्र साम्बर्धे सवार्यका साम	तेष ।	चोतियी देवाक विकास है। साण उत्सेचांगुलसे ही है।	rs.
४ स्परीनशस्त्र । निर्माण		ामाण उत्संघागुलस यः वाहियः, प्रमाणांगुलसे नर	10
क लगायक माम	-1 -	वाहिये, प्रमाणा पुरुष भाषधा जागृहीय सम्बन्धी त	n₹
द्राप्त्रहे स्वायक गामि प्रमाणयाग्यहे सभायत्री स	ह्यका क्या	भ यथा जम्यूद्वीप सम् जम्यूद्वीपमें समा नहीं सर	ੋਸ .
	1514" SAR SRA	- स्थानियमें समा नहां स	-2-
का समाधान	١.	जम्बूद्रीपमे समा नदा इस बातका प्रशास्त्र स्वीका	रक १६०
41 cur	احمم	इस वातका परमा	(40
श्रीयमे स्पर्धनानुगमानिहे	- 884-803		
क्राच्ये श्वरानान्गमान	19		तर १६१
Silder Contact Edi	तनसम १४५ १८	साय वर्गाः सासादमसम्यग्हवि स्य	qui -
औषमें स्पर्धनानुभागाः ५ मिच्यार्टीर जीवांका स्पर	. 1001.	सासादनसम्पन्धीय देवाँका स्वस्थानक्षेत्र निरू ९ सासादनसम्बन्धीय औव	erik:
Description .	\	and and a state of and	44.
निरूपण ६ स्पराना प्रयोगद्वारवे आ	वतारका १४१-१४६ १	९ सासादनसम्बन्धारे के हैं द्रियाम उत्पन्न होते हैं	ु,या
६ स्पराना प्रवास अतिपाः आवस्यकतावा अतिपाः	18 (2/01)	ZUIH V. Desta	महात
शायद्यक्तावा आतपा	त्म १४६-१४७	केवल मार्गाम्तकल	3
केन्द्र वसाव निर्देश	"- " - \	कार्याः इतिका स	प्रमाण १६२-१६
अस्पर्यक्रमाया निक्रप ७ सोवचा प्रमाण निक्रप	जीवाका ६४८	केयल मार्जातिक स करते हैं, इस बातका स	\$ \$4-6.
७ होतवा प्रमाण निरूप ८ सासादनसम्बद्धि चर्तमानवालिव स्वया	कोरत (००)	निर्णय २० जय कि सासादनसम्पर्ण	क्त हैत
		- ि शासावनसम्प	lle d.
		२० जय कि सासारतसम्बद्धाः पके त्रियोंमें मारणानि	तकसमु
र सासादनसम्पर्धाः अतीनकालिक स्परान	દેશત્ર (૦૦, ૧	HELL MAIN HE TO BE	द सर्व
अतीनवालिक स्पर्धाः १० सासादनसम्पर्धाः	នេះតែនាំទេ T		
		्र विश्वाम	qui nat
१० सासार्वसम् स्यस्थानस्यस्य नहेर	₹ _ `	होत्रपती युवा प्रयास करते, इस दांत्राका	स्युविक
श्यस्थानस्यस्य नशः ११ सासादनसम्यग्दरि	ज्योतिष्य	इस्ते, इस राजा	-
		ै। समाधान	न्द्रीगोर्फी
११ सासादनवानिके देवाँका स्वस्थानके	7 maio 242-84	र समाधान २१ सासादनसम्याहारे वारह बटे चोदह	all of the
े देवाँका स्वस्थानक १२ एक चामूके परिवा १२ एक चामूके परिवा	रका प्रमाण रेगर	Si ellen - misk ;	वागप्रमाज
१२ एक चन्द्रके परिया १३ उपोतिरहरेगों के ह	शिवानी€ा	MILE NO.	त द्वीता दें।
कारिया देवा के	iaia f	क्षात्रातस्य पार्या	∴ सारणी
45 0411		व वायुकाविक जीवे वे वायुकाविक जीवे	H 41.
श्रमाण १४ स्वयम्मूरमण सम्	द्भवं चरमाणम्	थे वायुकाविक जाव स्तिकसमुद्रात पर्यो	सहा परतः
१४ स्वयम्भूरमञ्जू	के अस्तित्यका	स्थित संगुक्ता	धान
#124 p. of m	_C-111773	इन शकामार	
सिद्धि, तथा साथ उसका ।	वाद्य सन्दर्भाग		464
leise)	वेरीय उद्गायन १५५-	PUE 42 SUULT PRIM	saice an
साथ उसका परि	east.	जीवाँक वेशान चौद्दभागप्रमाण	<sub>प्यदान</sub> क्षेत्रव (
3HEL 41.		चीदह भागमना -	•
अध	Bifuma F	6.6	Dental
हर उसका परि १५ राजुके सथक सम्बद्धित सम्बद्धित	हेर स्वयं क्रा गणेसे तत्त्रायोग्य तर्व हैं, यह कथन	सिचि २३ जिन भाषायाँगा २३ जिन भाषायाँगा	ak minus
		वृष्ट्र (जन मार्था)	ने मुल्दारीरम
व्यवधार क्या	Lie de prom	5 (4) 44	बर्
シャボ フィバ		प्रविष्य होकर है। हैं, और इसी अपे	
	If duam a.		
EIT E	ह बतला उ विकियों के अयहार आयतच तुरस्र लोक	ह, शार्व सामावनसम्याद	वि देवांका
असच्यात -	वातियाव जनसः आयतचतुरस्र लोव त्यवेदावा उद्देशसार	सामान्त्रसन्य ।	
. जार देश	आयतच तुर्वेशायाः प्रवेशायाः उद्देशायाः	,	
	distances		
Elfalu.	· ·		

विषय पून | क्रम न क्षम स स्पर्शनक्षेत्र देशोन दश वटे चौदह भागप्रमाण कहते हैं, उनके कथनका सप्रमाण विरोध निरूपण 11 २५ सम्यग्मिष्यादृष्टि और असयन सम्यग्दष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीनकालिक स्पर्शनक्षेत्र १६६ २५ सयतासयत जीर्जीका यर्तमान और अनीतकालिक स्परानक्षेत्र १६७-१६८ २६ स्वयम्भूरमणसमुद्र और स्वय म्प्रभुपर्वतके परमागवर्ती क्षेत्रका विष्करम बतलाते हुए सयता सयत जीवोंके स्वस्थानक्षेत्रकी सप्रमाण सिद्धि १६८ १६९ २७ प्रमत्तसयत गुणस्थानसे छेकर वयोगिकेश्ली गुणस्यान तकके जीवींका स्परानक्षेत्र, वित्रियादि ऋदिसम्पन्न ऋवि वीने सर्व मनुष्यक्षेत्रका स्पर्श क्यि है, या नहीं; क्या मेर दिक्तर तक जाने मानेवाले ऋषि मनुष्यक्षेत्रमें सर्वत्र नहीं जा था सकते। क्या तियचौंका भी एक राख योजन ऊपर तक जाना सम्मय नहीं है, इत्यादि अनेक दाकामीका समाधान १७०-१७२ २८ सपोगिने पटीका स्पर्शनक्षेत्र " आदेशमे स्पर्गनतेत्र निर्देश १७३-३०९ १ गविमार्गणा (नरकगित ) " **–१**९२ २९ नारकी मिथ्याद्रष्टि जीवीका वनमान भौर भनीनकारिक स्यद्येनधेत्र १७३ ६० वर्गानदारका व्यवसा विद्वारय

स्वरपानादि पर्गत नारही

तिर्यग्लोकके सल्यातर्थे भाग प्रमाण पर्या नहीं, इस श्रकाका तथा इसीके अन्तर्गत और भी यनेकों शकायोंका समाधान ३१ विष्रहगतिम जीवाके विष्रह सहेतुक होते हैं, या अहेतुक, इस यातका निर्णय करते हुए नरक, तियंच, मनुष्य और देव गति प्रायोग्यानुपूर्वी नामस्मेशी महतियोंके मेदीका निरूपण बीर उनके क्षेत्र निपाकित्वकी 204-134 सिद्धि ३२ सासादनसम्बग्दष्टिनारक्रियोंका वर्तमान और अवीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र ३३ नारका प्रासीके बाकारीका,तथा **वर्तमानकार** में नाराक्ष्यांसे रोके हुए क्षेत्रका वर्णन ३८ सम्योगिध्याद्धि और असपत सम्यग्दरि नारक्रियोंका स्पर्शन क्षेत्र बतलाते हुए एक नारका वासका क्षेत्रफळ, तथा मारणा तिक समुद्यानगत असयत सम्बन्दछि नारश्चियोंका स्वर्शन क्षेत्र मनुष्यलेक्से असक्यात गुणा क्या है, इस वातश बनेक युक्तियोंके साथ समयन १७१-१८

३५ प्रयम पृथियी हे मिच्याद्वरि मादि

चारों गुणस्यानवर्ती स्वस्थानारि पद्गत नारिक्योंके स्वर्शन

क्षेत्रकी संयुक्तिक सिद्धि करते

दुए प्रसमागत मृदंगादार छोर के

**मनुसार एक** राख योजन

बाहस्य और एक राजु गोल

नियम्डोक्ने प्रमाणका,अगधेणी

जगनन्द, धनलोकका परिकर्मके

भवनरण पूथक स्थक्त-निक्रपण

विषय

म्पर्शनकेत्र

मिय्यादृष्टियाँका

चू, र

	रपर्ननातुगम विषय र	ची		
		विषय	વૃ મ	
	पृन ∤वम म			
. विषय	a which	ार दालावाभीका वि	नहर्षण	
बसमें	· \ *	ार बालाका माका तर उनसे विवाशित ही विकास निकास	व आर	
बस न बरते हुए अनेब युक्तियों भी	255-6ca	ोर उनसे विवासत है। गुद्रके शेत्रपल निष	ाल्नेका	ર૮
ममाणींसे खड़म		मुद्रक रागा		
ममाणींसे खड़म इद् हितीय पृथिपीसे लेकर छ	Ar I	वेधान स्वयम्भूरमण समुद्रके	<i>होत्रफल</i> १	۹,6
वृद्ध हितीय प्राचयांस क्ष्मियादि के पृथिषी तकके मिक्यादि के		विष्यम्भूदेन निष्यासनेषा विधान		-
कृथियी तक मध्यादार सासादन सम्यादि मार्विय	- Tes	निकालन के क्षेत्रप ह	का संक	રુવી
गर्तमान भार जलाला	30 20 00	निकालनेका विधान सर्व समुद्रांके क्षेत्रकर रून-निक्रवण	600	• •
	****			
	18V	स्वयम्भूरमण समुद्र रिक शेष सर्व समु	होके शत्र २०२-	২০ই
		100	in ne	
हाए और भारवियोंना स्पर्शनक्षेत्र	नहाँ छे	प सके निकालन रा ८ सासारन सम्यादि । स्ट्रिक्ट सीचे मारण	तियंच मध	
भारिक योंका स्परानिक मिय्र १८ सातवीं पृथिवीके मिय्र	क्षीर ४	८ सासार्नसम्यग्हार मृहसे नीचे मारण	गन्तिक समु	
१८ सातर्पी पृथियाक । । नारवियोका यतमान	तथा	मूलसे नीचे मार्य द्वात क्यों नहीं कर	ते हैं, उनका	
		होत क्यों नहीं कर भवनयासी देवामें	ध्यांस हाता	
				8-204
१९ सात्वी पृथ्याक 🐃		शकाओंका समाध	ान तिर्यसीका	
सम्यारिः, सम्याम	मार्गिक	सम्मारमध्याद्दरि	ladan	ર•६
सम्यन्दरिः सम्यास और अस्यतसम्यन्दरि	466 665	श्वाभाका समाय ४९ सम्यागम्याद्याद्य स्पर्शनदेश्य	ीन समिति	
— अस्त अस्त विशेष		इपरीनक्षेत्र ५० असंयतसम्बद्धाः	जाट संपता	
( विपंचगित )		५० असंयतसम्याहीर स्यत तिपंचीक	Taken 2	०७ २११
	आयाप।	अतीतकारिय र	C. Denigle	
	त्री <b>वराह</b> त	पा नवप्रविवकाम	े धेने बस	
		1 Hard avi.	०लनासंयत	
ावयात द्वाप कार्य द्वारयास्थरथान	पद्यारणत	यतसम्यन्तारः	~ ना नहीं	
		तियंचीका ज	-िकहा जाय	
		ो होता चारिय	P23	
त दोवावा सम ए सतीतवारमें	agit at-	ि कि मिध्यारा	्य इसे वे	
प सरीतवारम वारे तिवचीसे		हिनासे जत्य	र होत व स्थान र ही उत्पन्न होयें। जगाधान	206
तये शेषके	निकालनेका	१६३ भी द्रव्यारगर	महाधान	200
		दस शकावा	समाधान त झसंयतसम्य गुक्ते स्पर्शनक्षेत्रव	
	हे तियचार	५२ उपगार्थार्थ	त अस्यतानकोत्रके बाके स्पर्धनकोत्रके	<u> </u>
सासादनसम्बन्धः वर्तमान् और	अतिविधारण १९६-	२०६। म्हार्थासन	शक स्परान्य हारा निकालनेक	204-280
स्पर्शनश्रेष	• • • •	१९४ विद्यान		<b>.</b>
्यामहीयवा स	(प ल	Commerce of	<sub>स्थानादि</sub> पर्पा प्रमुखत तिर्येखी	CT
, =ngen,	∼. ≖क्तिआर	वात संबंध	तसयत तियसा	T) 4१0-288
U 17774 1014 -		स्पर्धनश्च		
कालद्व आदि	तर् क्षार समुद्रोंके क्षेत्र नेक स्टिप गुण			
फलके निकार	नेक हिन्द गुण			,
,	,			

(80);	पर्ग्डरागमका	प्रस्ताना		
ष्टम नः, विषय	पृन√¦	प्रम न	तिचय	g, <b>4</b>
५५ मिथ्याद्यष्टि पचेन्द्रिय, पचेद्रि पर्याप्त और योनिमती ति चोंका यर्तमान और वर्ती कालिक स्पर्यनक्षेत्र,	ર્થ ત ગ્ <b>ર</b> ૧-૨૧૨	क्षेत्र' यहः दाकाका सा ६४ मनुष्योंमें	उपन्न होनेबारे	<b>સ</b>
५५ त्रसनार्हाके वाहिए त्रसकारि जीवोंके समाप द्वीनेसे म णातिक और उपपादगत र	र ।	स्पर्शनक्षेत्र तथा भागाः	वार्नम्यग्दष्टियाँ र तियारोकका सब्या नहीं हो सङ्ता, रूस	ı
तिर्पेचब्रिशीका स्परानक्षेत्र । लोक कैसे सम्मय है, !		धिशा	ुतिक आक्षेप औ	460-41
शकाका समाधान	२१२ क्र इक् प्र २१३	तंकर वया तकके मनुष ६६ मारणा तिय यतसम्यग्ट	ग्रादृष्टि गुणस्यानस् गिनेत्रवरी गुणस्यान् प्योंका स्पर्धनक्षेत्र क्समुद्धातगत अस प्रिं मतुष्योंने तिर्यु	<del>220-</del> 288
पुष्ठ एवा इय स्वस्थितिक है। चौंका वर्तमानकारिक स्पर् क्षेत्र पुरुष्ठितिकारिक स्पर्धान चौंका सर्तीतकारिक स्पर्धान	ीन वर्ध-	ग्लाइका स् स्पर्श कि समाघान ६७ बद्धायप्ट	वय्यातया भाग कर् या, इस दाकाक असयतसम्यर्ग्टी	7 7 2
वधा उसके निकालनेका विश		मनुष्योकः नेकाविध	उपपादक्षेत्रके निकार पन	228-233
५९ अगुल्दे असण्यातचे मागा अवगाहनावाळे छण्यपर	<b>ो</b> प्त	६८ सृहमसे मं निकालनेक	ो स्हम परिधिक्षेत्र त करणस्त्र	471
जीवाँके संख्यात शंगुळम उत्सेष बैसे समय है, शंबाका समाधान		देशप्र	ार्छा जिनोंका स्पर्धन	<b>. ર</b> રા
६० महामच्छको अयगाइनार्मे	<b>एक</b>	७० हब्ध्यपया सानकारि	प्ति मनुर्ध्योका वर्षे कस्परनिक्षेत्र	1 1
ब धनसे यद्ध पद्काविक जी स्रस्तित्व केसे जाना जात	थोंका •≱	७१ छन्ध्यपर्य	ति मनुष्योका अतीव	વ્યક
इस दोकाका समाधान	. જો સ્કૃષ્	काछिक <b>स</b>	यशनक्षत्र वगति )	₹₹8 <del>-</del> ₹ <b>8</b> °
(मनुष्यगिव )	२१६-२२४	<b>७२ मिथ्याद</b> ि	टे और सासाद	₹
६१ मनुष्य, मनुष्यपर्यात और ष्यनी मिष्यादिष्ट आयोहा मान मीर सर्वातकाटिक स	पर्व	सम्यग्हरि कारिक र		349
क्षेत्र ६२ डक टीनों प्रकारने सास	२१६-२१५  दन	गतकाल स	गवाधी स्परानक्षेत्र इ निरूपण	ត <sub>2</sub> តុក
सम्यादि अनुत्योंना या भीर अनीतकाटिक स्पर्ध ६६ अनुत्योंसे अगस्य प्रदृत	र्गान नक्षेत्र २१७-२२	७४ दिशा भी	र विदिशाका स्वद्ध ।पत्रमनियमके दोन	7, में १२(

_					(11)
स्परीनातुगन रि			विषय		तृ म
पृन ∖	८५ सीधम	और	द्शानक <sup>्र</sup>	ग्रामी त्यानसे	

220

160

. . .

£32 £22

128 128

विषय ध्रम न ७५ भयनयासियों में उत्पन्न होनेयाले तियँचापा उपपाद सम्बन्धी रपशनक्षेत्र साधिव पाच रात क्यों नहीं दोता, इस दानावा <sub>22</sub>8\_220 समाधान ७६ सम्योगमध्यादीष्ट और शस्यन

सम्यग्टिट देघोंके यतमान तथा स्पर्धनशेत्रवा भतीतकारिक

सोपपश्चिक निरूपण भीर सासादन ७७ मिच्यादि सम्पन्दप्रि भयनवित्र देवारे पर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रका

६२८-६२९ संयुविष निरूपण सतीतवा िव ७८ वर्त देवाँ वे सोपपसिव इपर्शनशेत्रका

<sub>22</sub>0-222 निरूपण **७९ उपपार्यद्गत मिस्यादि भयन** चारी। देवांके स्पर्धमश्चमधा शोव अपूप दावाशींबा समाधान

८० मिथ्यार्टाष्टे और मासादन सारवारि व्यान्त्रेयाव व्यारणा नादि परावे कपदानक्षेत्रका सीप २१०-२११ पश्चिक निरूपण ८१ उपपादकी अवेशा तिवालाव से असंख्यातगुणा देख चतमान बाएमें ध्याप्त करक श्यित

ध्यातरदेय अर्तातवालमें वेशे तियालावचे शतपात्रये भागवी इपुर्न बरते हे इस राहाका सम्बद्धाः समाधान ८२ ध्यातराँ वे प्रथमीपान धायास स्थाताचा (तस्पण CI SUUI NA PUINA

क्यून्य सरश्च ८४ शस्तामान्याराष्ट्रं आर समयत भागमध्य द्यीवा मीर अनीत्रवास्त्र ពួកដាក इए-नन्दरंत्र

देवोंमें मिध्यादिष्ट गुणस्थानसे रेकर सभेपनसम्यन्ति गुप इ्यान तक प्रयेक गुणस्थानपर्ना देवीया स्पर्धनक्षेत्र ८६ इन्द्रक, श्रेणीवय भीर प्रकीणक विमानांके विस्तारका निक्यण

274 ८७ सीधर्मादि सब बस्पाँ विमा मों की संख्याका निरूपण ८८ सीधमकस्पयामी इपर्शनक्षेत्र देवार भोधकप्णने

समान वर्षो है, इसका सीप पशिक निरूपण ८९ सनजुमारब पने सबर सह भिष्याद<sub>ि</sub> ग्रार्वश तववे बादि चारी गुणस्थानवर्षी देखींका चर्तमान और अर्तात

£23-886 बाहिब वर्णनिधेय ५० आनतकस्पेवे रिक्ट बारयुत बस्य नवचे विष्याद्धि साहि चारी गुणवधानवनी इवाद धन

\*\*\*

\*1\*

मान भार भगानवारिक क्यान शेत्रवा सीपप्रतिव निक्रपण **९१ लगाँवेयकों के मिल्याराधि आहि** बारी गुजस्थासवती दश्रीका धनमान और धनीनक रिक **९२ तय अनु**द्दा आह एक अनु **रपश्**तरोत्र

लार विमानवासी असदनसम्ब स्तिह इव का क्वलकरात्र रिन्दमाग्रहा ) < १ दादर स्त्रिम श्राह सदस्य अप यास तका ह्रव जोद का करा स

equintes enti a me mir

( 84 )		बर्द् उटाय	สา มเกเล	ı	
म्य न	<b>नि</b> गय	पृ स	प्रम में	निषय	पूर्व
षयों दे ९- सामाः यात वि मानकः ९६ उना २ सीनों सेत्रका १ अ पोर्गिः	व्यक्ति स्वयाच्या माग , इन दावाचा समाधान त्याप्य प्रयोग और स्वया प्रस्टाय और्मीवा धर्व गीर्मी मास्यक्ति प्रस्टाय ह स्वर्मीतवानिक स्वयान । सीप्यतिक निम्पा प्रयाभित स्वर्मीत्रिष्यपान दार्थि और्पोक्ष प्रयोग सरीप्रकारिक स्वयान	23 <b>१</b> 242 43	१०२ बादर कायिः समुद्धाः देशवः १०३ बादर व्यक्तिः वर्षात यर्गात सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा	तेजस्मायिक और वायु क जीनोंके वैक्तियक तमस्यानी स्पर्यान शिषपासिक पणन शृचिनीकाथिक, जल् न, जातिकायिक औ तिकायिकन्र यक्षप्रदेश जीनोंके चलेमान औ शाहिक स्परानस्वर्ध तदन्त्रात दाकासम् स्मानम्मान प्राप्त	२३९,२५०   १   १   १   १
सेत्रह ९८शाम रूप रूप प्रव <sup>0</sup>	र मीपवरिषक निरुपण दनमध्यपदिश्वपुण्यानसे सर्वपण्यान्यानश्चान प्राप्तक नुप्तस्यानस्यान इ.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स	<b>483</b>	कान्दि १०५ धनहर उन्हें पूर्यार	यायुकाधिकपर्याः का यतमान तथा अतीर क स्पर्शेनक्षेत्र तिकाधिक, निगोद, तां यादर, स्ट्रम बी । अपर्योत्त जीवांका स्पर्र	र २,१२२। ज र
99 prop 1872 1872 3 194 prop	रणा प्राप्त द्वा की यों का प्राप्त की राक्षणीत का जिल्ला स्रोप	<b>વ</b> યક ૭–૨५५	देश विश्व १०६ व्यस्य प्रयाद झाड़ि सम्ब	त्यित्र भीट प्रसत्तायित्तः तः जीयेदिः मिष्यादां चीदद्वाः गुणस्यान् चीद्यानदेश्वतानिकः प्रावितः स्टब्स्यपूर्योश तास्त्रानदेश्व	F हि शें बच २५
हरी हाड़ हार्क डोड हरी हरी	के बार्वा कि भीत र बनना पर्शाक्त को के र, स्था कर्ज के सार्थ के प्राप्त पृथ्यों काविक, रजनकारिक, प्रमुख्य के के स्थानकार्यक्षीत की र		१०८ वांचाँ वयम वयम स्थान स्थान	४ योगमार्गणा  मनीयेगी भीर पाँगीयोगी पिरपारिश्वारिशीया  मन भीर भर्मात्रशाणि  न भेर  स्वार्यमारिश्वारिश्वारिशीया  स्वार्यमार्थारिश्वारिशीया  स्वार्यमार्थारिश	श क २०५२५१
) 61 हर 64 हर बार्	रें कार्याच्या । चित्रं विश्वस्थान प्रमाणाः स्वत्यं क्ष्मं प्रदेशकार्याः स्वतः स्वत्यं स्वतः	₹5 *5 <b>&gt;</b> ~45	110 [XC 4114 2114 2114 2114 (	त्यात्र तह मन्दर छ। १९नी पांची मनाया गांची पचत्रपागी जीवी १९भव पट्टि गुणस्थाती है?	ग गी श १ १९३५)

<sub>and</sub> tempto	( \$9 )
<u> </u>	_^
रमने गाउनम-विस्तर	्षा विषय पृन्ने
विषय पूर्म ""	म , धेविधिकविभवाषयोगी गिरुया , क्षति सातादनसम्बद्धिः और
क्षम में प्राप्त दर्द १२०	, धिविधकिमशायवाताः इप्ति, सासात्रनसम्याद्धीः और
	हरि, सातारनसम्बद्धाः जीवीना अस्यतसम्बद्धाः जीवीना
बाववाना शर्वामिने चनावा	#Hilly day
बायपेती जीयांबावपानेवा १११ बायपेती संयोगिवपानेवा १११ बायपेती संयोगिव मुख्य सूत्र संयोगित्व संयोगिव	रपरांतरेष ११ माहारवकापयोगी और आहा ११ माहारवकापयोगी ममससय १वमिश्रवाययोगी ममससय
हारा वानानेका संयोधिक २५८२.९ हा	११ ब्राहारव वाययागा आस्त्रसय रवमिश्चवाययोगी प्रमत्तसय २६९
कारण निरूपण मिट्या	
११२ भीशिर क्यायाना न्यानरोत्र न्या मार्थित	A Tor SUSTABLY
LE alla Talking Alla	जीवोक्त स्प्रानस्य १२३ कामणकाययोगी सासारन १२३ कामणकाययोगी अस्यतसम्य
रि जीयोंको स्थानिक स्	१२३ कामणकाययांगा सार्थाः सम्पन्दिष्ट और शस्यतसम्य
	सम्पादिष्ट और अस्पतिका सम्पादिष्ट और अस्पतिमान सधा रहिए जीपीया पर्तमान सधा
श्रीर अतीत्रवालिक देवरात २६० २६१	
११४ भीदादिक वायपोगी समय	
Butalicie, (ala)	५ वेदमार्गणा २७१-२७९
श्रिक्षाद्धिः अस्यत्यान जीवीना नद्धिभार स्वतास्यन जीवीना	
THE PARTY OF THE P	
€प्रशंनक्ष <sup>म</sup> — <u></u>	
००५ गमलस्यत	
Ed Com " - Sealagill	सर्विक निकर्
प्रवाके आराज्य नेहर र	क्षा और प्रश्निय में मने मनेमान
, तबक जीवाँचा स्वश्ननक्षेत्र शह भीवादिनमिधवाययोगी मि शह भीवादिनमिधवाययोगी मि	१२६ जी और पुरुषया साला स्वाहिष्ट आयाँके यतेमान स्वाहिष्ट आयाँके स्वर्धन और अतीतकालिक स्वर्धन
	भीर अतीराकालक
११६ श्रीदारिक जीवाँका स्पराने २६३-	रेंदर केंद्रा सर्वत्यात देवर रेंदर
ं देश वर्ष	धानक साथ ।। जन्मी सम्ब
क जनिवायायामा ""	कार सचित्री आर पुरुष माम्यत
१९७ भीदारिकारण अस्यत सादनसम्बद्धाः स्वीमिक्षेत्र	
सादनसम्बद्धिः अस्यानिक्यली सम्बद्धिः और सयोगिक्यली	TITLE SILVER
सम्याहीर और संयोगित तर जीवाँके स्वर्गनिरेत्रका तर	Maria Mallania
जीवाँ इत्यानसम्बद्धाः पूर्वक स्तात शका समाधान पूर्वक स्तात शका समाधान पूर्वक	४-२६१ क्षेत्र ०० चयता
	४-२६ <sup>५</sup> क्षेत्र १२८ स्त्री और पुरुपोदी सपता १२८ स्त्री और पुरुपोदी सपता
सीववाश्वर ।। ११८ धेनियवनाययामी मिट्या ११८ धेनियवनाययामी और	audia
१९८ धेनियव वाययोगी । स्थाप हारि जीवाव धनमान और हारि जीवाव स्वयानक्षेत्रका	Billian Edding pale
इष्टि जीवान चनमान इष्टि जीवान स्वदानसेत्रका अतीनकालक स्वदानसेत्रका	रदेप वस्तिस्यते गुणार आह
नेपायांचीय "" न्यायानी	यानग्राच
Stat 14 ala Custific	स्तपक गुणस्थान तर्व
११९ चेशि । व हायपाता सासार ११९ चेशि । व हायपार स्टिया	WINDS! W
आर अस्यत्व	485-486 3000

जीवादा स्पदानशत्र

(88) वर्गनाम् हिन्ति मम न विषय विरोपताकाँके साथ स्पर्धन ष्ट न । पम न क्षेत्रका धणन <sup>१३०</sup> नपुसकोरी मिध्याहरिष्ट जीयोंके विषय १३० समयनसम्पारणि गुणस्यानमे तदन्तगतः सभा समाधानके साथ स्पर्शनक्षेत्रका निक्रपण त्रेकर सीगकपायगुणस्यान नक के मनि, भूत और मगति १३१ नषुसकोदी सासादनसम्य मानी चीयोंक स्परीनक्षत्रका म्हिष्ट जीनीका वनमान बार २७: तर्ागत शहा समाधानपूरक वर्तातकालिक स्वशनक्षेत्र १३२ सम्योगिध्याहीष्ट्र गुणस्यानसे ₹७<del>२</del> ₹७३ <sup>१८०</sup> ममनमयन गुणस्थानमे लेकर लेकर अनि रृत्तिकरण गुणस्यान सीणक्याय गुणस्यान तुक्क तरके नपुसकोही जागाना वतमान और अर्तातकालिक मन प्रयुक्तानी स्पर्शनक्षेत्र **म्यानक्षेत्र** जीयोंका रवर केन्यमानी सर्वे विक्नुणी १३३ अपगतवेदी जीनॉका स्पर्धन 2/3 और अयागिकेन्द्री जिनीका स्पर्धनक्षेत्र ६ (वपायमार्गणा) २८०-२८१ १८२ ममसस्यत गुणम्यानमे हेनर **रै**३४ मिय्याद्दष्टि गुणस्यानसे लेकर 203-27 यनिवृत्तिकरण २८५-२८८ थया।गिरेचर्रा गुणस्यान तकके तको चाराँ सयन जीवाँका स्पर्शनक्षेत्र जीवाँका स्पर्शनक्षेत्र क्यायत्राहे १३५ टोमक्पायवाळ सहमसाम्प १४३ प्रमत्तसयन गुणम्यानम लेकर रायगुणस्यानवती उपशामक २८० व्यति हृति करण गुणस्थान तकके और क्षपक जीगोंका स्परान सामायिक और छहीपस्यापना क्षेत्र १३६ उपरान्तकपाय वादि वन्तिम सयमी जार्जीका स्पर्णनक्षेत्र र्धिः ममच और अममचसयत गुण **चारगुणस्यान**गाले अक्यायी स्यानवर्वी पारिहासविद्याँदे जीवोंका स्परानशेव सयतीमा स्परीनक्षेत्र ७ (ज्ञानमार्गेणा ) <sup>१४</sup> उपरामिक आर क्षणक सुहम २८०-२८१ **१३७ मिध्याद**्धि और सासादन २८१-<sub>२८५</sub> साम्परायसयमी सम्यक्ष्यि मत्यमानी नथा स्पर्शनक्षेत्र जावों हा धुनाहानी चीजीक स्पदान १४६ व्यतिम चार गुणस्यान् यती संबंधा नद् नगत शका समा 263 यथास्यानसयमा धानपुषक निरूपण १३८ विभगवानी मिच्याहोंगे गर स्पशन नेव १४७ संयमास्यम्यालः चार्योकातद द<u>े</u>-१-२/५ सामाइनसम्यग्**रा**पृ न्तगत राका-समाधानके साथ स्परानक्षत्रकात्रक्तगत् गरा <sup>स्पश्चानक्षेत्र</sup> निरूपण धमाधानपूर्वत निरूपम {४८ मिध्याञ्चले रुद

	(84)
	ूची अन्याः पृम
० दर्शनमार्गणा तथ्य १८८-९५ । १७६ चक्षरमाने मिरणादि जीयों १७६ चक्षरमाने भीर मतीत वालिक दर्शनेतथम । १० सामादनस्ययदि गुजस्मान सक्षे प्रमुद्धानी आयंका १० से स्पार्थ प्रजस्मान सक्षे प्रमुद्धानी आयंका १० से से प्रजस्मान प्रजस्मान से स्पार्थ प्रजस्मान स्पार्थन १० सिरणादि गुजस्मान सरका से स्पार्थ प्रजस्मान स्पार्थन स्थान से स्पार्थन स्थाना से स्पार्थन स्थाना स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना १९६ वर्ष से स्थाना से स्थाना	वालाइनमप्तराधि निर्मय वालाइनमप्तराधि निर्मय वालाइनमप्तराधि निर्मय वालाइन परावन्धेय वालाइन परावन्धेय वालाइन पर्यान्धेय वालाइन पर्यान्ध्य वालाइन पर्यान्ध्य वालाइन वालाइ
सासायनसम्बद्धाः सीर्मा वाष्ट्रमः हेट्यासम्बद्धाः	क्रांतिक हेपरानक समझ क्रांट
ष्टे घार्ड भाग भार नी बट चौर्ड भाग भार नी बट चौर्ड भागतमाण ब्यां नहीं चौर्ड भागतमाण ब्यां नहीं चार्या जाता इस नहां में	समस्य । १६४ (मध्यादाय गुण्डस्य न २९५ अस्यतस्यादायः गुण्डस्य न तवचे ययज्ञ्यायाते आसादा स्वसान भार अनीतवाज्यः ६ ७.९९५
<ul> <li>१५७ पण लीज आह नायात सार याने तथा पश्चित्रामें बार याने तथा पश्चित्रात वरनेवाल लाम्बद समुद्धान वरनेवाल</li> </ul>	हरा <sub>य</sub> ा न ६१ व
P. Billion	

( 94 )		पर्गंडागम	की प्रशासना			
भम न	निषय	पृ स	धम न	विष	य	ર્ ર્ય
बनागतकाल १६६ पद्मले स्थावा सममत्तस्यत १६७ मिथ्याहरि र् स्थतास्यत	मान धीर थतीत संबधी स्पद्मनक्षेत्र हे ममत्त भीर विका स्पद्मनक्षेत्र	। य २०८ : २९९	स्पर्धनः १७० उपपाद सम्पण्ड नित्रः वि	पर्गत समया हि जी गाँका तिपंग्डी हके स गाण देने गम्माधान	ह्यायिक स्परान रेल्यानये दे. इस	305-30g
मान और वर्ट संबंधी स्पर्धाः १६८ शुक्रेटेस्पामां स्टेस्पायाले हे उत्पन्न होते समाधान १६९ उपपादपद्या पांठे अस्पत	ति बनागतकाल नक्षेत्र हे तिर्पच, गुरू देवाँमें क्यों नहीं हं, इस राकाका रिणत गुक्कलेक्या सम्यन्दिष्ट जॉर्थोंके	<b>२९९-३००</b> १ ३००	लेकर व तकके जीवांक क्षेत्र-या रैंड७ असयर लेकर व तकके वे स्पर्धना	योभिके प्रती ग्रु भाषिक म सोवपतिक प्रमुख्य सम्पन्दिय गुण् प्रमुख्य सम्पन्दिय गुण् प्रमुख्य सम्पन्दिय गुण्	हुएस्यान स्परमधी स्परान सम्यानमे जस्यान जीवींका	<b>3</b> 03-301
शुक्त लेदयायाँ जीवाँके दे बीद्द भा क्षेत्रका सीपा १७० प्रमचसयत ग्	ो गुणस्थान तक्की छे आँगीका	29	यतीं जीवना उसने वे उपस्थित १७९ सयतास लेक्ट स्थान म्हिए जी	सन्यन्दाह सु श्रीपद्मिक्स स्पर्दानसंत्रत्र गेघके समान त सापत्तिका प यत गुणक उपद्मानस्वर्धा तकके उपदा विकास्यन्दिष्ट, दिहे सीट मिथ	स्यस्थी , तथा कहतेमें रिहार स्थानसे । गुण मसस्य तेत्र सम्य	\$04 \$08-\$01
१७१ मिष्यादृष्टिगु			जीवींका		वृषर	**1

१७१ मिथ्यादृष्टि गुणस्यानसे लेकर अयोगिके ग्ली गुजस्थान तकके भ यजीवाँका स्पर्धनक्षेत्र १७२ समस्य जीवॉका स्वर्शनक्षेत्र

१२ सम्यक्तमार्गणा ३०२-३०६ १७३ असयतसम्यन्हारे गुणस्थानस छेक्र अयोगिकेवली गुणस्थान तक के सम्यक्तयी जीवोंका रपर्शनक्षेत्र

१४४ ससयतसम्बन्दवि गुणस्यान

यतमान और अतीतकालिक 304 305 स्पर्शनक्षेत्र १८२ सामादनसम्यग्हरि गुणस्थान सं लेकर सीणक्याय गुण स्यान तकके सही जीवीका ३०२ स्पर्शनक्षेत्र

१३ सज्ञिमार्गणा

" १८१ सम्री मिध्यादारि जीवींका

स्पर्धनक्षेत्र

३०१

		(	80)
ক্য	टानुगम-विपय-सूची	विषय	पृन
हम न १८३ ससग्री जीयोंका स्परानक्षेत्र १८३ समग्री जायोंका ३०	ノーミック かんだいい	रालके अस्तित्वकी प्रचारितकायमामृतकी का उहेल	3(3
१८४ व्याहारक मिरपादि जीवीका स्वर्शनक्षेत्र	३०८ प्रश्तम प्रयोजन ज्ञाचर स्वरूप	मुहते, या आर होनेजा निरूपण	
वार्षप्राचा जाता, अत संवर्ष	क   ० वार	तान्य। ह पर्यापयाची नामाँ	<sup>प्र</sup> ३१७-३१८
इतिस आयान	ण १० सम	य, सायरी उर्य विस्य मारी मुहुत वर्षके कार यमाणका	in sec
१८६ सासादनसम्बद्धाः स्थानसे त्यार संयोगिते गुजस्थान तकका स्यान ७ सनाहारक जीवीका स्थ	र्शित्र मा	ल और रात्रिसम्ब यी।	865-260°
कालानुग	r \	हर्तिके नाम इहतिके नाम इहका प्रमाण श्रीट दिव नाम मास, चप श्रीट चुन ह स्टारूप	Ile
विषयकी उत्पानिक १ ध्यलाकारका मगलाच	रण भीर ३१३	अ निर्देश, स्वामिय शाद रह अनुवेशकारांते	वात्त्वा व्रश्न-इरद
प्रतिष्ठा २ बालातुगमकी श्रपेशा भेद निरूपण ३ नामकाल, स्थापनाक बाल श्रीर भागवाल काल श्रीर भागवाल	रह, द्रस्य	स्यहर्य-ानकर १५ वहि बाज्यबमात्रमः सूर्यमेड-में हो सवहि	पुष्पहेश्वद धन है माँ वाहे परि
महारके बालनिहर स्वरूप निरुपण स्वरूप निरुपण	तिमागमद्रम्य शिवा सम्बद्	स्वत है इस शबा सम्बद्धि से ता	त समायान हम राजिकप जन्म वटी
विषयं वसाहित्रका प्राप्त और शास	परांचका गाया व्यवस्थ	क्षार्था स्पर्धाः इ. इ.च्यादं काणस	प्रदम्भा धन्नद्र। ११ वस्तर
भावन उर्शाः ५ हरणकारचे भी	्तरपाधसम्बद्धाः विभागवत्राच्या	त्याभी व अपूर्वः १६ । अतिरुगद प्रयोपयः वर दानी प्रया साम्यवन्त्रायः ति	TE (ATOM)
धन वरत के स्वामान निर् स्मामान निर् स्मामान जीवस्य स्मामके न वर्ष	arried X	file.	

( 88 )		पट्खंडागमकी प्रस्तावना
	_	

मम न	विषय	पृन	प्रमंत	विषय	á g
१८ मिच्यार्टा जीवों शी १९ पक जी सीन मेरे	> १ पालानुगमनिर्देश ३ ष्टे जीनींका नाना संपेक्षा कालनिरूपण नक्षी संपेक्षा कालके कि सुदेशात उत्तुस्त,	२ <b>३-३५७</b> ३२३	२७ अगृहीत, संग्रेषी ते संग्रारण २८ नोकर्मपुर	त्र मिश्र और र नि प्रकारके कार अस्प्रहुट्य निरूप स्परिवर्तनके सम	३३• हुरीत टॉका ज ३३१ गनद्वी
यार : कालकी निरूपा २० सामादन	म्हनमं साहिन्सात भपेसा जधायकालका सम्यक्टाप्टेजीयको मी	३२४	उहेरा विश्लपता २९ क्षेत्र, क	परिवर्तनके स्वरू और तत्सम्ब ऑका निरूपण एट, मूब और प् वर्तनोंका सूबगाप	ार्घा १३१ गानु
सरवान्य कर उम	ागुणस्थानमें पहुचा का जघायकाल पर्यो			.धतनाया सूत्रकार हृप निरूपण	255 53A
नहीं दः शस्यान	लिया, इस दाशहा	३२५	यतनवार	की अवेक्षा पाचाँ का अस्पयदुत्य	12
44.2-41	षर्का मधेना उत्रष्ट एन मिष्याःचहालका		२६ पात्रा पाः अस्पबहुत	रेवर्तनोंका कालस प	441
£4.5 4	परियन्तिका स्यस्प हुर पाच प्रकारके कि सामोहेल कर	,,	३२ सादि सा कम अध् निद्दान	त मिष्यात्वके पुक्रस्पीरपर्तनका	स्था स्थ
द्राप्यप्री निष्यम ११ स्ट्रिट	यनगर विशाह स्थम्प यन साज तक सी	<b>3</b> 7' 33,	स्यदा विः दायीदा	की उत्पत्ति और मि सदा, इन दोनों जि एक समय देसे इस दाकाका समा	भिग हो
ऐंग हैं स्टाई स्मिप्ट स्वाच	पुरत भगावर वर्गी ता न शाका गामावः सूत्र गागावे साथ क्यो वर्गो शामा, इस स्वय ग्रह्म स्वयं सुद्ध त पुरत्युक्त	<b>3</b> 44	पयाय उ पर्योक्षि, व दे। शीर मी मानरे	भाम पर्यायका है, त्याद विचाद्यात्मम्ब सम्में स्थितिका म स्यदि उसकी स्थि तं है, तो मिथ्या	- है, माय वित स्पेर
डिन्यू सहस्रह बुद सर	ন্দ্ৰব্দী বিশ্লী পা, বন্দ্ৰব্দী হাথাৰ হা বিন্দ্ৰবৃদ্ধী প্ৰতিত		ं दीकाकार ३ धनानका	प्राप्त होता है। तमाधान स्यद्भय और उ वायमाधारा उहार	- 1114" er -
क्षण है दश्या ११ दुरहर	िर्भ परिचन हो १९४४ झना १म सम्मान परिनद्दण्य निर्म (१९४५)	1·2	३ <sup>5</sup> ध्ययगर्ह भादि सा हिन भग करण	न सर्पपुत्रस्पारिय गियोन सन्तरन भारते दे, इसका रा तरन शांशिका विषा	तम हम हरी

	जपम्य बारानिस्पत	130	५० वर जीवरी अवेशा असवत
ţ٠	दश औदींके दाहण बाजका		सम्बन्द्रशियोंने जग्राय कालका
	शयुनिक काञ्चलीन	240	
g,	यत्र जायत्री भयसा सामादन		े एक जीवकी भवेशा असयत
	गायारियाँ ज्ञाया वाल्या		सम्पादिएयाँके अधाय कालका
	<b>ीरूपण</b>	288	तदन्तर्गत धावा समाधानपूर्वक
	उपनामसम्बद्धसान्त्रे अधिक		सीपपश्चित्र निरूपण ३४७-३४८
	मानीमें पया दीय है इस		५२ सपनासयत जीयाँका माना
	दावादा समाधान वस्ते हुए		अधिर्वा भपेशा बाल ३४८
	गासादनगुणस्थानय बाल्बा		५३ एक जीवकी भवेशा संयतासय
	राधमाण निरूपण	,,	तींबा जधस्य बाल ३४९
ષ્ટર	यवजीयकी व्यवेशा सासादन		५५ सम्याग्नरपाद्वरि जीय संयमा
	सम्पन्तिष्यां वे उत्तर वाल्वा		सयमको क्यों नहीं मास होता,
		185	
85	सम्यग्निस्यारीध जीवीया नाना	:	५५ एव अधिकी विषेशा संयता
		383	स्यतांश उत्प्रदेशल ३५०
	मप्रमासस्य जीव सम्योगमध्यास्य		५६ प्रमत्त और अप्रमृत्तसयतींका
	शुणस्थानको धर्यो नहीं ब्राप्त	ļ	माना जीवींकी अपेक्षा काल
	होते, इस दीकाका समाधान	\$45	विस्तवा ३५०
	सम्यासिष्याद्यक्षे जीव अपूना		५७ पव जीयकी मवेशा प्रमत्त भीर
	कार पूरा कर बाछ स्वमही,		अप्रमत्तस्यतीने जय-य नालना सोपपासिन निरूपण ३५०३५१
	भथवा सब्भासवमको क्यो		
	मद्दी प्राप्त दीता, इस दावावा		५८ एव जीववी अपेक्षा प्रमत्त और
	समाधान	"	मप्रमत्तसयर्तीका उत्हर काल ३५१
	माना जीवोंकी भोशा सम्य ग्मिष्यादिष्योंका उत्रष्ट काल	<b>-</b>	५९ चारी वपद्मानकीका माना ।
	यक् जीयवी अयेश्यासम्यन्मि	<b>#88</b>	जीर्पोर्श जधन्य वाल ३५२
	यक् जायका संपन्ना सम्याना व्याष्ट्रियोंके जधम्य कारना	- 1	६० व्यवसन्तस्यतको अपूर्यकरण गणस्यानमें के जाकर भीर
	च्याराध्याव जाधन्य कालका सद्भगत दाका समाधानपृथक	ì	्रितीय समयमें भरण <b>पराके</b>
	तद् ततत् भागा समाधानपूषण निरुपण	- }	धपुषकरण गुणस्थानके एक
	पद जीयकी अपेक्षा सम्यन्मि	"	समयनी महराणा पर्यो नहीं ही.
	ध्याद्वरियाँवे उत्राप्त काल्या	ĺ	इस शेवाका समाधान
	सीपपत्तिव प्रतिपादन	३४४	६१ नाना जीवोंकी अपेक्षा घारों
પ્ર	शसयतसम्बन्दरियोका नाना	- {	उपशामकीके उत्दृष्ट कालका
	अधिकी अधिका काल, सथा	,	सोपपाचिक निरूपण ३५२३५३

(40) पद्खडागमकी प्रस्तावना क्रम न विषय प्रकोकम स विषय ६२ पक जीयकी संपेक्षा चारों उप थीर एक जीवकी अपेक्षा जवन्य शामकौंका जघ य काल थीर उत्रुप्त कालोंका सोपपश्चिक ३५३ ३५४ ६३ एक जीवकी अपेक्षा चारी उप निरूपण शामकोंका उत्हर काल 348 ( तिर्येचगति ) ६४ चारों क्षपक और अयोगि ७५ तियेच भिष्याराष्ट्रि जीवीका केयलीका माना जीयोंकी अपेक्षा नाना जीवोंकी अपेक्षा काल जघ य तथा उत्हार काल 308-394 वर्णन ६५ उक्त जीवोंका एक जीवकी ७५ एक जीउकी झपेक्षा तिर्येच भपेक्षा जघ य और उत्कृष्ट काळ 344 मिथ्याहारि जीवोंका जधस्य ६६ सरोगिकेयली जिनका नाना और और उत्रप्ट काल पत्र जीयकी अपेक्षा जघाय और ७६ 'असख्यात पुद्रत्तवीरर्वतन' इस **उत्र ए काल निरू**पण ३५६ ३५७ घचनसे अन तताकी उपलब्धि होती है, अत सुप्रमेंसे अनन्त आदेशसे काल प्रमाण-निर्देश पद क्यों न निकाल दिया आये, १ गतिमार्गणा रस शकाका समाधान (नरकगति) ७७ सासाइनसम्यग्हरि और सम्य ३५७-३६३ ग्मिध्याद्दीप्ट तिर्येचीका काल ६७ नारकी मिध्यादृष्टि जीवीका मानापीयीपी अवेसा ममाज ७८ वसयतसम्यग्हरिः तिर्वेशीका

निरूपण ३५७ ६८ एक जीवरी श्वेशा नास्की मिष्यादृष्टियाँचा जयन्य भीर वत्रध वाख 3419-346 ६९ सासादनसम्बन्हीष्ट और सम्ब मिष्यादृष्टि नार्शियोंका काल ७० असेवनसम्बन्द्धि नारविधीना भाना और यह जीवदी अपेशा जवन्य भीर उत्रष्ट बाल निक्षण ३५८३५९ धर साता गुधिवियोंक मारशियोंका

माना भीर एक जीवदी श्वेशा

जयम्य भौर उन्हर दालोदा

सम्यन्तीर धीर सम्यामस्या

दरि बर्चाइयोंडा दाल वर्णन

सन्दर्भ वार्षस्थाचा वाना

७२ सन्त्री पृत्तिवर्योद्धे सासादन

धी सन्ते पूर्वित्रव हे प्रमायन

स्रोताहर

योनिमती मिध्यादृष्टि जीवाका माना और एक जीवकी भवेशा जयम्य और उत्रप्ट बाल ८१ पथानवे पूर्वकोटियाँकी षोटीप्रचनत्वसञ्चा कैसे सकती है. इस शकारी समाधान ८२ रूप्यपर्यातकोर्ने स्रीवेदकी संभ-

और उत्रष्ट काल ३५८ ८० पचे दिय, पचे दियपर्याप्त और

नाना और एक जीवकी अवेका

भीर पक्तांयकी अपेक्षा जधन्य

जय य भीर उत्हर काळ

७९ सयतासयत तिर्येचोंका नाना

यता असंगयताशा विचार ३६६ ८३ उत्त तीनी प्रकारके साराादन

340 348

361-348

368-68

111

111

24:

111

सम्यादष्टि और सम्याधिरवा रिष्ट विवैचौंका काछ वर्णन

¥ L	र्म विषय	पृत	मस	विषय		ए म
	वनः सीनी प्रशास्त्रे वास्यतः शारपारशि निर्ययोद्यामाना शीर यत्र जीवती शोरेशा शापपीनाव जागय शीर बाहुन्य वाल		देवाँका ९५ शरीया	न भीर मसंचतसः १ बाल तसम्यन्द्रीष्ट देवींब क जीवबी भवेशा	ा माना	३८१
c4 ct	उत्त तीनों प्रवादके स्वयता स्वयत निर्वेषीका कार पर्यादिय राज्यपर्यातक निर्वेषी का माना और यक जीयकी संपेक्षा जम्म्य भीर उत्तर बाज	<b>1</b> 08	भीर उ ९६ भवनय शहरा भीर म मामा ३	त्ह्रप्र बाल गिरियोंसे लगावर रबस्य सबबे मिर् स्पतसम्पद्धि भीट एक जीयकी	दातार पादधि देपीका भपेदा	11
co		१७२-३८०	300.77	धि देगोंके	भीट बालमें	CR 1/CV
	भीरपत्र जीवत्री भेषशा जवस्य भार उन्हण्यालका सोपपश्चित्र निरुपण	<b>1</b> 07-101	९८ उत्त दे याते व महतिस	योंकी स्थिति कर गलसूत्रका भीर ( ज़िका विरोध उ	त्रेशोक	
	उन तीनी धवारवे सासाइन सञ्चन्ध्रीय मनुष्यींवा माना दव जीपवी भेपसा जग्रन्य भीर उत्कृष्ट वाल	ইড়া ইড়া	९९ भयनया बन्ध्य सा और स	ह्या परिहार इसियोंसे लेकर सा करे सासादनसम् इम्योगस्याद्दक्षि दे	पश्चिष	<b>R</b> CR
«	डच सीनों प्रकारने सम्य रिमध्यादिक मनुष्योंना माना श्रीर युक्त जीवकी अपेरस	\$04 <b>\$</b> 06	यको र असयर और य	करपसे छेकर क तक्के सिष्यादृष्टि तसम्यादृष्टिवेर्योका कजीयकी सपेद्राः तहारुकारका निर	भीर गाना ग्रामय	164 (184
S.E.	सम्यन्तिष्टं मनुष्योता माना मोर एव जीवर्षा मंपेसा जवम्य मीर इत्हर्ष्टं बाळ इस तीनी व्रवारवे मनुष्योवा स्रवतास्वतं गुणस्पानसे लेवर	३७६३७८	१०१ मी स चार म यतसम् भार जग्म	नुदिश भीर यिष्ठ ग्राक्षर विमानोंके व्यव्हिष्ठ देखेंका एक जीवकी क भीर उक्तप्र काल	त्यादि अस- नामा ग्पेशा	1300
• •	भयोति वेयली सङ्ग काळ निरूपण रुप्तयपयाप्नक ममुर्प्योका माना और पङ्ग जीवडी भपेश्ता ज्ञघःय और अरहण्य काल (देवगति) नै	३७८ ३७९ ३८० ८ <b>०</b> ३८७	शसयर शीर ( काल (	तिसेके विमान इसस्यम्बद्धिदेवींका वक्त जीवकी क नेक्यण इद्रियमार्गणा	यासी माना ग्पेशा	<b>TCO</b>
	मिध्यादि देवींचा माना भीर एक जीयवी शेवेशा जवन्य श्रीर शार उत्हर्भ काल		१०३ एके दिन एकः अ	त्य अधिंका माना (यक्षी क्षेत्रका स तद्वप काल	१८८- थीर घम्प	14/
	<i></i>					

( પર )	पर्गः	समकी	प्रस्ताना			
इस न	विषय पृ	न   व		विषय	, ţt	
<b>₹</b> ***	द्हेित्रय जीवीका नाना दक्ष जीवकी भवेशा किरु उत्तर काल देऽऽ		उत्हर व	धपेशा असम्य गान केडियजीयों हा	1440	ı
اره ا ج <u>ي</u> ا	िर्मिको साउटीके सम चित्रपारिक सुपा करने		कीर प जयप	(क जीयशास मीर उत्दृष्ट <del>दा</del> ल	भ	1
हम इन्न दे दा	हन्द्रमीमानि होती है। ' व्यक्तियमनके साथ मेनामेबन्द्रयकेतियों इज्जानजाम्बन्द्रमानक यक्ती स्थासमा		जीवीरा जायकी उत्हरूव समाचा	एके द्रिय पय नाना भीर भेपेक्षा जमन्य तलका तक्ताति न पूर्वक निक्पण	5 t t j शहर शहर चंद्र	11
1.4 e-71	र वेडे प्रिय प्रयापि -चन्त्राच्याचे रवडी प्रशास इस्ताच्या भेर अपूर	300	जीवरे सम्पान है, तब पनः द	पर स्ट्रम परे आयुक्तमंत्री (आयुर्ग प्रमाण सम्यात यार उन इत् उत्पन्न हो	स्यान होती संही नेपान	
रेरा सुर कर्म कर्म	हराण्ड्रमदः सरण सम्पति (टोप्प्राप्त हेता दे, देश त्व क्षत्रपण्डितपणः देशक रोजकक्षा सम्पत्त माप्रणी		अधि र भारि १ नदी प समाध	्रियम्, पस्तः भागः स्थितिकाः प्राजाना, इस इ भ	अर्च इक्यों इहाका	v
87 54 5 44 E	च्हान है, अने अन्त के बेर श्रामण परित १ का बने आनंता परित १ ण्या शास्त्र शर्म १९ व्या ११ प्रामण्ड स्वा भारता स	<b>\$</b> * (	अपि व सोधा सारव सारव	प्रेन्ट्रिय स्टब्स् प्रमामभीरप्र ज्ञास्य भीर प्रमुख्यान सनेक प्रमान सम्बद्ध	त्रायकः उत्ह्य विकास	1,1
81. € 21. €	ध्यात्त्व कर्ते बर्गे दर्गा है, इ.स्पर्यंत्र, स्थापान अ.स.र अ.च स्थार वर्षेत्र (५.स्वर स्ट्राप्त वर्षा	ş.	সক ( ২০) ক সংগ্ৰহ	य विक्यत्रय भी विक्यत्रय जीवी भागा जीशीकी । भाग उत्तर क री भाग देखा	र एक भारत स्थार	,ì
4 4	५६ ५ वट महासामा १९६८ इ. १ वस्तान १९४४ इ.म. १९४४ १९४४ इ.स. १९४४ १९४४ इ.स. १९४४	;•	113 0 stq 2 qt 2 qt 5 TT	ह बाव विकरण प्रवासक विकास का माता भी विकर सामग्री स्वार का मान समाग्री	2727 1 44 1 411	,,
<b>&gt;</b> (	स्वर्थः स्थाप्तः इत्राह्यः स्वर्थः स्व	••	11/24	समामन उपस्थानसम्बद्धाः १९१५ अस्तिमा	यगर <sup>1</sup> व सन्दर्भ	

धम न	कीलाह	गम-विषय-सूची		
		स्माप-स्या		
eitr	9	मि   मम न		(५३)
ज्ञाय भीर उत्रा ११९ सामाहत्रका	क अपेशा	1	विषय	
११९ सामास्त्रकार व	- Alen 360 C	०० कायक अ	_4	१न
सयोगिकेयश गुण दोनी प्रकारके	±41122 200 €	१२७ गर्म जीवकी	व्याका नाना और अपेशा काल	
दोनों मकारके जीवीका कालगण	प्रकेतिक	877	14 m	go 4 Rof
130 450		१८८ (मेरा) कि	4 -	
जीवोंका काल्	पयाप्तक ४०	१२८ निगोरिया उ भार एक जीव	वीयोंका नाना की अपशाजयस्य	805
3	¥00.00.0	नार उत्रष्ट व	मान का महास्य	
रे पायमार्गण रेर१ पृथियीवाधिक जल अग्निकाधिक और सम्म	1 801000	श्रीर उरहरू व १८९ याद्दिनगोद ज ११० असवाधिक श्री प्याम मिस्सा	वियोक्त 💴 🐰	وه په په
मित्रायिक और वायु जीवींका साल	*#4#.	र र असकाविक भी	C Milany	Y.,
Minima 1919	#114 <b>#</b> - /	पयाम मिध्यार नामा भीर एक	fer Minis	
जीयकी अवेदरा जयाय उत्तर कार का जिल्ला	पक	MU	विषय महिला	
उत्हर काटका निरूपण २२ बारकारिक	भीर	GIAIR-10	I BIGIR 2	
२२ बादरपाधिय नापितः व जलकापितः बादरपाधि	Rof Ros	Cor C	( Garage	
TIREMENT CALLET	જિ≃ !	C COMPANY	Here Yes	800
SALANICAL MICAL	दर ।	से छगावर वर्षे गुणस्थान सक्के	जिल्ला <del>व</del> जिल्लाक	•
जीवर्गेक्ट मध्यश्चा	tîr l	गुणस्थान सक्के प्र	स्वर्गकः 	
जीवकी क्लेन्स बार र	₹4			
अहर बाल	रिर ११३२	4 (4 8 7 i h-	- 114	
कमार्रधानिसे किस कमें रिधतिका मधिलाम के	2 Ros Sos	जावादा काल बतवादिक स्टब्स् जीवादा काल	icicie: g.	•
रिधतिका अभिमाय है, वृश्तम मोहनीयकम्म		0 al	Vacana	
मधानकः 🗝 । (स्थातिक)	, /९वर			
MINT STREET	। व	ह पागमार्गणा गर्चो मनायोगी और चनयोगी मिच्याहाह तसम्पादक	पश्चि	
	1 4	METATOR TO THE PERSON NAMED IN	NI EZ	
धायर जीयाँका माना भीर क जीवनी सम्बन्ध	. tr	त्तिस्यतं सम्मत्तस्यतः गिरिचयते सममत्तस्यतः	144, 20-	
क जीवकी सर्वक्षा ज्ञास्य हर जकर	37.76	THE PARTY OF THE P	धनी	
र उड़र बालका युधक् व निरूपण	#TR	3	73.77	
dini -	्र १६४ दक	****	***	
म स्थापर जावांका सम्य	्रेड अस्ति	क अध्यय बालका या क अध्यय बालका या	***	
यक जायका अपेशा य भार जायका अपेशा	पारव सशक	र जवस्य बालका याः तत्र गुणस्थानगरिवनः भार स्थानगर	7	
य भार उत्रच्छ बाल	वारक	भार स्यास्त्रम् इत		
त्या प्रयोजन भार जिल्लाम् सम्बद्ध	IFERE	हारा साराहरण काव		
***** <b>EXTRO</b>	(			

\*!\*

हिर उस प्रांच के उन्हें काटका

ादाक यांचा स्थावरः

( 48 )	ष	र्गंडास्मरी	प्रगासना		
श्म म	विगय	पृग [	षम न	विचय	द ४
जीवोंका का १३७ उक्त योगवा दृष्टि जीवोंक	ामादनसम्यन्द्दिष्ट ठ ठे सम्यग्निम्प्या १ नाना जीव शीर १ अपेक्षा जघाय हाल	<b>४१२ ४</b> १३ ४ <b>१३</b> ४१४	यतमस्य और व जयाय मोदाहर १४३ मादारि विदेय	क्रमिश्रकाययोगी सम गरिष्ठ जीगोंक नाना इ. जीयई। स्पेसा सीर उररृष्ट कारुका ए निरुपण क्रमिश्रकाययोगी सयो कि नाना और एक सपेक्षा जधस्य और	<b>ध</b> ऽ१ हर
यचनयोगी व श्रीर चारों जीव शीर प जघ य शीर	ताना आर पान वारों उपशामकों श्रपकोका नाना क जीनकी वर्षेक्षा उत्हष्ट काळ म्याची विकल्पोंका	કર્યક કર્ય	उत्हम् अनेकी पूर्वक नि १४८ वैकियि और	कालका संग्सम्यापी दाकाओंके समाधान किपण पकाययोगी मिष्याद्दीर अस्पतसम्बन्धर	<b>४</b> २३ ४२
नाना और	मध्यादष्टि जीवॉरा एक जीवकी अवेक्सा	धर् <b>ष्</b> धर् <b>ष्</b> धर्ष	जीपदी जघन्यः	ा नाना और एक अपेक्षा सोदाहरण और उत्हम्र काळ हकाययोगी सासादन	४२५ ह
१४१ सासादनसम् से ठेकर स स्यान त जीवोंका का	यग्दष्टि गुणस्थान योगिकेयली गुण किने काययोगी ल		सम्यग्दा दृष्टि ज काल नि १५० वैक्रिया	ष्टि और सम्यग्निष्या विका पृथक् पृथक् रूपण क्षित्रकाययोगी मि-	•
हारे जीवीत जीवसम्बद्ध उत्तर ए काट १४३ सासादनस से टेकर स स्थान तक	म्यग्दष्टि गुणस्थान योगिकेवटी गुण के औदारिककाय	<i>४१७-</i> ४१८	जीवोंके अपेक्षा कालका दांका-स १५१ चेकियि	और ससयतसम्यव्हित् नाना और पक्ष भीवकी अधाय और उत्स्प्य सोदाहरण तदन्तगत माघानपूर्वक निरूपण हमिधकाययोगी सासा न्हिष्ट आंयोंके नाना	
ध्याद्दश्चि ज	का काछ स्थ्रस्मययोगी मि विवेक्ता नाना और विवेक्ता जधस्य		और प ज्ञचन्य सोदाहर	क जीवकी अपेक्षा और उत्हर कालका ए निक्पण ह्वाययोगी प्रमुख	<b>હર</b> ૧૪
द्वसस्याह भीर एक	मेथकाययेगि सासा यिजीयोंका नाना	1	सयतीय जीवकी जघन्य १५३ माहार	ा माना और एक अपेशा सोदाहरण और उत्हच्छ काळ तिश्वकाययोगी प्रमस ता माना और एक	કર્ય ક

		ध्यञानुगम	दियय मूची		(44)
<b>प्रम</b>	विषय	पृ न	इस म	विषय	पृ मैं
अधाय भी १५४ नामणनाय जीवीना जीवनी व	योगी मिध्यादस्टि माना और एक मपेशा सोदाहरण	<b>१३२ ४३३</b>	मसे हेर गुणस्या जीवींका १६४ मपुसक	न तकके पुरुपयेद काल वेदी मिष्यादारी	र हे अधर्
१५५ तीन विम जीवींके हो	एउन्हण्ड बाल ४ इयाटी गति किन तो है। यह बतरा विग्रह करतेकी	133 834	जीवकी जब य १ १६५ तपुसकी	दि सामाप्तसम्ब	१४४ १४४ १
सम्यग्हरिट ग्हरिट जी	योगी सासादन और असपतसम्य योंका माना भीर	388834	जीयोंका निरूपण १६६ नपुसकर	गैर सम्यग्निम्पार्हा पृथक् पृथक् कार देवी असयतसम्यग्हार्द नाना भीरयक जीवर्क	ક ક્ષ્મર
अधन्य भी १५७ कामेणकार केवलीका	ी भपेशा सोदाहरण र उत्हुष्ट काळ ४ प्रोगी संयोगि नाना भेट एक गपेशा अपन्य भीर	१३७ ४३६	संपेक्षा सार उत १६७ सयतास	नाना भार प्रकार वर्षे सोदाहरण अधम्य दृष्ट बाल यत गुणस्यानसे लेकर इंदरण गुणस्यान तकरे	<i>885 883</i>
उत्हर्य का	ल ४	३६ ४३७	नपुसकरे	ही जीवॉश काल	883
	दिमार्गणा ४३५ १म्पादन्टि जीवीं रा	3-888	१६८ अपगत्रथ	दौ झार्षेका काल पायमार्गणा ४	288-88 888
नामा भीर अधन्य भी १५९ खोवेरी	पर जीवड़ी संपेशा ए उत्हप्ट काल सासादनसम्याहिष्ट मेमचाहिष्ट जार्योका	830	१६९ मिध्याही श्रद्रमचा श्रापी बालका	ष्टि गुणस्थानसे लेकर स्पत गुणस्थान तकके क्यापयाले जीवोंके क्यायपरिवर्तन, गुण	
	<b>स्थल-निरूपण</b> ू	835		रेवर्तन भीर मरणकी	888 884
जीयों का जीयकी	सस्यतसम्यग्हाधे माना भीर एक भेपेशा सोदाहरण र उत्हर्य्टकाल ध	ाइट <b>स</b> इंद	विस गरि	तक्षण तयसे मराहुमाओं तमें उत्पन्न होता है। काविषेचन	88.884
१६१ सयतासयः धनिवृत्तिक तुकके र	त गुणस्यानसे लेकर रण गुणस्यान गियेरी जीपॉका		१७१ जोच, म तीन क्य नर्थे गुणस्	गान भीर माया, इन गाययांले बाढवे भीर धानधर्ती उपरामकी गांसी स्थाययांले	
माना भी भपेशासो	मिथ्यारिष्ठ जीवीका र एक जीवकी दाहरण जयन्य भीर	३९ ४४०	भाउँचे, न स्थानपर्त नाना भी	र्षे भीर दश्वें गुण डिपशामकोका रषक अधिकी भेषेशा	
शहष्ट व	छ ४	।४०-४४ <b>१</b> ।	जधार्य स	र बत्हप्द बाल	rre rr:

(41)		पद्खडागम	की प्रस्तारना		
क्रम न	वित्रय	पृन	कम न.	विषय	ā ş
स्थानवाः	गय तथा उत्त गुण र सरक जार्योका नाना क्षेत्रकी सरोक्षा जघाप सरक		शेर भग १८४ स्हमसा	वेणुद्धिसंयमी प्रम मित्तसंयतीका काल स्वरायिकशुद्धिसयर	8/18
१३३ क्या स्त्री	च्चान ति जीवाँका काल	83.0-835	44 416	। चार गुणस्थानयः	ส์โ
निकास १९ व	ानमार्गना ध	258		तविद्वारिनेगुद्धिसय	
१३४ सन्दर्भ	भीर धतामाना	186-848	१८६ सयतासं	पत जीवाँका काल	n
(tout	द तमा सामाइन जीगोंका काल	४३८ ४४९	१८७ वसंयत ९ टर	जीवाका काल निमार्गणा	४५३ ४५ <sup>°</sup>
रिशंबिर्म⊤क्ष कासप्त	री सिरगारीय जीवें । भीर एक जीवकी जयम्ब भीर बाहुस	036 884	१८८ चशुर्राः नाना औ	नी मिथ्याद्दष्टि शीर्यो र एक जीउका अपेक्ष गैर उत्दृष्ट काल	rt .
षाव १३६ हिरापः	पै गणाइनसम	RAS R.40	१८९ निर्शृत्यप		
11, 24, 4	. d	<b>8</b> 10	क्यों नहा	होता, इस शहार	
247 (/ 244 (	११४९ दिशुगरभातः। च्याप्यः गुणरभातः शिक्षातीः धानकातीः प्रतिकातीः सीर्वेकाः		गुणस्थाः	सम्याद्यस्य गुण रेक्ट शीणक्याः सक्के चक्रव्यान्	r T
44 1	र्ग संयमस्यतीह प्रमानकी समूच	४१०४ ह		कारू ऐ गुणस्थानसे हेक य गुणस्थान तकरे	
tales	राज्यस्य जिल्लाम् म स्मारतात्रस्य स्वर व स्मारतात्रस्य स्वर	"	मयशर्	नी जीयोंका काल तेनी जीयोंका काल	W.V. H
\$4.4°	कर्ता के हैं हा हू है गाँचा बाल निकास	<b>%</b> 53	१० ल		اونو مهمه
	वर्ग्यका इ.स.च्या	چېر ده. د	a> fa	र भीर कारीत ग्रहण स्यारिक जीवीका	•
#1.2 .4 #0£_2.4		e1 e	FI TIE . W	त्यच्ची भवेषा राज्यसम्बद्धीर उपराहर इयमा समा सम्ब	
***	राष्ट्र कार्यसम्बद्धाः स्रोतिकारम्बद्धाः		स्वर्गी १ समाप म	वाभीदा समुन्दि	85 81
4-X-	१९ इ.स. १९ इ.स.	٠.	१० में में सन	न स्थापात समा दिश्रीची दाम	٧,

	वारीयम	-विशय-गृषी		( ५७ )
क्रम विषय	षृ म	कम में	विषय	पृत
है॰६ तीना सराम रेस्ट्रायाने सर रिमस्पाराह जीवींचा बास दिश्य मीनों अनुस्र रेस्ट्रायाने सर स्वसारवाहींहें जीवींचा मार संस्ट एक जीवका संदेश	<b>ช ५</b> ก ก	याने ३ गुणस्य एक स	ह तेज भीट पद्मनेद्दय तीयोंकी केदमा भी तिपरियतनकी मपेद समझी प्रक्रपणा कर कदा इसा शकाव क	ั ท ที
शादाहरण जमन्य भीर उन्ह बाल-विक्यण, तथा तहालग धनेषी दावाभीका सममा समाधान १९८ नेजीलेट्या भीर प्रचल्दा	भ न स√९ ४६२	२०५ तेज भी कापोन भी यक	र पद्मिट्टयाचे समार भीर मील सेदपाओंच समय पाया जाता है ते क्यों नहीं बहा, हर	न 1
स्रोले बिध्यादिष्ट तथा भसपर		- दाकाका	सप्ताधान	४६८
शस्यन्द्रष्टि जीवीचा माना मा चया जीवयी अवशा शोद द्वरण जयन्य और उन्हरू बार		दश सम	् एक्टेन्ट्याके कार्टी य डोप-रहनेपर जैसे पुणस्थानवाले सयमा	~ `
१९९ मिथ्यादादि जीववे तेजे रित्याची उत्तरप्र विधा कारापुट्रनते बम ध्रदाद सार होयम ममाच वर्षी मही होती इस दाबाबा सुधा हसीह	T T	सयमणी प्रकारसे सममास	श्राप्त होते हैं, उसी ममचस्पत में यमगुणस्थानको पर्ये विता, इस शकाका	t t
द्रस शकाका तथा इसार सार्वा घनमाय क्रद्रशकामाँक	- 1	समाधान		800
अपूर्व समाधान २०० तेजीलस्या और पद्मलेस्य धाले सासादनसम्पर्धा जीयोंका बाल	<b>⊌६३</b> ४६५ [	कार प्रम काल्श्य णत दो	गणे कालमें विद्यमान सस्यत उस नेदयावे सि तेजोलेदयासे परि कर कूसरे समयमें व्यत क्यों नहीं दोता,	r S
२०१ डच्च दानी रेप्पायाणे सम्य			त्यतं प्या गद्धाः दावा, का समाधान	४६९ ४७०
म्मिष्यार्शीष्ट्र आर्थोका काल २०२ उक्त दोनों छेरपाबोल स्वयत स्वयत ममसस्यत और सप मसस्यत अर्थोका नान		२०८ उसः मक भादिक पर्यो नहीं	ारमा जीव मिण्यात्व नीचेक गुणस्थानीको गमान हो जाता, इस	
जीवीं वा विशेषा वाल २०६ उस अयोंके एक नायबं कारासा लेड्यावस्थितंत, गुण		संवतासय	ीर पश्चलेश्यापाले ।तादिसीन गुणस्थान	¥0•
स्थानपरियतन और मरण इन तीनक ग्रारा जयस्य बाल्का निरुपण २०४ क्रियारप्टि भार ससयत सम्यादप्टि, इन दो ग्राण	866 875	५१० गुङ्गलैस्य जीवाक्तम संवेशा से	षीका उत्तर कार पाले मिष्पादिष्टि ।नाभीर एक जीवकी ।हाहरण जपाय भीर लका निरूपण	સર્ગ સર્ગ્ડ કર્મ
	•			

विषय २११ द्युक्रलेस्यावाले सामादनसम्य ग्हरि. सम्योगमध्याद्दि और असयतसम्बन्धि अधिका पृथक् पृथक् काल निरूपण 835 833

श्रम स

२१२ श्रुक्तलेश्याबाले सवतासवत. प्रमत्तस्यत और अव्रमत्त सयर्तोंके नाना और एक

जीवकी अपेक्षा लेक्यापरिवर्तन, गणस्थानपरिवर्तन और मरण की अपेक्षा जघाय और उत्हर

- कालका निरूपण ४७३ ४७५ २१३ तेज, पद्म और झुक्क रेप्स्या सम्बद्धी एक एक समयके

मगाँका तिरूपण २१४ गुरू छेस्यावाले चारी उप-शामक, चारों शपक और

सयोगिके गठीका काल वर्णन ११ मन्यमार्गणा २१५ भन्यसिदिक

**मिध्याद्यां** जीर्योका नाना और एक जीवकी अपेक्षा सोदाहरण

जधन्य और उत्दृष्ट काल २१६ मिष्यात्वके बनादि और अह त्रिम होनेसे उसका विनाश नहीं होना चाहिए कारण

रहित पस्तुका विनादा महीं

होता अता अज्ञान याकर्म

याधका विनासा नहीं दोना

चाहिए इत्यादि अनेक अपूर्व दाकाओंका अदितीय समाधान २१७ मोसको जानेके वारण निरन्तर ध्यपद्यां भ्रम्य विष्छेद क्यों नहीं होता, इस

द्रांधास्य समाधान

२१८ सासाइनसम्यग्हार् स्यानसे देवर

पृन मिमन

803

"

०३४ ३७४

केय र्रा गुणस्थान सक्के अभ्य जीयोंका काउ

विषय

२१९ अमध्य जीगॉका साना भीर एक जीवकी अवेशा काल निरुपण

१२ सम्यक्त्यमार्गणा ४८१ ४८५ २२० सामा य सम्यग्हरि साथिकसम्पग्दप्रि जीवॉम मसयनसम्बद्धाः गुलम्यानमे छेकर बयोगिकेयणी गुणस्यान

तकके जीवाँका काल २२१ असयतसम्यन्द्रष्टिगुणस्थानसे लेकर अप्रमचसयत गुणस्थान तक के घेदक सम्यग्हांपू श्रीमीका <sub>धेउद</sub> २२२ असयत और सवतासयत

y/(

ध्रदर

4/1

गुणस्यानवर्ती असयतसम्य ग्दरि और सवतासयत जीवों का नाना अधिर्जिकी अपेक्षा जयन्य और उत्कृष्ट काल २२३ उच सम्यग्हिए जीवाँका एक

जीवकी अवेक्षा सोदाहरण जयन्य और उत्रष्ट काल २२४ प्रमत्तसयत गुणस्थानसे छेकर उपशान्तकपाय गुणस्थान तकके उपरामसम्यग्द्रष्टि जीवी के नाना और एक जीवकी वर्षेक्षा अधन्य और उत्रस्

कार्टोका सोदाहरण निरूपण ४८३४८४

२२५ साक्षादनसम्बग्दष्टि, ग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् काछ धर्णक 864-86

२२६ सर्शी मिच्याद्यस्ट



ં ( ફેંઠે )
-------------

## पट्नडागमर्तः प्रम्नापना

वृष्ठ	पक्ति	षगुद्ध		সূৰ		
<b>५</b> ७७	~દ્રસો	<b>बेक</b> ,		अस्तिक,		
६३०	८ एक निध्याद्यष्टि गुणस्थान,			एक सम्याभियादृष्टि गुणस्यान,		
<b>48</b> 2	६ सजिङ.			औपरामिक आदि तीन सम्पक्त, सर्वेद		
७१५	३ वादिने तीन दर्शन			आदिके दो दर्शन,		
७२९	<b>१३</b> तथा अस्पायस्यान भी है,			तया अकायस्यान भी है,		
<b>634</b>				एगारह जोग, अजोगो वि यरिष		
77	१५ ग्याग्ह,			ग्यारह योग और अयोगम्स्य भी स्पत है,		
( आलापाँका )						
98	यत्र न	राना नाम	बनुद	गुद्ध, या जो दोना गा <sup>रिद</sup>		
841		सज्ञा	-	क्षीणसञ्जा		
• * * *	,	योग योग	×	दागत्मः। अयोगी,		
		चेरवा चेरवा		अप्रेन्य		
			×			
		संजि०	×	<b>अनु</b> मय		
856	१०	<b>লাহা</b> ০	₹	२		
37	11	n	२	₹		
844	12	n	₹	٦ _		
-310	3.6	गति	8	<b>१</b> मनुष्यगति		
ʻ,	"	क्याय	१	१ छोम		
850	२६	सदा	₹	• क्षीणस्त्रा		
४५२	<b>१</b> २	ৰ্বাৰ ০	१स व	₹ स प		
846	16	रे∗या	मा ३ अनु	मा० १ कापोत		
844	8.	<b>इ</b> न	9	۹.		
४६•	55	प्राप्त	ξ	६ अप •		
4 • ₹	\$ = \$	देग	×	<b>अ</b> याग		
414	-	n	×	"		
466	•		₹ स०	१ अस॰		
- • 5	162	₹"4	१ त्रम विना	५ त्रम दिना		
-	*	£ 13	7 Ff .	> জন•		
472	•	27	۷, ۷,	ა, ა, ა		
£ 7 2	310	C-#				

अप:ग

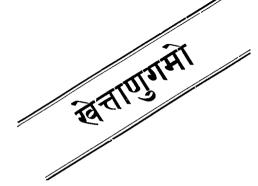
```
1666)
                             ল<u>পুরি</u>বর
                                                 শ্ব
                           अगुद
पक्ति यत्रम स्नानानाम
                                               अवंषे०
                        ? হু স্বস্ত
                                               २ अहा अना०
       २२८ दर्शन
                          হ জাইত
६१७
                                                ২ ভাছা০ খনা•
      ২২५ আহা০
                          ২ আহাত প্রনাত প্রন্তুত
 ६२२
                                                र चपुर अवष्
      २३६ -- ग
 ६२३
                           ব্নস্বশূ ০
                                               क-धीनसङ्ग
        २४५ दर्शन
                                                र सांभार जना
 ६३१
                            ~×
         २४९ सङ्ग
                          ′২ ধারি। अना॰ गु॰ उ॰
                                                 २ सावार्क्ता० युर उ०
  ६३४
        २५५ उपयोग
                            रासावा० अना०
  €80
                                                 र्दे अ०
         २७४
                 37
   ६५५
                            ৸৺ৠ৽
                                                 ~ अयोग
                 ক্ৰীৰ
        ३५८
   ७१९
                             ×
                                                  १२
                 दोग
   ७३५ ३७७
                            ٠٩
                                                 ₹₹
                  गुग्०
          १८७
    ૭૪૨
                             १ ५ ईस्त सामा० छेरो॰ पी • ५ ईसे व्यक्ति हैं होती । हेरो व पी •
                  गति
          800
     ७५४
                  য়াগ
          ৩৩৩
     200
                                                    ० म० ८०
            ७०८ स्पान
     ८०९
                               १ ४०
                                                    १ अमे०
            ५१४ मध्य
      48
                               १ प्स०
                    सिहि०
                                                       17
              11
                                                     লনীক্ষাণ
        11
                                  ,,
             485
                    - 11
       ८३५
                                ×
             पद्द प्राण
       ሪዓዩ
                                    (-पुस्तक ३)
                                                 74
               पति अगुद
                                             (इ.स.)
        पृष्ठ
          ४९ १ (सक्त)
                                              166
         १०९ अन्तिम देवेदी
                                               τŧz
                 १२ १२८
                                              -गुलाहद्वराप तस्स
                   ८ स्प्यानके प्रथम कीम्लको दिनीय 'क्ष्यांगुलको उसके प्रथम कांन्कते
                  २ -गुगाहद्वरा धरहस
           200
                     'क्षीन् देखे
                                                सम्बंध
                    क्ष अप्रत
            २९८
```

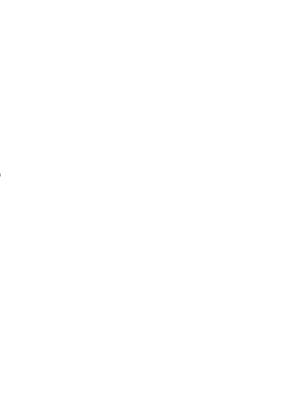
1

```
( 52 )
```

## पर्गंदानमकी प्रमापना

_			(प्रम्तक ४)
पक्ति	বুর	अगुद	गुर
8	ą	नियय है।	विषय है।(२)
<b>५</b> ९	R	<b>घे</b> डश्यियओ	वेउदिनशी े
₹8	6		। बाठ मागांमेंसे तीन भाग
ધર	હ	व्यास त्रिगुणितसदित	<b>स्यामत्रिगुणितमदिन</b>
44	२१	200 + 200 +	191 + 191 +
६३	ų.	विद्वारिक	<u> यिद्वारयदि</u>
90	É	तद्यासा	सद्याचा <b>सा</b>
٧.	ષ	लोगाणा	रोगाण
१०६	<	<b>बजोगिकेव</b> टी	समोगिक्यनी
१३७	१६	सज्ञी जीन	आहारक जीन
१५७	ą	सुचाणुसारी जोदिसिय	प्रचाणुसारिजोदिसिय
१५९	ą		संश्रमण
१७६	१७	भागशके प्रदेशके	आसारोते प्रदेश
१९१	8	पवेमादो	पयेहरी।
17	१८	योजन उस	योजन प्रतेष उस
305	ર	सजोगिकेषील	वयोगिके <i>उलि</i>
३०३		बन जाना	बन जाता
₹०९	3	आहारपसु	अवाहारवसु
३२०	<b>१</b> -२	चपर्युग	षपंयुगः
348	ø	ण, पस दोस्रो.	ण पस दोसी,
३२८	3	अगहिदगहणदा	(त) अगदिदगदणदा
360	3	णाणजीव	<b>णाणाजी</b> धै
148		इस प्रकारसे	इस प्रकारके
३९१		जिहाए	जिम्माप
365		सुप्पसिद	<b>सुरा</b> सिद
99		द्यप्रसिद्ध	सूत्रसिद्ध
818		और क्षपक	और चार्रे क्षपक
848	Ę	मतोमध्यिय	मते।मुदुत्तमन्छिय
४६१	१२	प्रस्तारके	प्रस्तारम
४६३	₹₹	उद्दर्तनाथात	अपर्यतनाद्यात
			( प्रस्तावना )
15	* *	या मुनिजनोको	या यह कार्य मुनिजनोंको
२२		14 × 12 =	%







सिरि भगवत पुष्पदत भूदवित पणीदी

# छक्खंडागमो

सिरि चीरसेणाइरिय विरह्य धवला टीया समण्णिदी

पढमराडे जीवहाणे रोत्ताशगमो

लोयालोपपपास गोदमधर पुणी जिल शिरं । णमिऊल' राजसण जहोत्रसम प्यामेमी ॥

चेयर वानक्य नार्यंते लोड और कारोबचे प्रवानात कार्यान् सर्पंड, कानम कार्यान् उत्तमयाणीवे राविष्ट' कारोज् विध्याता (विषयपनिवे प्रावता), और जिन कार्यन् बीताता, देवे त्रीयम विद्यापनियारिष्ट श्रीयोद समावाद्य कार्यान् इत्तमाने तर्यन्त कार्यान् कार्यान् वाने रोज भीर कारोज्जे जिन्होंने देवे, तथा जिन कार्यान् वाम नोभादि साच राष्ट्रभीट केंग्येवादे, मीट थीट' कार्यान् विरावदयक्षे जो माणियोंने मोहांके लिप मिणा वाने हैं या मोसस्तावशे कर्यान् रावि हैं, येसे बीतमस्यायिर श्रीराज्ञभृति नामभरत्ये। नामकार वाले हे सम्वयोध कर्यान् केंग्यान्य योगाज्ञार सरकार्यां राष्ट्रोंने कर्यने जैना उपदेश कार्यकर विषय प्रतिवेद हारा कीर्यंत्र साम्यान्य देवा और प्रावाद श्री बीतान गणधरते दिया उसीचे अनुसार हम (बीरसन्त) भी क्यान्यात हम (बीरसन्त) भी क्यान्यात

्र संरक्षी विदिष्य दृति पाठाः। - व केरो दिनी विदिशों पा का बाह्य केरो व केरो बाह्य देवा का घट क्यांचे र

बाता विभाग () को क १९९५-१९६ व विकरेन हैं(से ने कोई मीट भरवति नमस्ति वा सन्दिव की वेग । ( मर्दि, ४० वीर ) सेत्ताणुगमेण दुविहो णिहेसो, ओघेण आदेसेण यं ॥ १ ॥

किंकले सेचाणिओमहारस्य अन्यारे १ उन्चरे । त जहाँ - सर्वाणिओमहारस्य अन्यारे १ उन्चरे । त जहाँ - सर्वाणिओमहारस्य अन्यारे १ उन्चरे । त जहाँ - सर्वाणिओमहारस्य अन्यार्थमाणाण चोहमनीनमामाण खेवरात्रः वामफलो । वामा अलते जीनमामे अवस्ति । वामा अल्ले । वामा वासायिक्षित्र । जिससे विकास वामा वासायिक्षित्र । जिससे वामा वासायिक्षित्र । विकास वामा वासायिक्षित्र । विकास वामा वासायिक्षित्र वामा वासायिक्ष्य वासायिक्षय वासायिक्ष्य वा

क्षपगयणियारणङ पयदस्स परूपणाणिमित्त च । ससयविणासण्ड तद्ययवधारण्ड च ॥ १ ॥

धेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रशास्त्रा है, ओधनिदेश और आदेशनिर्देश ॥ श्वरा-पदा क्षेत्रानुयोगद्वारके अवतारका क्या पट है ?

समाधान—उत्त शहाका उत्तर देते हैं। यह इस प्रकार है—सप्रहण्या कर्म बनुयोगद्वारसे जिनका अस्तित्य जान लिया है, तथा इध्यानुयोगद्वारमें जिनका सल्यारप्रकः जाना है, येसे चीद्द जीयसमासीके (गुणस्थानोंके) क्षेत्रसम्या प्रमाणका जानना है केश योगद्वारक अपवारका एन है। अपया, असरपान प्रदेशबोल लेकाकारामें अननन प्रमाणक जीयसारी क्या समावी है, या नहीं समावी है, इस प्रकार हमें सदेते पुलनेगाले लियां सोद्दर्श विनाश करनेके लिय इस क्षेत्रानुयोगद्वारका अनंतर हुआ है।

इस क्षेत्रानुयोगडारके प्रारममं क्षेत्रका निश्चेष करना चाहिये।

श्वरा—निशेष क्सि कहते हैं।

ममापान—सदाय, विषयेय और स्वरूपवमायमें स्वविस्यत वस्तुको उनसे तिक्ष कर जो निकायमें सेवन करता है, उसे निरेष कहते हैं। स्वया, बाहरी प्रार्थि विकास विसेष कहते हैं, स्वया, स्वप्नतका निराकरण करके प्रमुख्या करण करनेवाडा निरेगी कहा भी है—

ब्यहराडे निवारण बरनेडे लिये, अहराडे अम्पण बरनेडे लिये, और तत्वार्यडे <sup>हा</sup> बारण बरनेडे लिये निरोत हिया जाता है 8 % 8

र इत्यापन टर् द्वितिषम् । बायान्यम विधीन व ॥ सः ति १,८ २ व २ प्रणी स्वार्णकी बन्दर्भ

र करणा नाम १५७ पर । १ करणा नाम १५७ । कर्षाय १ ५२ हद्दिनात्रां बाच्यतामसमानां वापरेषु मेदेसपत्री ना

४ व स्टब्स् ! बरहार्यात्राकात् वार्ट्यक्समाय च । व वि १, ५ अस्ट्रास्त्रीकृति

सो च एत्य चडिवही विस्तेयी वाम द्वावा द्वा भागोच्येवत । स्थ भेक्सेवस्स चडव्यिहरा ? दब्यद्विय पज्नयद्वियणयाम्लीवयणयानाराणे । उत्त च--

णाम स्त्रणा रुपिय ति एम र वशियस्य जिस्लेको ।

भावी द पञ्जबद्विपपरूषणा एस परमधी ॥ २ ॥

जीवानीव्रमपकारणियवेक्सो अप्पाणिह प्यद्वे।' रोचनही पामरोख । सा प ॥मणिकरोत्री वयण-वत्तव्याणिव्यवस्यायमवरेण ण होदि वि. तवस्य मरिममामणाणि धिणो चि वा. पाच्य बाचर गुक्तिद्वया मर्श्वर गुरुवरस्य प्यायाधिरनये असमजादा द्वरहिय

यह निधेय यहाँ पर मामक्षेत्र, स्थापनाक्षेत्र, हत्यक्षत्र भीर भावसंबंधे भेडले बार कारका है।

राज्या-- निधेप चार प्रकारका केसे हैं है

1, 2, 2 ]

समाधात--द्रायाधिक भीर पर्यावाधिक मयके माभव करनेवाने वक्रमें कारतकी ग्वेशासे निशेष चार प्रवास्त्रा होता है। बड़ा भी है—

माम. रचापमा और द्वस्य, से भीन निक्षेप द्वस्याधिकनवर्षा प्रहरणाक क्वित हैं और

ग्रायनिक्षेप पर्यापाधिकनयको प्रहरणाका विषय है। यही परमार्थ लाग है ह र ह जीव, भजीव भीर उपयस्य बारणोंकी भवेशान रदित होकर भवन आवमें प्रवृत्त दुमा 'सेव ' यह दाव्ह मामक्षेत्रनिक्षेत्र है। यह मामनिक्षेत्र, यसम् और यादवर किन स्वक

माय मधीन वाच्य वाचक सम्बन्धके सार्यकारिक निश्चके विना नहीं हाना है इसहिते. मचया तद्वय साम्राप्य निबन्धनक भीर सारश्य साम्रान्य निविश्वक द्वांना द्व दशक्रिये, अथका, वाष्य-पाचकरूप हो शासियोवाणा एक शाद वर्षावाधिक नवमें असमव है इसलिय, प्रकण र्थेवनयका विषय है. येसा क्षा जाता है।

विद्रीपार्थ--- यहाँ पर मामानिसेयको द्रव्याधिकनयका विचय कनलाक दिन ते व हन दिये हैं, जिसका अभियाय बामदाः इस प्रकार है। (१) नामनिशेष बचन और बाद्यव निव भाष्यपातायवे विना नहीं होता है इसलिए यह द्वाया विनयका विषय है। अर्थान 'इस राष्ट्रसे यह पदार्थ जानना चाहिय' इस प्रकारका सकेत किये जानसे दान्द अवने बान्यका वाचन होता है। यदि यह संदेन या य चय वाचनना सम्बन्ध नियं न म ना आप । ना क्रिक देश या भिन्न बालमें उस शास्त्री उसके याष्यक्रण अर्थका जान नहीं हो सबता है । किन्तु विषयुत्त ' आदि जी भाग दिशी स्वति के बाह्यायश्यामें रूके शव थे। बद्द भाज बुद्धावस्याने

भी समानश्यक्षे दस ध्यभिने यावच देन जाते हैं दसने शिव हाता है कि बचन अर बादपुरे मध्यमें जो सरक्षण है यह नित्य है। और नित्यताका द्ववपूरे अ गरिक अन्दक द्वादा

र इ. र प्रती को व 'क्ष्य कि व हा।

<sup>.....</sup> र मान्तु ' वस्ती ' वति वचा ।

णयस्मेचि बुचरे । यह दत मिलादीणि सच्भानामन्मानमन्नाणि बुद्धीए इत्थित्वर्तस्य यचिग्रनगपाणि हुनणा णाम । सन्मानामन्भानसस्तेण सच्यद्रत्यत्रानि चिना, प्राणापपन

जाना शसमा है, इससे सिज होता है कि नामनिक्षेत उच्यार्थिकनयका विषय है। नाम त्रिक्षेपको सङ्ग्रथसामान्य और साहद्यसामा य निमित्तक कहा है, उसका अमित्राय यह है। विषक्षित सुवर्णीद वस्तुके पूर्वावर बालमाया घटक, वेयुरादि वर्यावाम विभिन्नता रहे 环 मी उनमें एक ही सुवर्ण समानरूपसे सदा विद्यमान रहता है, इसलिए इस प्रकारकी समानराध तद्भयसामान्य कहते हैं। तथा, किसी भी एक विविधन कालमें विद्यमान, किनु वित्र प्रकारके सुपर्णीसे निर्मित घटक, सुण्डल, केथुरादि पर्यायोमें 'यह मी सुवर्ण है, यह में मुवर्ण है, 'श्त्यादि रूपसे सदशता बोधन जो समानता है, उसे साहदय सामान्य हरते हैं। रमी प्रशास्ति नामितिहोपरूप दाम्द भी पूचापर कालमाधी ' क्षेत्र, क्षेत्र ' हत्यादि दाम्द्रोम समा प्रतीतिका उत्पादक होनेसे तद्भयसामा यका निमित्त है। तथा, विवाशत किसी मी एक करने पिमिन्न देशपर्ती मधुरा, काशी इत्यादि क्षेत्रीम 'यह भी क्षेत्र है, यह भी क्षेत्र है' हिन् करसे दबारण क्ये आनेपाला दाष्ट्र सहरा प्रत्यक्का उत्पादक होनेसे साहर्यसमापका निमित्त होता है। और सामान्यको विषय करना ही द्रव्याधिकनवका विषय है। हार् भामितिशेषको इच्यार्थिकनयका थिएय कहना युनि सगत ही है। (३) नामिनिशेषको इस पिंचनपंचा विषय बताने के लिए तीसरी युक्ति यह दी है कि यादय यावकरूप दो हार्डिए पाटा यह दान्य पर्यापाधिकनयमें मसमय है, मर्थात् पर्यापाधिकनयका विषय मही हो सहा इसदा मधियाय यह दे कि द्रार्थमें बाध्य बावकरूप की हालिया यह साध ही पार करें मर्थान् हान्द्र मधने वाष्यक्रम् मर्थना प्रतिपादन होता है, हसिटए तो उसमें सदा वावकार विद्यमान है। और स्थय भी अपने स्थर पत्रा विदय होता है, इसाल्य ता उसम पत्र वाष्यालि भी उद्गर सर्वेत्रा पर जार्गा है। इस महार विसी भी दियाहित समदमें यह उस दीनों मधात वर्ष वाष्ट्रक्य दानियास युन रहेगा । और इसी कारणसे यह पर्यायाधिक मवका विषय करें। सक्ता, क्योंकि, वचारि भागममें शहरको पुरुल्द्रध्यती वर्षाय कहा है तथापि जय वहा है। बाद्य-बाब्रह्म दो राणियाँपारा दिवशित क्या जाता है, तब दह द्रम्य बहुत है। कृषि छन्नि, गुल या धर्मको कहते हैं, स्मित्रिय 'मुणसमुत्रायो दम्य' के निवसतुनार हाकियोचानको इच्य ही कहा आयाा, पर्याप नहीं । इस प्रकार जब शाय पुरुष्ट्रस्य विद्वी क्षण है तह यह द्रष्टाधिकतवहां है। विषय हो सकता है, पर्यायाधिकतवहां नहीं। हार्डि क्षा बामनिरेशको इष्यार्थिकन्यका ियय बहुना सर्वधा युनि युन्त ही है।

कृष्टि झार राष्ट्रित क्षेत्रके साथ वक्त्यको प्राप्त हुए, भयोत् वित्रम सुदि हर्ण इत्तिष्ठत क्षेत्रका स्थापना की गर दे देश शहाय की, क्षात्रहाय स्वकृप काछ, दस्त और हिर्ग कर्णद राजनाहेक्यितेन दे। यह स्थापनातिक्षेत्र, तहावार और कातहाबार स्वयक्ती वर्ष ह्ट्याणमेमचिविवपणेषि वा दृवणाणिक्सेवो ह्य्यद्विपणयक्लीओं । ह्य्युष्ठेत द्वृतिह् आगमदो बोआगमदो य । तत्य आगमदो रोचपाहुडआणओ अणुबजुको । कथमेदस्स जीउदिवियस्म सुर्वणाणास्कीयक्सअतममितिहृद्दम द्या भारखेवागमपदिविसस्म आगमद्यस्यवस्यवेशदेशे हैं ण एस दोमो, आधोर अधियोजयारेण कार्ण कब्जुउपारेण

इच्योंमें ब्यात होनेके कारण, अथवा प्रधान और अप्रधान द्रव्योंकी एकताका कारण होनेसे इच्याधिकनयके अन्तर्गत है. येसा समझना चाहिए।

विशेषार्थ - स्थापनानिसंपनी द्रव्याधिकनयमा विषय सिद्ध करनेके लिए दो देत दिये गये हैं, जिनका अभिपाय ममश इसमकार है। (१) स्थापनानिक्षेप सङ्गाय और असद्भायरूपसे सर्वे द्रम्योंमें व्याप्त है. इसका मर्थ यह है कि त्रिलोकार्ती सभी द्रम्य यद्यपि इवतंत्र प्रय निश्चित भाहारयाले है। तथापि व्यवहारके योग्य प्रय विशेष अपेशासे विशिष्ट भाषारसे परिवृश्यित द्रव्यको सावार, सद्भावरुप या तदाकार वहा जाता है, और उससे भिन्न भावारवाली पस्तको भनावार, असद्भाव या अतदावार वहा जाता है। वाष्ट्र या वात धरीरह क्षणी अपने स्वतंत्र आवारवाले हैं तथापि उडाँको हाथी घोडा आहि किसी एक विव्यक्तित था निश्चित भावारसे प्रश्ति कर दिये जाने पर उद्दें तदाकार कहा जाता है, और निश्चित आकारसे घटित नहीं हान पर भी जो सकेनडारा किसी बस्त्रपुरूप भी परिकरपनाकी जाती है, उसे सतदाकार कहते हैं। इसप्रकार यह स्थापनाका व्यवहार तदाकार और सतदा बाररूपसे सर्व द्रव्योंमें पाया जाता है। अर्थात सभी द्रव्योंमें दोनों प्रक रहा स्थापनानिशेष बिया जा सकता है, जो कि क्षेत्रभेद या कारभेद होने पर भी तदयस्य रहता है। इस कारणसे स्थापनानिशंपको द्रायाधिकनयका विषय कहा है। (२) प्रधान और अप्रधान द्रष्योंकी पक्ताका कारण कट्नेका आभिश्राय यह है कि जिस वस्तुकी स्थापना की जाती है, यह प्रधान हत्य. क्या जिस दर्शमें स्थापना की जाती है. यह अप्रधान द्रव्य कहलाता है। 'यह सिंह है' इस प्रकारों स्थापनानिक्षेप असरी सिंहरूप प्रधानद्रव्य और मही आदिने विल्वेनेमें स्थापित सिंहरूप भावारवाले भवधान द्रव्यमें पकताका कारण भवान् पक्तवप्रतीतिका निमित्त होता है इसलिए भी स्थापनानिक्षेप द्रव्याधिकतयका विषय है।

कारामद्रायक्षेत्र भार नोमारामद्रायक्षेत्रके भेदले द्रायक्षेत्र के भवारका है। कनमेले क्षेत्रविषयक शास्त्रका झाता, विश्व वतमानमें उसके उपयोगसे रहिन श्रीय भारामद्रम्यक्षेत्र निक्षेत्र है।

हुम् सुनहानायरणीय नमने श्रवोपशमक्षे विशिष्ट, तथा द्रध्य और अध्वद्य क्षेत्रा गमसे रहित इस जीवद्रव्यने भागमद्रव्यक्षेत्रक्य सम्रा नेस प्राप्त हो सनता है।

समाधान-यह कोई दोष नहीं है। क्योंकि आधारकप भारमामें आधेयभूत श्योपनाम स्वक्रत आपमके उपवारत। अथवा, बारणरूप आसमामें वायकप श्योपरामके वपवारते, स्द्रागमप्रग्रसस्योपसमितिमह्जीयद्व्याम्वयोण या तस्म तद्विरोहा । लोजागण द्व्यम्येच तिविह जाणुगमरीर भीय तत्रविरिच चेट । तस्य जाणुगमरीर भीय तत्रविरिच चेट । तस्य जाणुगमरीर निविध मित्र चेट । तस्य जाणुगमरीर निविध मित्र चेट । तस्य जाणुगमरीर निविध मित्र चेट चेट चेट चेट चेट चेट मित्र मित्र प्राच्या समुद्र स्वाद्य स्वाद स्वाद स्वाद्य स्वाद स

भपवा, प्राप्त हर्र दे भागमसम्रा जिसके। पेले स्रवीपरामसे गुज जीवद्रव्यके अवल्यक्षे जीवके भागमद्रव्यक्षेत्रकप सम्राक्षेत्रके देनेमें कोह विरोध नहीं आता है।

भायक्तारीर, मध्य श्रीर तब्द्यातिरिन हे मेड्से नोमागमद्रव्ययेत्र तीन प्रकारकारी उनमेंसे भायकारीर तीन प्रकारकारी, मायो प्रायक्तारीर, प्रतेमान धायकारीर भीर मार्ग कायकारीर । इनमेंसे भरतित भायकारीर मी ब्युत, स्यानित भीर त्यनके मेड्से हा<sup>त</sup> मकारकारी

श्रहा--द्रायक्षेत्रायमने विभिन्नते पूर्वने दारीरको सेवसद्या मेरे ही रही मोते, शित्र इस मनायमदारीरके सेत्रमदा घटित नहीं होती है?

समापान ~उन दावावा यहा परिदार वहते हैं। यह इस प्रवार है—कियँ इण्डिय सापस समया सारकप्रभागस सर्वमानवान्में निवास वरता है, मृतवान्में निवास वरता या, और सजामी वान्में निवास क्याम, इस स्पेश्स तीनों ही प्रवारचा सारेर सेव कहरूना है। स्थास, साधारकप शारिस्में आधेयरूप क्षेत्रामका उपचार वरतेने सी सेव सवाकत साता है।

नोभाष्म द्रष्यक्षेत्रके सीत भेदीमेंने जो आगामी काण्में केष्रविषयक द्वालुको जानेगा। ऐसे के वका माथा भोगागमदृष्यक्षत्र कहते हैं ।

ग्रही—को क्रीय शेवागमस्य हायोगहामसे रहित होनेके कारण अनागम है, इब अँबर क्षेत्रसवा क्रीय बन सकता है?

ममापान-नहीं। क्योंहि, ' मायरेषकर भागम जिसमें निवास करेगा ' इस मध्ये ही दिर किहें करने ऑवडप्यंट सेवासकर संरोपनाम होनेहें पूर्व ही सेवरना निवर्दे कादकर्सार भीत मार्यास सिन्न जो सद्दर्शतिरेक्त नीभागमद्रव्यक्षेत्र है, वह क्ये

सेव भीन भावमात्रका रेवक सहसे का प्रकारका है। उनमेंने बानावरणाहि बाट प्रवाहि बमात्रका बमात्रकास्त्र बदन हैं।

देश-सम्बद्धा क्षेत्रम्या देने मान हुरे।

न, क्षिपन्ति निरसन्त्यरिमन् जीवा इति कर्मणां क्षेत्रत्यसिद्धेः । ( अ ) णोकम्मदन्यरोत्त त दुविह, ओप्रयारिय पारमस्थिय चेदि । तत्य ओप्रयारिय गोकम्मद्व्यरोत्त लोगपसिद सानियंत्र बीदियंत्रमेवमादि । पारमस्थिय मोद्रम्मदव्ययंत्र आगामदव्य । उत्त च---

खेत खल आगाम सङ्ग्रीदेशित च होडि णोखेत । भीबा य चोमाला वि य धम्मा अ्योत्विवा कालो ॥ ३ ॥ आगास सरदेस हु उडुाधा तिरिओ वि य ।

सेचटोग विवाणाहि अणन जिल देमिद<sup>े</sup> ॥ **१** ॥ एसी नि णियरोबी दव्यदियम्म, दव्येण निणा एदस्स समबाभावादी । ज त मारपेच त दुविह, आगमदो योआगमदो भारपेच चेदि। आगमदी मारपेच रेख-

पाहुढजाणुगो उवजुत्तो । णोआगमदो भारतेच आगमेण रिणा अरथीरजुत्तो ओदश्यादि-

समाधान-नहीं: पर्वोदिः जिसमें जीय 'शियाति ' वर्षात नियस करते है इस प्रकारकी निरातिके वससे कर्मोंके क्षेत्रपना सिक्त है।

तद्ग्यतिरित्त नोभागमद्य्यका इसरा भेद जो नीवर्भद्र्यक्षेत्र है यह भीपचारिक मीर पारमाधिक के मेदले दा प्रकारका है। उनमें लेकिमें प्रतिद्व शाहिक्षेत्र, प्रीहि (धान्य ) शेत्र रत्यादि भीपचारिक नोकर्मतद्व्यतिरिक्त तोज्ञानमद्रव्यक्षेत्र कदलाता है। भाकादाग्रस्य पारमार्थिक नोकर्मतद्वयतिरिक्त नोमागमद्रध्यक्षेत्र है। कहा भी है-

भाराशहरूप नियमसे तहपतिरिक्त मोधागमहत्वसेत्र है और भाराशहरूपने मति रिच जीव, पुहल, धमास्तिकाय, अधमास्तिकाय तथा कालद्रव्य नाराज कदाराते है ॥ ३ ॥

आकारा समनेशी दे और यह ऊपर, नाचे और तिरछे सर्वत फैला हुआ है। उसे ही

क्षेत्रलोक जानना चाहिए। उसे जिन भगवानने सनन्त कहा है ॥ ४ ॥ यह बागम और मोशागम भेड्रूच द्रव्यक्षेत्रनिक्षेष भी द्रव्याधिकनयका विषय है।

वर्षेकि, द्रव्य वर्षात् सामा यके विना यह निशेष समय नहीं है। जी भायरूप क्षेत्रनिक्षेप है यह आममभाषक्षेत्र और मोमागमभाषक्षेत्रके भेदते ही

मकारका है। क्षेत्रविषयक माम्रतके हाता और वर्तमानकाटमें उपयुक्त भीषको भागममाप क्षेत्रनिक्षेप कहते हैं। जो मानमके अर्थात् हात्रविषयक शास्त्रके उपयोगके विना अन्य पदार्थमें उपगुरु हो उस जीवको, अथया, भीदविक भादि पाच प्रकारके भावोंको नोमागममावशेत्र निशेष बहते हैं।

प्वतिष्यमार्गा वा' । गटेसु रेत्रवेतु देल गेत्रेल पयर् १ लांक्षात्मर्ग हर्यासेवा पर्रा । लांक्षात्मरा ह्व्यरेत्व लाम कि श्वितास समल देवस्य गोज्यमावस्य अर्गाहारत्त्व आध्य विवादममाप्रारो भूमि वि लयद्दे। । रम्य रोत्त १ सुलांग्य अंगो । के वह १ परिलामिएल भागेल । रिव्ह संस्तं १ अप्तालिह वेत्र । क्रामेगस्य आयास्त्रव्यत्ते १ ल, मारे स्थम' इदि एमस्य वि आयास्त्रेयमारद्यलाने । केत्रविर संत्ते १ अत्राहर मणक्त्रतमिद् । कदिनिष संत्तं १ द्वहियलय च पत्य लगीवर । अत्रत प्रोत्पनिक

> द्यका—कार बतलाये गये इन क्षेत्रोमेंसे यहा पर कीनमे क्षेत्रसे प्रयोजन है ! समाधान—यहा पर नोआगमङ्ख्यक्षेत्रसे प्रयोजन है !

सना-नोबागमङ्ख्यक्षेत्र क्रिये कहते हैं।

समाधान—मानादा, गगन, देवपध, गुटाशवरिन (यसोके विचायन स्थान) भवागादनस्थल, आधेय, व्यायक, आधार और भूमि, ये सब नोधागमङब्बसेन्द्रके प्रा<mark>यक्ष</mark> नाम है।

रिग्रेषार्थ—अर घरलाकार क्षेत्रका विचार, निइश, न्यामित्र, साचन, वाधिकरण, स्थिति और विचान, इन प्रसिद्ध छद्द अनुयोगडारों ने जमश करते हैं इनवेंसे कपर बी निश्चेष या पक्षार्थ डारा क्षेत्रका विचार किया गया है, यह नव निइशके अन्तगत समहन धाहिय।

गुरा—क्षेत्र क्सिका है, बर्घान् इसका स्थामी कीन है !

समाधान-यह भग शृत्य है अर्थान क्षेत्रका स्वामी कोई नहीं है।

गुक्ता--किमसे क्षेत्र होता है, अधान क्षेत्रका साधन या करण क्या है?

समाधान —धारिणासिक माराने क्षेत्र होता है, अर्थान क्षेत्रकी उत्तरिम केर्र हुमरी निमित्त न होक्ट यह स्रामायसे हैं।

दोका-- विसमें क्षेत्र रहता है, अर्थान इसका अधिकरण क्या है?

ममाधान — अपने भाषों ही यह रहता है अर्थान् क्षेत्रका अधिकरण क्षेत्र ही है। श्रक्ता — यक ही शाकाशार्म आधार आधेय भाष किये समय है?

ममायान---वर्डीः क्योंकि, "सारमें स्वस्म है इस प्रकार एक वस्तुमें भा साधार स्रोधेयमात्र देखा जाता है।

भुशा-कितने बाटपर्यान क्षेत्र रहता है। भर्यान क्षत्रकी वियान क्षितनी है। ममाधान-क्षेत्र क्षताति और मनन्त है।

रे अरहर अरहनिष् कार्य तहा समानिष्य को प्रियास अल्डला स क्षित्रा सार<sup>कोरी</sup> ०० हि किसी शास्त्राच

१४१मी हत्यम विकास

सिमिष दुविह, लेगागासमलोगागान चेदि। लोक्यने उपलम्यने यसिम् जीगदिइन्याणि स लोर । तद्विपति। लोरले । अध्या देसभेण्य तिनिहो, मद्दप्लियादो
उपिस्षुहुन्मेगो, मद्दप्मृलादो हेट्टा अपोलोगो, मद्दप्तिन्द्वच्यो सन्दलोगों ति । जया
दर्माणि दिद्दाणि तपान्योपो अणुगमे । रोत्तस्म अणुगमो रोत्ताणुगमा, तेण रोत्ताणु
गमेण सर्तरस्ये दुविह शिदेसा । शिदेसो पदुष्पायण वहणासिद व्यद्वो । ओयेया
इन्यापिश्वनपायलम्येन, आदेसेण पर्यापाधिरम्यावलम्येन चेदि द्वित्रेणो निर्देश ।
विमद्वसुस्या शिदेश । त्रिसे एक्ट्रो स्वाप्ति । त्र तर्वेश शिदेशो अरिले
अरिल, गपद्यमद्वियजीनगदिरसिस्तादाराण असमनादी।

#### द्याचा — ध्रेत्र वितने प्रकारका है !

समापान— इच्यार्थिवनयकी अपेक्षा क्षेत्र वह प्रवादका है। अपया, प्रयोजनके माध्यपति क्षेत्र को प्रकारका है, रोजाकाश और सरोजाकाश । जिसमें जीवादि द्रम्य स्परोक्त क्षिये जाते है, पाये जाते है, उसे रोक वहते हैं। इसके विपरीत जहां औवादि इम्म नहीं वैचे जाते हैं, उसे सराक वहते हैं। स्पाया देगके भेदसे क्षेत्र की तम्बारवा है। सदाबळ (सुमेयप्यत) की सुन्तिकों उत्पादक क्षेत्र कर्मगोत्र है। सदाबळके मुख्ते भीवेका क्षेत्र सभीरोक है। सद्याबळसे परिविद्य सम्बाद स्वामाण मध्यत्वेक हैं।

जिस महारते द्राय भयश्यित है, उस महारते उनके जानना अनुतम बहुगाता है। क्षेत्रके अनुतमको सेवानुतम बहुते हैं। उससे अधान होबानुतमाने सारीरके (सारीर सामान्य और मुलाहि भीगोपात विशाप ) निर्देशके समान हो महारता निर्देश हिन्या गया है। निर्देश, मिरियाहेन और क्षेत्र से यह पहांचक हैं। भोग्रोसे सारीन्द्र हमार्थिक नम्पन्यनसे, और भारेससे अधीत पूर्वामार्थिक सकुरावसे हैं में से से स्वाहता है।

शका - बोनों नयोंकी अवेशासे निर्देश विस्तिये विया जाता है !

गुक्क) — बाना नवाडा अवसास । नव्हरा । बसाल्य । बचा जाता है । समाधान — नर्स, वर्धींक, हम्याधिकतयमें अवस्थित सिप्योंके शतुमहरू लिये श्रोव निर्वत किया गया है। तथा वर्धीयार्थिकतयम् अवस्थित शिष्योंके स्वतस्कृत लिये श्राद्धार्निर्देश

विधानमा है। इन होनों निद्दांने कानित्त भेर कोई शीसरा निद्दा नहीं वादा जाता है, व्योंकि, देखों प्रकारने नयोंने स्वान्यित जीयोंने कनितित सम्य प्रकारने घोतासांका स्थाप है स्व

दोनों प्रपादके सर्योगे अवस्थित जीयों के भतिरिक्त समय प्रवादके धोतामींवा अभाष है अत पय दोनों ही प्रवादसे निर्देश किया गया है। १ शहर बयान कानो सनदह । जहनवाहनकाइणकाइ । वृद्धिकाइणाइकार्यक्रिक । वाय

' जहा उरेमो तहा णिरेमो ' चि उड्ड ओपणिरेमहमुचग्मुच मणिर-

ओघेण मिच्छाइड्री देवडि सेते . सन्वर्होगे ॥ २ ॥

एदस्म सुत्तस्म अस्यो उच्छे । त जहा- ओपणिटेमो आर्टमपुरामहो । भिज इहिणिहेमो सेमगुणहाणपडिमेहहो। देवाडि खेते' इदि प्रत्छा मुत्तम्य पमाणतप्यद्धायम फला । सब्बलोंगे इदि रोचपमाणणिद्सा । एस्य लोगे जि उने मचरज्जेण घणो धेनुवा । बरो १ एरय रेक्सपमाणावियारे--

पञ्जी सापर सई पदरी य घणगञ्जी य जगमेटा । होयपदरो य होगो अह द माणा भुणेयऱ्या ॥ ५ ॥

'जिस प्रशरसे उद्देश दिया जाना है, उसी प्रकारसे निद्श होता है 'इस न्यापके मतुसार ओधनिर्दशके लिये उत्तर सूत्र बहुते है-

ओधनिर्देशकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव क्वितने क्षेत्रमें रहते हूं ? मर्ब होइने रहते हैं ॥ २ ॥

इस स्वता वर्ध कहते है। यह इसप्रकार है- स्वमें ' बोच 'इस पदका निर्देश आदेश प्रमुपणाने निराकरणने छिए हैं। 'मिच्याइष्टि 'इस पद्मा निर्दश, दोव गुणस्यानाँके प्रतिवेषके लिए है। 'क्तिने क्षेत्रमें रहते हैं 'इस पृष्टारा पर स्वर्का प्रमाणना प्रतिपर्व करना है। 'सर्वतीकमें 'इस पदसे क्षेत्रके प्रमाणका निर्दश किया है। यहा सूत्रमें 'तार्क पेता सामा पद कहनेपर सात राजुआँका घनात्मक रोक ब्रहण करना चाहिए। क्यों है, यदा क्षेत्रप्रमाणाधिकारम्--

वस्योपम, सामरोपम, स्ट्यगुरु, प्रत्यागुरु धनागुरु, जमग्रेणी, रोकप्रतर मीर रोह, ये थाउँ मान जानना चाहित ॥ ७ ॥

९ विविधित अर्थे बेटमानकान विविध्ययम्,विधिष्ठ वरावदृष्याकाश क्षत्र। मा जी जा अर्थी धर्म र सामन्यन तारन् निय्यार्शनां सवअहास वि १ ८ मिण्या उस वठाण स पञ्चस २,०१ १ प्रतिष 'ददहिया इति वार ।

४ स प्र १ ' मृत्युवनात्त्र प्रधान्त्र १ति पणः 'अ-आ-क' शतिषु सत्तरम प्रावस प्रधापन श्री पार ।

भ जरत । र समयक्षण राजुपम (०४ । ति प । १३३

६ जन्मी वनतमानी शादादाना मददद बहिदा । ति व 1 3 चण्यम स्थनू लाभा द्वाद्य हार्म

र ९६ वि हा ९६ पन्यातमस्य हाग्सावमस्य अ सम्बर्ग है। शिक्ताच प्रवृश्यद्वारात्वरदात हत्रा अवस्यद्विते वात्तर्वदात्तार्वाह्यदेश्वतृत्वी

A O Day of the Address of the

22.2-0.3

हरि करच पुत्रकीयत्महणाहो । जिदि एमी लेगो पेप्पदि, तो पत्रदशाहारआसासस्य गहण च पायदे। युरो १ तिहि मनारुजुपगपमाणमेचसन्तरमात्रारा । भारे या — हेटा गणे जबरि वेदासण हुन्नी सहार्गको ।

किम्मिविक्ति व कोरम्युम्मार्थः रोगोः ॥ ६ ॥ रोगो अर्वाची राष्ट्र अवाहिम्सार्थः । ॥ ६ ॥ जोगनावेदि द्वारो विको तरहारास्यवाः ॥ ७ ॥ रोवस्त व विस्तमा चउपवारी य बोह व्यवको ॥ ८ ॥ सर्वेक्षतो व ववेक्षतो व स्टब्स् गुरोवकाः ॥ ८ ॥

इस गाधामें जो लोक्का प्रदल किया गया दे उनसे अला जाना दे कि यहांपर सात राषुके धनग्रमाण लोक्का ग्रहण मभीष्ट दें।

दिरोपार्थ---वर महिमानले सात रातु जारी आवाण महेरावाँ करी करीयों बहते हैं। तथा अपनेयोंके यावेश अपनतर और घतको सक्लोक वहते हैं। गामार्थे इसी समसे अपनेयों, अपनत्य और रोक पहना सहया किया है। इससे यह बात होता है कि यहायर लेक्स पत्तरीक्षा अभिवाद है।

द्धवा — यदि यहावर हक्षी घनलोक्या तहन क्षिया जाता है, तो पाच द्वाचों के आधारभूत आकाराका प्रदान नहीं प्राप्त होता है। स्वर्गाक, उस लोकमें साता राजुके घनप्रपाणवाले क्षेत्रका क्षमाय है। भीर, यत्रि मद्भाव माना जावे तो—

नीचे येयासन (वेंतरे मृत्र) वे समान, मध्यमें महारोडे समान, शीर दशर मृह्यारे समान मानारयाला, तथा मध्यमयिग्नारमे भर्यात् एक रातुले चौरह गुण्य भावन (त्रवा) लोह है ह ६ ह

यर रोक निध्यम अहाभिय हा अनादि निधार है, स्वनायसे निर्धिन है, कीय और अभीय हत्योंने स्वास्त्र है निस्य है, तथा ताल्युधिके अवारशाल है । ७०

होक्का विष्याम (बिस्तर) सार बकारका है जेसा जानना चाहिये। निसमेंस अधी हाकके बातमें सात राषु सध्यमलाक्क पास पर राजु महालेक्क पास पाप राजु और जन्मलक्के भानमें प्रकृत पुग्रसत्तर जानना चाहिय ॥ ८॥

ष्ट्रता सुधाननाथ्युवन । तदसाराण सुध्युत्रम् केत् गानि । गानिराणकास्य प्रधानकार्यः प्रयोगत् । श्रमस्यकार्यस्यात्रे स्वत्यस्यात्रस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्था प्रदास विकाश च वत्रस्य स्थापने दशास्यक्षात्रस्य । गानिः स्थानियस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य स्थापनायस्य

स्थात खलस्मसाक्षा ६१० । २ व प १०१६

इ.ति.स. ४ तप चपुधवरने सन्दाः स्टब्स्यस्य स्थापाः । ४ ज्ञानुषः ५ ००



एदाओं सुचगाहाओं अप्पमाणच पानित चि ?

एत्थ परिहारे। बुचेटे । एत्य लोगे वि उत्ते पचटच्याहारआगामस्या गहण, व अण्णस्स । ' होगपूरणगडो केनही केनडि रोत्ते, सब्बहोगे ' इदि नयणारो । बदि हाण सत्तरज्ञुघणपमाणो ण' होटि तो ' लोगपूरणगदो केवली लोगस्म सन्वज्ञदि मांगे ' हि भणेज। ण च अण्णाडरियपस्तिरदमुदिंगायारलोगस्म पमाणम् पेनिराउण सरोजनिर्मागर मिनद्भ, गणिज्जमाणे वहीतलमादो । त जहा- मुदिगायारलोयस्म सह चीद्सरज्जुनापर एगरज्जीवस्यम बह लोगादो अवणिय पुध होद्रव्यं । एव ठविय तस्म फलाण्या विहाण भणिस्सामा । त जहा-एदस्स मुहतिरियनहस्य एगागासप्टेमनाहरूम्य परिन्त्रा एतिओ होदि हैं रेहैं। इममदेखण निक्समदेण गुणिटे एतिय होदि है देहैं। अपाला भागमिच्छामो चि सचिह रज्ज़ि गुणिट सायफलमेचिय होदि ५३५१। पुणी णिस्र खेच चोइसरज्जु शायद दो खडाणि करिय तत्य है।हेमखड घेचुण उड्र पाटिय पर्मार

ये अपर कही गई स्त्रमायापं अवमाणताको प्राप्त होती हैं ?

समाधान—अब यहा ऊपरकी शकाका परिदार कहते है। इस प्रवृत्त स्वर्म े लोक ' पेसा पद कहनेपर पाच द्रव्योंके आधारभूत आकाश्चाम ही प्रहण किया है, अपूर्व महीं, क्योंकि, 'रोकपूरणसमुदातगत केयली किनने क्षेत्रमें रहते हूं ? सब लेक्में रहते हैं रसम्मारका स्त्रयक्षन है। यदि छोक सात राजुके घनममाण नहीं है, तो 'लोकपूरणसमुहानाम देयली लोकके समयातर्वे मागर्मे रहते हं इसमकार कहना चाहिये। और अप शासार्थि कारा भक्तपित मृद्गाकार छोक्के प्रमणकी देखकर अधात उसकी अपेक्षांसे, लेकपूरण समुदातगत वेच श्रीका धनलोक के सच्यातवें भागमें रहना असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, गावन करनेपर मृद्गाकार छोक्का प्रमाण धनछोक्के सरुपात । माग पाया जाता है। यह सम्प्री है— चीरह राहुममाण भायत, एक रारुपमाण विस्तृत और गोल आवारवारी, वेमी मृदगातार रोक्की स्चाको रोक्के मध्यस निकार करके प्रथक स्थापन करना बाहिये। इसप्रकारमें स्थापित करके अब उसरे पर अर्थान् धनकरको निकालनेका विधान करते हैं। बर इसमकार है- मुखमें तियक्रपते गोल और आकाशके एक प्रदेशप्रमाण बाहरववारी मि पूर्वीं स्पीर्श परिधि हैं इतनी दोती है। (देखे आगे गाथा न १४) इस परिधि प्रमाणको भाषा वरके, पुनः उसे एक राजुविष्कम्पके भाषासे गुणा करनेपर, उसके होतान का प्रमाण है है इतना दोता है। अब हमें लेकरे अधोमागका धनफर लाता इए है, इसिंडरे उस क्षेत्रफरको साव राजुमाँमे गुणा करने पर सात राजुवमाण स्वयो और पक राजुवमाण बीई। उक्त गोलम् शहा धनपछ पहेर्द दनना होना है। पिर मुचीरहित चीदहराउँ हो होक्रवप क्षेत्रके मध्यलोकके पामसे वे संद करके उनमेंसे म्यान मधीलोक्सार की

, < 3

संदर्भ प्रदूष कर उसे ( यह भोरसे ) ऊतरने ( नगावर मीचेतव ) वान्वर पतारन पर सूत्र (सुपा) के मानारपाला क्षेत्र हैं। जाना है।

दिशिपार्थ-- यहायर तांशाकार, माय भाषायाँथे प्रस्तित क्षित्र प्रश्ताकार लेकरो हिस्स माय प्रदान कर रहा है, उसका साय यह है कि किने हैं। मायाध का अध्याद का मायाध का अध्याद कर मायाध का अध्याद के स्वाद के स्वाद के स्वाद का स्वाद का स्वाद के स्वाद के स्वाद का स्

स्त न्योवार शबने गुणवा विकार [%] हतवा है, और तरबा विकार राहें। राजुमाण है। इसे मुपाविस्तारत (कार्यत गुलविकार के अपने स्थापन कर हारों अप ) तरव राजु राजा नीवरी और देवनेदर हो। विवास केंद्र और दश अपनेवानुस्टाक्ष प्रवास र

उन मदारसे बने दुण हम तान शर्मीसेस पहल सादनवनुष्य भाव थय र स्पर्यम् सेष्ठवा प्रतप्य विकार है। इस भावनवनुष्य सेष्ठवा असेथ (जीवार प्रत्य राष्ट्र है। सेहा सिपाम हैं। होने राजु । मुख्ये पह प्रश्नम प्राप्त है। सेहा जीवार वह र त्या सेहा है। सेहा जीवार वह र त्या सेहा है। सेहा जीवार वह सेहा है। सेह

संद राष्ट्र में दा विकास का अध्य का गड़ सुमाधान है स्थाप राज्य के साह स्थाप राज्य के साह स्थाप राज्य के साह स्

tweed danklit by co a s

एगर्ज्ज सिंडिय तत्य अहेतालीमसदृत्यद्विय पारण्जुनुताणि मुपरोहियाओ परणाणि कर्णाम्मीए आलिहिय दोस् ति दिमासु मन्त्रिम्म फान्दि निष्णि निर्णि संत्राणि हाँति। तत्य दो स्रोत्ताणि अहुरुज्जुन्मेहाणि छानीसुत्तर नेमन्दि एमरज्जु महिय तात्रणाष्ट्रि स्वरुज्जुन्मेहाणि छानीसुत्तर नेमन्दि एमरज्जु महिय तात्रणाष्ट्रि स्वरुज्जुन्मेहाणि छानिस्तर देविया प्रामेरेहिमरोणि निर्णि रज्जुपाह्याणि, विद्यालामरोणेसु जहारमण् उत्तरेम हेहिमेसु निर्वहुग्जुतरहाणि, अस्तिसदेशिसेसु निर्वहुग्जुतरहाणि, अस्तिसदेशिसेसु एमानामप्राह्याणि, अष्णाच रम प्रदिन्तन्याह्याणि चस्ण तात्र एए सेमस्तुरी विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त विद्यस्त स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रमेहाणि स्वरुज्ज्ञस्त्रस्ति स्वरुज्ज्ञस्त्रस्ति स्वर्णाणि अहुहुरुज्जुस्तिहाणि स्वरुज्ज्ञस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ज्ञस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ज्ञस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ज्ञस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ञस्त्रस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ञस्त्रस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ञस्त्रस्ति स्वर्णाणि स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्जस्ति स्वरुज्ञस्ति स्वरुज्

स्रवोधिस्तार ९६६६ है। इसी विस्तारके यहा तिकोण क्षेत्रका अपेक्षांन 'सुझा' बहाई। तथा उन दोनों निकोण क्षेत्रोंका सुना और कोटिके यथायोग्य समनित कर्णका प्रमान है। र दोनों त्रिकोण क्षेत्रोंको कणभूमिक्ष लेकर दोनों ही दिशाओं में पापमेले काटनेपर तीन वन क्षेत्र हो जाते हैं।

रियेपार्थं - यहापर भिनेष क्षेत्रके भुजा और केटिका प्रमाण ती दियाई, प्र पर्धेना प्रमाण नहीं दिया है। उसके निकालनेकी स्थिया यह है कि भुजाके प्रमाणना प्रं भीर केटिके प्रमाणका वर्ष जितना हो, उन्हें जोडकर उसका वर्गमूल निकालना चाहिये, जो धर्ममूलका प्रमाण आहे, यही कर्षरेगाना प्रमाण समझना चाहिए।

रेशा बाहुय रागत कराविया दिशाता बद्धा म्यय बनुसमें वा सा कोरे आर्थिता तमी बार्विय बाल्पदे कन । होजारता केवाय र उल्लेस चनारि आयदनउग्मरोत्ताणि अह निकाणस्त्राणि च हाँति। एत्य चरुण्ड-गायद्चउरमखेचा" पछ पुव्यित्नदेश्येचफलम्म चउन्मागमच होति । चरुमु वि संबंध ग्रहन्लानिरोहेण एगद्व वरेंगु तिष्णिरञ्जनहरूल, पुश्चिन्लग्वेचीनस्यभाषामहिता अदमेच रेश्यभाषामपमाणयसुरवनादो । त्रिमह चदुण्ड पि मिलिदाण निष्णि ग्जसुराहस्यस रै रुव्यित्स्रायेनचाहल्सादो सपहिषयचाणमञ्जूमेनचाहल्ल होदण तदम्पेह पेक्तिपद्म अद मेसुम्मेहदमणादें। । मपहि मेमञहुदोत्ताणि पुष्य व स्मृटिय तथ्य सोलम निर्माणस्मतानि मणतरादीदरेतताणमुरुवेहादो विस्पामाना बाहुन्लादी च अद्रभेताणि अवणिय अहुन्ह मायदचउरमरेक्साण कलमणतराहकतापदरेक्षकारुम चर्डमारामेच हादि। एव मोलग वर्षाम् चउमहिआदिरमेण आयदचउरमरोत्ताणि पुव्यिन्तरोत्तपत्तारो चउम्मागम्य हलांगि होदग गच्छति जार अरिभागपीत छेद पत्त ति । एवमुप्यण्यागेमस्येत्तर स्मेरा

४५५६ राजु प्रमाण भूजायां रे हैं। उ हैं क्रीकेश्वर स्माक्ट दोनों ही पादवसामाँ में क्षित छिन्न बरनेपर चार आयत जनस्यक्षेत्र और शाट विकाण कि हो जाने हैं।

यहापर चारों ही मायतसमरहा क्षेत्रीया धनपार यहारके होनी म यहसमाधा क्षेत्रीक मनकर के चतुष्रमाम मात्र दोता है, क्योंकि, चारी ही क्षेत्रकी बाह यूके कविरोधने इक्त करनपर भयान् यथायमसे विवर्धास कर उल्हा राको पर सीन कानु बादका और पहलेक क्षेत्रक विष्यस्य भीर व्यावामले अधमात्र विष्यस्य स्व मायाम प्रमाणयोगः क्षत्र पाया जाना है।

शही - दा बार मायत्वतरम् क्षेत्रोंने मिलाने पर तात राज बाहरव बेथे शांता है! समाधान-पर्योक्, पहेंचे बताये हुये आयतचतुरका अत्रक बाइन्यने इत समयक भागतचतुरम क्षेत्रीया बाहरूप भाषा ही है। और पटलके उत्तय उसिपकी भीशा अवसे (नवा परमेच भी शाधा हा दिलाई देता है।

अब शप रहे माठ प्रिकाण देखाँको पूर्वक स्थमान है। छान्ति करनेपर उनमें शाएह विकोणशेष शीर बाट भागतसन्। ग्रासत्र हो जाते हैं।

5, 3, 5, 5

पहुण बताय राथं बार सायतचनुरस्य दर्श्वीदा रायधम । वरवासम अर बहु दक् मध्यमाण रिकाणकर आगा है। आयस प्रकार शालीका प्रमान में ११ वनाय गये खार भागन वर्षेत्रक श्रेत्रां वर्षात्रक वर्षेत्र भागमात्र हाता है। स्तिव्रदार सान्ह क्लाल बालह धारिकाससे सायमसम्बद्धान्य पट्टेर प्रत्यक्षे अधनवामुख्यानक घनपान व वामध सामाना तमक प्रतीय द्वाप देव प्रव प्रद तांच आतूच अवधर ।व भ वांच वांच वांच अवांच दह देवांच (प्रदेश) मही प्राप्त हा लायगा। इसप्रकास्य प्रस्त हु समस्य श्रेत्रोक प्रमण्यक कारनाहा

<sup>9</sup> m m + 1 4 4 4 1 1

वणरिहाण पुरचरे । त जहा- सायसेयक्टारि चाउगुपक्षेण असिट्टारि वि कृत्य तत्व अतिमसेयक् चाउढिं गुनिय स्पृत काउता गिगुनिस्टेरेन औरिहर एति । व ६५१११ । अयोलोगस्य सायसेयक्टनस्यामा १०० ११११ ।

सपित उट्टरामधेषक रमाणेमा । तथ प्रश्येतकत पुराविदाणेन आणि प्रांक्त होड ५३३१ । मपित उपितममद प्रयान्त्र विद्यारमधुरेग साडिय' तथ प्रमान प्रवृद्धि । स्वस्मिम सेमयड उट्ट कालिय प्रमानित सुप्यान होदि । तस्म सुद्वियागे पित्रो की होदि १५५५ । सुद्विम प्राागामबाहर्छ, तत्रिम पूर्य माणमञ्ज्ञीम वेरञ्जाहरू, तुणो कमहाणीण सन् हेदिमरोहीजेनु प्रमानामबाहर होदि । एदिम योचे सुद्विरयारिविक्षनेण कडिदे टोण्जि तिरोगसेनािन प्रमानव

विधान बहते है। यह इसमनार ई-सभी क्षेत्रोंना घनकात चनुर्गुलितन ममे भवस्थिन है, स्तर्लय उनमें अन्तिम क्षेत्रकरणो चारले गुणा करके भीर चारमेंसे एक कम मर्थात् तीनमे माणे हैं पर घनकात ६५१ हैंदे हता। होता है। भीर अधीलोणने सभी क्षेत्रोंना धनकत १०६१ हैं होता है।

अय चारों ओरसे मुद्गाकार ऊपरोक्कप क्षेत्रका प्रतरण विवालते है। उनने पक राजु चौडे, सान राजु टरेव और गोल आकारपाले स्वील्प क्षेत्रका प्रतरण वहले अज लोक में कहे गोथ निपालसे निकालनेपर ५% हैं। दे राजु इतना होता है। (इस स्वाके उर्प लोक मण्यापत निकालकर पृथक स्वापन कर देना चाहिये।) अब, लोक मण्यापत के कर्मरा अध्य मागाने, पाय राजु है निकाल जहार एसे म्रालोकके मण्यापत से उत्तर्भ अध्य मागाने, पाय राजु है निकाल जहार एसे म्रालोकके मण्यापत में अपनी अध्य मागाने, पाय राजु है निकाल कहा पर पो म्रालोकके मण्यापत में अध्य मागाने, पाय राजु है निकाल कहा पर पो मागाने, पाय राजु है निकाल कहा पर पो मागाने से मागाने अध्य से से से मागाने से मागाने के मागाने मागाने के मागाने मा

१ म नर्श 'चड'६ त्यापे पाठ । १ म मत्यः 'बबारियणनदृष्य-', 'बबारियणम प्य-' अ-आः—क प्रतिषु 'बबारियस्प्य' १७ पार ।

द स २ प्रती 'सदिय' इति पाठ । ४ म प्रयो 'दाहिङ' इति पाठ ≀

रेतिये च होर्ष । आयद्ष्य अस्तिकसम् अहुद्दर-जुद्दीहस्स सादिरयिविष्णार-जुप्तिस्व र तलस्म व रज्जु मुहस्मि यगागामयाह्न्सस्स फलमाणेमो । व जहा— विस्त्वेमेणुसाई उण औरवेणार-जुणा गुणिदे मन्त्रिस्ललेखफलेहार् । तस्म पमाणमेद ११२११ भेसे तेकोणलेखाणि अहुद्दर-जुस्तेहाणि पगर-जु तेरसुप्तरहेन विदेष तत्म वर्षात्मव्य-महिष ग्विवस्त्वमाणि युःच व मन्त्रास्मि सक्तिय त्रसुप्त्याणि चारि तिकोणलेखाणि गारिय दोष्ट्रमायद्य असरेखाण पाठज्य होरजुरस्ति क्षात्म त्रस्तु प्राप्त्य-जु संविद्य । सोलसराहस्मिद्य तिष्णार-जुतिस्त्राणे दो यक्त सुण्यान-त्रन्तु संविद्य । सोलसराहस्मिद्य तिष्णार-जुतिस्त्राणे दो यक्त सुण्यान-त्रन्तु संविद्य । सोलसराहस्मिद्य तिष्णार-जुतिस्त्रामा क्षेत्रक्ष गुणिदे सेचफल होदि । तस्स हो सा । युःचो विस्त्रहस्तिहाम सवग्गं कारुण अविदेण गुणिदे सेचफल होदि । तस्स हो आते हैं । उनमेति पहले आयत्मवाहस्य होष्य के सा हो तीन यज्ञ क्ष्या है, तीन से बुष्ट व्यक्ति कर्षात्म हर्दर पाठ बाहा है, तन्त्य हो राज्ञ और मुंको यक्त क्षाव्या त्र समाण भोटा है, येले जल स्वायत्महरूक्त सेचका क्षयक तिकालते हैं। यह स्वायक्तिय -विष्क्रम्म हर्दि से अस्ति मुंको गुणाक्त पुना उसे भोटाईक मागा पक्त राज्ञ तुःस्तु गुणा

स बुष्ठ आधक अधान शुर्ति राजु बांझ है, तरुचे हो राजु और मुख्य एक मानस्य , ग्रमाण मोटा है, येसे इत भागतब्दारक सेवस प्रमानक निकारने हैं। यह स्वापकार - विवक्त में हैं के उत्तेव हैं को ग्राजकर तुना उसे मोटाईक माजप एक राजुले ग्राज है पर अध्यक्त माजप है पर अध्यक्त माजप है है जो कि साहे सीव अध्यक्त माजप एक राजुले एक सी नेवहले साहित कर उनमें बत्तीस बंदिस माजफ एक राजुले हैं है हैं उसे पर सी नेवहले सामा हो माजपीसे बादित कर उनमें बत्तीस बंदिस माजप केवल हैं है हैं है है है है उसे पर सीव माजप सीव बादित कर उनमें सीवह क्यांक सीव सामा की सामा

लिको निकारते हैं।
विश्वार्य — यहा पर को स्वायत्वयुरुरुक्षेत्रवर्श मोदार्ष समझः दो, पक, शून्य और
स्तु प्रमाण करी है, उसका स्विभाव यह है कि श्रम्लगेकके वास्त्वाने भीतरी भागकी
र वो राजु है। उसकि बाहरी सामनी मोदार्ष वर राजु है। क्येरिक्याने केविकारी मोदार्ष
। वा वक स्वेदा है और कोदिकारि सामनी उत्तरी केविकारी मोदार वर राजु है।
वा वक स्वेदा है और कोदिकारि सामनी उत्तरी केविकारी मोदार वर राजु है।
वह स्वाम रार है— वक सावत्व मुख्यक्षक उत्तर दुखरे सावत्व मुख्यक्षको उद्धरा
र क्यो पर दी राजुकी मोदार्थिकार वक क्षत्र है। तुन विकास भीर वासेयका
र स्वाम वरस्वर गुलन करके वपने गुला करने पर उत्तर क्षेत्रका मनफल होता है,
ह व व्या

ै राजु प्रमाण चौड़े, तथा ममश दी, एक, शुप और एक राजु मेटि हैं, उनके

पमाणमेद १०६११ । पुणो सेमा उण्ड येताण फ्रायेद्रम चाउरमागमेन होति । अण्याम, अधोलोगपर गणाण पर निर्मादो । जेणेर मारांगत कर्याण अण्याम, अस्वित्त पर पर मेलारिंद एतिय होदि १०६४ । उङ्ग्ले खेचस्य सन्यक्तरमामा एति शे हिंद ५८६१ । उङ्ग्ले होति १०६४ । उङ्ग्ले होदि १६४ । उङ्ग्ले होदि १६४ । तेरा सिद्ध घणलोगस्य समेउन्दिस्तान । ण च एन्ट्रहिंदिनम्ब सचरज्ज्ञपणपमाणं लोगमिणाद योत्तमिष्य, जेण पमाणलोगो एन्ट्रममुस्यन्ति अण्यो होज १ ण च लोगालोगो स्व होस् ति हिद्यमन्यक्त्र अण्यो होज १ ण च लोगालोगोस होस् ति हिद्यमन्यक्त्र अण्यो होज १ ण च लोगालोगोस होस् ति हिद्यमन्यक्त्र अण्यो होज १ ण च लोगालोगोस होस् ति हिद्यमन्यक्त्र वास्ति स्व परामाण मेहि पर्र प्राम्प होष्ट च ण, मह्यागाम मेहि पर्र प्राम्प लोगाम स्व विवास स्व

जिसकाप्रमाण है ४ है है ५ है = १० है है इतना द्वांत है। युन जो दोर बार विश्व केन हैं, उनना धनफल इस आयतचनुरक्तक्षत्र के युनुर्यमागमात्र केता है। इसका कार सुगम है, क्योंकि, अधोलोककी महरणामें बह आये हैं (ए १३)। जुक्ति इसमकार सर्वोक्त क्षेत्रोंके धनक्कर सम्तर अतिमान्त अधीन् स्थाप यहले बताये गये संशोक धनक्यते बनुताले कमले अधिकार है, इसाक्ष्य उनके धनक्यको यहा अर्थात् १०३१३ में मिलानेपर १९११ इसना प्रमाण हो जाता है। उर्धलोकका समल धनक्य पटाईंदर इनना होता है।

गुरा - यदि रोक्सम्राको याद्यच्छित्रपतेका प्रस्ता प्राप्त होता है तो हो जाया ! समापान -- नदी, क्योंकि, सर्वृत्त आकारा, जगप्रेणी, जगप्रतर और धनरोक, ह

१ स १ प्रती ७३ स २ प्रता ६७ इति पाठ । १३६६ १३५६

र मार्ग्स न च इति स्थान कश्रती मागत गणपदर् , आ प्रती मागत गणिय , स प्रति "-मार्ग्यच च दिश्वराटः।

तस्ता पमाणलागा छट्टलसमुदयन्तनादा आभागपद्वागणाण्य समाणा । च चच्छा । कप लेगो (पिंडजमाणो सच्चत्रमणपमाणो होज १ चुच्चरे— लेगो णाम सन्दानास मजहत्यो चोहसारज्जापामो होम्र वि दिसामु मृत्य तिश्लि चडणमाग चरिमेष्ठ सचिक् पचेक्रतन्त्रकृतो सच्चत्य सचरज्जबहल्ला चिट्ठ हाणीहि हिददेपेरतो, चोहसरज्जुआपद

सभी सहाभौको भी याद्यव्यक्तपनेका प्रसग भाजायगा।

कूनरी बात यह है कि 'मतरसमुद्धातगत केपणे वितने क्षेत्रमें रहते हैं! लोकके ससस्यातयें मागले न्यून सर्वे लोकमें रहते हैं। लोकके असस्यातयें मागले न्यून सर्वे लोकमें रहते हैं। लोकके असस्यातयें मागले न्यून सर्वे लोकमा प्रमाण केपणें के कुछ कम सीलिर मागले केपणें में कर्पणें निवेशनाण है।'इसमझर क्रायलेंकमें क्षेत्रमा इस सार्विक दुगुणताश कथन क्ष्यण्या यन नहीं सकता था, अतयय प्रमाणलोक कीर इच्चलीक हन दोनों लाकोंका प्रकार स्वयत्व इसा।

दिशुपार्थ — यहां पर प्रतरसमुद्धातमत केपले के क्षेत्रमा प्रमाण जो उत्पक्षोक्तको स्वेत्रमा प्रमाण जो उत्पक्षोक्तको स्वेत्रमा है उत्पक्ष अभिन्न स्वाया है उत्पक्ष अभिन्न स्वाया है कि उत्पक्षेत्रमा अभिन्न स्वया स्वया हुए । हसमें १७७ वा प्रमाण १९७ वा प्रमाण १९७ वा प्रमाण १९ प्रतराहुक जोड देनेपर १९९ प्रतराहु होते हैं जो कि पतलेक्द्रमा प्रमाण है। प्रतरसमुद्धातमत केपले लोगा स्वया प्रमाण केपलेक्द्रमा प्रमाण है। प्रतरसमुद्धातमत केपले होता स्वया प्रमाण केपलेक्द्रमा प्रमाण केपलेक्द्रमा स्वया कर लेते हैं, दिस्तिय १९६१ प्रतराहुमेंसे प्रातरण्योंसे उद्ध क्षेत्रमें। क्ष्म कर देना चाहिये। यहाँ यहाँ पर देशोन क्षेत्रमा अपलाण है।

इसलिये, उत्तयवारसे प्रमाणलोह और प्रस्यलोहके एक सिद्ध हो जानेपर, प्रमाण छोक छह दृष्योंके समुश्ययाछे लोहसे भाकाराके प्रदेशगणनाका भयसा समान है, ऐसा मर्थ सीकार करना चारिये।

श्चा-विडरूपसे पक्षित वरनेपर, सर्घात् धनरूप क्या गया, यह लोक सात राजके धननमाण केसे हो जाता है !

समाधान—उत्त दांबावा उत्तर कहते है— जो सर्घ आवादाके मध्य मागमें स्थित है, चीद्द राजु आयामयावाद है, दोनों दिसाओं मध्येत पूर्व और प्रध्या दिसाके मूल, स्थानात दिन्तुमाँग और सरमामाने यथामत्रसे सात यक, पाय और यक राजु दिस्तार याता है, सुधा सर्वत्र सात राजु मेटा है, युद्धि और द्वानिक द्वारा क्रिसके दोनों मानसमान याता है, सुधा सर्वत्र सात राजु मेटा है, युद्धि और द्वानिक द्वारा क्रिसके दोनों मानसमान

र संप्रत्यो । रागो असस्यव्यक्षिण्यम् । इति पाठः । २ उद्देवद्य आयाम बास प्रवासन भूमियुद्दे । स्टेय्यच प्रस्त्य व सम्बद्धाः स्विद्दालेचयञ्चातः सा १९१६

1

रज्जुरमामुद्दरोगणान्तिग्रमो'। एमी पिटिजमाणी मचरज्जुपगपमाणी होते'। उति हन् परितो व भेष्यदि तो परमादरेगलियेचमाहणह उत्त है। गाहात्रा विस्थितत्रात्रा हर तस्य दुचकलस्य अष्णहा समनामामा । कात्री नाजी दो गाहाजी नि पूर्व गुच्य-मुहन्तरसमाम-अद्ध बुम्मेरगुण गुग च रेरेग ।

घणगणित्र नामे ना उत्ताममस्त्रियं राने'॥ ९॥

रियत है, चीदह राजु टम्बी पह राजु है यर्गप्रमान पुरुषानी लोहनाली जिसहे गर्सि है एव यह पिंडरूप किया गया छोक सात राजुक धनप्रमाण संयोत् U X U X U = ३४१ राजु हा

विग्रेषाधे – लोहका उपयुक्त विकार इमयकार है - लोह सर्व अनगहि मार स्थित है। उसका श्रीयाम कीहरू राजु है। पूर्व श्रीयम तल्याम सान राजु होड़ हम वर्षात् सात राजु करर जनस्य भाग्यत्वेहम् एक राजुः त्येकके पीननाम वर्णात् सात राजु रात कार प्रकलाइमें पात रातु, और पूरे बीहर रातु जार वालमाव नवातू कार कार होइडे मनेत पत्र कार आवर अललावन पात्र राज्य, आर पूर्व वाद्व राज्य कार जावर लाग्य आगमें एक राज्य विस्तार है। छोवका उत्तर दक्षिण निस्तार सर्थय मात राजु है। इनावारि भीता के पेड परकार के ' छार रा उपर वासन गिस्तार समय मात राजु हा राजकार छोरके बीच एक राजु चीडी सतुरहोण और बाँदह राजु के में प्रमनाही है। पूर्वनाधिन सार्ग होक मदन्तर विव्यादयांको हूं। इसप्रकार छोक साप्र रिवेष्ट्र स्वयमाण द्वावा हूं। हाक मत्र रहा ताल वाल विवास कोर वारव राज का बचनारा वा है।

यदि इसमकारका रोक प्रदूष नहीं किया आयमा, तो प्रनरसमुद्रानमत हेरहरे क्षेत्रके सापनार्थं कहीं गई शे गायाप् निर्धंक हो जापेंगी, क्योंकि, उन गायामार्थे कहा गई धनफळ छोक्रो अन्य मकारसे माननेपर समय नहीं है।

ममाधान — पेसी शंका करनेपर कहते हैं —

विष्माण भीर तलमागरे भमाणरो ओहरूर साधा रही, पुत उसे उत्सेवत ग्र हतो, पुत्र मोहास्ति गुणा करो। ऐसा करनेपर वेत्रासन आकारसे स्थित मधोगोकमण सेवा

निर्देशाय- येगासन बाहारवाले बांगोलोहके मुखानेस्नारका प्रमाण वह रातु है बर तम्प्रिमार् वात्राच वाद्यारवार वाधावारक मुक्ता स्मारवा प्रमाव पर वाद्य व तम्प्रिमारका प्रमाव सात्र राजु है । इन दोनोंको जोडूनेपर बाट हुए । उसे बाधा कर बाद टोहर्ज उर्राप्त माण सान राजुह। इन वानावा जाड्नपर बाट हुए। उस बाधा पर स्वाचे मुणा करनेपर अहारस हुए। इस सवाधे भागोरो अन्तर अभाग सात राजुम गुणा करमवर अहारस हुए। इस सन्तर अभागोरोक की उत्तरनाक्षिण दिगाको भोटाई सात राजुम गुणा करनवर पकसा ज्ञानी प्रमुद्धा वहां क्यांश्रेक्त प्रत्यक्ष है। असे-०+1=८। ८-३=८। ४४३=११

<sup>।</sup> बादबहूबक्करेने देश्व वार दः हरराष्ट्ररा । बादबहरतस्य तबनान्। हार्र दणनाया हृषि सा देश दे बार राजवन्त्रतं त्रस्य दे बहुवाहद्ववाहार्ह् । छात् नश्चर्यका सम्बन्धः द्वानामान् हाः द्वानामान् । . त

t

### मूल मारेण गुण ्रसिट्स्डिमुक्ने स्रितृणिद । धणगणिद जाणस्या मुरगसरामध्याधिकिष्ट ॥ १० ॥

ण च ण्टरम होगस्स पटमगाहाए सह निरोहो, दगिदसाए बेचासण प्रस्तितराण दसणादो । ण च परथ झल्स्रीमटाण णिश्व, मज्झिन्ह सयक्ष्मणादिविपरिच्छाचेरेसण च्दमहल्मित्र समतदो असरोजनजोपणहरेण जोपणलक्ष्मचाहिल्लेण झल्स्सीसमाणवादो । ण च दिद्वतो दारिहृतिष्ण मन्दरा ममाणा, देण्ह पि अभावप्यसगादो । ण च वाल रक्षामटाणमेन्य ण सभार, एगदिमाए तालरक्यमटाणदक्षणादो । ण च तर्याण गाहाप

मूलके प्रमाणको मध्यके प्रमाणके गुणा करो, पुतः मुलकाहर कर्ष भागको उत्केषको कृति संधान् पति गुणा करो। पेसा करतेपर सुदगके साकारयाने क्षत्रमें शाप्त प्रतन्न जानना कारिये। रिका

दिगेषार्थ — कपलेक, बांबयं मोटा और करा गाँव सक्या देनिस मुद्रगाशास्त्रेय बहताता है। इस मुद्रगाशास कराज्ञेत मामास्त्रेय स्वातात वह राजुते मध्यातार किलात वह राजुते मध्यातार किलात वह राजुते गुणा वरनेवर १४५ = ५ इ.१ उसमें मुजायेतार वह राजुते जोड़कर ५+१ = ६ चांचा वरनेवर १०४० = ६९ मुणा वरनेवर ६ - २ = ३ रहे। इसे कवार वालेक वर्गते ७४४ = ६५४ मुणा वरनेवर ४०४ = १५० हुए। यहा एक्सी संतालीस राजु कर्यलेक्स प्रकल्प है। इस्पाता स्थोतेल और कर्यलेक्स वर्णलेकी और देनेवर १९६ + १५० = ३४६ तीजसी तेतालीस राजु वर्ष लोड़का प्रवरण होता है।

<sup>1 1</sup> P 8 4 4

६ पूथ्य दश्त रूग्य मुन सक्त सहय उदा वि । व्यवसायन मही मुदियनठावणीवाओ हा उत्तर दिख्यन वृक्षे सहाजा उद्योजनामासारको । जर्बा बुकीनीमास्ति आवदव स्वदायविश्वा ॥ जब्द व ४ ४ ५

इस्रया तस्तहा 'इति पात ३ ४ मातेषु ~यल इति पात्र ।

सह तिरोहो, परव रि दोसु दिमासु चउन्तिहितिस्वमटमणादो । ण च मत्तरस्वाहल करणाणिश्रोमासुचितिरह, तस्म त य विधिष्पहिमेषामावारो । तम्हा एरिसी वेत हमे ति धेत्तस्त्रो ।

परव चेदगी मणिट- क्यमणता जीवा अभिनेजनवेदिमिण लोण अन्छति। अर्थ एक्किन्द्र आगामपदेने एक्की चेत्र जीवी अन्छिट तो अमुखेजननीयाण वर्षा होत् अक्तिमि जीवाणमलोगे अन्छण पांत्रि, तेनिममावा वा। ण च तेनिममावा अत्रि, 'अणता जीवा ' ति अणेण सुचेण मह विरोधा। ण च अनेतामामे वि मेमाणपन्त्रम् मत्ति, लोगालोगिविहायस्म अमाबारवीटा। ण च एमातामपटने एमी जीवो अन्योत् ' एमाविह्म अल्योगाहणा वि अगुलस्म अम्येजनिद्माणमेचा ' ति बेदणालेचिंद्वम् क्विन्द्रचादे। विन्हा लोगमज्जनिह जदि होति, तो लोगस्म अस्येजनिन्माणमेची चेत्र जीविह होद्व्यमिदि ?

तानार राष्ट्रप्यामान् १ परय परिहासे बुच्चडे- षेड घडदे, चीन्मलाण पि अमखेजनवरासमाडो । 🕬

तीसरी नाया से माय मी िरोध नहीं बाता है, क्योंकि, यहांपर भी पूर्व और विश्वार हो होने हा दिया भी किया को किया है। तया छोड़ हे उत्तर होने हा तया छोड़ हे उत्तर हिस्सामार्थे स्वयं सात राजुर प्राह्म में किया हो है। तया छोड़ है व्याह्म हिस्सामार्थे से क्योंकि, क्यांकि, क्योंकि, क्योंकि,

कहे गए आवारपाना ही लाव है, पेमा स्थोवार करना चाहिए।

प्रका— यहाँपर दावादार कहता है कि समस्यात महेदानोल लोकमें धनन धक्की
पाने औप केले रह सकते हैं। यदि एक आवारके महेदाने एक हो औप रहे, तो मी की
लोकमें समक्यात आंघाँची रिधात होकर स्थिति। अन्य और्तिक स्वतिवादानों रहना मन्न
होता है, सपया उन रोष जीवाँका अमाप प्राप्त होता है। वित्तु उनका अमार है नहीं,
क्योंकि, उन क्यावक 'शीन अनत्य है' स्स सुबके साथ दिरोच आनते हैं। और न कलांधी
विस्तानक समाप शान्त होता है। कुसरी बत यह मी है कि मावायि एक प्रदेशने एक जीव रहता भी नहीं है, वर्षाकि, 'एक आवश्री अध्याय स्थायाहना भी अगुलके असक्यावि सामाम होती है 'ऐसा पेर्ताकाक पेर्ताक्षित्रीयान नामक अनुयोगद्वारमें शितपाद किंग नाम है। इसलिय पेर्ट् लोक समस्योगी और रहते हैं, तो य लोकके समस्यातयें मानाव है।

समापान - यह यहायर इस शंत्राचा परिदार कहते हैं - शंत्राचारका उन वर्ण वरित नहीं होता है, क्योंकि, उन क्यानके मान छेनेपर पुरुशोंके मी ससक्यानपनेश प्रवर्ण सा क्राना है।

यस-पुत्रलोंके मसस्यात दोनेका प्रसग बेले मा जायेगा !

१ द हम ' अल्मी ', ज बड़ी ' इमी ' क बड़ी इमा ' इन्नि प्राः।

एमेगलागागासपदेर्थ एक्स्वको अदि परमाण् अच्छदि, तो क्षेममेषा परमाण् भवति, तेसपागालाणमभावो चेव, अणवगासाणमित्वविरोधा । ण च तेहि लेगमेषपरमाण्हि कम्म सरीर पड एक रथमादिसु ग्या वि लिप्यज्ञ्दे, अणवाणतपरमाणुमदुद्यममारमित प्रक्रिक्त ओक्षणातिलापार् वि समनामावा । होटु चे ला सप्तक्रीमाणदुव्यममारमित प्रक्रिक्त ओक्षणातिलापार् वि समनामावा । होटु चे ला सप्तक्रीमाणदुव्यममारमित अणुज्ञदियममारो, सच्चीवाणम्बक्येण केन्द्रलाणुष्विष्यमागादी च । एवमदुष्पमयो मा होदि चि अवनेष्ट्रस्थाणनीवानीनत्त्रस्थानमित्रो लगालापार्थिमको लेगागामा वि

समाधान— इस दाकाश परिदार इसमवार है— लोवाबाहों पर पक मदैगमें यदि पर पर ही परमाणु रहे, तो लोवाबाहां मद्दाममाण ही परमाणु होंगे, और दोष पुरुलोंक समाय हो जाएगा, पर्योकि जिन पुरुलोंका स्वयंवात नहीं मिला उनका सिल्प्य माननेमें विरोध साता है। तथा उन होनाश परमाणुमींके हारा वर्षे, नारी यह पर और स्वाम सादिकाँमेंले पक भी वस्तु निष्यत नहीं हो सकती है, क्योंकि, सनस्तान परमाणुमींक समुरावका समानाम हुए विना पक सबस्थास्तर शक्क भी क्षण्या होना समय नहीं है।

द्यका- एक भी वस्तु निष्पन्न नहीं होते, तो भी क्या हानि है है

समाधान - नहीं, वर्षीनि, ऐसा माननेपर समस्त पुरुत दृश्यनी भापत्रिकाण ससम माता है तथा सर्व आर्थोने एक साथ ही नेयल्झाननी उत्पतिना भी प्रथम प्राप्त होता है।

विश्वार्य--यहांपर समस्त पुरुष्टर् वहां अनुवर्गिधवा जो वृत्या दिया है, वसका समिताय यह है कि घट, यह दि वार्यों के देवते से दी वारण वह पुरुष्ट सामुग्न समिताय यह है कि घट, यह दि वार्यों के देवते से दी वारण वह पुरुष्ट सामुग्न निक्यांत के होगी से उन वार्योंके नियादि के दोगी प्रमुख निक्यांत के होगी से उन वार्योंके नियादि के हारण प्रमुख निक्यांत के होगी से उन वार्योंके नियादि वार्याध्ये अस्य प्रमुख नियादि कार्यों साम्य कर पर प्रमुख नियादि कार्यों साम्य है कि यह स्थाद के प्रमुख नियादि कार्यों साम्य है कि प्रमुख नियादि कार्यों साम्य के विषय कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों के प्रमुख नियादि कार्यों कार

इस प्रकार का अतिप्रसम दोष न दोव इस लिय अवगरामान जीव और नजीव

र परकारनि अर्थतारंशी बहुदिहाँ हानारि। स्रोतन्तरायो वि हेति व १,१०४ अवस्था स्वयस्थान् संवाहपुरिक्षान्तर्वित्रं तत्वत्रवर्षमा । स स. १,१८ **र**च्छिटको सीरक्रमस्म मधुरुभो व्य ।

त्तम्हा ओपाइणलक्त्रणेण भिद्वलोगागामस्म ओगाइणमाइप्पमाइरियपरमाम्हासे सेण भणिम्मामो । त जहा- उस्मेह्यणगुलस्म अमग्रे आदिभागमेत्ते रात्ते मुहूम्लगोदबीसम् अहरणोगाइणा भदि' । तम्हि हिद्यणलोगभेत्रजीत्रम् पडिपरेममयनिदिष्टि अणतपुणा, भिद्यणमणनभागमेता होद्ण हिटऔगालियमरीरपरमाण्ण त वेत स्व भोगाम जादि' । पुणे ओरालियसरीरपरमाण्हितो अणतगुणाण तेत्तस्यमरीरपरमाण्व वि तम्हि चेत्र रोत्ते ओगाहणा भदि । पुट्यमणिदतेत्रस्यपरमाण्हितो अणतगुणा सम्बर्ध परमाण् तोत्र जीगाहणा भिटलचादिकारणेहि सचिदा पडिपटेममभामिदिषहि अकस्मृत्

मिद्धाः मणतमागमेचा तत्य मनति, वेमि वि तिम्ह चेन छेचे ओगाहणा मनीर । इण इच्छों सत्ता सम्बद्धा न बन सक्तेते शीरकुमका मधुकुमके समान अवताहन वनवास्त्र कोकाकारा है, पेसा मान लेना चाहिए।

रिनेपार्थ—जेसे श्रीरहण्यका मधुरुम्भमें भवगाहन हो जाता है, वर्षाव, मधुरि म इद कटामें सामाप्याले दूषने भरे हुद कटा हा यदि दूष डाट दिया जाय, तो समझ है रागीमें गमा जाता है, पेमी भवगाहन द्वाचि देशी जाता है। उमीके समान आधा<sup>नक में</sup> पेमी भवगाहन द्वाचा है। इटकें स्वयाहन हो जाता है।

इसिट्य गष्ड हम अवसाहत रूप्यंग्लेस मित्र रोजानाहके सवसाहत साहात्वर आवाद यहरमानत उपदेशके अनुमान कहते हैं। यह इस प्रजार है— उपेद्राके अनुमान क्षात्वर मान कार्य के प्रवाद अन्य प्रजार के स्वाद के प्रजार के स्वाद के स्

साम साथ बसेररसामु उस हेरवर्षे रहत है, हमिटिए उन बसप्रसाम्सीही सी डर्सा है।

र ट्रुच्यर दशकाजनगढ जरान क्रियवस्यान । अन्त्रअस्यान जन्मये । सा 🤻

१२ र प्रमः वश्य जापक्षतः। स्वत्यस्य दर्शतः यू २ १८—१९। दावापूरे स्वतार्थेण सम्मापुरीरे वराष्ट्रा अधिसम्बद्धाः स्वतारकार्थक्षाः राम्य व्यवस्थाः विश्ववस्थाः

जोराहिष-तेता बुरमह्यविस्मसोन्चयाण पादेव सन्दर्गावेहि अणतगुणाण पडिसरमाणुन्हि वताणुगमे छोगावगाइणस्तिवस्यः जारतार पणा व ग्यह्मवरमाणाव चवाच चावव स्वव मावक जायायाचा पणा पणा जायाच्याच विषियमेषाच तिहि चेव रोच ओंगाहणा महिं। ववसम्बीतेणि छदअगुलसा असरोज्ञदि वायपमधान तार्व चय व्या आवाहणा मनाद । एयमवा तारणा छर्ग्यप्रवस्त जावारणार मामम के बहुणारेषधि समाणामाहणा होर्ग्य विदिश्चो जीना तस्यन अन्छरि । प्रदेशनाणनाण समाणामाहणाच जीनाण तमिह चयु सन्ते आमाहणा मनदि । तसे अवसे चीना तमिह चेव मान्तिमयदेशमतिम् काङण उववच्यो । एदस्म नि आगाहणाण अणता वात्त्रीत्रा समाणामाहृषा अच्छिति वि पुरुष प पश्चितः । एवसमामपदेशा सन्तरिसास भवनाता समाधाराहरणा अन्यताता प्रस्त व भरुषद्वता स्वमधापद्वत स्वमधापद्वत स्वमधापद्वत स्वमधापद्वत स्वमधापद्वत स्व ्टेश्यामा । त जहा- तेउबाह्या श्रीवा अमरोजा लोगा। तची पुरनिकाह्या ाणपाता । ७ वहाः— ७०४।६४। वादा जनसञ्ज छामा । ५०। उठारकारूपा दिसेसाहिया । आउसाहमा जीम दिसेसाहिया । बाउद्याहूमा जीम दिसेसाहिया । तची प्रतामक्षा । जान्य १२मा जाना विवासक्षा । पान्य १२मा जाना । पान्य १२मा जाना विवासक्षा । पार्य १२मा जाना विवासक्षा विहेद्द्य, अष्णहा पुच्युचदोमपामगादो।

मयगादना दोता है। युन आसारिकसारीर, तजरकसारीर और कामणसारक विस्तापचर्यांना, जवणादना हाता हा पुन आवारव हातार, तज्ञरू हातर जार जामणहातरका विज्ञानवार्यका है। जो हि महोक सर्वे जीवासे भन तमुने हैं भीर महोक परमाणुपर उतने ही मनाय है, उनकी भी जा १४ मण्ड वर जापात भा तथुण ६ मार भाषक परमाणुबर वता हा भागण है, वनका सा इसाही सेवमें मुवाहना होती है। इसम्बाह पह जीवसे व्यान्त भगुवक ससस्यातवे साममा ण्या हाराज्य समाप्ता होता है। इस्ताचार एक जायस स्वाप्त वधावक वसस्यावव मागमाव इसी ज्ञच्य रोजमें समान भयगादनायाला होकरके हुसरा और भी रहता है। इसीमकार उसा जाथ य सबस समान भागादनायाना हार रक दूसरा जाथ भा रहता ह। रसामकार समान मयगादनायाने सन तानन्त जायों ही उसी ही सेवमें भवगाहना दोती है। तरस्थान समान अवगादनायाः अन तानन्त जायाचा उत्तादा स्वम स्वयादना दाता द । ताय्ववात् दूसरा कोई जीय, उत्ती ही रोत्रमें उसके मध्यवर्ती घरेनाको अपनी स्वयादनाका स्रातिम द्वता काह जाय, उत्ता वा सम्म उत्तक मध्यका महाराव अपना अवगाहनाका बात्तम महारा करके उत्तवस हुमा। इत जीवकी भी सवगाहनाम, समान अवगाहनाका बात्तम भद्दा रुष्ट उत्पन्न दुमा। इस जायशामा अथगाहनाम, समान अथगाहनायाल अन वानन्त जीव रहते हैं, इसमरार यहां भी पूर्वेंद्र समान महत्त्व करना चाहित। अधात्, उस संवर्षे आव रहत ह, रसम्रार यहां मा पूष्य समान महत्त्व करना थाह्य । स्यात, उस स्वम हियत मनलेकमात्र जीवके मुक्तामेंस महत्त्वक महैरायर सनन्त श्रीवारिकारिक परमाणु, ारपत धनलावचात्र आवषः भर्गामसः मत्यकः भरताप्तः अनन्तः आदाारव शरारकः परमाणुः बीद्गरिकरारिते अमन्तगुणे तेजस्वगरिकः और स्त्रते अनन्तगुणे वामणगरारकः परमाणुः भादातक रातास्य भागवायुवः वामस्य नारम् इतस्य भागवायुवः सामध्यास्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य का ६ र पुन स्व ताना शराराव स्वयं आवास काम त ग्राजित विश्वसायस्य भा उसा अवगण्य विद्यमान है। स्तमकार समान सपमाहनायाः सनतानन्त आय उसा क्षेत्रमें रहते हैं। प्तानात है। नेपनरार समाग व्यवस्तिताल वान्यतालमा जाव उसा सदम रहत है। इसमुद्रारसे होक्क परिपूष हानेतक सभी दिशाओं हो हका एक एक महेन बहाते जाना क्षतम्बद्धाः स्वत् चारपूर्णं द्वातवर् समा ।वद्यामामः स्वत्रं पकं पकं भव्या बहात जाना चादियः। मय यद्दापर उत्सेषः घनागुरुके मसस्यात्यं भागध्याणं एक एवं भवगाहनामें स्थित चाहरः। भव प्रदादः उत्सच चनायुक्तं वसंच्यातच भागभ्रमाण पत्र पत्र भवगाद्दनाम स्वयत् वीयोका भरत्रबहुरतं बहुतः हः। यह सम्मकार है— तैत्रस्कायिक आयं भारत्यात रोकणमाण वायाका सरावहान करत है। यह संस्थकार है— तजस्वातक जाव बस्तब्यात लाक्यमाण ( तजस्वायिक जागाँस पृथियोकायिक जाय विगय भाधिक है। पृथियोकायिक जागाँसे ातावनभावन आवाल प्राच्यानभावन आवाव ।व-१व नगवन हः प्राच्यानभावन आवाल रुकाविन आव विनाय भावेन हैं। अरुकाविन भावेंस वायुकाविक और विश्वय भविन हैं। ्रकार्यक आव १४ वर्ष भावन ६। जल्यायक वातास वायुकायक आव १४३१४ लाघक ६। युकायिक आवीस सनस्पतिकासिक आप भन नगुण १। स्सन्नकारस सर्व आयरानिके द्वारा पुकायक जावास चनरपातकायक जाय भन तमुज द । इसवकारस सय जायरागणक द्वारा ज्याकाचा परिपूण द पसा भ्रज्ञान करना खादिय भन्यया पूर्वोत्त दायोका प्रसम प्राप्त

र जावादा जनग्रम। वाददासाल्याह् बस्ततावचवा। जासम्बद्धास्यम् वृहस् वृहि समानाहुत

सन्यनीयाणमान्या तिविहा भविह, मस्थाण-ममुग्राहुतवादमेहेण । तत्र स्वाण दुविह, सन्धाणसंखाण विहारतिन्मायाण चिदि । तस्य सन्धाणमस्याण णाम व्रव्ण उपपाणमामे णये रस्यो वा मयण णिमीयण चत्रमणादिवातारज्ञचेणन्द्रण । तिहार्वर्ष सत्याण णाम अप्याो उपपाणमा ययर रस्याद्रीणि द्रष्ट्रिय अस्याय सम्याणितीत्र चत्रमणादिवातारेणन्द्रण । समुग्याद्री मचित्रियो, वेदणसमुग्यारी क्ष्यात्रममुग्यादे वेदिव ममुग्याद्री मारणविष्ममुग्याद्री तेनामरीरममुग्याद्री आहारसमुग्यादी क्षेत्रसम्बद्धः चिदि । तस्य वेदणममुग्यादी णाम अस्यि ससी वेदणादीहि जीवाणमुक्त्रम्येण समितिद्या निष्णुज्ञण । क्षायममुग्यादी णाम क्षेत्र ससी वेदणादीहि सरीगतिगुणविष्णुज्ञण । क्षेत्रस्य ममुग्यादी णाम देव णेरहयाण वेदिव्ययमरीरोदहस्याण मामाविष्मागार द्रष्टिय अस्यासीन

च्छण' । मारणतियमसुम्याद्रो णाम अप्पणे। बहुमाणमगरमञ्जूष विजार्रए विकास

क्यस्यान, समुद्धात और उपपादक भेदसे सम् जीमाँकी आरस्या तीत प्रकारक है उनमें स्थम्यान हो प्रकारक है— स्वम्थानदरम्यान और विदारमस्यम्यान । उनमेंसे अ उनमें स्थम्यान हो प्रकारक है— स्वम्थानदरम्यान और विदारमस्यम्यान । उनमेंसे अ उन्यम्न होनेक माममें, नगरमें अथ्या अरण्यमं सीना, बैठना, चरना आदि कार्यम्य मुण्ड होकर रस्येन माम स्यस्थानस्यस्थान है। अपने उपम होनेक माम, नगर अयवा अर्थ-आदिको छोकर स्थम्य मायन निर्मादन और परिभ्रमण आदि व्यापारसे युक्त होकर रस्य नाम विदारपरस्थमन है। समुद्धान सान प्रकारका है— १ वेदनासमुद्धान, २ कपायसम्ब्र १ विजियकसमुद्धान, १ मारणानिकममुद्धात, ५ वेजस्थनारीरसमुद्धान, १ आहारकार्य समुद्धान, और ७ वेश्वलममुद्धान। उनमेंसे नेप्रवेदना, शिरोन्दन आदिके द्वारा आदे सद्देशिका प्रकारण नारिक्त मिलूज समाण निर्माणका नाम वेदनासमुद्धात है। क्रेम, भारिक हारा अधिके प्रदेशीका प्रारीरसे तिगुणे प्रमाण प्रस्थवका नाम क्यायसमुद्धान केविविद्यारीरके उत्प्याले देव और नारका आयोका अपने स्थामायिक आवारहे। छोई

१ तत्र राजन राजनपुरसामाणिक्षेत्र तत्र स्वस्थानसरवातन् । याः आंश्रां अंश्राप्त ५४६ २ हिरुप्तरपुराजा बरुन पश्चिमनुष्युवनस्थतं तृतिहरसारसम्बादमितः। याः आंश्रां अर्थने

ह ही मिन मा बावनवासय जाती बहित्तमन वस्तात । व वजित्त । व वा हा है। वर्गेन्द्रह दह ब्याहरूल व पीत्रस्य | जिल्लाम दहाता । दि वस्त्रप्रभाव तुष्ठ गाला व हर्दर वहत्त ही विकत स्थापन करों है, जातान नात्रस्य ववस्त्रं सन्तर्य गाने जी जी जी का भवते

ड त्या सः चारण र्याचर्णा इ प्रसंदत्त स्थापारित्याच्या वत्रा वत्रा वात्र हेत् हैं।

भ विराय संदालक प्रारम्भारहत् क्यांत्वयुद्धात् । तः सः वः वः

६ अध्यापक प्रमाणकारिक एक रेव प्रमाणकारिक प्रमाणकारिक । व

या जारुप्यज्ञमाणरोर्स तार गत्ण गरीरतिगुण्याद्वहुण अण्यद्वा वा अंतीसुरुषमञ्छल'। वेदल प्रमापममुख्यादा मारणियसमुख्यादे रिण्ण पदित ति मुले ण पदित । मारणिय समुद्र्यादे लाज्य पदित ति मुले ण पदित । मारणिय समुद्र्यादे णाज्य ज्ञान्य समुद्र्यादे णाज्य ज्ञान्य समुद्र्यादे णाज्य ज्ञान्य पद्वाद्वाद्याच्यादे णाज्य ज्ञान्य पद्वाद्वाद्यादे । मारणिय पद्वाद्वाद्याच्यादे । मारणिय पद्वाद्वाद्याच्यादे । मारणिय पद्वाद्यादे । मारणिय पद्वाद्यादे । मारणिय समुद्र्यादे । मारणिय पद्वादे । मारणिय समुद्र्यादे । मारणिय पद्वादे । मारणिय च विद्याद्यादे । मारणिय च विद्यादे । मारणिय च विद्

कनुगतिहारा थयवा विमद्दगतिहारा थांगे जिसमें उत्था होना है पेसे शेत्रतक जाकर, दार्रारसे तिगुणे विस्तारसे थाया थायप्रकारसे थातमुद्दर्त तक रहनेका नाम मारणातिक समदात है।

श्रम — घरनासमुद्रात और वयायसमुद्रात ये दोनों मारणान्तिकसमुद्रातमें अन्तभूत पर्यो नहीं होते है ?

समापान—चेदनात्मुद्धात और क्यायसमुद्धातका मारणातिकसमुद्धातमं भात माय वर्षा होता है, क्योंकि जिन्होंने परमयकी भाग्न बौध ही है, देखे जायोंके हो मारणातिकसमुद्धात होता है। क्यिन पेदनासमुद्धात और वयायसमुद्धात, पद्धापुण जीघोंके भी होते हैं भीर मबद्धापुण जीवोंके भी होते हैं। मारणातिकसमुद्धात निश्चयते भागे जहां उपप्र होता है पैसे शेवकरी दिशाने अनिमुख्य होता है। क्यित शन्य समुद्धातोंके रक्षप्रवार एक दिसामें यामका नियम मही है, क्योंकि, जनवा दर्शी दिशामोमें भी पामन पाया जाता है। मारणातिकसमुद्धातकी स्थार उत्तरप्रवार मध्ये उत्तरप्रमान रेक्ये भागत तक है, कि तु इतर समुद्धातींका यह नियम मही है।

त्रेज्ञस्वदारीरवे विस्तपणवा नाम तैज्ञस्वदारीरसमुद्धात है। यह दे। प्रवारवा होता है, निस्सरणास्त्रव भार भनिस्सरणास्त्रव । उनमें जो निस्सरणास्त्रव तैज्ञस्वदारीरविसर्पण है यह

र स्वीपक्रमिकाञ्चपमानाषु क्षयाविभृतवस्वीतप्रयामनी बारणातिकतस्यात । त रा वा १, २०

र् आहारनगरगोतिनतग्रहाशनगरिकाः 🗴 शराः वच सञ्ज्ञाताः वद्दिकाः । तः रा वाः १, २ आहारमारमानिव<sub>स</sub>र्गपि निवसम प्रदिक्षितं द्वां दत दिक्षिणदा हु तता पंत सम्बन्धादया होति ॥ गो आः ६९९

६ जीवानुमहायपातप्रवणतेज वाराध्यवर्तनाथरत्ज लक्ष्यात । तः रा वा रः, २० ४ अरः निरुधं नि साणा मणस्तिराया। औदारियनविषयात्वर्षसम्बर्धसम्बर्धस्य देशस्य दासिद्वरनि सरणामाद्ये।

यवेदमधारित्रस्यातिक्दर्यं जीवबद्धलयुग्नं बहिर्निष्करयं दाग्नं पार्ष्ठं याविष्ठमानं निष्पावकहरित्रपर्यित्रीरवाठीमारित एक्टि यहत्रा व निवतते । अस विशवतिष्ठते वाधिनाराधार्यो मनति तदत्रणि वालानकं । तः शा वा २, ४६

पसत्थमप्पसत्य चेदि । तत्य अप्पमत्य बारहजायणायाम णवनीयणत्रि याग स्वित्रगुरुस संरोक्षदिभागनाहरू जामनगरुमुममकाम भृमिपव्यदादिदहणस्मम, परिवनमाहिष रोभिंघण वामसप्पमा इन्छियरे। चमेचिमप्पण । जन पमाथ न पि एरिम चन्न, ननी हसघरल दक्तिःगसमभत्र अणुक्तपाणिमित्त मारि रोगादिवसमणक्रयम। ज तमाणिस्मान्वयव तेज्ञइयमरीर तेणेत्य अणिघयारे।। आहारममुग्यादो णामपत्तिद्रीण महास्मिण हेरि । त च इत्थुस्तेघ हमध्यल मन्यगसुदर रागमेत्तेण अगेयजोयणलक्षमामणक्षम अप्पंडिह्यगमण उत्तमगमभन, आणाकणिट्टदाए अमजमनहुलडाए च लद्रप्पमस्न केनलिसमुग्पादी' णाम दह फनाइ पदर लोगपुरणभेएण चउच्चिहो । तथ र सम्रुग्यादो णाम पुन्यसरीरनाहरूलेण तत्त्वगुणनाहरूलेण ना सनिवसमादो मादिरेयाँगु परिद्वष्ण केनलिजीनपदेसाण दढागारेण देसणचाहसरज्जीनमध्यण । क्याडमप्रामारा व

भी दो प्रकारका है, प्रदास्ततेज्ञस और अपदास्ततेत्रस । उनमें अप्रदास्तनिस्सरणातमक तैज द्वारीरसमुद्धात, बारह योजन रुम्मा, नी योजन विस्तारवारा, मृत्यमुलने सर्वाहन । मोटाईवारा, जपासुसमेन सदश साराणवारा, भूमि और पर्वनाहिक जरानेम समर्थ, ह पक्षरहित, रोपरूप इन्यनवाला, बार्षे क्यसे उपन्न होनेवाला और इन्छित क्षेत्रप्रमाण र्थण करनेयाला होता है। तथा जो अशस्तिनिस्सरणात्मक तेजस्कशरीरसमुद्धात है, वह विस्तार आदिमें तो अप्रशस्ततेजसके ही समान है, किन्तु इतनी विशेपता है कि वह ह समान ध्वरूपणेवाला है, दाहिने क्धेसे उत्पन्न होता है प्राणियोंकी अनुकल्पाके निश्न उरपन्न होता है और मारी, रीग आदिके प्रशासन करनेमें समर्थ होता है। इनमेंसे क्रिस्सरणात्मक वैजसशारीरसमदात है. उसका यहापर अधिकार नहीं है ।

तिनको ऋदि मान्त नहीं हुई है, ऐसे महर्पियोंके बाहारकसमुद्धात होता है। पक द्वाय ऊचा, इसके समान घवल वर्णवाला, सर्वामसुद्दर क्षणमात्रमें कई लाझ यो गमन करनेमें समर्थ, अप्रनिहत गमन्याण, उत्तमाग अधान् मस्तकसे उत्पन्न होनेवाला को बाहाकी अधात श्रुतजानको किनग्रता अर्थान् हीनताके होनेपर और असवा कहुछताके होनेपर जिसने अपना स्वरूप प्राप्त किया है, ऐसा है।

वड, क्याट, प्रतर कार लोकपूरण में मन्से केवलिसमुद्धात चार प्रकारका है। जिसकी अपने विष्क्रमसे कुछ अधिक तिशुनी परिधि है ऐसे पूर्वदारीरके बाहर्यहर अ पूर्वदारीरसे विगुने बाहस्यक्षप दशकारसे देवछाँके जीवमहेताँका कुछ बम बीहर

१ वं व न्व ५९ (ब माग पृ २९७; तृ मग प्रस्तावना ग्रंडा १८, पू ४७ )

र अब विकित्ताच्यक्षत्रवयुष्मायम्बन्धयोजनाद्वरहार स्वीतिवश्यथं बाहारक्ष्यवद्वाते । ह प

१ बदनीयस्य बहुजान्ध्यावाबादुशान्त्रामीतपूर्वदमायुगमबद्दशार्थं द्वर्ष्यस्वमाववात् सुराह्मास्य हे दुरदृश्यमितिरेपटमप्रयद्भवा वर्षे अमुद्रान्त क्विनियदान । त सा वा १, ६०

कुव्यिन्त्वसाहरूतामांगेन वादबरुपप्रदिस्तिगन्यसेचासूर्वः । पदसमुम्पादो चाम वेडिन जीउपदेसाण वादबरुपरुद्धलेगाबेच मीसून सन्यलेगासूरम् । स्नेनपूरणममुम्पादो चाम वेउलिजीवपदेसाण प्रमलेगमपाण मन्यलेगास्स्य । उत्त च —

> बेदण यसाय वेउ विवक्षी य मरणितओ समुखादी ह तेजाहारी एही सत्त्वाओ वंबटाण त ॥ ११ ॥

उपादा एपविद्दो । सो वि उपपष्णप्रमामण् चेर होदि । त्य उन्तरप्रहाण उपप्रभाष रोच बहुर ण स्टमदि, सरोजिदांगम-नियदेगारी । निमारी निरिद्दो, चाणि सुद्दा सामस्त्रियो बोसुनियो चेदि । स्वयं पाणिसुद्दा एमविनारी । निमारी बदरा दुन्नि

पैल्लेका नाम ब्रह्मसुद्धान है। ब्रह्मसुद्धानमें बनाये गये बाहरन भार भाषामक हान पातपाल्यने सहित संपूर्ण क्षेत्रके स्वारन बरनेका नाम बराजनाहुदान है। वेकनी भागस्य अधिवादेशीका पातपाल्यकों कहे हुए लोकोंककों छाडुका स्मूल लोकों स्वारन शासका नाम भागस्यसुद्धान है। धनलोकामाण बेचनी भाषानके भीवमदेशीका क्षय कावक स्वारन बराककों वेचालेकाहुद्धान कहते हैं। क्षा भी है---

शिवार्थ — गूवनारिके बाहरवस्य मध्या गूर्वनारिसे निप्तेन बाहरवस्य कं कारमे स्था बहतेना भिमाय यह है ति जब नहासमते धिमासमान वेवना अन्यास समृहन्य करते है जस समस्यामें पूर्वनारिके बाहरवसे कुछ अधिक निग्नी विधिय व दशवार साम स्रोत होते हैं। तथा जब दशस्त्रस्य वेयको समयान् रामुद्धान बरते हैं नव प्यरर्गारा तिमुने बाहरवको कुछ स्थित लिगुकी दरिश्वार्थ दशस्तर स्थामदेश निवरन है द स्मान्टर प्रयक्ताराने 'युक्तस्यीरबाहरकेन सांसमुनवाहरूक या येगा विश्वायन दिया है।

पेर्नासमुद्रातः कथायरमुद्रातः, शैक्षिकसम्प्रातः मारणानिकसमुद्रातः क्रिकस समुद्रातः, छन् भादारकसमुद्रातः और सानवी कथन्तिसमुद्रानं वसमकारं समुद्रानं सान मबरका है।। ११॥

ज्यवार पडमडारडा है और यह भी जावज होनेने पटम समयमें दी हाना है। हववार में स्तुतानिते अपन्य पूर मोधीना भेस बहुत गहीं व पा ज गा है क्यों है स्वयं जे बहु समयन मेरेसीना करेख हो जागा है। किम्ह तीन महत्त्व कर है पार्ट प्रणा, गोर्टक का दिल्लीका, इस्टेंस पारिस्त्रणा गति यह विमदयानी होती है। किम्ह कम और कुरिन हे सह सकार्य

१ तो औ, ६६७

e alitaulensia taluszenerg nagetade fin a ar e ere

e cefectieft waren an en & te

चि एनहों । लांगलिओं दुविमाहों । गोमुचिओ तिविन्महों । तत्य मार्णनिएन विष विम्महम्पदीए उपपणाणं उजुमदीए उपपणपदमसमयोगाहणाए समाणा चेत्र शेलाहण भवदि । जबरि दोण्हमोगाहणाणं संद्राणे समाणचिणयमा णरिव । इत्रे ? आजुलिं संद्राणणामकम्मेहि जाणेद्रार्टाणाणमेगचिरोधा । विम्महमदीए मार्गणियं कार्युप्यणाणं पदमसमए असंवेडजजीपणमेचा ओगाहणा होदि, पुट्वं पद्मारिद्र्य-दो-विदंहाणं पदम्समए उसंवारामावादो ।

षाची नाम हैं। टांगिटिका गति दे। विषद्वयाटी होती है। और गोमृत्रिका गति कीन विषर बाटी होती है। इनमेंसे मारणांतिक समुदातके बिना विषद्वगतिसे उत्पन्न हुए जाँकी क्रुजातिसे उत्पन्न जोवोक्ते प्रयम समयमें होनेवाटी अवगाहनाके समान ही सवगाहना हेती है। विदोषता वेयल इतनी है कि दोनों अवगाहनाओं के आवारमें समानता का निवम नहीं है। क्योंकि, आनुपूर्वी नामकर्मके उद्यक्षे उत्पन्न होनेवाटे और संस्थान नामकर्मके उद्यक्षे उत्पन्न होनेवाटे संस्थानों के पकत्वका विरोध है।

विद्यपार्थ — पहांपर जो आनुपूर्व और संस्थान नामकमेसे जितत आहाएँ प्रकारका थिरोध यताया है उसका आमिपाय यह है कि विष्रद्वगतिमें जीवका आकार आहारों मामकमेके उदयसे होता है. पर्योकि, यहांपर संस्थाननामकर्मका उदय नहीं होता हैं। किंद्र अहुतारिमें आनुपूर्व नामकमेका उदय कार्या है। किंद्र अहुतारिमें आनुपूर्व नामकमेका उदय कार्या है। किंद्र अहुतारिमें आनुपूर्व नामकमेका उदय कार्या विष्या विषय विषय विषय है। होता है। कहुत्रातिमें की कार्याणकाययोग न होकर अहुत्रिक्षित्र योगियाओं प्रकार के हित्र होते कि कार्य के किंद्र के कहुत्रातिमें के स्थान कार्य कार्य है। स्थान कार्य के कहुत्रातिसे उत्य होते के कार्य के स्थान कार्य के स्थान कार्य है। इससे सिस्द है कि कहुत्रातिसे उत्य है के कहुत्र सिस्य होते कि कार्य के सिस्य कार्य है। इससे सिस्य कार्य होते कि कार्य के सिस्य कार्य होते हैं। इससे सिस्य कार्य होते होते के सिस्य कार्य होते होते होते हैं। हित्र कार्य के सिस्य हो होंगे, कर्य के सिस्य कार्य कार्य होते होते के सिस्य हो होंगे, कर्य के सिस्य कार्य होते होते कार्य कार्

मारणांतिक समुद्धात करके विग्रहगतिसे उत्पन्न हुए जीवों के पहले समयमें असंस्कृत वोजनमाण अवगाहना होनों हैं, क्योंकि, पहले फैलाये गये वक, दो और तीन दंडींडा प्रवर्ग समयमें संकेश्व नहीं होता है।

द विमशे व्यापातः कॅटिस्पकित्वर्थः। स. नि. २, २०. विमशे व्यापातः केंद्रिस्पवित्वर्थातः तः स. व. २, २७.

६ स प्रयोग कोइटिओं १६७ पटा।

६ दिवमहा गतिकांगठिका । त. श. वा. व. २, २८,

४ विविष्या गतिगोन्विद्या । त. स. दा. २, २८.

<sup>े</sup> बारे बन्ने करनीरवदेवाहानसाकहुन विश्व । क्वबादवनशिव्यद्धांनति-छंडानर्वह्यां विश् !

एदेहि दसहि विसेसणेहि जहासभयं विसेसिदमिच्छाइहिआदि चोर्सजीयसमामानं खेचपरुवर्ण' कस्सामा । सत्याणसत्याण बेदण-कसाय-मार्ग्णतिय-उपवादेहि मिच्छाइटी केवडि खेंचे, सब्बलोगे । इदो १ लेण सब्बजीवसासिस संखेअदिमागेणूंची सब्बो जीवपुंजी सत्याणसत्याणरासी वहदे । वेदण कसायसमुख्यादगदजीरा वि सच्यजीवरासिस्स संखेजदि-भागमेचा । मारणंतियससुम्पादगद्जीवा वि सच्वजीवरासिस्स संसेजदिमागमेचा । कृदो ? पदेसि तिष्ट् रासीणं अपपणा जीविदस्स संखेळादिभागमेचसमुग्पादकाळचादो । उपबादगमी पुण सञ्ज्ञीवरासिस्त असंखेअदिमागो', एगभमवसंचयादे। तेणेदे पंच वि समिनी ज्यांता, तदी सम्बलींग भवंति । विहारविद्यारयाणमिन्छादिष्टी केविड खेर्चे, सीगस्य

इसमानार रयस्थानके दो भेद, समुदातके साम भेद और एक उपवाद, इन दा विमा पणोंसे ययासंमय विराधताको मान्त मिरवारिष्ट आदि शीवह गुणस्थानोंके क्षेत्रका निक्चण करते हे । स्वस्थानश्यस्थान, वेश्नासमुद्रात, कथावसमुद्रात, मारणानिकसमुद्रान, और उपपादकी कापेसा मिरवारिक जीव किनने होत्रमें रहने हैं। सब लेकमें रहते हैं।

समाधान - स्ं्वि, सर्थ जीवशाचिके संस्थातमें भागने स्पृत रोड सर्थ जीवशसूर व्हणानस्वरूपान राज्ञिनप रहता है। तथा वेदनासमुद्धान और बनायसमुद्धानको प्राप्त हुव व भी सर्व जीवराश्चिक संख्यातमें भागममाण है। मारणानिकसमुद्रातका मा दूप जीव भी जीवराचिके संच्यातमें भागममाण है, पर्योक, उक्त तीन गतियोंके समुख्याण बाह जारनाथक प्रज्यापन सामनाथ के प्रयाम जा जा है। वे जीवनकालके संस्थातमें आगममाथ है। उपयुक्ताता हो। सम् जीवगारिक व्यतंक्शात्रमें है। वयोकि, तपवादराशिका संख्य पक समयमे होता है। अतः व्यवसानव्यस्थान आहि पांचा जीवराशियां भगना है, और इसीलिय व सर्व छोक्से पार जाती है।

विहोपार्थ--- भागे मिध्याद्ययादि धादह गुणस्यानाते तथा मार्गणास्यानाते आहार, वामान्यहोक, मधालेक उत्पत्नेक, तिर्वहांक और मनुष्वतेक, हन गांच प्रकारके ही अवेशा बतलाया गया है। तीनसी तेतालीस प्रवश्तप्रमाण सबैलीकका सामान्यलेख है। यहसी प्रयानवे पनशतुम्माण या बार रात्रु मोट जामतरममाण स्रोबके अधी-मधीक्षेत्र बहुत है। यकसां सेतालात धनशत या तीन राज मोट जनमतरसम्म

असंखेळदिभागे । कुट्रा ? ण नाव नगजपञ्जनगमी निरमीद, नन्य विशयमित्रास्त्रास्त्र उदयामावा । तमयज्ञनमधिसा वि मर्गेजिदिमामा चेर विरामाममभी होहि । को ममेदं बुद्धीय् पडिगहिद्रामें मन्धानं नाम । तने। बाहि मन्तरासनं विहास्त्रिक्यानं। तत्थरछणकाले। सगावामे अवहाणकालम्म मंगेरजीरमामा ति । दोर्ज लोगामनमंत्रकी मागे । इदो १ चत्तारि रुजुवाहरूर्तं जगपदं अधीले गपमार्थं होदि । तिर्ण रुज्यार्थं जगपदरमुहुलोगपमाणं होदि । एदे दोल्पि नि लोगे तमपत्रजनगामिसम् मेनेजिहिसस्य संखेज्जपण्गुत्सुणिदेण ओवट्टिदे सेठीण असंगठजिदमागी आगच्छिदि नि । मंत्रीक लाख योजन चाहे और प्रत्याम योजन ऊरे शेत्रमा मनुष्यत्रीह नहते हैं। एह लेक सामान्यके पांच भेद करनेका मामियाय यह है कि विविधन आपके वहारे गय संवस्त परिमाण समसमें भाजाये। जहाँ जिन जीवाँका क्षेत्र सर्वत्रोक बनाया जाये, यहाँ माजन होंकका प्रहण करना चाहिए। जहां दी होकिका निर्देश किया जोड कर अपोलोक भीर अप्यलीक इन दो होकोंका प्रदण करना, जहां तीन होकोंका निर्म जाय, यहां अपोलीक, ज्रस्तिक शार तियंक्तीकहा प्रश्न करना, तथा, जहां बार लेख निर्देश किया जाय, यहां मनुष्यक्षेत्रको छोड़कर दोष चारी छोक्षेत्र प्रदल करना वाहिए।

विद्वारयस्यस्यान मिरयाद्दाप्ट जीय कितने क्षेत्रमें रहते हैं। होक्के असंस्थान सागममाण क्षेत्रम रहते हैं। चूंकि जसकायिक अपर्याप्तराहित तो विदार करती नहीं पर्योक्ति, यसकायिक व्यवस्थिति । वहायामित नामकमका उदय नहीं होता है । वहायामित पर्याप्तकोके भी संख्यातर्वे मागप्रमाण राशि हो विहार करनेवाटी होती है, वर्षाकि, व मेरा है ' इसप्रकारकी बुद्धिसे स्वीकार किया गया क्षेत्र स्वस्यान है । और उसते गाहर जाईर रहनेका नाम विदारवस्त्यस्थान द्वी उस विदारवस्त्यस्थान क्षेत्रमें रहनेका काल मधने आवालन (स्वस्थानमें ) रहते के कालके संख्यातवें मागप्रमाण है, इसलिये विहारवस्वस्थात दृष्टि औय दोनों छोड़ोड़े अयोन् अपोछोड़ और ऊप्येखोड़के असंस्थातवें सागप्रमाल हेन्द्रस्य हैं । इसका कारण यह है कि अयोठोकका प्रमाण चार राजु मोटा जगपतर है और उपलोह प्रमाण तीन राजु मोटा जगप्रतर है। संख्यात घनांगुळगुणित त्रसकायिक पर्यासरातिके संख्या तर्वे माग्से इन दोनों ही छोड़ोंके माजित करने पर जगग्रेणीका असंस्थातवी आर्य रहच थाता है।

विशेषार्थ--वसकायिक पर्याप्तक जीवोंका प्रमाण शेवकी अपेक्षा स्टर्यगुरुके संद् तर्वे मानके वर्गेष्ठय मानदारसे भावित जगमतर प्रमाण सत्रका वर्षसा स्टब्स्य वर्गेष्ठय मानदारसे भावित जगमतर प्रमाण वताया गया है। इस प्रमाण जसपर्यासराशिक भी संख्यातर्वे भाग प्रमाण हो विहारकरनेवाली राशि होती है। जह वरिहर यसपर्याक्त जीवकी मध्यम अवगाहना संस्थात घनांगुल प्रमाण मानकर उससे विहास्तरे वार्छा राशिक प्रमाणको गुणित भी किया जाय, तो भी उसका जनशेणीके असंख्यातये भागमान देश्वमं रहना शिक्ष होता है, इसलिए यह शिक्ष होता है कि विहारकरनेवाली अनुसारि उपरिशेष मीर अधितोषक मसंस्थातय मागमें रहती है, क्योंकि, इन दोनों लोकीका मान

जगच्देणीके वर्गसे भी बहत अधिक है।

घणंगुरुगुणमारो क्षमन्याम्मदे ? युचरे- सर्यपहणांग्द्रपन्यपरमागद्वियतसपञ्जनरासी पहाणो इयरकम्पभूमिञ्जेबिहितो दीदाउचे। महाञ्चेानाहणो य । भोगभूमीगु युग विगालिदिया गरिय । पाँचिदिया वि तरय सुदु योजा, सहकम्माहियजीवाणं बहुवाणमसंभवादो । सर्पपहचन्यपरामागदियजीवाणमेमाहणा महाञ्चेति जाणावणसुचमेर्द

र नजानानाचारमा नरसाच जाणानगरुपन्य संो पण बारह जोयणाणि गोग्ही भव तिकोसं तः।

» मरो जीवणमेर्ग मध्ये पुण जीवणसहरसं ॥ **१२** ॥

एराओ ओगाहणाओ घणंगुरुपमाणेण कीरमाणे संखेरजाणि घणंगुरुाणि हर्षीत्, तेण संखेरज्यपंगुरुगुणगारी बिहारविद्सरुपाणासिस्स ठविदेः । सर्यपद्दणिद्दपन्यदस्स ररदे। जहप्णामाहणा वि जीवा अधिय ति चे ण, मुरुग्मसमास काऊण अर्द्ध-कदे वि संखेरज्ञपणंगुरुदंसणादो । तं कर्ष १ तस्य ताव भमरखेत्ताणपणविषाणं मण्णिस्सामा ।

हीका—असकायिक पर्यावराशिके संख्यातवें भागनमाण विद्वारवस्थरथान राशिका गुणकार संख्यात धर्मानुल है, यह कैसे जाना जाता है है

समाधान — महतमें रथवंत्रमनगेन्द्र पर्वतके परभागमें स्थित जसकायिक पर्यात भीवराशि मणान है, पर्योक्ति, यह गाँवि इतर कर्मभूमित जीवोकी क्षेत्रहा दीर्णायु और बड़ी मणवाहनावाली है। भोगभूमिमें तो विकलेट्टिय जीव नहीं होते हैं और बहांपर वेवेटिय क्षेत्र भी रवस्प होते हैं, पर्योक्ति, शुभ कर्मके उद्यक्ती अधिकतावाले बहुत जीवॉका होना नसंस्त है।

स्थयंगम पर्वतके परमागमें श्यित ओवींकी अधगादना सबसे बड़ी होती है, इस बातका तन करानेके छिये यह गाधासुच है---

दोंच नामक हारिह्य और वारह योजनकी स्वाधी अवगाहनायासा होता है। मोम्सी तामक परिट्रेस और तीन कोशकी स्वाधी अवगाहनायासा होता है। अगर मामक खुनिस्ट्रिय तीय एक योजनकी राज्यी अवगाहनायासा होता है, और महामास्य मामक पंचरिद्र आंव एक आर योजनकी राज्यी अवगाहनायास होता है। १२॥

योजनों भीर वेश्लोमें कही गर्द इन अश्माहताओं प्रनामुख्याणसे करनेपर संख्यात वर्गामुख होते हैं, इस्रिक्षिये विद्वारयस्परपानराहिका गुणकार संख्यात प्रमानुत स्थापिन क्या है।

र्मुका — स्वयंत्रभनगेन्द्र पर्यतके उस ओर जधन्य भवगाइन याले भी आव पाये गाते हैं ?

समाधान—नहीं, वर्षोंकि, जमन्य सवगादनारूप मूल सर्यात् साहि और रहन्तृष्ट न्यवादनारूप सन्त, इन दोनोंको ओड्डर साथा करने दर भी संस्थात प्रमोतृत देले जाते हैं। तहर और जमन्य सवगादनामोंको ओड्डर भाषा करने पर संस्थात प्रमोतृत केले साते हैं, तेन इसका कर्योक्टर करने तिथे उन ही दिस्य दिवोंकी स्थवगादनासोंनेस यहरे स्वार-नेके स्वतात्वे निकालनेका विभाव करते हैं। ममरखेर्त पुण जायणायामं अद्योगयामारं जायणद्यागरिशिक्तं श्रेष्ट स्टिस्टिश्यंतं श्रेष्ट स्टिस्टिश्यंतं श्रेष्ट स्टिस्टिश्यंतं श्रेष्ट स्टिस्टिश्यंतं श्रेष्ट स्टिस्टिश्यंतं स्टिश्यंतं स्ट

पक योजन तरहे, आधे योजन ऊंचे और आधे योजन हैं। परिविज्ञान विकास अमरक्षेत्रको स्वापित करके, विष्क्रंमके आधेको उत्संचये गुजा करके, जो तथ जहें हैं आयामसे गुजित करने पर पक योजनके तीन आगोंमेंसे आठ आग तथ्य आते हैं। जैर ब अमरक्षेत्रका यनकृत है।

उदाहरण—धारका कायाम १ योजन, उरक्षेप १ योजन, विलंभ १ योजनी वर्ण प्रमाण । १ योजनकी स्पूल परिचि ११ योजन । १ ÷ २ = ४, ४ × १ = १,३ × १ धारक्षेत्रका योजनीम प्रमुख्य ।

अमरक्षेत्रके योजनम् आये दुव प्रकारको धनांगुळ करनेपर हम उत्सेव प्रवेटम् आये हुत् प्रवक्तळको पन्द्रहर्षो छत्तीसके यन तीनसी बासट कराड, महतीस टाक महर हजार, छहती छत्पनेस ग्रुपित करनेपर प्रमाणधनांगळ होने दें।

उदाहरण—अमरक्षेत्रका उसीप मनयोजनमें मनकल हैं; यह उसीप मन्त्रिक मनाण मनोगुल १५६६ = १६२२८०८६५६; है×१६२२८०८६५६=१३५८९५१। मनाण मनोगुल १५६६ = १३५८६५६; है×१६२२८०८६५६=१३५८९५१।

विशेषार्थ — एक उस्तेप योजनमें सात लाल सहस्रह हजार उस्तेपवर्त्तर्श हैं। इस नियमसे एक उस्तेप प्रमाशक्त प्रनोगुल करनेपर उसमें सात लाल बहुत हैं। इस नियमसे एक उस्तेप प्रमाशक्ति होता हुए करानेपर उसमें सात लाल बहुत है की तीतवार एककर प्रस्पर गुणा करनेसे जितना लाक आधागा उतने उस्तेपवर्ताल उस्तेपयोजनसे न्याययोजन पांचसी गुणा वहा होता है, अतपन वह उसनेपतर्ताल माणवर्ताल करनेक लिये उक अंगुलोंक माणवर्ता करा माण कराने हैं। अत्यापन पहाने से प्रमाणवर्षाल करनेक लिये उक अंगुलोंक माणवर्षा करा माणवर्षाल करनेक लिये उक अंगुलोंक माणवर्षा होता है। अत्यापन पहाने हैं। अत्यापन पहाने हैं।

गोरडीका आवाम उत्सेषयोजनके चार मार्गोमेंसे तीन मार्ग प्रमाण वहुता है। विसं गोरडीका आवाम उत्सेषयोजनके चार मार्गोमेंसे तीन मार्ग प्रमाण है। विसं उत्सेषके आठवें मार्ग्यमाण है, और वाहस्य विश्कंमसे आचा है। गोर्ग्ड क्षेत्रम

र ष्ठवंतावटरामानशिकते उपाण्यमसास्य उन्हरमोगाहुनं xxx बोदणार्वं बर्धन्तं वर्षान्यं वर्

इंभद्वं बाहरूरुं । एदं तिष्णि वि परोप्परं गुणिदे उस्सेघक्षेयणपणस्य संस्रेज्जदिमागा एव्हादे । तं पष्णरहसदछवीशरूबेहि यणीक्रदेहि गुणिदे पमाणपणेगुरुणि हेति । जोपणायाम-चद्रजोषणप्रहसंदर्खेचफर्रु—

> •यासं तावःकृत्वा बदनदङोनं मुखार्थवर्गयुनम् । द्विपूर्ण चतुर्विनकं सनाभिकेऽस्मिन् गणितमादः ॥ १३ ॥

एदेण सुत्तेण आणिय सुद्दश्युस्सेहसहिदुस्सेहचदुन्मागेण गुणिय उस्सेहघणजेय-मे आणिय पुन्तुत्तगुणमारेण गुणिदे पमाणवर्णगुरुणि होति' । जोयणसहस्सापाम-

उदाहरण— गोरहीका काषाम रै योजना विष्कंत देर योजना वादस्य रूर योजना : देर = १रेट: १रेट × रूर = १रेटर कालेष मनयोजनमें गोरहीरोजका मनकत । १४ १६२३८०८६५६ = १९४४९१६ मनाण मनशुटीमें गोरहीरोजका मनकत ।

बारद योजन व्यापामयाने और चार योजन गुचयाने शंवसेत्रका होजफार— म्यासको उननी ही बार करके वर्णात प्यासका जिनना प्रमाण है उननीवार व्यासको इस जोड़नेयर जो स्थाप वार्य उसमेंसे मुकके कार्य प्रमाणको यदावर, गुसके बार्य प्रमाणको को जोड़ है। स्टामबार जो संक्या वार्य उसे जिस्सीयत बरके परवान वारका मार्य

ह्सप्रकार को तथ्य भावे, उसे दांचका सेववळ कहते हैं ॥ १३ ॥ हस पुत्रसं लाहर उस सेवकलको मुन्तसं होन असेवस्वदित असेवके बीधे मागसे तब बर्रेक उस्तेष प्रत्योजन हमर और पूर्वोंक गुजकारसे गुणित करनेवर प्रजब्द स्वित्रके मागणवांगुल हो जाते हैं।

र वर्षवर्गकरपामधियकेषे वयनकामेश्वर वस्त्रकामात्म × अस्त्रकोदमस्य जिल्लाकरमारो स्मि, तरहास्यो रित्तकेसे, निरकेसर्क पर्य १ एटे शिक्त रि परिपर जिल्ला प्रस्पापनंड वर्षे दशके संग्रीद जिल्लाका वेदालवर्गकपार्थामस्योगस्य स्विद्यपेदल स्थित । १९९४१९१६ । छै. प. प. ९९५.

२ आयासकरी प्रश्तिका प्रशासक्यालाहरा । विद्वा केरेन हरा स्थावत्तक सेचक ह । सर, १२७.

हे सर्वश्वास्त्यास्वाधिकांने जयन्यवीविद्यां बदलेदादारा ४४ शास्त्रीदाराज्यकां स्वाहरू विद्यालयो शासर या बदयदाओं ने सार्वावेशहेश । हिर्म पर्योक्षण कराविकेतिद्य योज्यस्य । इस्ट्रेस सर्वेषप्रकारिते हेस्सी जस्त्रीयोग्यास स्वाते ७६। आयाने हा स्वीति द्यारी स्वास्त्रस्याद्यास्त्रस्यादेश मारवर्ष वंश्वासाहिते प्रति ॥ सूरेण हानेच बाहर बानियेषय जीवययाणा होते ५। हम्मान्येदन

छ≆खंडागमे जीवट्राणं मम्रखेतं' पुण जोयणायामं अद्वजीयणुस्सेहं जीयणद्वपरिहिविवसंगं ठविय निर्वे

मुस्तेहगुणमायामेण गुणिदे उस्तेहजीयणस्त तिष्णि-अर्द्धमागा भवंति । ते नि कीरमाणे पण्णरहसद छचीसरुवेहि घणीकदेहि विष्णिसय-वासहिकोडीहि अर सहस्साहिय-अट्टचीसलक्षेति छस्सद्-छप्पणिहि य उस्सेघघणजीयणाणि गुन्ति घणगुलाणि हवंति । गोम्हि-आयामा उस्सेघजायणतिष्णि चउवमागो, तरहमागी निसं

पक योजन लम्बे, आधे योजन ऊंचे और आधे योजनकी परिधिप्रमाण विकास अमरहात्रको स्यापित करके, विष्कंमके आधेको उत्सेघसे गुणा करके, जो हाथ आहे है भाषामसे गुणित करनेपर एक योजनके तीन भागोंमेंसे आठ माग छथ्य आते हैं। मेर भगरक्षेत्रका धनफल है। उदाहरण-भ्रमरका आयाम १ योजन, उत्सेध ई योजन, विष्कंम ई योजनकी गरे

प्रमाण । है योजनकी स्पूल परिचि १ई योजन । है ÷ र = है ; है x है = है ;है x भ्रमरक्षेत्रका योजनॉमॅ घनफल ।

धमरक्षेत्रके योजनम् आये हुए धनफलके धनांगुल करनेपर इस उत्सेष धनगान साये हुए घनफलको पन्द्रहसी छत्तीसके घन तीनसी बासट करोड़, अवृतीसलाब, अप हजार, एइसी छत्पनसे गुणित करनेपर प्रमाणधनांगुल होते हैं।

उदाहरण—भ्रमरक्षेत्रका उत्सेघ घनयोजनमें घनफल है; एक उत्सेघ प्रवीम ममाण मनांगुल १५३६<sup>1</sup>=३६२३८७८६५६; है×३६२३८७८६५६=१३५८९५१३

ममाज धनांग्रहोंमें भ्रमरक्षेत्रका धनफट।

विशेषार्थ - एक उत्सेष योजनमें सात लाख सडसड इजार उत्सेषम् रात्र र । इस नियमसे यह उन्सेघयनयोजनके घनांगुछ करनेपर उसमें सात हारा अल्ला च्ये तीतवार रखकर परस्पर गुणा करनेस जितना रुख्य आयगा उतने उन्सेयवनांगुन्। द्रस्तेषये।जनमे प्रमाणये।जन पांचसी गुणा बहा होता है, अतएय हन उत्सेषणा ममानधर्मागुल करनेक लिये उक्त अंगुलोंक प्रमाणमें पांचसीके मनका मान

१६२६८५८६६ धर्नागुळ था जाते हैं, थार यह राश्चि १५३६ के धनप्रमाण पहनी है। गारीका सावाम उरमेघयाजनक बार मार्गोमेंसे सीन मार्ग प्रमाण है। इन्हेंपडे आटरें मागप्रमाण है, और बाहस्य विश्वमसे आधा है। गोग्ही होडा

रं वदगराचवरम्बारहिदयेने उप्याननसमस्य दन्दरमीयाहर्न xxx बोदगादारं वहर्मे के चन्द्रचरिक्षं उतिक विश्वनाद्रपूर्वतृत्रकावारिक द्वार्थद दरवेदवीयकर्ग हर्षकाद्रमा वर्षे at § 1 g animantel abnin deuaratigatiga enablenten fennette aber beg कोंदि हण्यस्कृतकों हाति । तः चंद ११४८५५८८६६ । ति. च. च. १९५,

विकलंबाई बाहल्लं । एदं तिष्मि वि परोप्परं गुणिरं उस्सेधनायनपणस्य संसेजनिहमापा आगन्छोद् । तं पष्णरहसदछचीतस्वेहि पणीबस्देहि गुणिदं पमानपर्णगुलाणि हेति । बारहनायणायाम-चद्रनोपणप्रसंपत्तेषपरतं—

> ब्यासं तावकृत्वा बदनदङोनं मुखार्थवर्गयुक्तम् । दिगुणं चनुर्विनकं सनाभिकेऽसिमन् गणिकमाहः ॥ १३ ॥

एदेण सुचेण आणिप सुदर्हीशुस्सेदशहिदुस्सेदगतुरमागेण गुणिप उस्सेदगजोप-,णाणि आणिप पुण्युचगुणगरेण गुणिदे पमाणपणेगुळाणि होति' । जोपणसदस्मापाम-

. स्टोनेके स्थि इन सोनीके परस्पर गुणित कानेपर जासेपयोजनके प्रमण संक्षानको माग स्थाप माता है। इसे पारहर्सा छत्तीसके प्रनसे गुणित करनेपर गोगशीके प्रमण्य क्षेत्रके प्रमाण-प्रमोगुल मा जाते हैं।

् उदाहरण-- मोमहीका कायाम दे योजना विष्कंग दे योजना वादण दुर योजन हे × दे = दोडा १६८ × दे = २६६ उत्सेष मनयोजनमें मोमहीशिक्या मनवज्र । १८६९ ४ ६६२३८०६६५६ = १९९४९६६ ममाण मनीकुर्तिये गोमहीशिक्या मनवज्ञ ।

बारह योजन भाषामधाले और चार योजन गुजयाले शंखशेषका शेषपाल-

व्यावको बहुनो है। बार करके सर्थान् व्यावका जिल्ला प्रमाण है बननीवार स्थानको रिक्कर जोड़नेवर जी स्थाप मार्थ बनसेव मुनके मार्थ माराको प्रशासन, मुनके मार्थ प्रशासके पूर्वको जोड़ दे। इस्त्रमार जी संभा भावे बने जिल्लाको स्थाप साम है। इस्त्रमार जो स्थाप मार्थ, उसे सीका संभक्त करते हैं हुई है

हरा सुत्रसे लाकर उस देवपालको गुलसे होन उस्तेयमंदित उस्तेयमं कीये आस्तरे गुलित वर्षेत उस्तेय पत्रयोजन लाकर भीर पूर्वीक गुणकारसे गुलित करनेवर प्रशब्द अव्यक्तिके प्रमाणप्रशीपुत हो जाते हैं।

् । वर्षप्रकारमाग्येवके व्यापकांत् वश्वतांतास्य २० वस्त्रेवरस्य निष्यवस्थारे भूगायो, स्ट्रासो रिस्को, रिस्कार मार्ड । एरं शिल हि वांचा एक व्यवस्थाने वर्षस्य के गोल भूगाय वस्त्रा हैतावर्शकारकार्यकार्य हिंदियांत्रा संति । १९४५(१६) त. ५ ९ ९६. १ वाणावर्ष हारतीया हारतीया स्वापन्यस्थारमा । विद्या स्वेत १८ वस्परस्य केलाव इ

्ति क्षेत्रक वेद्यातकावादिको च्याप्ति देव क्षेत्रक व्यक्तिक क्षेत्रक विश्व क्षेत्रक विश्व क्षेत्रक व्यक्तिक वि विद्यालय क्ष्यानि क्ष्या व्यवस्थित व्यक्तिक विद्यालय व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक विश्व विद्यालय विद्यालय विद्यालय व्यक्तिक व्यक्तिक विद्यालय ममरखेतं' पुण जीयणायामं अद्वजीयणुरसेहं जीयणद्वपरिहितिनसंभं छन्ति मुस्सहगुणमायामेण गुणिदे उस्सहजायणस्स तिष्णि-अर्द्धमागा भवति । ते कीरमाण पप्णरहसद-छचीसरुवेहि घणीकदेहि तिप्णिसय-वासिंहकोडीह कार् सहस्ताहिय-अडुचीसख्वस्वेहि छरसद्-छप्पणिहि य उरसेघघणजीयनानि गुनिः 🗯 घणगुलाण हवंति । गोम्हि-आयामा उस्तेघजायणतिष्ण चउन्मागा, तरहुमागो सिकं

पक योजन लम्बे, आधे योजन ऊंचे और आधे योजनकी परिधिप्रमाण विकास अमरक्षेत्रको स्थापित करके, विष्क्रमके आधेको उत्सेचसे गुणा करके, जो हांच के आयामसे गुणित करनेपर एक योजनके तीन मागोंमेंसे आठ माग छार्च आते हैं। और ब धमरक्षेत्रका घनफल है।

उदाहरण—अमरका आयाम १ योजन, उत्सेध ई योजन, विष्कंम ई योजनकार्ता प्रमाण । रे योजनकी स्यूछ परिधि १२ योजन । है  $\div$  २ = है  $; \frac{3}{5} \times \frac{1}{5} = \frac{3}{5}; \frac{3}{5} \times \frac{1}{5}$ भ्रमरक्षेत्रका योजनॉमें घनफल ।

धमरक्षेत्रके योजनमें आये हुए धनफलके घनांगुल करनेपर इस उत्सेच धन्यों साये हुए मनसब्दों पन्ट्रहवी छत्तीसके यन तीनसी बासठ करोड़, अहतीस हाब, अप इजार, छइसौ छप्पनसे गुणित करनेपर प्रमाणघनांगुल होते हैं।

उदाहरण—अमरक्षेत्रका उत्सेध धनयोजनमें धनफल हैं; एक उत्सेष धनयोजन प्रमाण मनांगुळ १५३६<sup>1</sup>=३६२३८७८६५६; हे×३६२३८७८६५६=१३५८९११। प्रमाण धर्नागुळॉमें भ्रमरक्षेत्रका घनफल।

विशेषार्थ - एक उत्सेघ योजनमें सात लाख बडसठ हजार उत्सेघस्त्यंपुड़ी र । रस नियमसे एक उत्सेघणनयोजनके प्रनांगुल करनेपर उसमें सात लाल क्रान्स है। रस नियमसे एक उत्सेघणनयोजनके प्रनांगुल करनेपर उसमें सात लाल क्रान्स है। को तीनवार रसकर परस्पर गुणा करनेस जितना तथा आयमा उतने उत्सेषप्रनां न उत्तिप्रयोजनि अमाण्याजन पांचसी गुणा बड़ा होता है, अतप्य इन उत्तिप्रयोजनी अमाण्याजन पांचसी गुणा बड़ा होता है, अतप्य इन ममाजपनांगुल करनेक लिये उत्त अंगुलोंके प्रमाणमें वांचसीक धनका भग है?

३६२३८७८६५६ घनांगुछ मा जाते हैं, भीर यह शशि १५३६ के घनप्रमाण पहती हैं। गारहीत भाषाम उत्सेषयोजनेक चार मार्गोमेंसे सीन मार्ग प्रमाण है। हिंदी उत्तिपदे भारवें मागप्रमाण है, और यादस्य विष्क्रमते आपा है। गोग्ही होता

१ सरवाराष्ट्रवस्मानद्विपरेते उत्पारममगरम उत्परमोगार्गं xxx जीवनारावं इत्र्रेती भारमद्भविदिशिवधं ट्रांच विश्वमद्भयुर्वद्भवादाव द्रव्यस्थातात्त्रं xxx बोद्यावा कर्यः । भारमद्भविद्विद्विधं ट्रांच विश्वमद्भयुर्वद्भवादाव व्यवद् दरमेहबायम् विकासायि । चर है 1 ते प्रधायकद्वा बोम्बार एक्सप्रथशिकशाश्चि व्यवप्रदिवस्य विकासमान क्वेदि क्षाण्टबर्वहनामि इस्ति । तः चेद ११५८९५४४५६ । ति. यः यः १९५,

बद्धं बाहर्लं । एरे तिष्णि वि परोप्परं गुणिदे उस्तेपचोपणयणस्य संखेज्बदिमागा छदि । तं पष्णरहसदछत्तीतस्वेहि घणीकदेहि गुणिदे पमाणपणेगुळाणि हेति । तपणापाम-चदुजोपणग्रहसंखखेत्तरुळं—

> स्यासं ताबक्तवा बदनदृश्चेनं मुखार्थवर्ययुतम् । द्विगुणं चतुर्विभक्तं सनामिक्षेत्ररिमन् गणितमाहः ॥ १३ ग्र

एदेण सुचेण आणिप सुर्ह्शणुस्तेहसहिदुस्तेहचुरुमाधेण गुणिय उस्तेह्घणज्ञेय-आणिय पुट्युचगुणगरेण गुणिदे पमाणघणगुरुाणि होति' । जोयणग्रहस्मायाम-

िये इन शीनोंके परस्पर गुणित कानेवर उत्तेषयोजनके घनका संस्थानकां भाग माता है। इसे पन्द्रहर्शा छत्तीसके घनसे गुणित कानेवर गोग्टीके घनकप क्षेत्रके प्रमाण-छ मा जाते हैं।

उदाहरण— गोर्ग्डाका भाषास है योजना विष्कंत हुँ स्थोजना बादस्य हुँ सोजना हुँ = रहेट; रहेट × हुँ = टूरैंर्र्ट करलेख सनयोजनमें गोर्ग्डारोजका सनरात । × १६२१८७८६५६ = ११९४९९६ समाण सर्नागुटोंने गोर्ग्डारोजका सनरात ।

बारद योजन भाषामधाले और खार योजन मुख्याले शंखक्षेत्रका क्षेत्रक्र-

ध्याराको उतनी द्वा बार करके सर्धात् प्यारका जितना प्रमाण दे उननीवार प्यानको र जोड़नेपर जो रूप्प साथे उतमेत सुनने साथे प्रमाणको घटाकर, मुख्ये साथे प्रप्राणके जोड़ दे। १नग्रकार जो स्वेदण साथे उसे डिट्डिनित करके परधान् वास्या प्रान स्वम्बार जो रूप्प साथे, उसे संख्या सेवज़ल करते हैं है है है ।

्रस्त सृत्रसे लाहर उस क्षेत्रफलको शुल्तके शीन उस्तेमस्तित असेपके बीचे भागने १ वर्षक उस्तिम प्रत्योजन लाहर और पूर्वोतः गुणवारसे गुणिन वरनेवर घटकप विकेशमाणप्रतीमृत श्री जाते हैं।

र वर्षप्रकारमाण्डिपकेचे व्यवस्थानित् व्यवस्थानाम् ४० वर्षम्भावन्तरः निष्युक्रमार्थः १, व्यवस्थानित्रक्षेत्रे, रिस्कोद्धं यहवै । एरे विशेषः विवयन्त्रे व्यवस्थान्त्रे वर्षेत्रके श्रीत् व्यवस्थानेत्रवर्षम्भावस्थानित्रकेचे विरिद्यकंत्रस्य स्थितः स्वरूपराप्ता । ति. य. व. य.स. १ सामास्यते सुद्यक्षीमा इरासमञ्जयसम्मार्थः । विद्या स्थेतः स्वरूपराधः स्थानस्थान

च आशासदी मुद्देत्यामा हृदेशसम्बद्धन्य । । न्याना न्यान हर नकान्याना कस्त्रक है , देवज, } सुद्देशस्वरुद्दाराष्ट्रिकेले उपालन्यस्थित्यन बद्दानीत्यारः > > व्यानवेदकायाद-स्वात्र्यार्थन्यार्थन

 पंचमदुस्तेह-तदद्वित्यार-महामञ्ज्यसे पिट्टेंसंसेडजाणि पमाणपणंगुलाणि होति। स्प पर्गगुलस्त संसेडजिदमामं पिस्तिवय अद्वेण छिण्णे वि संसेडजाणि पमाणपंचा होति ति सद्दे। किं च विहारविद्यसत्याणे ण तिरिक्ससेचस्स पमाणमं, किंतु रेस्केचले पर्रगुलस्त संसेडजिद्यागमेचसुदेण संसेडजजीयणसहस्सं विहरमाणदेवीगाहणाएं केंन्य पर्गगुलसुवस्तारो। वेण संसेडजवपणंगुलीगाहणाएं गुणेयच्यसिदि । असंसेडजीयणी

उदाहरण- दांचक्षेत्रका भाषाम १२ योजनः मुख ४ योजन ।

 $\{4 \times 5 = 564; 565 + \frac{1}{6} = 64; 565 + (\frac{1}{6}), = 685 + 8 = \frac{1}{6}$ 

१२ - ४ = ८; १२ + ८ = २०; २० + ४ = ५; ७३ ४ ० = ११ उक्तेप प्रविद्यासीम संगतिका प्रवक्तः । ३६५ × ३६२३८७८६५६ = १३२२४५७४४ स्थान पर्योग्रामें संगतिका प्रवक्तः ।

पक दबार योजन भाषाम, पांचसी योजन उत्सेष और उत्सेषके मधे कर देने योजन विकारयांचे मदामत्त्यका क्षेत्र मी घनफळकप करनेवर संस्थान प्रमासन युन होना है।

देशहरण—महामरश्यका भाषाम १००० योजना उस्तेष ५०० योजना विश्वं ५४ ( १००० ४ ५०० (१००००) (१०००० ४२५० = १२५००००० योजनों प्रवृत्त । ११५००० ४ ११११८४८५१ = ४५१९८४८१५००००००० समाण प्रतीसलींने मह सस्यका प्रवृत्त

हमयबार बाहर समाजाहनारपरी मार्थ हुए हत प्रमाणावानाता मह मारयबा पर्याप रोकरण हे मार्यमाणा मार्थ स्थापता मार्थ हुए हत प्रमाणपानातार्थे वार्था रोकरण हे मार्यमाणा मार्थ स्थापताची प्रशिक्त करके जो बाह हो हो आपेने वि बहुवहरू भी संस्थाप प्रमाण प्रमाणिक हो रहते हैं, यह सिख हुमा।

इवर्ग बात यह दे कि विदायमान्य स्थान हुआ। बर्ग है, बिग्नु देवसेनको ही ज्यानना है, वर्षोक्ष स्थान असानना (अध्यान कुक्क ने करोड़ शिक्स और उस्तेषकारी विदार करनाले हेंगों के संस्थान इस्ति है। कुक्क ने करोड़ शिक्स और उस्तेषकारी विदार करनाले हेंगों के संस्थान इस्ति है। किस्ता करणहताने सन्दारकारी संस्थान यनांगुल यांग जाते है, इसलिय विदारकार्य करणक करणहताने सन्दारकार करणाहनारी गुणिन करना चादिये।

तिर्णिताच्यात् प्रवश्च प्रवृत्ति । जुनितं प्रवश्चिति विभिन्नवासम् । विति दृष्टेणः । वृत्तं वस्तासम्बद्धे वृत्तं त्यावस्मात्मा स्वतः वृत्ति । जनवन्त्रावस्यात्मे । विशेषे । स्वतः वस्त्यवस्यवस्यात्मात्मवस्यवस्याति । वि व्यापनात्मः वृत्तात्मे प्रवृत्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति ।

त्र वर्षात्र प्रताप गरिकार के व्यवस्थानिकार करें वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात् वर्षात्र प्रताप वर्षात्र वर्षात्य वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्यात्र वर्षात्र वर्यात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र व बहुरता वि देवा अध्यि नि चे ण, तेर्ति देवाणममंखेडजदिमागचेण पृहाणचामावादो । तं हो गट्टरे १ 'तिरियलोगस्स मैखेज्बहिभाए' ति बम्खाणहो । तिरियलोगस्य संवेजीहै भागनं कर्ष ? तिरियलोगो णाम जीवणलक्षत्रसत्तमानमेनम् विश्वत्रहल्लाकार्यस्योगे । नायप पण कामान्याता नात भारत्यायस्य वात्राप्यस्य वात्राप्यस्य वात्राप्यस्य वात्राप्यस्य वात्राप्यस्य वात्राप्यस् तं पुरिवस्त्रविद्यास्य वित्रापास्य विष्णे विदियस्य स्थित ण अञ्चलकारणपुराचारव्यवपाराज्य व्यवस्थान अञ्चल । प्राप्तापाराज्य । प्रसिद्धेज्ञदिमागे चि तुर्च । अहृद्दअक्षेत्रादो विहारयदिसत्थाणजीवस्त्रवसमेरीक्ष्रमुणं । डुरो १

र्शका - सर्वच्यात योजनप्रमाण विद्वार करनेवाले भी देव होते हैं। समाधान- नहीं, क्योंक, असंब्यात योजनवमाण विशाद करनवान देव सर्व देवराशिके असंख्यात्वे भागमात्र है, धतः उनकी बर्दावर प्रधानता नहीं है।

रीका - यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-सिच्यादारे विदारवास्थान राति 'तिर्थन्तोदके शंक्यानर्थे सागववाज

होत्रमं बहती है ? इसमकारके म्याबयानसे उक्त बात जानी जाती है। र्श्वका-भिरवाशक्ष विद्वारवास्थातम् शातिके रहवेका क्षेत्र तिर्थरशेवके संस्थानवे

समाधान — एक छात्र योजनमें सातका भाग देनेसे जितने गृह्यपुत छच्च आपे त्रमाथान प्रकारत पावनम् सावका साथ प्राप्त १००० रहण्यास्य होत्रसे ताममाण बहरपक्ष जामसरमाण निर्माला है। इस पूर्वाकः विहारपायस्यामस्य श्रेत्रसे प्राप्तित वस्तेपर संभवात रूप छत्त्रभाव है हर्सा हिंद विवेश्लोक संवयात्वे सामग्रमाण शेवसे

मिष्याहरि विहारयास्यस्थातराशि रहती है, येला वहा है।

वित्रेवार्ध — तिर्वाटोक पूर्वनाधाम यक रातु बीका, उत्तर-वृक्षिण सान रातु छन्ता भीर एक लाख योजन क्रवा है। इसे जगमतरमप्ते बरनेके लिये एक लाल योजनमें सरमब मान देना चादिय, वर्षोक, तिर्थन्तिक भी उत्तर दक्षिण सात राह तो है है, दिन्तु पूर्व प्रीम कार पा आहम, प्याका त्वालाम मा उठर वृह्मण लाव रातु ता ह हा प्यतु पूर्व पाने को यह रातुमान है उसे सात रातुमाण मनस्वित बरवेक दिये उसेयमें सात्रदा म हेनेसे उस्सेघ यक हाल योजनका सातयां भाग रह जाता है, और पूर्व नाममें नात क प्रमाण क्षेत्र हो जाता है। इसमकार यक लाल योजनक सात्रयं आगमें जितने स्वयंगुण व ताप्रमाण पाइस्परूप कामतरममाण निवालोक था जाता है। एक बोजनमें उद्दर्श कराया होते हैं, इसलिये यक लाल योजनके सातमें भागमें १०६०१४६८५३६ सुक्यंगुल ह अत्रवय रे०९७१४२८५७१ । स्टब्स्युल्यमाण जगवतर नियंत्राहः जातना व्यादिय । स्वतान संस्थातय भागवा जगहतरमें भाग बनंत बत्तपर्धा तारिवा ध्रमाण आना है, धीर स्वचात यक भागममाण विद्वारयनवश्यानशति है । विद्वारयनवश्यानशतिमें एक ब्रे माध्यम अथगारमा संस्थात धनांगुल है तो उपमुंत शांदावा (कतन क्षत्र होता, इस भैरासिक बरमेवर विशास क्यान्यानरासिका शेष ६, ब्रांत सच्यान गुर्वेश क्रमण

विद्वारयस्थानाम अधिका क्षेत्र कृति श्रीयस असल्यानगुष्टा है बदराव का जाता दें जो निर्धाहों है संक्यानय भागवमाण है।

पंचसदुस्सेह-चदद्वित्यार-महामच्छलेचं दिट्टमेखेडजाणि पमाणवर्णगुढाणि होति । 🕫 धर्गगुरुस्स मेखेरजदिमागं पविखिवय अद्भेण छिण्णे वि संखेरजाणि पमावस्त्रकृति होति चि सिद्धं। किं च विद्यारविदमत्याणे ण तिरिक्ससे चमाणर्च, किंतु देशके करें पद्रंगुलस्त संघेडवदिमागमेचमुद्रेण संखेडवजीयणसहस्त विहरमाणदेवीगाहमार अनेत पंगगुरुतुवरमादो । तेप संखेजवपगुरोगाहपाए गुणेयव्यमिदि । अमंतुत्ववेषका

उदाहरण — शंसक्षेत्रका मायाम १२ योजनः मुख ४ योजन ।  $\xi \in X \ \xi \xi = \xi g g; \ \xi g g - \xi = \xi g \xi; \ \xi g \xi + (\xi)' = \xi g \xi + g = \xi \xi \xi$ 

१४६ x २ = २९२; २९२ ÷ ४ = ७३;

\$5 - 8 = c! \$5 + C = 50! 50 ÷ 8 = d! a5 x a = \$(i) उस्तेष प्रन्योजनीम दांग्संत्रका प्रनफ्त । ३६५ × ३६२३८७८६५६ = १३६२३१५०४१ प्रमान प्रनागरीमें शंसक्षेत्रका प्रनफल ।

पक इजार योजन आयाम, पांचली योजन उत्तेघ शीर उत्तेघडे मारे वर्ष दारंभी योजन विस्तारवाले महामन्स्यका क्षेत्र मी यनफलकप करनेपर संस्वात प्रवास

गड रोता है।

उदाहरण-महामाध्यका मायाम १००० योजना उत्सेच ५०० योजना विष्टम रे १००० x ५०० = ५०००००। ५००००० x २५० = १२५००००० योजनीम यनप्र । १२५५०० × रेरिनेट अटर्र = ४५२९८४८३२०००००००० प्रमाण चर्नागुरीम मह मास्यवा स्वास्त्र

द्भनद्वहार उत्हर भवगाइनाव्यसे भावे हुए इन प्रमाणधर्नागुरीम स्व संक्यात्वे मार्यमान अधन्य भवगाहनाको प्रसिन्त करके जो आह हो उसे मार्थ क्रकेपर भी संस्थान प्रमास पर्नागुरु ही रहते हैं, यह मिद्र हुआ।

दूसरी बात यह दे कि विदारवास्त्रातमें तिर्धेशोके क्षेत्रकी प्रमासता (अपन्य) वर्षा है, हिन्तु देवसवर्षा ही प्रधानना है, वर्धोदि, प्रतर्शमुनके संस्थानक प्रकान मुक्कर ने मधान विश्वंस मीर उन्तेषक्यसे विदार करनेवाले देवाँकी संस्थान हुन्तर है प्रभाव भवताहताने प्रशास्त्रपंत संस्थात प्रशास वरत्यान देवा संस्थात है। समाच भवताहताने प्रशास्त्रपंत संस्थात प्रशास वात देत स्मित्य विशासकान राशियो संस्थात धर्माग्रस्य स्थमाहतान गुणित करता चाहिये।

हेरफॅन्ट्विकर वन्त्र नवन्तितः कृति कार्यानग्रंति श्रीसनकारम्यो सेनि १४४ । वर्षे कार्यान्त्रते वर्षे क्षत्रकारकार्यकारमञ्जूष्ट वरं प्रकारकारीन्त्रान्त्र राज्यन्त्रात्रात्र क्षित्रवार्यात्री होते १६५० हर्षे वर्षाः वरं प्रकारकारीन्त्रान्त्य राज्यन्त्रात्रात्र क्षित्रेः स्थाप्तरकारवार्यात्रात्रात्र्यार्थवर्षे urgele fie i eine er eine genentere ich fin fich

े नक्यां प्रशासक द्वित । शासनामुन्दिय स्थापन स्थापन स्थापन अर्थे स्थापन अर्थे स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन 

विद्रांत वि देवा अस्य सि चे ण, तेलि देवाजममेरोज्जिरिमामचेण पराणवामायादी । त द्री चरदेरे हैं 'तिस्विलागस्म मंग्रेडबिनाग्' सि वस्साणादी । तिस्विलागस्य संवेजिति १, १, २. ] ागर्ग कर्ष ? तिरियलेजो वाम जीयगलक्सात्तवमागमेत्रवायश्रीतुरुवाहल्लनापदरमेतो । तं पुल्यिन्नविहारयदिमस्याणश्चेत्रणोबहिदे संखेज्जरुवाणि सन्भति । तेण विधियसोगस्स उ राज्यन्यास्य प्राप्त । अहत् कर्षेषादो विद्वारविद्याणकीवरोचममेलेकपुर्व । छुरोरी संगेद्धविद्यामि वि पूर्व । अहत् कर्षेषादो विद्वारविद्यारथाणकीवरोचममेलेकपुर्व । छुरोरी

र्शका - असंस्थात योजनप्रमाण थिद्वार करनेवाले भी देव दोते हैं? समाधान - नहीं, वर्धों के, धतंबवात योजनप्रमाण विहार करवेवाले देव सर्व हेबगातिक सर्वक्यातव आगमात्र दें, झतः उत्तकी यहाँ रह प्रधानता नहीं है !

समाधान-सिस्वादृष्टि विदारवास्यस्थान राशि 'तिर्वस्तोद्दके संख्यातर्थे भागवमाण रोका - यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ! शेयम रहती है ' इसमकारके व्यावयानसे उक्त बात जानी जाती है।

द्यंडा--भिन्यारावि विद्यारपात्त्वत्थान शादिके रहनेका क्षेत्र तियाहोकके संख्यातवे

समाधान — एक लाख योजनम् सातका माग देनेले जितने स्टबंगुल लब्ब आर्य ताममाण बहुस्यक्ष जममतस्यमाण तिथेम्हाक है। इसे पूर्वोक विदारपास्यस्थानकर क्षेत्रसे मानित करनेपर संभवात रूप सम्बन्धात है, इसोलिय विवेशलोक संस्थातय मागममान सेयमें

मिथ्यादारि विदारयास्यस्थातराहि रहती है, चेला कहा है।

विश्वेवार्ष — तिर्वग्लोक पूर्वग्रीधम यक रातु चीडा, उत्तर-विश्वण सात राजु लग्बा और एक लाख योजन ऊंचा है। इसे जगनसरुपसे बरनेके लिये एक लाख योजनमें सातक माग देना चादिय, वर्षोक, तिथेन्लोक मी उत्तर दक्षिण सात राहु तो है ही, किन्तु पूर्य प्रीम को दक शहुमात्र है उसे सात शहुममाण प्रवस्तित करनेके लिये उस्तेयमें सातका भा देनेसे उसिप यक हाल गोजनका सात्यां माग रह जाता है। और पूर्व पश्चिममें सात का प्रमाण शेत्र हो जाता है। इसप्रकार यक साथ योजनक सावयं भागमें जितने सूच्येगुङ ह तत्त्रमामा बाहस्यरूप समवतस्ममाण तियालोक मा जाता है। यक योजनमें ७६८००० सूच्या होते हैं, इसलिये यक लाल योजनके सातमें भागमें १०९७१४२८५७१ई सूच्यंगुल हो सतपय १०९७। ४८८५७१ े स्टबंगुल्प्रमाण जगवतर नियंग्लोक जानना चाहिये । सतरांगु संस्थातय भागवा जगधतस्म भाग देवस अस्त्यवीत्तरादिका प्रमाण भागा है, भीर संवयात यक भागममाण विद्वारयनयस्थानस्थितं है। विद्वारयनयस्थानस्थिमें यक अ मध्यम अधनाहना संस्थात धनांगुल है तो उपर्युक्त सार्वाचा वितना हेन्त्र होगा, इस भैराविष करमेवर विशायास्यक्यातराविका क्षेत्र संस्थात सच्चेगुळ गुर्वित जगमनर

. व मार्थित होती हैं हिपिस असंख्यातगुणा है, वयोरिक, मा जाता है जो तिर्थेक्षीकके संबंधातय भागप्रमाण है।

अड्ढाइज्जम्मि संस्वेजपमाणघर्णगुरुदंसणादो I

वेउव्यियसमुग्यादगद्मिच्छाइट्टी केवडि खेत्ते, होगम्स अमेलेअदि मागे, देहें लोगाणमसंखेआदिभागे, तिरियलोगस्य संयेजनदिमागे, अट्टाइन्जादो असंसेन्जगुत्रे। एव पुष्यं व ओवट्टणा कायच्या। णवरि वेउन्यियसमुग्यादस्स जोदिमियसभी सन्दर्दस्त्री पहाणा, तेण बोहसियदेवाणं संखेज्बदिमागस्स संखेज्बधर्गगुलागि गुणगारा खेयली। कुदो १ संखेज्जनोयणसहरमं विउच्यमागदेवाणमुबलंमादो । असंखेज्जनोयणाणि किं भिय विजन्नता देवा अरिथ चि चे ण, तेसि देवाणमसंखेजनिंदमाग्वता । सगोहिस्तिमेर्च सब्धे देवा विअव्यंति चि के वि मणिति, तं ण घडदे, 'तिरियहोगस संखेज्जदिमागे ' चि वक्खाणादो । मिच्छाइद्विस्स सेस-तिष्णि विसेसणाणि ण संमर्वतः तकारणसंजमादिगुणाणममात्रादो । मिच्छाइद्विस्स सत्याणादी सत्त त्रिसेसा सुत्तेष अगुहिद्वा

द्वीपमें संख्यात प्रमाण घनांगुल ही देखे जाते हैं।

पैकिषिकसमुदातको प्राप्त हुए मिरपादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं! सर्थ होक्के मन स्यात्वें मागप्रमाण क्षेत्रमें, कर्ध्वहोक और अघोलोकके असंस्थात्वें मागप्रमाण क्षेत्रमें, हिर्य म्होकके संस्थातचे मागप्रमाण क्षेत्रमें तथा बढ़ाई ही वसं पर अपवर्षना पहलेक समान कर लेना चाहिये। हतनी विदोधता है कि वैक्रिविकसमुक्रतन सात प्रमुप उत्सेष्ठप स्थाहिनासे युक्त ज्योतिष्टदेवरादि प्रधान है , सिनिये ज्योतिष्ट देपोंके संख्यातये मागप्रमाण येकिथिकसमुद्धातपुक्त राशिका क्षेत्र छानेके हिंगे संख्यात पनांगुल गुणकार स्थापित करना चादिये, क्योंकि, संख्यात हजार योजनप्रमाण विकिया करनेवारे देव पाये जाते हैं।

र्शका — मसंद्यात योजन क्षेत्रको रोककर विक्रिया करनेवाले भी देव पाये जाने हैं!

समाधान-नहीं, क्योंकि, असंस्थात योजनवमाण विकिया करनेवाले देव सामाय देशों समध्यावर्ष मागमात्र ही होते हैं। दितने ही बाचार्य ऐसा कहते हैं कि समी देव भपने अयधिकानके क्षेत्रप्रमाण विकिया करते हैं । परन्तु उनका यह कचन घटित नहीं हैति है, वर्षोंक, विकिवेदसमुदातको प्राप्त हुई राशि 'सिथेग्छोकके संर्यातवे प्राप्तप्रमाण होन्स रहती हैं ' वेमा स्थास्थान देखा जाना है।

मिथ्यार हे जीवर।शिके शेय तीन विशेषण अर्थान् भादारकसञ्चात, तैजससमुद्रत भार देवितसमुदात संमय नहीं हैं, पर्याक्ति, इनके कारणमून संवमादि गुणाँका मिष्णाहिक सदाव है।

र्वेडा - स्थरपानादि सान विशेषण स्थमें नहीं कहे गये हैं, किर मी वे निर्णाही

<sup>े</sup> र निकृतिय सोर्प्तरूपे मालाभ्याति तह विद्वारता। पृथ्वे अमूरदहूरी मायगदेश दश दिवना 1, 161.

किया कि करं जन्मे हैं आग्नीयपरंतागदुवदेगारो। किंच 'मिच्छादिई।' इदि सामण्यययेग ग्दे मन वि मिन्छादिविसेमा ख्विदा चेत्र, सदस्यदिरिसमिन्छाद्देशिम-भावादा। निम चन्नारि वि लेगा सुनेन यूचिदा चेत्र, ससन्दुण्हं लेगाणं लेगपुधभूदाण-मणुबलेमादा। नम्हा सुन्नवंद्वयेदेदं वनगाणमिदि।

सासणसम्माइंडिणहुडि जान अजोगिकेविल ति केविड खेते, लोगस्स असंखेळाटिभाए ॥ ३ ॥

प्रस्म गुषस्म अत्यं भागस्मामे। बदि वि सच्याजङ्गाणां पहुडिसहस्स पम्पायास्स्म संग्रहणंभेगवे अत्यि, हो वि सज्ञेगियुणहुर्ण णो गण्डि । कुरो ? पुरो सण्याणायायायुष्तदंशादो । सायायास्मातिङ्की समामिन्छातिङ्की असंवदसम्मातिङ्की सत्याणास्त्याण-विहासविहासयाण-वेदण-कसार-वेडिव्यनस्प्रायादपरिणदा केवाडि रोजे, रुगमस्म असंतोक्तिसमाने, विण्डं रुगाणामसरीज्यिकारिभागे, अहुद्वजादो असंवेज्याजे

जीयके पाये जाते हैं. यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — मिडवाटरि जीवने स्वस्थान यादि सात विशेषण पाये जाते हैं, यह बात मार्चार्वपरंतराक्षे भावे हुए उपनेशक्षे जानी जाती है ।

दूसरी यह बात है कि सुत्रमें भावे हुए 'मिप्याराष्टि' इस सामान्य यवनले स्वस्थान भादि सात विदेशका भी मिस्याराष्ट्रिक विदेश हैं, यह स्वित हो हो जाना है, वयोंकि, इनके स्वेद्रकर मिस्याराष्ट्र जीव नहीं पाये जाते हैं। इसीन्द्रार पनलोकके संतिरिक्त उत्त्येत्रोक, भयोतीक, तियंग्लोक भीर स्वार हॉवनम्बरची ठीक, ये बार ठीक भी सुत्रसे सुधित हो ही जते हैं, क्योंकि, चनलोकत पूच्यमूत उपर्युक्त देश कार होक गई वाये जाते हैं। इसलिये स्वस्थानस्वस्थानसाही आदिवा प्याच्यान राज्ये संवद हो है।

सासादनसम्बर्गाट गुणस्थानते लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानक प्रत्येक गुणस्थानके बीव कितने धेयमें रहते हैं ? लोकके अर्धस्थाववें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं॥ २॥

शब इस स्वका अर्थ कहते हैं। वस्ति व्यवस्थावाची अभृति दाल्के बरुसे सभी गुजरशानिका संत्रह संस्व है, हो भी वहांवर सर्वातिकरही गुजरशानका प्रदेश नहीं करना साहिए, पर्वित, भागे बहा आनेवाहा इसका वायक स्व बेला जाता है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारयस्वस्थान, पेरनासमुद्धान, यमावसमुद्धान और चैकियिकसमुद्धानकरूपे पाति हुय सावादननस्वस्थान, सम्यामियणहरि भीर अधेयतसम्बन्धरि जीव किन्ते शेषसे रहते हैं। शेषके असंस्थानमें सावसमाण शेषसे, उत्तर्यकोक साहि तीन शेखोंके असंस्थानस्

१ सामादनसम्पाद्वसादानामयांत्रमानानेक्यानानां कोवरवासंक्षेत्रमानाः । छ तिः १,८. सामादनाइ सध्ये छोष्ट्स अलख्यान्य मानान्य । पष्टसः २,९६०

ः क्षेत्रमें और अवाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

शंका — यह कैसे १

समाधान—इन तीन गुणस्थानोमें सीधमें और पेशानकरासंबन्धी देवाति प्रवत है। उनको अवगाहना सात हाथ उत्सेषकर है, और अंगुळकी व्यवशा गणना करनेरर पर

अड़सड अंगुलबमाण है। इसके दशवें भागप्रमाण उस अवगाहनाका विश्क्रम है। यंका — यहांवर उत्सेघके दशवें भागप्रमाण विश्क्रम क्यों लिया है!

समाधान — चुंकि देव, मनुष्य और नारक्षियोंका उत्सेख दश, नी और आठ तार प्रमाणसे कहा गया है, इसल्यि यहांवर उत्सेखके दशवें मागप्रमाण विरक्षम दिया है।

विरोपार्थ — यह स्वस्थानादि पद्वरिष्णत सासादनादि तीन गुणस्यानवर्ती असी सद्वर्ग स्वीपार्थ — यह स्वस्थानादि पद्वर्गरेषणत सासादनादि तीन गुणस्यानवर्ती असी सद्वर्ग स्वीपार्थ स्वस्थानातुष्णे क्षेत्रमें रहनेकी उपपार्ति पत्वर्णा गर्दे है। महतमें सीपार्थयों विरासित मयान है। दन स्वर्गोके एक देवशी अयगादना ७ हाथ = १६८ उत्सेपमंगुल कं तथा स्वके द्वामांत विस्कानस्य होती है। तद्वसार एक देवशी अयगादनाका प्रकार स्वस्थान स्वात है—

उत्सेच १६८ बंगुल, विष्कम्म <mark>१६८</mark> बंगुल ।

 $\left(\frac{18c}{10} \div \frac{1}{2}\right)$  × २ × १६८ एक देवकी अवगाहनाके उत्सेध घनांगुल ।

णविर वेदण-कसायखेवाणि णविह गुमेयच्याणि, सरीरतितृणविक्यंमादा । विदार-वेद्रिव्ययदाणं संविद्याणि पर्णगुलाणि । अपवा वेदणादिणा सरीरितृण्यसपुरमादं करेंना सहु घोवा वि मन्द्रिमगुणगारी णवदस्वयमाणो होदि चि । एट्रेहि रुगेर्प मागे हिदे रुद्धे विरत्येद्व एकेक्टरत रुव्यवद्वां समयवंदरं वादण दिष्णे एगमानो एट्रेहि रुद्धवेचं होदि । उड्डलोगयमाणं विष्णा रुव्यवद्वां अगयदरं । एत्य वि ओवड्रणा पुन्तं व बादस्या । अस्ति संगयमाणं चवारि रुद्धवाह्नर्कं जगयदरं । तथा चेत्र ओवड्रणा । तिरियलंगयमाणं जीयणत्वररः सचमानावाहन्तं जगयदरं । एत्य वि ओवड्रणा पुन्तं व कायस्या । एत्य विरियलंगयमाणं आण्डिजमाणे विष्रंसमायामिहि एगरन्यमाणमेव निर्मं रोगालम-

यह शांत प्रशासनामुख्ये संस्थासर्थे धाम हूरि । इते सीमर्थ देशाव स्थापिश सास्त-दमादि शीन गुमस्यानवर्षी शतियोति गुमा करनेपर सीमी गुमस्यानीके स्वस्थानादि वर्षीने श्रेमीका प्रशास भागति, जो सीनी होस्त्रीने असंस्थानये धाम तथा अन्तर्र हीयने असंस्थान-गुमा होता है।

संनेत्रबदिमांगे तिरियलोगो होदि चि के वि आइरिया मणेति, तं ल घडदे, पुनन्ति गमेग सह विरोधा । को सो प्रव्यव्धवगमो ? चत्तारि-तिप्णि-रब्जुवाहन्छजगपर्रसम्ब अय-उड्डमोगा, सचरञ्जुबाइल्स्टबगपदरपमाणो सञ्चलोगो चि । माणुसहेनपर ब पन्दानीम् बोयनसदसहस्सविक्संमं बोयणसदसहस्ससंधं । पुणी विक्संबुसंबे 🤏 टानि सरिय —

ब्यासं दोडरागुणिनं पोडरासहितं त्रिक्षपक्षपैर्मकम् । म्यामं त्रिगुणितमहितं सत्मादिष तद्भेरमूरमम् ॥ १९ ॥

करेंग्रेड, इन तीन गोडोंके मसंव्यानय मागवमाण क्षेत्रमें तिर्वेग्योक है, वेसा डिनेंब है करने कहते हैं, परंतु उनका इसवकारका कथन घटिन नहीं होता है, पर्योक्त इस कपका पूर्वेचे का कार किये गये कचनके साथ विरोध माता है।

ग्रेहा-यह पहले स्थातार किया गया कथन कीनसा है !

ग्रमाचान चार रातु मोटा भीर जगप्रतरप्रमाण संवा चीड़ा संघोतीक है। तै हाहु मेरा भेर जगवरावमान सेवा बीदा कर्णलोक है । सात रातु मोरा मेर जगवर कारण राज्या माहा गाँकोक है, यही यह पूर्व स्थीकार किया गया कथन है।

देनहीं शाम योजन विर्फामरण भीर एक साम योजन क्रेया मानुरहोत्र है। क्र

क्टॅंड नुक्दारदय शेवनंक्षी विकास और अमेघके अंगुल करके—

अरभदो मंत्रहम गुणा कर, पुनाशीलह जोड़े, पुना तीन यह मीट यह मर्गीन वहमे हैरहरा झन देवें और झालका तिगुना जोड़ देवे, हो सुदमने मी सुदम गरिधिया प्रमाप F 1 7 4 4

रिक्ता व -- बदांपर मंद्रणाचार शेवकी परिधिका प्रमाण स्रोवेकी प्रक्रिया बनर्जी है : ध्युत कार से तर परिविधा विस्तार क्यामधी तिगुणा है विधा जाता है, बचा व रिन्दे द्वि (वि. सा. १०) इससे भी स्त्यप्रमान द्वादा वर्गम्य बनताया तत् बस-विक्यां तरकारहण्याकरणी बहुदन परिवास होति (वि सा १९)। किन्तु प्रवृत्त गाया है। म्पन्यक्रणम् स्र म्पन्यतः प्रमाण निवालनेत्री प्रतिया वत्रवारं गर्द है, त्रो इसप्रकार है-

इट्ट्रिक-१ राष्ट्र ध्यामके कुमध्यकी गरिधिका प्रमाण निम्न प्रकारने होगा-

!\*!! + !! + !X = !!! = 1!! mg! इक्त्रकार ३ राष्ट्र स्मानेवर्धा परिचित्रा प्रमान इस्परार होगा-

रे तुम्ब टेबर्ड्ड फिट्ट भटन दर्शन बच्च । बहरहा बच्चार्ट व क्यूक्टल्ड स्टेस्ट

एदेष गुपेण परिद्वयं कार्ण विवसंमयउन्मागेण गुणिदे आदाणि पदांगुलाणि । पुण्यं य ओनद्वणा एत्य कापप्पा । मार्गालेप-उच्चादर्गद् सारायकाम्मारिद्व-आनंवद्रमा । मार्गालेप-उच्चादर्गद् सारायकाम्मारिद्व-आनंवद्रमा । मार्गालेप-उच्चादर्गद् सारायकाम्मारिद्व-आनंवद्रमा । मार्गालेप-उच्चादर्गद सारायकाम्मारिद्व-आनंवद्रमा व्यवद्र करेरि । तस्त । प्रवसंगिक मारा विम्मादर्गदेश उच्चादं करेरि कि ओपरासिमादर्गद असरेग्राक्ष-मारा विम्मादर्गदेश उच्चादं करेरि कि ओपरासिमादर्गगा उच्चरेग्रा । व्यविक्र गुणारारे उच्चर्या । पुणो स्पूणाविक्ष्य असरेग्राक्ष्य व्यविक्र ग्रामा मारार्गरं उच्चर्या । पुणो स्पूणाविक्षयं असरेग्राक्ष्य व्यविक्र विक्र ग्रामायायमिदियदंडद्वियओं इध्विप्य अवसे आविक्ष्याए असंग्राह्ममार्ग स्वयं । सार्गालेप्य पद्युलस्स संग्राह्ममार्ग सोविक्ष्य संग्राह्ममार्ग सोविक्ष्य संग्राह्ममार्ग सोविक्ष्य संग्राह्ममार्ग सार्गालेप्य स्वयं प्रवाद । मार्गालेप्य व्यवकालादे गुण्यक्षस्य संग्राह्ममार्गेलेप प्रविक्षया साराव्य सार्गालेप्या साराविक्षया साराविक्षय साराविक्ष

इस चुकरे नियमानुसार परिधि करके व्यासके चौथे भागसे ग्राधित करमेपर प्रतर्रा-गुरू हो जाते हैं। पुनः एम प्रकरीतुर्वोंको अस्थिते ग्राधित करनेपर संस्थात प्रमानुस्क हो जाते हैं। यहांपर भी पहले सभाम भयवर्तना करना चाहिये। भयांन् इन यनांगुलंके प्रमाण-वर्षानुक करनेके लिये पांचसीके घनका भाग देना व्यक्तिय।

मारणाधिक समुद्रात भीर उपपादात सामाद्रतसम्यग्हिय भीर असंवतसम्यन्दिये । सामाधिक समुद्रात भीर उपपादात सामाद्रतसम्यग्हिये और सामाद्रतसम्यग्हिये भीर सामाद्रतसम्यग्हिये भीर सामाद्रतसम्यग्हिये भीर सामाद्रतसम्यग्हिये भीर सामाद्रतसम्यग्हिये भीर सामाद्रतसम्यग्हिये भीर अपने प्रता क्षेत्र कर के जो यक आग सम्य अपने उत्तती शादि उपपाद करते हैं। तथा इस उपपाद्राति में महस्थात प्रमाण आग्रेष विद्याति शादि उपपाद करते हैं, हमानिये हो यार आग्रद्राति मार्ग्याव ओप सामाद्राति सामायग्राव ओप सामाद्राति सामायग्राव आग्रेष्ट क्षेत्र कर्मा मार्ग्याव स्थापित करना चारिये। तथा में सामायग्राव आग्रेष्ट स्थापित करना चारिये। तथाभ्यात्रयं भाग स्थाप्तर स्थापित कर्र भीर कपर प्रतास्त्र अपने स्थापित कर्र भीर कपर प्रमाण सामाद्रात्र स्थाप्तर कर्मा सामाद्रात्र सामावम्य सामाद्रात्र सामाद्र स्थापित कर्र भीर कपर प्रमाण सामाद्र स्थापित करते। सामायग्रेष्ट स्थापित करते। सामाद्र स्थापित करते। सामायग्रेष्ट स्थापित करते। सामायग्रेष्ट सामायग्रे

ग्रंमा— मारणातिकसमुद्धानके कालसे गुणस्थानका काल संस्थातगुणा है, इसलिय मारणात्तिकजीय भयने अपने गुणस्थानके सर्व जीवींसे संस्थातगुणे हीन क्यों नहीं होते हैं [

पडिवज्जमाणजीवाणमसंखेज्जगुणचादो, उयसमसम्मचद्वायसेसे आउए उवसमसम्मच्हां पडिवज्जताण बहुवाणममावादो, तचा तस्स संखेजजगुणणियमामावादो च । एव अ रिमरासिस्स गुणगारी पुन्बुची चेव होदि, देवरासिस्स पहाणचादो। उवबादे पुण निस्स रांसी पहाणी। णवरि असंजदसम्माहद्वि उववादे देवा पहाणा, मारणितिए तिरिस्ता पहाणा सम्माभिन्छाइद्विस्स मारणतिय-उववादा णत्यि, तन्गुणस्स तदुह्यविरोहित्तादो।

एवं संजदासंजदाणं । णवरि उववादो णित्य, अपज्जनकाले संजमासंवपण्यस अभावादो । संजदासंबदाणमोगाहणगुणगारो घणगुरुं । मारणतिए पदांगुरुं दह्व वेगुव्यियपरेण सगरासिस्स असंखेज्जदिमागो आवालियाए असंखेज्जदिमागगिंडमाले। संजदासंजदाणं कर्ष वेउव्वियसमुख्यादस्स समवो ? ण, ओसालियसरीरस्स विउव्यूणवर् विण्हुकुमारादिसु दंसणादो । संजदासंजदेसु वि मारणतियससी ओघरासिस्स असंसन्त्री

समाघान---नहीं, क्योंकि, मरण करनेयाले देवगतिसंबन्धी जीवांसे उसी प्रम निध्यापको प्राप्त होनेवाल जीय असंस्थातगुणे होते हैं। अथवा, उपशासक्ष्यक्ष्यके हार प्रमाण मायुके मयशिष्ट रहनेपर उपशामसम्यक्तय गुणको प्राप्त होनेवाले बहुत जीव नहीं हो कार्त हैं। और मारणानिकसमुदातके कालसे गुणस्थानका काल संव्यातगुणा होता है।

यहांपर उपरिम राशिका गुणकार पूर्वोक्त ही है, क्योंकि, वहाँ देशांति प्रपानता है। उपपास तो तिर्धेचराशि प्रधान है। स्तर्ग विशेषता है कि स्वयंत्रत गरि गुणस्थानसंबन्धी उपयानमें देव प्रधान है। तथा असंवतगुणस्थानसबन्धी प्रार्वाल समुद्रानमें तिर्वेच प्रधान है। सायभिष्यादृष्टि शुणस्थानमें मारणान्तिकसमुद्रात ग्रीर राज नहीं होने दें, क्योंकि, इस गुजरपानका इन दोनों प्रकारकी अवस्थाओंके साथ विरोध है।

इसीनकार संयतास्यतीका क्षेत्र जानना चाहिये। इतना विदोप है कि संवतास्त्री उपपाद नहीं होता है, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें संयमासंयम गुणस्थान नहीं वार्ष है। है। संपतासंपतींकी अपगाहनावा गुणकार पत्रांगुल है। आरणान्तिकसमुद्रातमं प्रतांगुल गुजकार देना चाहिय। पत्रियक्षदक्षे मावलाके मसत्त्वात्रयं भागस्य प्रतिभागहे । अपनी शशिका ससंस्थातयां भाग छेना चाहिये।

गुंदा-संवतासंवतीके विकियकसमुद्रात केसे संमय है !

मनाधान — नहीं, क्योंकि, विष्णुकुमार आदिमें विक्रियालक भीदारिवद्यारि व

र बार चरेडः जीवस्थाने वासमये सञ्जविधकावशोगस्थायिकवृष्णयाधीदाहिकावसीयः कर्णाः अ विकेचन्नवाका विस्तान अवाहरे र अभिनेत्र ने प्रतिकृतिक स्थापन वालमा स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स् अवाहरे र अभिनेत्र स्थापन स् विश्वविद्यालयात् । इत्राप्तन् न, व्यत्रोतदेशत् । व्याव्यामश्चितदेशहेशे श्वीव्यत् । विश्वविद्यालयात् व दिश्वतिष्ठ्याति, वत्रावाच ॥ वृत्यायाचीत्रविद्योशियाः निर्मितः स्त्रीतः । व्यवस्यते विश्वविद्यालयाः क्षेत्रसाने वरेरा वरणान करणान करणान । युवायाची । युवायाची । वर्ष वर्षायाची । वर्ष वर्षायाची । वर्ष वर्षायाची व विभिन्न वृदेश वर्षेत्रकारिक वार्तिक वार्तिक विभागक विभागक । विदेशिक विभागक । विदेशिक विभागक । विभागक विभागक

भागी । कारणं पुच्यं पर्वादं ।

पमसमंजदरपद्रहि जाव अजोगिकेवलि शि जहण्यिया ओगाहण आरुद्वरयणीओं, उनकरिनया पंचसद-पणवीसुत्तरथण्लि आदुहरप्यात्मा, जनकाराचा प्रभाव प्रभाव प्रवास । १९६१मा दा वि अधागहणाओ सरह-इरावरामु पेव होति, ण विदेहेस, तरम पंचधणुसारुस्सेभणियमा । तथा थोप्रणुस्सेपो वा विदेहसंजदरस्ती जदो सन्दकस्ती होदि, सो पपाणो, पंचधणुस्त-दुस्सेहाविचामाविचादो। एरम अंगुलाणि कदे उस्सेहणयमभागी विचर्सभो चिक्रह परिड्यमद्वे करिय विस्तंभद्रेण गुणिय उस्तेहेण गुणिदे संखेळाणि घणगुलाणि जादाणि। एदेहि संवेजपण्गुलिहि अप्पप्णो शांसि सुमिदे इस्टिट्स्पेन होदि । णवरि आहारवर्रास्स उस्तेषे एया रायणी, उस्तेहदसमागो तस्त्र विक्समें, दिन्वतादो । विहारे सस्याण-समाणोगाहणबुहमन्छिणावजनणालतुनसंतार्थं व मुलाहारसरीराणमंतरे जीवपदेशाणावहाः णादो । ण च सरीराहो-गद्भीवषदेसार्णं पुणा तत्यं परेसाभावो, सम्रुग्यदगदेकविज्ञीव-

जाता है।

। संवतासंवतॉमें भी मारणान्तिकसमुद्धातको प्राप्त जीवराशि भोघसंवतासंवत राशिके मसंख्यातय भागमाण होती है। इसके कारणका मक्रवण वहले कर माथे हैं। ममत-संयत गुणरथानसे लेकर भयोगिकेयली गुणस्थान तक जीवेंकी जमन्य भवगाहना साहे तीन स्वत गुणस्थानस्य एकर न्यामकायनः गुणस्यान एक जानाकः व्ययः ज्यानस्य साह तान रिनिष्ठमाण है और उन्हर भवगाइमा पांचसी पच्चीस घतुत्र है । ये होनी ही भवगाइमार् राजनवान व नार अक्टब नवानका नाजार उपनार जाउर व र च पान वा नवाकताव मरत भीर देशवत क्षेत्रमें ही होती हैं, विदेहमें नहीं, क्योंकि, विदेहमें वांबसी धनुवके मरत भार परावण राजम का बाद्या का मनका प्रकार प्रकार प्राचन प्राचन प्रवचन प्रवचन उत्तेषका निवम है। मतः पांचसी पच्चीस प्रमुक्ते कुछ कम उत्तेषकारी विनेहसेत्रस्य संवतराति चूंकि सबसे अधिक होती है, इसलिये यहांपर यह राशि प्रधान है, क्योंकि, विदेहस्य संवतराशिश पांचसी धनुषशी ऊंचाईके साथ अधिनाभायसंबन्ध पाया जाता है। पदांपर भागुटाँमें प्रत्यक्त लानेके लिये मनुष्यांके उत्सेधका नीवां भाग विष्क्रंभ होता है। वहायर मधुलान बनकाल लागन तल्य मधुनाम भारत्यका लाग नाम व्यक्तम बाला वर देसा समग्रकर विष्कृतकी परिधिको भाषा वरके और विष्कृतके भाषेसे गुलित करके बता तमहाकर विकास वाज्यका जामा बदल जार विकास जामा छात्रा करक उस्तेषसे गुणित करनेवर संख्यात प्रमांगुळ हो जाते हैं। इन संख्यात प्रमागुळासे सपनी भगना राशिक शुणित करनेपर राष्ट्रियत गुणस्थाससंयाधी रोत्र होता है। इतनी विशेषता है कि आहारकरारीरका उत्तेष एक रानियमान है। तथा अस्तेषके दरावें भागमणण उत्तका विष्कंत्र दे, पर्वोक्ति, यद दार्शर दिग्यस्यक्त्य है । विदारमें इस दारीरका मुख्य अर्थात् विष्कंत्र विष्कृत सम्प्राम् न प्रमान स्वाप्त स्वाप्त अवगादनायम् है, वर्वोक्ते, मूल और आहारक भीर उत्तेष स्वत्थानस्वत्थानके समान अवगादनायम् है, वर्वोक्ते, मूल और आहारक दार्शरके अन्तरालमें रखनालके अन्तिम स्वस्तानके समान जीवभेदरीका स्वस्थान पास काराक करवायान कार्याता वार्याता हुन्याताचा समान वायावरावा कार्यात पाया जाता है। दारीरसे निकले द्वय जीयमेदेगाँका किरसे दारीरमें प्रयेदा नहीं दोता है, सो भी

५ प्रतिष्ट ' अयुत्रकद ' इति पाउः ।

६ सम्पातुली हुवैश्योमें श्रे प्रामाणिकः करः । बद्धपृष्टिको एनिस्तिः सक्तिहिका । इतापुः कोनः र आहड्डल्थपहुदी पमुबीलम्बह्मियमसयथणूणि ॥ ति. प. १, २२

१ वंबतयबारतुमा xx ति. व. ४, ५८. ४ प्रतितु 'जदा' रति पातः।

परेकेहि विपहिपारारो । प्राणि खेचाणि चटुण्हं होगाणमसंकेज्ञदिमागे वि पनगरने चटुण्हं होगाणमसंखेजादेमागे अच्छंति, माणुसखेचस्स संखेजदिमागे । मार्गतिसम् सचर्ञ्जृहि संखेजपरंगुलगुणिदहन्छिद्संजदरासी गुणेदच्यो । तेण मार्ग्णतिपसम्परस्स संजदा माणुसरोगादो असंखेजगुणे (क्षे अच्छंति । एदं सत्याणसत्याण-विहासदिक्तर्स

बात नहीं है, क्योंकि, पेसा माननेवर समुद्रातगत केयलांके आंवश्रेशोंके साथ कार्यका का जाता है। ये सब दोज सामान्य आदि चार लोकोंके असंस्थातयें मागमाण हैं. हतीयें प्रमुचसंपन मादि राशियां चार लोकोंके असंस्थातयें माग क्षेत्रमें रहती हैं। तथा मानुक्षेत्र मंकानव मागममाण देखाँ बहती हैं। मारणान्तिकसमुद्रातका दोज लोके हिंदी कि मर्माष्ट संपनराशिका होने लाता है। उसे संस्थात मतरांगुलोंसे गुणित करके ओलाम महे की सात राजुमोंसे गुणित करना खादिये। इस कारण मारणान्तिकसमुद्रातको प्राप्त हुए संदर्शने

विदेशाये— यहां प्रमत्तासंपतादि गुणस्यानयती जीयों हा मारणानितहसमुजनतामधे भेष माने हे निए समीए राशिको संस्थात प्रतर्गालों से गुणित करके पुनः सात शतुमें मुद्रित करने पुनः सात शतुमें के स्वाद्या करने हैं स्वाद्या करने हैं स्वाद्या के स्वाद्या करने हैं स्वाद्या करने हैं स्वाद्या करने स्वाद्या करने हैं स्वाद्या करने स्वाद्य करने स्वाद्या करने स्वाद्य करने स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्व

सन्वे कंटनर्राहाचा प्रमाण ८०००००० प्रवत्ना है। वसमेश प्रवत्नाहि गुल्वामूर्वर्धे क्याचील प्रहित्वे संवत्नाने सन्त्रमाल शांहा है। सावलानिकशमुदान बार्गी है। क्याचे क्या निचार संव क्य सन्त्रमाहमांचे प्रताशासीय गुलित बार्गेयण सी संवतान क्यांच्य है हैते हैं। इस प्रचार संवस्ताहमांचे प्रताशासीय गुलित बार्गेयण सी संवतान कंपनी हो से संवत्त ٠, ٩, ٩, ٦

नेताणुगमे पमत्तसंजदादिसेतपस्यणं षेड्ण-रत्माय-वेड्डिन्वयाहार्-मारणंतियसम्बन्धादाणं उर्च । वद्गि तेजासमुन्धादस्स विवसी राम वाव बारहजोरवावमाणे करेंगुले अव्योगं गुणिय बाहिले गुणिरे तेज्ञासम्पादस्य । वक्त होदि । एदं तप्पाओमाक्षरोजस्वेहि गुणिदे सन्त्रतेषसमासा होदि । ओवहणा पुन्तं व ।

अप्पमचसंत्रद्दां सत्याणसरमायः विहासविदिसत्याणस्या केविड सेचे, पदुण्ड होगाणस संरोजादिमामे, माणुसराचस्स संरोजादिमामे । मारणीविय-जल्पमचाणं पमचसंजदर्भमे । अपमच संसप्दा णादि । चुडुण्हमुससमा सत्याणसत्याण-मारणतियपदेस पमवसमा । जन्मच तावपदा न्यात्व । वहुव्यवस्थान वात्यात्वात्वात् वात्यात्वात्व । स्वयुवसामगाणं णारिय युचतेसप्दाणि । ख्वयुचसामगाणं ममदेमाविसहिदाणं कर्षे सत्याणसत्याणपृदस्स संभवे ।

च एस दोसो, ममदेमानसम्भित्रमुणेसु तहा ग्रहणादो । एत्य पुण अवहाणमेचगहणादो । मतरांगुल गुणित सात राज होता है, जब कि तिर्यक्लोक एक छाल योजनके सातर्थे अवन्युळ पुण्य सात राज हता है। अब १० विष्टुळा पेठ छार पात्रक सावस आगामाण मोटे जगावतरममाण है। अतः उक्त मारणान्तिक समुद्रातका क्षेत्र वार्से लोकीके भारतमाण होट जराजतरभाग है। तथा मनुष्यतीक ४५ त्यां चींद्रा और १ तथा शाकाक भारतमाण मार्गमाण होता है। तथा मनुष्यतीक ४५ त्यां चींद्रा और १ तथा शाकाक

नसंस्थानम् भागमभाव हाता है। सवा महाप्यकानः वनस्यव वाहा भार र छाव यान है जेवा है। सतः संयतींका मारणान्तिकरोत्र ममुख्यतीकसे अतंत्रयात गुणा सिज्ज होता है। इसमहार उक्त क्षेत्र स्वरमानस्वरमान्, विहारमस्यस्यान्, वेदना, क्याय, वैक्रिकिक, हत्तमहार उन्त सत्र हथस्यानस्थरधान्, १४द्वारवास्थरधान्, वर्ताः, क्षाप्, व्यवस्थरधान्, वर्ताः, क्षाप्, व्यवस्थर ग्राह्मरक् भीर मारवालिकत्तमुद्भाववाते ज्ञायांका कद्वा । स्वनमे विशेषयाः है कि वैजनसम् ्रमारक भर भारणात्त्रकायमात्वावास जावाचा कहा। इतना विदायता हाह तमसस्य स्रातके भी योजनवमाण विकंस भीर बारह वोजनवमाण भाषाम सेव हे किये हुए संगुर्जेका स्वतंत्र ग्रीणा करते. पूटवंगुल्के संद्यात्व सागवसाच वादास सत्रक १२५ वर्ष वर्गुवाका परस्यर ग्राणा करते. पूटवंगुल्के संद्यात्व सागवसाच वादास सत्रक १३५ वर्ष वर्गुवाका पार्टर मुंधा करक सुरुवाहरू सवपातव भागमांच बाहब्यस ग्राणत करनेपर तजस-समुद्रातका क्षेत्र होता है। इसे इसके योग्य संक्यांतरे मुचित करनेपर तजस-च्युक्तकः सन् दाता हु। इस इसक याथ स्वयातस गायत करनपर सर्वेशेनका जाड़ होता है। यहांपर भगवर्तना पहेंगे, समान जानना चाहिए।

इयस्यानस्यस्यान और विद्रारयस्यानकृष्टे परिवत भ्रममस्ययं जीव कितने रेवस्य रहते हैं। सामान्यहोक भारि चार होकोंने असंबद्यावये भागमाण रोवमें रहते राजा पहा कः सामान्यसम्भ भागः वार्यस्थातं सार्यस्थात्यं सामान्यसम् स्था रहते हैं, और मानुबसेजने संस्थातम् मागपमाण् सेयमे रहते हैं। मारणात्तिकसमुदातको ६, ब्यार अधिवसंत्रक संक्षातव भागवमाण सत्रम १६त ६। सारणान्तकसंध्रदातकः प्राप्त इर अग्रमचर्तवर्तोदा रोत्र मारणान्तिक समुद्रावको प्राप्त इर प्रमचर्तवर्तोके भाग देव भागपात्रपतास्त स्त भारतात्रपण राष्ट्रदश्चर भाग देव भागपाद्रपतात्र होत्र है। अध्यमतसंपत्र गुणस्थानमं उक्त शांत स्थानीके छोड़-संबद्ध समान होता है। भामतसंबद्ध गुणस्थानम वक्त तान स्थानाकः छोदः कर दोष स्थान मही होते हैं। उपरामधेणीरे धारी गुणस्थानवर्ती उपरामक और कर राष स्थान महा हात हूं । उपरामधानक खारा गुणस्थानवता उपरामक अबि प्रस्थानस्थरयान और प्राराणानिकतमुद्धात, हुन दोनों प्रदेमें स्वस्थानस्यस्थान और प्राराणा-वरसानस्यस्पान आर भारणान्वकत्यभुदात, हुन दाना पश्चभ स्पर्धानस्वस्थान आर मारणा-वेकत्यमुद्धातमत प्रमत्तरंवतांके समान होते हैं। स्ववस्थानेक आर मारणा-आर गुनस्यानवर्ती स्वक् त्रकत्तमुद्रातात प्रस्तवस्थाक समान दात है। १४४०,४५०,५,५०। गुणस्थानस्था रिषक रिक्षणीतिकव्यो जीवीका स्वस्थानस्वस्थान प्रमुक्तस्थानेक स्वस्थानस्वस्थानक स्थान ाट क्षणाधकवला जावान। स्पर्यामस्वरणाम अम्पालपताक स्पर्यामस्वरणामक समान ता है। क्षणक और उपशासक जोगोंके उत्त स्थानोंके अतिरिक्त क्षेप स्थान नहीं होते हैं। विका-पद मरा है, इसमहारके भावते रहित सपक और उपसामक अविदे समाधान-पद कोई क्षेत्र नहीं, क्योंकि, जिन मणकणन्त्रेत्र (--------

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेना जेसु वा भागेसु, सन्वलोगे वा ॥ ४ ॥ एत्य सङ्गोगिकेनलिस्स सत्थाणसत्थाण-निहास्त्रदिसत्थाणाणं पम केवती केविह खेचे, चउण्हं लोगाणमतंत्रेज्ञदिभागे, अहाहजादो असंसे अहुचरसद्पमाणगुलाणे उस्तेषो उकस्तागाहणकेवलीणं होदि । र विक्समा १२ एचित्रो होदि। तस्त परिहुत्रो सचतीत अंगुलाणि पूंचाणउ रेण्टंहें । इमं विक्संभचउन्मागेण गुणिदे सहपदांगुलाणि होति ।

चाह्मरज्ज्ञृहि गुणिदे दंडसेचं होदि। एदं संसेजह्नगुणं तेरासियकमेण इसमहारका माथ पाया जाता है यहां मैसा प्रदण किया है। प्रत्यु यहांवर भीर उपरामक गुणस्थानोमें सवस्थानमात्रका महण किया गया है।

सर्पामिकेवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें धेत्रमें, अधरा होकके अमंख्यात बहुमागत्रमाण क्षेत्रमें, अथवा सर्वलोकमें रह यहांत्रर मयोगिकेपलीका स्वस्थानस्यस्थान और विदारवण्स्यस्थान ।

संबनोहे ह्यस्थानन्यस्थान भीट विद्वारकान्वस्थान सेवके समान होता है। बंह माज हुए केवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामाध्यलीक भादि चार लोकोंके क भागवताल सेवमें भीर सहार्देद्वीयसंबन्धी लोकसे ससंख्यातगुणे सेवमें रहते हैं। र्वहा – बहरामुद्धानको माप्त दुव केवालियोंका उक्त क्षेत्र केले संमय है ?

ममाधान - उन्हर भवगाहनाले युक्त स्वलियांका उत्तेष पकता आठ वा होता है, और इसका मैंथा मांग अर्थात बारह १२ प्रमाणांगुल विश्वेम होता है। षरिधि संगीत धंगुल धाँर एक धंगलके वहती नेरद मागोंमेंसे पंचानये माग प्रमाण ह होती है। इस कि इस बारह भगलह चीछे साम तीन भगनीम गुणिन करनेपर मुन्नव भारत हो के हैं कार भारत भारत भारत भारत भारत भारत मुग्नित कर स्था भारत भारत हो है। इस्ट्रें कुछ बार हातुक्षेत्रे गृत्तित करतपुर दरक्षत्रका प्रमाण काता है। यह एक कप्रतीक दशा EEIM ENI I

डेट्ड्डिम्—€शस १- धंगुल अनःय गाया म १४ के भगुसार उसका परिण 114 . 35 4535 . 114 गर्व - ३३ स्था संगुल । े (धाःसदा समुर्थाता ) १०८०८ स्वरागालः

MAY FRANCES

भागे हिंदे तेसिं लोगाणमसंख्यादिभागो आगच्छि । माणुसलोगण मागे हिंदे असंपेकाणि भाणुसखेलाणि आगच्छीत । णवरि पलियंकेण दंडसमुम्पाद्यदकेतिस्स विक्खंमो पुल्व-विक्खंमादो तितुषो होदि । तस्स पमाणमेदं ३६ । एदस्म परिद्वयो तेरहुचरमदंगुलाणि संघावीस-तेरहुचरसद्भागा ११३ होर्स । सेसं पुल्वं व ।

षवाडगदो केवली केवलि खेते, तिर्द्ध लोगाणमसंखेजदिमागे, (तिरियलोगस्त सैने-अदिमागे,) अद्वृद्धजादो असंखेअसुषो । प्रत्य कवाडगदकेवलिस्म सेत्राणयणविद्वार्ण युपदे-

विशेषार्थ— यहांपर देशस्तातात रेलका प्रमाण केवलीको उत्तर अवगाहता १०८ माणांगुरू रेकर करावाता है। किन्तु इससे पूर्व हो केवलीको उत्तर अवगाहता १६५ अनुव नमाण करी गई है। कृषि उत्तेशांगुरू कर कर गुण होता है, स्मृत्य १६५ मुक्त प्रमाणांगुरू भूष्ट कर कर है। कृष्ट है

१६२ हैं- होते हैं को उक्त '१२'s धतुपके प्रमाणसे बढ़ जाते हैं। इस वैकारवा कारण वेपारवीय है।

यक साथ समुद्रात करनेपाले संवधान केवालयों है इस्तेषका प्रमान काने के लेवे देत संवधातसे गुलित करें। समाधार जो रोज जनता है। उसे बंगतिसके कमने माधायलों माधा हो सोर्ट से भारति करनेपार उन बार गोबॉसेंसे प्रमान केवं वर्षप्रातमें माधामाण देशोंक काता है। समा उन्त देशोंकों माधुक्योंकों माधा काने करने हि असेवयात माधुक्योंक लाग भाते हैं। इतनी विरोचता है कि परंग्वासनी देशमाहानकों हिन दूर सेवलांबा विकास पटले करें हुए बारह अगुलसासन विकास तिन्ता होता है। सक्षा माधा कह अंगुल है। इसकी पियों पत्रकों तेनह अंगुल और सब अंगुल वे पवनी हिंद माधीनिय समारित साममाण है। है।

उदाहरण-स्थास द्वरः अत्रवय गाथा सं. १४ के शत्रसार परिधिका प्रमान-

25 × 22 + 25 + 20 × 212 20

द्देश बचन पूर्वके समान है।

कपाइत्याद्वात्वरो मान्य दूप केवली विश्ववे दृष्टे दृष्टे कामाम्याद्य कर्यु तीन विशेष कांश्यात्वे भागमान्य देशमें, निर्मालके संस्थानमें भगममान्य देशमें और वृत्तिविश्वित लेकात्वाचे देशमें दृष्टे हैं। अब यहोपर क्याद्वानुमानको मान्य दृष्ट केवलेना वृत्तिविश्वात करते हैं— केवली. पुष्पिहिमुद्दो या उचराहिमुद्दो या समुग्यादं करेती जादि पलियंकेण समुग्यादं कोति, तो क्याडमहर्छ छचीसंगुलाणि होति। अह. जह काउरसम्मेण क्याड कोदि, तो बार्रगुल पाइछ क्याड होदि। तत्य ताय पुष्पिहिमुद्दकेवलिस्स क्याडखेचाण्यण मण्णमाणे चेदन रज्जुआयामं सचरज्जुविक्छमं छचीसंगुल्याहर्छ खेचं ठिवय मञ्जू छेन्ण एकखेनस्पृती विदियखेचं ठिवदे वाहचरिजंगुल्याहर्छ बागपदरं होदि। क्याउस्म्रगणि हिद्देकविक्कारहर्षे चउन्त्रीसंगुलबाहर्छ होदि। उचराहिमुद्दो होद्यू पलियंकेण समुग्यादगदकेवलिकारहर्षे छचीसंगुलबाहर्छ बागपदरं होदि। इयरस्स १२ बारहंगुलबाहर्ल्ज वेषणार विधालिमाया। एदं खेचं तरासियकमण तिष्हं छोगाणं पमाणेण कीरमाणे तिस् लेगाणमं संखेज्जदिमाया। तिरियलोगस्य पुण संखेज्जदिमारो, अहुद्धज्जादो असंखेज्जपुणं होदि।

पदरगदो केवली केवडि खेचे, लोगस्स असंखेडजेसु भागेसु। लोगस्य अनं खेअदिभागं वादवलपरुदखेचे मोन्ण सेसबदुआगेसु अच्छदि चि व बुच हेिदि। वणलेग पमाण तेदालीसुचरतिसद ३४३ षणरुज्जेश । अघोलोगपमाण छणाबुदसदयगरुज्जेश

केयली किन पूर्वाभिमुल अथवा उत्तराभिमुल होकर समुद्रातको करते हुर वर्षे पर्यकामनेस समुद्रातको करते हुँ तो कपाटक्षेत्रका बाहरण छत्तीस अंगुल होता है। और वर्ष कायोसमनेस समुद्रातको करते हूँ तो कपाटक्षेत्रका बाहरण छत्तीस अंगुल होता है। और वर्ष कायोसमनेस कपाटक्ष्मुद्रात करते हूँ तो बारह अंगुल्यकाण बाहरण्याल कपाटक्ष्मुद्रात होता है। इनमेंस परेल पूर्वाभिमुल कपाटके कपाटक्षेत्रक लानको विधिवा कथन करनेपर और वाह हो सात गत्र कोई और छत्तीस सात गत्र कोई अर्थ हिंदी से कायोस सात गानु केश ए छत्त कर होत कर होत के बाहर का देश के करा हुत के बाहर का देश होता है। करा होता है। उत्तराभिमुल हिंद हुए केपलीका कपाटकोत्र वार्षात अंगुल मोटा जप्पत्रत होता है। उत्तराभिमुल हिंद हुए केपलीका समुद्रातको प्राप्त हुए केपलीका समुद्रातको प्राप्त हुए केपलीका समुद्रातको प्राप्त हुए केपलीका समुद्रातको प्राप्त हुए केपलीका समुद्रातको करनेका है। उत्तराभिमुल होड स्वर्ण करायोसमाल स्वर्ण कायोस कायोस कर कायोक होता है। उत्तराभिमुल होड स्वर्ण कर स

प्रतरसम्हातको प्राप्त हुए केवली प्रिन दिनने क्षेत्रमें उदने हैं ? लोकन संस्थात बहुमायम न क्षेत्रमें रहते हैं। लोकक भनेत्वातये मायवमाल बातवलयो उते हुए हेवडी छोड़कर होकके सेन बहुमायोमें उदने हैं, यह इस क्यतना समिताय है। बनले क्हा प्रश्न हैं रीनकी नेत्रलील देवदे बनराजु है। स्पेरलोकका प्रमाण प्रस्ती छ्यायये १९६ धनराजु है। १९६। उङ्गलोगपमाणं सनेचालीससद्घणरञ्जूजो १४७। उङ्गलोगपमाणाणपणे सुचगाहा-[41

घणगणिदं जाने ज्ञो सुदिगसंटाणवेत्ति ॥ १५ ॥

एदिस्ते गाहाए अत्यो प्रचदे- मूर्ल मुदिगलिनस्य प्रंपवित्यारं, मञ्ज्ञेण मुदिग-मन्सरंपराजमृहि सह, मुणं खर्द काद्रवं । सहं सुर्द्दिगमुहरुष्पमाणं, सहिद् सुर्दिगमहरूप भवन भरत्य । यहा अन अन अन्य । यह अन्यवहरूपमाल, वाहर अन्यवहरूपमाल, वाहर अन्यवहरूप खुदं काद्या, खुदं अहं करिय समीक्दं, उस्सेषकदिगुणिर्द उस्सेषक्रमाण गुणिद् करे, पुदेग-खेचफलं होदि।

पुर-तल्समास**अहं** उस्तेषमुर्ण मुणं च बेहेण । घणमानिई' जालेउजा वेत्तासणसंटिए खेते ॥ १६ ॥

रीए गाहाए अधीलोगघणगणिदमाणेज्जो ।

संपदि होतप्रांतहिदवादपलयहद्वसंगाणपणाविषाणं गुषदे- होगान केट निक् सपाद लागपरताहृद्याद्यल्यकदार्वणाण्यणाय्याणः ३४२- लागम्य ततः । तत्ः यादाणं याद्वछं पादेकरं बीससहस्सजीयणमेनं । तं सम्बस्मेग्हं करे महिजीयणमहम्मवाहर्षः कार्यलोकका प्रमाण प्रकारी सेतालील १४७ पनरात्र है। शब कार्यलोकके प्रमाणको सानेक हिये भीचे स्वमाधा ही जाती है-

वि रहिमाचा दा आता ६ — मिलने ममाणकी मध्यके ममाणके गुणित करके जी लक्ष्य कार्य जनकी मुक्का समाण लानेका गणित जानना चादिये॥ १५॥

मृत्यक महाभाक मध्यक भमावल ग्रांवत करक जा १८६० बाद कराम मुस्का समाव जोडकर बाघा करें। पुत्रा हुने उरतिपक वर्गते गुणित करें। यह मुदंगकार संस्के समाव

गाणत जानना खादध ॥ ८५ ॥ भव इस गाधाका अर्थ कहते हैं -- मूल अर्धात् सुरंगक्षेत्रके सुभवितनारको स्ट्रंगक्षेत्रके मह इस माधाका अध कहत हान्यूल भवात् प्रशास्त्रक सुभावस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्तास्त्र श्रिमाहक स्मायस्त्र स्वायस्त्र स्वयस्त सच्चावस्तार पाव राज्यभक्त साथ ग्रामत करक जाह द । इसका तावप यह हुआ हि गुनका मर्चात् गृहिगाकार होत्रके गुन्नविक्तारके समामको गृहिगके मध्वविक्तार पाव राज्यभेरी सहित वधात् श्रदशाकाः संतक श्रवधायनारक समाधका श्रदगक्त सम्भवतातः पाव राज्यसम् साहम सर्वोत् युक्त करके, श्रापा सामा करके समीकरण कर छ । सनस्तर वसे कारेशक करके नवार श्रुण करका, नाथा भाषा करक वासायरण कर का जागार व प्राणित करतेवर सुरंगक्षेत्रका प्रवस्तः होता है। (देनो विशेषाध प्रकृतः) ज्यादर प्रशासनका कारणा कारण कारणा है । १ दूरन स्वराज्य इंड २०४ मुक्ते प्रमाण बीट तलमागढ़े प्रमाणको जोड़कट आधा करें . पुत्र: इसे संसंधर्म

प्रवक्त अभाग भार राज्यमाक असामक आहारवारे स्वयं प्रकट स्ववेदा इस माधासे मधोलेक्डा घमगणित ले सामा चाहिए।

हैत गांधास समाजान है जाना जाहरू । अब लोकके पर्यात आगमें हिएक चानवस्थान के हुए श्रेवके सामवी विधिश भव होहरू प्रथम भागम १९४७ पानवल्यन एक इन क्षत्रहरूपान्थ (बीपरा एंक्स होहरू महाभागमें मोनी पापुस्तीमें संयद पापुत्र बाहरू बीस स्मार्थ (बीपरा)

a the minimal diseases of new effective manima and residence in

जगपदरं होरं। णविर दोम् वि अंतेम् सिट्टसहस्सजोयणुस्तेहपिहाणिसेनेण क्रमंपद्रमनेष्ट् द्ग सिट्टमहस्सवाहरूलं जगपदरिमिदं संकिष्पिय तच्छेद्ग पुध हुवेदरूवं ६००००। कृषे एमरञ्जस्तेषेण सचरञ्जुआयामेण सिट्टजोयणसहस्सवाहरूलेण दोम्र वि पासेम् हिरमर् सेचं युद्धीए पुघ करिप जगपदरपमाणेणावदे वीससहस्साहियजोयणस्वसस्स सवमन-बाहरूलं जगपदरं होदि १९९००।' तं पुन्त्रिक्छक्षेत्रसम्वरि द्विवेदे चालीसजोपणमरम्मः

प्रमान है। उस सब बाहस्यको एकियत करनेपर साठ हजार योजन बाहस्यवमाण उपकार होना है। इतनी विदोषना है कि पूर्व और पश्चिमके दोनों ही पार्स्यमागोंमें साठ हजार बोडन ईन्यार्टनक हानिक्य क्षेत्रकी अधेक्षा उपर्युक्त खेत्र हानिक्य है। किर भी इस उन क्षेत्रकी प्राचान करके और उसे साठ हजार योजन मोटा जगमतरप्रमाण संकश्य कर उसे शिव करके पूथक् क्यारिन कर देना चाहिये।

उदाहरण—मधोलोकका तल्याग अराजु स्थ्या और अराजु खोहा है, प्रवर्श इसका शेककर जगजनसमान होगा। तस्त्रमाममें प्रत्येक यात्रपत्रय २००० हजार वेगक सीटा है, क्यांटिये तीनों यात्रपत्रयोधी मोटाई २००० योजन होती है। इसे जगजतसे गुर्वित कर देनेतर गाट हजार योजनोंके जिनने प्रदेश होंगे उनने जगजनर स्थ्य माने हैं। बी

पुरः बद्ध राजु उत्मेषस्य, मात्र राजु माधामस्य भीर साठ इजार घोत्रत वार्रा इपसे इक्तर भीर वृक्षितमध्याची दोनों ही पार्दश्राधीमें शिक्षत वात्रशेत्रको सुन्निते वृक्ष इपके इसे ज्ञादत्रप्रमालाने करमेपर एक लाग धीम इजार योजनीके सात्रवें आग वार्षा इक्तर ज्ञादत्र होता है।

टडाइरम् — मधीलीको नलमासीन जार एक राजुबमाण वानवलयन वेहे हुई होत्य स्वकल — रण्ड भेर कुथिलमें पूर्वने परियमनक प्रत्येक दिशामिं जारोशीममाण हेवा है एर् केंचा मोनो कानवरणों हा बाइला २०००० योजना दीनों दिशामीके बायुक्त देव देशका स्वक्री अलालमें सरका मास देनवा १०१४२ योजन लडा मार्न है, भीर केंद्री सामुद्दे करनाने आवधीलीका जमाल हो जाला है। अनत्य १०१४२ योजनीहे कि और हो इनने अम्बन्दनमाय दश्य भीर कथिलमें भगीलीको नलमासीन यह नह हो भेदनक क्लावरणवा भेवता बनकान होता है।

अन्यक करण्य करण्य महित्र प्रप्रहरण होते दृष्य गर्मावर उत्तर कर्योमवर्ग अपि ना देश क अभ्यक्त करण्य अस्पाद करण हर करण है। अवस्थितिक करण्य मिन्स करण में अस्पाद विष्य कहित्याहि अध्यक्त कर्यो हा स्वयुक्त विद्यास्त्र ने वाद स्वत है। अस्य माझ कि आहे, महत्व, महत्त.

हिप पंचण्हं लक्काणं सचमागबाहरूलं जगवर्त होति " । पुणो अवतामु होतु दिसासु एगरज्युस्तेषेण वेत सचरज्युआपामेण सहे सचमागाहिपटरज्युरंदेचेण महिजोपणसहस्त्रबाहरूलेण हिद्याद्वलयस्त्रेषं जगवर्त्त्यमाणेग करे बीमजीयज्ञसहस्त्राहियपंचवंचासजीयणलक्काणं नेदालीस-तिबदमागबाहरूलं जगवर्त् होति " । एदं पुण्यिक्तरुरं स्तिति पित्रज्ञेष एगुणवीधत्वस्त्र-अतिहिस्त्रस्त्रीति पवित्रज्ञेष एगुणवीधत्वस्त्र- । पुणो सचरज्यविक्ष्यं नेत्रः विद्यालीस वित्रह्मागबाहरूलं जगवर्त्र होति । । ।

इस यनप्रस्को पहेले सलसागके यनप्रज्ञहणेरे माथे हुए क्षेत्रमें सिला देनेपर पांच साम बालीस हजार योजनीके सातयें मागममाण बाहस्थरूप जगमनर होना है।

पुनः इसरों दो अधीन पूर्व और परिषम दिशाओं महामागेश एक राजु ऊंचे, हल भागमें शाम राजु होते, यक राजु ऊपर आकर मुक्तमें यक राजुंच मानवें मान कांचक छट राजु होते, और साठ दाजार पीजन बाहच्यमची ज्यित चानधहरुकोत्रको जागाना कालको करनेयर प्रथम साम पीत इजार पोजनोंचे सीमर्गी नेनार्गासर्वे मानवामन बाहच्यकच जगमन होता है।

प्रश्चनकरक योजनी जिनने प्रदेश होंगे उतने जगवतर लच्च का जाने हैं। पूर्व कीट प्रश्चे परिवासों तल्यानसे एक राजनक सानटक केवना पर्दा सनकल है।

हसे पूर्णांना प्रमणलक्षण भाषे हुए क्षेत्रमें मिला देनेवर कीन करोड़ क्वाँस काक भक्ती हुजार बोजनींके सीनसी सेसालीसर्थ भागमधाल बाहस्वकच क्रमधनर दोला है।

र बदरपुरवृतिहोते राज्यस्यकारण्येति का अध्यक्षित्रम् स्वयक्तियधिकप्रार्थे हे स्थल वह अध्यक्ति स्वतुत्वतिहे संपर्वति हरो र सार्व्यदिको स्वयमस्यकिते स्वयम्पर्वति है वि. सः १६०, १६४

् हेट्रो बराव् चीर्रका प्रकाराव्यक्तास्त्रकृत्वत् युन्तवावकावर्ग वस्त्रका विवेदक्षां हि ह सन्वयद्य-केत् जोव्यक्तवीतमृत्तिकावरवर । कार्यास्त्रावयोद सप्त-व स्तियवृत्तत् ह वि को १३४, १३४ रञ्जुआयाम-सोलहवारह-सोलहवारहजीयणवाहन्त्रेण देामु वि पामेगु हिद्वारमेने जग पदरपमाणेण करे चउसद्विसदजोयणुण-अहारहसहस्मजोयणाणं नेदासीम-निगदमागशहन्नं जगपदरं उप्पज्जदि '५६६' । पुगेर सत्तमागाहिय-छरज्जुम्लविक्संमेण छरज्जुस्तेवक एगरज्जुमुहेण सोलह-बारहजोयणबाहन्हेण दोसु वि पासमु हिदबादघेतं जगपरएमानेन कदे वादालीसजोयणसदस्स नेदालीस-निसद्भागवाहरूलं जगपद्रं होदि पुरुष । पुत्रा एगः पंच-एगरुज्जीवक्संभेण सत्तरुज्जुउस्सेघेण वाग्ह-सोलह-वाग्हजोयणवाहल्लेण उविगरीत

पुनः उत्तर और दक्षिणमें पूर्वते परिचमतक सान राजु विष्क्रमस्यते, सानवीं पूर्व र्घाके तलमागले लोकान्ततक तेरह राजु लायामरूपले और मघोलोककी अपेक्षा सोज्ह, बार और ऊर्घ्यटोककी अवेक्षा सोलह बारह योजन बाहरवरुपस श्रेनों ही पार्वमार्गाम सिन वातक्षेत्रको जगमतररूपसे करनेपर एकसी चीसट योजन कम मटारह इजार योजनी तीनसौ तेताळीसर्थे भागप्रमाण बाहस्यमप जगप्रतर होता है ।

उदाहरण—१३ × ७ = ९१; ९१ × १४ = १२७४; १२७४ × २ = २५४८ । सि जगप्रतररूपसे करनेके लिये सातसे गुणा करे और तीनसी तेतालीस का भाग है, वह १७८३६ योजन मोटा जगप्रतर आना है। यह उत्तर और दक्षिणमें सानवीं पृथिवीन जभ्य

लेकर लोकान्ततक वातरुद क्षेत्रका घनफल होता है।

पुनः पूर्व और पिहेचम दिशामें सातर्था पृथिवीके पास एक राजुके सातव माप अधिक छह राजुममाण मूलमें विष्क्रमरूपसे छह राजु उरसेषरूपसे, मध्यलोकके पास प्रकार् मुखक्त से और सोलह, बारह योजनप्रमाण बाहस्वक्त से दोनों ही पास्वाम स्थित बान क्षेत्रको जनप्रतरप्रमाणसे करनेपर व्यालीसक्षी योजनीके तीनक्षी तेतालीसर्वे मानप्रप्राप

चाहस्यरूप जगप्रतर दोता है।  $3418441 - \frac{\alpha}{83} + \frac{\alpha}{\alpha} = \frac{\alpha}{40} + \frac{\alpha}{60} \div \frac{\delta}{5} = \frac{\delta}{40} + \frac{\delta}{40} \times \frac{\delta}{5} = \frac{\alpha}{60} + \frac{\delta}{40} \times \frac{\delta}{6} = \frac{\alpha}{60} + \frac{\delta}{60} \times \frac{\delta}{60} = \frac{\delta}{60} + \frac{\delta}{60} \times \frac{\delta}{60} = \frac{\delta}{60} + \frac{\delta}{60} \times \frac{\delta}{60} = \frac{\delta}{60} \times \frac{\delta$  $\frac{v_0}{\sigma} \times i = \frac{v_0}{\sigma}; \quad \frac{v_0}{\sigma} \times i = \frac{v_0}{\sigma}; \quad i \in \mathbb{R} \quad \text{single state state} \quad s.$ 

भाग देनेसे ४२०० योजनोंके जितने प्रदेश हो उतने जंगवतर छन्छ आ जाते हैं। पूर्व और परिचममें सानवाँ पृथिवीसे मध्यलोकतक बागुरुद्ध क्षेत्रका यही धनकल है।

पुना मध्यरोकके पास पकरातु , महारोकके पास पांचरातु और रोकान्तमें पक राज विष्कंप्ररुपसे, सात राज्ञ उन्सेषम्पसे तथा, यारह, सोल्ड और वारह योजनवमात्र बाहरी

१ बदर्व मृत्यू बेरी छात्त्र मतस्थान्त्र । अनु या अन्यय चोहन सत्रविश्यो वि हु दीस्त्रुपूर्ता । ह पाणिटक्षेत्रकटं टमपे पाणिन होर जगवररं । क्श्वपत्रीवणगुष्टिं पत्रिमणं स्वरणां दिन ता. १६४, १६५,

r पातेसु हिदवादावेषं जगपदश्वमाणेण कदे अहासीदिसमहिष-पंचजोयणसदाणं एगूण-चामभागवाहल्लं जगवदरं होदि १५८। उविर रज्जुविवरांभेण सत्तरज्जुआयामेण क्रमुणज्ञोषणपाहल्लेण हिदवादखेणं जगपदरपमाणेण यदे ति-उत्तर-तिसदाणं वेसहस्त-वेसद-चालीमभागवाहल्लं जगवदरं होदि वेदे । एदं सच्यमगत्य मेलाविदे चउवीस-कोडिसमहियसहस्प्रकोडीओ एगूणवीसत्तरस्य नेसीदिसहस्य च्युसद्स्य नासीदिजोपणाणं णव-न्नाकतम्बद्धम्यस्य स्थापनार्थः स्थापनार्थः स्थापनार्थः चयपदरं होदि <u>रस्तर्भरकाः</u> सहस्य-मुचस्य-सहिरूयाहियलक्ष्याए अवहिदेशमागवाहरूं जगवदरं होदि <u>रस्तर्भरकाः</u>

रूप से ऊर्थलोकके पूर्व और परिचम दोनों ही पादगींमें स्थित वातसेत्रको जगमतरममाणसे करने पर पांचसी मठासी योजनीके उनवासय मान वाहस्यकव जनमतर होता है।  $3 \times 3 = 2$   $1 \times 2 = 8$ 

उदाहरण-१+१=६। ६÷२=३। ४२ × १४ = ५८८ इसे जमप्रतरप्रमाणसे करने पर ४९ वा माग देनेसे जितने मेदेश हो उतने जगमतर सन्य आते हैं। यहाँ उत्पंत्रोहके पूर्व और परिचय हो दिशाओं के वातरद्ध क्षेत्रका घनफल है।

होकके उपस्मि मागमें एक राजु विकासकपते, सात राजु भाषामकपते, कुछ कम ाकत प्रवास्त्र भागत पत्र पत्नु भागतपत्र पत्न पत्नु नामात्रकात् उप गर्न इ. योजन यादरवक्पसे स्थित यातसंत्रका जगप्रतरप्रमाणसे करने पर तीनसी तीन योजन गिके दें हजार दोसी बालीसर्व भागममाल बाहत्यक्त जगप्रतर होता है।

उदाहरण —१×०×१२३ ∸ १ = ११३३ यहाँ लोकके भग्नसामके यातध्यक्षेत्रका

इस सर्थ धनफलको पक्षित करनेपर पफ हजार कीकीस करोड़, उद्योग साब यमफल है। नेरासी इजार चारसी सत्तासी योजनीम एक लाख नी इजार सातसी सालका माण देनेपर जो एक मान रुष्य भाषे उतने योजनप्रमाण बाहरपरूप जगवतर होता है।

251850- 388 - 388 - 382 - 86 - 5980 - 106050 106050 - 10625 + 8560 + 455 + 303 - 106056 योजन बाइस्यरूप जगप्रतर लोकके चारों भोर पातरद्वसेत्रका धनकल होता है।

र आहरूत्र स्तरा जेपण चारत य बातभुजवता । बन्दा त दु रूप्पर वच्चेर वर्षण ताव ह्र यथा gigiferig 410at innunient i ett e nigifet tir in tineretti "ife ett ett. . पार्ट्सिस र तु द्रान्तरणवात्तिहसदसद्यो स्थानिकट कर कत्रद्रावयसवर्षा दृष्ट्यात्रम् ॥

f tit und after tutter auf fatt and an en ten ind 3 medet f ut सप्तरपति मदयत्वरस्तित्वस्थान्य द्वा सन्द दारावद्य क्षण्य आवद्य तदावन ॥ व. सः ११९-१४०

461 एदं वादरुद्धक्षेत्रं घणलोगम्हि अविणदे पदरगदकेविलखेत्रं देखणलोगो होदि। एरं पद्रगद्देक्वलिखेनमधालागमाणेण कदे वे अधोलोगा अधोलोगस्स चदुरुमागेण साहितीन ऊजया । उड्ढलेंगपमाणेण करे दुवे उड्ढलेंगा उड्ढलेंगस्स तिमागेण देखणेण सादित्या।

लोगपूरणगदो केवली केवडि खेत्ते. सन्वलोगे ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरहएसु मिच्छाइडिः पहुडि जाव असंजदसम्माइडि त्ति केवडि सेते, होगस्स आंते जदिभागे' ॥ ५ ॥

इस पातरुद्धसेवको घनलोकमसे घटा देनेवर प्रतरसमुद्धातको प्राप्त केश्लीका से इ. इ.म. होक प्रमाण होता दे। प्रतरसमुदातको प्राप्त केपलीका यह क्षेत्र मधीलोहे प्रमानकप्ते करनेपर कुछ मधिक अघोठोकके चौथे भागसे कम दो अघोठोक्यमाण हैत दे। तथा इसे ही उप्पेटोकके प्रमाणकपसे करनेपर उप्पेटोकके कुछ कम तीसरे मागसे मधिक दो उर्धलोकप्रमाण होता है।

विशेषार्थ - जगभेणीके जितने मरेश हो उतने जगमतरप्रमाण सर्व होक है। इस्वेत १०११९८११ योजनप्रमाण जगमतरोंके घटा देनेपर प्रतरसमुद्धातको प्राप्त केवलीका भेर होता है। अधीलोहका प्रमाण १९६ घनराजु है, स्सलिय यदि इसे अधीलोकके प्रमाणकपरे हिंग जाय नी दो मधीना बनाज ६२६ धनराजु है, इसालय धार्त् इस अधालकक ममाजकता करिक सधीना हो के प्रमाण ३५२ धनराजु भामते (१००४१८४४४) योजनवमाण जनवन स्थित सधीना हो स्थाप भागमाण ४९ धनराजु धटा देनेपर प्रतरसमुद्रातको मार्घ कर्यक्ष देख भा जला है। उपाजनिक स्थाप धनराजु घटा देनेपर प्रतरसमुद्रातको मार्घ कर्यक्ष सेच मा जाना है। उर्णेटीकहा प्रमाण ४५ घनराजु घटा देनेपर प्रतरसमुद्रातका प्राय कर्णेटीहरू सेच मा जाना है। उर्णेटीकहा प्रमाण १४७ घनराजु है, इसलिये यदि इस शेवकी कर्णेटीहरू क्रमाजकपूरे किया आप तो उत्पंतीकरे यक तिहार प्रतराह ७९ मेरे हाराहाला बोडबदमान जगदनरोंको घटाकर जिनना दोष रहे उसे दो ऊर्प्यलोकक प्रमाण १९५ प्रताह ब्देंचे ब्रोड् देनेपर प्रतरसमुदातको प्राप्त केयलीका क्षेत्र वा जाता है।

हो इत्रवसमुद्रातको प्राप्त केवली मगयान कितने क्षेत्रमें रहते हैं। सर्व हो दे eri fi

जादेशको जरेया गत्यनुवादमे नाकगतिमें नारकियोंने मिष्याहरि गुणायुन नेहर अमेपनमस्यारित गुगस्याननक प्रत्येक गुगस्थानके और किनने धेत्रमें सर्वे रोहरे बर्गस्यातरे मागवमाग शेवमें रहते हैं ॥ ५ ॥

र राजस्य देन सम्बन्धी बर्गाट कृषियोद सम्पद्माचे पहुँदै नुपरवारेण बोदरवादरवेदबाना है. है वे

एत्य ' आदेसेग ' गहणं जोपपडिसेषफलं । गदिगहणमिदियादिपडिसेडफलं । ર, ષ. 1 गुवादगर्णं सुत्तस्स अकडिद्वचपरूचणफले। णिरयगदिणिदसा देवगदियादिपडिसेयफला। इएसु वि ययणं तत्पतणपुरुविकाइपादिपडिसेयफलं । सोगस्त असंसेज्जिदिमागे इदि

ने संसरोगाण क्यं गहण होरि ? ण, रोच-फोसणसुचाण देसामासिगचादो । संपदि सत्याणसत्याण-विद्वारवदिसत्याण चेदण-कसाय चेउच्चियसमुन्पादगद्-मिच्डा-हुं। केवडि संखे, चदुण्हं लोगाणमसंरोज्जदिमागे, अहारज्जादो असंरोज्जगुणे । एदस्स त्रस्यपरुवणहुमेत्यानाहणा चुचदे । वं जहा- पटमाए पुटवीए पटमपत्यडिन्ड चेनह्याण-मुस्सपो तिल्वि हत्या। तेरहमपत्पडे सत्त पण् तिल्वि हत्या छ अंगुरुाणि मेरहपाण-

मुस्सेघो होदि'।

मुद्र-भूमिविसेसिव दु उन्हेड्भजिद्ग्हि सा हवे बड्डी । बड्डी इण्टागुणिदा मुहसहिदा सा पळं होदि ॥ १७ ॥

हुस सुदर्म महेरा पृत्रके प्रहण् करनेका पाल भोषका प्रतिमेष करना है। गति पृत्रके इस स्टम्म मानूस पर्व मानू मानून परिवार करना है। अनुवाद पर्क महूच करनेका पत सुनक अन्तर्भुकत्यदा प्रकृतम करना है। नरकमात यहके निवृद्ध करनेका फल देयमात आदिका प्रतियेय करता है । नारकियोंमें इसप्रकारके द्यानके देनेका कल व्हांके क्षेत्रमें रहनेयाले े चिवीकायिक सादिका प्रतियेध करमा है।

शुंका - होक के क्षरं स्थातमें भागमें रहते हैं, केयल इतना बहनेपर रोप होकोंका

समाधान-नहीं, वर्षांक, शेत्र और श्यांत अनुयोगद्वारके खत्र देशामशैक हैं, इसलिय 'लोडक प्रश्नवपार्थ प्राप्त रहत हैं । इतने पदके बहनेसे दोष लोडांका भी महण अब विदाय पर्वोची अपेशा मिरणारिंग्ट नारकियोंका शेख करते हैं — स्वस्थानसस्यान,

विद्वारयस्यस्यान, वेदनासमुद्यात, बदायसमुद्धात और वैविविकसमुद्धातको प्राप्त हुए सिध्या-हो जाता है। रिश्व नारकी जीय वितन दोवम रहते हैं। सामान्यतीक आदि बार होणेके असंस्थातवे भागप्रमाण क्षेत्रमं रहते दें और अव्यव्याप्यमाण प्रामुणतीवते संक्यातमुखे क्षेत्रमं रहते हैं। / अव इसके अधेक प्रस्तवा करते हैं विष यहांवर तारांक्योंकी अवगादना करते हैं !

यह हसप्रकार है- पहली पृथियंकि पहले पायवेमें नारवियोक्त उस्तेय तीन हाप है। तरहरें पायमें तात धनुष, श्रीत होत और अधुर नारहियोंका उस्तेष है। अधिमें मानको प्रस्कृत करियों के अधुर नारहियोंका उस्तेष है। अभिमंत मुलको घटाकर अस्पाका भाग देनपर जो सम्प्र काय यह वृद्धिका प्रमाय

होता है। अब जिस पटलके नार्वशोंक असंघवा प्रमाण साना हो उसे एक्या मानवर उससे

र क्या लिख्दर इ अनुवालि वयनो दृशीर भागाना वाल्टिट्स्याट उद्भागति स व, यूर » दरण्यमार marko birram XX हर्र।(हाल्य XX) व्हांत्ये ठत घडून (हण त्रण व) वय अटुलपुर ब्रोसाले हे, फे

गरीत शास्त्रत नेततः

एदी	ए ग	हाए	सेसए	कारस	परथः	डणेरइय	णिमुर	सेघा ः	श्राणेय	खा	तास	92 9
'त्रस्तार	?	२ ∣	ą	S	4	<b>ξ</b>	Ø	6	91	20	31	9 8
धनप		?	2	२	ą	३	S	8	٠	5	9	0
इस्त	3	१	ર	२	۰	٦,	1	3 3 3	3	20	,3	213
अंगुल	•	૮ર્	१७	33	१०	१८३	3	1883	२०	• 3		<u>.</u>
·											•	

वृद्धिको गुणित कर दो, स्रोर मुखका प्रमाण जोड़ दो। इसका जो फल होगा वर्षा प्रिका पाथहेके नारकियोंका उत्सेघ समझना चाहिये ॥ १७॥

त्रिशेषार्थ — यद्यपि हितीयादि नरकॉर्मे प्रथमादि नरकॉर्के अन्तिम पटलेके नारक्षिण उत्सेष मुख हो जाता है, परन्तु प्रयम नरकम पहले पायरेके ही नारकियाँका उत्सेष मुख अतपय उक्तः गायाके नियमानुसार पहले नरकके पहले पायहके नारकियाँहा उन्हेब व निकाला जा सकता है। पहले नरकम पदल प्रमाण १२ और रोष नरक्षण है जितने पायहे होंने यहां उतना पदका प्रमाण रहेगा। यहछे नरकमें दूसरा वावझ पहला यन्तिम पाथडा बारहवां गिना जायगा ।

उदाहरण--प्रथम नरकमें मुखका प्रमाण ३ हाथ और भृतिका प्रमाण १ ह रेहाथ, ६ अंगुल होता है। एक घतुपर्मे ४ हाथ, और १ हाथमें २४ अंगुल होते हैं। प्रमाणके अनुसार मुखके अंगुल ३ ×२४=७२ तथा मृत्रिके अंगुल ७×४+३×२४+६० हुए । उक्त गायानुसार इसकी प्रक्रिया करनेपर ७५० – ७२ = ११९ =५११ झं. = न

= २हाच ८५ अंगुल होते हैं, यह प्रथम पृथियों के प्रति परलमें बृद्धिका प्रमाण है। बय यदि हमें प्रथम नरकके पांचर्य पटलका उत्सेघप्रमाण निकालना है तो प

नियमानुसार ५६१ अंगुलको ४ से गुणितकर प्रथम पटलके उत्सेषका प्रमण उसी देना चाहिये। -१3 × १ + ७२ = २२६ + ७२ = २९८ से. = १२ हा. ११ = ३ घ: १० झं. यही प्रथम पृथिवीके पांचये पटलके नारकियोंके उत्सेघका प्रमाण है।

इस उपयुक्त गाथाके नियमानुसार पहले नरकके पहले भीर तरहवें पाप हैं। रिक्त दोष ग्यारह पायदेके नारवियोंका उत्सेष छे बाना चाहिये। उन अवगाहनामी श यह दे-(देखी मृतका नकशा)।

१ प्रतिपु देवत्रपञ्च एव निरिद्धाः न प्रस्तागदिवदानि । तानि त द्वरोधार्यसमापिः हर्वर विकित २ रदणसर्वारि वदश्री संस्वतासवस्थात । तान त सम्मायसमामः स्वरं बीरिय स्टब्स्टारिट्यम राविषया । सुरुविदं किरिह्दे वियविषय्ग्रीस वर्षेत्रो ॥ स्विष्यां वृत्रे स्टिह्दे देविष रक्षरे । सरविद्रो किरिह्दे वियविषय्ग्रीस वर्षेत्रो ॥ स्विष्यां वृत्रे हिंदे ट्रिक इचार । बहुदावि बहुदसार किरिट्ट विविधिताही उपने है । साविधा । इपिट्री हिस्सी विद्वादि बहुदसारि बहुदसारी हिस्सी य है प्रसम्बद्धार असार्वहरूर है हैं।

द(दटावि च रुप्देश B दिव दश दो हथा अहारि: बंदडानि पजर्द । संरोतनामर्ददाप्देश दार्ग

149

विट्रियपुरविष्कारसपत्यढे णेरह्याणमुस्सेघी पृष्णाह घणूणि वे हत्या वारह ١, ٩, ١ गुलाणि । संसदस्वरचडणेरदयाणसुरसेषो पुष्टिक्लगाहाए आणेरच्चो । तेसि पमाणमेर्द

विद्यपुद्धानस्य मान्यामा विवल्लगाहाए जागर मा	
विदियंद्रवायस्य हुनेस्याणमुस्सेयो पुन्तिन्तराहिए जानरः ।। गुलाणि । सेसदस्य त्याहणेरस्याणमुस्सेयो पुन्तिन्तराहिए जानरः ।।	
1 2 3 8 1 00 103 185 185 188 (8 19)	
	١
वात रहे रहते हिंदरी रहती है विकास कर कर कि है	•
	π

हुसरी पृथियोके स्पारहर्षे पायहेमें नाराकेषोका उत्तरेष पन्द्रह पतुप, दो हाय, बारह श्रुवर श्रुव्यक कार्यक निवास कार्यक प्रतिक सामाक निवमानुसार अंगुरु है। प्रयमादि दोच दुर्ग पायहाँके नार्राक्ष्योंका उत्सेष पूर्वीक सामाक निवमानुसार हे आना चारिये। उन अध्याहनाओं श प्रमाण यह है - (देखी मूलका नकता)।

विशेषाप-रस दूसरी पृथिवाम मुखदा प्रमाण ७ घतुप, १ द्वाप, ६ भगुल मीर भूतिका प्रमाण १९ घतुण, २ हाच, १२ बांतुल है। तथा, प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण २ हाच, ၁०१९ संग्**र है**।

सारी बातानि कवाबोर्ड व अंद्रकानि वि । होदि असंबंधिदिवादभी परवाह पुरवीर हा बराती बोर्दवा पर हथा बंदलानि टेरेंसे । दीक्षानि होदि बदको विम्मंतवणानि परलम्बि ह येव थिय घोदेश एको हत्तो व ्र पुणानिक विश्वस्थित वर शे. पत्रवरी परसही परिश्वस्थित । ७ दिव कोर्टमापि पत्तारी अंद्रवानि पसर्दी । उन्हेरी वाहरणी परवित्व व ततिरवाहरित ॥ वाषावणांति व थिय दो इया तेस्संद्रव्यायि है । वस्त्रवासपरे उपकेरी प्रवपुर्वार ॥ वत व सामानि बहुत्या प्रवीत पार्द । प्रतिम य वच्छी होदि अवरंग्यासिन ॥ वय Riconalife हमाई तिल कब बंद्रवं । पानिरयीम बदको विकेत परमपुर्वन् व ति. प. म. १६८-१३०. र होबाए ×× बर्गे हेर्व पन्यस्य चपूर्व अङ्गाहमात्रो स्पर्वात्री । जीवानिः १, १, १४.

र दो इचार्रालंडड एसालविटर दो दि चलारं। एसारे पहुरेजी स्त्तादिदे होंने उत्तर्यहो स बह दि-क्षित्रवयात्रि को इसा अटलावि वश्योतं । युवास्त्राविदारं उदरी पुत्र विदेववद्यात् ॥ वर देश वारीवेटलावि वृद्धातिम चुन्दर्भ । मञ्जाभी की मानी शिदिर व्याग उन्हेरी इ तर देश तिव इन्हें चन्द्रसार वनाति प्रमानि । एकासम्प्रदेशक उरको समस्दारिक जोरण इ. दस देश को इत्त प्रमानि कर अध्य ह । व्याकेट मिन्ना बदनो तमनियमित्र विदियण ता व्यात च वाले एको रची दर्वहताचि वि । व्यातहिदरहता करशे पारित्याम सिर्वेशए । बास साववानि वनाने अद्दर्श होते । एवरव महिरानि सबरे बास्यन व्यक्ति शास साववाम विष स्था क्रिक अदुतान र । त्याविष्यामाश वस्त्री क्रिन्यमान करणा व व शा तेवाला अवताचे पणनाणा । एकास हे मांद्रणा विभागववविष वाकेशे । चेवत द्रश क्षीतमञ्जानि दोवदानि प्रनानि । एकासम्मित्राह रूरेन्द्रप्रिम उपदेशि एकंचनाई इसा प्रवस्त अपूरानि भर कारा । एक्शिसक् अभिक्षा सोक्षण कांस उपकृति है पाल्यक्षे कोदश की हुआ। बास्तुकालि च । अहिस्पहर्त बन्दीकगाभ्य विदिवास उच्ही ॥ ति. प २, २३१-२४२.

त्तदियपुटविणवमपत्यडिन्ह णेरह्याणमुस्सेघी एकसीस घण् सेसहपरवडणेरहयाणमुस्तेघो पुच्चिल्लगाहाए आणेदच्यो । णवरि एर

सहत्याणि भूमी होदि। पण्णरस धण्णि वे हत्या बारह अंगुलाणि : सर्द सोहिय उस्सेपेण पानिह मांगे हिंदे बड्डी होदि। तं विद्विं पानस ट

ष्याचरेहि गुणगारेहि गुणिय मुहम्मि पश्चित्तं हथ्छिदउस्सेधो होदि । २ | ३ । ४ | ६ चतुप १७ १९ २० २२ २४ २४ २६ २० २९ इस्त १ ० ३ २ १ ० ३ २ अंगुल १०३ ९३ ८३ १४ २३ १३

घउत्वषुद्रविसत्तमवत्यहणेरहयाणमुरसेघो वामही घण्णि वे हत्या

दीतरी पृथियोक नीय पायड्रेमें नारकियोंका उन्तेय इकनीत पनुष दै। होर भाट पायहाँ हे नारकियाँका उन्तेच पूर्व गायाके नियमानुसार है ह इनजी विदोचना है कि यहांतर इकनीन धनुत्र और एक हाथ मृति है। पण्डह प

कीर बारह अंगुल सुम है। भूमियेंने सुलकी सहाकर उन्तेष (यह) नी का वृद्धिका प्रमाण पाना है। (नीमधी पृथिवीमें प्रतिपटन वृद्धिका प्रमाण १ धतुन, देर्दे बंगुल है।) इस मृद्धिकों भी स्थानीम स्थापित करके एक मादि पर्शेत्रर युन्ति बर्रेड मुख्ये मिला देनेपर इन्डिएन पायहरू मार्शक्योका उत्मेध माना ममाल बर है- (देशी मृत्रहा नहता।)।

Red : Breeze Average Car S. C. A. C. A. C.

बीधी द्वीवर्षाह सानवं वायहमें नागहर्वोका उन्मेश वामठ धतुन भीर दो है देखार अञ्च दनदोवन प्रदर्शन बहुद एक्डा स्वको । ग्रेकालि, है, है, १२, ६ दृश्य बच् दो इंचा वारीन अनुनान ही बारा । जननानद भाषां समार शास्त्रहीया

चेचाचे चर्णान बहुदान हा बाला। निवसीवा बच्छा उद्देश नामद्वापन नावण हा प्रकारतन दार हैदकाने तिहेशन । तनारहकान्य तरिकास्त राष्ट्र माध्यम राष्ट्रगा । वसहत्र दहकार्य कारण बहुत en balle ver geen geweene wie eren gie lieben bat tee fen nicht aufen ber

chart to be course lived to in the co

्रित केतान्त्र प्रताहतीत्र याणावरते हो आवेत्रहरो । तस्य प्रसाणावेदं ---

प्रस्तार		२	, 3	. 8	4	Ę	U
धनुष	34		88	86	વિંે	40	६२
इस्त	3	•	*	•	3	۰	₹
अंगल	₹05	80%	\$ \$ ¥	800	£ 3	3.3	٥

पंचमपुद्दविपंचमपत्यडणेरद्याणमुस्तेधा पणुबीसत्तरसद्धणाणि'। एदं भूमि करिय व्यवहर्ण्ड पत्यहाणमस्मेधी आणेदच्यी । तेसि प्रमाणमेद--

•	प्रस्तार	1	२	₹	8	4
	धनुप	७५	७১	१००	११२	१२५
	इस्त	۰	२		9	

इसे भूमिरुपसे स्थापित करके द्रीप छद्द पायड़ीमें नारकियोंका उत्सेध के आना चाहिये। उसका प्रमाण यह है- ( देखी मुलका नकशा )।

विशेषार्थ-इस पृथियीमें मुख का ममान ३१ धनुष, १ हाथ और भूमिका प्रमाण ६२ धनप, २ हाथ है । तथा, प्रतिपटल युद्धिका प्रमाण ४ धनुष, १ हाथ और २०५ भेगल है।

पांचर्या प्रधियोक्ते पांचर्य पाथहेमें नारकियोका उत्सेध पक्की प्रस्तीस धनप है। इसे महिद्दपरे स्थापित करके दीय चार पाथकोंके नारविधोंका उत्सेख के आता चाहिये। उसुका प्रमाण पद है— (देखी मूलका नकशा)।

विशेषार्थ-वांचवां पृथिवोमं मुलका बमाण ६२ धनुष, २ हाथ और भूमिका प्रमाण १६५ धनुष है। तथा प्रतिपदल मृद्धिका प्रमाण १२ धनुष भीर २ हाथ है।

९ चढ बढा दिन होते व्यवस्थि बाँछ सत्त पाढिहला । चढ माना तुरिवाए पुरवाँए दाशिवदीओ ॥ पणतीनं देशप राषात होर्गण कीम पाषानि । सत्ताहिया चत्रमामा उद्यो आहिदाच अजाण ॥ चालांसे कोदश बीसमार्टेश्चं सम च पत्थाति । सलादि उन्देही तुरिमाए मारवहतजीशन । चउदाले चानानि दे। हत्या अगुलानि क्रमहरी । समृद्धिः व्यक्ति सारिद्यमविदान जीवान ॥ एक्कोन्यक देश बाद्धिः अग्रला व सम्दिदा । वस्टिद्यन्ति तिसिक्छीचीए कारणाय उन्हेंही ॥ तेवण्या बावार्ण दो इ या अहताल पन्नाण । सलहिदाणि उदधी दशागिदय-सहिद्यान जीवान ॥ अट्टावण्या दवा सत्तविदा अग्रता य चंद्रवीय । दा दटयाँच तुरीसक्सोनीय नाश्यान करणहा ॥ ainel eine gule gifen ginggerig : wiefnaufin tiemennin mittin 3.bel & ft. v. t. t. t. t. ३ पुचर्बाए 🗴 पणवीस धणस्य । जीवासः ३, २, १२.

३ व स्त हराहणा ण दा हत्या पचर्माय पुरवाय । सयव ्रीए पमाण लिप्टि वर्षिर एडि ॥ पणहत्तरिपरिमाणा कोटका चलकोत् पृद्दाः । पदानिद्वानि उदाने तदलाने साटदाण जानाण ॥ सलासन्दी दक्षा दो हथा परयोष् क्षेत्रंत । पहत्वकित व सम्मामे नात्यक्षांदाण उच्छेही ॥ एक्क कोदरण्य समनाव नात्याण सन्द्रशी भावाचि

छट्टीए पुढवीए तदियपत्थडणेरइयाणमुस्तेघो अट्टाइन्जमदघण्णि । एरं भूमि करिय सेसदोण्हं पत्यडाणमुस्सेघो आणेदन्त्रो । तस्य पमाणमेदं--

प्रस्तार ।	१	२	3
घनुप	१६६	२०८	२५०
इस्त	ર	१	•
अंगुल	१६	۵ _	

सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणमुस्सेघी पंचसद्धण्लि ।

तेसि पमाणमेदं--एत्य गेरहप्स उस्सेयअट्टमभागो विक्संमो ति कड् परिट्टयमर्द्ध कीय विक्सं मद्रेण गुणियुस्सेहेण गुणिदे णेरहयाणमोगाहणा होदि । ओगाहणं पढि सचमपुर्वी

एठवां पृथिवीके तीसरे पायड़ेमें नारिकयोंका उत्सेच दाईसी घतुप है। इसे मृक्षि इपसे स्थापित करके दोप दो पायड़ों के नारकियों का उत्कोष छे जाना चाहिय। उसका प्रमाण यह है-(देखे। मृलका नकशा )।

विश्लेपार्थ — छडी पृथिशीम मुखका प्रमाण १२५ घतुप और मूमिका प्रमाण २५० धतुप है। तथा प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण ४१ घतुप, २ हाय बीर १६ बंगुल है।

सातर्पा पृथियोके नारकियोंका उत्सेघ पांचसी घतुप है। उसका प्रमाण यह है-

(देखे। मृलका नकशा)। यदां नारिकयोमं उत्सेषके आठवें मागत्रमाण विष्कम्भ होता है. येसा समझकर, विष्कृतमारी परिधिकी आधा करके, और विष्कृतमके आधेसे गुणित करके उत्सेषसे गुणित हरनेपर नारहियाँकी अथगाहना होती है। अवगाहनाकी अपेशा सातर्यो पृथिची प्रवान है।

बारदरासम्बद्धेक अंपर्यित दो इत्या।। एनके कोर्टरसर्व अभादिन पंचरीतस्विहि। भूमणहर वीर्शिटर्विट द्वित्ववृद्धि उच्छेही ॥ ति.व. २, २६१-२६५.

१ डहाँगु × अङ्गारम्बाइं धनुषवाई । जीवानि ३, २, १२. २ प्रस्तालं देशाह चारं दोनिन को उनंदटना। कट्टीर बढ़शार परिमानं हानिवडूनर व बानट्टी अधिवनरे कोरंग

द्वीत्त्र होति ह्वा व । बेटन बचा व पूर्व वित्युटनद्वान उपनेहो ॥ दंगिन सवाणि बहुउन दशाने बहुउन च । वर्णानं करीर वरदरिदर्जीवरवर्षेत्री है पण्णावध्यादेवाणि दोणित क्यात्रि करावणानि च । हर्ष्टरणात्रद्दर्शरेटच ब्रीबाल उपवेड़ी हा ति. प. २, २६६-१६९.

३ स्टब रू× पंदभन्तदाई। जीदानि, ३. २, १२,

प्र वंबतवार धर्मि सण्यमानीर जावित्रामित । स्थिति निश्वामं कात्रकारी दिगारेती म £. 4. 2. 2...

प्पाणा, पटमपुरविजोगाहणादो सत्तमपुरविजोगाहणाए संखेरजगुणसुवकंभादो। दृद्यं पडि पदमपुरवी पहाणा, सेसपुरविद्रव्यादी पदमपुरविद्रव्यस्म असंसिव्जमुगणसुवलंमादी ।

क्षामाहणगुणनासदो द्वागुणनासो पहुनी ति पदमपुदवी पहाणा कापन्य । सामण्येण एत्य अत्यपदं गुचरे । सत्याणसत्याणसत्ती मृत्याविस्त संखेउजा भागा होदि । विहारिसत्याणचेदण-कताय-चेत्रव्यवसमुग्पादरासीओ मृत्यासिस्त संखेळादे-भागा । एदमत्यपर सन्यत्य जीजेद्वर । पुत्री अप्यप्यत्री शासीओ हिया अंगुलस भागा। पद्मत्यपद सन्भत्य आअद्वन। पुगा अप्यप्यणा राह्याआ अवग अपुक्सत संखेआदिमागमेचोगाहणात मुलित चहुहि होगोहि ओविटिरे चहुम्हे होगाणामसंखेऽअदि-भागो आगन्यदि । माणुमयंत्रेजायिटिरे असंसिज्जाणि माणुमसंद्रेजाणि होति । णविर सेयण-कमासेस जयाणां, वेजिन्यमसुम्यादे संखेज्मगुना ओगाहणा सन्वस्य काराज्यां।एवं वेयण-कमासेस जयाणां, वेजिन्यमसुम्यादे संखेज्मगुना ओगाहणा सन्वस्य काराज्यां।एवं मारणीतियपदस्स । णवरि ओवङ्कणं ठविज्ञमाणे पटमपुरविदल्वं पहाणं कायच्यं । इदो १ मारंणितपहि परिणद्ञीवस्स तत्व विगाहगर्देष् रञ्जुअसेखेवज्ञदिभागमेत्तदीहत्तस्त वि

क्योंक, परली प्रथियोकी अवनाहनात सातवी गृथियोकी अवनाहना संवयातगुणी पार्र कार्ता है। तथा प्रथम प्रश्निक स्थित पहली पृथिपी प्रधान है, क्योंकि, दिलीसाहि सेय छह पूर्विविविक प्रश्यमाणसे पदली पृथिवीका प्रश्य असंस्थातगुणा वाया जाता है। इसवकार स्तावर्षी पृथियोके अवगाहनाके गुणकारसे पदछा पृथियोके द्रश्यमाणका गुणकार बहुत बड़ा है, इसलिये यदांपर पहली पृथियोको प्रधान करना चाहिये।

बाब सामान्यरुपते पदांपर मर्धपदका निरूपण करते हैं - स्वस्थानस्यश्यानशाधी मृह्य नारकसातिके संबंधात बहुमागत्रमाण है। विद्वारयस्यस्थान, वेदनासमुद्रात, बजाय-समुद्राल, और विकिश्यकतमुद्रालको प्राप्त सारीयां मृतसालिके संख्यातयं भागप्रमाण है। यद मर्पेयर सर्वत्र औड़ हेता साहित । पुनः भवनी भवनी राशियोको स्पापित बरके, उन्हें अंगुल्के संख्यात्रय भागप्रमाण अयगादनासे गुणित करके जो स्टाप आये उसे सामान्य आदि चार लोकांते पृथक पृथक् मात्रित करनेपर, अर्थात् सामान्य आदि चार लोकांके, तात्रमाण चंद्र करनेपर, चार लोडोंका असंख्यातमा आत लच्च आता है। तमा उक्त प्रमाणकी मानुपालेक से अपवर्धित करनेवर अर्थान् उक्त प्रमाणके मानुपालेकप्रमाण् खंड करनेवर मानुपालका व्यवसार प्रतिकृति इसती विद्योतना है कि वहनासमुद्रात और इपायसमु-कार्यक्र स्थात संदेश संद्राहरणा में स्थाप संद्राहरणा स्थाप संदेश संद्राहरणा स्थाप गुर्जा कर लेना चारिये। मारणान्तिकसमुद्धातका कपन इसीयकार जानना चारिय। इतनी पुजा कर प्रमाण करते हैं कि अपयतिनाके स्थापित करतेपर पहली पृथियोंके द्रष्यको प्रपान करना चारिये, वर्गाक, मारणानिक समुद्रातेले परिणत दुव जायक यहाँ विमृद्दमतिमें राष्ट्रक । देरणानमृत्य एव समोहते 🗸 व(स्थिय जिल्हेर निस्तायसहरूतेच जियम ठार्स्स 🗙 प्रका. ६६, रेज.

स्रकेजनिमान वर्गक्तिम सास्र-जाति जापगाउ वृगद्दिन्तं विदेशन वा वृग्यय तस्य अरू रहा १६, १६

<sup>.</sup> ब्रानियसयुष्पायुण सम्रोहत XX सन्त प्रयानमध्य विश्वसम्बद्धारण, आयायेन जहुरुरेत अहत्वस एवं बतायलगुम्धातानि भागत ने। प्रका ३६, १८

उन्होंनाहो । तेन आवित्याएं अपंग्रेज्यदिमानमेचपदमपुद्रविज्यक्रमणकातेक केलेक न्द्रस्य अपंग्रेज्य माना विसाई करेंति । तीयं वि आसंग्रेज्य भागा मात्रंविषं केले वि । पुनी तनावित्यार अपंग्रेज्यदिमानमेचमान्गंतियज्ञक्रमणकातेक गृतिहे काले तिरामां अपंग्रेज्यदिमानमेचमान्गंतियज्ञक्रमांत्रेज्यदिमानि मात्रंविषं काले तिरामां अपंग्रेज्यदिमानि मात्रंविष् अपंग्रेज्यदिमानि मात्रंविष् अपंग्रेज्यदिमानि कालंकि काले प्रित्यपुद्रविद्यं माने दिदे तिरिक्तेंद्रिनी विदियपुद्रविष् उपाज्यमानिक काले तिरामहाने विश्व प्रमुख्य प्राप्ति अपंग्रेज्यदिमानि मानावार्त तिय काले वृत्ति विस्तानम् मानावार्ति तिय काले वृत्ति विस्तानम् वर्षेयाच्या प्रमुख्य प्राप्ति काले वृत्ति विस्तानिक वर्षेयाच्या प्रमुख्य प्राप्ति काले वर्षेयाच्या वर्षेयाच्या प्रमुख्य प्रमु

क्षक कर कर के अपन्यात्रक के विकासी पार्व आती है। इस्पिटिये भाषातीके असंक्यात्रमें आग्रागम कर है के का अक्काल में विश्वमायों महत्वाली शक्तिक आहित करके जो सभ का क रामके अव्यवनात बहुज सामात्म अभित शिवद्वी बहते हैं। समा इनके मी अर्थनात कर्तकणम्बल अंच वर्षः सम्मत्ने सारकानिकत्तम्यातको करते हैं। गुना इस बाउसी कर पर करें क्षात राज कार कार करने नकत्ममु सार्वक अपकास कारावानिक केन्द्रशाला होते हैं । इन अल्डेडवेंकि मुनाविलातने भी गुण राज्के अर्थनपार्थ शामि कातका अनकर एएका क्रांटन कर्रवार सारवाश्निकसम्वातकान होता है। प्राणामी कररकेर क क्यांचेत बरत्यार वार्यात्रयोग असंबदायते आगांव तुमरी पृतिमीर्धवस्थी तुम्रहे क्षा कर करेर तर कि विकेश मुख्यी पांत्रवीले कावल बीतवा र विकासिक श्रीव बीते हैं। इक कार्रेश्यांक अन्ध्यानी सामन्य गक मुख्या मागदार क्यायित करेक एक कार्य बामन बन्दर देवद ने मन्यानिकसम्यान्य समय देवियाँ निर्वेच मिलानी अप हे न हे. इन वह कुमर प्रशासिक मारुयानवें मानही भागहारक्षां क्यांति काबार - नर्डेरे व्हेर्याचन निवेद दूर वित्याग्रशीय मारणांतिक समुतात कार्य प्रति ह नवार अवेब अव्यानाव अव इ है है, वसा बतन बरमा आदिय, बर्गीक, सर्वेव शह कार कारावाहे पूर १५० रह कहा बाला है। यून वस इसावी नी मुत्री राष्ट्री मुक्ति प्तरंदोरी अस्तारकाच इक्तारकारण दरना मार्गरेष । यहाँ पर अपनातीन नद्शंद THE UT WELL

मार्ग्णविपरासिमिन्छिय दो आविष्ठयाए असंखेज्जदिमाचे अञ्गोज्यपुचे बारिय दुम्बरामिस्स भागहार ठविय तप्पाओनोचा आविष्ठाय असंखेजजदिमाएच गुविदे मार्स्णात्रयगसी होदि । सेसाविधी पुन्ते व । एवं सम्मानिस्छादिस्स । चश्रते मार्स्पात्रिय पि चारिय । असंजदसम्मादिस्य सामणमंगो । गवरि उववादो अस्वि । मार्स्पात्रिय-उववादेसु नैरद्दा सम्मादिष्ट्रणो संखेजजा चेव देवि । सेसं आणिय वचर्चा ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ६ ॥

द्वाहिषणपमवरंविय सुचं जदे। हिद्' वदे। सचाई पुद्रबीणं परवणा जोएएर-वणाए तृष्टिषि पढदे। पञ्जबद्धियणप् युण अवरंविकामाणे पदमपुद्रविषरवणा जोए-पर्यणाए तृष्टा, सम्बर्गणाणं सम्बर्गदेहि सिससुबर्वमादे। ण विदिणादिरं पह्रदरीनं परवणा जोपपरवणाए पदं पढि तुन्ता, सत्य अर्थवद्यममादद्वीणं उपवादामावादे। म सचमपुद्रविषरवणा वि विराजीयपरवणाए तुन्ता, मासणसम्मादिक्षात्वीवयद्दस्य अर्थ-

चाहिये। इतनी विशेषका है कि उनने उपयाद नहीं पाया जाना है। जह आपनानिन्द लगूदातकों भाग पांकि लानेकी इपया हो तब हो पार आपनाके सक्तेष्णकों आगकों पानवर्षः
प्रतिक पर के सिर देव पूर्वादाविक भागदार पांकित वर्षके उत्तरे दोग्य आपनाके अने
प्रयानयें भागते शुनित बरनेपर सारवानितवसमुद्रातको भाग पांकि होती है। दोष्ट निर्देष्ट
पारेके समान है। इसी परिवाद सारवानितवसमुद्रातको भाग पांकि होती है। दोष्ट निर्देष्ट
पारेके समान है। इसी पिरोपता है कि इनके सारवानिक समुद्रात की नहीं होगा है। अने
पत्तसम्बन्धि नारविक्रोंस प्रस्थानकावस्थान आहि साराइन्तरम्पद्रि नारविक्रों करवादान
स्वरंशन आहिये। इसी पिरोपता है कि इनके सारवानिक समुद्रात की नहीं हो है। सारवानिक समुद्रात की स्वरंग है। इसी विशेषका है कि इनके उपयोद पांचा जाना है। सारवानिक समुद्रात की स्वरंग है। सारवानिक समुद्रात की स्वरंग देवानिक समुद्रात की स्वरंग है। सारवानिक समुद्रात की स्वरंग देवानिक सम्बन्धि सारवानिक समुद्रात की स्वरंग सारवानिक समुद्रात की स्वरंग स्वरंग चारिये।

र्मीप्रकार साठों पृथिवियोंमें नारकी और सोकंस अमेरपाउदें मानामान्य क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ६ ॥

१ बारेपु : बदो हिद हरो हिद 'हरि दम ।

बदसम्माइट्टिमारणंतिय-वववादपदाणं च तत्य अभावादो । सत्तर्ण्हं पुडवी**षं जेनाहकान्त्रे** मार्ग्गनिय उत्रवादानं टविसमाणरज्जुभेदो दव्यविसेसो च वत्तव्यो । पदमपुद्रविमि व्यक्ति मारणंतियसे नं तिरियलोगादे। असंखेजगुणं । इदो ? पदांगुलस्स संखेजदिमागगुनिरहरू सेदीए संसे ऋदिमागेण गुणिदे तिरियलोगादो असंखेअगुणसुवलंभादो चि' एवपदेतवाँदै कार्न जा उकस्मेन सगुप्तिचरेसो चि मारणंतियसेनायामसमुत्रलंमादो । ण चरन निर्दे, महामच्छत्तेचहुाणपरुवणप्याहाणुववचीदो । तत्य जेण सेढीए असंखेजदिवानायानेन मार्जनियं करिय मरता बहुवा, तेग तिरियलोगस्स असंखेळदिभागतं घडदे ।

तिरिक्सगदीए तिरिक्सेसु मिच्छादिट्टी केवडि स्रेते, सन्न होए ॥ ७ ॥

एद्स्त सुधारम पुरुवणा ओधमिन्छादिहिपुरुवणाए तुन्छा । णवरि वेत्रशिष् गृहुन्याद्गर्श्वा विरिषतीमस्त असंरोज्जिदिमाम, तिरिक्षेमु विउन्त्रमाणसभी बान

न्दर्रिगंदरकी मारनानिक और उपवाद पदका समाय है। यहांपर सातों पृथिवियाँकी सन रूपण्या भेर, थीर मारणानिक तथा उपपादका स्थापित होनेवाला राहुभेद और पूर्ण कर कर करना चादिये। पहली पूचियांके मिध्यादियाँका मारणानिकक्षे िर्देश्टेंड से अर्थस्य नगुना है, चर्योक, मारणान्तिकसमुद्धातको मार राशिको प्रतासुबक् संकरण्ये प्राथन मुनित करक पुना प्राप्तेशीक रायपात्य मागसे गुणित करनेपर वियोगी बसे अध्यक्तमनुताक्षेत्र वाया जाता है। तथा एकप्रदेशसे लेकर उत्हृदकाने अवसे हरणालेड करेरणाच आरकात्मिकशेषका भाषाम पाया जाता है, दमलिये भी पहली पृत्रिके दिश्वलाहित का कारका निकास विश्वणीत ने अमंद्रणातगुणा है। और यह कथन अन्द्र की बहा है, बहाँ के, महामान्यके क्षेत्रक्शानकी प्रकरणा अन्यथा यन नहीं सकती है। वहाँगर कृष्ट अरथेरोड अमेन्यानवें जात आयामकवने मारणानिकतमुद्धानको करके मरनेवाहे को इ कर में हैं, इस्रातिये निर्यम्ही कहा अने क्यानयों भाग बन जाता है।

रिइंचर्लन्दे निर्वचोंने मिथ्यारिष्ट बीच कितने क्षेत्रमें रहते हैं। ता होडर्न

। छन्। के झुक

इस स्वरी प्रदक्त भौगीमध्यार्था प्रदक्ताके समान है। इनमी दिशेषना है वि देखेरिकसम्बन्धतं अस्त तिर्वेच औत तिर्वेग्लोकके असंब्यातते मागप्रमाण क्षेत्रमें स्र<sup>क्</sup> हैं , करोड़ि, निर्देशों वे शिवता बरनेवाली गांशि परशेषमा के असेवपान्यें मागमाच सनीपूर्वन

euren fein gienen 1

क क्रमणीटकपुण्य गर क्राम वर्ग लवकणकर्त विश्ववस्तरपूर्णण, क्राणवेले क्रमणीन सर्वतन्त्र सर्वेते वर्ण ad emilio anguero arrest greis preis at a a are, 11, to

दोवमस्स असंखेजजदिमागमेचेघणंगुरुहि गुणिदसेहिमेचो चि गुरुवदेसादो ।

सासणसम्माहहिप्पहुडि जान संजदासंजदा ति केनडि सेते.

होगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ **८** ॥

पटेण देमामासियसुचेण स्चिद्-अत्यो बुच्चदे- सत्याणसत्याण-विहारविद्मान्याज-वेदण-कसाय-वेउव्यिष्टि परिणद्यासणसम्मादिष्टी केविह सेचे । चरुष्टं होगाणम-संखेजजदिमागे, अहार्ज्जादी असंखेजजगुणे अन्दंति । रामियमाणं मण्यमाणे सत्याण-सत्याणरासी मुलराविस्त संखेरजा मागा। सेसरासीओ मुलरागिस्त संग्रेरजदिभागमेचीओ। णवरि वेउन्वियसमुग्यादरासी मृतरासिस्स असंरोज्जदिमागी । बुद्दी ? तिन्वित्रेषु विज्ञामाणजीवाणं पुत्रं समयामायादो । प्रथ औगाहणगुणगारे। संगेरजपूर्णगुरुभेची, एगएणैगंल वा ।

गणित जगधेनीयमाण है, वैसा गुरुवा उपदेश है।

सासादनसम्पर्टिष्ट गुणस्थानसे लेकर संवतासंवत गुणस्थानवक्क वियेच श्लीव किनने धेयमें रहते हैं है लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण धेयमें रहते हैं ॥ ८ ॥

भव इस देशामर्शक सुत्रके स्वित अर्थको कटने दे-स्थरधानस्वरधान, बिरार-यस्यस्थान, येदनासमुद्धातः वात्रायसमुद्धातः और धिव्रिविष समुद्धातकन्ते चरिकान सन्तरहत्वः सम्यग्दिए तिथ्य जीय कितने देखमें रहते हैं । सामाग्यलोक आहि बार लोकों से असंक्लान है भागममाण देश्वमें और अदादिविके अलंबयातगुणे देश्वमें रहते हैं। स्वरूपानस्थान अपि जन्त राशियोंके प्रमाणका कथन करने पर वयस्थानस्थायान जीवराशि शतराशिक संस्थान बहुमागप्रमाण है। तथा दीव राशियां मृतराशिके संस्थातमें भाग मात्र हैं। इतनी विरेक्त है कि प्रक्रियकममुद्रानको प्राप्त राशि महराशिके असंस्थात्वे आगव्याक है, क्योंक. तिर्धेयोंमें विकिया करनेवाडे जीव प्रचुर संभव नहीं है । यहाँ वर अवगाइनाका गुनकार संब्यात धर्मानुरुप्रमाण अथवा एक घर्मानुस है।

विश्वेषार्थ-पदां पर भवगाहनाका गुलकार को शंक्यान बनागुल अधका यक्ष प्रमाणात बहा है जसका यह आब प्रतीत होता है कि पंचेरिह्यपूर्णत तियबाँकी उन्हर अक-शाहता संख्यात धर्मागृत प्रमाण होती है, अना उसका धरफत लानेके दिए अवगाहकका शुणकार भी संस्थान बनोगुल दी देशा। विश्व बरायमान निर्देशीकी कथन्य अवस्थान सनीतालके शंक्यात्वे भागप्रमाण ही है। यदापि इनकी सम्बार, बीहाई और जेकाका प्रमन पूचक उपदेश भाज नहीं पाया जाता है, येसा रपष्ट श्रीत्व शाम्मटसारकी जी. म. टीकाकारेब

g niergent bu nettelle minniellet ! felteften frem ammaber ein u am-बेक्टेन्ट्राइक्ट्रिट्ट्रहर्ट्ड्र केट्रेसिट्ट्र हु। बेट्डिट्ड्र्ड्ड्ड्ड्र क्ट्रेस्ट्रिट्ड हु विद्यानि को अर्थ वस्टब्ट्स्ट्र

सासणसम्मादिही केविड खेते ? चदुष्टं लोगाणमसंखेजबदिमागे, अड्डाइज्बादी असंहे गुरे अच्छीत । ओयराक्षिमावलियाए असंखेजजदिमागेण मागे हिंदे मरतसासण इंद्विरासी होदि । पुणा वि आवित्याए असंखेजनदिमागेण' हरिय रुव्गेण गुणिदे म विषसप्तरमादगदरासी होदि । पुणी वि आवित्याए असंखेळजदिमागेण मागे हिदे मेचायामेन मार्गावेयसमुग्यादगद-एगसमयसंचिद्रासी होदि । तमावतियार अ चबदिमागेन गुनिदे तक्कालसंचिदरासी होदि । एदं संखेजबपदंगुलगुणिदरम्बए गु

मारपंतियक्षेत्रं होदि । एवमसंबद्-संबदार्शंबदाणं । सम्मामिच्छाइट्टीणं मारपंतियं गरि उपवादगदसासणसम्मादही केवढि खेचे, चदुण्हं लोगाणमसंसेज्बदिमांगे, अ न्डारी अमेरीज्ज्ञगुणे । एत्य राक्षिपमाणमाणिज्जमाणे मृटरासिमावित्याए असंतेर

किया है, तो भी उनके धर्नांगुलका प्रमाण उत्तरोत्तर संस्थातगुणा कहा है। यहांपर दंगे पर्याजकारीकी अध्यय भवगाइमा एक्यार संस्थातसे माजित धर्नागुल प्रमाण करी र्शमधनः धवलावारने उसी जयस्य सपगादनाके यनफलको दृश्मिं रसकर 'यह पर्ना

इमीवचार सम्यन्मिच्यादृष्टि, भर्मयतसम्यग्दृष्टि और संयनासंयत निर्देशीर वेषस्यातस्वरयातः मादिके विषयमें समहाता खादिये। मारणानिकसमुदातको मान बारगादनसादन्दाप्रि निर्वेच किनने क्षेत्रमें बहते हैं ! सामान्यक्षेत्र माहि बार सी असं करान्य सामप्रमाण क्षेत्रमें और अदृष्टिशीयमें असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। मोधार्ग व्यवस्थित व्यवस्थात्वे मामने माजित करने पर मरनेवाली सासादनसम्यादरि निर्वेदा होती है। किर भी बावफीके असंस्थानयें सामसे माजिन करके यक्त कम उससे गुलित प दर इत्तरमान्त्रिक्समुदानको प्राप्त गादि। होती है। किर भी भाषणीके समेक्यानवें मा क्षण्डित करें पर राष्ट्रकाच कायामधी क्षेत्रका मारणानित समुद्रातको प्राप्त वक्ष सम के बन बीदराद्वा होती है। इसे मावलीके भनश्यातये मागमे गुणित बरने पर माश्याति क्यूहरू हे बार्ट में बिन हुई रक्षी होती है। इसे संब्धान प्रतरीतुरोंने गुणित रातुर्प है बरेब दर मार्क्सिक क्षेत्र होता है। इसीवनार सर्गदमस्यारिक और सदमार्गयन निर्देष कारणा निष्म मुद्दान्थे विषयमे बहना चाहिय । नाम्यामाध्यात्रहियाँहे मारणा निष्ममुहे ₹° ₹°3° ξ1

दरप्रदेश प्रान्त सामाद्वमध्यार्थाष्ट्र निर्यय दिनने क्षेत्रमें रहने हैं ! सामागरे कार्न् बार शेष्टीचे अर्थकरान्त्रे साग्यवाल क्षेत्रमें और अद्वार्रहींगीरे सम्बंधानमुने क्षेत्रवें हैं। है। दहाँ दर मामावरमध्यादि विदेवींदी हपात्रादिमा प्रमाण सारे पर मुक्ति माएण मागे हिदे उपज्जेमाणसासणसम्माइहिरासी होदि। युगे अवरेण आवित्याएं असस्वेडजादिमाणेण भागे हिदे रुपूणेण गुणिद विन्माइगईए मारणतिएण उपप्जनमाणसभी होदि। संखेडजा मागा मारणीवियं काद्रशुप्यज्जीति वि के वि मणित, एदं जाणिय वचर्जा । वार्षिय एरच मञ्जूषियमा । तमावित्याएं असंसेडजादिमाणेण मार्गा हिदे उज्जुद्दा आगस्यमाणसभी होदि। एरच अपेडजादिमाण्य संखेडजादिमाण्य मार्गा हिदे उज्जुद्दा आगस्यमाणसभी होदि। एरच औषडणा पुज्यं च प्रमासंजदसम्मादिहस्स । पर्वार उववादि संखेडजादिमाण्य होति, पुज्यं बद्धापुमणुस्तमम्मादिही विचा अप्योधि तत्य उववादानमावादो । औगाहणपुष्पामी वि संखेडजाद्दार्गमावादो । औगाहणपुष्पामी वि संखेडजाद्दार्गमणुस्तमम्मादिहीहि विचा अप्योधि तत्य उववादानमावादो । औगाहणपुष्पामी वि संखेडजाद्दार्गमणुस्तममावादो । सम्मा-

पंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्सपनत-पंचिदियतिरिक्सजोण-णीसु मिन्छाहट्टिपहुडि जाव संजदासंजदा केयडि सेचे, छोगस्स असंखेन्जदिभागे ॥ ९॥

वंबिन्त्र्यतिर्वेष, पंबेन्त्र्यतिर्वेष वर्षात्र येथेन्त्र्यतिर्वेष योनिमरी शहरे विष्यादृष्टि गुणस्थानमे देवर संवक्तांत्रयत गुणस्थान तक मत्येद गुणस्थानदे त्रिपंब विजने सेवमें रहते हैं है होक्के अवंद्यातरे मागम्याण वेषमें रहते हैं ॥ ९ ॥

यह भी सूत्र देशामरीक शीडे, क्योंकि, इसमें मनेक स्वोंका अर्थ संबद्धीत है द्रतका क्यार्डिकाच इसम्बद्धार दे—स्वत्यानस्वस्थान, विद्वारवस्थान, वेद्रनासमुद्धानं कर बबादमानुवानको मान्त पंचेन्द्रियतियंव मिध्याकृष्टि औय कितने क्षेत्रमें रहते हैं। सामान होत्त, प्रणातीक भीर कथालीक, इस तीन छोडाँके ससंस्थातचे प्राप्तकार क्षेत्रको, निर्दान्तरेक संस्थानमें मागत्रमाण शेत्रमें भीर महाश्चीतसे मसंस्थानमुखे हेली रहते दें । बहुतिर पंचेन्त्रिय निर्वेच अपवांता आवराशिको छोड्कर पंचेन्त्रिय निर्वेच कांच कारिका है। प्रदेश करता बादिये. क्योंकि, मयुर्वालोंकी स्वमाहताने पर्वालाही स्वमाहत असंक्रात्मार्गा वर्ष अती दे। यहारर स्वन्यातस्वरथात्मारी मूल्यातिक संस्थात बर्जन क्रमान होनी है। शेव बाहियाँ मुख्याशिक संब्यानर्थे भागमात्र होती है। यहाँपर सन्ताहनन कुरकार संस्थात प्रश्तित्वमात है। स्वयुर्तेशा क्षत्र जातकर करता वादिये। इस्रेडक देवे देव विर्व वर्षान नया योशियती निर्वत मिध्यादृष्टियोती स्वत्यानसहात्वराधि अपे समझ्या कारिय ! वैतियिकसमुदानको मान पंचेत्रिय निर्वेत निर्धारिरि क्र हिम्बे केच्ये रहते हैं? संभान्यलांक आहि चार शोबोंके समंबदातर्थे सागनमान है। कोर अभिनेत्रातम् अभेकालमुखे क्षेत्रमे रहते हैं । इसीयकार पंचित्रिय विश्व वर्षात हरा देनिवर्सन निधेव निष्णारशियोद्या येत्रियिद्यम् बानामा विश्व निष्णा विश्व हरा है। निर्माहित हो आज प्रवेशिका प्रवायक्षणपुर्वात्तात शत आजना साहर। निर्माहित हो आज प्रवेशिका निर्मत प्रयोज प्रियाशिक श्रीव क्षित्र श्रेष्ठी हार्ने हेर्ने स्थानकार के, स्थानिक और स्थानिक हम तीन श्रीकोड सर्ववतार्व आग्रवात हैर्ने वहि है, क्यों है, प्रेकेंट्रफरियेंच वर्षात्वासिक्य मागरार प्रश्रीपत्रके मर्थक्यार्थ मानुसर दक्त इस्त है।

क्षार्थः स्टब्स

ĺvt

सचादो । तं कर्ष ! संसेज्जवस्ताउअतिरिक्योवक्कमणकारोण आवश्यिणए असंरोज्जिदमापण वेरासियकमण मागे हिदे मरंवर्गचिद्यविरिक्यिमण्डार्रिष्टमाणं होति । एवः
उदक्कमणकारामपणविभी चुन्चेद्- संस्वज्ञायाश्चिम् जदिः आवरित्याए अमंग्रेज्जिदः
गागो णिरंद्ववक्षमणकारो रूप्मदिः । उत्ववक्षमणाणुवक्षमण्यपिम आयुद्धिदिः
केषियमुवक्षमणकारो रूप्मदिः । एवं संसेज्ज्ञवस्ता।जसारोणं सोत्राणमुवक्षमणकारो रूप्मदि । एवं संसेज्ज्ञवस्ता।जसारोणं सोत्राणमुवक्षमणकारो रूप्मदि । एवं संसेज्ज्ञवस्ता।जसारोणं सोत्राणमुवक्षमणकारो रूप्मदि । एवं संसेज्ज्ञवस्ता।जसारोणं सोत्राणमुवक्षमणकारो अर्थाव्यवस्त्राणं । पुणो मार्गवियमणिष्टिष अर्थः पन्निर्वाचमणकारो अर्थावज्ञादिमां भागारार रिविय स्त्रणेण गुणिय रज्ज्ञायामेण द्विराणिमिन्दिय अर्थः ।
जसिद्यवमान अर्यारेज्जिदिमाणेण भागारारे रिवेयच्यो । पुणो एत्यवणमंत्रिनिष्टम भारणीवियवस्त्रकमणकारोण्य स्वाविद्यार्थिक्यार्थेक्यार्येक्यार्थेक्यार्येक्यार्येक्यार्थेक्यार्येक्यार्थेक्यार्थेक्यार्थेक्यार्थेक्यार्थेक्यार्थेक्या

र्शवा – यह केसे !

समापान -- संक्यात वर्षकी भागुषाले निर्वेशों उपकारणकालका बाहकी से भर्मकालयें मागले वैद्यादाक समारे भाजित करने पर प्रावेश रामवर्षे मरनेवाले पंकान्त्र निर्वेश निष्याद्यप्रियोक्त प्रमाण होता है।

मन यहाँ पर वर्णकारणकार हो हाते हैं विश्व कहते हैं—संश्वाम कार्याण्यों स्थातर यहि भारतीका संसंध्यातयों सामासाण निश्मत द्वाकारणकार साम होता है, में उद्यक्षण भीर सह्युवकारणकर बाहुकी रिश्मित से सीतर वित्त के उपकारणकार साम होता है, में राज्य कार्याणकार साम होता है, से स्वाचार सामादिक संसंध्यातयों सामा सामाय वार्यापति उपकारणकार साम होता है। इसाव सामादिक प्रकारणकार साम होता है। इसाव सामादिक प्रकारणकार साम होता है। इसाव सामाया वार्यापत सामादिक सामाया सामाया होता है। इस देवके सामाया सामायालों सामायालें सामाया सामाया सामाया सामायालें सामाय

त्र श्रीव्यवाद्यवयाची संधेश्ववास्त्रिवित्ते । बावशिश्ववद्याणी संधेश्ववश्ववरः करूनः ह त्री.जी. वर्षः

पीलदेविमस्स असंसेज्जिदिभागो आगच्छिदि चि तिष्टुं लोगाणमसंसेज्जिदिभागे अच्छेति वि सिद्धं ।तिरिय पारलोगेहितो असंसेज्जिपुणे। एवं पंचिदियतिरिक्सपद्धन्त जाणिणोणं वत्रक्षं। उववादगदर्गांचिदियतिरिक्सिमच्छाइद्वी केजिंड सेचि १ तिष्टुं लोगाणमसंसेजिदिगाणे। एत्य उववादगदेवमाणिज्जमाणे मारणंतियमंगो । णतिर पटमं उवसंदिस्य विदियदंजिङ्गे जीव इन्छिय अण्णेगो पालदोवमस्स असंसेज्जिदिमागो मागहारो ठवेदच्यो, असंसेज्ज्जीयणिविदियदंडायामजीवाणं बहुणमणुवर्लमादो । एसी एगसमयसंचिदो वि आवलिगण् असंसेज्जिदियदंडायामजीवाणं बहुणमणुवर्लमादो । एसी एगसमयसंचिदो वि आवलिगण् असंसेज्जिदियाण्य गुणगारे अविष्टे रज्जुगुणिदसंखेज्जपद्रगुलाणं गुणगारे होरि। एवं पंचिदियतिरिक्सपज्जित्ज्ञाणिणीणं वचन्त्रं । सिस्गुणद्वाणाणं तिरिक्सोपमंगो । णवरि जोणिणीसु असंजदसम्मादद्वीणं उववादो णारिय ।

तीनों ही लोकोंके माजित करने पर पत्योपमक्ष असंस्थातयों भाग आता है. इसलिये सामान लोक मादि तीन लोकोंके असंस्थातये भागप्रमाण क्षेत्रमें मारणान्तिकतमुद्धातगत प्लेट्य तिर्पय पर्याप्त आंच रहते हैं. यह बात क्षित्र हुई। तथा मारणान्तिकतमुद्धातगत प्लेट्यि तिर्पय पर्याप्त जीय तिर्पण्डोक और मनुष्यलोक्तसे असंस्थातगुले क्षेत्रमें रहते हैं। रसीवार्य मारणान्तिकसमुद्धातको माप्त प्लेट्यिय तिर्पय पर्याप्त और योनिमतियाँका कथन करना वा है।

उपणाइको मान्त हुए पंचीन्द्रय तिर्वेश मिध्यादृष्टि जीय कितने क्षेत्रमें रहते हैं।
सामान्यलोक आदि तीन लोकोंक ससंस्थातय माम्ममाण क्षेत्रमें रहते हैं। यहां पर उपणां
रित्रके लाते समय मारणानितकक्षेत्रके समान कथन करना चाहिये। इतनी पियोणता है हि
स्वर्भ देशका उपसंदार करके दूसरे दंडमें दियत जीवीका ममाण लाना इन्छित है, हतीले
परयोगमके ससंस्थातय माम्ममाण एक दूसरा माम्मार स्थापित करना चाहिये, पर्योक्ष कर्मना पात्र स्थापत योजन स्थापमयाले दूनरे दंडमें स्थित जीय यहुत नहीं पाये जाते हैं। यह पत्र सम्बे
संचित जीवशादि हुई, इसल्ये सायलीके ससंस्थातय माम्मसे गुलकारके अपनीत हरने स्थापति स्थापत स्थापत अत्यापको ग्रामसे स्थापति करना प्रतिकृति ।
रिवेष पर्यान संस्थात अतरागुल गुलकार होता है। इस्तेशकार उपपादको आत पंकित्र
रिवेष पर्यान भीर योजमानियां स्थाप करना चाहिये। उपपादको स्थेक्षा सेप गुलस्यानीक
स्थापति तर्यव सोपसे स्थापके समान आनना चाहिये। इतनी विरोचता है कि वेतिना
रिवेषों सम्यनस्थापराद्यों उपपाद नहीं होता है।

दिगुराय - यहांपर जो प्रथम दंह बादिका कथन किया गया है, उसवा संभित्त यह दें कि विभ्रहगतिमें सरकारेजने लगाकर प्रथम मोदे तक जीयका जो सीधा तमन हेल है वह प्रथम दंड है। तथा प्रथम मोदेसे लगाकर द्वितीय मोदे तक जीयका जो सीधा तमन होता है वह दिनीय दंड है। हमीयकारसे तीमरा दंड भी समझना चाहिए। पंचिदियतिरिक्सअपज्जता केवडि स्रेते, लोगस्त असंसेजदि-भागे ॥ १० ॥

द्दसः देसामासियसुचस्स अत्यो गुरुषेत् सत्याण-वेदण-कशायसयुग्यात्गरा केषडि खेचे ? चदुम्हं लोगाणमसंक्षेत्रज्ञदिमागा । इत्ये ? उदसेषपर्णगुलं पितृतेवस्स असंक्षेत्रज्ञादमागा खंडिदमेगोगाहणचादो । अद्वयुज्ञादो असंक्षेत्रज्ञापे अच्छीत । विद्वत्त्विस्तर्याणं वेजिब्बस्तस्यापं मार्गिति । मार्गितिय-ज्ञ्ञाद्वादा केविह रोगे ? तिर्व्हं लोगामसंक्षेत्रज्ञाद्वामा । इते ! रासिस्स माग्रहास्मृदा होद्दण जहाजमण दोष्णि तिष्ण पत्तिदोगमसः असंक्षेत्रज्ञापे अवस्ति । तिर्विय-माणुसलोगादो असंक्षेत्रज्ञाणे अच्छीत । स्वापमादे !

मण्डसगदीए मण्डस-मण्डसपञ्जत-मण्डसणीसु मिन्छाहट्टिपहुढि जाव अजोगिकेवळी केवडि खेते, छोगस्स असंखेञ्जदिभागे' ॥११॥

पंचेन्द्रिय विषेच अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लेकके असंख्यात्रहें मागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १० ॥

सार रह देशामर्शक एक्टा मार्च कहते हूँ— सरशानमारणान, वेदनासगुटात भीर करायसगुटातको प्राप्त हुए वेवेट्रिय तिर्धेक सरवायत अध्य दिन ने देवमें रहते हैं, विस्तायाणोक मादि चार छोवों के सलंक्याताये आगायमाण देवने हते हैं, वर्षोंक, असोव्यायाणे कादि चार हते हैं, वर्षोंक, असोव्यायाणे कादि वर्षोंक है के स्वर्धान कादि करते को यक आगा सम्य भावे तामाणा पंवेट्रिय तिर्धेक मर्थायत जीवके अवगादना है। तथा पंवेट्रिय तिर्धेक भावपान और अद्यादना है। तथा पंवेट्रिय तिर्धेक भावपान और अद्यादना है। तथा पंवेट्रिय तिर्धेक भावपान और इंग्लेक्ट एक्टिक स्वर्धान और व्याप्ति वर्षाद्वायस्थाय और विस्तिकसगुमान वर्षों पान जात है। सारायानिकसगुमान होचे प्राप्त है असोविह राधिक सगायान छोत भादि तथा है हो सारायानिकसगुमान छोत भादि तथा है। सारायानिकसगुमान छोत भादि तथा स्वर्धानक के स्वर्धानक स्वर्धान सारायानिकसगुमान के स्वर्धानक है सारायानिकसगुमान स्वर्धान स्वर्धिक स्वर्धिक स्वर्धिक स्वर्धिक अदिवायानिक स्वर्धिक स्वर्धक स्वर्

मतुष्यातिमें मतुष्य, मतुष्ययात्र आर मतुष्यात्याम स्पार्थात् गुप्तसानसे केवर अधीनिकवली गुणस्थान तक प्रायेक गुणस्थानमें श्रीव कियने केवमें रहेते हैं। लोकके असंख्यात्वें मागप्रमाण क्षेत्रमें रहेते हैं। ११।

१ मनुष्यवर्तः यहायाती वित्वास्त्रवाययोगवेदायन्ताना सं वत्याहस्येदशहः । ह. हि 🖡 .

एद्रस्य मुनस्स अत्यो तुरुपदेन सत्याजनत्याण-विहारविध्याजनेतृत्व वृत्यदेन दिवस्य विद्याजनेतृत्व वृत्यदेन दिवस्य विद्याजनेतृत्व देशिय विद्याजनेतृत्व देशिय विद्याजनेतृत्व देशिय विद्याजनेतृत्व देशिय विद्याजनेतृत्व वृत्य वृत्य विद्याजनेतृत्व वृत्य वृत

मार्गरस्मार्गः अमंतर्गमार्गः गर्याणमत्याण-विहानित्याणे वेरा-कणः देर्गर्वरस्मार्गः विवास केवि समे ? समूर्वः सोमाणमर्गरोजितिमा, अपूर्वः संस्कृतिस्मारः मार्गरिय-उत्तरस्य समूर्वः सोमाणमर्गरोजित्माणे, अपूर्वः

अन रण स्पन्न सर्थ करते हैं — साम्यातनात्मात, विहास्तानात्मात, वेद्रशममृत्य, क्षणान्मक के न वैधारित समुद्रातको प्राप्त सुद्र मनुष्य, पूर्णात्म मनुष्य और केरिक्ट स्वरूप के अपनि केरिक्ट समुद्रातको प्राप्त सुद्र मनुष्य, पूर्णात्म मनुष्य और केरिक्ट स्वरूप के अपनि स्वरूपकेष्य हैं संस्थानार्थि भागामाण केष्यी रहते हैं, वर्णाहि, बार्ल सुद्र केरिक्ट केरिक स्वरूपकेष्य हैं संस्थानार्थि भागामाण केष्यी रहते हैं, वर्णाहि, बार्ल

प्राः भगभान अस्य अगन्यभित्त सर्वन्यान्ये आगवनायाः देः सन्तृतं वर्षः स्टि

स्पन्न करण कर वर्षा रेपडा है। स्वत् एडं - वर्षा, प्रयोग्त, प्रयोग्त समुख्यक्षा स्वयंशात सेमुण्ये होताली स्वयं करण करण रुप्त देवाचा काना है, क्यरियं यहांवर स्वयंगत समुखीहे सेक्स लगे स्वरूप

पदम्य प्रमादन विकास कर के दिन होते हैं कि स्वारत के कि है है है के स्वारत कर है है है है के स्वरत के है है है है के स्वरत्य के स्वर्त्व के स्वर्त के स्वर्त्व के स्वर्त के स्वर्त्व के स्वर्त के स्वर्त्व के स्वर्त्व के स्वर्त्व के स्वर्त के स्वर्त के स्वर्व के स्वर्त्व के स्वर्त के स्वर्त के स्वर्त के स्वर्त के स्वर्त

संस्वेजपुणे । सम्मानिच्छार्द्धी सत्यांजसत्यांज-विद्वात्विद्वसत्याज-वेद्दण-कराय-वेद्यिव्य-सुग्याद्परिजदा केविंद रेजे ! चदुःई लोगाणमसंखेजदिमागे, माणुसखेजस्म संरोजिद-मे । संजदासंजदा सत्याजस्याज-विद्वारविद्वस्याज-वेद्य-कराय-वेद्यिवसम्बद्धार-रेजदा केविंद्ध खेरे ! चदुःई लोगाणमसंखेजदिमागे, माणुसरोजस्स संयेजदिमागे । एजीविष्वसुग्याद्यादा चदुःई लोगाणमसंखेजदिमागे, माणुसरोजादी असंयेजप्रोज् च्येति । पमचसंजदप्यदुद्धि जाव अजोगिकेविंदि चि मुलेपमंगी । एवं मणुमपज्ञच-णुसिणीसु । ज्यारि मिच्छार्द्धांज सासणासमार्द्धार्योगं । मणुसिणीसु असंजदमम्मादिद्धांज व्यादो जस्यि । यमने तेजादाससुम्यादा जस्यि ।

सजोगिकेवली केवडि खेते, ओषं ॥ १२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो मुलोपमवधारिय लोगस्स असंखेळिदिमान, असंग्रेनेसु पा भिगः, सन्वलीने वा चि वचन्या ।

सादनसम्यादिए और आवेयतसम्यादिए मुद्रण सामाम्यतील स्वाद वार रोजों है समे-यावि साधमाण क्षेत्रमें और सम्रोद्धीय संस्वादामुंगे रेजमें रहते हैं। स्वस्वादम्यादाय हारायतस्यमा देवनातम्बाद्धाः , ज्यावसम्बाद स्वाद विधियतम्बद्धान्तम् वे त्यावन दूर म्यीमध्यादि मुद्रप्य क्रिजने रेजमें रहते हैं। सामाम्यतीक सादि बार होन्हें से संस्वादवे गाममाण रेजमें भीर सुन्यरेशके संस्वापणे भागमाण स्वमें रहते हैं। व्यापालकारमाण द संयतास्यत्यात्म द्वारासम्बद्धानं स्वादायद्वान स्वाद स्वाद होने से विध्यान ए संयतास्यत्यात्म हुत्य स्वतात्म स्वाद है। सामाम्यतीक सादि चार होन्हें सम्बद्धान्य प्रमान रेजमें और मुद्रपरेशको संस्थाति भागमाण क्षेत्रमें हिते हैं। मान्यान्यत्य गाममाण रेजमें और मुद्रपरेशको संस्थाति भागमाण क्षेत्रमें हिते हैं। सामान्यत्यत्य गाममाण रेजमें और मुद्रपरेशको संस्थातिक स्वाद्यान्य सामान्यती स्वाद स्वाद प्याद हो। होने संस्थानम्बद्धान स्वाद स्वाद स्वाद्धान स्वाद स्व

सयोगिकेवली मगवान किन्ते क्षेत्रमें रहते हैं ! ओपप्रस्पणामें सपोगिडिनों हा

ो क्षेत्र कह आपे हैं, सत्प्रमाण धेत्रमें रहते हैं ॥ १२ ॥

इस स्वता अधे, मूलीय त्यता निश्य वरके स्रोतिवेदली श्रीव लोवके संस्थातिये माग सेवमें, लोवके अधेरयात बदुमणमण्डल रेक्से मध्या सर्व लेक्से रहते हैं, सम्बद्ध बहुता साहिये।

र सपोधिककिनी सामान्यों में क्षेत्र । स नि ९, ८.



मणुसअपजजता केविंड खेते, लोगस्स असंखेजजिद्देमांगे ॥१३॥
सत्याण-वेदण-कसायसमुग्धादेहि परिणदा चरुष्टं लोगाणमसंखेजिदमांगे, माष्ट्रमस्वेचस्स संखेजिदमांगे णिचिदकमेण । विष्णासकमेण पुण असंखेजिता माणुसवेचाणि।
मार्गणित्यसमुग्धादो माणुसोचतुल्ले। । मार्गणित्यस्वेचं दविजमाणे यृषिअंगुलग्दम-विद्रम् चर्ममुले गुणेद्ण सेढिम्डि मांगे हिंदे दृष्टं होदि । तिम्हं आविल्याए असंखेजिदमाणस्व-उवक्ष्रसणकालेण मांगे हिंदे एमसमयम्बि मांतरासी होदि । तं पित्र्वेजमसअसंखेजिदमांगेण ओविंडिय रुव्यूण गुणिदे एमसमयमंचिदमार्गितियरामी होदि । पुणो तमाविल्याए असंखेजिदमाएण मार्गणित्यज्वक्ष्रसम्पाकलिण गुणिदे मार्गणित्यक्रत्मनेतं संचिदरासी होदि । पुणो अवरोण पिल्दोवमस्स असंखेजिदमांगेण मांगे हिदे रुज्याग्य-मेण मुक्कमार्गणितियरासी होदि । एज्जुआयदस्स विक्तंगो प्रांगुले पिल्दोवमस्स असंके अदिमानेण ओविंडिदे होदि । एचमुववादस्स वि । णवि एगतमयसंचिदो वि आविल्यण असंखेजिदिमारण गुणगारो अवगेदस्यो । विदियदंढे सेटीए संखेजिदिमागायामेण सुन्धः

टन्ध्यपर्याप्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातर्वे मागप्रमान क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १३ ॥

स्यस्थानस्यस्थान, येदनासमुद्रात भीर कपायसमुद्रातसे परिणत हुए स्राप्यपात मनुष्य निवित्तक्रमले सामान्यलोक लादि चार लोकोके असंस्थावयँ मानवमान सेवर भीर मुतुष्यक्षेत्रके संव्यातय मागवमाण क्षेत्रमें रहते हैं । विन्यासक्रमेसे तो अस्तरू मनुष्यक्षेत्र सम्प्रपाल मनुष्यांका क्षेत्र है। मारणातिकसमुद्धातको प्राप्त ह हाज्यप्यांत मनुष्यांका सत्र श्रीयमनुष्यप्रक्षणाके समान है । मारणानिकारि स्पापित करनेपर एच्यागुलके प्रथम और नृतीय वर्गमुलको परस्पर गुपित हार अपनि साथ उसका अगश्रेणोम माग देनेपर तथायवर्णाल मनुष्योहा प्रस्पना होता है। इसमें आयुटीके असंख्यातयें मागमात्र उपक्रमणकालका माग देनेपर एक सम्बन मरतेवाले साध्यपयाप्त मनुष्याकी राशिका ममाण होता है। इसे पत्योपमके ससंक्वार्त मागले माजित करके थीर एक कम पस्योगमके असंख्यातय मागले गुणित करने र र समयम् संचित दृदं मारणान्तिकसमुद्धातको माप्त छप्पपपान्त मनुष्परादि। होती है। दुन इस राशिको ब्रावटीके मसंस्थातये भागमान मारणान्तिक उपमाणकारसे गुनित हर्रता मारणान्तिककारके मीतर सीचत जीपराधिका ममाण होता है। पुनः इसे एक दूसरे पत्रीवर्व असंख्यात्वं मागते माजिन करनेपर राजुममाण मायामक्यते किया है मारणानिकममुन् हिन्होंने, ऐसे टम्प्यप्यांत मनुष्यांकी राशि होती है। मतरांतुटको परयोगमक मसंस्थावर्व मार्क माजित करनेपर राज्यमाण भावनश्चका विलाद होता है इसीववाद उपपादका भी के हर हता बादि । हतर्ग विराजना है कि जपनाइपीरा पक समयमें संवित होती है, इबलिये कर की झावतीके असंस्थानने मायामाण गुजदार बहु आये हैं यह निवाल देना वाहित । 41 दे मारणान्तिकसम्दात्र क्रिन्होंक, देवे इसरे इंडम अगमेनीके संस्थानवें म

मारणंतियजीवे इच्छामो वि अष्णेगो पलिदोवमस्स असंखेजादिमागा मागदारा ट्वेट्ट्वो

देवगदीए देवेसु मिच्छादिहिषहुडि जाव असंजदममादिहि। केविह सेते, लोगसा असंसेनादिभागे ॥ १४॥

सत्याणसत्याण् विहारबुद्धिरायाण-वेदण-कताय-वेजन्त्रियसमुग्यादगद्दवमिन्छादिह तिष्हं लोगाणमसंस्त्रज्ञाद्दमाम, तिरियलीयसम् संवेज्ञाद्दमाम, माणुमसंचादा असराज्ञातुः । हर्त । प्रमाणीकद्वास्तियस्तिष्ठाहे । मारणीतेय-उत्रवादपरिणद्भिन्छादिङ्की निर्द छर। १ प्रवाणाक्षद्वासावप्रधानपाद। । भारणावप्यवपादपारणाद्वा । १३०६ होमाणमत्त्वेत्रादिमामे ण्र-तिरियलोगोहितो अत्तेव्रमाणे । एस्य सेवयमाणे जाणिय हवेद्व्यं । सेसगुणहाणाणमीधभंगी। ।

एवं भवणवासियपहुढि जाव उवरिम-उवरिसमेवव्वविमाणवानिय-रेवा ति॥ १५॥

पदेण देसामातिवृद्धपैण प्रचिद-अन्धे। युगदे । सं जहा — मन्यानगन्धाण विहार नादेसस्यामा-वेदमः सःसाय-वेडाध्यय-उववादपरिमद् भवणवामियमियस्यादि प्रदृष्टं होता-

भीवाँको सामा रए हैं, इसलिये एक दूसरा परवायमका असंक्रणनवां भाग मागद्दार क्यांवन

गावन । इवमातिम् देवाम् मिष्यादृष्टि गुणस्यानसे सेवर् अमयवनम्यग्रहि गुलस्यान् वह मर्थेक गुणस्थानक देव कितने धेयमं रहते हैं। लोकके असंस्थातव मागवनामा अन्याप पक देवरणानस्वरूपान, विहारवास्वरूपान, वहनातगुद्धान, वचायतमुद्धान और चेवरिक

समुद्रातको प्राप्त हुए देश मित्तारिक जीव सामायस्था आहे तीव क्षेत्रके असंक्ष्मा है सक् राधुक्षात्वा आत्त दुध वध अध्यादाध जाय सामान्यशक का व गान का व क करण्यात्व व क करण्यात्व से सामान्यस्थ का सामान्यस्थ कर सामान्यस्थ विषय रहते हैं, क्योंकि, यहांवर क्योंकिक देवराति प्रधान है। मारलानिकसमुद्रात कोर प्याहरू पते परिचार, बहाप, पंधातक, इथराहा अधात हर बारणात्माव महाराज कर विद्याहारी देव सामान्त्रीय स्थादि तीत हार है. अतिव्याहारी स्था प्रमाण केवम और मनुष्यत्येक तथा तिर्थेक्त्रेवते संसंस्थातम् के केवम रहते हैं। करावर समाज राम्स बाट सञ्चापलाक तथा ।त्वच्छावस व्यक्षक्यातञ्ज कामस करत है। कराव रोमको प्रमाणको जानकर क्यांजित करना चारिते। देवोने राम ग्रामस्य करता है। करावा महत्रणांके समाम है।

्र राजात । भवनवानी देवांसे लंबर उपित्म उपित्म देवेगकदे दिवानवारी, देवी टबका लंब इसीमकार होता है ॥ १५ ॥ वर कार्य के 17 5 5 10 अब देश वेद्यासम्बद्ध दोवने दुविन दूच कार्यको बहुते हैं बहु दसम्बद्धा है— भव दर्प वहामहाक स्वयं सामा द्वा भवना वदा के वह दमका द्वा स्वरंग है विद्यासायकार्यात. वेदारमाञ्चल कार्यात्र स्व

वेषस्यानस्वरथानः वद्भावपायवरथानः, वद्भावपाद्भानः, वद्भावपाद्भानः वस्मावपाद्भानः वस्मावपाद्भानः वस्मावपाद्भानः वीरः उपयाद्वरूपरे वस्यितः हृष्ट् अवनवात्। विश्वयात्ते इतः सावस्यात्त्वः वस्मावपाद्भानः वस्मावपाद्भानः . gene gemi uget and tetengt uptenneuen. a. m. 1. .

961 णमसंसेअदिमागे, अट्टादचादो असंसेअगुणे । तिरिक्स मणुसमिच्छादि**दिणे कणाणी**ण हिद्मवणवासियखेचेसु उप्पजमाणा वे विग्गहे काद्ण सेडीए संस्कादिमामायामेव हरावानामान्य है है है सिर्वालाहों असंवेज्जापूर्ण उववादस्वेजन होहन्त्रसिर । उप्पज्जेता संमर्वति, तदा तिरियलागादों असंवेज्जापूर्ण उववादस्वेजन होहन्त्रसिर सुरुवभेद जह सेटीए संवेज्जिदमागमेनापामा उववादस्वेजस्स लब्मह । किंतु संसेज्ज स्विज्युत्तमेची चेत्र। एची संखेज्जजीयणाणि हेट्ठा गत्ण भवणत्रासियतिमाणाणम् ट्टाणाणुवरुमादो । ण च तिरियलोगे सञ्चत्य तदवासा, तिरियलोगस्स मन्त्रिमासंस्वर्गीर मागे चेव तेसिमत्यिचदंसणादो । ण च उवरिमदेवेसुप्पज्जमाणतिरिक्साणं व भवणवासिए मुप्पज्जमाणतिरिक्स-मणुरसाणं सगुप्पचिदिसं मुख्या तिरिच्छेण गमणमत्यि, बंदुन्द्रगर गईए मुत्रणवासियज्ञगुर्वणिधमागृत्व हेट्टाबिहर मुत्रणवासिएसुप्पचिदंसणाहे।। एरं इरो णन्वदे ? भवणवासियाणमुववादस्वेचस्स तिरियलोगासस्वजनिदमागचण्णहाणुववर्षीहा । सगच्छिदद्वाणादो हेट्टा आपरिय मवणवासियसुप्पञ्जमाणाणप्रववादस्रेतायामा संदौर संसेज्जिदिमागो रुज्मीद चि तन्गहणं खुर्च, तहा तत्युष्पज्जमाणाणं सुद्ध त्योत्रताहो। एर

बसंब्यातर्ये मागप्रमाण क्षेत्रमें, और सदाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

गुका-इजिरेलाके माकारसे स्थित भवनवासियोंके क्षेत्रॉम उत्पन्न होनेबाहे निर्म श्रीर मनुष्य मिध्यादृष्टि जीव दो विषद्ध करके जगश्रेणीक संख्यातव मागप्रमाण मायामस्व उत्पन्न होते हुए पाये जाना संमव है। इसिटिये मयनयासियों हा उपपाइसेत्र विकृतिहर्ण असंस्यातगुणा द्वीना चाहिए 🕻 🦈

समाधान — यदि उपपारक्षेत्रका आयाम जगधेशीके संख्यातव मागवमान वाया अल. तो यह उक्त कपन सल होता। किन्तु, उपपार्श्वका आयाम संव्यात स्वयात्वा हो है। क्योंकि, इससे संक्यात योजन नीचे जाकर अयनवासियोंके विमानोंका अवस्थान नहीं जा जाता है, तथा विषेग्टीकर्में मी सर्वत्र भयनपासियाक श्वमानाका स्वस्थान का माणवर्ती मर्सस्यात्वयं भागप्रमाण क्षेत्रमें ही मयनवासी देवींका सरितस्य देखा जाता है। हुनी, उपरिम देवाँमें उत्पन्न दोनवाले विर्यवाहेत समान मयनवासियाँमें उत्पन्न होनेवाले विर्यव हुने मतुर्योद्या भगनी उत्पत्तिकी दिशाही छोड्वर तिरछा गमन होता हो, वेना भी नहीं क्योंकि, मनुष्य और तिर्ववांकी बाजके समान सीची गतिसे प्रवन्यासी छोजके समीव मार्क अपस्तरप्रेजीमें स्थित मधनवासी देवीमें उत्पत्ति देवी जाती है ।

समाधान — संवत्रवासियों द्या उपचाइशेत्र विवेग्लोक के असंवदानवें माण्डल

सम्दर्धा दर नहीं सहना है, इसमें इन्द्र कथन जाना जाना है।

अपने रहनेटे स्थानमंत्रीय आहर मयनवासी देवाँमें उत्पन्न है निवासे मनुष्य निर्देशी इन्दर्शिक्टा न्यायम् अत्रोत्तीकः संक्यानयं भागममान वाया जाता है, इसदिवं वृत्ती बर्च रवदृत्व है, क्षितु, रत्व प्रदारमे उनमें उत्पन्न होनेवाले श्रीय स्वरण होते हैं।

कुरो णच्दे १ तिरियलोगसमासेचेज्जिद्दमागे वि बक्खाणारो । मारणीतपसमुम्पार्गर्-मिन्छार्द्द्वी तिण्टं सेलाणमसंखेजजिदमागे तिरियलोगारी असचेज्ज्युणे, अद्वार्ज्जारो वि असंखेजज्ञ्युणे। सेसमार्ग् । णवरि असंजदसम्मार्द्द्वीणं उपयादो णतिम् । वाणवेतरः जोहसियाणं देवोपमेगो। णवरि असंजदसम्मार्द्द्वीणं उपयादो णतिम् ।

> पणुर्वासं असुराणं सेराकुमाराण दस धृंण् चेव । वेनर-जोदिसियाणं दस सत्त धण् मुणेयन्या ॥ १८ ॥

एदम्हारे। उस्तेहारो एत्य ओगाहणसेचमाणेदको । सोघम्मीसाणे सत्याणसत्याण-विहासविदेसत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्वियसपुग्पादगदीमच्छादिष्टी चरुष्ट् लोगाणमंसेचेकदि-मागे माणुससेवादो असंदेवज्याने । एत्य सगत्सेचवरिक्सा मवणवासियमंगो । अप्यो ओहिसेचमेचं देवा विज्वंति चि जं आहीयवयणं सण्य पडदे, लोगस्स असं-

शंका- यह किस मभागसे जाना !

समाधान— उपपादर्गरणत भवनवासी देव तिर्थेग्लेक्क असंक्वातये भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं. हत्मप्रवारके स्वाक्यानसे उक्त कथन जाना जाता है।

मारणानिकसमुद्धातको प्राप्त हुए मिय्पाइणि मचनवासी देव सामान्यहोक भारि हान हो कि से संस्थातचे आग्रमण देवमें, विधिकोक्को सक्ष्यातगुणे सेनमें स्नीर स्वार्ट प्रीपंत सी सर्वयातगुणे सेनमें रहते हैं। येव कथन भीपमञ्जात साम के है। इतने विदेशता है कि ससंयवसम्यार्टियांका प्रवन्तपासियोंमें उपपाद महीं होता है। यानव्यन्तर और व्योतियों देवांका सेन देवसामान्यके सेन्नोंक समान है। इतनों विदेशता है कि ससंयवसम्यार्टियांका स्वार्टियांका स्वर्टियांका स्वार्टियांका स्व

मयनवासियोंके दश भेड़ीमेंसे प्रथम भेद भारुरकुमारोंके शरीरको उंचार पचील प्रमुख भीर शेष भी कुमारोंके शरीरको ऊंचार दश प्रमुख है। तथा प्रमुख देवीके दारीरको ऊंचार दश प्रमुख भीर ज्योतिकी दियोंके शरीरको ऊंचार सात प्रमुख जानना बाहिले है १८ है

इस उत्पुर्वत उत्सेपसे यहां भवगाइनारोत्र के भाना चाहिये। सौपमें भौर देशान करणें रवश्यानस्वरथान, विद्वारवारवारचान, वेदनासमुदात, करावसमुदात भीर वैद्विपिक-समुदातको प्राप्त हुए मिय्यादि देव सामाग्यरोक भादि चार क्षेत्रीके स्वक्वतवें प्राप्त-प्रमाण क्षेत्रमें भीर प्रामुवारेश्व कासंस्वातुओं होक्यों दहते हैं। यहांपर सर्व पद्मात होक्योंकी वर्षासा प्रदारवासियोंके होक्के समत्त करता चाहिय। देव भागेन मणेन मयरिवानके होन-प्रमास विद्वार्या करते हैं, इसक्यार को अन्य भाषायोंका ययन है यह पटित नहीं होता है,

१ ति. सा. १४९- तत चतुर्वेवाने 'दस सच सरीरादओ दू 'दति पाउः ।

व हेता बेंतरदेश निय-विय-भोड़ीन बेलिबं छेले । दूरित वेलियं वि हु परेलं विकालब्देन । ति.प. ५,९६.

चर्गोह, ऐसा माननेपर लोहके ससंख्यातय मानदमाण वैकिषिकसमुदातमत होकरे मानेका हमंग या जाना है। शोधमें भीर ईशानकरमें देविसप्यादिष्ट्योंके मारणानिकसमुदान और उपगादमायकों देवि देविसप्यादिष्ट्योंके मारणानिकसमुदान और उपगादमायकों देवि देविसप्यादिष्ट्योंके सारणानिकसमुदान और उपगादमायकों देविसप्यादिष्ट्योंके स्थानित करने समय सीधमें नेदान देविसप्यादिष्ट्योंके मुश्चित कराने स्थापन करने परनेप्रवादें मुश्चित कराने स्थापन करने परनेप्रवादें मानकर सीधमें और देशात्रसम्भी स्थापन स्थापन स्थापन करनेप्रवाद कर्मा होते हो। दुना संस्थापन स्थापन कराने स्थापन करनेप्रवाद करनेप्यतें साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र परनेप्यतें साम्याद्यात्र परनेप्यतें साम्याद्यात्र साम्याद्य साम्याद्यात्र साम्याद्य साम्याद्यात्र साम्याद्य साम्याद्यात्र साम्याद्य साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्र साम्याद्यात्य साम्याद्यात्र साम्याद्यात्य साम्याद्यात्य साम्याद्यात्य साम्याद्य साम्य

श्रीहा --सीयम भीर हैशान कराहे देवींहा वववादशेव मवनवासी देवीहे उत्तार केलेक सहाव निर्देश्योक समेनवात्रये मागववात क्यों नहीं होता है ?

मनायान — नदी, क्योंकि, सीवर्ष देशान करकी दर्गीसय प्रमाददश्ये उत्तर हे वेक्ट सभी निर्वेशों दूर्वन देशक मायान क्यानेति वंद्रणासय प्रमाददश्ये उत्तर है। इस्टिंग संपाद क्यानेति संस्थानये सामाद्रश्ये है। इस्टिंग संपाद क्यानेति स्थानकार स्थानिक स्थानकार होता है, यह निर्वेश होता संपर्व सीवर्ष होता है, यह निर्वेश होता संपर्व सीवर्ष होता है, यह निर्वेश होता संपर्व सामाद्रश्यों के स्थानकार है स्थान स्था

सासणसम्मादिष्टिःसम्मामिन्छादिहि-असंजदसम्मादिष्टीणं ओघमंगो ।

्अणुदिसादि जाव सञ्बङ्गिसिद्धविमाण्वासियदेवा असंजदसम्मा•

दिट्टी केवर्डि खेत्ते. लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

सत्याणसत्याण-विद्वास्विद्वात्याण-वेदण-क्रमाय-वेउव्विय-मारणिविय-जववाद्याद-असंबदसम्माद्दिणो चदुर्ण लोगाणमसंखेज्जदिमागे, अद्वाद्यज्ञादो असंखेज्जयुगे अन्धित चे वचन्दे । णवि सम्बद्धे सत्याणसत्याण-विद्वात्वित्तराण-वेदण-क्रमाय-वेठिव्यपदेषु ॥णुसखेचस्स संखेज्जदिगागे । कर्षे । सन्बद्धे वेदण-क्रमायसमुग्यदाणे तिर्देशे समुप्यन्न ।णयोवविष्यु-जवणं पद्वस्य वर्षेयवेदेशादे, कारणे कञ्जीवयारादो था ।

हंदियाणुवादेण एहंदिया वादरा सहुमा पञ्जता अपञ्जता विह स्रेते, सञ्चलोगे ॥ १७ ॥

वन्दारि, सामिमस्यादिष्टि और मसंयतसम्यन्दिष्टियोंके स्यर्थातस्यस्थान आदि क्षेत्र कोष-अदनसम्यन्दिष्ट कार्यिके स्यर्थातस्यर्थात काहि होत्रीके समान होते हैं।

नी अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तकके असंपतसम्पार्टीए देव कितने में रहते हैं है लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १६॥

स्वरधानस्वरयान, विद्वारवास्यस्वान, वेदनासमुद्धान, जपायसमुद्धान, वैकिपिकसमु प्रारः स्वीतिकसमुद्धात और उपपादकी प्राप्त हुए उक्त असंपत्तसम्वर्गाष्ट देख सामान्यतेक चार सोकींक असंस्थातवें माम्प्रमाण देशमें भी अमृग्दिर्धाये सर्वस्थातवृत्ते देशमें हैं, येसा यहां कथान करना चाविये । हतनी विदेशवा है कि स्वर्धायिक्तमें स्थरतात-तन, विद्वारवत्यस्थान, येदनासमुद्धान, रूपायसमुद्धान और वैकिपिकसमुद्धान दन्त में देख सामुद्धारेज संव्यानयें माम्प्रमाण रोजमें रहते हैं, वर्षाकि, सर्वार्थायिक्तिमें समुद्धान और कर्वारसमुद्धान्तरान देखोंके उनके नित्तानके उत्पन्न होनेवाला स्वीक न द्वारा है, अर्थान् उक्त दोनों समुद्धानोंमें मामान्यदेशोंका बाह्य विकार बहुत कम , स्व संवर्धा उक्त प्रमारका उपदेश दिवा है। सम्या, कारकामें कार्यके उपधारस्ते तरका उपदेश दिवा है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियजीव, चादर एकेन्द्रियजीव, सदम एकेन्द्रिय-इत एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव, सदम एकेन्द्रिय वीव जीर सदम एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें । १७॥

पश्चिमाञ्चादेव प्रदेशियाना क्षेत्रं कर्रहोदः । छ. छि. ६, ८.

एरथ लोगणिदेसेण पंचण्हं लोगाणं गहणं, देखामध्येकत्वान्लोकस्य । बारत्सुः मादिवयणेण संस्थाणसंस्थाण-वेयण-कसाय वेउध्विय-मारणंतिय-उववादपरिणद्रजीवाणं गहणे, छन्विहानस्थावदिरिचवादरादीणममावादो । तदो सन्वसुत्ताणि देसामासिगाणि चेत्र । व एस णियमो वि, उभयगुणीवर्लमा । सत्याण वेदण-कसाय-मारणीतय उत्रवादगदा एईदिया केवाडि खेचे ? सम्बहोगे । वेउन्त्रियसमुग्यादगदा चदुण्हं होगाणमसंखेकादिकारे । माणुसखेचं ण विष्णायदे, संपहियकाले विसिद्धवएसाभावा । तं जहा- वेउव्वियमुहा<sup>तेत</sup>ः रासी पलिंदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । अहवा तस्स ओगाहणा उस्सेहघर्णगुरुस्स अपने ज्जदिमागो । तस्स को पडिमागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । विउच्चमाण-र्षः

शंका-यदि ऐसा है, तो सर्व सूत्र देशामर्शक ही हैं ?

समाधान - सर्व सूत्र देशामशेक ही है, यह नियम मी नहीं है, क्योंकि, स्त्रीव दोनों प्रकारके घम पाये जाते हैं। अर्थात् कुछ घुत्र देशामशंक हैं और कुछ नहीं, इसिंडि

सभी सूत्र देशामराक ही हैं, यह नियम नहीं किया जा सकता है।

स्यस्थानस्यस्थान, चेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात, और उपपादको प्राप्त हुए पकेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ! सर्थ डीकमें रहते हैं ! बेडि विकसमुदातको प्राप्त हुए एकिन्द्रिय जीव सामान्यलोक सादि चार लोकोक संस्थान मामर्पमाण क्षेत्रमें रहते हैं। किन्तु मानुपक्षेत्रके सम्यन्धमें नहीं जाना जाता है कि उसके कितने मार्गमें रहते हैं, क्योंकि, वर्तमानकालमें इसप्रकारका विशिष्ट उपदेश नहीं वार्य जाता है। आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं-विक्रियाको उत्पन्न करनेवाटा पकेंद्रिय जीवराति पत्योपमके अवस्यातव भागप्रमाण है। अथवा, विविधानमक एकेन्द्रिय जीविक दार्धरकी अवगादना उत्सेघवनांगुरुके असंस्थातव भागप्रमाण होती है।

श्रेका — उत्सेषघनांगुरुमें जिसका माग देनेसे उत्सेघघनांगुरुका असंब्यात्यां भाग

रहाच थाता है, उस असंस्थातर्थे भागका प्रतिमाग क्या है ?

समायान-परयोपमका असंस्थातवां माग प्रतिमाग है, अर्थात् परयोपमके प्रणं स्यात्वं मागशा इन्सेषपानागुलमं माग देनेसे उत्सेषपानागुलका सर्सरपातवां माग हात भाता है जो विकियात्मक एकेन्द्रिय जीयके हारीरकी अयगाहना है।

ऊपर विकिया करनेवाली पकेन्द्रिय जीवराशि मी पस्योपमके असंववात्व साग

इस स्वमें लोक पदके निर्देशसे पांची लोकीका प्रदण किया है, वर्षोंक, यहां लेक पदका निर्देश देशामशक है। सुपूर्म यादर और सहम आदि यसनसे स्वस्थानस्थरणन, वेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, वैकिथिकसमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात सीर उपगारणसे पारणत हुए जीवोंका प्रहण किया है, क्योंकि, उक्त छह प्रकारकी अवस्थामोके अतिरित यादर आदि जीव नहीं पाये जाते हैं।

पणगुरुस्स भागदारो किमप्पा पहुनो समे वा इदि ण' णव्यदे ९ जादि ग्रीदे। पणगुरुमागदारा संखेडजगुणो होदि, तो माणुसखेवस्स संखेडजदिभाने । ज्यगुणो, तो असंखेडजदिभाने । अह सरितो, माणुसखेवस्स संखेडजदिमाने । एदं चेव होदि वि णिच्छओ अरिथ, तदी माणुसखेव ण णव्यदि वि सिद्धं। रेदंदिय-पादरेदंदियण्डजचा सरवाण-वेदण-कसायसमुग्यादगदा विण्डं लोगाणे गि, णर-विरियलोएहिंते। असंखेडजगुणे । वं जहा- मेदरमलादो ज्वारी

रिरंदिय-बारोरंदियवज्ञचा सत्याण-वेदश-कसायसम्बग्धादगदा तिण्ढं स्त्रेमाणं गो, णर-विरिष्टलेपहिंती असंखेजनगुणे । ते जहा- मेदरमूलादो उविर जाव गरकपो चि पंचरच्य उससेथेण स्त्रेमणास्त्री समयउस्सा वादेण आउल्णा, ते सप्तमो । एक्क्रणंचासरच्युपदराशं जदि एगं जगपदरं स्वमदि, तो पंचरच्य-स्त्रमो। चि फलगुणिदमिच्छं पमाणेगोवद्विदे' ये-पंचमागूण-एग्णवंचरिरुवेदि

लमामा । व फल्गुाणदामच्छ पमाणणावाहद य प्यमागृण-एग्ग्यावचिरिक्वेहि

गर्द क्षीर उत्सेषणनांगुल्का मागहार भी पत्योपमक ससंवयातव भागममण

, स्वलिय विविद्या करिवाली प्रतिदेश जीवपावित्ते उत्सेषणनांगुलका भाग।श्रा है, या वहा है, या समान है, यह छुछ नहीं ज्ञाना जाता है। सब यदि

क्रिकिस्पावित्ते उत्सेषणनांगुलका भागहार संव्यानगुण है, देसा लेहि हैं में

रिनेशाल प्रतिस्थान में सम्बद्धानि मागुरक्षेत्रके संव्यानग्रेषमागमाण क्षेत्रमें पहली

प्राणा विकाल है। समाल क्षित्रक संव्यानग्रेषमागमाण क्षेत्रमें पहली

रुपाल र प्रान्त्य आवशासा आवशासक सरवातव भागमाण होत्रमें त्यती भागप विकरण है। अथा। शिविशा कालेवाली स्केट्रिय औवशाझेस उस्सेप-भागहार असंव्यातगुणा छेते हैं तो यह सांक्ष माजुरक्षेत्रक असंव्यातवें भागमाण है, यह अभिनाय होता है। और यदि विकिश करनेवाली वकेन्द्रिय जीयसांक्षित कुका भागहार समान है. पेसा छेते हैं तो यह सांक्ष माजुरक्षेत्रक संव्यातवें त्यमें रहती है यह अभियाय होता है। यदि वहांदर माजुरक्षेत्रक स्वता ही भाग ते, पेसा कुछ मी विध्यय नहीं है, इसलिये माजुरक्षेत्रक सम्बन्धने कुछ भी नहीं है। कि विकिशा करनेवाली पकेन्द्रिय जीयसांक्ष उसके कितने भागमें-रहती है,

है। कि विभिन्ना करनेवाली वकेन्द्रिय जीवराशि उसके कितने सागर्से रहती है, मा। ध्यानस्वस्थान, वेदनासपुदात और करायसपुदातको प्राप्त इस याद्दर येकेन्द्रिय रकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामाग्यलोक मादि सीन लोकोंके संव्यातये सामाग्रमाण महाप्यलोक और तिर्यलोकेसे आसंव्यातगुणे होत्रसं रहते हैं। इसका स्वर्याकरण

रहेन्द्रिय पर्याप्त जीय सामान्यक्षेक भादि तीत होक्कों से संवत्रतर्थे भागप्रमाण महाप्यक्षेक और तिर्याख्येकते असंस्थातगुणे देश्वमें रहते हैं। इसका स्पर्धकरण —मार्द्राख्यके मृत्र मार्गे हेक्त ऊपर राज्ञार और सहस्रारकरण कक पांच राज्य समजारकः लोकनाकी पायुत्ते परिपूर्ण है। सब वसे जगमतरके मार्गाण्यकर परिपूर्व उनंत्रास प्रतराज्ञमां के पक परक्षा पक जगमतर प्राप्त होता है, तो तुर्मोका क्या पाप्त होगा, इसमकार वैराशिक करके पक जगमतरप्रमाण प्रतर्थ प्रतरराज्ञमांण इन्छाराशिको गुणित करके वर्गवास मतरराज्ञयमाण प्रमाण

. ति⊈ंव 'इति पासी नास्ति । १ मितिपु <sup>4</sup> —दो चे 'इति पासः ।

410 410 -1

पणलोगे मागे हिदे एगमागो आगच्छित् ! लोगपेरंतवादरोनं संसेवज्जीपणवादलं जगपदरं पुज्यपरुविदमाणेद्ण एरवेव पिस्पविष अद्युद्धविद्येचं तेसि हेद्वा द्विस्वाद्वय-पदरं संखेजज्जीपणबाहरूलमाणेद्ण पित्रप्तादेव जेण लोगस्स संखेजज्ञित्मागमेचं ब्राद्धेरिय-बादरेद्देदियपज्ज्ञचाणं खेत्तं जादं, तेण बादरेद्देदिय-बादरेदेदियचज्ज्ञचां लेगस्स संबेज्जित् मागे होति चि सिद्धं । वेउञ्चियसप्तम्बादरादाणं एदिदेजीप्तमंगी। मार्ग्णतिय-उवज्ञद्दगत्त सच्चलोगे। वादरेद्देदियपज्ज्ञचाणं बादरेद्देदियमंगी। णविद वेउञ्चियपदं गत्वि। हुद्दे-इंदिया तेसि चेव पज्ज्ञचापज्ज्ञचा य सत्याण-वेदण-कसाय-मार्ग्णतिय-उवज्ञद्दात्त्व स्वतं लोगे, सुद्दुमाणं सन्वत्य अच्छणं पढि विरोहामावादो।

वीइंदिय तीइंदिय चुउरिंदिया तस्सेव पञ्जता अपञ्जता य केवि

खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १८ ॥

राशिसे माजित करनेपर, दो यटे पांच कम उनहत्तरसे घनटोकके माजित करनेपर बोप्फ माग दोता है उतना रुण्य व्याता है, जो कि ५ घनराजु प्रमाण है।

उदाहरण—१×५=५, ५÷४९= ग्रं जगप्रतर । चृकि यह वातपरिपूर्व के १राजु मोटा है, अतपय ५ घनराजु हुमा, जो कि <sup>382</sup>÷६८३ै=१ग्रें चनटोक प्रमान होता है।

तथा पहले प्रकारित किये गये लोकके वारों और प्रान्तमागम संदार योजन बाहस्यकर जामनरप्रमाण यातक्षेत्रको लाकर स्ती पूर्वोक्त यातक्षेत्रमें निल्लार तथा लाके प्रियिवियोंके क्षेत्र और उनके नीचे स्थित वायुखेन, जो कि संव्या याजन बाहस्यकर जामनरप्रमाण है, उनके उसी पूर्वोक्त क्षेत्रमें निल्लार योजन बाहस्यकर जामनरप्रमाण है, उनके उसी पूर्वोक्त क्षेत्रमें निल्लार देवी के के के लिया विवाद योजन के के लिया विवाद योजन के के लिया विवाद योजन के लिया विवाद विवाद योजन के लिया के लिया

भीर उपपादको प्राप्त हुए सहम एकेन्द्रिय औव और उन्होंके पर्याप्त आर्यात और ही होकमें रहते हैं, पर्योकि, सहम आंबोंक सर्व होकमें पाये आनेमें कोई विरोध नहीं है। डीन्ट्रिय, त्रीन्ट्रिय, चतुरिन्ट्रिय जीव और उन्होंके पर्याप्त तथा अपयोत औ

१ प्रतिषु ' बन्दोर्शदेव • धेतं जादं । तेन बादोर्शदेवपण्डनानं ' इति पाटः । २ दिक्टेन्द्रियानां टोकस्यासंक्षेयमानाः । सः तिः १, ८,

एदस्स अत्थे युज्यदे- सत्याणसत्याण-विद्वारविद्वस्याण-वेद्वा-कतावसम्पादपरिणदा विष्टूं लोगाणमसंखेउजदिमागे, तिरियलोगस्स संखेउजदिमागे, अङ्काइजादो
असंदेउजमुणे । णदरि विष्टूमदज्जादा चरुष्टं लेगाणमसंखेउजदिमागे । मारणंतियउपवादाराद विष्टूं लेगाणमसंखेउजदिमागे, तिरियलोगदे। असंदेउजमुणे, अङ्काइजादो वि
असंदेउजमुणे । एत्य भारणंतियलेगाणिउजमाणे बीस्ट्रिय-तीद्दिय-पर्नुतिदिया तैति
पज्जत-अपज्जपदच्यं ठिवेप आवित्याए असंदेउजदिमागमेन-उवक्कमणकालेण संढिय
तस्स असंदेउजदिमागो पा संखेजजदिमागो या भारणंतियण विणा मरदि वि एदस्स
असंदेउजाभागो संवेजजानभागो वा पेक्त भारणंतिय-उवक्कमणकालेण आदिलियाए असंदेउजदिमागमेण हिदरातिमञ्जामे ति पित्तदेवसस्स असंदेउजदिमागो मागहारं ठिवेप अप्यापागेण हिदरातिमञ्जामे त्राविद्वार पुणिदे
देवसस्स असंदेउजदिमागो मागहारं ठिवेप अप्यापागे विक्यंस्वयगागुणिदराज्ञव, पुणिदे
मारणंतियरोगं होदि। उववादसेचं ठिवञमाणे एदं चेव ठिवेप मारणंतिय-उवक्कमण

कितने धेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें मागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १८ ॥

भव इस स्वतः अर्थ कहते हैं-- स्पर्यातस्यस्थान, विहारयास्यस्थान, वेदनासमदात भीर कपापसमुद्रात, इन पहाँसे परिणत हुए उक भीव साम म्यलोक खादि तीन लोकों है अस-चवात्वें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्वेग्लोकके संख्यात्वें भागमें और अवाई व्रविसे असंख्यातगणे क्षेत्रमें रहते हैं । इतनी विशेषता है कि तीनी ही विकलेन्द्रियोंके अपर्याप्त जीव सामान्यलेक साहि चार लोकोंके असंख्यातव भागवमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणातिकसमुद्ध त और उपपादको प्राप्त इए तीनों विक्लेन्ट्रिय भीर उनके पर्याप्त तथा अवर्याप्त जीव सामान्यलोक भावि सीन होकोंके असंस्थात्य मागममाण क्षेत्रमें, तिर्धग्होक्स असंस्थातगणे क्षेत्रमें तथा अहारिहाँक से भी असंख्यातमुखे हेन्त्रमें रहते हैं । यहांपर मारणान्तिकक्षेत्रके लाते समय हीन्त्रिय, बीन्द्रिय. चत्ररिन्द्रिय तथा उनकी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवराशिको स्थापित कर उसे मापटीके मसंख्यातचे भागमात्र उपमाणकारके खंडित करके उसका तो असंख्यातची भाग भाषा संख्यातयां भाग रहाय आवे. उतनी राशि भारणान्तिकसमहयातके विजा मरण करती है। इसलिये इस राशिक असंख्यात बहुमान अधवा संख्यात बहुभागप्रमाण राशिको प्रष्टण करके उसे मारणान्तिकसमहातके उपक्रमण कालक्ष्य भागलीके अर्थ-क्यातवे आगसे गणित करने पर मारणान्तिक श्रीयराक्षि होती है। यहां एक राजमान आयामें स्थित मारणान्तिक जीवरादि। इंच्छित है, इसलिय उक्त राशिक भीचे मागहारके स्वातमें वन्योवनके मसंक्यालये भागमात्र भागशारका स्थापित करके और आक्रे मार्के विष्कं अके वर्गसे गणित राजुसे वक्त राजिक गुणित करने पर मारणान्तिकसमृद्रवासगत धिकालक्ष और उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त अधिका सारणान्तिकदेशत्र होता है। उपयान-क्षेत्रको लाते समय इसी मारणान्तिक जीवरादिका स्थापित करके भीर उसमेंसे मारणा

६ प्रतिपु ' असखंग्जा भाग संख्या मार्ग ' ६ दे पाठः ।

कालगुणगारमविनिदे एमावमयमैचिदे। मारनैवियसमी होदि । तस्य जर्मनेश्वा मणा विगाहगरीण उपराजीते नि तस्य असीराजे मार्ग पेग्न पत्रिरीसम्य असीराजीर मार्गण अविद्विरे सेटीए मेरीस्वरिमागायामेन सिट्यर्डिट्रियमी होरि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जतापसु मिच्छाइद्विणदृढि जाव अजोगिः केविह ति केविड सेते, होगस असंसम्बद्धार्गि ॥ १९ ॥

षद्स्स अत्यो-सत्याणमत्याण-रिहारवदिमन्याण-वेदण-क्रमाय-वेदविषयममृत्यादगर-

पंचिदियमिच्छार्ष्टी निर्द सीमाणमसंयेक्त्रदिमागे निर्यितीगम्य संयेक्त्रदिमागे अपूर जादी असंरामगुणे । मारणंतिय उपपादगद्मिच्छाद्रश्ची निग्हं होगागमगंत्रेज्यदिमान, णर-तिरिपलोगेहितो अधंरोअगुणे । एदार्ग सेचायमायपर्ग पुरुषे व काद्रव्यं । मामनादैतः मोपमंगो । एवं पञ्जनाणं पि यत्तव्यं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ २० ॥

न्तिक उपक्रमणकालके गुणकारको निकाल स्त्रेन पर एक समयमें संचित दुर्र मार्ग्जालिङ जीयरादि। होती है। यह समयमें संधित हुई इस मारणानिक जीयरादि मंगंध्यत यहुमाग जीव विमहगतिसे उत्पन्न होते हैं, इसलिवे उसके समंख्यात मागधे प्रश्न हारे पस्योगमके असंख्यातवें मागेसे माजित करने पर जगधेणीके संख्यातवें माग सावामक्राहे इसरे इंडमें स्थित जीवराशि होती है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीशोंमें मिथ्यादृष्टि गुगस्यानमें हेक्कर अयोगि केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके अर्वः

ख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १९॥

मद इस स्वका अर्थ कहते हैं— स्वस्थानस्यस्थान, विहास्यन्स्वस्थान, वेहता समुदात, कपायसमुदात और वैकि.यकसमुदातको भन्त हुए पंचेन्त्रिय मिष्पाहि अन सामान्यलोक आदि तीन लोकोके असंस्थातय मागममाण क्षेत्रम तियालोकक संस्थात्य भागप्रमाण क्षेत्रमें और अदारहीयसे असंक्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुहार श्रीर उपपादको प्राप्त हुए पंचेत्रिय मिच्यादृष्टि जीव सामान्यहोक बादि तीन हो है झसंख्यातयें मागममाण क्षेत्रमें और मनुष्यत्योक तथा तिर्यग्दोक्के असंब्यातगुल क्षेत्रमें रहते हैं। इन क्षेत्रीको पहलेके समान ले भाना चाहिये। सासाइनसम्यग्हिं बाहिय स्यस्यानस्यस्यान भादि पद्गत क्षेत्र बोधसासादनसम्यग्दाष्टे बादिके स्वस्यानस्वस्यत आदि पद्गत क्षेत्रके समान जानना चाहिये। इसीयकार पर्याप्तीके क्षेत्रका मी इपन करना चाहिये।

सयोगिकेविरुयोका क्षेत्र सामान्यग्रह्मपणके समान है ॥ २० ॥

१ पंचेन्द्रवाणां मनुष्यदन् । स. वि. १, ८.

पंचिदियअपञ्जत्ता केवडि खेत्ते, खोगस्स असंखेञ्जदिभागे ॥२ १॥ सत्याण वेदण कमायसमुग्यादगद्वीचिदियअपञ्जामा चटुण्टं लोगाणमसंग्रेज्ञदिमान हार जादो असरेतअगुणे । बुद्दे। है अंगुलस्म असंखेअदिमागमेच-ओगाहणादौ । भारणीय-वादगदा तिष्टं सोमाणमसंखेरजदिभामे, णर-निश्यिकामहितो असमेजागुण । एवमिडियमगाणा गदा ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया. रपुडविकाइया नादरआउकाइया नादरतेउकाइया नादरसाउकाइया ्रवणकदिकाह्यपत्तेयसरीरा तस्त्रव अपञ्जता, युहुम्पुद्वविकाह्या ञाउकाइया सहमतेउकाहया सहमवाउकाहया तस्सेव पञ्जता नता य केवडिँ खेत्ते, सन्यलोगे ॥ २२ ॥

इस एकते भगेकी महत्रणा पटले कर भाव है, इसलिये पटां पर पुत्रा इसका सम्मयवर्गीस वंचेन्द्रिय जीव कितने धेत्रमें रहते हैं । सोकक असंस्थानक साय-

वरधानस्वस्थान, वेदनारसमुद्रात और कवायसमुद्रानको मान हुए सनस्वर्णान जीव सामायकोडः भार्तः चार कोवाँडे असंख्यातर्वे अ नगमाण शेवाँ और जन्मे क्यातगुण क्षेत्रमं रहते हैं, वर्शीक, हाश्यववीच वंत्राह्माँकी सक्ताहमा अनुकर्क विधातीय स्वतं रहत है, वधाक, स्टार्व्यवामा ववान्स्याव ववताहता कतिक व साममात्र है। मार्ग्वातिकारामुहात और वर्षाहवा मात हर हाध्वर्यक्र विस्तामायस्त्रक सादि तीन सोवोंके सर्वयानमें माग्रमान रेक्से तथा स्टुल्क

इस महार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई।

समार्थणाचे अञ्चयदेसे पृथिवविद्यापिक, अध्वाधिक, तथकादिक बायुकारिक दिर प्रथिशीकापिक, बादर अपकाषिक, बादर वैज्ञाकाषिक, बादर बाहु-बादर पनस्पतिकाधिक प्रायंकासीर श्रीव तथा दुन्सी चांच बादर कार-वींज श्रीब, प्रश्न श्रीदर्शवाधिक, प्रश्न अप्तादिक, एस्स हैक्सकारिक, पेक और रही प्रश्नोंके पर्याच और अपर्याच और किनने धेवसे रहते

वैरादेव दृविर्देश्वादादिववस्यविरादिका सभा क्वेंग्लेका हुन्। में . क्. क.

एदस्स सुनस्स अत्यो चुन्नदे । ते जहा- पुरक्तिहत्या सुदुमपुरक्तिहाया तेष पञ्जचा अपञ्जसम्, आउकाहया सुदुमआउकाहया सम्मद पञ्जना अपजनम्, तेष्टकहर्या सुहुमतेउकादया तस्सेव पज्जता अपज्जता, वाउकादया सुहुमवाउकार्या तस्मेव पाउना अपुरुवत्ता च सत्याण वेदण कमाय मारणीत्य उववादगदा गठालाण, अमृत्रे ज्ञाने व परिमाणादो । णवरि तेउकाइया वेउव्ययसमुन्यादगदा पंगण्ह होगाणामयंग्रन्तिमणे, वाउकाइया वेउध्वियसमुम्बादगदा चदुण्डं होगाणमसंग्रेजनिद्मांगे । माणुमनेतं न णच्चेद् । बादरपुद्धविकाद्या तेसि चेच अपन्तता सत्याण-वेदण कमापसमुन्याद्वत् तिर्दे लोगाणमसंवेदनिदमांग, तिरियलागादी संवेदनगुणे, अद्वादननादी असंविकागुण। विवस जेण बादरपुरुविकाह्या सापञ्जास सरक्ष्यपुण, अनुष्ट्यादा नवाजन्य । जेण बादरपुरुविकाह्या सापञ्जासा पुरवीओ नेत्र अस्तिरुण अन्छीन, तेण पुरवीओ जनपदरपमीणण कस्सामी । तत्य पदमपुरुवी एगरञ्जीवनसमा सत्तरज्जीस बीक् सहस्यण वे जोयणलक्षत्रवाहरूा, एसा अप्यणा बाहरूस्स सत्तमभागबाहरू जगपर्र होति।

अब इस स्पन्ना अर्थ कहते हैं। यह इसप्रकार है—स्वस्थानस्वस्थान, वेदना समुद्द्यात, कपायसमुद्द्यात, माराजातिकसमुद्द्यात और उपपादको मात हुव पूर्वशी काथिक और सहम पृथियोकायिक तथा उन्होंके पूर्वाच्यात और अपर्यात और, अकाविक और सहम अप्त विश्व तथा उन्होंक पर्यात और अपरात और, तेजस्कारिक और सहम तैजस्कायिक तथा उन्होंके पर्यात और अपपात आप, तजस्कायिक वाँ सहस वाँ कायिक तथा उन्होंके पर्यान्त और अपपात औप, यानुकायिक और सहस वाँ कायिक तथा उन्होंके पर्यात और अपपान्त औप सर्व टोकम रहते हैं, वर्याकि, उठ राशियाका परिमाण असंख्यात लोकप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक्स द्यातको मात हुई तैजस्कायिकसारी पाँचा छोकाँक असंख्यातच भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते है। केल्पि है। वैक्रियिकसमुद्धातको प्राप्त हुई यायुकायिकरादि सामाग्यलोक सादि वार लोको संस्थातवे सामग्यलोको प्राप्त हुई यायुकायिकरादि सामाग्यलोक सादि वार लोको संस्थातवे सागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है। वैक्रियिकसमुद्धातको प्राप्त हुई वायुकायिकराति उनमेंसे एक राजु बीड़ी, सात राजु लम्बी और बीस हजार योजन कम दो लाझ योजन मोटी पहली पृथिवी है। यह घनफलकी अपेशा अपने वाहत्त्वक अर्थात् एक हास असी हजार योजनके सात्रय भाग बाहत्यरूप जगप्रतरप्रमाण है।

२ इत असम्बर्श्यभितिरुपकोऽभरतने। गयमागरिक्ष्णोक्ष्यसभेः त्रयमाधिकास्यान्तिममारेन हर् इस्व समानः ।

देयपुढवी सत्तममागृण-वे-रञ्जुविवसंमा सत्तरञ्जुआपदा वचीसञ्जेपणसहस्तवाहल्टा रुहसहस्साहियचदुण्टं रुक्खाणं एगुणवंचासमागबाहल्टं जगपदरं होदि । तदियपुटवी प्तच मागहीण-तिण्णिरज्जुविवर्श्वमा सत्तरज्ञुआयदा अद्वादीसजीयणसहस्त्रयाहल्ला प्तिसहस्साहियं पंचलक्षाजीयणाणं एगुणवंचासमागवाहल्लं जगपदंर होदि उरथप्रदेवी तिष्णि-सत्तमागृण-चत्तारिरञ्छविवसंभा सत्तरञ्जुत्रापदा चउवीसजोपण-स्सपाहरूता छजीपणलक्याणमेगणवंचासभागवाहरूलं अगवदरं होटि । वंचमवदवी

उदाहरण-पहली पृथियी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु, पूर्वसे पश्चिमतक एक र भीर एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है, अनुष्य १८००० योजनींके प्रमाणसे का माग देनेसे २५७१४ है योजन छन्च आते हैं कौर एक राजुके स्थानमें अपधेणीका ाण हो जाता है। इसमकार २५७१४ है योजनोंके जितने प्रदेश हाँ उतने जनमत्तरममाण सी प्रधिवीका घनकस होता है।

इसरी प्रथियी यह राजके सात भागोंमेंसे यह भाग कम हो राज चौडी, सात राज षी और बचांत इजार योजन मोटी है। यह घनपालकी मपेशा खार एएस सोल**र** गर योजनों के उनेचासर्वे भाग याहरयद्वय जगप्रतरप्रमाण है।

उदाहरण-इसरी पृथियी उत्तरसे दक्षिणतव सान राजा पूर्वसे पश्चिमनव 😲 राज C १२००० थोजन मोटी:

$$\frac{\delta}{fg} \times \frac{f}{\delta} = \frac{f}{fg} \cdot \frac{f}{fg} \times \frac{f}{fg\cos \sigma} = \frac{f}{8ff\cos \sigma} \cdot \frac{f}{8ff\cos \sigma} + \frac{f}{8e} - \frac{Re}{8ff\cos \sigma}$$

तन बाहस्यस्य जगप्रतर्थमाण.

तांसरी प्रथियों एक राज़के सात भागांमेंसे हो भाग कम तीन राजु चौड़ी, सात हु सम्मी और भट्टाईस इजार योजन मोटी हैं। यह घनपासकी भपेशा पांच साल बर्चास ार योजनींके उनंचासर्वे भाग बाहरपहच जगप्रतरप्रभाण है।

उदाहरण-सीसरी पृथियी उत्तरसे दक्षिणतक ७ राज सम्बी, पूर्वसे प्रध्यमन इ र बारी। भीर २८००० योजन मोटी है।

चीची पृथियी यक राजुके सात भागों में से तीन भाग कम बार राजु कीड़ी. साह ह रुम्बी और बीबीस दबार योजन मेंही है। यह घनपालको मरेशा सह लाख योजनोंके वासर्वे भाग बाहस्यस्य जगवतस्ववाच है।

उदाहरण-चौधी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणनक सात राजु, पूर्वते दक्षिमतक रे राजु

चचारि-सनमाग्णपंचरज्ज्ञविक्संमा सत्तरज्ज्ञ्जायदा बीसजोयणसहस्मशह्ल्या वं सहस्ताहियछण्हं उक्साणमेग्णयंचासमागवाहल्लं जगपद्रं होदि । छट्ठप्रुटवी पंचर माग्ण-छरज्ज्विवक्संमा सत्तरज्ज्ञायदा सोलह्जोयणसहस्स्वाहल्ला वाण्डदिग्रहस्मार् पंचण्हं तक्साणमेग्णयंचासमागवाहल्लं जगपद्रं होदि । सत्तमपुटवी छ-सत्तमाग्णर रज्ज्विक्संमा सत्तरज्ज्ञायदा अह्जोयणसहस्स्वाहल्ला चडदालसहस्माहिर्ग

और मोटी २४००० योजन है।

$$\frac{2}{54} \times \frac{5}{6} = \frac{5}{54}; \quad \frac{5}{54} \times \frac{5}{25000} = \frac{5}{500000}; \quad \frac{5}{500000} \div \frac{5}{76} = \frac{5}{500000}$$

लक्खाणमेगृणवंचासमागवाहल्लं जगपदरं होदि । अहमपुढवी सत्तरज्जुत्रापदा एगर

योजन याइस्यरूप जगनतरम्माण.

पांचवी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे चार भाग कम पांच राजु योही। राजु टर्ग्यो और पीस इजार योजन मोटी है। यह घनफलकी अपेक्षा छह ठाख पीस है योजनोंके उनेघासर्वे भाग बाहस्यरुप जगततरप्रमाण है।

उदाहरण--पांचयी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजुः पूर्वसे पश्चिमतक  $\frac{1}{2}$ । शीर मेटी २००० योजन है।  $\frac{3!}{5} \times \frac{9}{2} = \frac{3!}{2!}, \quad \frac{3!}{3!} \times \frac{20000}{2} = \frac{520000}{2}, \quad \frac{520000}{2} = \frac{520000}{2}$ 

योजन पादस्यरूप जगमतरममाण.

एटी पृथियी यक राजुके सात मार्गोमेंसे पांच माग कम एड राजु चौड़ी, सार राजी और सोटह हजार योजन मोटी है। यह पनफराजी अपेक्षा पांच सात्र बाने ह

योजनीके उनंचासर्वे माग बाहत्यक्ष्य जगनतरप्रमाण है।

. Terry til Fill can imm to

उदाहरण—छटी पृथियी उत्तरसे दक्षिण तक सात राजु। पूर्वसे पश्चिम तक भें भीर मोटी १६००० योजन है। १७, ७ = ३३ १७, १६०००, ५९२००० ५९२०००, ४९, ५९१

 $\frac{\frac{29}{3} \times 9}{3} \times \frac{23}{\xi} = \frac{\frac{29}{\xi}}{\xi} \times \frac{\frac{2}{\xi}}{\xi} \times \frac{\frac{1}{\xi}}{\xi} \times \frac{\frac{1}{\xi}}{\xi} = \frac{\frac{1}{\xi}}{\xi} \times \frac{\frac{1}{\xi}}{$ 

सानवीं कृषियी एक राजुके सान मागोमेंसे छह माग कम सान राजु थीं है। राजु दृष्टी थीर थाट दजार योजन मोटी है। यह प्रशतक्ष्मी भेपसा तीन छान वार्ण

इटार येडिनोटे उनेबानवें मान बाइस्परूप जनप्रतरप्रमान है। उदाहरन—सन्तर्यो पूर्वियो उत्तरसे दक्षिण तक सात राजुः पूर्वते परिव त अट्टजोयणबाहल्ला सचमभागाहिय-एकजोयणबाहल्लं जगवरं होदि । एदाणि सव्वाणि गहे करे तिरियलोगपाहल्लारो संखेजनगुणपाहल्लं जगपदर होरि। एत्य असंखेआ गमेचा पुढविकाऱ्या चिहंति, तेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणी चि सिदं । एदेहि पदेहि त्रास्स असंक्षेअदिभागे चिंहता बादरपुटविकाइया सुनेण सव्यत्रोगे चिहति ति तुना, तं क्षं घडदे ? ण, भारणीतिय-उवबादपदे पहुच्च तथोवदेसादी । मारणीतिय-उवबादगदा सन्दरोंगे । एवं बादरआउकाइयाणं तेसिमपज्जवाणं च । पुढवीसु सन्दरय ण जलपुवर्लन

$$\frac{R_2^2 \times \frac{\ell}{n} = \frac{\ell}{R_2^4}}{R_2^4 \times \frac{\ell}{2000}} = \frac{\ell}{24R_0000} \cdot \frac{\ell}{34R_0000} \div \frac{\ell}{R_2^4} = \frac{R_2^6}{3R_0^2000}$$

अटवीं पूरिणी सात राजु छात्री, यक राजु चीड़ी और बाठ येजन मोटी है। यह योजन बाहत्यरूप जगप्रतरप्रमाण. प्रतिक होत्या पह योजनके सात भाग करनेपर उनमेंसे सातवी भाग मर्थान् एक भाग

ब्रधिक एक योजन याह्रत्यरूप जनप्रतरप्रमाण है। उदाहरण-- माठवीं पृथियी उत्तरसे दक्षिण तक सात राजुः पूर्वसे पश्चिम तक यक राज और बाठ योजन मोटी है।

१×७=७। ८÷७=६ योजन वाहस्यक्त जनप्रतस्प्रमाण.

रम सबको एकत्रित करनेपर तियंग्लोकके वाहरूयसे संख्यातमुणे बाहरूयकप जनमनर ोता है। इन पृथिवियोंमें असंस्थात लोकप्रमाण पृथिवीकायिक जीव रहते हैं, इसिलिय वे तेर्यालीकसे संस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हुमा।

विशेषाध-निर्वयस्त्रोवका प्रमाण धनपासकी अवेशा १४२८५, योजन बाहस्परूप जगमतर है और आठों पृथिपियाँका धनपाल ६२३७३६% योजन बाहत्यरूप जगमनर है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि तिथेंग्होजके प्रमाणसे आठी पृथिवियोंका शेत्र संख्यान्युचा है। बादर पृथियीकाविक जीव इन भाठी पृथिवियाम सर्वत्र पाये जाते हैं, इसल्टिय चे निर्य-

ग्लोकसे संस्थातमुणे संवम रहते हैं, यह सिक्र हो जाता है। र्श्वका -- उपर्युक्त स्थम्यानस्थम्यान, घेदनातमुद्रात और बत्यायसमुद्रात, इन परार्था याना अपेक्षा बाहर पृथियोकायिक जीय जय कि लोकके असंव्यातये भागव्रमाण शेवम रहते हैं. जनका जार है कि में रहते हैं ' देसा जो महबद्दारा कहा गया है यह केले घटित होता है !

समाधान-नदी, पर्योक, मारणानिकसमुद्धान भीर उपपादकी भरेरसा 'बाहर पूधियीकाधिक जीव सर्व छोक्से रहते हैं, 'ह्लप्रकारका उपदेश हिया गया है !

मारणानिकसमुद्रात और उपपादका प्राप्त रूप बाहर पृथिवीकाविक और बाहर भारणात्वाचार्याः करित्र स्थाप्ताः स्थाप्ताः स्थाप्ताः स्थाप्ताः स्थापातः स्यापातः स्थापातः स श्चमारमा जीवांका भी कथन करना खादिये । अर्थान् पूधियांकायक और अर्थान् पूधियं

[ 1, 1,2

बादरचमुबगयाणं अणुबलंबमाणाणं वि सञ्जापुदर्शमु अन्यिनविरोधामाताहै। एवं बाह तेउकाइयाणं तस्सेव अपज्जनाणं च । णवरि येउज्यियपदमस्यि, ते च पंचर्व हैगाल संखेजदिभागे । तेउकाइया बादरा सन्यपुटवीनु होति नि कर्य णन्यदे ? आगमारो । य बादरवाउकाइयाणं तेसिमपञ्जचाणं च । णत्ररि सत्वाग-वेयण-कमाय-ममुखादगरा वि लोगाणं संखेअदिमागे, देा-लोगेहितो अमंग्रेड्जपुणे । वेउव्ययसमृग्यादगरा <sup>नर्</sup> लोगाणमसंखेअदिभागे । माणुसखेलं ण विष्णायदे । सन्यअपज्जतेस् वेउन्यिपारं गरिष

कायिक जीवोंके समान स्यस्थानस्यस्थान, येदनाममुद्धात और कपायममुद्धातको मत् षादरजलकायिक और बादरजलकाथिक अपर्यात जीय सामान्यलोक आदि तैन होई मसंख्यात्ये मागमे, तियंग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमे, तथा मारणान्तिकसपुदात व

**र**पपांदको भास हुए षादर जलकायिक सीर उन्होंके सपर्यास जीव सर्व लोकमें रहते हैं। र्युका-पृथिवियाँमें सर्वत्र जल नहीं पाया जाता है, इसलिये जलकारिक जी प्रिवियों में सर्वत्र नहीं रहते हैं ?

समाधान — पेसी आदांका नहीं करनी चाहिये, वर्षोक, बादरनामक ना कार्मके उदयसे वादरस्यको भात हुए जलकाधिक जीव यद्यपि पृथिवियाँमें सर्वत्र नहीं प जाते हैं, तो भी उनका सर्व पृथिवियोंमें बस्तित्व होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

इसीपकार अर्थात् यादर जलकायिक और उन्होंके स्वप्यात जीवींके समान गर तैज्ञस्काथिक और उन्होंके अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थानस्वस्थान आदि पूर्वोक पहाँमें हर करना चाहिये। इतनी विदेशवता है कि वादर ते अस्कापिक जीवों के वैक्षियक समुद्रावर है होता है और ये पांचों छोकाँके असंख्यातय भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं।

र्यका —शदर तैजस्काथिक जीव सर्व पृथिवियों में होते हैं, यह कैसे जाता जाता है!

समाधान—मागमसे यह जाना जाता है कि यादर तैजस्कायिक जीव सर्व शृतिहैं के दें। योंमें रहते हैं।

दिसीप्रकार यादर यायुकाधिक और उन्होंके अववास्त जीवोंके पराका कवन हरन चाहिये। इनती विदोधता है कि स्वस्थात, वेदनासमुद्धात, और कपायसमुद्धात हो प्राप्त बादर पायुकायिक और वादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव सामाग्यहोक आदि तीन होती संव्यातमें भागप्रमाण क्षेत्रमें और तिर्यन्तिक अवयोज्त जीव सामान्यलोक आहि तार जी संव्यातमें भागप्रमाण क्षेत्रमें और तिर्यन्तिक तथा मनुष्यलोक इन दो लोकोंसे बर्सकाल्य स्विमें इस्ते हैं। किल्पिन सम्म रहते हैं। वैक्षिपेकसमुदातको प्राप्त हुए यादर वायुक्षपिक जीव सामापटी हैं। सम्म रहते हैं। वैक्षिपेकसमुदातको प्राप्त हुए यादर वायुक्षपिक जीव सामापटी हैं। चार छो हो है असंख्यातचे मामग्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। किन्नु यहां मतुष्यक्षेत्र नहीं जाता हज है कि उसके किन्नु जाने हुन है कि उसके किनने मागमें रहते हैं। समा अपयोक्त जीवॉम वीकायकसमुदातवर नहीं होत ३, २३. ] दुर्वणप्फदिकाइयपचेयसरीरा तस्सेत्र अपज्जना षादर्गिगोद्पदिष्टिदा तस्सेव अपज्जचा चादरप्रदवितुल्ला **।** 

वादरपुढविकाह्या वादरआउकाह्या वादरतेउकाह्या वादरवण-मदिकाइयपतेयसरीरा पञ्जता केविड सेते, लोगसा असंसेज्जिदि भागे ॥ २३ ॥

एदस्स सुचरम अत्थो वृद्यदे । तं जहा- पादरपुरुविषज्जना सत्याण-वेदण-कसायसम्पादगदा चदुण्दं सोगाणमसंखेलदिमागे, अहुग्दन्तादो असंग्रेलगुणे । एष अवदूर्ण दिवय जोण्द्रव्य । मार्गितिय-उपयदगदा तिण्हं स्रोगाणमसंसेज्जिदियामे, जर-तिरिवलोगोहितो असंस्वेज्ज्ञगुवे । एवं बादरआउकाह्ययपञ्जता । बादरवणप्रदिकाह्यपपेष-त्वार-जारायका अस्ति । स्वति वेदण-प्रसाय-सत्याणेसु निरियलोगस्स संखेजजदिमागे । एदेमि राप्तीणे पित्रदेशमस्य अभेरिकारिमागमेचा जगपदराणि पदांगुरुण गंहिदेयगंहमेचपमाणं होहि। आगाहणा पुण

है। बाहर धनश्वतिकायिक प्रत्येक्ट्रारीर और उन्होंके अवर्थान्त औव तथा बाहर निगोद-प्रतिष्ठित और उन्होंके अपयोक्त जीय, बादर पृथियीकाथिक जीयोंके समान हैं।

बादर पृथिवीकाविक पर्याप्त जीव, बादर अध्वाविक पर्याप्त जीव, बादर वैज्ञाका-थिक पर्याप्त और और पाहर यनस्पतिकाधिक प्रत्येकछारीर पर्याप्त और किठने धेवमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २३ ॥

शव इस स्वका अर्थ करते हैं। यह इसप्रकार टै-- व्यवस्थानव्यवस्थान, बेदनासगुद्धान भीर क्यायसमुख्यतको मात द्वय चाहर पृथिवीकाविक सर्यात जीव सामन्यकोक आहि कार ला करावात्राक्षात्रक मानावमाण देश्वमें श्रीत अशादिकार सर्वत्यातमुक्त देश्वमें रहते हैं। क्षांच्यक असम्प्रताप अस्तमान रूपन जार जन्मकारण असम्प्रताय सम्बर्धात्य सम्बर्धात्य स्थापना करके पोजना कर हेना चाहिये। आरणांश्वकसमुद्धान और उपगढ़को प्राप्त हुए बाहर शृथियीशायिक पर्याप्त जीय सामान्यतीक व्यादिकीय शेषाँच उपराहकः मान दुम बादर शुध्यक्षापक प्रमान जाय लागान्यकः कार्यु ताव लागान्य ससंब्यातये मागवमाण संबर्धे, तथा मनुष्य और तिर्यक्तेण्यसे असंब्यानगुर्व क्षेत्रसे न्द्रते कराज्यास्य मानावारः पर्यादा जीव भी स्वश्यामस्वस्थान माहि परीमें इसीमधार रहेने हैं। दः चाहर अपनाथरा चयारा जाय मा रचरयात्रकरयात जाहर पराज दलायदार रहते हैं । यादर यहरपतिकाधिक प्रयोजसंदिर यथील और बाहर नियोद प्रतिष्ठित यथील अंशिंक वरीका भारत भारत्याच्या वास्त्र करता चाहिये । इतनी विरोधना है कि वेदलासमुद्रात, व वायसमुद्रात और क्षानगर कथा वाहर यहरपतिकाधिक प्रतिकारीर वर्षान श्रीव तिर्देशांकक सक्तानके रपरपात प्रकार । भागप्रमाण क्षेत्रमें रहने हैं। वायोपमंत्र, मारोक्यानये भागप्रमाण जगमनरावो मनरानुहाने व्यक्ति सामस्यान करणे आप एक्स आप इतमा इन राशियोग प्रमान है। तथा अवगाहना सनागुटर्ड स्वत्यस्म उक्किम्या ओगाह्या विसेनाहिया । तस्येव पञ्चवपस्स उक्किक्य केव्यस्ति विसेन्दिया । सुदूमआउक्काइयनिव्यविष्यव्यवस्स उक्किया ओगाह्या । सस्ये क्रिकेन्द्रिया जोगाह्या । सस्ये क्रिकेन्द्रिया जोगाह्या । तस्येव क्रिकेन्द्रिया जोगाह्या । तस्येव क्रिकेन्द्रिया जोगाह्या । तस्येव क्रिकेन्द्रिया जेन्द्रिया जोगाह्या । तस्येव निव्यविषयव्यवस्य जेक्किया जेन्द्र्या असंयेवेव्ययुग्य । तस्येव निव्यविषयव्यवस्य जेक्किया जेन्द्र्या । नस्येव निव्यविषयव्यवस्य जेक्किया जेन्द्र्या । नस्येव निव्यविषयव्यवस्य जेक्किया जेन्द्र्या । नस्येव निव्यविषयव्यवस्य जक्किया जोगाह्या विसेनाहिया । नस्येव निव्यविषयव्यवस्य जक्किया जोगाह्या विसेनाहिया । वार्येवेव्यवस्य जन्द्रिया जोगाह्या विसेनाहिया । वार्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या । वार्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या विसेनाहिया । वार्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या विसेनाहिया । वार्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या । वार्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या अस्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या अस्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या अस्येवेव्यवस्य जक्किया जोगाह्या । वार्येवाव्यवस्य जक्किया जोगाह्या अस्येवावस्य जन्द्रिया अस्योवस्य विस्ववस्य विस्वविषयवस्य जक्किया जोगाह्या । वार्येवावस्य विस्ववस्य विस्ववस्य विस्ववस्य अस्योवस्य विस्ववस्य विषयवस्य विस्ववस्य विस्ववस्य विषयवस्य विस्ववस्य विषयवस्य विस्ववस्य विषयवस्य विषयस्य विषयवस्य विषयवस्य विषयवस्य विषयस्य विषयवस्य विषयवस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्

इक्के सूच्य नेवृत्यारिक भवतीत्व श्रीवची उत्हाद भवगाहना विदेश ग्राधिक है। इत्ये सूर्य है क्रम्यां इ वर्षान्त क्रीवर्षी प्रश्टन मनगाइना विशेष अधिक है। इसमें श्रम अध्यापन कि प्रकार के करो जनना अवगाइना अर्थनगत्रगुणी है। इससे सूप्त अरुवािक कारोज के क्यों राष्ट्र कारमाह्या विशेष कवित्र है। इससे सहस आवारिक निर्माणा के प्रकार के बनार के अर्थन वात्र के विश्व के प्रकार के हैं करी प्रकृत अवसहता निरोध अधिक है। इसके सुवस प्राथम विश्व निर्माण संबद्धी रुप्य अवस्थान विशेष अधिक है। इससे बाहर बायुकारिक विक्रियों के की क्रमण अवसारना सर्वज्यातगुली है। इसके बावर वासुकावक निर्माणक क्रीचरी राष्ट्र कारणपुरा शिरोज मांगक है। इसना बाइन बायुवारिक निर्माणीत ही वर्षे हक्द अनुसार विशिष्ट क्षित्र करिया बार्ड वायुवायक 19 कि. ही वर्षे हक्द अनुसारक विशिष्ट अधिक है। इससे बाइन विश्ववस्थित निर्माणक के रशे करून करणत्म अध्यानमुखी है। इससे बादर नेप्रवर्शीय विक्तानि क्षेत्रके इक्ष्य क्षण्या किल्ल कांग्रह है। इसले बातून नेत्रव्यक्तिक निर्मातिनी र्रेपको राज्य वरणहरू रिक्रण करिक है। इससे बहुर अवस्थित निर्मार्थन संबर्ध देशम्य स्थानका सम्बद्धनम्पर्धा । इत्या बावन स्वाधित विकासीय में कर मन्त्र करनात्व तरात्र मांत्र है। इसले करते करतिय कि किन्ति संबद्धी प्रवृत्व करणहरू दिल्ल कार्य है। इससे बातन पुरितर्दशील निवृत्त्वान

.

कियम जोगाहणा असंखेरवागुणा । तस्सेय विव्यविश्वपत्रवस्यस्य उपकस्सिया जोगी-गा विसेसाहिया। तस्तेव विष्विषयण्यवसमस्य उपग्रस्थिया जोगाहणा विश्वेमाहिया। द्रिशिगोदिणिक्वविपज्जवपस्स जहाँकाया ओगाहणा असंग्रेज्ज्ञगुजा । वस्मेव निष्वि विज्ञवयस्त उपवस्तिया ओगाहणा विसेसाहिया। वस्तेव विष्वविषज्ञवयस्य उद्यस्तिया बोगाहणा विवेसाहिया। (जिमोदपिदिद्वरपञ्जचयस्स जहन्जिया जोगाहणा असंगुज्जसुप्ता। तस्सेव विष्यविश्वपञ्जवपस्स उवकरिसया ओगाहणा विसेमाहिया। तस्मेव विष्यिपः पुरुज्ञचयस्स उक्करिसया ओगाइणा विसेसाहिया ।)' बाद्रस्वणप्यक्राह्यपचेयमसीनिध्दर्शि पंजज्ञचयस्य जहींव्याया जोगाहणा असरीजज्ञगुणा । वेश्ट्रियकिज्यवियज्ज्ञचयस्य हरित्याचा जोगाहणा असंखेरजगुणा। तेर्देदियणिष्यविषयज्ञेषयस्य जहिष्णया जोगाहणा संखेरजगुणा। चडादियिकिन्त्रविपन्त्रचयस्य अहिम्या आगादणा संदेत्त्रगुणा । पीचिरियोधन्त्रवि पञ्जवयसः जहिण्या जोगाहणा संरोजगुणा। तेर्दियकियावजपन्त्रवयसम् उत्तर-स्मिया जेताहणा संरोज्ज्ञगुणा । पर्वतिरियणिष्यविजयज्ञत्तपस्य उदक्रस्मिया झेताहणा संखेळागुणा । वरंदियणिण्यचित्रपन्त्रचयसस उपकस्मिया जागाहणा शेखेळागुणा । बादर-वणम्द्राकार्यभवेषसीतिकिविश्रपत्तव्यस्य उदकरिसया आगारवा संगेन्द्रगुणा ।

जीवकी ज्ञान्य अवगाहना असंवयतागुणी है। इससे बान्द पृथिदीकाविक विकृत्यवर्णन जीवकी जन्छ अवगाहना विरोध अधिक है। इससे बाइट शुविवीकाविक निर्वृत्त्ववरीज जीवकी उत्तर मयगाहना विशेष मधिक है। इससे बाहर मिगाइ विश्वसित्यांत्य जीवकी जेपाय अथगाहना असंस्थातगुणी है। इससे बाइर किगोर विश्वप्रयोज श्रीवर्ध स्वर अवगाइना विदोष अधिक है। इसते बादर निगोद निर्वृतिपर्यान जीवकी बच्च जनगहना विदोध मधिक है। (इससे विगोदमतिष्ठित पूर्यान्य जीवकी जागर जनगहना जर्मकरात्रः गुणी है। दशते तिगोदमतिष्ठित निवृंग्यपयांना श्रीवकी उच्च श्रवसारना क्रियेच श्रीवक है। इससे निगोदमीतिशन निर्वास्त्रयोग जीवकी उन्ह प्रथमादमा विरोध स्थित है।) द्वति बाहर वनश्यतिकायिक प्रतिकारीर विकृतिस्त्रणील जीवकी प्रमण्य अस्ताहका करार अवर अवराजातीय विश्वासकार के विश्वसकार के विश्वसकार के स्वतासका असे अवराज्य अवराज्य अवराज्य अवराज्य असे अवराज्य अवराज्य असे अवराज्य अव है। इससे बीट्रिय तिर्शित्ययान जीवकी जवाय श्रवगाहका संस्थानगुणी है। इससे ६ । १५१स मान्त्रय मण्डापायम् । आवश्य आवश्य अवगारमा संस्थातमुन्ती है । इससे देवेन्द्रिय चतुरात्म्य त्रवृत्त्राच्या प्रकार प्रकार स्वतंत्र तुर्वे है। इससे क्षीत्र्य विकृत्याचे विकृत्याच्या स्वतंत्र तुर्वे क्षीत्र्य विकृत्याच्या भावना व्यवसार संक्यातगुरी है। इससे बगुरिन्द्रिय निर्मुख्यपरित क्रीवरी व्यव अवगारमा शंक्याममुळी है । इससे अंतित्व विश्वेत्वयाचित्र श्रोदरी अवह अवस्तरण राजपाताम् है। दारो बादर बनत्यतिकारिक बार्टकारीर विशेष्ययरीन क्षेत्रके क्ष्ये क्षा

र्पंतिदिपनिन्यतिअपन्वत्तपस्त उदशस्त्रया ओगाहणा संखेन्त्रगुणा। देवंदिपनिनारिः पुत्रवस्यस्म उक्कस्मिया श्रीगाह्या संसेवत्रगुगा । चर्डारदियणिष्यतिपृत्रवसम् उत्त स्तिया जोगाइया संसेज्ज्युया । वेइंदियणिव्यत्तिपज्ञत्तयस्य उक्कस्मिया जेगाय संगेजनुदा । बद्दवनप्रद्रप्रवेषसरीरणिन्यविषञ्चवयस्य उक्कस्सिया ओगाह्या संगे ब्दगुना । प्रिनिद्यिनिब्दिषिव्यत्तेषुरम् उक्कद्विया आगाहणा संस्वत्वगुना । सुर्के मुदुमम्य क्रीगाइनागुनगारी आवित्याए असंरोज्बिदमागी । सुदुमादी पारस्य प्रेरी इषागुरुगरो पनिदोदमस्य असंरोज्बदिमागो'। बादसदे। सुदृमस्य ओगाहगणु<sup>नहा</sup>ने कार्यन्याद् असंनेज्यदिमाणा । पादरादो पादरस्य ओगाहणागुणगारा पितरापन उन्हें उन्हें इसकी । बादगरी बादरस्त ओगाहणागुणवारी संदेज्जा सम्पा । ए कररकर करका प्रविचनित्रका प्रमास अहिलाया आगाहणा पर्णगुलस्य अपेराजिः कन् हरि कुते होतू गामेई, पर्रागुलमामहारादे। पर्णगुलमामहारा संसेन्नगुणो वि हरे कम्पदे ! शिक्नेलम्म मंगेक्बिसमामे वि गुरुवएमादो । एदम्हादे चेव एदिले क्रे

करणपुर लंकाण्यापी है। इसने पंचेत्रिय निर्मृत्यपर्यान्त जीवकी उप्तर मनाहन क्षेत्रक मान्य निर्देशियां अधिका अवसी ज्ञाहर सप्ताइन शंकाला है । इस वे ब्यूनिट्यूय विद्वितायांत्व त्रीयकी चल्ठव स्थापाइना संन्यात्युवी है। सर्थे ही पूर रेस् लागे प मीतकी उण्डत मनगाइना संस्थातगुणी है। इनसे सहर बहराति करीक करोकसरीत तिवृत्तियांच्या जीतकी करूप भागमाहता संस्थातमुत्री है। इसे करेरीहरू हैं। हेरियारील बीवडी बाहुए अयुगाहका संस्थातगुणी है ।

कड व्यवस्थातम् । १० व्यवस्थातम् । १ व्यवस्थातम् । कड व्यवस्थातम् नृत्ये स्वस्तीयकी सयगादनाका गुणकार सायणीया संस्थातस् क्षण है । ब्युवर्शनिक बादर प्रतिकी सरमाहताका गुणकार परमोपमका सर्वनाता हुन है : बार्ववर्णनेक म्हनजीवरी स्वताहताका गुणकार भाषतीया अपेशावर्ण आहे ! स्परकृष्य सन्त वनकारीवर्धा समाहताका गुणकार सामाहास समामाहास हाति । १ अस्त क्षारण करनारी अनुसादनाचा मुख्यान सेन्यान सम्पादाम् साम्माता । वार्षाताम् । वार्षाताम् । वार्षाताम् । वार्षाताम क्षेत्रको क्रकान अवस्थान संक्ष्य प्रतिक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्य

क्षरन स्वतः है।

देश - वहां पर बातर यत्रमातिवाधिक प्रांगवताधीर वर्णातरी प्रवस्य अवस्य करण्यंत्र कमक्यानरे जाम वहा है, शा वह मांग्र ही नहीं भारे, हिन्तु मानांग्रंड मार्क एरम् क्रमानुनका सामहार संकातगुणा हेग्ता है, यह केंग ब्रामा बागा है है

क्ष्याराज् - बाबन्वनभ्यात्रवर्गयस्य प्रापेषत्रातीतः वर्णाः स्व वर्णासम्हातः, बण्यः समाराज् - बाबन्वनभ्यात्रवर्गयस्य प्रापेषत्रातीतः वर्णाः स्वति वर्णासम्हातः, कार्य पान कार कर्यन्य नार्वोची कारका 'शिर्त नर्गत्य व कार्यान कार वार्यान है' है । कार्य पान कार कर्यन्य नार्वोची कारका 'शिर्त नर्गत्य व कार्यान है भागर्वे रहेन हैं । इस है । बुक्तरराम् काना काना दे १६ जनगणुरुक सामग्रास्य मनीनुरका सामग्राह संकानामा है

t the cold as the office of the file.

199

हणाए जीवमहुत्तं च णायच्यं। पारतिभारिपदिहिद्यज्जचा किमिदि सुचिन्हि च चुचा? ण, तेसि पचेमसरित् अंतन्मावारो । बादरतेउकार्यपञ्जचा सत्याण-वेदण-कसाय-वेद्रिन्य-समुखादगदा पंचण्डं लोगाणमसंग्रेज्जदिभागे । मारणंतिय-उवमादगदा चहुण्डं लोगाणम-संखेज्जदिमागे, माशुसखेचादो असंग्रेज्जपुणे ।

मादरवाउकाइमपञ्जता केवडि खेत्ते, छोगस्स संक्षेज्जदि-भागे ॥ २४ ॥ एदसस गुवस्स अत्यो गुच्चदे- सत्याण-वेदण-कसाय-मारणविय-उववादगदा

बाद्रवाउपज्ञचा तिष्टं लोगाणं संखेळिदिमागे, दोलोगिहिती आसंस्वरतायुणे । बाद्रवाउ-पडजवरासी लोगस्स संखेरजिदमागमेची मारणंतिय-उववादगदी खब्दलोगे किणा देदि चि चुचे च होदि, रज्यवदसहरेण पंचरण्डाआयामेणं हिदसेचे चेत्र पाएण तेसिङ्ग्यचीदो।

तथा, उक्त रक्षी गुरुपदेशके बादरवनस्पतिकाधिक प्रध्यक्षश्रीरको अधगहनामें जीवोकी व्यथिकता भी जानना चाहिए।

क्षि बाधकरता मा जानना चाहिए। होहा---सत्रमें बाहरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त और वर्षो नहीं वहे रै

समाधान — नहीं, वर्षीक, वादरनिगेदमतीष्ठित वर्षीया अधिन प्रत्येकतारीर वर्षीया वनस्वतिकाविक अधिम अन्तर्भाव है। जाता है।

स्यस्थानस्यस्थान, मेर्नारामुद्धान, कमाधानुद्धान भीर धिक्रियकानुद्धानमत साहर-विश्वस्थायिक प्रयोदन अथि पांची शोकोंके असंस्थानये भागमें रहते हैं। मारलानिक-समुद्धात और उपपादमत ये ही बादर वैज्ञरुक्तिका और चारों शोकोंके असंस्थानये भागमें

श्रीर मनुष्येत्रोहस्त श्रदंक्यातगुणे क्षेत्रम रहते हैं। शहर बायुकायिक पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है होत्रके संप्यानत्र

मागमें रहते हैं ॥ २४ ॥

स्त स्वक्ता अर्थ करते हैं—स्वरधान, वेदनासमुद्रात, क्यायसमुद्रात, सारव्यानिक-समुद्रात और उपपाद पदमत बादरवायुकायिक वर्यः जीय सारात्मध्येक कादि तीन होडोंके संवयातवें सातामें और तिवंग्लोव तथा अगुष्पक्षोक इन दोनों होत्सीय मसंस्थानमुखे क्षेत्री रहते हैं।

शुंका — चाहर वायुवाविक पर्योक्तराति छोक्के संक्वालवे मानम्माण है, क्रव कह मारणातिकत्वागुद्धात और उपयाद पर्राको मान्य हो तब यह सर्व छोक्के वर्षो वही रहनी है! मार्गापात— वहीं रहनी है, वर्षोंकि, राजुष्वरम्माण मुख्ये और पांच राज कार्यासं

समायान वार्ष करके उन बाहर बागुकायिक वर्षान्य जीवीकी जन्मील होगी है।

f alleitet getet felget felteleitin gatifenhate materlianen nebr !



िर०१

एदं क्षं मध्यदे ! गुरुवएसादी ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिन्छाइडिप्पहुडि जाव अजोगि-केविल ति केविड खेते, लोगस्त असंखेज्जदिभागे<sup>ँ</sup>॥ २६ ॥

तसकाइय-तसकाइयपज्जनिमन्छाइही सत्थाण-विद्वारविसत्याण-वेदण-कसाय-वेउ-व्ययसञ्चायादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेजजदिमाग, तिरियलोगस्स संखेजजदिमागे, अज्ञाह-सादी असंखेजनपुणे ! मारणंतिय-अवनादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेजनदिमागे, णर-तिरिय-लोगेहितो असंखेळागुण। एत्य ओवष्टणा जाणिय कायच्या। सेसगुणद्वाणाणं पंचिदिवर्भगे।।

सजोगिकेवली ओधं ॥ २७ ॥

सगममेदं ।

तसकाइयअपज्जता पंचिंदियअपज्जताणं भंगो ॥ २८ ॥

शंका-यह कैसे जाना जाता है!

समाधान-गुरके उपदेशसे जाना जाता है कि बादर बनश्यतिकाधिक जीव वृश्चिवियोंके ही भाष्यसे रहते हैं।

श्रमकारिक और श्रमकारिक पर्याप्त जीवोंमें निध्यादृष्टि गुणस्थानीय लेकर अयोगिकेश्ली गुणस्थान एक प्रस्पेक गुणस्थानवर्धी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ! स्रोबके असंख्यावें मागमें रहते हैं ॥ २६ ॥

स्यस्थानस्यस्थान, विद्वारयास्यस्थान, घेदनासमुद्धात, अवायसमुद्धान और वैक्टि-विकसमुद्रातगत जसकाविक और जसकाविक पर्याप्त विष्याराध जीव सामान्यहोच आहि तीन स्रोक्षीके मसंच्यातमें भागमें, तिर्वग्रीकके संच्यातमें भागमें भीर भड़ाईशीयोर असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्धात और उपपादणन असकाविक और जसकायिक वर्षात मिण्याद्धि जीव तीनों छोडोंके असंस्वातवें भागमें तथा मनुष्यहोता और तिर्थेग्लीकारे असंस्थातगुणे शेवमें रहते हैं। यहांपर अपवर्तना जानकरके करना चाहिये। सासादनादि दोच गुणस्यानवर्ती बसकाविक और बसकाविक वर्षात बीवोंका क्षेत्र वंकेन्द्रिय जीवाँके क्षेत्रोंके समान जानना चाहिए।

संवीगिकेवडीका क्षेत्र श्रोपनिस्वित संयोगिकेवडीके क्षेत्रके समान है ॥ २७॥ यह ध्रम सुनम है।

श्रमकायिक सन्दर्भवर्षात्र जीवीका क्षेत्र पंचेन्द्रिय सन्दर्भप्रमाहरोहे क्षेत्रके समान है ॥ २८ ॥

## एदं पि सुचं सुगमं, पुन्तं परुतिदत्तादो । एतं कायमग्गणा समता ।

जोगाणुनादेण पंचमणजोगि-पंचनिचोगीसु मिच्छादिट्टिणहुडि जान सजोगिकेनळी केनडि खेते, छोगस्स असंखेजदिमार्ग ॥२९॥

पदस्स सुत्तस्य अत्यो युज्यदे- पंचमणज्ञागि-पंचयित्रोतिमिन्छादिद्वी सर्वाणः विद्याप्तिदेसत्याणः वेदणः कसायः वेउन्त्रियससुः पादयद्वा तिण्वं रोगाणमसंवैज्ञतिः सात्ता, तिरियलोगस्स संखेजनदिमागे, अङ्काद्वजादो असंखेजन्यप्ते । वेउन्त्रियससुः गदाणं कमं मणज्ञोगः-विच्जोगाणं समयो १ ण, तिसि पि णिप्पण्णचरसरीराणं मणज्ञाः विच्जागाणं परावित्तसम्बद्धो । मारणंतियससुः पाद्याद्वा तिण्वं रोगाणमसंविज्ञिद्वास्त्राणं एत्वित्तियलोगोहितो असंखेजन्यापे । मारणंतियससुः पाद्याद्वाद्वा असंखेजन्यापापे रिद्वाणं सुन्धिद्वा असंखेजन्यापे । मारणंतियससुः पाद्याद्वाद्वा अस्वाणं विष्यससुः विष्यस्य पाद्याद्वा । सारणंतियससुः पाद्याद्वा । सारणंतियससुः पाद्वा । सारणंतियससुः विष्यस्य । विषयस्य । विष्यस्य । विषयस्य । विष्यस्य । विषयस्य । वि

यह सूत्र भी सुगम है, पर्योकि, इसका पहले प्रकृपण किया जा चुका है! इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचा मनोयोगी और पांचा वचनयोगियाँने मिध्या हिं गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव हिर्देग क्षेत्रमें रहते हैं ? लेकिक असंख्यातवें मार्गमें रहते हैं ॥ २९ ॥

इस स्वका अर्थ कहते ई—स्वस्थानस्वस्थान, विदारवस्वस्थान, वेदनासमुद्रात, कथायसमुद्रात और येत्रियिकसमुद्रातगत पांचा मनोयोगी और पांचा घवनयोगी विष्यारी जीय सामान्यटोक आदि तीन टोकांके असंख्यातय मागर्म, तिर्यन्टोकके संक्यात्य मागर्म भीर सदार्द्विपसे ससंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

अनुरक्षापण असम्बातसुण सत्रम रहत ह। गुद्रा— वैक्रियकसमुद्रातको प्राप्त जीवाँके मनोयोग और यचनयोग केले समर्वहैं।

समाधान — नहीं, फ्योंकि, निष्पन्न हुमा है विविद्यासक उत्तरदारीर क्रिन्डे, देवे क्रांबेंके मनोषोग क्षोर वचनयोगीका परिवर्तन संमय है।

मारमानिकसमुद्रानयत पांचा मनोपोगी और पांचा वचनपोगी भिष्याहर्ष और सामाग्योक सादि सीन होशोंके असंस्थातय मागम, मनुष्यहोक और तिर्पाहोक्त और स्थानाय्योक सादि सीन होशोंके असंस्थातय मागम, मनुष्यहोक और तिर्पाहोक्त और स्थानायों क्षेत्रमें रहते हैं।

र्गुडा — मारणान्तिकसमुद्रानको प्राप्त, असंक्यात योजन आयामसे स्थित और मुर्चिटन कुए संबंध आयोक मनोयोग और ययनयोग कैस संमय हैं।

समायान -- मर्रो, वर्षोकि, बायक कारणके संमाय दोनेसे निर्मर (संस्रूर) होते १ बोलाइस्टेन बारमस्व ग्रेलियो स्थितस्व देवनोधिकस्वाता होस्सावस्वेतवा । ह. छे. छे.

जीवाणं व वेसि तत्व संमयं पिंड विरोहामानादो । मण-विवागोस् उपवादो णित्य । नार १ वर्ष १८५ वर्ष १८० वर्ष १ इ.स.च्या १८० वर्ष १८० 1808 असंजदसम्माइडीणं उनवादी णास्य । कायजोगीस मिच्छाह्टी ओघं'॥ ३०॥

सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मारणंविय-उत्त्वादगद्दा कायजोगिमिच्छाद्द्वी सन्त होर । विहासपदिसायाण-वेजविवयसमुग्रभादगद्भ विष्हं लागाणमसंस्कृत्रद्भिमागे, विस्थि

सासणसम्मादिहिपहुडि जाव सीणकसायचीदरागछदुमत्या केवाडे त्ते, लोगस्त असंखेजादिभागे ॥ ३१॥

जोगामाबादो एत्थ अजोगीणमग्गहणं । सेसं सुगमं ।

गियोक् समान भववन मनोवाम और वृषत्रयोग मारणानिकसमुद्रातगर मूर्विजन न मा जान वा राज कर कर कर कर कर कर कर के होता है। साताहरमास्वरहरि माने छेकर समुग्रतरिक संवेशिकेषद्धी गुणस्यानतक मार्थक गुणस्यानवर्ती मनी

नियं छक्तः, मञ्जाबाद्यः स्वाधकार्यः अन्यानामः स्वकः अन्यानवातः स्वा विद्यवनयोगी जीयोका संत्र मुलाब हेरके समान है। विद्याप बान यह है कि १९ जननभागः वायाचा ११न मूलाव ११नमः सनान हा ।वदाच चान जह ।क् स्तायकाष्टे और ससंयतसम्प्राचीह मनोयोगी और वयनयोगी और्योक इच्छाइएइ

. ज्ञाययोगियोमें मिध्यादृष्टि जीशेंका क्षेत्र जोपके समान सर्वहोक दै ॥ १० ॥ परवातम्बद्धात्, वदनासमुद्धात्, क्यावसम्बद्धात्, मारणातिकसमुद्धात् भार रूप वरपानवरस्थान, वर्गावस्थावन, करावस्याञ्चल, मार्क्यास्वरूप्यान कार दर्श प्रयोगी मिष्यादृष्टि जीव सर्वे छोनमें रहते हैं। विहारवरस्यस्यान कार देशिहोदस् नवाना कार्यामा विश्ववहित्रिक्षि सामान्यकोडः भादि तीत होडोहे अस्वस्थान कावपाम मानवाहार भाग पानवापालम जाद पान कार्या जाप जात जा जा ज्यात जा ज्यात जा ज्यात जा ज्यात जा ज्यात जा ज्यात होतेको संवयात्वये भागमें भीर भड़ार्रद्वीयसे भसंवयात्मुले शेवमें रहने हैं पर्रास्ट

दिनसम्पर्धाः गुणस्यानसे लेक्द्र शीणक्षाववीतराग्छक्त्य गुणस्यान तक प्रमाणकार अवस्थामा एका शावकाववायामाराकाव अवस्था एक मनवर्ग कायसीमी क्षेत्र किनने क्षेत्रमें रहते हैं है होकक अमस्यानह

ा १ . . . समाय दोनेत इस स्वार्में भयोगिकेविद्योंका महत्व नहीं विद्या गया है।

एक्स हारान सारहाय

1000

सजोगिकेवर्टी ओषं ॥ ३२ ॥

गुनरिवन्यानमेमजोमी किन्न करो ? ग, सजीमिन्टि होगस असंसेर्ट्य प्रति मन्दर्भेन वा हरि विसेत्रवर्णमारो ।

ओराहियकायजाेगीसु मिन्छाइही ओघं ॥ ३३ ॥

गरे न जान नेदन कमाय-मार्गित्वसमुग्यादगरा सरातीष, मुद्दमपत्रवर्षा नगः कर्णेटन मंगरती । दहसरी वार्मित्रवर्षा निर्मित्रवर्षा स्वार्णेटन मंगरती । दहसरी वार्मित्रवर्षा निर्मित्रवर्षा क्षेत्रवर्षा निर्मित्रवर्षा कर्णेटन स्वार्णेटन स्वार

कारचेला के संवेशिके की का धेव ओषनयोगिकेवलीके धेवके समान है ॥३३॥

र्यक्ष: --- काराप्रविद्याणक्यातमातिपत्र सभी आधाँका यक्त योग वर्ग नहीं दिशा । क्यांच कृष्य "साम्याप्रधानिद्विष्यकृति" क्यांचित्र स्वाक्ष्म और इस "सामाधिकारी और " सुरुष्य एक स्वत्र कर्म नहीं दिशा है

करणा द -- अर्थी, वर्षीक, कार्योगोकपालीके क्षेत्रमें, 'सार्यायोकपाली मोडके सर्वे करणा करूरणार्थि कोट कर्त होक्ष्में रहते हैं 'दश प्रकारका विशेष करात वाया जाती है। क्सोटर कर्क के की स्टब्स्ट पट योग नहीं दिया।

में तर्गत इसाम पंजियोंने निरुषाशित भीषों हा थेन भोष है माना गाँ मोह है ॥ १६६ व्याप पंजियोंने निरुष्ण के अपने स्वाप माना गाँ मोह है ॥ १६६ व्याप पंजिय है । विश्व कर से हैं, वर्षोंति, वर्ष गाँ गाँ वर्षोंति कर कर से ने माना पंजिय है । विश्व कर भी में स्वाप प्रविद्य स्वाप के । विश्व कर में हैं, वर्षोंति, वर्षा गाँ निर्व है। है । हिंद क्षा के निरुष्ण के प्रविद्य स्वाप के । विश्व के भी में से प्रविद्य स्वाप के । विश्व के स्वाप के स्वाप के स्वाप के सिर्व है। विश्व है । विश्व के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के सिर्व है । वर्षोंति, स्वरूप स्वाप के स्वाप निर्व सामित है। वर्षोंति स्वाप के स्वाप के स्वाप के सिर्व है । वर्षोंति स्वाप के स्वाप के स्वाप के सिर्व है। वर्षोंति है। सिर्व है। वर्षोंति स्वाप के सिर्व है। वर्षोंति है। सिर्व है। वर्षोंति है। सिर्व है। वर्षोंति सिर्व है। वर्षोंति है। वर

कि विश्व कर करमवा अधिया वह है कि अभी उन्हें कि विश्व

सासणसम्मादिष्टिपहुडि जाव सजोगिकेवली छोगस्स असंसे-ज्जदिभागे ॥ ३४ ॥

परं सजोगिकेवली लोगस्य असंदोज्जिदिमागे ? ण एस दोसो, ओरालिपकाय-जोगे शिस्ट्रे ओरालिपमिस्त-कम्मद्रयकापजोगसहगृद्दकवाड-पद्र-लोगपूरणाणमसंमवादो ! सासणसम्मादिद्व-असंजदसम्मादिहीणमुक्त्वादो णस्थि । पमचे आहारसमुग्यादो गस्थि । सेसं जाविष्य वसर्व ।

ओराहियमिस्सकायजोगीस मिच्छादिट्टी ओवं ॥ ३५ ॥

द्वातको प्राप्त कोशारिककाययोगी ऑयोंका होत्र तिर्यग्होकका वसंवयातयो भाग पताया है, तब दौका की जा सकती है कि वैकिपिकदारीरयादे जीवोंक वैकिपिकसमुदातका होत्र तो विभिन्नेक सार्वादका होत्र तो विभिन्नेक का स्वाप्त हो जा सकती है कि विकिपिकदारीरयादे जीवोंक वैकिपिकसमुदातका होत्र तो विभिन्नेक का स्वाप्त का स्वाप्त की स्वाप्त के स्वप्त के स्वप्त

सावादनसम्पर्माः गुणस्पानसे रेकर सपीगिकेवरी। गुणस्पान तक प्रत्येक गुण-स्पानवर्ती औदारिककाययोगी जीव सोकक असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३५ ॥

गुँका- सयोगिकेयटी भगवान होकके असंख्यातमें भागमें रहते हैं, इतना ही क्यों कहा?

समापान — यद कोई दोप नहीं है, क्योंकि. भीशारिकशाययोगसे निरुद्ध शेवका वर्णन करते समय भीशारिकामधाययोग और कार्मणकाययोगके साथमें होनेवाडे कराट, अतर और शोवपुरण समुद्धाताँका होना संभय नहीं है। दसलिय भीशारिकशाययोगी संयोगि वेयली होक्द सर्भक्यातयें मागमें सहते हैं, येका कहा है।

सामाद्रमसम्पन्धि और मसंबद्धसम्पन्धि भौदादिकवाययोगी अधिके उपयोद्दर्भ मही होता है। प्रमाणुकस्थानमें आहात्कसमुद्धातपद भी नहीं है, पयोकि, यहाँपर भौदादिक-साययांवियोंका होत्र पताया आ रहा है। होच गुणस्थानोंमें पथासंभय पद जानकर बहुना साहिए।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंने मिध्यादीष्ट जीव ओपके समान सर्वलोकने रहते है। ३५ ॥ धवर्गहारामे जीवदार्ग

बहुतु क्छमेगवयणणिदेसो ? ण एस दोसो, बहुणं पि जादीए एमनुबन्तेनाते। अधवा मिच्छाइड्डी इदि एसो बहुवयणणिदेसी चेत्र । कर्ष पुण एन्य विहत्ती शौतहन्त्रेर ! 'आइ-मन्झतवण्णसरलेवा ' इदि विहचिलोवादा । सत्थाण-वेदण-कमाय-मारणीतप-उवनार-गदा औराल्यिमस्सकायजोगिमिच्छाइड्ढी सन्वलोग । विहारवदिसत्याण-वेजीन्त्रयसमुखारा णस्यि, तेण तेसि विरोहादो । ओरालियमिस्सस्य वेउन्त्रियादिषदेहि भेदसमगरी अव णिदेसो ण घडदे ? ण एस दोसो, एत्य विज्जमाणपदाण परुवणा ओवपरुवणाए तुर्छेति ओघत्तविरोधाभावादो ।

सासणसम्मादिट्टी असंजदसम्मादिट्टी अजोगिकेवर्टी केविंड खेते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३६ ॥

एत्य पुष्यसुत्तादो ओरालियमिस्सकायज्ञोगो अणुबहुदे । तेणेवं संबंधो महिंद

शंका-निध्यादिध्योंके यहत होने पर भी यहां सुधमें एक वचनका निर्देश हैते किया गया ?

समाधान-यह कोई दोप नहीं, पर्योक्ति संख्याकी अपेक्षा बहुतसे मी जीवीके जातिकी विवस्तासे पकत्व पाया जाता है। अथया, 'मिस्छाइट्टी'यह पद बहुबबतना ही निर्देश समग्रना चाहिए।

शंका-तो फिर यहां यहुवचनकी विभाक्त पर्यो नहीं पाई जाती है ?

समाधान—'वादि, मध्य बार अन्तके वर्ण और स्वरका लोप हो जाता है, 'र्स

प्राहतस्याकरणके स्त्रानुसार वहुपचनकी विमक्तिका लोप हो गया है।

स्वस्थानस्यस्थान, वेदनासमुद्रात, क्षायसमुद्रात, मारणान्तिकसमुद्रात और उपार पद्गत औदारिकमिश्रकायपोगी निष्यादृष्टि जीव सर्व छोकमें रहते हैं। यहांपर विहास्तस्व स्थान और वैक्रियिकसमुद्धात ये दो पद नहीं होते हैं, क्योंकि, औशरिकमिश्रकाययोगके साथ इन दोनों पदांका विरोध है।

ग्रेफा — औदारिकमिश्रकाययोगका चैक्रियिकसमुद्धात आदि पदोंके साथ मेद पाय

पाया जाता है, व्यतएय सूत्रमें 'ओघ' पदका निर्देश घटित नहीं होता है 🖁 समाधान -- यह कोई दोष नहीं, पर्योक्ति, यहां श्रीदारिकमिश्रकाययोगमें विवसत स्यस्यान आदि पदाकी प्रस्पणा झोषप्रस्पणाके तुस्य है, इसलिए झोषपता विरोपको प्रव

नहीं होता है। औद्।रिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दिए, असंवतसम्यग्दिए और स्योगिः केवली कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें मागमें रहते हैं ॥ ३६ ॥ इस स्वमं पूर्व स्वसं 'श्रीदारिकमिश्रकाययोग' इस पदकी अनुकृषि होती है। t, t, tt. 1

I tous

जोरालियमिस्सकायजोगीस सासणसम्मादिद्री असंजदसम्मादिद्री सजोगिकेवली केवडि खेंचे इदि। सासणसम्मादिही सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्यादगदा चरुण्हं छोगाणमसंखेखदि-मागे अष्ठावज्जादे। असंधेन्जगुने । कदो । औरालियमिस्सम्हि पलिदोवमस्स असंसेन्जदि-भागमेचतासणसम्मादिद्विरातिस्य संभवादो । परथ सेसपदाणि णात्थ, तेण तेसि तत्थ विरोधादो । असंजदसम्माइही सत्थाण-वेदण-कसायसग्राचादगदा चदुण्डं लोगाणमसंखे-ज्जदिभागे माणुसखेचस्स संखेज्जदिभागे, संखेज्जपरिमाणादो । सासणसम्मादिद्रि-असंजद-सम्मादिङ्गीणमुखादो किम्हं ण उत्तो १ ण. औतालियभिस्तिकि दिदाणमेतालियभिस्तकाय-जोगेस उवचाराभावारो । अथवा उवचारो अस्यि, गुणेण सह अक्रमेण उपासभवस्मीर-पदमसम्प उवलंगादी, पंचायत्यावदिश्चित्रोसलियभिस्मजीवाणम् मावादी च । सजीति-

इसलिए सबके अर्थका इसमकार सम्बन्ध होता है- औशारिकमिश्रकाययोगियोंमें सामावन-सम्बन्दिए, मसंवतसम्बन्दिए और संवोविकेवली कितने क्षेत्रमें रहते हैं । स्वस्थानस्वस्थान, चेदनासमझात और कपायसमझातगत सासादनसम्यग्दप्टि जीव सामान्यलोक सादि चार लोकोंके असंक्यातर्थे भागमें और अदृश्दियित असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, श्रीदारिक्रमिशकाययोगमें पत्योपमके असंस्थातमें भागप्रमाण सामाजनसम्बाद्धीवर्धिकी राशिका पाया जाना संभव है। यहांपर दीय विहारपास्यस्थान आहि पत्र नहीं होते हैं. क्योंकि, सासाइन गणस्थानके साथ उन पड़ीका यहांपर विरोध है।

स्यस्थानस्यस्थान, घेदनासमुद्धात और कपायसमुद्धातगत श्रीदारिकनिधाराययोगी संस्यतसम्यग्दाप्रे जीव सामान्यतीक भावि चार लोकोंके संस्थानये भागमें और मनत्य-क्षेत्रके संस्थातय जागम रहते हैं, प्रयोक्ति, ये संस्थात राशिप्रमाण होते हैं।

दाँका — भीडारिकमिधवाययोगी सामादनसम्पन्ति और असंगतमध्यानि आंगाँके

क्रप्यादपद पर्यो नहीं कहा है

समाधात-महीं, वर्षोकि, औदारिकमिधकाययोगमें स्थित जीवोंका पना श्रीता-रिकामिश्रहाययोगियों उपवाद नहीं होता है। अथना, उपवाद होता है, प्रयोकि, सासाहत भीर असंवतसम्बन्दार गुणस्थानके साथ भक्रमसे उपास मन-वाधीरके प्रथम समयमें उसका सदाव पाया जाता है। इसरी वात यह है कि स्वस्थानस्वस्थान, येदनासमझान, द्याप-समहात, केवलिसमदात भार उपपाद इन पांच अवस्थाओं के अतिरिक्त औदारिकामिधकाय-चोती जीवाँका धमाय है।

विद्रापाध-पदांपर प्रथम तो भारारिकमिधक पयोगियाँका औडगरेकमिधकाय-क्षेत्रीवास उपपादका सभाष पतलावा गया । पनः, अधवा करके धाँदाविकास्थितावाक्ष्मीत-काँचे तककाहका सदाय भी यतला दिया गया। ये दीनों पति परस्वर विराह की कर्नाज श्रीती हैं । किन्तु यथार्थतः उनमें काई विराध नहीं है । भेद केवर कथन-दीलीका है। जिसका स्पष्टीकरण इस मकार है-प्रथम जो भीदारिकभिधकाषयोगियाका केवटी कवाडगदी विण्डं लोगाणमसंखेजबदिभागे, विरियलोगस्स संखेजबदिमाने, जुन्ह ज्जादे। असंखेज्जगणे I

वेउव्वियकायजोगीस मिच्छाइहिष्पहुडि जाव असंजदसमारिही केवडि सेते, लोगस्स असंसेज्जदिभागे ॥ ३७ ॥

एदस्प्रत्यो - सत्थाणसत्थाण-विद्वारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउन्वियसमुख्यार्गत् निच्छादिही तिर्दे सेनाशमसंसेज्जदिमाणे, तिरियस्रोगस्स संसेज्जदिमाणे, अपुरागरि

क्रितारकातप्रकायपोगियाँ उपपादका अमाव बनलाया, उसका मधिनाय वर् दि भीदारिकमिश्रकाययोग नियम और मनुष्याकी भाग्यात दशामें ही होगा है

कीर, मार्गार्शको मान्य सासाइनसम्यादिष्ट या अस्यनसम्यादिष्ट जीव मत्त्रको हा करी होता दें, जिममे कि यह पुना श्रीदारिकमिश्रकाययोगी सासाइनसम्बद्धि या सर्वत कारताहरू दिवस या मनुत्यामें उत्पन्न हो सके। मत्तपय उसमें सासादनतायाहर है कर्णरत्यकरण्यादि श्रीहारिकमिधवाययोगी जीवोंके उपपादका अधाय बननाना सर्व युक्तिमंत्र ही है। युका, समाम करके जो श्रीदारिकमिश्रकाययामियाँम उनके अकार राङ्कार बण्यास गया, उसका श्रामियाय यह है कि पूर्वमयके दारीरको छोड़कर उनावा क्ट्र सक्दर्ने प्रयोगको प्रयाह कहा गया दे। यह उपयह उत्पह होनेते प्रयम सर्वा हो होत्य है, अनुवर यह कोई श्रीदारिककाययांची या यैकियककाययांची सामाहताम्पूरी का कर्षक्रमाचार्दि श्रीत मण्डर मतुत्व निर्यवाम उत्पन्न होता है, हो उनहे उन्ति हरूर सहरवे भेर रिक्मिश्रहाययोगका सहाय पापा जायगा। हशीविव कहा गर्या है। क्रम्मर्वकारप्रदृति सः सम्यत्मस्यप्रति गुणस्यानके साथ सुगयन् धारण किय गय साण अरमन्त्रकी इर्गत्रे प्रथम समयम अत्यादकामध्रकाययोगियोके वर्गावका सञ्ज्य का कत्त है। इस प्रदार यह स्पट है कि उस दोनों सम्बोध कोई बारस्परिक विशेष हो है देन देवल बलन है है। य रिएशामा ही है।

बराउम्प्रपुरवन भीदारिकमिश्रकाययांगा संयोगिकेयणी मगयान मानावरिक कार्त तीन होत्राहि अर्थनवार है सामग्रे, निर्याशकार्त संस्थान सम्मान सामग्रे और अर्थनवार है सामग्रे, निर्याशकार संस्थानय सामग्रे और अर्थार्त्वाण सं स्टब्बर हेरने रहते हैं। रिविज्ञित्रवाययोगियोमें निष्याद्यति गुणव्यानमें देवर अमेननव्यात

बुक्क्टार तह बलीह गुरुकानवती बीव दिनने धेवमें वहते हैं। सीवहे प्रार्वता \*\*\* 10 E | 35 C

इ.स. स्टब्स अटे बहुन हे — स्वस्थानस्यामान, विद्वायम्यामान, विद्वासम्बद्धाः करणसम्बद्धान के व सिर्वाणकम्बद्धानम्यम्बद्धानम्बद् कार्य रोज याचीक अस्था नवे सामसे, दिवेशराक संव्यानने सामसे सेर सामित

असंखेउज्ज्ञमुणे, पहाणीक्रयज्ञोहासियसासिचादा । मारणंतियसमुग्गादगदा तिण्हं लोगाणम-संखेरनदिमागे, णर-विश्विकागेहितो असंखेरनगुणे । एत्य ओवड्टिप दहुरूनं । सासणादि-परुवणा ओधपरुवणाए तुला, णवरि सच्चत्थ उववादो गरिथ ।

वेजिन्वयमिस्सकायजोगीसु मिन्छादिट्टी सासणसम्मादिट्टी असं-जदसम्मादिट्टी केविंड खेत्ते, छोगस्त असंखेज्जदिभागे ॥ ३८ ॥

एदस्सत्थो- वेउच्यिमस्सकायज्ञामी मिच्छादिही सत्याण-वेदण कसायसम्रागाद-गदा विण्हं स्रोगाणमसंखेनजदिभागे, विरियलागरम संखेनजदिभागे अहाइनजादी असंखेज-गुणे । सामणसम्मारिष्टी असंबद्धम्मार्ष्टी सत्थाण-वेदण-कसायसम्मार्थाः चदुण्हे लोगाणमसंयोजनिदमागे, अष्टाहण्जादी असंयोजन्युणे ।

आहारकायजोगीस आहारमिस्सकायजोगीस पमतसंजदा केवडि खेते. लोगस्स असंखेउजदिभागे ॥ ३९ ॥

बसंस्यातमुणे होत्रमें रहते हैं, पर्योक्षि, यहां यीक्रियककाययोगके मकरणमें ज्योतिका देवराशिकी प्रधानता है । मारपालिकतमुद्रातवत वैकिविककायवार्ग भिष्यक्रिके आव वयस्थान नवायाः ६ । नारमात्रावयम्बद्धाः । नारमात्रावयम् । नारमाद्धाः वाद सामार्ग्यलोक मादि तीन लोकोके असंबदात्यं भागमें और नरलोक तथा तिर्पलोक, इन दोनों होकांति असंस्थातगुणे होत्रमें रहते हैं। यहांपर मपवर्तना सर्य जान हेना चाहिए। सामादन-सायारहि बादि होत तीन गुणस्थानयती यीकेविककाययोगी जीवोंके स्वस्थानादि पहाँकी होत्रप्रकरणा भोषहेत्रप्रकरणाके तुस्य है। विदेशका केवल यह है कि इन सभी गुणस्थानोंने उपपार्पर नहीं होता है।

वैक्षिपिकमिथकाययोगियोंमे मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यन म्दिष्टि गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यावरें भागमें रहते है।। ३८।।

इस स्वका मध कहते हैं -- साखान, घेदनासमुद्रात और कत्रावसमुद्रातमत थेहि:-विक्रमिश्रकाययोगी मिध्यादृष्टि जीय सामान्यहोक मादि तीन होत्रोंके मसंस्थातये मागम, तिर्वेग्होकको संक्यातव मागम भीर अग्नाईद्वीपरी भसेक्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। सस्यान, पेदनासमुद्रात भीट कपायसमुद्रातमात सासाहनतम्बद्धारि भीर असंवतसम्बन्धि अव सामाध्यलोक भारि चार लोकोंक भसंस्थातयं मागमं भीर महार्रहीयसे मसंस्थातगुणे शेवमं

. आहारकाययोगियोंमें और आहारमिथकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत गुणसानवर्ता भीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यावर्वे मागमें रहते हैं ॥ ३९ ॥

^= ११0] पदस्त अत्यो - सत्याण-विद्यास्यदिसत्याणपरिणद्यमनसंत्रदा चरुचं लेकन ं संखेजजदिमाने, माणुसखेत्तस्त संखेजजदिमाने । मारणीतियसम्रागादगदा बरुषं लेकन संखेजजित्माने, अहाइज्जादी असंखेजजितुने । सेसपदाणि नित्य । आहानिस्त्रक

जोगिणो पमत्तसंत्रदा सत्याणगदा चदुण्डं लोगाणमसंखेजतदिमागे, मालुमनेतर्ध सं **ज्जिदिमागे** 1

कस्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्टी ओघं ॥ ४० ॥

सरवाण-वेदण-कसाय-उववादगदा कम्मइयकायजीगिमिच्छादिहिणो जेव सम्म

ं सन्त्रद्वं हॉति, तेण सन्तरोगे युत्ता। सासणसम्मादिट्टी असंजदसम्माइट्टी ओवं ॥ ४१ ॥

एदे दो वि रासीओ जेण चदुण्डं लोगाणमसंखेज्जदिमागे, अद्रुद्ज्जादी अने गुणे खेरे अच्छंति, तेण सुरे ओयमिदि वृत्तं । इस स्वका अर्थ कहते हैं — स्वस्थानस्वस्थान और विद्वारकस्थान हते हैं

परांसे परिणत आहारकाययोगा प्रमत्तसयत सामान्यलोक आदि बार लोकोके अस्वा मागमें मीर मानुवस्त्रक संक्षातवें मागमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्रातगत आहार योगी सामान्यओक बादि चार छोकोंके असंख्यातव मागर्मे और बढ़ार्रडीपसे असं<sup>खात</sup> क्षेत्रमें रहते हैं। आहारकाययोगी प्रमत्तसंयतके उक्त तीन पर्देकि सिवाय रोग हार्व नहीं होते हैं। स्वस्थानगत आहारकमिश्रकाययोगी प्रमचसंयन सामायहोक आहि टोझोंके असंस्थातये मागर्मे और मानुपसेत्रके संख्यातये मागर्मे रहते हैं।

कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघमिथ्यादृष्टिके समान सर्वे हो रहते हैं ॥ ४० ॥

स्वस्थान, वेदनासमुद्धात, बपायसमुद्धात और उपवाद, इन पर्दे हो प्रति कापयोगी मिष्याहोड जीव चूंकि सर्थत्र सर्थकालमें पाये जाते हैं, इसाठिए वे सर्वहोडमें हैं, देसा कहा गया है।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दाप्ट और असंयतसम्यग्दिए जीव श्रोपके स

शोरके असंख्यावर्षे मागमें रहते हैं ॥ ४१ ॥ रन दोना गुणस्थानोको प्राप्त कार्मणकायथेगी राशियां चृहि सामायहोक एवमें 'ओष ' पैसा पद कहा गया है।

सजोगिकेवली केवडि खेते, स्रोगस्स असंक्षेज्नेयु भागेषु सक लोगे वा ॥ ४२ ॥ सगममेदं सत्तं।

वेदाणुवादेण इस्थिवेद-पुरिसवेदेसु मिन्छाइडिणहुडि जात आणि-<sup>य</sup>ही केनडि सेते, लोगस्त असंसेज्जदिभागे'॥ ४३॥

पदस्स अत्याः सत्याणसत्याणः विद्वास्वदिसत्याणः वेदणः सत्तायः वेद्वविषयसम्पादः ात्रा इत्यिवद्मिन्छाहुद्दी विष्टं लेमाणमसंवेजनदिमामे, विधियलेमसस संस्वादिमामे, हिमञ्जादो अतंत्रिज्ञाणे, पहाणीकरदेनिस्यिवेद्वाविषादः । मारणीवय-उपबादमः विष्ट वाणमसंत्रेज्जदिमामं णर-विरियलोगोर्हत् असंवेज्जपुणे । दत्य जीवहृणा देशोपतास । ाणमामुक्तिक जार अलिपहि वि औपभीगो । णवरि असंबद्धसमादिहिहि उरवारो व । यमचसंजदे ण होनि तेजाहारा । सत्याणसत्याण विहारविहारवाण-वेरण कमाप-

कार्मणकाष्योगी सयोगिकेवली मगवान किनने धेवमें रहते हैं। लोकके असंख्यात बहु मागोंमें और सर्वजीयमें रहते हैं ॥ ४२ ॥

इसमकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादते सीवेदी और पुरुषविद्यामें मिध्यारिष्ट गुणव्यानमें लेहर श्रानिवृत्तियुक्तस्यान् वकः प्रत्येकः गुणस्यानवर्ती जीव किवने क्षेत्रस्य रहते हैं। सोकर्

इत रावका मार्थ कहते हैं - हवरथानस्यस्थान, विदारयात्त्रस्थान, वेदनासग्रहणान, रायराष्ट्रधात और वैकिशिकतमुद्द्यातम्बरामनः ।धहारवारवायान, व्यवनामाध्यान, व्यवमुद्द्यात और वैकिशिकतमुद्द्यातमत स्वीवेशी विश्वासी और सामाणस्वास स्वीवे वारणपुर्वात बार बालायकराधुर्वातम्त स्मावशा भारताहाष्ट्र जाव सामान्यस्य जातः अ.त. रोहोके मसंस्थातम् भागम्, निर्वालोकके संस्थातम् भागम् और सहाद्वित्वस्य व्यातामुम् रोत्रमें रहते हैं, प्यांकि, पहांपर हेवगातिसाहरणी कांपर कार कार्यातमा है। मारणारिकहत्वाद्वणात और उपरादत्तम कार्थिय विश्वणादाक्यमा व्यवस्थानका मार्थित उपरादत्तम कार्थियो विश्वणादेश सामानका सामित भारणात्मकत्त्वपुर्वातः बाह उपनारमतः स्वावदाः भारवादाः सामान्यकः । शिक्षोकं मसंस्थातम् भागमं भीर मरस्रोकः तथा तिर्वाताकः, हतः रोजे सोकंति सरस्याग्यकः त्रिया रहते हैं। यहाँवर भववनेश देवह भागस्वक समान है। सातार सम्प्रकार प्रथम १६ वर्ष १ राज्यामान् एकः वावप्राचकत्व पुरस्कातम्बनः कावना आवान स्व कावकः सामान् साक्ष्मा सर्वव्यामयां भाग है। विरोध बात यह है कि सम्बन्धानः वहिंद्र गुणक्यानमं स्विधिदियोकः उपणादयह नहीं होना है। नया ममणस्यत गुणक्यानमं

र वेराजुराहत ब्रीजुरहाना विश्वास्थाप नेप्रांत्रवाहर उन्नी क्यारामकरहरूहर । हः हर र

[ 2, 2, 11.

वेडव्वियसमुन्याद्गरा पुरिसवेद-मिन्छारिट्टी तिन्हं छोगांगमसंखेन्बरिमाने, तिन्दं छेग्गरम मंखेन्बरिमाने, अङ्गादन्वादी असंखेन्बगुने स्वेते अन्धित । मारांतिर-उपपरं महा निन्दं छोगानमसंबन्धविद्यां, पार-तिरियलोगोहिता असंखेत्रसुगे । सात्रवामन्देतीः पार्ट्या वाल अनिवाहि वससामा-स्वरंगा वि ओयमंगीः ।

णवंसयवेदेसु मिन्छादिहिषहुडि जाव आणियट्टि ति ओवं ॥११॥

मन्याजनन्याजनेद्दा-क्रमाय-मार्गोतिय-उववाद्दगद्ववृंत्रपवेद्दिष्टादिही हो। कोट् । विहरसदिनन्याजनेउनिययभुग्यादगदा तिर्व सोगाजमसंसेजिदिमाँ, तिर्व-वे गम्म संयोजदिसाँ। । ववरि वेउविययमुग्यादगदा तिरियतोगस्य असंतेजदित्रवे। अकृद्रव्यारी असंगेवज्युमे गोने लेग अन्छीते तेम ओपमिदि पढेरे । मानवाण-दिवित्तपृथि जार अनियदी नि एदेसि पि पह्यमा ओपतुन्ता नि ओपमिदि दुवै।

है उत्तरमहत्त्व भीर भारतकाम्यात मही होते हैं। स्वस्थातस्वरस्यात, विशायकास्य कर्तामम्यात, करायमम्यात भीर पैतिविकतम्यातको मान हुए पुत्रवेदी मिणारी है है कार स्टेन्ट्र महि तीत को होते के प्रविद्यालये मार्ग्य ति विद्यालये मार्ग्य के क्षाप्त कर्ता है तीत को होते है है वह वह सार्व्य क्षाप्त के प्रविद्यालये मार्ग्य के क्षाप्त कर्ता है के स्वाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त के क्षाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त के क्षाप्त के क्षाप्त करते क्षाप्त के क्षाप्त क्षाप्त के क्षाप

बर्द्दहरेशे अभिने निरुवारित गुणस्थानये तेहर अनिपृणिहरण गुणस्बन्ध रह अभेद गुणस्पनस्थी जीभेदा श्रेष औषश्चेषदे गयान है।। ४४॥

क्रम्यावाध्यम्यातः, वेद्यासम्भागतः, वारावादाम्द्रागतः, माण्यातिकगण्दागाः के हरसतः, इत करोदी प्राप्त वर्ष्यवेदार्थः मिण्यादिः सीतः वर्षे स्रोतसे वर्षते हैं। रिशायतः क्ष्मण्य क्षेत्र वेद्यादिवसम्बुक्तवत्ततः विद्या स्थायाम्याद्यातः स्थादि नीतः सोवित्र वर्षास्थाने क्ष्मण्य क्षेत्र विद्यादिवसम्बुक्तवत्ततः वर्षते होति रिशाय वात्र मति हित विद्याद्याद्यात् क्षमण्यविद्याति विद्यादार्थः स्थादि वर्षते हैं। रिशाय वात्र मति हित विद्यादार्थाः कर्मायाद्याति विद्यादार्थः सेवित्र विद्यादार्थः सामित्र वर्षते हैं। स्यापत्य वर्षते स्थायाद्याति स्थायान्य स्थाय इत्योद्याद्यात्र वर्णायाः वर्णायात्र त्याद्यात्र त्याद्यात्र स्थायः स्थायात्र स्थायात्र स्थायाः स्थायाद्यात्र स्थायात्र स्थायात्य स्थायात्र स्थायात्र स्थायात्र स्थायात्र स्थायात्र स्थायात्र स्य णवरि पमचे तेजाहारपदं णत्यि ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिपहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेते. लोगस्स असंखेज्जदिभागे' ॥ ४५ ॥

एदस्स अत्यो- चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेतस्स संखेज्जदिभागे सत्याणत्था अच्छंति । मार्गितियसमुन्धादगदा उवसामगा चदुण्हं छोगाणमसंखेजजदि-भागे, अहुाइज्जादो असंखेजजगुणे अच्छंति ति वृत्तं होदि ।

संजोगिकेवली ओषं ॥ ४६ ॥

पुरुषं परुविदरयमिदं सुत्तमिदि प्रथ एदरस अरयो व गुरुवदे । एवं पेदमम्मणो समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईन्य मिच्छादिडी ओषं ॥ ४७ ॥

चरुकसाइमिच्छाइद्विणी सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मारणीतेय-उपवादगदा औध-

विदेश्य बात यह दे कि प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें गर्युसकविदियोंके तैजससमुद्रधात और माहारकसमुद्यान, थे दो पद नहीं होते हैं। अपगतवेदी जीवोंमें अनिष्टचिकरण गुणस्थानके अवेदमागमे लेकर अयोगिन

केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सेवर्क असंख्यातरें भागमें रहते हैं ॥ ४५ ॥ इस स्वका सर्थ करते हैं- स्वर्धानपद्दगत अपगतवेदी जीव सामान्यहोड़ करन

चार छोक्षेंके ससंख्यातवें मागमें और मानुषक्षेत्रके संख्यानवें भागमें रहते हैं। मारकान्द्रक समुद्रानको प्राप्त उपद्यामक जीव सामान्यरोक धादि चारी होक्षेके मसंस्थातक 🚙 🚰 अद्वार्द्धीयसे असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, पेसा कहा गया है।

अपगत्येदी संपीतिकेवलीका क्षेत्र ओचके समान है ॥ ४६॥

इस त्या अर्थ पहले कहा जा शुका है, इसलिय यहां पर इसके कई कुछ कही कदा जाता है। इस प्रकार धेरमार्गणा समाप्त हुई।

क्रमायमार्गणाके अनुवादमे क्रोधकपायी, मानवपायी, नारवार क्रिकेट वापायी जीवोंमें मिध्यारिष्टियोंका क्षेत्र श्रीपक समान सर्वेतेह है। हु = -

स्यरधानस्यरधान, पदनासमुद्धान, क्यायसमुद्धान, क्रान्तिकान् के कर

र ×× अपगडबेदानी च सामा-योग्ट होपम् । स. वि. १.८

मिन्छादिद्वीदि सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मारणतिय-उत्रवादगदेहि सन्वलोगीन्द अन्लेष अणुहरति । विहारविद्सत्याण वेउन्वियससुरुषादगदा वि तिण्हं लोगाणमसंसेज्जेदिगणे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छणं पंडि अणुरंति। तदे। चदुकसायमिच्छादिहिणो दव्यहियणएण ओघतसुबलमंते ।

सासणसम्मादिष्टिपहुडि जाव अणियद्दि ति केवडि खेते, होगस असंबेज्जदिभागे' ॥ ४८ ॥

एत्य सुचे ओघमिदि किण्ण बुचं ? ण एस दोसो, दन्यद्वियणयावलंगणांगारी। सो वि किमिदि णावलंबिदो १ पञ्जबहियसिस्साणुग्गहहं । जदि एवं, तो दब्बहियसिस अणगुरगहिदा होति ? ण, पुन्तुत्तमुत्तेण मिच्छादिद्विपडिबद्वेण दर्बाद्वयिससाणम्य

पद्गत चारों कवायवाले मिथ्यादि जीव, स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्धात, क्षायसमुद्रात

मारणान्तिकसमुद्रात और उपपाद पद्गत आधामस्यादृष्टियाँके साथ सर्व लोकम अवस्थात द्वारा भनुकरण करते हैं। विद्वारयन्त्वस्थान और यैक्षिथिकसमुद्धातगत चारी क्रावण मिष्यादृष्टि जीय मी सामान्यलोक मादि तीन लोकॉक असंस्थातय मापम, तिर्यलोक संस्थात्व मागम और अदारद्वीपसे असंस्थातगुणे क्षेत्रम रहनेकी अपेक्षा, विद्वारपास्त्रसा श्रीर पैकिषकसमुद्रातमत ओप्यमिच्यादृष्टियाक क्षेत्रका अनुकरण करते हैं, इस्रिय बार्ष ब वाववाले मिथ्यादृष्टि जीव दृथ्यार्थिकनयकी अपेक्षा ओपक्षेत्रताको मान्त होते हैं। सामादनसम्पग्दि गुणस्थानमे छेक्रर अनिष्टतिकरण गुणस्थान तक प्रत्ये

गुप्तम्यानवर्ती पारों क्यायवाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? होकके असंस्वात मांगमें रहते हैं ॥ ४८ ॥

हीका — इस ग्वमं 'श्रोकके बसंख्यतयं भागमें 'इतनेके स्थानपर 'शोध' स्व द्वी पर क्यों नहीं कहा ?

समापानु—यह कोई दीव नहीं, क्योंकि, यहांवर द्रव्याधिकनयका नवनन बहाँ हिया गया है।

दुंद्रा---उस द्रव्याधिकनयका भवत्रम्यन वयो नहीं किया गया है

समावान — पर्यायार्थिकनयी शिल्योंका अनुबह करनेके खिर यहाँ हायार्थिकन्य द्रहत्त नहीं दिया गया।

र्यहा---यदि वेसा है, में। द्रष्याधिकनयी शिष्य इस स्वते अनुसूरीन नहीं हिं नाय है !

समापान -वर्गे, वर्गोर्ट, मिल्याद्यश्योंके शेवते प्रतिबद्ध पूर्योनः स्वते द्वर्णार्टर

र कर्मसङ्ग्रह अभिनामनायाकाताला होन्द्रस्याला च निष्णारहवायवेतृतिवारान्त्रणां प्रव इयम्पेत्र हेम्हाइ. ति १ ८.

माहकरणा । एदेण दन्य-पञ्जबद्विषणपपञ्जापविश्वावाणुमाहकारिणो निणा द्रिव जाणाविदं । सत्याणसप्याण-विहारविद्वारपण-वेदण-कत्याप-वेद्विन्य-मारणंविय-जनवादगद-सासणसम्मादिद्व-असंबदसम्मादिष्टणो प्युष्टं लेगाणप्यसंवेद्वादिमारो, अद्रह्वादां असंवेद्व-ग्रुणे खेले अन्द्रवेति । ' होगरस असंवेद्वादिमारो ' इदि सुते सुने, तेण माणुसरेवस्स वि असंवेद्वजदिमारो परेहि देश्वरं, होगर्व पिट्ठे विस्तामावादं । ण पस दोसो । होदि एस दोसो, अदि पञ्जदिद्यपास्तिपुण एस लेगसही द्विदेश क्रितं इन्दर्शहणण्यमवर्वेदिकण द्विद्वचादे। सञ्चलेगसमूदस्स अवेदस्स वाचगो, तेण ' लेगस्स असंवेद्वादिमारो ' इदि सुचवपणे ण विरुद्धदे । जदि पर्व, तो पञ्जबद्विणण्यमवर्वेदिकण द्विद्वस्तालायणं सुवेण असंवर्द्ध होदि वि ? ण, विसेसवदिरिजादीए आमावादे। विदेशालिंगिरसारण-लेगों, येण सुविम्म युनो तेण लेगस्स अययमूद्रच्यारि लेगे अस्तिद्वाद्वाद्वाद्वा

नयी शिष्योंका अनुप्रद कर ही दिया गया है। इस विवेचनसे यह बानु बतलाई गई कि जिन भगवान् इत्याधिक और पर्या-

याधिर, इन दोनों नवस्वरूप पर्यायोक्षे परिणत जीवों के अनुबद करनेवाले होते हैं। स्वस्थानस्वस्थान, विदारपास्वस्थान, वेदनासमुद्रात, क्यायसमुद्रात, प्रतिपिक-

व्यवानस्वर्धान, विश्वापनवर्षणान, विश्वापनवर्षणान, विश्वापनवर्षणान, विश्वापनवर्षणान, व्यवापनवर्षणान, व्यवापनवर् समुद्रात, सारपानिकसमुद्रात श्रीर वरणान, हम वर्शको प्राप्त सारा काणस्वाने सासान्त्रन सम्बन्धिः श्रीर अर्थव्यतसम्बन्धाः केवा सामान्यकोक श्रीर सार क्षोत्रोके भनेक्वायदे सामार्य श्रीर सङ्गिदीपदे अर्थव्यातमुखे सेव्यो यहते हैं।

हैका — 'लोकके असेववातये भागमें ' इनना ही पह स्वामें कहा है, हमिलव 'मानुदेशके भी असेव्यावये भागमें रहते हैं 'देखा मध्ये दोना वादित, वयाँदि, लेक्टबर्बा कोदश सामान्यतीक, अध्वेतीक, धर्मालीक, तिरंग्लोक भीर मनुष्यतीक, इन पांचा ही लोक्टोंन विदेशवाला भागव है, सर्पांत सामानता है !

समाधान—यह कोई दोर नहीं है। यह दोए होना, यहि केरल पर्यागाधिकत्रवका ही आध्य केकर यह क्षेत्रकाम स्थित कोता। किन्नु यह कोक्सान प्रमाधिकत्रवका सक-क्षत्रव करके दिवत है। अतदय सकेह सर्यक्षेत्रकों समूदका यायक है, इसकिर ' के के असंक्षत्रतयें नागमें 'इस ककारका यह एक यायन विरोध की आप नहीं होना है।

र्मुका-- पदि पेता है, तो पर्यावाधिकत्वका अवस्टरका बरके विधन व्यावधान-प्रवक्त सुत्रके साथ असेक्स होगा !

समायान - नहीं, वयोंकि, विशेषके व्यक्तिकि जातिका अभाव वाया जाना है। खुंति, बिरोपके मार्कितिक स्वान्यजीक सुदर्ध कहा है. इसिएय लोक के अवयव्यकृत कर्यक्रीक शाहि चार छोकीका भाभव करके जी व्याव्यान किया गया है, यह सूक्ते ि नहीं है, अपि तु संस्क है।

ग्रं भंजरतंत्ररातं । पत्ररि उपनादपदं गतिय । समगुतद्वामानि चरुपं होणापनि वज्यदिनारे, मृत्युनपेत्रस्य मेलेजज्ञदिभागे । पत्ररि मार्गिनियममुग्पादगरः भावन्त्रेत्रर् जन्नेराज्यत्वे होति ।

रीतक्षमानिष्यपुष्यानमञ्जूनगर्युचं भगदि-

प्रवरि विनेसो. लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिमंतरा अन्त सुदा नेवडि सेने. लोगस्स असंसेज्जदिभागे ॥ २९ ॥

रहस्य सुवस्य सत्यो सुपये। ।

अक्नाईसु नहुद्वागमीयं ॥ ५० ॥

र्मः क्षणावरीः सुनद्वारावाचनीः (आसमीत् प्रवृत्ताः सन्दाः सवसाविति विशेषी कृति कार्मात् । यथा सन्यनामा सामा, बर्गदेशी देश, भीमधेना भेन स्ति । बश्यार्थि

क्षणीयक रूपे साणी क्याप्यां इ नायश्विष्याप्रश्विमीका क्षेत्र आनवा गाहिए। भिः कल नव है कि नवीं के आरलारि-क्यापुतान कीर प्रयाप्त में दो पर नहीं कोते हैं। भी करण लगा प्रमापकों क्यापार्थन भीना क्षेत्र होता है। श्विष्या यह है कि इने कार्या करण नो है। करण गुण्य अनवर्ती नार्यों स्थाप्याप्ति जीन सामार्थ्यवीक भहिता हरों। २० स्थापक अस्ता के से सन्तिक्षण के अस्पार्थी आगार्थ वह ते हैं। स्थित्य वह है अस्ता के प्रमाप्त के स्थाप्त के स्थाप्त जीव मानुस्तिकों अर्थन्यवार्थ के से

ह । - अक २८ अवनायका सिर्दे यहा बनातांनीत हिस्स प्रभाग गांव बदी हैं---

िदेव बात वह के कि लेजकरायों भी विभे महमगाम्यमिकशुद्रिगीय आहे। की रूपक के कि है क्षेत्रने रहेते हैं है लेकिक अर्थस्यालों सामर्थे रहेते हैं। ४३ र

1 4 6 11 a : 6143 2 1

र प्राप्त कर कर के किया है कि

-इ.इ. — अत्राक्षण का क्वासम्माति केन्द्र क्वारानवाचा व स्वान्यका वर्ग

कमाओ अकमाओ है ण, भावकषाषामात्रं पेक्षियद्ग तस्स वि अकसायत्तसिद्धीदो । पहुं-चीहिनमानं काद्म 'अक्नाएस' ति विदेशी किणा कदे। १ ण, पत्रवयपडिसेधे कदे कसाय-विरहिद्यंभादीणे पि अक्रमायचप्यंगादो । दृष्यपडिसेहे कदे सी दोसी ण पावदे, एदेण गावएण ञोसारिदपमञ्जपडिसेहचादो । कस्य णयस्य एस वनहारो १ सद्दृर्सवैधस्स भिच्च तमिन्छंतगद्दगयस्म । 'अरगद्देदएसु' ति द्व्यभिद्देसे। वि एवं चेत्र वयस्याणे-दच्यो । सेमं सुगमं ।

६वं कसायनग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिन्छादिही ओ घં ॥ ५१ ॥

एसा विद्वारणे सचमी, मदि-सदअण्याणीणं मिच्छादिद्विविदित्ताणं सासणाणं पि

पाय केसे कहा है

t, t, 41. ]

समाधान-नहीं, क्योंकि, यहांपर मायकपायके अभावकी विवशासे उपशान्तकपाय गुणस्थानके भी भक्तपायपनेकी सिद्धि हो जाती है।

र्राका-'नर्टा है कपाय जिनके ' पेसा पहुशीह समास करके 'अक्ष्यायाँमें 'इस

प्रकारका निर्देश क्यों नहीं किया है

समाधान-नहीं, वर्षोकि, पर्यायके प्रतिवेध कर देनेपर कपायके विरहित स्त्रभा-दिकोंके भी भन्यथा अक्रयायताका प्रसंग प्राप्त हो जायगा । किन्तु, द्रव्यके प्रतिपेच करनेपर यह मॉतमसंग दोप नहीं मान्त होता है, वयोंकि, इसी ग्रापक (स्थाय) के द्वारा आप हत

होपप्रसंगका प्रतिपेध कर दिया गया। श्रीका - यह उक्त स्थवहार किस नवका है है

समाधान-नाम भीर भर्धके पाच्यवाचकसम्बन्धको जित्य माननेवाले द्वारतनयका

यह व्ययदार है। धेदमार्गणाके अन्तमें दिये हुए (सं. ४५ वें ) सूत्रके 'सपगतवेदियोंमें ' इस पहके

हृत्यनिर्देशका भी इसी प्रकारसे व्याच्यान करना चादिए। दोष कथन सुगम है।

इस प्रकार कथायमार्गणा समाप्त हुई।

शानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुवाज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र ओवके समान सर्वहोक है ॥ ५१ ॥

यहां पर 'मत्यदानी और शुताज्ञानियोंमें ' यह सप्तमी विभक्ति निर्कारण के अर्थमें है, क्योंकि, भिष्याद्दरि गुणस्थानसे व्यतिहिक सासादनगुणस्थानवर्ती भी मत्यक्षानी और

र बानाववादेन मत्प्रधानि मुठाबानिनां मिन्यादाविसासादनसम्पर्धानां सामान्यांतां श्रीवन् । स. वि. १, ८,

संमवादो । सेसं पुन्नं पदुप्पादिद्मिदि पुन्युत्तद्वावधारिद्सिस्साणुरोहेण ण बुन्वदे ।

सासणसम्मादिङ्घी ओघं ॥ ५२ ॥

एत्य पुन्तमुत्तादो मदि-सुदअल्याणीसु ति अणुबहुदे १ कर्ष लिन्नेपणस्य स्वः सहन्ता सहस्स अविणद्वस्त्रेण अणुबत्ती १ ण एस दोसी, एदस्स सुनस्स अववनभाष द्विद्यजन्मसहस्स पुन्तसहेण समाणत्तमवेनिसय सो चेत्र एसी इदि पत्नवाहिणालः पत्त्वविभित्तस्य अणुबत्तिविरोहामात्रादे। सेसी गदहो ।

विभंगण्णाणीसु मिन्छादिडी सासणसम्मादिडी केविंड सेते,

होगसा असंबेज्जदिमार्ग ॥ ५३॥

पर्मत्यो - विभागणाणी मिच्छाइद्वी सत्यागसत्याण विहारवरिसत्याण वेरा इनाय-वेटव्यमसुग्यादगदा तिण्हं स्रोगाणमसंस्वेज्वदिभागे, विश्यिलोगस्स संसेज्वीर भागे, अद्वादन्वारो असंसेज्जमुणे। इसे एदं १ पहाणीकद्यज्जसदेवसासिवारो। मार्गास

धुनाडानी पांप जाने हैं। दोव ध्यानवान पहले कर आप हैं, मतः पूर्वोतः अर्थेह मग्यान बर्दकाने शित्योंके मनुरोधेस पुनः नहीं कहते हैं।

मामादनमम्पर्दाट गुणस्थानको मत्पनानी और श्रुताज्ञातियोका क्षेत्र क्षेत्र केष

यदां पर पूर्वम्यने ' मान धुनामानियाँमें ' इतन पदां। अनुप्रति होनी है। ग्रेहा — अयेतन भीर क्षण-क्षयी शास्त्री अयिनष्टक्षये। अनुप्रति केने हो सक्षीरे

द्वा - भवतन सार क्षण-स्त्या दाव्यका भावतह्म्यस मानुहात कर का करणा मुमापान ---यद कोई दोव नहीं, क्योंकि, इस स्वके भावयवस्ति क्षित मर्ग इत्तरको पूर्व राज्यके साथ समातना विस्तर 'यह यही है' इस प्रकारके प्रविकासी

क्रमेरीन के रिश्वचन राज्यकी भाउपनि होते में कोई विरोध नहीं है । देख सुबका भये पहले किया जा चुका है ।

राज प्रकास सम्य परण करना मा पुका है। विश्वेदक्र नियोंने निष्यादिष्ट और मानाइनगरमारिष्ट गुणस्यान की बीट किने केबने रहेने हैं ! टोक्के अनेष्यालये सामने रहते हैं ॥ ५३॥

हम मुक्ता वर्ग कहेन हैं—स्वरंगनवर्गना, विहारवर्गवश्यान, वेरागावृह्य के स्वरंगनवर्गना, विहारवर्गवश्यान, वेरागावृह्य के स्वरंगिवसम्बद्धान हो मान्य विद्यालय स्वरंग के स्वरंगिवसम्बद्धान हो मान्य विद्यालय स्वरंगिय क्षायल स्वरंगन स्वरं

होड़ा — स्वरूपकारि प्रपत्न विश्ववदानी विष्यादि निवेशीहोड संस्थारी वर्णी क्षेत्र कट्यारीको अधेक्यानाने सेवर्न नहीं रहने हैं है

it feant fam fair Commengagen bereit dinterfragent bie. fe. to b.

समुग्पादगरा एवं चेव । णवरि तिरियलोगारी अतंसेडजमुगे चि वर्चन्यं । उपयादपर्द णरिख । सालणसम्मादिही सम्बेहि वि परेहि चरुग्हं लोगाणमनंतेउज्जिदमागे, अद्वादजारी असंखेजजगूणे । परम वि उपयारी णरिख ।

आमिणियोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिष्टिपहुडि जाव सीणकसायवीदरागछदुमत्या केवडि खेते, होगस्स असंसेन्जदि-भोगं ॥ ५२ ॥

एदं सुचं युत्तत्विमिदि पुणी ण एदस्त अत्या बुधदे ।

मणपञ्जवणाणीसु पमत्तसंजदणहुडि जाव सीणकसापवीदराग-रहमत्या स्रोगस्स असंसेञ्जदिभागे ॥ ५५ ॥

आभितिवोधिवज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिकानिवोधे अक्षेयतमस्यारित गुणस्या-उक्तर श्रीणव्यापयीवशागद्यस्य गुणस्यान सक्त अर्थेक गुणस्यानयर्थी और किन्ने रहते हैं ? सोक्षेत्र अर्थक्यावर्षे मार्गमें रहते हैं ॥ ५४ ॥

हस रहबत भये पटले कह दिया गया है, हसलिय तुनः हसका भये मही कहने हैं। मनःपर्यपतानियोंने प्रमससंयह गुणस्थानसे लेकर क्षीणक्वापर्वातागढ़कर्य ।न स्वय प्रस्वक सुणस्थानवर्ती जीव सोकके असंख्यासबें मागमें रहने हैं।। ५५।।।

र आधिनियोधिक भूत परिवारियासकरत्वावत्यवायोती वीलवयायाच्यां अक्षेत्र स्वायाचीय , कि. १, ४० अक्षेत्र व पर्ववद्याचित्री या प्रवण्योती क्षेत्रकरावत्यां अक्षेत्र सम्बन्धीत क्षेत्र र क्षेत्र है. १८ ४, ४०,



समाधान--चृकि, पहांचर वर्षान्त देवतादिकी प्रधानता है, इसलिय वयस्थानाहि किंगे मान्य वे देव निर्वेग्लोकके संव्यातवे भागमें और ममुख्यलोकते आसंव्यानगुर्वे शेषमें ते हैं।

सक्खंडागमं जीवद्वाण - 1

१२० ] किमहं एदेसु तीसु सुचेसु पञ्जयणयदेसणा १ बहुण जीवाणमणुमाहर्द्ध । दुन्तिः एहिंतो पज्जबडियजीवाणं बहुत्तं कघमवगम्मदे ? ण, संगहरुद्जीवहिंती बहुतं नितर रुद्वीयाणस्यलंभादो । सेसमयगद्धं ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओयं'॥ ५६ ॥

एत्य किमहं दन्बहियणओ अवलीयरो ? ण, पन्जवहियणयावलेयणे कारणामा पज्जबद्धियणमा अवलंबिजदे विसेसपदुष्पायणहं, ण च एत्य को वि विसेसो अस्पि। च पुन्यमुत्तेहि विपहिचारो, पारेकं गुणहाणेमु तत्य णाणभेदोवलंमारी । संसं मुगर्म।

अजोगिकेवली ओघं' ॥ ५७ ॥

एमा प्रवसु परेसु कत्य बहदे १ सेसपदसंभवाभावादी सत्याले परे । र्गुका-इन ममी कहे गए तीनों सुत्रोमें पर्यापार्थकनयका उपदेश किस विर

दिया गया है ! ममापान – यहुरक्षे जीवोंके थनुमद करनेके हिट पर्यायाधिकनयका उपरेश <sup>(त्रा</sup>

र्शहा — द्राप्याधिकन्यी जीवाँसे पर्यायाधिकनययाले जीव बहुत हैं, यह केने रादा है।

ज्ञाना जाता है है गमायान — नहीं, वर्षोकि, संक्षेपरचिवाले आर्थोसे विलाररुविवाले जीव वर्ष

धाँव जाने हैं। राय गुवदा मार्ग तो अयगत ही है।

केरनज्ञानियोंमें मयोगिकेरलीका क्षेत्र ओषक्षेत्रके समान है ॥ ५६ ॥

रीहा — इस स्वमं किमलिए द्रुप्यार्थिकनयका भगलम्बन किया गया है है

ममायान - नहीं, क्योंकि, पर्यायाधिकतयके अवलस्यत करनेका वहां केहें कार वर्रा है। पर्यायार्थकनयका अवस्थान विशेष प्रतिपात्तमके स्थि किया जाता है। हिर्म बर्श्यर केर्र मी विरोधना नहीं है, (जिसके कि धनलोनेक लिए पर्यापार्वकनवा भी हाइव दिया जाय)। भे र न यहांपर पूर्व चुप्ता (जा कि प्रयोगार्थित वर्ष है) लहिन होत है। भारत है, पर्योद्ध, इन गुजन्यानामें प्राप्त गुजनामें शानभए पाप जना है।

अये. विदेशकी सम्बान औषके गमान लोकके अमेलवानवे सागमें रहेने हैं हैं।

ग्रीहा — ये सर्था गिहेनकी सगवान स्वस्थानाहि सी गर्ने मिन हिस गर्ने रहते हैं? हरुश्चित्र — अयो गिंदवलीक विद्यारकष्यश्चातादि शेव अशेष वद् संतर्भ सर्वे हेरे

हे इत्रक्तानस्त्रकतान पराने रहते हैं।

e and have that you at a grant of hit fift fit. In the a ma seterial x et राज प संपाल ज वेग्यास कि है। राज उप्पण्णपेदेसो पर गामो देसो वा सत्पाणं, तस्त वि उपमादसणादो । ण च ममेदंबुद्धीए पिटामिटरपेदसो सत्याणं, अंजीमिन्दि सीणमेदिन्दि ममेदंबुद्धीए अमावादो वि ? ण एसं दोसी, बीदरामाणं अप्यणी अन्ध्रिदयदेससेच सत्याणवनप्रसादो । ण सरामाणनेस णाजा, तत्य ममेदंबावसम्वादी । अध्य पस चेच णाजा सन्वरूप पेप्पड, विरोह्ममावादी । अदि पर्य सत्याणस्त अत्यो युर्च्यादे, वो सासणस्त्याणकोसणस्त अद्व चोद्समामा पांदीत् वि चे णं, क्षेत्रणे ममेदंबुद्धिपडिशादिस्स सस्मामिसंयंग्ण वारिद्सस चेव सत्याणवन्देनस्ति । सेसं सुर्मा ।

एवं जानंसगणना समता ।

संजपाणुवादेण संजदेस पमत्तसंजदणहुढि जाव अजोगिकेवली ओर्घ ॥ ५८॥

कुंद्रा— मपने कारण होनेक प्रदेश, घर, प्राम, भथवा देशको स्वस्थान कहते हैं। इस प्रशास्त्र यह स्वस्थानपुर भी भाषीपिकष्ठांमें केवल उपचारते ही देखा जाता है, (न कि प्रधायतः)। रुपा 'यह मेरा है' इस मकारकी चुनिक मितपुरीत महेराके स्वस्थान कहते हैं, हिन्दु क्षाणमोडी मयोगी मगयानमें मनेद्रुपिका समाव है, इसटिय (किसी भी प्रकारते) भयोगिकेवलीके स्वस्थानपुर नहीं बनता है।

समाधान-- यह कोई दोष नहीं, चर्चोंकि, पीतराणियोंके अपने स्ट्रेनके सर्देशको क्षां समस्यान नामसे कहा गया है। किन्तु सराणियोंके टिट यह प्याप नहीं है, चर्चोंकि, इनमें अमेदेमाय संमय है। अथवा, 'अपने रहतेके स्टाकेश स्वस्थान कहते हैं' यही न्याय सर्वक प्रहण करना चाहिए, चर्चोंकि, उसके साननेमें केश विरोध नहीं है।

र्श्वकां — यदि इस प्रकार स्थरपानका मध्ये कहते हैं, तो सांसादसराग्यादि आयके स्वस्थानस्यस्थानगर्दके स्पर्धानका क्षेत्र माठ बटे चीवह हूं राजु प्रधाण प्राप्त होता है, (जो कि माने स्पर्धानायीगदारमें बताया नहीं गया है) !

समापान — महीं, पर्योक्ष, रार्यानानुषोगद्वारमें, ममेर्ड्डियले प्रतिपृष्टीन और बाने स्वामितको सारवारको रोके इय रोजने ही स्वस्थान संज्ञा भारत है।

दोव सुबका धर्च सुगम ही है।

इस प्रकार शानमार्गणा समाप्त हुई।

संपममार्पणाके अनुवाद्धे संपतींमें प्रमुखंगत गुणस्थानमें हेकर अद्योगिकत्यी गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संयत जीव आपके समान होक्के असंस्टाहरें भागमें रहते हैं ॥ ५८ ॥

१ श्रेषमात्रवादेव xxx श्रेपतानां सामान्योत्तां केवन् । स. सि. १, ८.

एत्य किमई द्व्वट्वियणयदेसणा कीरदे ? ण, संजमसामणे पहाणीकरे जांवे परि विसेसामाबादो । पञ्जबद्वियणयपस्त्रणा एत्य जाणिय वचन्त्रा !

ान्ववानानानान् पञ्चनाह्यपायपस्त्रणा पत्य जाणिय वत्तव्या । संजोगिकेवली ओघं ॥ ५९ ॥

्र प्राज्ञोगो किण्ण करो ? ण, खेर्च पिंड सेसगुणहाणेहिंतो सजोगिस्त्र विशेतकं भारो। जदि एवं, तो सेसगुणहाणाणं पि णाणाविहमयमिण्णाणं पुत्र पुत्र सुवकरणं पाति चि चे ण, तेसि पहाणीकयसेचजणिदविसेमामातारो। एत्य सेसा पञ्जाहिणणः

परजणा सच्या वत्तव्या । सामाहय-च्छेदोनद्वावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदपहुडि जाव ला<sup>ण</sup> यद्रि ति ओषं ॥ ६० ॥

र्शका— इस स्थम द्रष्यार्थिकनयको देशना किस लिए जा रही है ! समाधान— नहीं, फ्योंकि, संयमसामान्यके प्रधान करनेपर ओपक्षेत्रकरण्यार्थ

अपेशा संयममार्गणाके अनुवादसे क्षेत्रमक्ष्यणामें कोई विदोपता नहीं है।

यहांपर पर्यायार्थिकनयकी मक्ष्यणा जान करके करना चाहिए।

स्मोरिकेनरी स्वापन कोली ने किस्स

सपोगिकेवली मगवान् ओघके समान लोकके असंख्यावर्वे भागमें, होड़ें असंख्यात बहुमागोंमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ५९ ॥

श्रंका—रन दोनों स्त्रॉका एक समास क्यों नहीं किया है समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रकी अपेक्षा दोष गुलस्थानोंसे स्योगिकेवटीके हे<sup>त्री</sup>

विशेषता पार जाती है। वंका - यह पेसा है, तो माना प्रकारके मेहाँसे विश्वताको प्राप्त शेष गुनस्माती

यका — यदि पसा है, तो माना प्रकारके सेदाँसे भिन्नताको प्रान्त छेप गुनस्वारा मी पृथक् पृथक् सर्वोद्धी रचना प्राप्त होती है? समापान — नहीं, क्योंहि, रोप गुणस्थानोंकी पृथक् पृथक् प्रधानता करियाई

क्षेत्र-प्रतिन विशेषताका समाव है, हसलिए पृथक् पृथक् सूत्र-स्वनाका प्रसंप नहीं है होता है।

यहाँपर सभी गुणस्थानसम्बन्धी तेल सम्

यदांपर समी गुलस्थानसम्बन्धी शेष सर्व वर्षावाधिकतवकी क्षेत्रप्रद्या सर्व चाहिए।

सामायिक और छेदोपस्यापनाडाहिसंयवोमें प्रमक्तस्यत गुणस्थानसे हेका क्र<sup>ति</sup> इषिकरण गुणस्थान वक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिक और छेदोपस्थापनाडाहि<sup>ही</sup> ओपके समान छोकके असंस्थावर्षे मागमें रहते हैं ॥ ६० ॥

१ × हामारिकण्डेरोरर्वासनाहाद्वितंत्रानां बतुर्वा × × × हामान्योतं: खेचर् । ह. सि. धै र

ښن

कोएपमचादिरासीदो सामाइय-छेदोपद्वावणसद्भितंबद्दम्मचादवो समाणा वि एदेसि जायपम्यादरासादाः तामाद्य-छद्वाबहावणस्य स्वतं व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस पहचणाः ओषं मबदि । ण च सामाद्यः छदेविहावणसद्विसंबदेहिता पुषमावभूदाः पहिस्तः परमण जाप मनावा । प तामावप छवापहापणछावणवरावण छवणावद्वर गाव्याः इदिसंबदा अस्यि, जेण तदो भेदी होज्ज । किमिदि प्रपम्दा गस्यि १ द्वरापंबदिसिन छडुमत्यजीवामावादो । सेसं सुगमं ।

55 परिहारसादिसंजदेस पमत्त-अपमत्तसंजदा केनडि सेते, लोगस्त : 45 असंखेरजदिभागे ॥ ६१ ॥

पदस्स वि ग्रंचस्त अत्यो पुन्तं परुविदो चि संपद्दि च युन्चदे । पन्नी पमच-संजदे तेजाहारं णरिय ।

खुडमसापराह्यसुद्धिसंजदेखु खुडमसापराह्यसुद्धिसंजदज्यसमा खनगा केनडि सेत्ते, लोगस्स असंसञ्जदिभागे'॥ ६२॥ क्षोधमं कही गई प्रमुचसंवताविद्राद्विसे सामाविक और ऐक्षेव्यस्वतामुक्तिव्यक्षके

मामासंविववाहिक समान है, इसलिय इनके होत्रही प्रत्यका मामाल होत्रहें समान बन कार्य अनुप्रचयवादण रामान ६० द्वाल्य द्वान भवन अवन्य भवनमा भागाण स्वत्र सामान वन जावा है। बौद, सामाविक तथा छेदोवस्थायमानुद्धिसंयतिते परिस्तविन्नाव्स्यक्र प्रकारकण है नहीं, जिलले कि उनसे उनका भेद हो जाय। व्यवः भाषा व्यवः प्रत्यः । वृद्धाः — परिहारिद्याद्धसंयतः, सामाविकः और छेशेषस्मावनामुद्रिसंयगोसे पूचावृत क्यों नहीं है ?

च . समाधान – क्योंकि, मच्याधिक और पर्यायाधिक रत्न होनों क्योंसे थिय छएरए बीयोंका सभाव है। दोष स्वका मधं सुगम है।

परिहारविद्यादिसंवतोमे प्रमचसंवत और अत्रमचसंवत और कितने धेयमें रहते श लोकके असंख्यावन मागमें रहते हैं ॥ ६१ ॥

हत रावना भी मध पहले कहा जा शुका है, इसलिए मन मही बहते हैं। विहेन ते पह है कि ममसाधित ग्राम्य का प्रकार की प्रकार के क्षारा माज्य के किससमुद्री की किससम्बद्धित की किससमुद्री की किससम्बद्धित की किससमुद्री की

कितने क्षेत्रमें रहते हैं। लोकके अमंत्रणावने आगमें रहते हैं॥ हर ॥ e ufig barg ein qigi

e nie zue ellergafaussiel nesiessen, om bistoche hat a. it et t EVXX fres with facilit XVV ale and act to the to

सुद्रमसांपराह्यसुद्धिसंत्रदेसु वि आधारणिदेसी । तत्य सुद्रूमसांपराह्यसुद्धिनंत्रः दुविधा होति उत्तरामगा स्वत्या चिद्र । ते अप्यणो परेसु वहमाणा ऋदूर्व जेमान्त्रः संखेज्जिदिमाम, माणुसखेत्तरस संखेज्जिदिमाम होति । णवरि मारणंतियपरे गाइन खेचांदो असंखेज्ज्ञ्युणे होति ।

जहानसादविहारसुद्धिसंजदेसु चटुट्टाणमोर्घं ॥ ६३॥

पत्य द्वाणसदी पुण्युत्तणायण गुणद्वाणवाची । चरुण्टं ठाणाणं समहती नरहाली सा ओपं होदि । उनुसंतकसाय-स्वीणकसाय-स्वोगी-अजीगी-विणाणं जहानस्वादिवताणुर्वे संजदाणं अप्याणो ओपयस्वणं होदि चि जं युत्तं होदि ।

संजदासंजदा केवडि खेते, छोगस्स असंकेज्जदिभागे ॥ ६४ ॥

एदसा जत्यो पुत्रं परुष्टिते । असंजदेस मिच्छादिदी ओर्घ ॥ ६५ ॥

'सहमसाम्परायिकनुद्धिसंयतामं' इस पदसे आधारका निर्देश किया गया। हिं गुणस्यानमं सहमसाम्परायिकनुद्धिसंयतं दो प्रकारके होते हैं, उपसामक और सण्ड हि दोनों ही प्रकारके सहमसाम्परायिकसंयत अपने यथासमय पदीमें रहते हुए साम्पर्धाय आदि चार छोक्कोके असंस्थातयं भागमं और मानुपद्देशके संस्थातयं भागमं रहते हैं। किंग बात यह है कि मारणानिकससुद्धातपद्दमं उपशामक औय मानुपद्देशके असंस्थातग्री के

ययाख्यातविद्दारगुद्धिसंयताम उपरान्तकपाय गुणस्यानते छेत्रत अवागिकारी

गुणस्थान तक चारों गुणस्थानवाले संयतेका क्षेत्र आपके समान है ॥ ६३ ॥ रास प्रमें आपा हुआ 'स्थान' दाध्य पूर्वोक न्यायसे गुणस्थानका यावक है। कर्षी गुणस्थानोंके समुदायको 'बनुःस्थानी 'कहते हैं। उनका क्षेत्र ओपके समान है। कर्षी, गुणस्थानोंके समुदायको 'बनुःस्थानी 'कहते हैं। उनका क्षेत्र ओपके समान है। कर्षी, गुणस्थानवर्गी यथाक्यातिका उपदायक्यातिका विकास कर्षी गुणस्थानवर्गी यथाक्यातिका विकास कर्षी विवास कर्यों कर्षी विवास कर्षी विवास कर्षी विवास कर्यों कर्षी विवास कर्यों क्रियं क्र

संपतासंपत जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातरें मागमें रहते हैं। हैं। हैं। इस स्वत्रका अर्थ पहले कहा जा सुका है।

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओपके समान सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ६५ ॥ १ × × रवणस्वतिदास्तुद्धिस्वाती पदानां ×× वावासीत क्षेत्र । ड. वि. ध ४

९ ××× वंदरावंदरातां ×× वायम्योतः क्षेत्रत् । व. वि. १, ८, १ ×× वर्षदरातां च चतुर्वा वायम्योतः क्षेत्रत् । व. वि. १, ८,

ि १२५

्रविचा होदि । आदेताचा वि गुण्हाणाममेदेण मेदेण च जा करा, सा अत्योष-आदेमांचीह विचा होदि । आदेताचा वि गुण्हाणमेदेश चौहतविशे होदि । एत्य आपामिदि गुण Ę. देवचा हात । जाद्याचा १२ अन्धानपुर भारतादश हात, १९५ जापाना ३५ इत्सस्य जोषस्य ग्रहण १ आर्थासस्य अवववध्रद्भिन्द्राद्वितमायस्य। स्टम्परं सन्सरे १ षद्भारत आपरत ग्रहण। आदुतापरत अवध्य स्दामण्डादहाणमायस्य। ध्यमद स्टम्सद । प्रचासधीदो । अण्णीहे वि जायहि तह क्यंचि प्रचासधी अस्यि वि सणिद ण, अन्महि खेषेण प्यस्तिपच्चासचीए अभावादो ।

प्रदेशक विद्यादिहीहि जेम वर्षिम् व प्रचामकीर अमानाही। एरमस्ववर संस्थाय जाना है। एरमस्ववर संस्थाय जानाह पर वह भिन्धादहाह जम् प्रवासक प्रत्यावकार अभावादा एदमस्यप्रद सम्बन्ध जाजपना असंबद्धरुषहाणाणमेगत्रोषी हिल्ला करी है ल, मिच्छारिहीलं सम्युक्टरानीहे सह 11 66 11

सासणसम्मादिष्टी सम्मामिञ्छादिङ्ठी असंजदसम्मादिङ्टी और्य !! ५५ ॥ यदेसि तिर्व गुणहाणार्व चरुषं लोगाणमसंगः जदिमामचलेल माणुमने चारी असदीअगुणचलेल परचासची अस्त्रि चि रमजोगी करी !

हींगा—भोपमरुपणा गुणस्थानोंके समेदने भीर भेदने जो की गर्द है, यह अर्थ भोप भीर बादेश भोपके भेदसे दो मकारको होता है। बादेश भोप भी गुणस्थानोंक सदसे केया गया है !

कार आर भारता भाषक भवस ना महारहा हुना द । भारता भाष भा गुणरपामाश भरून पीनह महारहा होता है। सो यहाँ 'भीप' देशा सामाग्यपन बट्टेनर हिना भीपणा प्रदस् रामाजान — भादेश भावक भवववधून निष्णार्राष्ट्रचाँद भावक महत्व दि या गण है। ग्रंपा - यह मर्थ केसे मान होता है ? है, यह जाना जाता है।

तमाधान—सत्याससिते, भणीत् सामीत्वते, भारेदा भीषदा धरण विदा गरा

ज्यात जाता द । चित्रा-प्राचाताचि तो कार्यचित् वाय भी भोगों हे साथ हो सकती है ?

समाधान - ऐसी शंकावर कत्तर देते हैं कि मही, क्यांकि, अवर आंटोड काफ विष्यादियोंके समान महार्थतारे मतामातिका कामाव है। यह अधेपर सर्वत्र स्वामा बाहिए।

्रें जायन राज्य आहार जाहरू । श्रीता — बारंघन बार्रो गुणरचानों वा एक दोन (समास ) वर्षो नहीं हिसा ! समाधान - नहीं, क्योंके, विक्वाहियोंकी देव सास इनसादकार अहि कुछ पानींक साथ शेनकी अवेशा प्रकरतम मायासिका समाव है।

व्याप व्यापक व्यवस्था विकास विद्यालया व्यापक व । अतंत्रवाम् साम्रादनमञ्चारति, सम्यामध्यारति और असंस्वहस्दार्गः श्रीर पढ़े समान लोड़के असंख्यावहें मागमें हहते हैं॥ इह ॥ र्वथान लाइक आराध्याव भागम १६० व ग २२ ॥ इस स्थाप तीवो ही गुणस्मानोहा सामाध्याच भाविक र रूकोई सामध्यान हे ित रहितात. ताना हा गुजरसामाना सामान्यस्तर भाग कर नावाव कार्यव्यानाव त. साथ और ब्रामुक्तिक संस्थातमुक्त के बहुं साथ सप्तासित यहं ज्ञान कार्यव्यानम्

इस प्रकार संयममधीका समाम हुई । . · · .

दंसणाणुनादेण चक्खुदंसणीलु मिच्छादिट्टिपहुडि जान सीप कसायर्गदरागछद्मत्या केनडि खेत्ते, छोगस्स असंखेजजदिभागे ॥६७॥

मन्यानसन्यान-विद्वारविदेमस्यान-वेयण-कथाय-वेउविययसमुग्यादगरा राज्य-देनदी मिन्कादिद्वी निन्दे होगाणमसंखेजिदिमांग, विस्थिलोगस्य संखेजिदिमांग, अमुग्रकार असंविद्याने । एत्य जीवहत्ता वाणिय काद्या । एवं मार्गविवयसमुग्यादगर् । वाणे निविद्याने असंविद्याने वि वचस्य । एवं चेव उववादगदागं पि वचस्य । आहत-कत्ते चक्तुदंगनामागारी उत्त्वादे । तिय वि णासंक्रियत्वं, अपव्यवक्रते रि सक्षात्रं पद्य चक्तुदंगनामागारी उत्त्वादे । तिय वि णासंक्रियत्वाणं वि चक्तुदंगणियं वयत्ररे । ते च त्या, चक्तुदंगनिजवादारकालस्य पद्रंगुलस्य असंखेजविद्याणामेगात्रकार-चक्तात्रे । व एम दोगो, विच्यविश्वयव्यवाणं चक्तुदंगणमस्य, उवस्कृते विक्यव चक्तुदंगनोप्तरे सम्बन्धार्थाण्य अस्यामानिचक्तुदंगणमस्य, उवस्कृते विक्यव

द्यंतनगीनांके अनुगार्वे पशुर्वनियोमें मिथ्यादृष्टि गुगर्यानवे तेहर धैने दश्यरे राग्यप्रदाय गुगर्यान तक प्रयोक गुगर्यानवीं जीर किन्ने धैनने सी हैं। नेपाद आर्थ्यप्रार्थे मान्ये रहते हैं॥ ६०॥

वस्तर मनम्यान विदारमाण्यान वेदनानामुद्यान, स्तापनमुद्यान सेट सैनियं कहर ज्यन मन्द्रपाने विद्याद्दि प्रांत नामान्यकोक सादि तीन हास्पेंड मनेम्यानवे सार्व इतिहास संस्थानवे सार्व इतिहास संस्थानवे सार्व इतिहास संस्थानवे सार्व इतिहास संस्थानविक सेन्द्रपे इतिहास स्वाप्त कार्यकार प्राप्त विद्यास स्वाप्त कार्यकार कार्यकार स्वाप्त कार्य

देश---वंद नेका है, में। साध्यायांत आंधीन सी कशुर्वानीयोग स्रोते क्षेत्र करेत करते. हेल्ला है। वित्तृ कर यार्याल से बेंच कशुर्वात सीता सही है। वदि साध्यायांत्रित सीतेंच कशुर्वात्र का महाल सामा सामा सामा, में। स्रोतेंच स्वद्रार सामा से स्वत्र करता की स्वर्धात्र के स्वर्धात्र स्वर्यात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्य स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्यात्र स्वर्धात्र स्वर्यात्र स्वर्यात्र

सर्गाण्य — वर कहे केया नहीं, क्यों है, विशेष्ययोत क्रीपीट बाएवरीन हैंगे हैं इक्तर काफ कहे हैं कि क्रारक्तर में, स्वर्गत स्वर्णनाव समाप्त के रहे वहार्ण विश्वयक बाहुकोंने स्थापकी समुजानिका श्रीवनामांची बाहुकरीनका स्वर्णका हैंगा इसे

e kin ya ka kaferint licerzo legiasa korat kangukuskan 24, 8 foli

पीचिदियरुद्धिअपञ्चाणं चस्युदंसणं णात्य, तत्य चस्युदंसणोवञ्रोगसमृष्यर्गण् अविणा-भोविचस्युदंसणस्यञ्जोवसमाभावादो। सेसगुणद्वाणाणं पञ्चवद्वियपरुवणा जाणिय समस्या।

.अचक्ख़दंसणीसु मिच्छादिट्टी ओघं'.॥ ६८ ॥.

सगमभेदं सर्व ।

सासणसम्मादिहिपहुडि जाव खीणकसायवीदरागछद्मत्या नि ओधं ॥ ६९ ॥

एदेसिमणंतरदेशु चाणमेगचं किष्ण करं ! ण, मिच्छादिश्वीह सेमगुणहाणाणं पच्चासचीय अभावादी।

ओहिदंसणी ओहिणाणिमंगों ॥ ७० ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगों ॥ ७१ ॥

है। हो चतुरिन्द्रिय मीर पंचेन्द्रिय एक्पवपर्यान अधिक चसुरहोन मही होता है, वधीकि, जनमें बधुद्दीनीपयीगदी समुत्रश्चिका अधिनामादी बधुद्दीनावरणवामें इथिपदासदा मामाच है।

इसी प्रकार सामादनसम्बन्धि आहि दोष गुणस्थानाँकी पर्वायाधिकनवसाकत्वी प्ररुपणा जान करके कहना चाहिए।

· अच्छुदर्शनियोंमें मिध्यादि जीव ओपके समान सर्वहोक्में रहते हैं ॥ ६८ ॥ यह राज सगम है।

सासादनसम्पार्टि गुणस्थानसे लेकर धीणकपापबीतरागणकम्य गुणमान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती अचशुदर्शनी जीव ओपके समान लोकके अपंत्रदातवे आगर्वे रहते हैं ॥ ६९ ॥

द्रीहा- इन अनन्तरीक देश्नी सूत्रीका एक व वर्षी मही किया, अर्थान् एक नूब षयाँ नहीं बनाया रै

ग्रमाधान - महीं, पर्वेकि, विष्याद्येष्ट भवश्वदर्शनी जीवीके साथ होत गुण्डान्त्रक यतीं अवशुद्दांनी जीवांनी मन्यासिका समाव है।

ः अवधिदर्शनी जीरोंका धेय अवधिज्ञानियोंके समान शेवका असंग्यानुस् माग है।। ७० ॥

केवलदर्शनी जीवाँका क्षेत्र केवलज्ञानियाँके समान कोकका असेन्यादशी बाद. सीक्षा असंख्यात बहुमाग और सर्वतीक है।। ७१ ॥

र अवहर्दर्शनेनी विव्यापनादिशीयक्षायाताता साधान्योने क्षेत्रवा स. वि. १ ८.

द अवधिदर्वनिवासविकारियत् । स. वि. द, ८.

व केवळदरेनिता केवलका वेवट् । छः छि. १, ८०

एदाणि दे। वि सुत्ताणि सुगमाणि ति पञ्जवद्वियपस्यणा ण करिदे । एवं दसगमगणा समजा ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय णीललेस्सिय-काउलेस्सिएस मिन्डा दिही ओर्ष ॥ ७२ ॥

सत्याणसत्याण नेदण कसाय मारणतिय उववादपदेहि सञ्ज्लेगं ज्लेण, विहासी सत्याण नेउन्वियपदेहि तिष्टं लोगाणमसंख्यादिमाग, तिरिपलेगस्य संस्वादिमान, अहुहरूजादो असंस्वेज्यापुणे खेते अच्छणेण च सरिसत्तमत्यि वि ओपिमिद्रे मण्डि णवरि नेउन्वियससुरुपादगद्दा तिरियलेगस्स असंस्वेज्यदिमाग ।

सासणसम्मादिही सम्मामिच्छादिही अर्सजदसम्मादिही ओर्ष

ા હરા

चदुण्डं लोगाणमसंखेज्जदिमागचणेण माणुप्रखेचादो असंखेजनगुणवणेल व

ये दोनों ही सूत्र सुगम है, इसटिय पर्यायार्थिकनयकी प्रहरणा नहीं की जाती है। इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

ेटस्पामार्गणाके अनुवादसे कृष्णेटस्पावाले, नीटलेस्पावाले और कार्पावलेस्पावाले जीवामें मिथ्यादृष्टि जीव ओधके समान सर्वलोकमें रहते हैं ॥ '७२ ॥

्यस्यानस्यस्यान, वेदनासमुद्धात, क्यायसमुद्धात, मारणानिकसमुद्धात और उरणान, इन पदाँकी व्यवेश सर्पेटीकमें रहनेसे, विहारशस्यस्यान और वैक्षियंकपद्धी मंग्रेड सामान्यद्योक स्थादि तीन होक्षेत्रेक सर्द्याययं मार्गम, विष्ययोक्षक संस्थावेर्व मार्गम और अर्थायस्य मार्गम कर अर्थायस्य मार्गम और अर्थायस्य मार्गम और अर्थायस्य मार्गम और अर्थायस्य मार्गम और अर्थायस्य मार्गम कर अर्थायस्य मार्गम कर के अर्थायस्य मार्गम कर के अर्थायस्य मार्गम स्थाद्य स्थाद

तीनों अनुमलेदपावाले सामादनसम्यादि, सम्यागिष्यादि और अमेरी सम्यादिए जीव ओपके समान लोकके असंख्यातवें मागमें रहते हैं ॥ ७३ ॥

तीनों अगुमटेरवायाले उक्त तीनों गुणस्थानवर्षा आयोक स्वसंभव वर्देश होती सामान्यलेक शादि चार लोकोंके ससंस्थातये भागमें रहनेसे और मानुगरेजसे सर्वस्थानपूर्व

६ केरबाट्यादेव कलनीक्कारोतकेरसावी दिल्यास्थापर्वयुक्तसम्बद्धसम्बद्धाती सामारीर्थ हेर्य । स. हि. ६, ८

सरितनुबरुंमादो सिद्दमोपचं । वितेसदो पुण मारणविब-उबबादगदा किप्द-णीट काउ लेसियअसंबद्सम्मादिद्विगो संखेटचा वि होद्ग माणुसखेचादो असंखेटचगुणे खेचे-अन्छति, असंखेटचञ्चोपणापामचादो ।

ते्उलेसिय-पम्मलेसिएस मिन्छाइडियहुडि जाव अपमत्तसंजदा

केवडि खेते, लोगस्स असंखेडजदिभागे ॥ ७४ ॥

तेउलेरिसयमिन्छादिही सत्थाणसत्थाण-विहासदिसत्याण-वेद्दण-क्रमाय-वेद्दण्डिय-समुग्पद्रस्य तिष्ट्रं त्यागाणमसंखेडबदिमाग, तिरियद्योगस्य संखेडबदिमाग, अङ्गाद्रजादे। असंखेडबर्गुणं अच्छेति । मारणंतियसमुग्पाद्रपदा एवं चेत्र । पदारि विदियद्योगारी असंखेड स्रागुणं वि वनान्त्रं । एवं चेत्र उत्तराद्रम्याणं । एत्य आव्हुणं टिक्नमाणं मुक्तमाणं स्वाप्त्रमाणं राविष्ठ अपण्यो उत्तरक्रमणकात्येण पत्थित्रावस्य असंखेडबर्ग्यमाणा मागे दिदे एग्गमण्य तांत्रुवत्रवज्ञमाणकीता होति । पुणा अवस्थानं विद्यावस्य असंखेडबर्ग्यात्मेणं मागदार-सत्वेण इतिदे रज्जुआयामेण उत्तराद्रसाधी होदि । पुणी संखेडबर्ग्यात्मेणस्य

सर्वेत रहतेथे सराता यार जाती है, हरिलय उनके क्षेत्रके मोयवना विच हुना। किन्तु विरोध यान यह दे कि सारवानिकत्त्वमुद्धान भीर उपणाइ घरनत कृष्ण, मील भीर काणेत-हेर्द्रायांके सर्वेत्रतस्वयन्दिए संवयत होकरके भी माजुक्केत्रके सर्वेत्रातवृत्ते होत्रमें रहते हैं, वर्षोकि, उनके मारवाशितकत्त्वमुद्धात भीर त्रवशाद प्रतन्त दंदका स्वायम सर्वेत्रयान योजन पाया जाता है।

विश्रोतेश्यावाले और पद्मतेश्यावाले बीवॉर्मे मिथ्यादि गुणस्थानमे लेकर अप्रमुख्येय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्धी और दिवन धेश्रमें स्ट्रोट हैं ! लेक्से

असंख्यातरे भागमें रहते हैं ॥ ७४ ॥

देशसाहर इस्पान है वहार पारवर होगा वृद्धा साह पुरा का प्रवस्ता में है विक् विकस्ताह तमा में में में देश विकस्ताह के लिए साह प्रवस्ता माने में से संक्षेत्र के स्वार के स्वर के स्वार के स्वर के स्वार के स्वर के स्वार के स

र देव:१६१रेश्यामां दिग्यारहरूप्ययदातामां शेवरदारं स्पेदयमा र व. वि. १, ८,

गुणिदे उबबादस्वेचं होदि। ओवड्णा जाणिय कायव्या। तेउलेस्वियगुणपितन्त्राणं आपमंगा। पम्मलेस्सियमिष्ट्यादिष्टी सत्याणसत्याण-विहारविहारवाण-वेदण-कवायग्र-ग्यादगदा तिण्हं लेगाणमसंखेडजदिमागे, तिरियलोगस्स संखेडजदिमागे, अद्रार्ग्यारे असंखेडजगुणे अन्छति, पहाणीभृदतिरिक्खराधिचादो । वेउन्विय-मार्ग्यातिय-उबग्रर्ग्या पृदुष्ट्रं लोगाणमसंखेडजदिमागे, अद्राह्जादो असंखेडजगुणे, पदाणीकदसणक्रमार-मार्थिर रासीदो । सासणादिगुणपडिवच्णाणं अप्यमचसंबद्धाणं आधर्ममो ।

रावारा । वावणाहर्युणपाड्युणाण अप्यमचस्वदताण आयममा । सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जान स्रीणकसायदीदराण छटुमत्या केवडि खेत्ते, लोगस्स असंस्रेज्जदिभागे ॥ ७५ ॥

सुक्कलेसिसपिष्ट्याइडिणो जेण पिल्टिविसस्स असस्य जिल्लामिता हेण सन्तर-सरपान-विद्वापविसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिव्य-मारणीवय-उववादपदेहि वर्द्ग्य होणे प्रमुखेरिजनिद्माणे, अहुाइज्जादो असंखेरज्जागुणे । सेसगुणहुल्लाणमीयमेगो । वारी

स्परधानस्वस्थान, विद्वारवास्यस्थान, विद्वासमुद्रान और करावसमुद्रानवा कि हरपायां मिष्यार्ग्य आप सामान्यशोक आदि तीन शोक्षीके सर्वक्षात्वे मागम तिर्वेक्षके विद्याने कि मागम तिर्वेक्षके विद्याने कि मागम तिर्वेक्षके हरपायो मागम तिर्वेक्षके विद्याने कि विद्याने कि विद्याने कि सामान्यशोक आदि बार शोक्षिक व्यवस्थान भागने के व्यवस्थान कि विद्याने कि विद्याने कि विद्याने कि सामान्यशोक स्थापन स्यापन स्थापन स्य

पुष्ठितरवातात्रे जीवामें मिध्यादिष्ट गुणस्यानमें लेकर शीणकवायवीतपाठ व गुष्ठितरवातात्रे जीवामें मिध्यादिष्ट गुणस्यानमें लेकर शीणकवायवीतपाठ व गुष्पस्यान तक प्रत्येक गुण्यानवर्ती गुक्ततेत्रयावाते जीव कितने शेवमें रहते हैं। हो है

६ बुक्कामान् जिल्लास्कर्णादर्वं नवकास्त्रः को बोबन्तानस्त्रेतवालाः । सः तिः है। वेन

[ {{{}}}

सजोगिकेवली ओघं'॥ ७६॥

एदं सुर्च सुवर्म । ज्ञा कर्सायमग्गणाए अक्ताह्या युचा, तथा एत्थ हेस्सा-मगाणाए अलेस्सिया किणा बुचा चि मणिदे युच्चदे- जत्य दव्यं पहाणीभूदं, तत्य मणिदं होदि । जत्य प्रण पजनवो पहाणो, तत्य ण होदि। लेस्सामग्गणा प्रण पजपपहाणा परथ कदा, तेण अलेसिया ण परःविदा।

पवे देशसामग्राणा समता ।

भवियाणवादेण भवसिद्धिएसु मिन्छादिष्टिपहुडि जाव अजोगि-केवली ओधं ॥ ७७ ॥

एदं सुचं सच्दं वि मुलोघादो अविसिद्धमिदि मुलोधपज्जवद्वियपरूवणं लमदे ।

कि मिरपारिए गुणस्थानसे सेकर शीणकपाय गुणस्थान तक क्षेप सभी गुणस्थानॉर्ने मार्र-णान्तिकसमुदात और उपपाद, इन दोनों परामें शहरहेदपायाले जीय संबवात ही होते हैं।

शुक्ष हेरपावाले संयोगिकेश्लीका क्षेत्र ओपके समान है।। ७६ ॥

यह सत्र स्त्यम है।

र्शका-जिल प्रकार कपावमार्गणामें अकपायी अधिका क्षेत्र बतलाया गया, उसी महार यहां छेरपामार्गणामें भछेरप अधिका क्षेत्र क्यों नहीं कहा है

समाधान—धेसी बारांका करने पर कहते हैं-जिस मार्गणामें हुव्य प्रधानतास प्रदण किया गया है, उस मार्गणामें तो प्रतिपक्षी ' अक्यायी ' आदिका क्षेत्र मादि कहा गया है। फिन्त जिल मार्गणामें पर्याय प्रधान है, उस मार्गणामें प्रतिपशी 'अलेश्य 'बादिका क्षेत्र निरूपण नहीं किया गया है। यहां पर छेदयामार्गणा पर्याय प्रधान कही गई है. इसलिए मलेश्य जीवींका क्षेत्र नहीं कहा गया है।

इस प्रकार छेड्यामार्गणा समाप्त हरें।

भववमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंमें निध्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवींका धेत्र ओपक्षेत्रकें समान ा एए ।। 🕏 -

यह सम्पूर्ण ही सूत्र मूल-भोवते अविदिष्ट है, इसलिए मूल-मोप-पर्यायाधिकनयकी मक्रपणाको मान्त होता है, अर्थात्, मध्यमियाँका क्षेत्र भीषमें कहे गये क्षेत्रके समान ही है !

<sup>·</sup> स्थोगकेहितामकेश्यानां च सामान्योतां क्षेत्रमा स सि. १, ८.

६ प्रध्यानवादेन मध्यानी चन्नदेशानी सामान्योली क्षेत्रम् । स. सि. १, ८.

अभवसिद्धिएसु मिच्छादिद्दी केवडि खेत्ते, सव्वलोएं ॥ ७८ ॥

सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मार्गातीय-उवनादगदा अनवसिद्धिया सन्वजेते ! विहास्विदितस्याण-वेदिन्वयपदिद्वरा चदुण्डं स्टोतगामसंस्वन्वदिमाने, अङ्गहन्त्रशेत अर्थ-'स्वन्वपाने । कुदो ? तसरासिमस्सिद्ण युग्वंघप्यावद्वगस्त्वादो गज्बेरे । तं ज्ञान सन्वलेत 'युग्वंपमा । सादिययंघमा असंस्वेज्जगुणा । अणादिययंघना असंस्वेज्जगुणा । अदुग्वंथन विसेसाहिया । केतियमेतेण ? युग्वंघनेण्णसादिययंघनमेतेण । तसेस पविद्यंवम्य असंस्वेज्जदिमानमेत्रा चेत्र अम्बसिद्धिया होति । एदं कुदो गज्बेरे ! तस्त्रियंवम 'असंस्वेज्जदिमानमेत्रसादिययंघनोहितो असंस्वेज्जगुणहीणवणकाश्चवंवनीदो । सादियंवना पित्ररोजमस्स असंस्वेज्जदिमानमेत्रा वि कुदो गज्बेरे ? सुन्वरिदो । का सुन्वरे ? वुन्वरिदो । का सुन्वरे

अभन्यसिद्धिक जीवोंमें भिष्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व होकों रहते हैं ॥ ७८ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, मारणानिकसमुद्धत और रा पाद पदको प्राप्त अध्ययसिद्धिक जीय सर्व लोकम रहते हैं। विद्वारवस्वस्थान और विकियिक प्रस्थित ज्यायसिद्धिक जीय सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंस्थान मागमें और अद्वारद्धीपसे असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

र्शका – यद केले जाना कि विदारयस्यस्थान और वैक्रियिकसमुद्रातनत अक्षणकी सामाग्यकोक आदि चार छोकोंके असंख्यातय मार्गम और मनुष्यहोकले असंख्यान्तुर्य क्षित्रम रहते हैं ?

समाधान — प्रसराशिका आध्य करके कह गये यंधसम्बन्धा आवषहत्वार्वणे द्वारके सूर्योसे यह आना जाता है। यह इस प्रकार है— 'ध्रुवबंधक सबसे कम हैं। प्रकार पंधकारी सादिवंधक असंस्थातगुणे हैं। सादिवंधकारे अनादिवंधक असंस्थातगुणे हैं। अनादिवंधकारी अध्यवंधक विशेष अधिक हैं। कितने मात्र विशेषसे अधिक हैं। प्रविधारी अधिक हैं।

ग्रंगा-प्रसन्धार्थोमं पस्योपमके बसंच्यातर्थे भागमात्र ही अमध्यसिद्धिः औ होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ! ?

समापान — पर्योगमके असंख्यातवें भागमात्र साहिर्वयकास छुवर्ववर्गके हरें चेवातगुल्वतिता सन्वया यन नहीं सकती है, इस अन्वयानुवपत्ति जाता जाती है।

असराशिमें अमरपतिश्विक जीव पत्योपमके असंक्यातयें मागमात्र ही होते हैं। ग्रंका—सार्विध करनेवाले जीव पत्योपमके असंक्यातयें मागमात्र होते हैं, वा कैसे जना

१ अमन्यानां सरंहोदः । स. ति. १, ६,

तेषु पित्रियमस्य असंतेज्ञिदिमागमेषा सादियबंधमा वासपुथर्वतरेण सप्तद्विशीए तिद्देवमस्य अमात्रेग्ज्ञिदमागमेणुवक्रमणकात्त्रस्तंभादो । एदंदिएसु संचिद्धणंतसादिय-पर्गादिते पद्रस्त असंतेज्ञ्ञिदेशागमेषा सादियवंपमा ततेषु किण्य उपयज्जिति । ण, न्यागुन्ममागद्वाणु आपाणुसारि-वजीवतंमादो । चेण एदंदिएसु आजो संखेज्जो, तेण सि यएण वि विषएण चेव द्वादच्यं । तदो विद्धं सादियवंपमा पित्रोयमस्स असंते-जिटमागमेषा । पि ।

एवं भवियमग्गणा समता ।

सम्मताणुनादेण संभादिहि खश्यसम्मादिङ्गीसु असंजदसम्मादिङ्गि-गृहिङ जान अजोगिकेवली आर्य ॥ ७९ ॥

दर्शोद्वयस्वणं पढि विसेसी णरिय वि जीपिमिदि वर्ष । पञ्जबद्वियपस्वणाए वे णरिय स्रोह विसेसी । णवरि रहरपसम्मादिदीस संबदासंबदाणं मणुसपञ्जससंबदा-

समाधान - युक्तिसे।

शंका - यह युक्ति कीनसी है !

समाधान-पद गुक्ति इस मकार है- बसबीवीमें परयोगमके अलंक्यातर्वे रागमात्र साहिबंधक औव होते हैं, क्योंकि, वर्गकूपस्चके मन्तरसे बलकापकी स्थितका रियोगमके असंख्यातें मागमात्रं उपकर्यकाल पाया जाता है।

श्रेका - प्रकेट्रिय जीवॉमें संचयको प्राप्त अनन्त सादिबंध होमेंसे जर्पपतरके बसे-

भ्यातवे भागप्रमाण सादिवंधक जांव बसर्जावोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान—गर्ही, क्योंकि, सभी गुजस्थान और मार्गवास्यानोंमें स्वयंके सनुसार है। ध्यय पाया जाता है। कुंकि, पकेटिन्योंसे सावका समाज संक्यात ही है, इसल्टिंप उनका यय भी उनना सर्थान् संक्यात हो होना पाहिंप । इसल्टिय सिद्ध हुआ कि असपातिर्में जादियंपक और पद्मीयनके सर्वणात मानावान ही होते हैं।

इस प्रकार मध्यमागैना समाज हुई । सम्यवस्त्रमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्रहिष्ट और साथिकसम्यग्रहिष्ट जीवीमें अस-

रतसम्बर्गाटि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक अत्येक गुणस्थानवर्ती सम्बर्गाटि और धायिकसम्बर्गाटि जीवीका क्षेत्र ओपके समान है ॥ ७९ ॥ प्रथायिकमयेक प्रदान की संदेशा सम्बर्गाविषादित जीवीके सेवमें कोर्रे किरोनता सर्हों है, स्वालिप स्वमें 'भोग' देना वर कहा है। चर्वाणाधिकस्वमा प्रदाना के कीर्य विशेषता मही है। केवल साविकसायगरियोंने संयत संवत गुणस्थानवर्ती जीवीके समुख्य

र तत्त्रक्तात्रवादेव काथिकतत्त्वरहीवायतेवतत्त्रकाययोगोकेशस्याती XXX स्वामानीयी क्षेत्रम् । इ. ति. १, ८० संजदपरुवणा काद्व्या । असंजदसम्मादिद्वी वि मारणंतिय-उववादपदेसु बहुमाणा संबेज्ञा। सेसं सगमं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥

पुन्त्रिक्लेहि सह खेर्च पडि पयरिसेग पच्चासचीए अमावादो पुघ सुन्तरंगे। सेनं सगमं ।

वेदगसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्विषहुडि जाव अपमतसंतरा

केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८१ ॥

एरव जोघपज्जवद्विषपस्यणा णिरवयवा सन्वगुणहाणेमु परुवेद्द्या, विकाः भावादो l

च्यसमसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिहिषहुडि जाव स्वसंतक्सा<sup>व</sup> बीदरागछदुमत्या केवडि खेते, लोगस्त असंखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

वर्षात्र संपतानंपताम समय पर्वे ही अपेक्षा ही शेत्रप्रक्रपणा करना चाहिए। मारवानिक शमुद्धात भीर उपपार, इन दो पहाँमें वर्तमान मसंयतसम्यन्दिष् गुणस्यानयर्ती साविश्वनत क्टरि श्रीय स्वतान दी होते हैं। दोप स्वका अर्थ सुगम है।

मपोगिकेवती मगवान्का क्षेत्र ओप-कथित क्षेत्रके समान है ॥ ८० ॥

सयोगिकेवत्री गुणस्थानकी पूर्ववर्ती गुणस्थानोंके साथ क्षेत्रकी भरेता वर्षांवर्ष क्रम्यामान्द्रा मनाव है, इसल्यि यह गृथक् मृत्र बनाया गया है। तेप सूत्रमा मर्थ सुन्तर है।

बेदकमध्यादृष्टियोमें अभयतमध्यादृष्टि गुणस्थानसं हेकर अप्रमत्तमंयत गुणवा हर प्रत्येक गुणम्यानवर्ती वेदक्रमम्पग्रहि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। सोक्र प्र स्टावर मागमें रहते हैं।। ८१ ॥

यशार बोयम वहा गई पर्यायार्थकनयसम्बन्धा क्षेत्रतकाणा सम्पूर्ण वर्गी क्षरेसा सर्व गुणस्यानीम प्रकृति करना काहिए, वर्गीकि, उससे इसमें कोई विशेष करों है।

उत्तर्यमणस्यादि बीबोर्ने अर्थयनमस्यादि गुणव्यानमे लेहर उपग्रहार हित्रारहण्य गुगव्यान तक प्रत्येक गुगस्थानवर्ती उपग्रमगम्पादि श्रीव किन्ते क्षेत्री करते हैं ! शेष्ट्रेड अमेल्यात है मागमें करते हैं ॥ ८२ ॥

र बार्ड वर्षकिताल्डर्स्स्रायनस्थालस्यारास्यकात्वात् ××× अ बावप्रशेतः है।वह र है र्रा ह बी रहनिष्टाच रहेलामहेदर्यास्य हराहुद्द्यात्रकारात्रात्रा अस्य स्रावाहात् स्राप्त स्थान्यात्रात्रात्रात्रात्र इ.सी.स्थानस्थानस्थलामहेदर्यास्य हराहुद्यात्रकारात्रात्रां अस्य स्थानील् हेदर्शतं क्षेत्रहर्णः

सत्याणसत्याण-विद्वायविद्वार्याण-वेदण-कमाय-वेउव्वियसप्रम्णादगद। अर्थवद्-सम्मादद्वी चदुण्दं लोगाणमसंखेजबदिमागे, माणुसरोचादो असंग्रेजनाणे अरुटेति। सार्य-विष-उपवादपदेसु पत्ता चेप आलावे।। णपि वेसु परेतु हिद्दत्रीया संग्रेजना च्या होति, उपसमसद्वीदो ओदिय उपसम्मम्भचेण सद्द असंत्रमं पिट्यणात्रीयाणं संग्रेजनाप्तरंगारी। सेसउपसमसम्मादिद्वाणं किया सर्णमिथा वि युवे समाप्तरे।। एवं संवद्गानंबद्दानं दि । णपि उपयादपदं पतिय । सेसाणमोर्ष । णपि पमससंत्रदस्य उपमममम्मचेण वेता-हार्ग स्वात

सासणसम्मादिट्टी ओषं ॥ ८३ ॥ सम्मामिच्छादिट्टी ओषं ॥ ८४ ॥ मिच्छादिट्टी ओषं ॥ ८५ ॥

द्यस्थानस्यस्थान, विद्वास्थान्यस्थान, विद्वास्थानुद्वान, कणायसमुद्रान और वैक्तिक समुद्रानके बात आसंवासस्यक्षित् व्यास्थानिक आदि समुद्रानके बात आसंवासस्यक्ष्य प्राप्त कर्मानिक स्थार के साथित कर्मानिक स्थार के साथित क्षेत्र के स्थार के स्

शुद्धाः—जपदामधेणीक्षे जनर बह सरनेवाले जपदानसम्पर्धाः अधिके अभिक्ति द्वीप सम्य जपदानसम्पर्धाः जीवींका सर्वा क्यों सही क्षेत्रा है है

समाधान—स्वधायके दी नहीं होता है।

इसी प्रकारने संवनासंवन गुजस्थानवर्ती उपसानस्वरहार अविका केन की जानना काहिया विशेष कात यह है कि उनके उपयानहरू नहीं होता है। कि गुजनवाननी करमानस्वरूपरि अविका क्षेत्र कोम वर्णित होत्रके समान है। क्षियमा वेचन हमते हैं के प्रमासस्वरूपरि अविकासस्वरूपर्वे साथ नैजलागुद्धान और काहाय स्वरूपरा वर्ष होते हैं कि

सासादनसम्पर्टाट जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८३ ॥ सम्युक्तिक्यादाटि जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८४ ॥ विक्यादाटि जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८५ ॥

१ मीन्यू "वहेतेत् " वी वाटः । १ मीन्यू "वहेतेत् " वी वाटः ।

BXXX minicagespreaded preferential fere exist a minical date in the

एदाणि तिष्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ति एदेसि परूवणा ण कीरदे। एवं सम्भत्तमगणा, समता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिहिपहुडि जाव सीणक्सा विदरागछदुमस्या केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेजजदिभागे ॥ ८६॥

सत्याणसत्याण विहासबिसत्याण वेदण-कताय-वेडिन्यसमुग्चादगरा स्मिन्छादिद्वी तिष्टं लेगाणमसंखेजनिद्यामो, तिरियलोगस्स संखेजनिद्यामे, अङ्गाहनार्वे असंखेजनिया अच्छित । एवं मारणतिय-उवनादपरेम् वि वचकने । णवरि तिरियलोगर्वे असंखेजन्यगुणे इदि माणिदकने । सेसगुणद्वाणाणमोघमंगो, तदी विसेसामानारो ।

असण्णी केवडि खेते, सञ्चलोगे ॥ ८७ ॥ एदस्स सुनस्य अत्यो सुगमे।।

द्वं सिव्विमग्गवा समता ।

ये उक्त तीनों ही सूत्र सुगम है, इसटिए उनकी प्रक्रपणा नहीं की जाती है।

स्स प्रकार सम्पन्तवार्गणा समाप्त हुई। साजिमार्गणाके अनुवादसे संही जीवोम मिथ्यादिट गुणस्थानने लेका सीण स्पायवीतागरुप्तस्य गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संती जीव किनने क्षेत्रमें सर्ग

हैं ! होकके असंख्यात्वें मागमें रहते हैं ॥ ८९ ॥

दा राजक जनस्पावन नामन १ द्व ६ ।। दि ।।

स्वस्थानस्वर्धान, विदारवास्वर्धान, वेद्गासमुद्धात, करायसमुद्धात भीर वैशिविष्
समुद्धात, रन गांच पद्देशि मात संभी मिस्यारिट जीव सामन्यद्धोक माति तीन मोनी
ससंस्थातवें मागमें, निर्यालोक संस्थातयें मागमें भीर मद्दारिद्धीय असंस्थातगुणे के की
ससंस्थातवें मागमें, निर्यालोक संस्थातयें मागमें भीर मद्दारिद्धीय असंस्थातगुणे के की
रहें हैं। इसीवकार मारामितकसमुद्धात और उपवाद, इन दे। यदोमें वर्तमात संसे कियः
दिने हैं। इसीवकार मारामितकसमुद्धात और उपवाद, इन दे। वदोमें वर्तमात संसे कियः
दिने हैं। इसीवकार मारामितकसमुद्धात और उपवाद किया विद्धार कहता चादिय कि
दिने हैं। इसीवकार मारामितकार मारामित किया कहता चादिय कि
दिने हैं। सासाइनादि ग्राम्यानिक संसे जीविक के सर्वे
सेर्य विद्यारमा नहीं है।

अमनी बीत किनने धेनमें रहते हैं ! सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ८७ ॥ इस सम्बद्धा वर्ष समग्र है।

इस बदार संहिमार्गणा समाप्त दुई।

१ व्हण्तादेन व हेरो प्रवृत्तिका । त. ति. १, ८. २ व्ह देशे वर्देशेका । त. ति. १, ८.

आहाराणुवादेण आहारएमु मिच्छादिट्टी ओषं ॥ ८८ ॥ सन्वयदेहि ओषपस्वणादो विसेसो गरिव वि ओषचं जुन्बदे ।

सासणसम्मादिडिप्पहुडि जाव सजोगिकेवटी केवडि सेते, लोगस्स असंकेज्जदिभागे ॥ ८९ ॥

पदस्य सुचर्त्त पञ्जादिवपरूचणा जोवपरूचणाए तुल्ला । पदि उदबादी सरीरगदिदपदमयमण् वचन्त्रे । सजीगिकेविकस्य वि पदर-लोगपूरणसमूज्यादा वि णीत्म, जाहारिचामावादी ।

अणाहारएसु मिच्छादिट्टी ओघं ॥ ९० ॥

दब्बहियपरुवणाए और्ष होदि । पञ्जबहियपरुवणाए पुण उववादपदमेक्कं चेत्र अस्थि । सेसं गरिय । सेसं सुगर्म ।

आहारमार्पणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिप्पारष्टिपोंका धेत्र क्षेपके समान सर्व लेक है।। ८८।।

मिष्याद्दरि आयोके स्वरधान मादि सभी पहाँके साथ क्षेत्रसम्बन्धी भोषप्रकणकाते विदेशका नहीं है, इसलिए उनके क्षेत्रके मोष्यवाद का जाता है।

सासादनसम्परित गुणस्थानसे लेकर संपोगिकेस्टी गुणस्थान इब प्रापेक गुण-स्थानवर्शी संत्री जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। लोकके असंख्यातर्वे मागमें रहते हैं। ८९॥

हम सुत्रकी पर्यावाधिकत्यसम्बन्धी होत्रवरणा भोपहेन्द्रवरणाहि समान है। विदाय बात यह है कि माहारक जीविके वयमावद हारित हरू व नवेके स्वय समयचे हरता पारित, पर्याविक, नार्या और महाराक होता है। माहारक स्वाविक किया किया किया किया किया हो। स्वाविक स्वाविक की किया भीर स्वीविक की किया की स्वाविक की स्वाविक

अनाहारकों में मिथ्यारिष्ट जीवोंका क्षेत्र ओपके समान सर्वेशक है ॥ ९० ॥ हम्माधिकनयदी मक्यमारि भनाहारक मिथ्यारिष्ट भीवोंका क्षेत्र भेगके समान होना है। बिन्नु पर्यामधिकनवदी मक्यमारी मेरास को यक व्यवस्थर ही होना है। देख पर नहीं होने हैं, प्रचीकि, मनाव्य निवस्त कियारिष्ट अविभीन व्यवसानाहि दोष सभी पर मनेवस है)। देख प्रचलक मर्थ गुगत है।

१ आहारात्रांत आहारताची विश्वतद्वयदिशीयवन्यानस्त्राची सामानीय विषय् । कर्यपर्यवनिता कोररवासक्षेत्रमानः । स. सि. १, ८० सासणसम्मादिही असंजदसम्मादिही अजोगिकेवली केविह सेवे, लोगस्स असंखेजजदिभागे' ॥ ९१ ॥

पज्जबद्विपणएण उवबादगदा सासणसम्मादिद्वी चदुण्हं होगाणमसंस्वेन्बदिगणे, अद्वादञ्जादो असंस्वेज्जपुणे अन्हति । असंजदसम्मादिद्वीणं पर्वणा एवं चेत्र । अशेषि केवली चदुण्हं होगाणमसंस्वेज्जदिमागे, माणुनस्तेचस्य संस्वेज्जदिमागे ।

्रस्जोगिकेवही केवडि खेत्ते, होगस्त असंखेज्जेसु वा भणेसु

सञ्बलोगे वा ॥ ९२ ॥

पदरगदो सजोगिकेवली लोगस्स असंबेज्जेसु मागेसु वा ईरि, लेगपेरंबीईर बादवलपबदिरिचसयल्लोगखेर्च समावृरिय हिंदचादो । लोगपूरणे पुण सब्बलागे मारि सञ्बलोगमावृरिय हिंदुचादो ।

( एवं आहारमग्गणा सम्ता ) एवं खेचाणिओगदारं समर्चं ।

अनाहारक सासादनसम्पन्टिंष, असंयतसम्यन्टिष्ट और अयोगिकेन्डी किने

क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यावर्वे मागमें रहते हैं ॥ ९१ ॥

पर्यायार्थिक नयसम्बन्धि क्षेत्रप्रप्रणाक्षी अपेक्षा उपवादको प्राप्त अनाहारक साहारने सम्बन्धि जीव सामान्युटीक आदि चार छोक्षीक असंस्थातव सामग्रे और अहांदिनिक असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। अनाहारक असंबत्त सम्बन्धि जीवीक्षी सेवमस्यामा भी भी मकार जाननां चाहिए। अनाहारक अयोगिकेयण मामग्रे सामग्रेन क्षान्युटीक आदि चार छोगी असंस्थातचे मागमें और महायक्षेत्रक संस्थानये मागग्रे रहते हैं।

अनाहारक सयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके अवंहरात

बहुमार्गोमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ९२ ॥

प्रतरक्षमुद्धातभव (६५४ व. १८) । प्रतरक्षमुद्धातभव (६६मिभिक्वर्ख) जिन होक्के धर्मस्थात बदुमागॉम रहते हैं पर्योक्ति, वे लोकके चारों और स्थित चातप्रवय-प्यतिरिक्त सक्छ होकके क्षेत्रको समार्थित करके स्थित होते हैं। चुना लोकप्रणस्थात्वातमें वे ही संयोगिकेयली जिन सर्व होकमें रहते हैं। प्रयोक्ति, उस समय वे सर्व लोकको आयुरण करके स्थित होते हैं।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समान्त हुई।)

इस प्रकार क्षेत्रानुयोगद्वार समाप्त हुआ।

र बनाहारकार्ता दित्यादृष्टिमाधादनस्यादृष्ट्यवंधायुग्दृष्ट्यक्षेण्युग्दृष्ट्यक्षेण्युग्दृष्ट्यक्षेण्युग्दृष्ट्य

२ छयोगिकेवटिनी टोकरवार्यक्षेत्रवारामः छर्वेडोकी या । छः छिः १, ८० १ सेवनिर्वेदः रुखः । छः छिः १, ८० फोसणाणुगमा





सिरि-भगवंत-पुष्फदंत-भूदपिल-पणीदो

## छक्खंडागमो

सिरि-धीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समविणदो

तस्त पदमलंडे जीवहाणे

फोसणाशुगमो

णमिऊणेलाइरिए तिष्टुवणभवणेरकमंगलप्पईवे । कलिकलसफराणवसणे सर्च फोसासियं बोच्छं ॥

पोसणाणुगमेण द्विहो गिहेसी, ओघेण आदेसेण य' 11 १ 11 णामफीतपं टरपफेसपं दश्यकेसपं सेचकेसपं कारकीसपं माक्कीसपं चे एश्विहं कोसपं 1 तत्य णामकेसपं कीसपासरे 1 एसी दश्वीह्यस्स णिवसेबो, ध्रवके

स्पर्यतानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओपनिर्देश और आदेश निर्देश ॥ १ ॥

नामस्पर्धान, स्थापनास्थानंन, द्रव्यस्थानंन, हेयस्थानंन कालस्पर्धानं मीर मायस्यानिने मेन्से स्वयानं एड प्रकारशादि। उनमें 'स्वयान' यद राज्य नामस्यानि निरोप दे। यह निरोप द्रव्यार्थिकनयका थियय दे, क्योंकि, प्रयानेके थिना याच्य-याचकमायदण सम्माय

विभुवनकरी भवनके प्रकाशित करनेके छिए श्राह्मतीय मंगळवरीय, भीर कछि कालकी कञ्चलाने संमार्थनके छिए यहास्वकर भी पलावार्यको ममस्कार करके कार्यनानु गमाभित सूचीके अर्थको बहता हूं ॥

१ स्पर्धनपुष्पते-तद् दिविषय् । सामान्येन विश्वेष व इ सः तिः १, ८,

विणा वाचिय-वाचयभावाणुववचीदो । सोयमिदि बुद्धीए अण्णदव्वेण अण्णदव्यसः एवर-करणं ठवणफोसणं णाम । जहा, घड-पिटरादिसु एसो उसहो अजीवो अहिणंरणो वि ! एसो वि दव्यद्वियस्स णिक्सेको, देाण्हमेयत्त-धुक्तेहि विणा ठवणापवृत्तीए असंवत्रहो। आगम-णोआगममेदेण दुविहं दव्यफोसणं । तत्य फोसणपाहुडआणगो अणुवजुतो सभेत-समसिद्देओ आगमदो दृब्यफोसणं णाम । णोआगमदृब्यफोसणं जाणुगसरीर-भियप्तन्तिः रित्तदृब्यफोसणभेएण तिविहं । तत्य जाणुगसरीरदृब्यफोसणं भविय-बहुमाण-सपुन्नारः भेएण तिविहं । कथमेदस्स तिविहसरीरस्स फोसणववदेसो १ फोसणपाहुडसहचारारी । जहा, जिससहचारिदो असी, धणुसहचारिदो धणुहमिदि । भवियदव्यक्रीसण भिरस्काने फोसनपाहुडजाणओ । कथमेदस्स दृष्यफोसणववएसो १ पुरुवृत्तरावस्थाणं दृष्येन एगतारी। जहा, इंदहमाणिदकट्टस्स इंदो चि वगदेसी। तब्बदिरिचदव्यक्रीयणं सचित-अभिक

ग्रीका-- इस तीन प्रकारके शरीरको 'स्पर्शन' यह स्पपदेश (संहा) हैने क्षत हो सदत है !

समापान - स्वरानप्रावृतके साहस्वयंते उक्तः भीन प्रकारके वासरको भी स्वराविभी क्रणत है। इति है। अस, मति (तत्वार) ते सहयरित पुरुषको प्रति भीर धर्डा सङ्ब्रित प्रवद्या घतुष संशा प्राप्त हो जाती है।

स्वित्यकारमें स्पर्शनविषयक शास्त्रके बायकको सम्पन्नम्यस्थरीत बहुते हैं।

र्युहा-इस मन्त्रतारीरवारिके 'द्रव्यस्पर्शन' यह संशा केने हैं !

सुमान्यात — विवासित क्रथाची पूर्व भवन्या भीर उत्तर सवस्थाहा उत हत्ते क्षा बनाय नाया जाता है। जैसे, राष्ट्र बनानेक नियं सार गर बाहरी 'दर्द 'वर्र बंह रेक्ट इन्हों है।

महीं बन सकता है। 'यह वहीं है' इस प्रकारकी बुद्धिसे अन्य द्रव्यके साथ अन्य द्रावर्श एकाय स्थापित करना स्थापना निशेष है। औसे, घट, विटर (पात्रविशेष) आहिकाँ 'वा क्रयम है, यह मामीय है, यह अभितन्दन है ' इत्यादि । यह स्थापनानिशेष भी हावाधि मयका दिवय दे, वयाकि, दो पदार्थोकी एकता और ध्रुवताके विना स्वापनानिभेतरी प्रमुलि असंगय है। आगम और नीमागमके भेदले द्रव्यस्वर्शननिशेष दो प्रकारका है। इनई क्परांतिविचयक द्याम्प्रका सायक, विन्तु धर्तमानमें अनुपयोगी भीर क्रयोगदासमित श्री सागमद्रश्यकार्यातिकार दे। बोआगमद्रयक्षयश्चितिकार ग्रायकशारीक, ग्राय भार वस्त्रा हिक्त दृष्य रणहीन के मेदन तीन प्रकारका है। उनमें बायक दारीर दृष्य राहीन माधी, वर्गमा और समस्तित (स्यक्त) के भेदले तीन प्रकारका है।

मिस्तपेभेदेण तिविहं। सचिचाणं द्वाणं जो संजोओ सो सचिचद्व्यकोसणं। अचिचाणं द्वाणं जो अण्णोणोण संजोओ सो अधिचद्व्यकोसणं। मिस्तपद्व्यकोसणं छण्डं द्वाणं संजोएग एस्लातिह्नेयभिणां। सेसद्व्याणमागासेण सह संजोओ सेवकोसणं। अपूर्वेण आगासेण सह सेसद्व्याणं सुनालस्तुनाणं वा क्यं पोसो! ण एस दोसे, अवभेज्साव-

तह्यतिरिक्तह्रप्यसर्धात स्विचत् अविच्त और भिश्वके भेदते तीत प्रवारवा है। जो स्विच्त ह्रप्योक्त संयोग होता है, यह लिक्तिहर्ण्यस्थात बहलाता है। अधिक हृष्योक्त जो परस्यर्थे संयोग होता है, यह अधिकहरण्यस्थात बहलाता है। निश्चहरण्यस्थात बहलाता है। निश्चहरण्यस्थात केतन-अवेतनस्थक्त प्रश्नों हृष्यों हे संयोगते उनसह भेदरवादा होता है।

विशेषार्थ – किसो विवासित राशिके द्विसंदोगी, विसंवीमी मादि मंग निकाटने हे

लिय विवासित राशिममाणां हे के हर यस यस कम करते हुए यसके मंत्र तक मंत्र रयादित कर गायादि । युना दूसरी विवास उन्हेंस मंत्र यस कि संदर विवासित राशि तक मंत्र राशि लिया गादिए । युना दूसरी विवास उन्हेंस मंत्र यह कि संदर विवासित राशि तक मंत्र राशि मार्ग पार्ट पार्ट विवासित राशि तक मंत्र राशि मार्ग पार्ट पार्ट वर्ड वेंस्त मार्ग के साथ मार्ग प्राथमित मार्ग संदर वर्ड मार्ग के साथ मार्ग प्राथमित कर परिव मार्ग संदर्ध साथ मार्ग के साथ मार्ग के

रीय द्वार्योक्त आकाराष्ट्रत्यके साथ को संयोग है, यह क्षेत्रकारीय कहनाना है। क्षेत्रा – अमुले आकाराके साथ रोच अमुले और मुले द्वारोगित करते केंसे संयक्ष है है

प्यके भीतर संयोगी भेग संभय मही है। जीव भादि सही इत्योंके दूधक पूरक सह भव र होते हैं, जो असंयोगी (यक संयोगी) होतेले यही बहुत नहीं किये गरें। गाहगमावस्सेव उवयारेण फासववएसादी, सत्त-पमेयत्तादिणा अण्गोण्णसमानवेण वा कालद्वरस्य अण्यद्वेहि जो संजोओ सो कालफोसण णाम । एत्य अमुतेण कालस्ये सेसद्ब्बाणं जंदि वि पासो णरिय, परिणामिज्जमाणाणि सेसद्ब्बाणि परिणामवेण कांत्र पुसिदाणि चि उवयरिण कालकोसणं युच्चदे । खेच कालगोसणाणि दव्यकोसणिह हिण्य पर्दति चि बुत्ते ण पर्दति, द्व्वादो द्वेगरेसस्स कर्धांच मेद्रवलेभादो । भावकीसर्ग दृशि आगम-णोआगमभेषण । फोसणपाहुडजाणओ उवजुत्ता आगमदो भावफोसण । पानगुन-परिवदपोग्गलदन्तं वोजागमभावकोसणं ।

एदेमु फोसणेसु जीवलेचफोसणेण पयदं । अस्पर्धि स्पृत्यत इति स्पर्धनर् फोलनस्स अधुगमो फोसणाणुगमो, तेण फोसणाणुगमेण । शिहसो कहुल वक्लानिधी एपद्रो । सो दुविहो, जहां पर्या अधिण विंडेण अभेदेणीत एपद्रो । आरेतेण भेरत

समापान-यद कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्वमाश अवमाहकमावको है। उपबाछ रपरांगंबा मान्त है, अथवा, सस्य, प्रमेयत्य आदिके द्वारा मूर्च द्रव्यके साथ अमृतं द्रवार्ध परश्वर समानता होनेस भी स्पर्शव। ध्ययदार यन जाता है।

बालद्रायका भन्य द्रश्योंके साथ जो संयोग है, उसका नाम कालस्पर्धन है। वा वचिरि मार्ग बाहद्रश्यके साथ दोप द्रायाँका स्पर्शन नहीं है, तथारि परिवाहित होते वरे होत्व द्रष्य विद्यामध्यक्षी मध्या वालसे स्थानित है, इस महारते व्यथासे बाह्यारे

र्द्धेका — क्षेत्रस्पर्दान और कालस्पर्दान ये दोनों स्पर्दान, द्रव्यश्रातमें वर्षा नरी दश जाना है।

धानमून होते हैं ?

समाधान—पेशी शंकापर उत्तर देते हैं कि क्षेत्रशर्शन और कारशी<sup>6</sup> इप्रभारतिमें अन्तर्भृत नहीं होते हैं, क्योंकि, इध्यक्षे द्रागके एक देशका वर्षीयन्थी

मावन्दरीन थागम और नोमागमके भेदले दो महारका है। स्पर्धना<sup>विषयह शास</sup> चया अता है। इ यह भीर बनेमानमें उनमें उपयुक्त श्रीयको आगमनायक्त्रशीन कहेन हैं। स्परीपुणमें वैतर्व इ यह भीर बनेमानमें उनमें उपयुक्त श्रीयको आगमनायक्त्रशीन कहेन हैं। स्परीपुणमें वैतर्व

**९९ एट एर हो। मेर भागमधायमधान महोन है।** 

इब इक छट प्रचारक स्टारीनीमें यहांगर जीवहरणमध्याची शेवस्परीनमें बतेन है। हो मूनदानमें कार्य दिया गया और वर्तमानमें कार्य दिया जा कहा है। बहु हार्य बहराता है। स्वर्शन हे धनुमानी व्यवस्थानम स्वर्शन ह्या सारहार, प्रवर्शन है। स्वर्शन हे धनुमानी व्यवस्थान सहते हैं, उससे, धर्मान स्वर्शन है। विर्देश, बचन भीर व्याक्षण, ये नीती वहार्थक नाम है। यह निर्देश महिन्हें विर्देश स्थान की ब्रकारका होता है। भाग, विद्व भीत भनेत, य सब वदार्थक साम है। बार्रिया, के विसेनेणीय समाणहो। ओपणिहेसो आहेसांगहेसो चि हुविहो चेन शिरेलो होहि, हस्न-पज्यबिह्मणए अणवत्वीच कहणोबाणाभावाहो। चिहे एवं, तो पमान्यकस्य अमावा पसम्बद्धे हिंदे खुंचे, होहुं गाम अमावा, गुजप्पहानमावनवरेन कहणोबापामावाहो। अधवा, पमाणुप्पाहर वयण पमाणवत्वस्वयारेण खुंबेहे।

ओघेण मिच्छादिद्वीहि केनडियं सेतं पोसिदं, सव्यटोगो ॥२॥

ं जहा उरेसी वहा विरेसी ' चि णावारी बाद जोषेणीचे' वयमें । सेमगुण्डाच-पिडिमेहड्रे निष्णारिष्टीहि चि वयमें । सेन्द्रिये सेवें कोतिहामिट्रे पुरूषापुर्व सम्याम समाणवपदुष्पायणकतं । सेन्द्राणिजारिस सम्यामणाडाणानि असिस्द्रण सम्यामणाडानार्थे स्कृताणकार्विमिट्टं सेचे पुरुषाहिदं, सेविद वोसणाणिजासरेस कि पस्ति नदे हैं पैतास मगणडाणानि असिस्द्रण सम्यागडाणार्ल अदीदकारविसेसिद्सचें कीसणे पुरुषे । स्रम

भीर विरोप ये राव समामार्थक माम हैं। मोमिनिर्देश कीर मार्देशनिर्देश हम क्रवारसे निर्देश ही ही प्रकारका होता है, वयाँकि ह्रय्यार्थक मीर वर्षावर्षिकनयोंके मवस्त्रका किये विना वस्तुरवरवर्षे कथन करनेके वयावका समाव है।

र्यका-परि पेसा दे तो प्रमाणवाषयका समाव प्राप्त होता है !

सुमापान — वन राष्ट्रायः अवशाकार वहते हैं कि अने ही अधानवावयवा अक्षाव हो आवे, पर्योकि, भीजता और अधानताने दिवा परमुख्यपटे अधान वरतेने स्पापका औ अभाव है। अधाया अमाजते उत्पाहित वचनको उपवारते अमाजवावय बहुते हैं।

ओपसे मिध्यादृष्टि जीवाने विताना धेत्र रपर्छ दिया है। सर्वलोह रपर्छ

किया है।। २ ॥

'किस महारसे जेद्दा होता है, जसी महारसे निर्देश होता है' इस न्यायेक अनुसर स्वर्म पहले 'मोमेसे 'देसा पणन पड़ा! साक्षात्वादि होग गुलस्पानीके मितरेच बारे के किस 'मिमारादियों के हारा ' यह पणन पड़ा! 'दिनाना होन एपरी दिसा है' यह पूरण-स्व कामको हामाना-मिनारून करनेने किस पड़ा पड़ा है।

र्शका— रेजानुयोगद्वारमें सर्व मार्गकारयः नोवा भामव क्षेत्रर सर्वः गुण्यक्षाले व वर्गमानवालविशास रेजान मनियान कर दिया गया है। मन पुनः इस रुपरं नानुरोत्तर से

चया प्ररूपण किया जाता है है

समाधान-श्रीहर मार्गणात्पानीय सामय क्षेत्रके सभी गुनरवानीय स्त्रीत (भूत) बाब विक्रिय क्षेत्रको रपर्यान वदा गया है। (स्त्रपट बर्टी वर्तीका प्रकृष्ण हिस्स आता है।)

<sup>्</sup> बायानेव कार् सिमारी कि वर्तकेच जारा । ब. कि. १.८. ५ प्रीपु " कार कोर्च च मारिक कि कोर्नेने " इति प्रप्रश्

बद्दमानसेचपरुवर्ण पि सुचिनिवद्दमेव दीसदि। तदी म षदुष्पाद्दं, हितु बहमाणादीदकालविसेसिद्खेचपदुष्पाद्यमिदि वं वं पुन्नं राचानिजागहास्त्रहावद्वहमाणसेचं संमराविष प्तापनहं वस्तवादामा । वदो फोसणमदीदकालविसेसिदसेचे सन्दोंमा, बन्दों होगो मिच्छारिईहीहि च्छुनो वि वं वुचं होरि ब बानेरचं । अधवा—

5इस**्ट्रिस्**नमदं हेत्वदेण सत्तक्मेण । हेर्निग्हरते मगराम् होनि छोमन्हि ॥१॥

८६ीए गाहार आणेदस्ती। अथवा समरज्ञाविष्यांम-चोहस नंदा - यहां न्यांनानुयोगद्वारमें वर्तमानकालसम्बन्धी क्षेत्रक निकद्ध हो होगी जाती है, इसालिए हम्मीन मन्त्रीतकालविशिष्ट शेवका म

नरी है, किन्तु बर्गमान भीर मनीनकानते विशिष्ट शेनका मनिगाइन कर गनाचान — यहाँ सारांनानुयोगजारमं धर्ममानक्षेत्रकी मक्रपणा न हिन्दुः रहते सेवातुरामदास्य प्रवर्णित वस उस धर्ममानस्वको स्मरण क हिस्स क्षेत्रहे अतिग्रहतार्थं इसका महण किया गया है। सनवन वर्षण्यान्ये विश्वाद क्षेत्रचा ही मिनवादन करनेपाला है, यह शिच हुआ।

स इंडोड वर्गाच महाम होत विष्णाहिए जीगोंक द्वारा स्वरा विश बहा करू है। वहार हो दहा प्रमाण वहन केरवहरणामें क्यां वाति कि रिष्टात्र हेर्स्य बर्गदेश समया-

र करो कर्जनामने छाकर धर्मात् मध्यानेकने दी विभाग कर, ही हिन हरू व व्यवस्ति व्यव विव्यवको साथा करके, वृतः सातक वर्गन गुणाइर इतिहा है व देवार, शाहमानाची यतरात हागाय होते हैं है है इंड काराइ बनुधार साइचा प्रयाण निचालना गाहिए।

हिंदेच - हो दश मध्यम् विमन्त दरमपुर दी मण ही मने हैं, स्थ

करून हरून का नाइका मुखा । हात्रू और मूल ३ शाह्यमाण है ज Congles int fat and eat se au 13 a se ab ju fan (कत्र कृष्ण क्षेत्र कृष्ण कृष्ण सम्बद्ध स्था । अस्त्र कृष्ण । स्था स्था । स्था कृष्ण स्था समास्य है। समी ter se and and event. MOTHE SAME

आयामं चोदसखंडारं काद्ण विक्संमेण सच खंढे करिय होगवमाणादा अधियसेषं फ्रिंसिय फेलिटे सगळ-विगलावयसहिदलोगासेचं परिप्कृडं होद्ग दीसदि। तत्प द्विर-स्ववसेण सन्दाणि खेचखंडाणि आणियं मेलाथिदे वि चं चेव होगपमाणं होदि।

क्याना, सात राहुममाण चीहे थीर योदह राहुनमाण छाडे शेवको स्थान करके मापानकी मुपेका चीदह कंट करके भीर विश्वासकी अवेदा सात बंद करके, पुनः होकके माणमें भीरक शेवक शेवका राहुके ममाणते सीहत करनेवर, अपने सकल और विकल स्वयसोंने सहित छोकरक शेव परिवृद्ध होकर दिवार देता है। पुनः पहाँगर करावे गर् सुबके अनुसार-समस्त शेवलंडोंको निकल करके मिळानेवर भी बढी सीन सी तेनामीस सनस्त छोकका ममाण हो जाता है।

विश्वेपार्य -- उक्त कथनका सभिमाय यह दे कि पुरुषकार लोकके साकारमें असनावी तया उसके मांगे पीछे जसवालीके समान ही जो क्षेत्र दे यह सब पूर्व-याधम एक राह् बीहा, उत्तर-रक्षिण सात राजु मोटा भीर जगर-नीचे चीदद राजु छन्मा दे। इस बगाटाकार मायत चतुरस्त क्षेत्रको लाबाँकी भारते यक एक राजु प्रमाणते खंदित करके पुत्रः मोटाँकी भारते भी यक राज्यमाणते संक्षित करना बाहिए। इस मकारते उक्त कराशकार आपत-चतुरस्रहोतके एक राजुपमाण छटदे, चीहे सीट मीटे सर्यात् प्रतामक लंड १४ x v = ९८) मठ्यानचे होते हैं। युनः लोकममाणमें से इस सेनके (इन खंडोंके) मतिरिक्त जो मनशिए क्षेत्र वचा है, उसे लेकर सम विभागोंको ऊपर-नीचे स्थापनकर पूर्वेक ममाणसे दी यक यक राज्यमाणके जह करना चाहिए. जिलका कम इस प्रकार है-मध्यत्मेकले मीचे वर्षामाणके जो दोष दोनों पादर्शवर्ती दी भाग दें, जर्दे यहके जगर दूसरेका विषयांतकमते दलना चाहिए। ऐसा करने पर यह सात राजुमनाण लाना, चीता समयनुरस्य शेव बन जाता है, जिलको कि मोटाई सर्थेव तीन राजुममाण हो जाती है। इसके भी एक एक प्रशासुमाल केंट्र करने पर (७ x ७ x ३ = १४७) एकसी सेतालीस खंड होते हैं। इसी प्रकारसे कार्क होंक के अपिशा होत्रको प्रहालेकि पाससे छिम कर देनेपर समाव मापवाद कार भाग हो जाते हैं। हरहें कमरा। विश्वासक वसे स्थापित करने पर सात राजु सम्बे, लाहे ही व राहु चीहे और दी. राहु मोटे, पेसे दी भायत चतुरस्र सेव ही जाते हैं। चीद इन दीनी मार्गोहो मी चौहार्रही ओरसे मिला, दिया जाय, तो सात राज्यमाण कारा-चौहा दृष्ट समयतरस्य क्षेत्र वन जाता है, जिसकी कि मोटाई सर्वत्र को राज कोगी। इसके भी रक एक पनराज्ञयमाण खंड करने पर ( ७ x ७ x = ९८) अञ्चानहे खंड होने हैं । इस अक्टरसे तरक हुए वन समस्त खंडीको जोड़ देने पर (९८+१४७+९८=१४१) सीन की तासील चंद्र हो जाते हैं, जो कि मधेक एक एक प्रतराहुसमान हैं। मनपत्र इस मकारक्षे ि छोकरा मनाच १४१ घनराठ निरुक्त भाता है।

्एत्य . पञ्जवद्वियपरूरवणा युच्चदे . । सत्याणसत्याण-वेदणं-कसाय-<del>वार्यक्रिः</del> उववादगदमिच्छादिहीहि अदीदेण वहुमाणेग च सन्वलोगो फोसिदो । विहस्विदेशस

वेउन्त्रियसप्राधादगदेहि यद्दमाणे काले तिण्हं लोगाणमसंत्रेज्जदिमागो, विविधकेसर संखेज्जदिमागो फोसिदो । अङ्गाइज्जादो असंखेज्जगुणं खेर्च फोसिदं। एत्य जेनस्मार खेतमंगो । अदीदेण अह चोहसमागा देखणा । तं जघा- छोगणार्छ चोहस खंडे इसि

मेरुम्लादो हेट्टिम-दो-खंडाणि उवरिम-छ-खंडाणि च एगहे कदे अह चोइसमामा हेंसि। हे च हेट्टिमजीयणसहस्सेणुणा होंति । सासणसम्मादिद्दीहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंसेज्बरि

भागों ।। ३ ॥

एदं सुचं मंदपुद्धिसिस्सपंमालणहं खेचाणित्रोगद्दि उचमेत्र पुणरित उर्ब, अरी दाणागदवट्टमाणकालविधिदृखेचेसु चोइससुणद्वाणणिवदेसु पुच्छिदेसु तस्त्रिससम्बद्धानम सण्डुं वा दु-कालवितिद्वश्चेचपरूवणं कीरदे । सत्याणसत्याण-विद्वात्वित्सत्वा<del>व नेत्व</del>

अब यहांपर पर्यायार्थिक नयसम्बन्धी प्ररूपणा कहते हैं —स्वस्थानस्वस्थान, विक संमुदात, क्यायसमुदात, मारणात्विकसमुदात और उरवाइ पशात मिरणाहरि अवि सतितकाल स्रोट यतमानकालकी अपेदा सर्व लोक स्पर्ध किया है। विहारकास्वस्थान स्रोत

क्षेत्रातुयोगद्वारमें कहा गया ही यह सूत्र मंद्रुदि शियों के संमालने के लिए किर रहा गया है। अपवा, मृतकाल, अविष्यकाल और वर्तमानकाल विशिष्ट तथा बीहर हुर स्यानीसम्बन्धा क्षेत्रीक पूछने पर उस शिष्यके संदेह पिनाशनार्थ भूवकाछ और मिल्बाई, इन दो कारोंसे विशिष्ट यर्तमानक्षेत्रकी प्रकरणा की जा रही है। स्वस्थानस्वस्थान, fest ६ डाजादनजनवर्षातिकोन्द्रसाहंक्त्रेयमानः अही ह्यादव वा चतुर्दहनामा देवोनाः ६ *व. वि. ६, ६*०

येति। यक्तसमुदातगत मिण्यादि जीवाने चतमानकालमें सामान्यलोक आहि तीन केर्बा असंच्यातयां माग और तिर्वेग्लेकका संच्यातयां माग स्पर्धा किया है। तथा अशाहित्व असंबंधातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहांपर अपवर्तना क्षेत्रप्रक्रपणांके समान जानना बाहिं। विहारवास्त्रस्यान और यैकियिकसमुदातगत मिध्यादि आयोंने मतीतकालकी मपेशा देखें (इ.छ कम) आठ यटे चौद्द (ही) राजुक्षेत्र स्पर्शित्या है, वर इस प्रकारसे हैं - हो इनाहरू चीहृह खंड करके मेहप्यतिक मूलमागले गांचेके दो खंडोंकी और ऊपरके छह बंडाकी प्रान करते पर बाठ परे चीदह ( र्मु ) माग हो जाते हैं । ये बाठ परे चौदह राहु तीतरी पृथि मीचेक एक हजार योजनीत हीन प्रमाण होते हैं, इसीलिए इन्हें 'देशीन 'कहा है। सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लेकका असंस्पालन माग स्पर्श किया है ॥ ३ ॥

कसाय-वेउन्तिय-मार्गितिय-उववादगोरीह चदुण्हं रोजायममुंखे अदिमाणो कोचिदी । माणुससेतादो असंसेच्जागुणं सेतं फोसिदं । प्रथ कारणं पुन्तं व वस्तवं ।

अद्भ वारह चोदसभागा वा देखणा ॥ ४ ॥

सासणसम्मादिहीहि वि पुन्वसुचारी अणुबहदे । अदीदकाललेचपदुष्पायमहिमदे सुचमागदं । तं कथं गम्बदे ? अट्ट बारह चोह्समागण्यहाणुववचीदो। जेलदं देमामासिग-श्वरं, तेणेदस्स पज्ञवद्विषपह्त्वणा पज्ञवद्विषञ्चणाणुग्गदद्वं सीरदे । तं बदा- मन्दान-सत्याणगरेहिं तिण्हं लोगाणमसंखेजनिद्मागो, तिरियतीगस्म संखेजनिद्मागो फोविदी । अहारज्जादी असंबेज्जगुण । अदीदसत्याणखेत्रस्माणयणविधाणं बुन्यदे । तं जपा- रूप ताव विरिक्खसासणसत्याणखेर्च मणिस्सामा । वसजीवा लागणाठीए अन्मेतरे चेर होति. णी बहिदा'। तं बदो वब्ददे ? 'अह चोहसमागा देखणा ' वि वयदादी । तदी शन्त्र-

पास्वस्थान, वेद्नासमुद्धात, क्यायसमुद्धात, पैत्रिविक्समुद्धात, मारकान्त्रिकसमुद्धात बीर दपपाद, इन पद्देशी माप्त सासाइनसम्बन्दि अधिन सामान्यतीक माहि बाद शाबादा मसंक्यातवां भाग स्थर्श किया है। तथा मानुवहेरबंसे मसंक्यातगुणा क्षेत्र रण्यं दिया है। यहांपर कारण पूर्वके समान ही कहना चाहिए।

सामादनमन्पार्टीट जीवीने अवीवकालकी अपेक्षा इक्ष कम माट कटे चौदह बाय

वया इत कम बारह बटे बीट्ह मान प्रमाण क्षेत्र इपर्त किया है ॥ ४ ॥ इस समर्मे 'सामाइनसम्बन्धियोंने' इस व्यक्ती पूर्व गुक्ती क्षेत्र होनी है। वह सुत्र मठीतवालसम्बन्धी क्षेत्रके सनिवादन करनेके लिय सावा है।

र्वका-यह सूत्र अतीतकालसम्बन्धी क्षेत्रकी प्रकरणांक तिए आया है. वह केल জাৰা ই

समापान-माठ बटे बीरह भीर बाहह बटे बीरह मार्गीकी प्रकार अन्यक बढ बन मही सकती है, बता इस बान्यपानुव्यक्ति जाना जाता है कि यहाँ वर बर्नामकाक राज्याची क्षेत्रका प्रतिपादन करना मधीए है।

वृक्ति यह त्य देशामहोत है, इसकिए इसकी वर्षायाधिकमदसाकरी प्रक पणा पर्यायाधिकत्रवयाले शिष्योके अनुष्यके शिष की जाती है। बर इस प्रकार है-व्यवधानव्यवधानपद्देश प्राप्त सामाद्वसामाहोष्ट्रयोजे सर्तातवाक्ष्में सामान्यद्रोक स्टार्ट होड सोबोंका ससंस्थातमा भाग और तिर्यस्तोकका संस्थातमा भाग राश विया है। रूपा महर्ष क्षेत्रसे असंस्थातगुणा क्षेत्र क्यरी किया है। अब असीसवाहसम्बन्धी क्यस्टावकक्ष्यातक्ष्य निवासनेका विधान कहते हैं। वह इस प्रवाद है-असमेंसे एटसे निवंद सामापुरकारण है वीं वे वहत्यावरवरयावक्षेत्रको करते हैं। बस्त्रीय कोववादीके श्रीतर ही होने हैं, बचर करें शंदा-पर वेसे जाता !

इ अहित ' वहिन्दा ' देति दामः ह

पुरुव्मंत्रे सन्यत्य सासमा संभवति । तसजीवविराहिदेस असंकेज्वेस स्वरेष 🕶 सामना परिष' । वेरियवेतरेदेवेहि थिनाणमरिष संमत्रो, गत्ररि ते सत्याणस्या व 🎮 निहारेन परिनद्वादो । तं खेचं तिरियलोगपमाणेण कीरमाणे एगं जगपरां पुरो 🕶 मानदमानेहि संसेड्यक्वेहि संडिप लद्धं रज्यपदरन्दि अविषय संसेड्येगुरेहि गुण

टिरेपडोपस्य संसेज्बदिभागं होद्ग संसेज्बंगुलगाहल्लं जगपदं होदि। संबद्दि जोद्दियसासगर्सम्माद्दश्चितत्याणसेवं मणिस्सामा । तं बदा- बंद् मंत्र, वे म्या । स्वयातमुद्दे चतारि चंदा, चतारि स्ता । घादरसंहे पुष पुष

भंदगुरुवा । कृत्योद्यमुनुदे बादाल भंदगुरुवा । योक्सरदीयदे बाहबरि भंदगुरुव मानुमेन्द्रामेनारी बाहिरपंतीय चोहालसदमेचा । तदी चवारि रूपवन्तरं कार्व वेर

मनापान — "सामाइनसम्बन्धाः जीवाने भतीतकालमें देशीन बाड को बेंग क्षण्यान केन नार्र किया है ' इस सून वसत्ते जाता जाता है कि नवजीय कोक्स्पी क्षेत्रम की गरने हैं. बाहर नहीं। दण वद राषुकारके भीतर सर्वत्र सामादतसम्बन्धि जीव संग्रव है। निर्मेण

बेरच कर है कि चनार्जनों शिरदित (मानुगोत्तर भीर क्यपेयम पर्वतक मानवर्गी) वर्व कराज शहरीये नागारमणकराष्ट्रि तीय सही होते हैं। यापि पैरमाय रलनेगाव शाल हेर्डे हे हुए। हरण बारे हे जाये गये जीवोदी यहाँ संतायता है, हिन्दु है करण क्टम्प प्रकार प्रमान करी बहुताते हैं, वर्गीकि, इस समय वे विदारकामे परिवार हो रहे इन के वर्षः निर्देश्योत्तवे व्याननी करनेवर, यक सामय व विदायकार पारण स्थानना वर्षे क्रमण्ये खाँदि वरेड हो। हरू मार्ग, उसे शाह्यत्वरासि निकाल करके पुत्र संस्थात स्व के से कुका बरेनेक निर्देशका मंत्रानयां माग होकर संव्यान मंगुर बाहणां म

Barbar Grar E 1 सन काकारमध्यान्ति प्रवासिती देवीले क्वणातक्वामात्रभेत्रको बहुन हैं। वह वि क्षण है - कार्यान में तो बल्ट् भीर ही शर्य है। अनुसान प्रकास मान अन्य बहुत है कि कार्य है। अनुसान कार्य है कि कार्य है। क्षण्य क्षेत्र भाग्येन्य कृते है। कुष्यार्जागार्थने बदलत क्षत्र न्था है। बाताद्वसन्तर प्राप्त कृत्य क्षेत्र भाग्येन्य कृते है। कुष्यार्जागार्थने बदलत क्षत्र नक्षत्र वदलत सूत्री है। बात्तीन

e print bas der abbergumbas eraufdes uteret ift a f 414 9.6 च. इ.इ. अवकारण व्यव कंटानिवाद प्राप्त व ' व्यवस्थित है व हि की अववा वीव है। है।

के प्रभाग करणबंद करहर परिव करने विकास कराने व कर्नार्व के हार्य है है है Rating Caracter Caracter accept (\$2.20) ALL SON EREGING DE BOSCHENSHIT Johnest Beitell auffen derfinet.

.,

• [

i

5 1

ł

जान बाहिरमष्ट्र पंतीओ गदाओ नि । तदी समुद्दम्भेतरपटमप्तीए नेसद् अहासीदिमेचा । तदी चदुरूबस्महिषे काद्म शेदल्वं जान परयतपन्नाहिरपंति चि' । एवं पेद्वलं जान सर्यभूरमणसमुद्देर नि । बुक्तं च-

> चंदाहरूच-महोहे चेब णबखत-तारक्वेहि । द्रमुण-द्रमुणेहि णारंतरेहि दुवगो तिरिक्वोगो' ॥ २ ॥

एदाणि सन्बिक्साणाणि मेलाविदे संसेज्जपदरगुलेहि जनपदरिन्ह भागे हिदे एग-

प्रताम सन्वास्त्राणाण मुलावद संस्कृतवद्शुलाह अगवदशम्ह माग हिंद एम मागमेचाणि विमाणाणि होति । पुणो ताणि-

रीलेस चाहिरी पंकि (पल्प)में पकती चयालीस चन्द्र और रतने ही सूर्य हैं। इससे आगे बार संख्योको मेरेल करके, अर्थात् चार चार बढ़ाते द्वर बाहरी मार्ट्या पंकि आने तक से जाना चाहिर।

विदेषार्थ— पुष्करार्धमीयसे ५० हजार योजन माने जाकर ज्योगिर्महरूकी मयम पांदे या परुष है, बहांपर खाद्र भीर सूर्य की संक्या १४४, १४४ है। उससे माने एक एक हाज भीजन माने माने जाकर सात बरूव मीर हैं, जिनपर कि सन्द्र और सूर्योकों संक्या ५, ४ बहुती जाती है, मर्थान बहांपर ममदान १४८, १५२, १५६, १६०, ११५, १६८, १५२ सन्द्र या दनने हैं। सूर्योदी संबंधा हो जाती है। इस प्रकारके बरुव स्वयम्भूरमणसमुद्र तक मयस्थित हैं।

समसे भागेके समुद्रकी भीतरी पंकिमें दो सी अदाभी चाद वा रतने हैं। पार्ट हैं। वार्ट हैं। हैं। वार्ट हैं। हैं। वार्ट हैं। हैं। वार्ट हों। वार्ट हों। वार्ट हों। हैं। वार्ट हों। वार्ट हों। हैं। वार्ट हों। हैं। वार्ट हों। वार्

चन्द्र, बादिख (रार्थ), प्रद, मसत्र और तारामाँकी दूनी दूनी संज्यामाँसे निरम्तर तिर्पेग्लोक द्विपर्गात्मक है ॥ व ॥

ये सर्व (बाद्र वा सर्व) विमान पबट्टे भिलाने पर संबदात अवसीमुलांसे अगवतस्य माग बेने पर वक भागममाण विमान होते हैं। पुत्रा वे सब---

र मणुक्यांकितारो पत्याक्षास्त्रीयवार्षं गाम पायवस्य है दि । क्यो यो वर्षस्येकस्वास्त्रास्त्रीर्थं विद्यास्त्रियांक्षित्राम् विद्यास्त्रियां कर्ष्यास्त्रास्त्रीर्थे । असी कर्ष्यास्त्रास्त्रास्त्रीर्थे कर्षास्त्रास्त्रास्त्रीर्थे विद्यास्त्रियां कर्षास्त्रास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां विद्यास्त्रीयां व्यास्त्रीयां व्यास्त्रास्त्रीयां व्यास्त्रीयां व्यास्त्रीयां विद्यास्त्रव्यवस्त्रां विता रेष्टियेत्रे

है कहें बहु है हि बचा कम में बारेंद्र बहुद एम्पानि । बदीत कम दू वस जाहा दिवतका होते. बहुदमा है पुरेहि दिस्तकवेणकरणवरीहिंदै सिदान । हैहिस्सीह कई सम्म बदम्ब सेम्पेटन है हिन्दा के हुए हैं ( भड़ासीति च गहा भड़ावीसे हु इंति नक्तना । ' एगससीपरिवारो इसो ताराण बोच्छानि । ) द्याविद्वं च सहरसं णवयसदं पंचसत्तरि य हाँति ।

एयससीपरिवारो ताराणं कोडिकोडीओ । र ॥ एदाहि ताराहि चंदाइच्च गृह-णक्खतेहि य पंचडाणहिदं परिवाडीए गुविव के विदे जोदिसियसम्बिमाणाणि होति । तिरियलोगाविद्वसम्यलवदाणं सपरिकारणना

यणविहाणं चत्तरस्यामो । तं जहा- जंब्दीवादिपंचदीवसमुदे मोत्ण तदियसहरूकी काद्ण जाव सर्यभूरमणसमुद्दो नि पदासिमाणयणिकिरिया ताव उनदे- तिरवहरूनि

( एक चन्द्रके परिवारमें ( एक स्पंके मतिरिक्त ) मठासी बहु और महर्षक मन होते हैं, तथा तारीका परिमाण आगे कहते हैं ॥) पक चन्द्रके परिवादमें छपासठ हजार नी सो पवहत्तर कोक्से

६६९५५००००००००००० तारे होते हैं ॥ ३॥ . .

इन ताराओंसे, तथा चन्द्र, सर्व, प्रह और नश्चीसे पांच स्थानपर अविव उपर्युक्त चन्द्र विमानसंवदाको परिपारी कमसे गुणितकर मिछा देनेपर जालिक के सर्व विमान हो जाते हैं। विशेपार्थ — अमी ऊपर जो चन्द्र-विम्बॉकी संच्या निकाल आप है, उसे सं

रधानीपर स्थापित करना चाहिए। पुनः चूंकि एक चन्द्रके परिवारमें एक स्पं, स्कासी म संद्वारिस नक्षत्र और कंपर बताये गए प्रमाणवाने तारे होते हैं, स्तानिए इनसे कमशा वी स्थानीयर सबस्यित चन्द्र संस्थाको गुणित करनेपर उनका प्रमाण इस प्रकार मा जाता

चन्द्रसंख्या, सूर्यसंख्या, प्रदसंख्या, नश्चत्रसंख्या, 

सद तिर्थेग्लोकमें सबस्यित सपरिवार सकल चन्द्रोंके प्रमाणको निकालनेका विका कहते हैं। यह इसं प्रकार है— जम्बूदीपादि तीन द्वीर और अवायसमुद्रादि हो समुद्रात पांच द्वीप समुद्रोंको छोड़कर नृतीय समुद्रको आदि करके स्वयम्मूरमणसमुद्र आहे हु

२ वन्त्रीयद्वारीका गरुरिस्का तार कोवकोवान । कन्निह सहस्वापि य मनतवरान्त्राति ही । वि हा. १६२.

१ गापेचं प्रतिषु नोपटम्पते, किन्तुवारायया स्वास्त्रा विश्वसमानिताद्दीपृता । इवं गायोहारायः जारुपकारते । / मार्के प्राचीन हर् सूर्वेदक्र तातुपकम्यते । (अभि. स. कोष, चन्द्रसम्दे )

६ वागिय रामसंकटिदं किन्नं पंचरामसंगरिदं । चंदारित्रचं विटिदे बीरसर्विशां<sup>त हमाति ।</sup> १९९ ४ इत आरन्यायेदवः संदर्भः अमदन-स्योतमारिसद्योत्यादि आर्थाय्यसंबाद्वास् विशेष्यस्य रिमी R. C. 111 श्रीकाविकारगतेनानेन प्रदर्शनेन प्रायः सम्बद्धः समानः "

गच्छो पत्तीसः चउत्पदीवे गच्छो चउसट्टी, उवरिमसमुद्दे गच्छो अहावीसुत्तरसयं । एवं इगुणकमेण गन्छा गन्छति जाव सर्वभूरमणसमुदं ति । संपित एदेदि गन्छिदि पुघ गुणिक

माणरासिपस्वणा कीरदे । तिदयसमुद्दे वेसदमहासीदं, उविरामदीवे तची दुगुणं । एव दुगुण दुगुणक्रमेण गुणिञ्जमाणशसीओ गच्छेति जाव सर्वभूरमणसमुद्दं पत्ताओं सि । संपिंह अहासीदि-विसदेहि सन्वगुणिन्जमाणरासीओ ओवष्ट्रिय रुद्धेण सग-सगगन्छे गुणिय

अहासीदि वेसदमेव सन्वगन्छाणं गुणिउज्ञमाणं कायन्त्रं । दवं कदे सन्वगन्छा अण्णाणां पेन्सिर्ण चरुगागकमेण अविद्वरा जादा । संपद्वि चत्वारिमादि कार्ण चरुरुतरकमेण गंदसँकलणाए जाणपणे कीरमाणे पुन्तिक्लगच्छेहितो संपहियगच्छा रूकणा होति, दुगुण-जादहाणे चचारिरुवबद्दीए अभावादी । एदेहि गच्छेहि गुणिन्जमाणमन्दिसमघणाणि घउ-

प्रमाण पत्तीस, चतुर्थ हीरमें गटछका प्रमाण चींसड, इससे भागेके समुद्रमें गटछका प्रमाण एकसी महार्रस होता है। इस प्रकार हुने हुने भागते गच्छ स्वयम्भूरमणसमुद्र तक बढ़ते इप चले जाते हैं। अब इन गच्छोंसे पृथक् पृथक् गुण्यमान (गुणा की जानेवाली) राशि-योंकी प्रक्षणा करने हैं। ततीय समुद्रमें गुण्यमानसारि दो सी अठासी है, उससे उपरिम हीपमें गुण्यमानराशि इससे हुनी (२८८×२=५७६) है। इस प्रकार हुने हुने क्रमसे गुण्य-मान राशियों स्थयम्मूरमणसमुद्र मात होने तक दुनी होती हुई चली जाती हैं।

सिंहिमादि काऊण दुगुण-दुगुणकमेण गच्छंति जाव सर्यभूरमणसमुदं वि । प्रणे। गच्छसमी-इनके पिमानोंकी संख्या निकालनेकी प्रक्रिया पहले कहते हैं- इतीय समुद्रमें गण्छका

उदाहरण-२८८, ५७६, ११५२, २३०४, ४६०८, ९२१६, १८४३२ इत्यादि । (गुक्य-मानसदियां ) अब दो सी घटासीसे सभी गुण्यमान शाहाओंको अपवर्तितकर खण्यराशिसे अपने अपने गटछोंकी गुणित करके दो सी घटासीको ही सर्व गटछोंकी गुण्यमानराशि करना

चाहिए। वेसा करनेवर सर्व गव्छ परस्वरकी अवेकास चतुर्गण-क्रमसे अवस्थित ही जाते हैं। 

इस्यादि । बहांपर अथम गध्छ ३२ से द्वितीय गच्छ १२८ चीगुणा हो गया है । काब खारको भादि करके चार चारके उत्तरश्रमसे वृद्धिगत संकलनके निकालनेपर पहलेके गवड़ोंसे इस समयके गव्छ यह कम होते हैं, क्योंकि, दुगुणे हुए स्थानपर खार रूपकी वांत्रका समाव है। इन गण्छांते गुणा किये जानेवाले मण्यमधन, चींसडकी साहि करके

तुगुण तुगुणमामसे स्थमम्भूरमणसमुद्र तक बढ़ते हुए चले जाते हैं।

ŧ

करण**हुं** सच्चगच्छेमु एरोगरूवपश्चुणों कायच्ये । एवं कार्ण चउमहरूथेहिं मित्रि घणाणि ओवड्डिय लंद्रेण सम-सगगच्छे गुणिय सन्वगच्छाणं चउमहिरुवाणि गुणिक माणत्त्रणेण ठवेद्व्याणि । एवं कदे बहुदुरासिस्स पमाणं युच्चदे- एगस्वमादि बहु गच्छं पडि दुगुण-दुगुणकमेण सर्थभूरमणसमुदे। ति गच्छरासी बहिरी होदि। संगी

विशेषार्थ-गच्छकी मध्यसंख्यावर जो वृद्धिका प्रमाण आता है, उसे मध्यमक कहते हैं। यह घन उत्तरोत्तर दुगुणकपते बढ़नेवाले गर्न्छोंमें दुगुणा होता जाता है। हर्ल समुद्रका गच्छ ३२ है। प्रथम स्थानपर तो चारकी यृद्धि होती नहीं है, अनव्य उसे छोत्र जो शेप ३१ स्थान बचते हैं, उनमें सोलह्यां स्थान मध्यम रहता है और उसकी शुर्वि प्रमाण ६४ होता है। जैसे-

₹, ₹, ¥, ¥, 4, ξ, υ, c, 5, ₹•, ₹₹, ₹₹, ₹¥, ₹<sup>1</sup>, ४, ८, १२, १६, २०, २४, २८, ३२, ३६, ४०,४४, ४८,५२, ५६, ६०, الاعلى والاقر والاقر والاقر والاقرار و \$1, 30, 28, 26, 20, 28, 24, 28, 28, 22, 28, 20, 15, 16, 14,

इस कमसे गच्छके मध्यवर्ती सोलहर्षे स्थानपर मृदिका प्रमाण ६४ बाता है। इसिंट तृतीय समुद्रसम्बन्धी मध्यमधन ६४ है। इसी प्रकार आगे के द्वीपका गच्छ ६४ होतेसे उस मध्यमधन १२८ होगा, जो वयने पूर्ववर्ती मध्यमधन ६४ के प्रमाणसे दुगुणा होता है।

प्रकार आगे आगेके द्वीप और समुद्रोंका मध्यमधन दुगुण प्रमाणसे बढ़ता जाता है। पुनः गच्छोंके समीकरणके लिए सभी गच्छोंम एक एक इपकी हाति (कर्म

करना चाहिए। ऐसा करके चींसड क्योंसे मध्यम धर्नोको अपवर्तित कर छाउताहीस वर्ग अपने गच्छोंको गुणा करके चौंसठ संख्याको सर्व गच्छोंकी गुण्यमान राशिक्ष्पते स्वापि करना चाहिए ! ऐसा करने पर बड़ी हुई राशिका प्रमाण कहते हैं एक हरको मा करके, यक एक गच्छपर दुगुण दुगुण कमले स्वयम्मूरमणसमुद्र तक गच्छराशि बहुती \$ चर्ला जाती है।

## उदाहरण-मध्यमधन ६४:

(१) १४ × ११ × ६४ = १९८४ उत्तरधन, अर्थात् कुछ सुद्धिका प्रमाण। इस उत्तर पनको २८८ × ३२ = ९२१६ में मिछा देनेसे एतीय समुद्रसम्बन्धी समस्त सन्द्रोडा प्रण (९२१६ + १९८४ = ११२०० सर्वधन)

१ प्रतिषु 'पदसेण 'इति पाठः ।

२ विञोद्दरक्षात्री अत्र अप्रदोऽपि च 'बहुद 'स्थाने 'शिव 'दि पाठः ।

एवं हिद्दंसकलाणमाणपणं पुरूषदे- एक्त्याहिषजंद्रीवछेदणएहिं परिहीणराजुल्छेदणाओ गान्छ कार्ण जादि संकलमा आणिजजादि तो जोदिसिपजीवासी ण उपणजादि, जगण्दरसा वेष्ठपपणगुलसद्वरगमागहाराणुववणीदि। वेग रज्जुल्छेदणातु अप्येति वि तप्पान्नेतमाणं संसेजजरूराणं हाणि काळम गप्छे। ठवेदच्ये। एवं कदे तादिपसमुद्दे। आदी ण होदि वि णासंकणिजज्ञं, सो चेर आदी होदि, सर्वभूरमयसमुद्दस्य परमागसमुप्पणगरज्जुछेदणय-सलागाणमान्यणकारणादों।

गनागपपकारणारा । सर्वभूरमणसमुद्दस्त परदो रज्जुच्छेदणया अतिष चि छ्दो णज्बदें! बेछरपण्णं-

(२) \\ x ११ x १४ = ८०६४ उत्तरधन र इस उत्तरधनको ५७६ x ६४ = १९८६४ में मिला देनेसे चतुर्ध द्वीवसम्बद्धाः समस्त चन्द्रीका प्रमाण हो जाता है—

( ३६८६४ + ८०६४ = ४४९२८ सर्वयन ) (१) भेर्भ × १२७ × ६४ = ३२५१२ उत्तराजन १इस उत्तराजनो ११५२४१९८=१४७४५६

में मिला देनेसे चतुर्थ समुद्रसम्बन्धी समस्त धन्द्रीका ममाण हो जाता है--

(१४७४५६ + ३२५१२ = १७९९६८ सर्वधन) इसी क्रमते मानेके मलेक झीप और सनुदक्त स्वयंभूरमणसमुद्र तक उत्तरधन एवं

रेशी क्रमस आगके प्रत्येक द्वार आर समुद्रका स्वयम्द्रमणसमुद्र तक उत्तरधन प्रय सर्वधन निकालते जाना खादिए।

या इव प्रधारित व्यक्तिय नंदरुजीके निकालके प्रकारको करते हैं—एइ का प्रोप्त जम्मुरीयके भार्यक्रित परिकार सार्क्षक अर्थक्तिको गच्छाराति बना करते गाँद संकल्पाति निकाली जाती है, तो ज्योतिष्य अर्थवाति नहीं उपया होते हैं, क्योति करनेपद जगवजरका दो सी एपन एएजीएको वर्षामान भागवार नहीं उत्या होता है। रस्तित्य राष्ट्रके अर्थकदेशित तालाधीय अर्थ भी संक्यात करांडी हानि (कर्मा) करके गच्छ क्यायिन करना वादिया देखा स्टेनर मुनीय बसुद्र भारि को होता है, रसी मार्गका नहीं करना वादिया देखा स्टेनर मुनीय समुद्र भारि होता है, रसी मार्गका नहीं करना वादिया देश स्टामिन विशेष समुद्र भी स्टेनर कारण दशरम्यमानसङ्कत परमागमे अर्थन होनेपाले राष्ट्रके सपैप्टीइस्टरम्पी राष्टा-कारण दशरम्यमानसङ्कत परमागमे अर्थन होनेपाले राष्ट्रके सपैप्टीइस्टरम्पी राष्टा-क्योजित भाग है।

र्गुका—स्वयम्भूतमालसुदके परमागर्मे राजुके मर्थन्छेद होते हैं, यह कैसे जाता ? समाधान—प्रयोतिकदेवींका प्रमाण निकातनेटे टिप दो सी छप्पन स्ट्यंगुरुके

<sup>્</sup> હાને કુ વરિદેશક હોવું દેવસ્થારિયા વંદ ર દેવસો સેક્ટરા વરદ્વારોનો ન લખેટે ક્રું કિસ્ટુલ ક્રેડિકેલમોમો સ્ટારિયા કરે વચ્ચો ! હોર્દાયોલ્ટિયા અસ્ટ્રુલેય વિદેશ હ કિ. શા. ૧૫૮-૧૫૧. ૧ ક્રાર્સ ' લક્ષ્માયલાવલયકાયમાં ' ભાવાદિક ' લક્ષ્માયલાયકારમારો ' કૃષ્ટિ વાટા !

गुलसद्वम्ममुचादो<sup>र</sup> । ' जिचयाणि दीव-सागररूवाणि जॅब्द्शवछेदणाणि च स्वाहिगानी तिचयाणि रज्जुछेदणाणि ' ति परियम्मेण एदं वक्लाणं किणा विरुद्धादे है एदंग म विरुद्धदि, किंतु सुचेण सह ण विरुद्धदि । तेणेदरम वक्षाणस्य गर्गं कापनं, ब परियम्मस्सः तस्स सुचविरुद्रचादो । ण सुचित्ररुद्रं वक्त्याणं होदि, अश्यसंगादो । 🗺

वर्षप्रमाण अगम्तरका भागद्दार यतानेवाले स्वते जाना जाता है कि स्वयम्भूरमणसमुर परमागर्मे भी राजुके अर्थच्छेर होते हैं।

- शैंका-- 'जितनी द्वीप और सागरोंकी संख्या है, तथा जितने जम्मूद्वीपके अर्थन्त्रे होते हैं, एक अधिक उतने ही राजुके अर्थच्छेद होते हैं ' इस प्रकारके परिकर्म सुबके सार

यह उपर्युक्त व्याख्यान क्यों नहीं विरोधको प्राप्त होगा ? समापान—मले ही परिकर्म सुत्रके साथ उक व्याख्यान विरोधको शांत हो<sup>ने</sup> किन्तु मस्तुत स्वके साथ तो विरोधको मान्त नहीं होता है। इसछिर इस प्रन्यके व्यास्थान को प्रहण करना चाहिए, परिकर्मके व्यास्थानको नहीं, क्योंकि, वह व्यास्थान स्व विरुद्ध है। और, जो सूत्र विरुद्ध हो, उसे व्याख्यान नहीं माना जा सहना है, बन्य

शतिप्रसंग दोप प्राप्त होता है। विशेषार्थ — प्रकृतमें ज्योतियी देवोंकी संख्या निकालनेके लिए द्वीप सागरीकी संख्या

शात करना धवलाकारको व्यावस्थक प्रतीत हुमा। द्वीप-सागरीकी संख्या अन्य आवारी उपदेशानुसार राजुके अर्थच्छेरोमसे ६ तथा जन्मूद्दीपके अर्थच्छेर कप करनेसे प्राण होते र्ष, मेरु व जम्बूद्वीप आदि प्रथम पांच द्वीपसमुद्रीम जो राजुके छह अर्थाछर पह हैं वे यहां सिमिलित नहीं किये गये, फ्याँकि, इन द्वीप-समुद्रांकी चरद्रगणना पृष् की गर है। किन्तु घवलाकारका मत है कि यदि इतना ही द्वाप-सागरीका प्रमाण विव जाय, तो उसके बाधारसे निकारी हुई ज्योतियी देवोंको संख्या २५६ के मागहरसे निकाली हुई संख्यासे विषम पहती है ! उसके वैषम्यको टूर करनेके कि घवलाकारको यह आवस्यक प्रतीत हुआ कि द्वीप-सागरीको संख्या निकालने वि

राजुके अर्थ-छेर्नुमेंसे अम्बूडीपके अर्थ-छेर्नुमें अतिरिक्त ६ ही नहीं, किन्तु हार्थ स्थिक संक्यात श्रेक श्रीर कम करना चाहिए। इसपरसे झात होता है कि केवड है बंद कम करनेते हीप-सागर्रोकी संख्याहारा ज्योतिर्यादेशों का अमाण निकडेगा, वह स्वर्ध भागहारद्वारा माप्त संख्यासे बढ़ जाता है। छड्से मधिक संस्थात अंकांके कम करनेमें घपलाकारने हेतु यह दिया है कि

स्ययम्मूरमणसमुद्रसे परे जो पृथियी है, यहां मी रामुके अर्थस्प्रेत पहते हैं, किन्तु वा क्योतिषी देव नहीं है। इसलिए यहाँके संदयात अर्थच्छेत् भी उक्त गणनामें इन इस

र खेवेच वरस्त देवचणांत्रकदवनाविधालेच । जी.द. स. ५५, मिदिमि हेदिले देवदणांत संदर्भवीर 1 में हदं हो राही बोदिविवसुगण स्वामं 🛭 ति. प. ७, १०.

जोर्सिया णस्यि चि क्रो णव्यदे १ पदम्हारो चेत्र सुत्तारो । एसा तप्पाकोगासंरोज्ज-रूनादियजंषु (त्रिक्टेरणयसहिददीवसायस्टामेसरम्जुन्छेदपमाणविश्वसाविही ण अण्णाहिर-क्षेत्रदेसपरेपराणुमारिणी, फेरले तु तिलोयपण्यतिस्वाणुसारी जोतिभियदेवसायहायदुर-प्पार्यसुत्तारकंतिज्ञिषयलेण पयदयग्वसाहणहमम्हेहि पर्हावद्ग, प्रतिनियवस्त्रायहम्बयक-विमृभितगुणप्रतियम्प्रतियद्वासंप्रेपायिकमावहायकालोपदेशम् आयत्वत्तासलोहसंस्थानी-परस्वयद्भा । तदो ण एस्य इद्वित्यमेवेनि एपंतरिरंगरोण असग्गादे। कायन्वी, परस्तुकः

भावरणक है। इस विधानसे परिकर्मके 'अतिवालि श्विसागरकवालि' मादि कथनमें जो विरोध पहता है, उसके विवयमें प्रवासकारने यहाँ स्पष्ट कहा है कि उसके कथन सुरू विश्व सेनेसे माना नहीं है। किन्दु दृश्यभाणानुगममें उस विरोधका भी एक मकारसे परिहार क्या है। (क्यों सु. भाग, सुध ५, ए. ३१-३६)

र्शका - यहां, मर्थान् स्वयम्भूरमणसमुद्रके परभागमें अवे क्रिक देव नहीं है, यह

समापान-इसी स्थले जाना जाता है।

यह तारायोग्य संक्यान स्वाधिक जान्त्रीयके मर्ध-छेड्रींसे सदित डीवन्सागर्सेक स्वाध्याव स्वुक्तप्रकार सर्वच्छाड्डी प्रमाणकी वर्धभाविधि मर्थ भावार्थींडी उपयेगा वर्षस्थात्री मर्थ भावार्थींडी उपयेगा वर्षस्थात्री मर्थुवस्य स्वाध्यात्री मर्थुवस्य स्वाध्यात्री मर्थुवस्य कर्मियाले स्वाध्यात्री मर्थुवस्य कर्मियाले स्वाध्य स्वाध्यात्री क्षेत्री भावार्यको उपयोग्य स्वाध्यात्री क्षेत्री भावार्यको अवश्याव्यात्री स्वाध्यात्री स्वाध्यात्यात्री स्वाध्यात्री स्वाध्यात्यात्री स्वाध्यात्री

विशेषार्थ - यहां प्रवलकारने क्लान्त्रपूर्वक दार्शनको लिख करनेके लिख क्रिन विशेषतामाला उल्लेख क्रिया है, उनके करनेका मधियाय प्रमधाः निग्र मकार है --

(१) पहला इष्टान्त प्रतिनियत स्वाध्यये सावादनीय प्रत्यानवर्ती जीवोहे स्वेत्रयात सावहिकात्वक स्वत्यहें विवाद स्वित्रयात सावहिकात्वक स्वत्यहें विवाद स्वित्रयात सावहिक व्यवदेशका दिया है, जिल्ला स्वित्रयात सावहिक विवाद स्वीत्रयात स्वत्य सावहिक स्वत्य स्वत्य प्रति प्राप्त ए ५६ के सूच पात स्वीत् प्रति होता ए १ प्रदार उद्देशक व्यवदेशका प्रति प्रति प्रति होता है ' इस प्रतिकृत वर्ष वर्ष साथ प्रति प्रति प्रति होता है ' इस प्रतिकृत वर्ष वर्ष साथ प्रति प्रति प्रति होता है ' इस प्रति है दूप ' सम्बद्ध ' अपने प्रति होता है ' इस प्रति है इस ' सम्बद्ध ' अपने प्रति है इस ' सम्बद्ध ' अपने स्वत्य स्वत्य स्वत्य है हि स्वत्य प्रति है स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य है हि स्वत्य स्वत्

परंपरागत्रीवष्तस्स जुचिवलेण विद्याविद्वैमसक्षियचादो, अहिंदिष्सु पदरवेसु स्ट्रस्विक् प्याणमविसंवादणियमामावादो । तम्हा चिरंतणाहरियवकतागावरिज्वाण्ण एसा वि देश हेदुवादाणुसारिउप्पण्मसिस्साणुरोहेण अउप्पणमणउप्पायणहं च दरिसेद्व्या। तरे व इव संपदायविरोहासंका कायच्या चि ।

(३) घयलाकारने जिस प्रकार उक दोनों वातों को तात्कालिक करणानुगोनसका वालों में उल्लेख अपया, आवायों को उपदेश-परापराके नहीं मिलनेपर मी उक प्रकार स्थायलिक उन्हें किया है, उसी प्रकार से पहांपर मी करणानुगोन सकार के पहांपर मी करणानुगोन या आवाये उपदेशपर मरामें उपज्ञ नहीं होनेपर मी प्रतिनियत प्रशिवन के सलसे ये यह सिंद कर रहे हैं कि स्रृंगम्यूमणससुद्र के परभ गर्ने भी असंस्थात हो क्यारे उपस्थान के स्थायन स्यायन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन स्था

इसलिए यहांवर 'यह ऐसा ही है' इस मकार एकानत हठ पकड़ करके अवर मान नहीं करना चादिए, क्योंकि, वरम गुरुमोक्षी वरम्यरासे आये हुए उपरेशको गुरिके हुँ। भवषायं दिस करना मताक्य है, तथा भवित्यित्य बदायोंने छमस्य जीवोंके हारा उठावे व विद्यारा न करके यह मी दिशा हेतुवाद (त क्याद) के अनुसरण करनेवाले उपराम तिक्त मनुरोपस तथा अध्युत्पन्न शिष्य जनीके स्मुत्यादनके जिद दिखाना चादिए। इसिक्ट वर्गां सामान्यराज विद्यारा आध्युत्पन शिष्य जनीके स्मुत्यादनके जिद दिखाना चादिए। इसिक्ट वर्गां

<sup>(</sup>२) दूसरा दएन्त आयत-चतुरल होकसंस्थानके उपदेशका दिया है, दिल्क क्रिमिया समझनेके छिए क्षेत्रानुगम (इसी चतुर्य माग) के पृष्ठ ११ से २२ तक्क क्रें सिल्य। यहाँपर उद्वित करनेका प्रयोजन यह है कि घवटाकारके सामने विद्यान क्ष्म चुयोगस्वरण्या प्रातिक उद्वारा होते प्रतिक आकारका विचान या प्रतिक इक्क आकारका विचान या प्रतिक इक्क महीं मिछ रहा था, तो भी उन्होंने प्रतरसमुदातगर केवलीके क्षेत्रके साजनार्य कर्षों गई गायाओं के देखे हो के क्षाव्य कर्षों के देखे साजनार्य कर्षों गई का सावायां कर्षों के स्वाप्त क्षाव होते प्रतिक क्षेत्रक सावायां कर्षों के स्वाप्त होते क्षायत चत्रकार्य होते क्षायत चत्रकार्य होते क्षायत चत्रकार्य होते सावायां कर्षों का सावायां कर्षों के स्वाप्त सावायां कर्षों का सावायां कर्षों कर्या कर्षों कर्या कर्षों कर्षों कर्षों कर्या कर्षों कर्षों कर्षों कर्षों कर्षों कर्या कर्या कर्षों कर्षों कर्या कर्या कर्षों कर्या कर

६ अटिडू " विद्दाविद्व ", म त्रवी " विद्दावेद्व " इति पाटः ।

फोसगागुगमे सासगसम्मादिक्कोसगदक्षणं एदेण विहाणेण प्रतिद्यान्छं विश्तिय सर्व पढि चवारि स्वानि हार्य

777

अच्छीच्छा स्थाप १ स्थानमादिसंगुणमकोत्माधानीमच्छा । एदेण गाहासंदेश र्षेकलणाओं आणिय दोण्हें सकलणानं घणं काहून तिदेयगंकलने अवनिहें चंद्रिकेसना-गात्री उपान्ति । तात्री अहारससमसमिक्षिताराहि गुणिदे जादिवियानं सम्हर्तिन भाग ज्यात्वात्व । पात्रा ज्यात्वात्वात्वात्वात्व द्वारः व्यापः स्वतात्वात्रे स्वति । सामानिष्यं स्वति । सामानिष्यं स्वति । सामानिष्यं स्वति । सामानिष्यं ž: करर बताय गए इस विधानसं प्रमित गच्छको विस्त्रन करके प्राणेक एकके क्रार

, , कार पार गर्द कर परवार ग्रुपा करते । उनमेत एक कम करे, पुना माहिकका जार आरखा प्रकारत वृक्तर प्रश्वाद धुना करण अनुसार पक कर्म कर, जुना कार्यकरण संभितित करें, पुना पक काम ग्रिकारका माग है, तब हुटिएन शांति करका होगी है हम भाषां बहरत सुबंध संकलनसारियोंको निकालकर दोनों संकलनसारियोंका एक (रोह) ाण्यक्रम ध्वत तक्षणाधानामा भाषाधकर वाना तक्षणाधानामा ज्या १८१३/ काके इस राशिमेंसे तीवरी संकलनस्थिको यहा देने पर पान्नरिक्को सलाकार्य कण्य हो जाती है। वद्गहरण-गच्छ देश माहिधन ११२०० (गुनीय समुद्रका सर्वसंकतन), शर्व मीयसमुद्रांकी संख्या असंख्यान= १ (कास्पनिक)। Hed figured - 6 x 6 x 6 = 46! 46 - 4 = 45! 48 x 46400 = 46,400! हितीय संगठन - १ × १ × ४ = ६४। ६४ - १ = ६६, ६३ × ६४ ४ - १

युतीय संबद्धन — १×१×१=८। ८-१=७, ध×१४ १-१ स्थान संकालन दिशोप संकालन संशोध संकालन समान बाद सामानार । १९५२०० १९४४ - संशोध संकालन समान बाद सामानार । १९६० १९६० इस प्रमाणमें पहले बतार हुई प्रथम पांच श्रीप सगुद्दीलंशनी चंद्रीची संस्था सहित म महा है। हीं वहीं संख्या प्रथम वीच हाय-समूदीको छोड़कर बालेके लीच समुद्र का होन्येक ह प्रयक् निकासे हुए बंद्रोंकी संख्याके योगसे भागी हैं-

ولاده + ١٩٥٩ و + وعادوو - ووزمو ( فيما يو. ويهدون ) विकास महारहे कराय हुँ विद्यादिक को स्वाप्त के राज्य है। विकास के विकास के विकास है कि का स्वाप्त के कि के कि क विकास महारहे कराय हुँ विद्यादिक को स्वाप्त के विकास के विकास के विकास के विकास के कि को कि का स्वाप्त के कि का गर। विग्रेमिय अभी परते ओ एक बारका परिवार बनाया करा है, इसस्स रक विद्याप — समा पहल जा एवं चार्चा पारबार चनाटा चटा है, बसास रह इ. सूर्व, अञ्चासी यह और स्मृत्येस महाब, इसको जान हेनेपर (१०१०-१८०१८०)

e establishment and execute executes the Emerica Sector &



संखेजजरूबेर्दि गुणिय संखेजजपूर्णगुरुदि जाबिह्द जोहिसयरामी होहि। एहाणि जीहिं। देषुस्सेषगुणिदविमाणंज्मेतरपदरंगुरुदि गुणिरे जोहिनयस्थाणयुर्ज तिरयर्थणस्य छे जजदिमागमेषं होदि । णबरि देषुस्मयगुणिदविमाणंज्मेतरपदरंगुलाणि उस्प्रेर्धानाणि कहु पमाणगुरुद्धाणि कायञ्जाणि । उस्सेर्गुरुप्ताणि ति कर्ष णब्बदे ? अण्यहा जेब्र्सीर्ग जैब्र्सीबताराणमोपासामाबादो । अथवा एदाणि पमाणगुरुप्ताणि चेव । कर्ष पुण सम्बा ण, जेब्र्सीव-स्वयणसमुदेदि वे' अस्सिद्य अबद्वाणादो ।

एक सी अडारह होते हैं। इसमें ताराओंका प्रमाण जोड़कर उत्तरप्रदूर राशिश व विश्वकी दालाकाओंसे गुणा कर देनेपर समस्त ज्वेतियी देवोंके विमानोंकी राजाकार कि आती है।

उन्हें संख्यात घनांगुळींसे गुणित करनेपर सर्व ज्योतियां देवाँक विमानीस सम्ब स्रेत्र हाँ जाता है। स्वस्थानक्षेत्र हो संब्यात क्रमेंसे गुणा करके संब्यान घरांगुळीते अपूर्व करनेपर उपातिष्क देवाँकी यदि। हो जाती है। इस राशिको ज्योतिष्क देवाँक द्वार्यक्ष गुणित विमानोंके मोतरी अनरांगुळींसे गुणा करनेपर उपातिष्क देवाँक स्वस्थानवेर जाता है, जो कि तियंग्लोक संस्थातवेर मागमाय होता है। विशेष वान यह है हिर्दे हारोंक्के उस्तेषक्षे गुणित विमानोंक मीनदी अतरांगुळ, उस्तेयांगुळ हैं, देवा सनेह क उनके प्रमाणांगुळ करना चाहिए।

शका — ये प्रतरांगुल उन्सेषांगुल हैं, यह देसे जाता ?

समाधान-परि उन प्रतरांगुटाँको उत्तेषांगुळ न माना जायना, तो जन्तूर्ग भीतर अन्त्रहोपस्य तारागणाँके रहनेको अयकाश न मिल सकेगा।

भथवा, ये प्रतरांगुळ प्रमाणांगुळ ही हैं।

शंका—तो फिर ये अम्बूडीपमें कैसे समाते हैं !

समायाच - नहीं, पर्योक्षे, जानृहांव और लवणसमुद्र, इन दोनोंको ही <sup>आर्</sup> करके ये ज्योनिष्क विमान मंगरियन हैं। सर्थोत्, जन्मृहीय और लवणसमुद्र, इन ही क्षेत्रोंमें जन्मृहोयसम्हर्की ज्योतिषकविमान रहते हैं।

विशेषार्थ — जम्बूकीवसम्बन्धी दोनों चन्द्रोंके परिवारमें तार्सेकी संबंध कहा तिनास हजार नी सी पचास के हा को से कि तार्स के आधार्थ के कार्य के कार्य

वेतरदेवसासणसम्माइद्विसरपाणरोचं वि विस्थिलोगस्स संखेज्जदिमागमेचं होदि। [ {48 तं कर्ष है वितरदेवसानं हृतिय एवं क्षान्ह वेतरावासे संस्वेत्वा पेत्र वेतरदेवा हाँति वि

सोरेका स्पृष्ट धनफल $-rac{2}{8} imesrac{3}{6} imesrac{2}{6} imesrac{2}{40}$ । तथा अन्त्रसँगके समस्त तारोंका धनफल बपुल रुपते १६१९५ × १० " × २ - ९९२२ कोहाकोड़ी सनकोश तुमा।

तारागण शोषपीते ७९० योजन ऊपरसे समावर ९०० योजन तक अर्थात् ११० घोजन-बाहरण भाषातामें रहते हैं। (देखो त्रिलोकतार गाधा ३३२-३३४)। अतः एक लाख पोजन स्थालवाले जरहरीयके ऊपर ११० योजन शेवका धनकल निकासनेसे-दि स (e) x (o) x 840 व ५२८ x (o) धनकीश हुए । इस मकार तारीके धन-पत्तमं १८ श्रेक हैं, किन्तु जान्द्रशैयसम्बन्धी उक्त शेत्रमें केवल १४ श्रेक शाते हैं। इस प्रकार वे सब तारे उक्त क्षेत्रमें महा समा सकते। किन्तु यदि तारामें उत्सेषांगुलांका ममाण स्यांकार

हिया ज.य और उक्त रेश्वम ममाणांगुटाँका, तो उक्त रेश्वक ममाणका ५०० ते गुणा कर देने पर यह क्षेत्र ५२८× इद५ × १० "= ६६ × १० " अर्थात् २२ वंक ममत्य हो जाता है। किसले उक्त नाराँकी उस सेवके भीतर सायकादा रहनेके लिए स्थान मिल जाता है। इसीलिये घषटाकारने कहा है कि विमानोंके प्रभाणमें उत्सेषांगुल ही प्रहण करना चाहिए,

भीर पदी यात त्रिलोकमङ्गित भादि प्रयास भी सिद्ध है। षयटाकारने जो दूसरे प्रकारसे उक्त यैपन्यका समाधान किया है कि विमानोंके माणमं ममाणांपुछ महत्व करके मी जम्बूछीय और स्वयनसमुद्र, दीनोंके बाधयसे उन

मानाह सप्तरपानके योग्य रोज बन जाता है, सी यह बात गणितमें टीक नहीं उतस्ती, वाहि, जान्यूरीण सीर स्वयासमुद्र दोनोंके ऊपरका ११० योजनशहस्य क्षेत्र केपल-× {o' x 4 x {o' x ४४० = १६२ x {o" धनकोश भाता है। यह होन केपल मॅक्प्रमाण होनेसे केवल अम्बूबीपके तारांके लिए भी पर्याप्त सर्वकारा नहीं महान कर ता। तिसपर अवनसमुद्रसम्बन्धी चार चन्द्रोंके परिवारके तारोंको भी वहां भवकारा होना है। इस प्रकार तारोंके विमानोंको प्रमाणांगुलोंके मापमें छेकर धपलाकारने

ते किस प्रकार मणकाश माप्त कराया है, यह समग्रामें नहीं माता। तेता है।

सासाइनसम्यादिष्ट ध्यम्तर देयाँका सासानक्षेत्र भी तिर्यग्टोकका संब्यातयां भाग-शंका-पद केसे !

समाधान-- ध्यन्तर देवोंकी राशिको स्थापित करके एक एक ध्यन्तरावासमें संबंधात

तत्य संखेज्जेसु भवणविमाणेसु असंखेज्जजोयणायामेसु असंखेज्जा देवा देवीओ 🕅

कुटो ? तेसिमसंखेज्जचण्णहाणुववचीदो । प्रणो वेंतरावासे अप्पणा विमाणन्मंत्रा<del>वेदेन</del> घणंगुलेहि गुणिदे वेतादेवसासणसम्माइहिसत्याणखेचं होदि । एदाणि विष्णि हि वेर्ण एगर्ड मेलिदे विरियलोगस्स संखेजदिमागो होदि। विहास्वदिसत्याण-वेदण कसाय नेउनिय सम्रुग्यादगदेहि अट्ट चोइसमागा देखणा फोसिदा। केचियमेचेण्णा किरिगुर्ज हेड्डिल्टजोयणसहस्सेण । मारणंतियसम्रम्यादगदेहि वारह चोहसभागा देम्ला कोलिए तं जहा- मेरुम्लादो उविर जावीसिपन्मारपुढिव ति सच रञ्जू, हेट्टा जाव छा 🕏 चि पंच रज्जू । एदाओ मेलिदे सासणमारणंतियखेचायामा होदि । णवि हेडिनके सहस्तेण ऊणा चि वचव्या । जदि सासणा एइंदिएसु उप्पन्जीत, तो तस्य दो गुन्हाना ही ध्यन्तर देव होते हैं, इसिटए संख्यात रूपोंसे माग देनेपर ध्यन्तर देवाँडे अवाले संबंधा हो जाती है। किन्तु यह कम मधनवासी और सीधर्माद करवासी देशेंडे की क्योंकि, उनमें असंक्यात योजन आयामवाले संक्यात मवना और विमानीमें असंक्ष

देय भीर देशियां रहती हैं। कारण, यदि ऐसा न माना जाय, तो उनकी राशिके असंवा पना नहीं बन सक्ता है। पुनः यपत्तरों के शायासक्षत्रको अपने विमानों के श्रीतरी संब पनांगुर्टोंस गुणित करनेपर सासादनसम्बन्धि ध्यम्तर देवींका स्वस्थानक्षेत्र है। जाता है।। वीनों हैं। क्षेत्रको अर्थान् सासादनसम्यग्टिष्ट तिर्पयोके स्वश्यानक्षेत्रको, सासादनसम्ब ञ्चोतिष्य देवांके स्वर्थानक्षेत्रको और सासाइनसम्यन्दिष्ट ध्यन्तर देवोंके स्वर्धानक्षेत्रक इच्छे मिलानेपर निर्यम्लोकका ससंस्थानयां माग होता है। विहारवस्यस्थान, वेदनाव मागामें से देशोन बाट माग्यमाण क्षेत्रको स्पर्ध किया है।

इंडा-यहां देशोनसे तालार्थ हितने प्रमाण क्षेत्रसे स्पन है ?

मुमापान — तीसरी पृथियोंके मीचेके एक इक्षार योजनवमाण क्षेत्रसे मृत देशीवसे महार है।

मारणान्तिकममुद्रातगत सामादनगम्याकृष्टियोन शोकनालीके बीद्द्र शहुनी देशीत कारह आयामान क्षेत्रको कार्य किया है। यह इस प्रकारने जानना बारि सुनेरश्वेतके मूलमायने लेकर उत्तर ईक्तामारगृथियो तक सात रातु होते हैं, होर हैं, छडी कृषिकी नह यांच राजु होते हैं। इस दीशीकी मिला देनेपर सामाहसमानतीर हैं। बारमा मन्द्रभवर्षा कमार् है। जाती है। दिशेष बात यह है कि छडी पूर्विहें हैं। इस इकार केक्न से म्यून केंच वहांपर मी बहना चाहिए।

t. v. v. j

पोसणाणुगमे सासगसम्माहडिकोसणवरूवर्ग

+1

انہ

51

होति। ण च एवं, संवाणित्रोगरारे वत्थ एक्षिन्छादिद्विगुणन्बदुरमायणादो देव्याणित्रोगरा कारा । च त्या तामाण्यानात् पत्य प्रवास काराव्याहरू सम्बद्धि स्व सम्बद्धि व्यथा सामाणा प्रदेशिय धपन्त्रीति हि । हिंतु ते तस्य मार्गितियं मेल्लीति वि अम्हाणं जिन्नाभी। य पुण ते तस्य उपान्त्रीति चि, छिष्णाउम्रकाले तत्य सासणगुष्पाणुवसंमादी । जत्य सासणाणगुववादी

जननाव १०, १० जान काल वाच वाच पुरावज्ञाता । जान वाच गाव राज जाति । जान वाच गाव राज जाति । जान वाच गाव राज जाति जाति । जान वाच गाव राज जाति । ज जारम् वस्य व जार जातम् नारमायम् नारमायम् प्रति विसेसामायाद्दे । य स्त द्विते। तह भागाहभावारक्षत्वतु भारणावभ भट्यतु । सात्रभव भाव । वत्रतामानादा । भारत भावा, मिष्णज्ञादिचादो । एदे सममञ्जद्विकेरस्या पैनिदियतिस्थितु मन्मोवक्केतिएतु थेव उपान्त्रणाहावा, ते पुण देवा पंत्रिदिएस एहंदिएस य उपान्त्रणाहाता, तदी व समाण-

जादीया । र्ज जाए जादीए पहिन्दर्ण, तं ताए धेन जादीए होदि वि पहिन्द्रजीत् अष्णहा अणबस्यावसंगादो । तम्हा सचमवटविनेहस्या सासणगुनेन सह देवा इव मारणिवर्ष र्वेका — यदि सासादनसम्पर्ग्हि जीव पहेन्द्रियोमें उत्पन्न होते हैं तो उनमें (पहांपर)

दो गुणस्थान मास दोते हैं। किन्तु पेसा गर्ही है, पर्योक्त, सन्नकपणा अनुधेगान्नारमें, एके दियों यह निष्पारि ग्रुणस्थान ही बताया गया है, तथा त्रव्यात्रयोगसारमें मी उनमें यक दी गुणस्थानके द्रव्यका प्रमाण-प्रस्थण किया गया है। समापान-कीन देला कहता है कि सातारनसम्बन्धि जीव पकेन्द्रियाँस इन्स होते हैं किनु वे उस गुणस्थानमें मारणानिकसमुद्रातको करते हैं, पेसा हमाय निक्र-है। न कि वे इस गुणस्थानमें, मर्थात् सातात्रनसम्बद्धियोंने उत्तम होते हैं। क्यान

हनमं भाषुप्पके छित्र होनेके समय सातादनगुणस्थान नहीं पाया जाता है। र्वेहा-जहां पर सासारनसम्प्रान्तिका जत्याद नहीं है, वहां पर इं सासावनसम्बन्धि जीव मारणानिकसमुद्धातको करते हैं, तो सातवी वृथियोद कार्कान ाताहनत्वन्थाः। श्राय विश्वित्र तिवयोतं मारणान्तिकसमुद्रातं करना व्यास्त्र

साताइनगुणस्थानत्वकी धरेसा दोनोंमें कोर्र विशेषता नहीं है, धर्यात् सत्काः राज्यस्थानाथका राष्ट्रा । समाधान-यह कोर्र दोच नहीं, क्योंकि, देव और नारकी सामित्र केंद्र सम्भाग-पद का वार्ति । ये सातवी वृधिवीते मारकी गर्भजनमाले विविद्याम ही उन्हें स्थानकी कात है। ये सातथा श्रायक मारका प्रमाणकार प्राप्त पान हा उत्तर कार्यक्र है, और व देव वेवेदियाँन तथा वेक्टियाँन उत्तर होने कर स्वतर होने कर स्वतर होने कर है, भार व इब प्रकारकाम तथा कार्याक्ष्मात्र । समान जातीय नहीं हैं। जो जिस जातिम मतियम है, मयाई स्थान के एक उन्हें के सीन समान जाताय नहा ह । आ १००० जाताय जाताय के ज्याद कर के उन्हें के भग जातिका माना जाता है, देशा स्थीकार करना चाहिए, सत्यय का जाता के जिस्से के पीना जातवा । इसिक्षेत्र सातर्पी पृथियोके नारकी सासार्नगुणस्का क्रांत्र

र पादिया बीरंदिया शीरंदिया पश्चितिया अञ्चलित् का क नेक्टर n. e. e. te. द औ, इ. ए. ७४-०१. 11年 東京

प करेंति चि तिई । देवसासणा एइंदिएछ मार्लिटियं दरेमाणा सम्बलोरेहिएछ 🎮 मार्गितियं करेति ति ? ण, तेसि सासणगुणपाइन्हे : लोगणातीए बाहिरमुख्यवनकरूत मातादो । लोगणालीए अन्मंतरे मारणंतियं करेता वि मवणवातियजगमुलादोवीं 💘 देव-विरिक्छसासणसम्मादिहिणो मारणंतियं करेति, णो हेट्टा । छुदो १ सासणगुणगहम्मारी चेत्र । रज्जुपदरमे चपुँडवी उवरि णत्थि । देवा वि सुहुमेशंदिएसु ण उपप्रजीते । 🖣 🖣 भारेरहेदिया नाउक्काइयवदिरिचा पुढवीए विणा अण्गत्य अच्छंति। तदे। सासगमारवंति खेचस्स बारह चोइसमागोवदेसो ण घडदि चि १ ण एस दोसो, ईसिपन्भाएउराँसे टबरि सासनागमाउकाइएस मारणंतियसंभवादो, अहुमपुदवीए एमरज्जुपदरमंतरं स मावृरिय द्विदाए तेसि मारणंतियकरणं पडि विरोहामावादी च । बाउकारएस सान्त मारनंतियं किया करेति? ण, सयलसासणाणं देवाणं व तेउ-वाउकाइएस मारणंतियामानारे,

कान्त्रिक्समुद्रात नहीं करते हैं, यह बात सिद्ध हुई।

श्रंका -- सासाइनसम्यग्दिष्ट देय, जबकि यकेन्द्रियोंमें मारणान्तिकसमुद्रात करने इर पार जाते हैं, तो किर सर्वक्षेत्रवर्ती एकेन्द्रियोमें क्यों नहीं मारणानिवस्तानुवन 443 E !

समापान- मर्डी, वयाँकि, उनके सालाइनगुणस्थानकी प्रधानतारी होकनानी बन्दर उत्तरम होनेके स्थमायका समाय है। और छोकनालीके मीतर मारणानिकममुजन्दे बरने हुद भी मदनदानी छोत्रके मूलमागसे ऊपर ही देव या तिर्यंच सासाइनसामानि और कारवारित इसमुद्रातको करते हैं, उससे मीचे नहीं, प्रयोक्ति, उत्रमें सासार्तमुणकान्धी ही प्रधानना है।

ग्रंग-राह्यपरममाण पृथियी ऊपर नहीं है। देव मी ग्रम वहेरिय की नी क्रों उत्तव होते हैं, और बादर यहेन्द्रिय और बायुकायिक श्रीवाँको छोड्कर वृतिहैं दिया सन्तव रहते नहीं हैं। इसलिए सासावनसम्पर्शि जीवाँके मारणानिकसंवक्ष वर्ष बड़े ब्हेंदर (1) मायदा उपदेश बढ़िन नहीं होना है है

ममायान-पर कोई देल महीं है, क्योंकि, ईराधामार वृथिवीने कार समार्क स्वयन्त्रांटर्वेश अन्दाविक अपिते मारणान्तिकममुदात संत्रप है, तथा वक शाकारिक क्षीतर सर्वत्रवर्षा प्यान बर्ग्ड स्थित बादवी वृत्तिवीमें वत श्रीवेंकि मारवाधितद्वतपूर्व बरने हे प्रांत बेर्ड विशेष की बही है।

र्येका — मामान्त्रमध्यस्यदि श्रीय, वायुक्तविक जीवीवे जात्वारि श्रवमुक्तको को इसे इसे हैं!

प्रसारान - नरीं, पर्योद, सदल सासान्त्रमायानीय प्रीपीता हेर्चेड हरी

ġ

1

42714

संरोजिदिमागो । एत्य सत्याणावेचमेलावणविद्याण पुन्नं व कायन्त्रं । विहासविद्यालके वेदण-कताय-वेदान्वयसमुग्पादगदेहि अह चोहसमागा देवणा फोसिदा । एत्य देवण-विपाणं पुन्नं व वचन्त्रं ।

असंजदसम्मारहीहि सत्याणेण तिरहं लोगाणमसंखेजिदिमागो, अहारजादो असंखेज-गुणो कोसिदो, तिरियलोगस्त संखेळ्दिमागो । तिरियलोगस्त संखेजिदिमागखेणुप्पापणे साराणभंगो । विद्वारवदिवारवाण-वेदण-कताय-वेउन्दिय-मारणंतियसमुग्यादगदिहि अह चौरसमागा देखला कोसिदा, उबरि छ रञ्जू, हेट्टा दो रञ्जु ति । उबवादगदिहि छ पौरसमागा देखला कोसिदा, हेट्टा असंजदसम्मारहीणं उबवादखेचाणुवर्तभादो ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदि-

भागो ।। ७ ॥ सत्याणसत्याण-विहारविद्यस्थाण-वेदण-कसाय-वेउन्यिय-मारणीतिपपदाणं पञ्चव-

संब्यातयां मान स्पर्न विवाह । यहांपर स्वश्यानशेषक विद्यानेका विपान पूर्ववत् ही करना चाहिए । विद्वारवास्यस्थान, वेदनासमुद्यात, कपायसमुद्रात और वैक्रिविकसमुद्रातगत

समयिवध्यारिष्ट जीयाँने द्वाज सम आठ बटे योदह (र्ह) माग रवसे हिये हैं। यहांवर है सोनका विधान वूर्वक समान ही कहना चाहिए। स्वामन वूर्वक समान ही कहना चाहिए। स्वामन्यकोक साहि तीन कोकोंका ससंवरतसम्प्राहि जीयाँने स्वराधानकी स्वेदस सामान्यकोक साहि तीन कोकोंका ससंवरतसम्प्राहि जीयाँने स्वराधानकी स्वेद कोर तिर्वकोक्त साहि तीन कोकोंका संवयातयों माग स्वर्मी हिया है। तिर्वकोक्त संव्यातयों माग स्वर्मी हिया है। तिर्वकोक्त संव्यातयों सामाव्य केरेके उत्याप करनेमें सामाव्यन्याकस्थानके स्वराधिक समान ही वर्णक आनना चाहित विद्यात्र कर्मी स्वराधानुद्वात, स्वयावसमुद्यात, स्वयावसम्

संपतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका असंख्यातवां माग

ायेद्वारयन्द्वस्थान, येदमालमुद्धात, कपायलमुद्धात, वैश्वियिक-लगुद्धात पद्गत संवतासंयतीकी पर्यायाधिकनयसम्बन्धी स्पर्धान-

सम्मामिच्छाइट्टिःअसंजदसम्माइट्रीहि केवडियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेनदिभागों ॥ ५ ॥

· एदस्स सुत्तस्स अत्यो बुज्यदे । सम्मामिन्छाइर्हाहि सत्याणसत्याग-तिहास्तरिः सत्थाण-वेदण-कसाय-चेउव्वियसमुग्यादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंसेज्जदिमागो कीन्ति। माणुसस्तेत्तादो असंस्वेज्जगुणो । कारणं स्तेत्तर्मगो । असंजदमम्मारद्वीणं सत्याणस्यान बिहारविसत्याण येदण-कसाय-वेडिव्यय-मारणितिय-उथवादमदाण सेविन्हि बुतत्वी संग रियं वत्तव्यो ।

🔢 . अट्ट चोइसभागा वा देसूणा ॥ ६ ॥

पुव्यसुत्तादो सम्मामिच्छादिष्टि-असंजदसम्मादिद्वीहि केवडियं खेतं फोसिर्मिर अणुबहदे । अदीदकालेणेचि वयणस्स अज्झाहारो कायच्यो । हुदो ! एदेवि देवे गुणहाणाणं वहमाणकालविसिद्धखेत्तस्स पुन्वं परुविदत्तादा । सम्मामिन्छादिहाहि सर्गा मेण तिण्हं लोगाणमसंखेजदिमागा, अड्डाइआदी असंखेजगुणी फीबिदी, तिरिवलीगस

सम्यग्निथ्यादृष्टि और असंयवसम्यग्दृष्टि जीवानि कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ५ ॥

सम्यानिमध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवान अवीतकालकी अवेशा इतं इन

आठ बटे चौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ ६ ॥

यहांपर पूर्वस्वस 'साम्यग्मिरवादृष्टि और असंवतसम्बन्हृष्टि झीवाते कितना है। स्पर्ध किया है ' दतने पदको अनुवृत्ति होती है । तथा 'अतीतकालसे ' इस व्यन हार्य कंप्याहार करना चादिए, पर्योक, दोनों गुणस्थानोंके यर्तमानकालिशिष्ट क्षेत्रकां तर्वे प्रकल्पा साधिया अपना स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स् भादि तीन होकोंका असंस्थातयां माग, अदार्दहीयसे असंस्थातग्राणा तथा विर्वहोका

<sup>्</sup>रस स्वका अर्थ कहते हैं —स्यस्यानस्यस्यान, विहारवत्स्यस्यान, वेदनासमुद्धल, क्यायसमुद्रात और वैकिथिकसमुद्रातगत सम्यागमध्यादि औषाने सामान्यहोक क्रारि चार लोकोका असंक्यातवी माग और मनुष्यक्षेत्रसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्पर्ध क्षित्रहै। इसका कारण क्षेत्रप्रदर्गणाके समझ हो जानना चाहिए। स्वस्थानस्थान, विदायन्त्रस्थन, पेदनासमुद्रात, कपायसमुद्रात, विविधिकसमुद्रात, मारणान्तिकसमुद्रात और उपनास्त्र प्राप्त असंवयतसम्यग्दरि जीवांका स्पर्दान शेलप्ररूपणार्मे कहे गये अर्थको स्मरण करके इस चाहिए ।

१ सम्बन्धियादृष्ट्यस्वतुत्वस्यवृत्तिविजीहृत्यात्वस्ययमागः स्रष्टी वा चतुर्देशमागा देशोनाः। स. हि. १, १

६ प्रतिष 'संसंविष ' इति पादः ।

संरोजित्माणो । एत्य सत्याणसेचमत्यावणविद्याणं पुण्यं व कायच्यं । विद्यात्विसत्याण-वेदण-कताय-वेदान्वयसमुग्पादगरेहि अह पोहसभागा देवणा कोसिदा । एत्य देवण विपाणं पुण्यं व वचर्चर ।

असंजदसम्मादद्वीहि सत्याणेण विष्हं छोनाणमस्योक्षद्विभागो, अहारकादी असंखेळ-गुणो कोसिदो, तिरियकोगस्स संयोक्षद्विभागो । तिरियकोगस्स संयेजादिभागयेषुण्याणे सासणमंगो । विहारविसत्याण-वेदण-कसाय-वेजव्य-मारणंवियससुग्यादगरेहि अह चोरसमामा देखणा कोसिदा, उबरि छ रज्जू, हेह्ना दो रज्जु वि । उबनादगरेहि छ चोरसमामा देखणा कोसिदा, हेह्ना असंजदसम्मादद्वीणं जवनादलेचाण्यकंगादो ।

संजदासंजदेहि केनडियं स्तेतं फोसिदं, लोगस्स असंस्रेजदिः भागों ॥ ७ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसस्याण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मार्र्णातेपपदाणं पज्जव-

संस्थातयां माग स्वर्ध (स्वाई) यहांपर स्वर्धानकोशक क्षित्रमेका विधान पूर्ववत् ही करना सादिए। विहारस्वरस्थान, वेदनासमुद्रात, क्रयायसमुद्रात और वैकावेषसमुद्रातगत सम्योगस्थारिए आयोने कुछ कम साठ बटे चीन्द्र (ई) माग स्पर्ध विधे हैं। यहांपर वैचीनका विधान पर्वते समान ही बहुना चाहिए।

ससंयतसम्पद्धि अथिते स्वरंधानकी स्वेश्स सामान्यक्षेत्र मारि शीन क्षोक्षेत्र संस्वातयां माग, स्वार्द्धांपसे सर्सस्यातगुणा क्षेत्र भीत विवेशक्षेत्रका संस्वातयां माग, स्वर्धांद्धांपसे सर्सस्यातगुणा क्षेत्र भीत विवेशक्षेत्रका संस्वातयां माग स्वरंधित स्वारंधां स्वरंधा है । तिवेशकोक संस्वातयां मागक्ष्य स्वरंध स्वरंधान सामा त्रे वर्णान स्वरंधान स्वरं

संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका जसस्यातवा मान स्पर्ध किया है।। ७॥

१ संबदासंबर्देओंक्स्वासंस्वेदमानः वट् वर्द्धवयामा वा देकोवाः इ ह. हि. १, ८.



रिल्लप्तु पंचतु अहुभागतु अहुाइअदीवेतु दोतु समुदेतु, च अत्यि, कम्मभूमिचादो । ' प्यासार्थकतिविकं समस्तफलितमिति ' एदेण सुतेण मन्झिल्लसेचफलमाणिदे सीलस-सचावीसभागम्महियचदुसहि-चदुसदरुवेहि जगपदरे भागे हिदे एगभागी आगच्छिद । वं रज्जपदरग्दि अविषय संरोजजंगलेहि मुणिदे संजदासंजदसत्थाणरोचं तिरियलोगस्स संरोज्जदिभागमेचं होदि । सेसपदाणं रहेचमाणिज्जमाणे एगं जगपदरं ठविय संखेज्ज-पचित्रंगुलेहि संजदासंजदउरसेपरस एगूणवंचासभागमेचेहि गुणिदे तिरिपलोगस्स संखे-क्रादिमागमे चरोचं होदि । कथं संजदासंजदाणं सेसदीव-समुदेशु संमवी १ ण, प्रव्ववेरिय-देवेहि तत्य पिताणं संभवं पिड विरोधामावा । कथमेसी अत्था सुत्तेण अकहिदी अव-गम्मदे १ ण एस दोसी, सुचहिएण 'वा' सहेण अयुचसमुच्चयहेण सचिदचादी।

धातकी खंड भीर पुष्करार्ध इन बढ़ाई द्वीपोंमें भीर छयणे। द्विय वा काछे। द्विय इन दो समुद्रौमें संपतासंपत जीय रहते हैं। क्योंकि, यहां पर कार्मभूति है। 'स्वासके झायेका यार्ग करके उसका तिगुना कर देनेसे विवक्षित शेषका समस्त शेषकल निकल आता है 'इस करण-एक्से मण्यवर्ती मर्पात् भोगभूमि-प्रतिशद शेवका शेवफळ निकालनेपर जो प्रमाण भाता है पह सोल्ड बटे सचारंस भागसे अधिक बारसी बीसड (१६१३%) ह्याँसे जगणनाम भाग हेनेपर उपलम्घ यक भागके बरायर होता है।

उदाहरण—मध्यम क्षेत्रपालका स्वास हैं: 
$$2(\frac{3}{2} \times \frac{1}{5})^2 = \frac{1}{12}$$
 प  $\frac{0^4}{2423} = \frac{232}{242} = \frac{20}{242}$ 

यह स्वयंत्रभाचलके भाभ्यम्तर भागवर्ती मध्यमक्षेत्रका क्षेत्रफल है।

इसे एक राजुमतरमेंसे निकालकर संख्यात शंगुलोंसे गुणा करनेपर तियेग्लोकके संस्थातवं भागभगाण संयतासंयतांका स्वस्थानशेल हो जाता है। विहारपास्यस्थानाति रोष पदींका क्षेत्र निकालनेपर-- एक जगवतरको स्थापित करके संयतासंयत जीवोंके शरीरकी ऊंचाईके उनंचास भागमात्र संस्वात सूच्यंगुलांसे गुणा करनेपर तिर्यन्लोकके संस्थातयं भागमात्र क्षेत्र होता है।

द्यंका-मानुपोत्तरपर्यतसे परभागवर्ती मोर स्पर्यममाचलसे पूर्वमागवर्ती हो

रीप-समुद्राँमें संयतासंवत जीवाँकी संभावना केसे है रै

समाधान-मदी, क्योंकि, पूर्वभवके वैशी देवीके ब्रास चहां से जाये गये तिर्वेक तंपतासंयत जीपाँकी संमाधनाकी मंपेशा कोई थिरोप नहीं है ।

द्युंका-स्टूबसे महीं कहा गया यह अर्थ बेसे जाना जाता है ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ख्वमें स्थित और मनुकका मर्थाद नहीं हते गये अर्थका समुचय करनेवाले 'वा' दाण्से उक अकांधेत अर्थ सूचित किया गया है।

छक्छैडागमें जीवहाणें

मारणितियसमुम्यादगदेहिं छ चोइसभागा देखणा पोसिदा । छुदो १ सव्वत्य होगणाजेष अञ्चर्नते अच्छिय मारणितियकरणे पडि विरोहामावादो । केण छणा छ चोहमना १

हेहिमेण जोयणसहस्सेण आरणच्चुद्विमाणाणसुवरिमभागेण च । पमत्तसंजदपहुडि जाव अजोगिकेवरीहि केवडियं सेतं पो<sup>सिरं</sup>,

लोगस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ ९ ॥

द्व्वद्वियणयमस्सिद्ण मण्णमाणे अदीद-बङ्गमाणकालेस 'लोगस्स असंसेज्बिर्मानी इदि होदि । पञ्जबहियणए पुण अवलविज्ञमाणे अस्यि विसेसो । बहुमाणकालमानिस् पज्जबह्वियणयपस्चणाए खेत्तभंगो । संपदि अदीदकालमस्सिद्ण पज्जबहियपस्त्रभ कीरदे । तं जधा- सत्याणसत्थाण-विहारवृदिमत्याण-वेदण-कसाय-वेउव्वियतेजाहारसमृत्यार गरेहि चरुष लोगाणमसंबेज्जदिभागो पासिदो, माणुसखेचस्स संवेज्जदिभागो। विउन्बणादिइद्विपचेहि माणुसखेचन्यत्ते अप्पटिहयगमणेहि रिसीहि अदीदकाल सर्वि माणुसखेलं पुसिज्जदि चि ' माणुसखेलस्स संखेजजदिमागो ' इदि वयणं ण घडेरे ! ब

मारणान्तिकसमुद्धातगत संयतासंयत जीवाने कुछ कम छद्द यटे चौर्ह (र्ए) भव स्पर्ध किये हैं; पर्योक्ति, लोकनालीक मीतर सर्वत्र रहकर मारणानिकसमुदात बरनेरे में

कोई विरोध नहीं है। र्शका - यहांपर यह छह यटे चौदह (र्हण) मान किस क्षेत्रसे कम करता चाहिए! समापान—सुमेरले नीचेके एक इंडार योजनसे और बारण बच्युत विवाही

उपरिम भागसे कम करना चाहिए।

प्रमणसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणसावर्ग जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? छोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥९॥

हृत्याधिकनयका आश्रय छेकर स्पर्शनक्षेत्रके कहनेपर सर्तात और वर्तमानकारवे स्रोतक असंस्थातयं मागश्माण है। स्पर्शनका क्षेत्र होता है। किन्तु पर्यापाधकतथे आ ए विकास हो । उसमें वर्तमानकालका आश्रय करके वर्यावाधिका सारक्षी रुद्यानप्रद्रपणा करनेपर क्षेत्रप्रद्रपणाक समान ही स्पर्यानक क्षेत्र है। ब सर्गतन्द्राप्टना ब्राध्यय छेकर पूर्वापाधिकनयसम्प्राची स्पर्धानदी प्रवद्या की जाती है। स इस महार हे— स्वस्थानस्वरधान, विहारवन्त्रवरधान, वेहनासमुद्रान, वतावनमुद्रान, पश्चितिसम्बद्धान् । यदारवास्यरयान् । यदासम्बद्धान् । यदासमुद्धान् । यदासम्बद्धान् । यदासम्बद्धान् । यदासम्बद्धान् । यद्धान्यसम्बद्धान् । यद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान् । यद्धान्यसम्बद्धान् । यद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धान्यसम्बद्धानसम्बद्धानसम्यसम्बद्धानसम्यसम्बद्धानसममसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानसम्बद्धानस जीविने सामान्यलीक आदि चार लोकीका असंस्थानयां भाग स्था किया है और मान

क्षेत्रका संस्थातवां भाग स्वर्धा दिया है। र्शका---विकियादि ऋडियात और मानुवशेयके भीतर भविदत गुजरात कवियोंने सर्वातकाल्ये सम्पूर्ण सातुवशेष कार्य किया है, इसलिए 'सतुवशेषण सात तवां मान स्पर्न (हया है ' यह बचन घरित नहीं होता है है

१ अवच्छ ६२ हो राजवीर देश वास्तानी सेवह लाईनर । छ. ति. ६, ८०

एम दोमो, उवरि जोपणलस्युप्पायणेण जोपणलस्यमेषममणे संभवामावारो। मेहमत्यय-घटणसम्प्राणमिसीय किमिदि जोपणलस्युप्पायणे ण संभवे। द्वीर णाम मेहण्यद्देशे सा सच्छी, ण सन्दर्य, 'माणुसरोजस्य संदेग्विद्यागो ' हि आइरियवपणण्याहाणु-वन्योदो। अपवा अर्देदकाले लिह्नियण्यागोशीद सन्दर्भ से माणुसरोजस्य सस्स माणुमरोजवयपुरुण्णहाणुवयवीदो। सत्याणे युग माणुमरोजस्य सिक्वविद्यागो पेव पेसिदो। जदि एवं, तो पेविदियतिहिन्दाणं पि पुन्ववेरियदेशणं परोगादो जोपण-स्वतिक्वादिमागो पोसिदो, माणुसरोजस्य स्वतिक्वित्याणं स्वतिक्वाद्याप्तार्वादि चुद्यं लोगाणम-संसेवजदिमागो पोसिदो, माणुसरोजादो असंरोज्जगुणे। मार्ग्यतियत्वेर्णं विद्यतेणस्य संसेवजदिमागो, तदो संसेवज्जगुणमसंसेवज्जगुणं वा क्रिक्य होदि ति सुने ण होदि। प

र्मुझा—सुमेठवर्यतके मस्तक (शिक्षर) पर चड़नेमें समर्थ क्षाविधोक्ते क्या यहां सास योजन उत्पर उहकर गमन करनेकी संभावना नहीं है !

समापान — मेले ही सुमेरपर्यतके कार्यवदेशों कारियों के पान करनेशी शांके यहां माते, किन्तु मातुपर्यवके कार एक हाल योजन उद्देश स्पान पान करनेशी शांके नहीं है, अन्यया 'मतुप्यक्षेत्रके संज्यातये आगमें ' ऐसा आवार्योका यवन नहीं धन सहता है।

भपवा, मतीतकाटमें विक्रियादि टरियसम्बद्ध मुनिवरोंने सर्व ही मनुष्यक्षेत्र स्पर्धी सिया दे, भन्यया उसका 'मनुष्यक्षेत्र' यह नाम नहीं वन सफता है।

रवस्थानस्वस्थानकी भेपेशा उक्त प्रमत्तादि संवतीने मनुष्यक्षेत्रका संस्वातयां भाग द्वार राज्य दि ।

र्शका — यदि वेसा दें, तो पंचेट्टिय तिर्वेधीका भी पूर्यभक्त थेरी देवाँके मयेगले पक लाख पोजन ऊपर तक जाना शत होता है !

समाधान — यदि तिर्वचाँका ऊरर एक साल योजन तक जाना आप्त दोता है। तो दोषे, उसमें भी कोई दोष नहीं है।

मारणस्तिकसमुद्धातगत उग्हीं प्रमत्तसंपनादिकोने सामान्यशेक माहि चार छोकोंका असंक्यातयां भाग और मञुत्यक्षेत्रसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्वर्ध किया है।

र्श्व — प्रारणात्विकससुरातको प्रात प्रमत्तविकादि गुणस्थातवती जीवींचा प्रार् गोतिक क्षेत्र तिवेग्डोकका भेणवातवी भाग, तिवेग्डोकसे संग्यातगुणा भएवा भक्षेत्रशत-गाप्तिक क्षेत्र तिवेग्डोकका भेणवातवी भाग, तिवेग्डोकसे संग्यातगुणा भएवा भक्षेत्रशत-गणा क्यों तही होता है है

.... ૧ પ્રદુવની '- દુદેદલવળો', સર ઘડી અંવરદીદુવ' – દુદેવે કા કહી 'ફડિ વાઢા ! ૧ પ્રદુવની' એ કિં, અવલીદુ' એ વિ 'ફડિ વાઢા !

समाधान — यह कोई दोप नहीं, प्रवीकि, एक छाल योगन ऊपर उड़नेकी संपेशा एक छाल योजन प्रमाण गमन करनेकी उनमें संभावना नहीं है।

धरनंदागमे जीग्द्रामं [ 1, 1, 1,

१७२ ]

ताव उड्डवडाणे पणदालीमजीयणलक्यारिक्यंमार्च समपरिमंडलयंडिदार्च सक्यन्त आयदार्णं सेतं निरियलोगस्स मंगेज्जदिमागो होदि, मंगेज्जपद्रग्तुजमेनमेदिवम्लक्ती ण च पणदार्तसञ्जोषणत्रक्यविक्रयंमसंयोजनंगुलवादन्तं संयोजबर्ज्नुत्रापदक्षपत्रिक विमाणमेचतिरिच्छवद्दाणं रोचं पि निश्यितोगस्य संगेउनदिमागे। होदि, एदस पुन रेक्वादो संखेजज्ञगुणहीणस्म निरियलोगस्म संग्रेज्जदिमागगिरोया । विमाणनिर्देशः असंसेज्जुबबादमवणसम्मुहबङ्गोत्तेमु समृदिदेसु किल्म नं होह ? ण, सेडीए असंनेकि

मागासंखेजननोयणहर्यसेचेचेगु गहिरेमु वि तर्ममगरी । सजोगिकेवछीहि केवडियं सेतं पोसिदं, होगस्त अमंते<sup>व्यहि</sup>

भागो, असंखेज्जा वा भागा, सञ्चलोगो वा ॥ १० ॥ एदस्स सुचस्स बद्दमाणकालमस्सिद्ण पज्जबद्विययरुवणाए सेतमंगी। वरीर

समाधान - नहीं होता दे, क्योंकि, ऊपरकी ओर प्रधर्नमान, पैनालीस लान येवन विष्कम्मवाले, सम्परिमंडल आकारसे संश्यित, और सात रातु मायन, वसे मारमानिक समुद्रात करनेवाले प्रमत्तसंयतादि औवाँका क्षेत्र निर्यंग्लेक्क झसंख्यानवी माथ नहीं होत है, क्योंकि, यह क्षेत्र संक्यात प्रतरांगुलमात्र जगश्रेणी के प्रमाण ही होता है। बीर न संख्य राजु बायत, तथा करपवासी विमानीके प्रमाण तिर्यम्हरासे प्रवर्गमान उक जीवाला विज्ञान

छाल योजन विस्तार और संव्यात अंगुछ बाहस्ययाछा मारणान्तिकसेत्र मी तियन्त्रीका संवयातवां भाग होता है, प्यांकि, पूर्वोक्त क्षेत्रसे संवयातगुणे हीन इस क्षेत्रहो विर्वाहीक संस्थातयां भाग माननेमें विरोध साता है।

र्टक जीयोंके समस्त मारणान्तिकक्षेत्र संयुक्त करने पर विर्यग्लोकका संख्यावयां मार्ग क्षे नहीं हो जाता है ?

समाधान — नहीं, पर्योक्षे, श्रेणीके असंख्यातवें भाग तथा वसंख्यात योजन दिन्त क्षेत्रोंके प्रहण करने पर मी तिर्वेग्लोकका संख्यातयां मान प्राप्त होता असंग्रव है।

सयोगिकेवली मगवन्तींने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका अपल्याती

मान, असंख्यात बहुमान और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १० ॥ इस सुन्नकी धर्तमानकालको आध्य करके पर्यापाधिकनयसम्बन्धी स्पर्धनको अ

पणा क्षेत्रके समान है। अतीतकालको आध्य करके पर्यायाधिकनयसम्बन्धी प्रहाराजी पणा क्षेत्रके समान है। अतीतकालको आध्यय करके पर्यायाधिकनयसम्बन्धी प्रहाराजी उन्हें क्षेत्रके समान ही है। विरोप बात यह है कि कपाटसमुद्रातगत केवरीका हार्गनेत



६ प्रतिप्र ' मं ' स्थाने ॰ य ' इति वादः । ६ प्रतिष् ' बंदपंच ' इति पाटः ।

कारुमस्सिर्ण परवविद्वपपस्वणाएं खेतभंगी चेत्र । पत्रिर क्याडमरस्स पणदाहीम-जोयभसदसहस्तवाहल्लं वापदासेगं क्याडखेतं होदि । अयरं णबदिवीयणसदमहस्म-बाहल्लं वापदर्र होदि। एवं दीण्णि क्याडखेत्ताणि मेलिदं विरियलीगादी संराक्तगुणाणि । ( एवभेषपण्यमा सक्ता )

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए जिरइएस विच्छादिई।हि केबडियं सेत्तं पोसिदं, टोगस्स असंसेज्जदिभागों ॥ ११ ॥

सत्याणसत्याण-विद्यारविसत्याण-वेदण-कताय-वेडव्यिय-मारणेविय-उववादगदेहि मिन्दगदिद्वीहि चदुण्डं लेगाणमसेवेज्वदिमागा चद्वमाणकाले पेशिदा, माणुमरोचादे। असंवेज्जगुणे । सर्वं रोचभंगा ।

छ चोइसभागा वा देखणा ॥ १२ ॥

सत्याणसत्याण-विहारविद्वार्याण-वेदण-वनाय-वेदिष्टि विच्छा-दिद्वीदि अदीदकाले भेरहपदि चदुण्डे लेगाणमसंवेद्य्यदिमागी, माणुमस्तादी असंगेद्र्य-गुणो फोसिदो। एसे अत्यो सुचे अबुची कर्ष परुविश्यदे १ ण, सुचन्येण ' वा ' गेर्च वैद्यालीस लाख कोकन पाइस्वयाला एक जगमनराजमाण क्याररोत्र होला है। (वह कार्या-वर्षाण

केयळाँकी अपेरारा जानना )। और दूसरा मधीन् समुविध्य केयळाँक बंगाटसमुद्धानका होत्र सम्बं त्यांत पोक्षन बाहस्ययांते जागमतासमाण कपाटरसमुद्धातसम्बन्धी वर्षान्तरेष होता है। इस मकार दोनों कपाटरोगोंका मिला देनेवर तिर्थम्योकार राज्यानमुख्या होत्र हो। जाना है। (इस मकार सोमानकारणा समाण्य हुई।)

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियाने मिध्यारिट डीकोने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ! लोकका अकंत्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ ११ ॥

वरवानस्वरवान, विद्वारवन्द्रश्यान, वेदनारागुज्जात, वचायसगुज्जान, वैनिशेष-सगुज्जात, मारणानिकसमुज्ञान और उपवादप्यगत कियादिष्ट अध्येत सामाण्येलक काहि चार होत्रों से सर्वयावायी मान और गुज्यावारीके सर्वयानगुज्ञा सेव वर्गमान्द्रस्य स्पर्त किया है। होन कथन सेवकस्वणाचे सवान जानना चारिय।

नारकी मिध्यादृष्टि जीवोंने अठीतकालकी अपेक्षा इष्ट कम छह कटे कीदह

माग स्पर्श किये ईं।। १२।।

हप्रस्थानस्वरकान, विदारमं स्वरूपान, वेदनासमुद्रात, व पायसमुद्रात और देशिहरू समुद्रातमात मिर्पादकि नारवी जीवीने अभीतवालमें सामान्यते व साहि बार क्षेत्रकेश मसंव्यातवी भाग भीर मनुष्परेषिस मसंव्यातमुख्या होव वनसी विचा है।

र्श्वस-स्वमें नहीं बहा गया यह अर्थ देखे बहा जा रहा है ?

. برمس

६ विदेश्य समाव्याचेत्र माहमात्री माहमात्री पृथिन्यां माहमात्रूरेत्यापनिकेश्वातः स्टेश्सातः शुक्तः ह

'समुच्चपहुण सचिदत्तादी । विहारवदिसस्थाण-वेदण-कसाय वेउव्विय-खेताणि अदीदकारे तिरियलोगस्स संखेजनिदमागमेचाणि किणा होति चि बुत्ते ण होति, इंदर्यनेदीनर पद्मणागृहि रुद्धसम्बस्ते चस्स तिरियलोगस्स असंस्वेज्जदिभागचादो। इंदर्यनेस्द्रीवद्व-पर्ण्यम्स संचरतेहिं णेरड्यमिच्छाइद्वीहि तिरियलोगस्म संखेज्जदिभागो किणा पुसिज्जिदि ति बुत्ते व प्रसिजदि, णेरह्याणं परखेचगमणामात्रादो । परखेचगमगामावे विहारवदिमत्यालस्य अभागे पसञ्जिद सि बुचे ण पसिञ्जदे, एक्कस्टि इंदर्ग सेटीगद्व-परण्याए च संहिद्गामागार बहुविघविरुगमणसंमदारो । असस्ये अजोयणमेनायामसेटीबद्ध-पर्ण्या अस्य नि तिर्तरः होगस्य संसेज्ञदिमागे। होदि ति णासंकणिञं, अभस्यज्ञज्ञोयणायामेनेडीवद् परणापन पि तिरियलोगस्स असंसेजदिमागत्तादो । मारणंतिय-उत्तवादपदेहि णेरहपमिन्सरिद्धि

समापान-नहीं, क्योंकि, स्प्रमें स्थित और समुख्यार्थक 'या' क्ष्ये उठ भर्थ स्चित किया गया है।

र्श्वका - मतानकालकी प्रवेशा नारकी विष्यादृष्टियोंके विदारवःस्वरद्यान, देशनः समुद्दान, करायसमुद्द्यात भीर वैकिविकतमुद्द्यातसम्बन्धी सेन निर्वत्सीको संस्पर्वे भागमात्र वया नहीं होते हैं है

ममापान -- नहीं दोते दें, वयोंकि, इन्द्रक, धेणीबद और प्रकीर्णक नाहरिकें

इद्य भी सर्पक्षेत्र तिर्पग्लोइका असंक्यानयाँ भागमात्र ही होना है।

र्द्या-रन्द्रक, धेपीवद्र और प्रकीर्णक नरकोंमें संवार करनेपाले नारही निष्य र्दाष्ट्रपति निर्देग्टोकदा संस्थानयां माग क्यों नहीं स्पर्श किया है

मुमायान — नहीं राश किया है, वर्षीक, नारकियोंका राक्षेत्रको छोदृहर वर्षोस्त्रे

सम्बन्धि होता है।

दौंद्रा-परक्षेत्रमें गमनका समाय माननेपर विदादपन्त्रमानहा समाव आव

ममायान - विद्वारवास्थानका भनाव मही मान्त होता है, वर्षीह, वद !! रो=1 दे ! इन्द्रच, क्षेत्रीयत्र या प्रदेशिक सन्दर्भ विषयान ग्राम, घर और बहुत प्रशास्त्र रिवार्थ स्थ सामा होनेमे विशास्य स्थम्यानपदः वन जाता है।

र्महा - बसंस्थात योजनवमाण भाषामयाने धेर्णांचड और प्रशार्थंत मरह होते हैं

इसंटिर निर्देग्टोक्टा संस्थातयां साग विद्यान्यान्यस्थानया क्षेत्र वन जाता है है

समायात - येमी भी आरोडा नहीं करता चाहिए, पर्योद्ध, अर्थक्यात केर्य क्रमाज्य के भेजीवद और बर्शकेंद्र मण्ड भी निर्याशीर के मर्मवयानये मानामा वी है है है। प्राप्तकारितवासमृद्याला भीर प्रया न्तर्यातः मान्यालयः भागमात्र वा व

<sup>.</sup> १ इति १ ईस १ ईस १ ईति १८३ ।

जरीत्याने ए पोर्ममामा देख्ना पोनिदा । कल्पमानं देख्नातिन्जन्नेष्णमहस्मं । तिस्पित-परस्यानं मन्द्रद्रमानु ममणामनगमंभवे। अतिय नि ए पोर्ममामा होति, कर्ष देख्नातं है पुन्परं- स्मितः जीवान सि महेडभे, आहे। अहेडभो नि है न साथ अहेडभें। विकासन-प जाणुवरंभारो । विश्व कारणं यण्यामिरि । कम्मे तक्कारणं, सेवारिजीयस्थानस्यानं प्रम्मयदिर्मकारान्यानुमारे। तत्य वि आधुवृद्धिकामं चेद कारणं, अन्तासि स्वय्यानं पुष्प पुण्यानाम्याने ति आधुवृद्धिकामं चेद कारणं, अन्तासि स्वयाने स्वयोगं पुष्प पुण्य क्जाण्युरनंभारो, पुण्युरन्तिसानमंत्रात्वसेन आधुवृद्धित् विवामो होदि वि गुर्मदेनादो या । आधुवृद्धिद्धस्मानं दि मुक्तस्थानेव्यविद्यान्यविद्यानाष्ट्रपृत्यक्ति। पाणुर्विक्तं विमाही नि णामकानभं, तस्म तित्यवरस्थि प्रवासन्त्राविद्यानाष्ट्रपृत्यक्ति।

हुछ कम छह यटे यौरह ( 😽 ) भाग स्वर्ध क्षिये हैं। यहांवर कुछ कमका ममाण देशोन सीन हजार योजन है।

शुंता—तिर्वेच और नारविधोंका सर्व दिशागोंमें गमनागमन सम्मव है, इसक्षिप पूरे छट चटे चीड्ट (१६) भाग ही स्वर्धन क्षेत्र होना चाहिय, किर कुछ कम कैसे कहा है

समाधान—विमहमतिमें जांचोंक विमह क्या सहेतुक होते हैं, अथवा अहेतुक हैं धेदेतुक तो मतंत नहीं जा सहते हैं, क्योंक, विमा कारणके कार्य पाया नहीं जाता। यह दूसरा पर महण किया जाता है. क्योंक विमह सहेतुक होते हैं, तो उसमें कारण कहन व्याहर है विमहत्त्र जारण कर्म है, क्योंकि, संतारी जींचोंने सर्थ कारक्योंका कर्मको छेदकर कीर कोई वारण पाया नहीं जाता है। उसमें भी आशुपूर्वानामक नामकर्म ही विमहत्त्र कारण है, क्योंकि, अग्य सामे महत्त्रवांके कृषक पृत्रक् कार्य वारे जाते हैं, तथा पूर्वारोशिका छोदनेके प्रधान और उकारदारिको महत्त्र करनेके पूर्व अन्तराखवां सेजर्म साहत्युवितासक्रीकर विवाह (उच्च ) होता है, ऐता गुरुका क्योंक हैं।

ग्रंजा—आनुपूर्वातामकमेके अक्ष्यके नहीं होनेपर भी मारणान्तिकसमृद्यात करने-पाले जोखेंके विमह पापे जाते हैं, इसलिए विमह बानुपूर्वातामकमेका फाल है, पेसा नहीं माता जा सकता है।

समाधान — ऐसी आधीका नहीं करना चाहिय, प्रांगिक, यह विषद सीर्धेकरप्रकृतिके समान निकट सविष्यमें उदय दोनेपाले भागपूर्वीनामकर्मका फल है।

र्शका---स्टबंगुटके समेचयात्र्ये ज्ञागमात्र बाह्ट्यवाले तिर्वेष्णतस्ये अर्थात् राहुके सर्वेषे अराधेजीके समेच्यात्रये भागमात्र भयगाहनाके विक्कांति गुणा करनेपर यहां जो सारि अर्थात् आकारा प्रदेशीकी सेच्या भाती है उतने प्रमाण नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वीही प्रकृतियां

एक्टंडाके जीवानं पपर्दाजो । सेनी सेदीम् अमस्तिजदिमागमेचश्रोगादगविगपेहि गुमिदे तिरिस्तवर

₹**\***₹]

[ 8, 8, {**?**.

जेम्म सुदुर्कोत् पवितिवष्या होति । पनदार्तामञ्जायगतस्याहरे तिरिवरहे मे कराडोट्सपनिष्यमें भेडीय असंक्षेत्रविभागमेत्तओगाइणविष्येहि गुनिरे मनुस्की राजेन्य गुरुवार पपादिविषया होति । मरबोयगमस्याहस्तातिरियररे नेरि असंबेरक देश गमेन और उपदियाचे हि सुनिदे देशगदिवाओरगाणुपूर्वीत वसितिराह हे ते ति बन्द-मुनारी अलुपुनियममं संद्वाणिशादि मेरेनि गामंक्रानिता शिले रोज मेहानेमु बाराहाण एकत्येर बारासिसेहारी । ते च आगामवरेमा एख पेर प्रकेर हे को है। करणे हमें जायेगीके संसंव्यात है सामसंव सरमाहनाके दिवासी गुला वारे रण रिक्षण विकासमुद्रमारे प्रकृति विकास होते हैं। पैतालीम साम बेजिन बादावर वे रिर्मानमार्वे अनंकारके छेरतेथे निष्या शेवकी जगधेगीके सर्वत्यानवें सावगर करमान करिकारों ने मुला करतेवर मतुष्यमित मायेग्यानुपूर्विके महति विकास हे हैं। की की चाकर काल्याचार विशेषाचरमें समयेगीते संगेतमानयें साममात्र सम्माहत विकामने कुल्ल बनकरन देवनां वसपेस्थानुत् स्ति प्रकृति विकास क्षेति है। इस वर्गलाबंदिके गुर्वे क रूमन कप्टूर में संभा नामकाने ही महति संस्थात मर्मान् गुरुत दियाकी ही है। त्र राष्ट्रा र - देशी में। सार्धाता नदीं करनी चादिए, चर्योहि, श्रेष मीर संशामी

क्यानुत कथात अर्था भारती भीत पुतर्सावयाकी होते कुर भी जल मानुप्रीवहरिका वर्ष हैं अ देवे व्याप्त न अने लेनेने विशेष हैं। वृत्तरी बात यह भी है कि व भाषात्रके होता है त तर च क्याद दोदद व्यवद्वत्वत्वत्वत्याः च जित्त्ववद्यानि क्याद्वणायानि नि क्रांपद विर्वे ।

करकारण्या भावता चीता इटार्ट काता इंडस्कान हिर्द्धनुदशाल क्षणनगरमा व वाचित्रपर हेता हर्न हैं वार प्रथम में क्षेत्र में अब क्षण मान में अब माने दामना नाम है । बहुक्ताविक्षी मृदय से तर मिनि है दे कारी कारत्व बाल विकार - अर्थे के प्राप्त का विकार के AT N. A. O. THE A. TENER BY A SPARISH SET A PRAIRIES OF THE STATE OF T With a reservence wer care time with the these extending later 4 th AT SAT AS . FACT FOR CHIEFEATHER CENTRE SATER BY BE FOR करामर १९५ केटन । पहर १ के कमाइक इंजर के दिन हैं। हुई हुई है के दिना कार्य the a warry or at presentational figure to be set with AN ACCOUNT OF METATORS AND A CONTRACT OF A STAND OF THE S

िष ण णियमो अधिष, समयाविरोद्देण तेसिमगद्वाणारो । तदो आणुपुण्यिविवागापात्रीमा-से से अवहाणं उप्पष्णपदम-बिदिय-तिदेयबंकेस् णित्यं चि देसण्यं घडदे । एसी अरघो उन्तर सन्वत्य जहावसरं पहनेदच्या ।

सासणसम्मादिद्वीहि केविडयं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंक्षेज्ञदि-भागो ॥ १३ ॥

एदस्स ग्रुचस्स अत्यो खेचाणिओगहारे जो युची, सो बचच्यो । पंच चोहसभागा वा देसूणा ॥ १४ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-चेदण-फसाय-वेउंध्यियसमुग्पादगदेहि सम्मादिहीहि चंदुण्हें लोगाणमसंसेखदिमागो, अहुएजादो असंसेखगुणो । वं जपा-णेरस्याणं विलाणि संखेजनोपणविस्पडाणि वि अस्यि, असंखेजननोपणविस्पडाणि वि । तत्य जिद वि चदुरासीदिलक्सणेरहयावासा असंसज्जनीयणवित्यहा होति, तो वि सम्बन् खेचतमासो तिरियलोगस्त असंखेजजिदमागो चेत्र जपा होदि, तपा वचहरमामो-

स्वान विदोषचर ही रहते हैं, ऐसा नियम नहीं है। फ्योंकि, उनका अवस्थान परमागमके

इसाहिए बाजुपूर्वीनामकांके उदयके समायोग्य शेवमं अधरधान उपाय होनेके प्रथम, द्विताय और नृतीय विमहाँमें नहीं है, धता देशानता पटित हो जाती है। यह अर्थ क्रार

सासादनसम्पादि नासक्योंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकना असंस्पा-वर्वाभाग स्पर्श किया है।। १३।।

इस स्वका भर्य जी सेवानुयोगद्वारमें कहा है यही यहांदर कहना चाहिए। उन्हीं सासादनसम्बन्धिं नाराकियोंने अवीवकालकी अवेक्षा हुछ रूम पांच हटे बिंदह माग स्पर्श किये हैं ॥ १४ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विद्वारयस्यस्थान, वेदनासमुद्धात, क्षत्रायसमुद्धात, भार शिक् कसमुद्रातमत सासावनसायगरि माराकेयोने सामान्यताक मादि चार शोकोंना मस गतियाँ भाग और सहार्द्धांपले असंक्यातगुणा रेक स्वर्ध विधा है। यह इस प्रकारस है-वित्यक्ति दिल संब्यात योजन विश्वत श्री हैं श्रीर ससंब्यात योजन विश्वत सी हैं। में यदावि चौदासी काल मारकियोंके भावास असंस्थान योजन विस्तृत होते हैं, तो सी समस्त मारकापासका क्षेत्र-समास अर्थान् राक्षका आहे सियंग्लोकका असेक्यानको साथ

णिरयावासा के वि परिमंडलायारा, के वि तंसा, के वि चउरंसा, के वि पंचंसा, के वि धंसा। एदे सच्चे वि समीकरणे कदे चउरंसा असंखेजज्ञायणवित्यडा होति। सपतः जिरह्मपासीणा घणंगुलस्स संखेजजदिमागे गुणिदे बहुमाणकाले णरहपहि रुद्धवंचे होदि। विह्माणे णरहपहद्धिणरपिलनायादो अरुद्धमागो संखेजजद्दिशाणे वि संखेजजहदेवि गुणिर वे परह्मपाणमदीदसत्याणखेचे होदि। तेण विरियलोगस्स असंखेजजदिमागवं ण विरुक्तरे। एवं 'वा' सहस्विद्सस अत्यस्स परुवणा कदा होदि। सासणस्स णिरयगदीए उत्रवारे णिरय, सुचपितिसद्धादो । मारणंवियससुग्धादगदिह पंच चोहसमागा पोसिदा। इरो! सचमपुदवीदो सासणाणं मारणंवियकरणसंभवामावा। वं बुदो णन्वदे १ एदम्हादो चे सुचादो णन्वदे ।

सम्मामिन्छादिङि असंजदसम्मादिङ्घीहि केवडियं खेतं पेतिहरू छोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

नारिक्योंके आवास कितने ही तो गोल आकारवाले होते हैं, कितने ही दिखेत कितने ही चतुरकाण, कितने ही पंचकाण और कितने ही नारकावास परकाण होते हैं। ति कितने ही चतुरकाण, कितने ही पंचकाण और कितने ही नारकावास परकाण होते हैं। ति कितने हो जाते हैं। सम्पूर्ण नारकराशिसे घनांगुलके संक्यात के गानको गुणा करते परमानकालमं नारिक्योंसे कर-क्षेत्र होता है। परीमानकालमं नारकाद्वारा रोके हुए तहाँके परमानिक मद्भागा संज्यातगुणा होता है, इसिल्प संज्यात क्यांसे गुणा करतेगर नार काका मतातकालसक्या परचाल प्रचान माण हो जाता है। मता तिपालोकका मक चाका मतातकालसक्या परचाल क्यांसे मक्यां होता है। स्वान हो मता होना है। इसा प्रचार पंचा जी करार स्पर्धान क्षेत्र वावाग गया है, पह ) विरोधको नहीं मात होना है।

सासादनसम्बद्धि जीवका नरकमतिमं उपपाद नदीं होता है, व्योहि, इत्ती शृवमं प्रतिदेश दिया गया है। मारणान्तिकसमुद्धातगत सासादनसम्बद्धियाने यांव है। बारह (रो) माग स्पर्धा किये हैं, वयोंकि, सातवीं पृथियीले सासादनसम्बद्धियां

मारणान्त्रिकसमुदात करना संमय नहीं है। प्रांका -- यह कैसे जाना जाना है।

समायान—इसी दी गुनसे जाना जाता दे कि सावधी पृथियोके सामावनगानी नारकी सरपानिकासमुदान नहीं करते । (यदि करते होते, तो सूत्रम छद करे बीहर (ते) सावद करावैका करेल होता )।

मृत्यानिष्यादृष्टि और अमेयवसम्पन्दृष्टि नारकी श्रीवाने कितना धेर रार्व द्विचा दे ! टोटका अमेन्यावको माग स्पर्ध किया है ॥ १५ ॥

् सत्याणसत्याण-विहारविद्सत्याण-वेदण-कृताय-वेउच्यिससुरचाद्दगहेहि [ १७९ मिच्यादिहि-असंबदसम्मादिहीहि बद्दमाणकाले चदुण्हं होगाणनसंखेळदिमागा, माणुव-खेनादो असंखेअगुणो पोतिदो । कारणं खेनितिई । अदीदकालं वि एदेहि दोहि वि गुग-हाणेहि एदेहि पदेहि चदुण्डं लोगाणमसंक्षेत्रदिमागो चेत्र पोसिदो, 'असंखेन्जवायनवित्यहा णरस्यसन्त्रावासा ' हिंद मणेण संकृष्णिय एगावासरीचक्रलं चउरामीदिलक्षास्त्रवेहि गुनिदे विरियलोगस्स असंरोजदिभागमेचखेचफलोवलंमादे।। सम्मामिन्डाहृशिं मारणंविय-उदवाद-पदा णत्य । अक्षेत्रदसम्मारहीदि मारणीवय-उववादगदेदि चदुण्हं स्रोगाणमगरिउवदिशागी, माणुसखेचादी असंसेरज्ज्युणी बहुमाणकाले पोसिदी । कारणे सेचितिई । अदीदकाने मारणविषसम्पादगदेहि असंबदसम्मादिहीहि चदुण्दं लेगाणममम्बद्धिमागो, माणुम-खेषाहो असंखेरज्ञाणा पोतिदो । बुदो १ सच्यज्ञीवाणं अवकमछक्रणिपमदंसणाहो, उहुं गन्छमाणजीवाणं वि अप्पणी उप्यविश्वेषमपाविद्ण अंतरकाळ चेत्र दिम-विदिमानं गमवामाबादो । ण च उप्पधिखेषसमाणखेषेत्रहियाणं वि जीवाणमणियदगमदमन्त्रि,

स्वस्थानस्यस्थान, विद्वारवास्यस्थान, वेदनासमुद्धान, करायसमुद्धान और देन्द्रिः ्वित्तामुद्रातमत् सम्यम्परमाहि भीर सस्यतसम्याहि नारशे जीवी वर्गमानसन्ते सामायस्थिक मादि चार सोकांका मसंवयातर्था माग और मनुष्यक्षेत्रशे ससंवयातगुण शेष द्यार्थ किया है। इसका कारण क्षेत्रमक्ष्मणांशे सिस है। अनीतकालमें भी इन दोनों है। पुणक्यातवर्ती नारकी अधिने रखीं दोनों परीकी अवेशा सामान्यकोक बादि बाद होत्री हा धानवातम् भाग ही रार्थे किया है, क्योंकि, क्यतंत्रात योजन विन्तृत मार्थि रार्थे शर्वे नायास होते हूँ । इस प्रचार प्रमुक्त संकल्प करके एक मारकाय सका केवरण स्थापनी साम करोति गुणा बरनेपर नियंत्रीहरू महंत्र्यावर्ग भागमात्र हो बगत याचा मात्रा है। सार-मारमानिकत्तमुवात और उपवादगत असंयतसम्पर्धा नारकाने सामान्यांक कार्रिकार शिकांका असंव्यातवी भाग और मञुश्यतोक्ती असंव्यानगुष्ता शेव यहँबानकात्म कररी

भनीतकासमें मारपाश्विकतमुद्रातम् अस्त्यतसम्बर्गाद्वीं सामान्यतीक अनी प्रतिकारण प्राप्तिकारणा प्रतिकारणा विशेषा । प्रतिकारणा । पोहित, सर्व जीवींके अपकारपुर्वा नियम देखा जाना है (देखा प्रथम सा ह १००) हन्। पर जानेशासे जीवोंके भी अपने जापति शेवको नहीं सात करके अनुसादकार में हिन्दीन तान अर्थात् समतल अन्य होत पर स्वित जीवीह भी आदेशन नवन होता है, करोत,

सगदिसाए वियदगमणादोः तिरिच्छं गच्छमाणाणं पि जीवाणमण जन्मदिसाणं गमणाभावादो, उपपन्तमाणदिसं गर्च्छताणं पि माणखेचसमाणहाणमपानेद्गं अंतराले सन्तरय उज्जनलणीमानाः हिता माणुससेचमागुच्छताणं सम्मादिद्वीणं णिरयात्रासप्विद्धिः चदुण्हं सोगाणमसंखेज्बदिभागी चेत्र । अथवा णेरहयसम्मादिहः ( व)' पणरञ्जवदरसञ्ज्ञागासपदेसेहितो ( ण )' णिग्गमणपरिय, पेरहपपडिबद्धाणं मणुसगइपाओग्गाणुपुन्तीणं तिरिक्सगइपाओगगाः

गासपदेसाणं रञ्डपदराम्हि सन्वत्यामावादो । किं तदभावलिंगम ? समीकरणे कदे जिद्दे एक्कोरहयाबीसिवक्संमी एगसेदि सेडिविदियः है।दि, तो तस्स स्तेतफलं जगपदरं सेदिपटमचगामृलेण संदियमेत काठं तत्य द्वार्य्य उद्दें मारणंतियं मेल्लंताणं एदं खेचफलं मुदं

बनका गमन एक दिसामें ही, मधीन उत्पत्तिसंप्रकी ओर ही, नियत है ीमन करनेवाले भी जीवाँके मपनी उत्त्वन होनेवाली दिसाकी छोड़कर म मही होता है। उत्पन्न होनेकी दिशाकी जाते हुए भी जीवोंके सवने उत् समान भाग स्पानको नहीं मान करके भागरालम सर्थेत्र अनुवसन । बक्ताति होनेका समाय है। इसलिए समी नारकायासीसे मनुष्पक्षेत्रके

नारकायासम् प्रतिष्ठित होते हुए नियत होयकी मीर प्रयतिमान सम्यक्षि सामान्यमंत्र मादि बार होकाँका मसंब्यातयां माग ही है। भयवा, मञुत्योमें इन्दन्न होनेके कारण नारकी सम्यादिएयोंका वहाँके रीमान प्रनात्त्र वन्तरं भाकाशयदेशींस निर्ममन नहीं होता है, प्रणीकि इतिहरू म्युष्पानियायोग्यानुपूर्वायाते जीयोहः निवसातियायोग्यानुपूर्वायाते ज स्तिच्य बाहारा बहेरारेचा राज्यनरमें सर्वत्र भनाव है।

र्यहा— इस सर्वत्र भनायका दिन चया है, मर्यात् यह दिन मापारसे समाधान-इक ब नहा बनानेय सा यही स्परीन-एव है।

घभीडरस करनेपर याँव एक सारकाशासका पिन्कान एक जागमेनीकी हिन्दि बरोहुलम् कहिन करनेपर यह सार होता है, तो हमका श्रेषका

क्षपत बरान्त्र माध्याको स्थापन करनेपार यह स्थापन होता है। ता हमका क्षणा बहा रहेकर आरम्। बार मारणांनिकसम्बान करणार्थाः का गण्या गर ह ना है के ह सकरान शत्रप्रवास सामाय नाम दे

आपामा होदि । एत्य उत्सेषेण खेषकलं गुणिदे विरियलागादी असंसेजज्ञपुणं मारणंतियंसंग होदि वि युषे ण होदि, जिरपायानी ण एको वि एरिसिबिक्संमसिक्किं अस्पि ।
स्वसंदे परिन्धिज्ञदे ? 'चेरद्या असंजदसम्मादिष्टी सम्बप्देशि अदिदकाले विरियलोगस्स
असंस्वज्ञदिमागं पुर्गति ' वि मुचवयणादी । केषित्रो पुण केरद्यावासाणं विकरंत्रो
होदि वि युषे असंख्ञज्ञत्रोदणमेषी होदि । वं बहा- समःसगसरपाणविषे दृषिय सगसगितल-संसाण ओविष्टि एगविलेण रुद्धरेषमध्येष्ठज्ञत्रोदणविक्संमामा होदि । वं संख्जज्ज्ञत्वि गुणिदे एगविलम् सार्याविक्यंच होदि । यदं विकसंदाण गुणिदे एयसं मारणंतियरोसं होदि । यदं विरियलोगस्म असंख्ज्जदिमागं होदि । सन्विक्यंग्यायाणं वादक्रस्त्रायाणं सार्याल्यं स्वाप्ति । यदं विकसंदाणं प्राप्ति प्रसाणं वादक्रसम्भवेश्वज्ज्ञज्ञायणमेषं हेत्य एगार्ज्वरहस्स असंख्ज्जदिमागमेषं चेय होदि । इरो १ 'असंजदसम्मादिष्टिमारणंतिययोसणं विरियलोगस्स असंख्ज्जदिमागमेषं होदि,

ग्रेका—यहांपर मर्थात् उक्त क्षेत्रमें उत्सेषते क्षेत्रफलको गुणा करने पर ती तिर्यालोकसे मसम्यातगुणा मारणानिकक्षेत्र हो जाता है !

समाधान--- नहीं होता है, क्योंकि, इस प्रकारके विष्कम्मेंस सहित एक भी नारका-वास नहीं है।

र्श्वका-यह केसे जाना जाता है ?

समापान — 'मारको मसंयतसम्पर्कार सर्परमें की मेरेशा मतीतकासमें तिर्परनोक्के ससंस्थातचें माणमात्र क्षेत्रको स्टर्स करते हैं ' इस मकारके सूत्र यवनसे उत्त जाती जाती है।

र्शका-नारकाँके भाषासीका विष्यम कितना होता है !

समाधान — असंस्थात योजन प्रमाण होता है। यह इस प्रकारसे हैं — अपना अपना स्वस्थानसेन स्थापित करके अपने अपने दिखोडी संस्थामेंने अपवर्तन करनेपर एक विज्ञते उन्होंने असंस्थात योजन विष्क्रम और. आधापाधात हो जाता है। उसे संस्थात राजुमाने गुणा करनेपर वक विकास आध्य करके आपाधीनकस्थातमन क्षेत्र हो जाता है। इस प्रमाणकी विज्ञानी संस्थात गुणा करनेपर सकत अस्पाधिकस्थान हो जाता है। यह आराधिकस्थेत्र निर्योग्लोकक असंस्थातर्थे आगयमाण होता है।

सर्व नारकायासींका यनपुरु असंबदात योजनप्रमाण होकर भी दक्ष राजुपतरका ससंबदात्वां मागमाच ही होता है, चर्चाके, 'ससंवतस्ययादि नारकोडा माराजादिकः पद्मीन तिर्पेखीकके ससंबदात्वे भाग होता है 'येला प्रचन्नवन है। यहि कहीं भी यक विज्ञा होनकत राजुपतरके संबदात्वे भागममाण होता, तो ससंवतसम्पन्हि नारको

तो असंजदसम्मादिहिमारगैतियपे।सर्गं विरियलोगादो असंखेळगुर्गं होह्, विरियम्स बाहछादो 'मारणंतिपखेचबाहल्लस्स असंखेजगुणचादो । पदमपुद्रविसत्बामसेचे संक्री संसेअदिमागेण गुणिदे असंजदसम्मादिहिमारणंतियपोसणं तिरियलोगादो असंबेज्य होदि ति के वि पच्चवहाणं कुणीति । तण्य घडदे, सत्याणसेतं विलसलागाहि जेतिहरू लद्दसः वग्गम्लविष्यंमेण अदरञ्जुआयामपोप्तणखेतुवलंगादो । ण उर्दु गंत्ग तिरेचं गन्छंताणं बहुपेसणं, तिरिच्छं गंतुग उहं गच्छंताणं व, पुन्तुत्तेणेव विक्लंभेण मन्द्र वलंमादी । एवमुबबादस्स वि वचव्वं ।

पढमाए पुढवीए णेरइएसु मिन्छाइट्रिपहडि जाव असंजदसमा दिद्टीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंसेजदिभागो ॥ १६॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-प्रेदण कसाय-वेउव्यिय-मार्गतिय-उवगार**नर**-मिच्छादिद्वीणं परुवणा बद्दमाणकाले खेत्तसमाणा । सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेर् कसाय वेडन्यिसमुग्यादगदेहि भिन्छादिद्वीहि अदीदकाले चदण्डं लोगाणमसंसे अदिभाषी,

मारचान्त्रिकरवर्दानक्षेत्र तिर्येग्लोकसे शर्सक्यातगुणा होता, क्योंकि, तिर्यक्वतरके बाह्स्वे मारणान्तिकशेत्रका बाह्यय संसंख्यातगुणा है।

प्रथम पृथिपीके स्यस्यानक्षेत्रमें जगश्रेणीके संस्थानये मागसे गुणा करनेपर मर्वान सारदारि मारबाँका मारवान्तिकस्पर्शनक्षेत्र तिर्पाठीकले अर्थवयातगुणा होता है, देख किनने हैं। माचार्य समाधान करते हैं। किन्तु यह घटिन नहीं होना है, वर्योक्ष, शक्स हेरवही बिजहाजाहाओंने मन्वर्गितकर छत्प्रशाहित वर्गमूल्यमाण विश्ववमने मध्यात मार्व प्रमाण स्वर्धनसेत्र पाया जाता है। तथा, कार आकर निरछे गमन करनेवान शहरी क्रस्टेंबसेव बर्न नहीं है, जैसा कि निरछे जाकर छवर जानेवालांका वर्शनसंव बहुन नहीं है बर हि. पर्वेत्र है। विष्टम्बरारा मनन वाया जाता है।

इसी प्रकृति सामिष्ट्याराष्ट्रिभीत असंवन्धान्तराष्ट्रि नारकीते उपग्रहेत्वा मे स्थान करना सार्वित ।

प्रयम प्रथिशीमें नागकियोंमें निष्याशिष्ट गुणस्थानी लेका अनेवनुनावारी मृतको अभिने किनना क्षेत्र कार्य किया है। लोकता अमंख्याना मान कार्य है।। १६।।

स्वस्थानस्वस्थान, विदारयन्त्रस्थान, वेदनाः कथायः, विशिवद्यं बीर बार्राणः समुद्दाल नया उपयाद्दाल निष्याद्दां शहर बाह्य स्थान समुद्दाल नया उपयाद्दाल निष्याद्दां शहर बाह्य स्थान कान दे । क्वणातक्वत्यान, विश्वाक्यक्यान, वेदना क्वाव, श्रीद श्रीविवनक्र विभवत्तरि वारकीने अनिवादने सामान्यदेशक साहि यार साक्षाक असे नार्वित स्थान है।

अङ्गाद्भारों असंग्रेसणुणो फोसिदों । इरो ! असंग्रेज्यजोपणाविषयं मिण्यायासखादफलं ठिवेष सप्पात्रोगमसंग्रेजियलसलागाहि मुणिदे विरियलोगस्स जसंग्रेजिदिमागमेषयेलुव- 
छंभारों । मारणंविष-जववादगरेहि मिन्छारिद्वीहि अदीदकाले विण्हं लोगाणमसंग्रेजिदमागो विरियलोगस्स संग्रेजिदमागो, अङ्गाद्भारों, अद्योद्धिकाले विण्हं लोगाणमसंग्रेजिदमागो विरियलोगस्स संग्रेजिदमागो, अङ्गाद्भारों, अदिश्वसेरायस संग्रेजिदमागा । शुच्चदे— असीदितहस्सादियलोग्यलस्यवर्णपुदर्वीवाह्यालेम
हेद्विभजोग्यतस्य परस्पिटि सन्यकालं ग्रुष्टाची विष्कु जोयणसहस्यमार्थाण्य त्रद्वेद
विद्यलेगस्स संग्रेजिदमागो होदि, ' एपराज्यक्तेश स्वाच्यायादे वोयणलक्के
बाह्स्लो विरियलोगां वि जवदेसारों । जे पुण जोयणलक्कावाह्य्लाज्याद्वेति विरियलोगां
प्राणी विश्ववेदेवेण विरियलोगारी सादिरेपं मारणंविय-जववाद्वेते होरि ।

भीर भदार्रहीयसे मसंस्थातगुणा क्षेत्र रचन किया है। इसका कारण यह है कि मसंस्थात योजन विषक्तम्याले मारकायासीके पनगलको स्थापित करके तामायीग्य संस्थात विवासला-बामाँसे गुणा बरनेपर तियंग्लोकके असंस्थातये मागामाण क्षेत्र उपकृष्य होता है। मारणानिकसमुद्रात भीर उपपारात विध्यादिष्ट नारकोने भतीतकालमें सामाव्यलेक माहि तीन लोकोच मसंस्थातयां माग तियंग्लोकका संस्थातयां माग और महार्रहीयसे मसं-स्थातगुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है।

## श्रीका - यहांपर तिर्थेग्टोकका संख्यानयां मांगं कैसे कहा ?

समापान — एक लाख बस्सी इज्ञार योजन प्रयम पृथियोके बाह्स्टवॉसे नीचेका एक इज्ञार योजनप्रमाण देव नाराकेयोंने किसी भी समय नहीं तुमा है, ऐसा करके उक्त ममाणमेंसे एक इज्ञार योजन निकालकर रोग एक लाख कम्पासी इज्ञार वाहस्त्याले राज-मतरको स्थापित करके उत्संपके उनेवास संक करके मतराकारसे स्थापित करनेपर तियेंग्लोकका संक्षात्रयों भाग दो जाता है, नयींकि, "एक राजु दंद्याला, सात राजु छावा और एक लाख योजन वाहस्त्याला तियेंग्लोक हैं ऐसा उपदेश हैं। तिपु जो माचार्य एक लाख योजन वाहस्त्याला सियंन्लोक नीलार्याला तियेंग्लोक मामाण कहते हैं, उनके उपदेशालुसार तियंग्लोकले साधिक मारामानिक भीर उपयाद सेन होता है।

विशेषार्थ — यहां पर प्रथम मरहके विष्यादृष्टि अधिषा मारणानिक और उपराह क्षेत्र तियंग्लोकजा संवयतयां माग इस महार सिद्ध किया गया है — यदि इस विश्योद्ध के एक राजु लग्ने चींड्र प मोटार्कि सतमांद्र प्रमाण मोटे खंड करें तो १४२८५ योजन मोटार्स वाले थर, खंड होते हैं। त्रक यहि एक हाल सस्ती हतार पोजन मोटा और एक राजु हम्बी चींड्री प्रयम पृथ्वीके प्रमाणमेंसे नार्यक्ष्योंसे सदैय मस्दृष्ट एक हजार पोजन मोटा ण च.एदं घडदे, एदम्हि उबदेसे पडिंग्गहिदे लोगम्हि तिष्णिसद तेदालमे वषका मृत्य णुप्पत्तीदो, ' रुज् सत्तमुणिदा जगमेढी, सा विग्मदा जगपदा, सेढीए गुणिदकापरी घणलोगो होदि ' नि परियम्ममुत्तेण सन्त्राइरियसम्मदेण त्रिरोहप्तर्सगादो च । कर्तुमीर

अधस्तन माग पृथक् करके दोप १७९००० योजनके एक राजु सम्बे चोडे ४९ खंड करें ते प्रत्येक संदर्भ मोटाई ३६५३ है योजन प्रमाण होगी जो पूर्वेज तिर्धाहिक संबंधि मोटाईसे लगमग चतुर्णात पड़ती है। इस प्रकार यह समस्त क्षेत्र तिपैलोकका संक्ष्यतर्थ माग सिद्ध हो जाता है। किन्तु लोककी मृदंगाकार मान्यताके बतुसार उक्त सेत्र तिपंत्रोक्षा संब्यातयां माग नहीं, किन्तु तिर्यंग्लोकसे मी अधिक पड़ जाता है, क्योंकि, यहि यह एड म्यासपाठे गोलतथा पक लाख योजन मोटार्याले तिर्यः ओकके पूर्वप्रकार ४९. **कंड** कर हो प्र<sup>युक</sup> संद्र पक रातु ध्यासयाला गोल सथा २०४० हुँ योजन मोटा होगा। इसी प्रकार वर्तुजाबार होककी मान्यतासे उक्त मारणान्तिकक्षेत्रके खंद भी पक राजु व्यासवाले गोल तण ३५५% थोजन मोटे होंगे भीर उनका समस्त घनपाल घर्तुलाकार तिर्घग्लोकके घनकलसे द्वान न रहका श्रधिक हो जायगा !

## उदाहरण-

(१) आपत चतुःस्र तिर्थेग्लोक १×७×१००००० यो. = १<sup>°</sup>× र्१००००० ४ र रा, रा,

5, × 505'000 × 16 (२) उत्तः मारणान्तिकसेत्र १×१×१७९००० =

(1) वर्तुलाहार तिर्पेखोक १×३× $\frac{1}{2}$ ×१०००० =  $\frac{1}{2}$ × $\frac{10000}{90}$ × $\frac{1}{2}$ 

(४) वर्तुलादार छोकरी मान्यतासे उक्त मारणान्तिकक्षेत्र- $\frac{R}{3} \times 4060000 = \frac{R}{3} \times \frac{R6}{406000} \times \frac{1}{R6}$ 

इस प्रकारके उक्त क्षेत्रॉमें प्रथम दूसरेसे १३१ = ११६१ = कुछ कम चौगुना बर्गर संस्थानगुषा सिद्ध होता है। तथा, थीथा तीसरेस कुछ कम तुगुषा अर्थान् सानिरेड बिड होता है।

हिन्तु यह घटिन नहीं होता है, क्योंकि, इस उपदेशके स्थीनार करनेपर होता बार्स्य टीवसी देतारीम मनराजुमोदी उत्पत्ति नहीं होती है। दूसरे, ' राजुने सार्त्य हुन बरने दर अग्रेजी होती है, अग्रेजी हो अग्रेजी में गुणा करते पर अग्रेजि होती है बीर जनवनरको जमधेमीन गुना करने पर धनशेक होना है ' इस सर्व आवापीत नाम दरिष्ठमें स्वयं दिराय मी मान होता है । वंदीनुवर्तियं, वेदीनुवर्तियं

पंचेरित्रपतिष्वयोनिमती, ज्योतिका और व्यन्तरहेयोंके सुरावंपास-तिक, इनसुम्मराशियाने मयहारकारोंके महत्वपुत्र अनवहत्ये भाग देने पर ये उक्त सारित्यों लिए हो आयेती, किन्नू रेसा है नहीं, क्योंकि उन जीयोंके छहका ममाय है। (इतसुम्म माहि साशियोंके लिये हेखी तीलार भाग, पू. २४९.)।

दूसरी बात यह दें कि झ्यानुवेशनहारके ब्यावशनमें बहे गोर स्वयन्तर और ज़परिम विकस्य भमायको माध्य होते हैं. वर्गोकि, उक्त प्रकार से लोक वर्गविद्रीत्रशक्तिके समुख्यक होता है।

ग्रंका — तीन सी तेताशीत धनशतुष्माण क्षेत्रका नाम उपमालेक है। इतने भण्य पांच द्रप्योक्त भाषास्मृत क्षेत्र भित्र है। यदि चेता माना जाय, ता यद तव उपर्युक बचन पदित है। सकता है।

,भाटत हा सकता है।

समाधान — मही, वर्षोकि, उपनेषके बातावर्धे उपतार्था बागव्य उपलब्धि कहीं होगों है। मर्चानं यदि उपतारे वेतन किसी प्राचेता स्वित्य का प्राच जाताना, ती विद्यालया का स्वत्यालया के सिक्क देशकर उपनेषार्थित स्वत्यालया के स्वत्यालया का सिक्क वालक्ष्य उपनेष्यों के विद्यालया होने वर उपनेष्येक स्वाच प्रत्योचन और सामरीयम सिक्क वालक्ष्य उपनेष्यों के विद्यालया होने वर उपनार्थित असी प्रत्योचन प्राचील, प्राच और सामर्थक सिन्य पांचा आर्मा है। सन्दर्भ वर्षा क्ष्यालया के स्वत्यलय वर्षेक्य इस्पोंका साधारमूल सोक होना चाहिन, प्राच्या दवका बाल उपनार्थक हो नहीं सब सा

क क्षेत्र प्रतिविधिक वे विद्योशितकार्यक वृद्धि देव गतिकार त्में विद्यार के विद्यार विद्यान वि

सासणसम्माइद्वि-सत्याणसत्याण-विहास्यदिमन्याण-वेदण-कमाय वेड<del>म्बिर कर्न</del> तियसमुग्यादगद्शेचपस्चणा वर्द्धमाणकाने रोचममाणा। मर्याणमन्त्राण-विद्यसम्बद्धन वेदण-कसाय-वेउव्यियसमुग्यादगरेहि साग्रणसम्मादिद्वीहि अदीदकाने चदुर्ख केसान संसेन्जदिमागो, माणुसरोत्तादो असंशेन्जगुणी फोसिदो। एत्य पन्जबहुत्यपहरूमा निक

विशेषार्थ - यहां घवलाकारने लोककी यर्तुलाकार मान्यताके विरुद्ध यांच हेतृ हिं

है। जो इस प्रकार है-(१) मध्म पृथिवीके मिण्यारिष्ट जीवाँका मारणान्तिकक्षेत्र तिर्यंग्लोकका संच्याना माग कहा गया है। किन्तु यदि छोकको आयतचतुरस्त्र न मानकर बर्नुडाकार माना आहे तो यह क्षेत्र तिर्यंग्लोकसे द्वीन नहीं किन्तु साधिक हो जाना है। (देखी ए. १८४)

(२) परिकर्ममें राजु, जगधेणी, जगप्रतर और लोकता सम्बन्ध बनलाकर धनलोक्से ३४३ राजुममाण सिद्ध किया है। यह प्रमाण व व्यवस्था वर्तुलाकार लोकमें नहीं पाई अली।

(३) खुद्दावधमें पंचेश्ट्रियतिर्वेच, पंचेश्ट्रियतिर्वेचपर्यात, पंचेश्ट्रियतिर्वेच योनिम्ली, ज्योतियो धीर व्यंतर देयोंके अपदारकारोंको छत्तयुग्मराशि अर्थात् चारसे पूर्णतः माडिन होनेवाला कहा है, और इनसे जगप्रतर निरयशेष भाजित हो जाता है, जिससे जगप्रतर भी कृतयुग्मराशि सिद्ध हुमा । किन्तु पतुँलाकार लोककी मान्यनामें जगपनर अकृतयुम्मका पहेगा जिससे उक्त अवहारकालाँहारा यह पूर्णतः माजित नहीं होनेसे वे पंचित्रिय विवन पर्याप्त, योनिमती आदि राशियां संछद् हो जाती हैं।

(४) द्रव्यानुयोगद्वारके व्याज्यानमें गुणस्थानों व मार्गणास्थानोंके मीतर जीवी प्रमाण उपरिमाधिकरप और अधस्तनथिकरपों द्वारा मी समझाया गया है। किन्तु यदि लोडस उक्त प्रकार बर्तुलाकार मान लिया जाय तो उसमें धर्म य वर्गमूल प्रमाण नहीं प्राप्त होने

, में विकल्प बन ही नहीं सकेंगे। (देखी तीसरा भाग, प्रस्तावना पू. ४८)

(५) यदि यह कहा जाय कि तीन सी तेतालीस राजुरमाणवाले लोकको ह्यामा होक न मानकर केवल करिपत उपमालीक ही माना जाय, तो यह मी टीक नहीं है, स्प्रीक उपमयके अभावमें उपमाका अस्तित्य ही नहीं रहता है। तथा अंगुळ, पृथ्योपम, सारोप आदि जो अन्य उपमाप्रमाण माने गये हैं उन सर्वके शाधारुष उपमय प्रत हैं। अर प्रमाणलोकको भी काल्पनिक न मानकर सोपमेय ही स्वीकार करना आवश्यक है।

स्वस्थानस्वस्थानः विद्वारवत्स्वस्थानः वेद्नाः, करायः, येत्रियिकः सीर मारणातिः समुद्धातगत सासादनसम्पन्दष्टि नारकी जीवाँके वर्तमानकालिक स्पर्धनसेका क्रिका हेचमहराणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विद्वारवस्वस्थान, वेदना, क्याप और बीर विकसमुद्धातगत सासादनसम्पन्दछि नारको जीवान व्यतितक्षलमें सामान्यलोक शाहि वार होर्चेका असंस्थातर्या भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंस्थातगुणा क्षेत्र रण्डा किया है। वर्ष र

१ व-६ प्रायोः ' अदीदकाठे ' इति पाठी नास्ति ।

दिद्विसमाणा । मार्णितियसमृग्यादगदेवि विश्वं लेताणमसंसेज्जदिमागो, तिरियलोगस्स संसेज्जदिमागो, माणुसस्रेचादो असंसेज्जमुणो फोसिदो । एत्य कारणं मिच्यादृष्टीणं व वचन्त्रं ।

सम्माभिच्छादिहि-असंबद्धम्मादिहीणं अपणे। सन्यपदाणं चद्दमाणकाते सेष-भंगो । एदि देवि पुण्डाणिक अदीदकाले सत्याणसत्याण-विहास्विदेशत्याण-वेद्दा-कसाय-वेठिन्यस्कृत्यादगदेवि चदुक्दं लोगाणमसंबेठव्यदिमाणे, अदुद्ध-व्यद्यादो असंदेऽ-गुणो फोसिदो, प्राणिरयाश्वासस्स असंवेजयर्गगुलाणि टिव्य तप्याओगावि संदेज-विद्य-सलागावि गुणिदे विरियलोगस्स असंवेजयर्गमाणम्वदंत्यादो । मार्गाविय-व्यवादगदिदि असंबद्धममादिहीदि चदुक्दं लोगाणमसंबेऽ-बदिमाणे, अद्वाद-व्यवद्यादो ग्रामेणे प्राण्डाने प्राप्ते । इदे । सद्द्रवंतपुत्राहाणं राद्यक्षक्रमा विरियलोगस्य असंबेऽ-बदिमाण्युक्तंयादो । बदि वि उद्दं गेतृय सगरिवरगणमूलविस्यलेगम गणुलाम्य गण्डाले, वि तिरिवलोगस्या-संवेऽ-बदिमाणे, विरिच्छेण लद्दश्चेषस्य निलक्षेषयग्यमूलवृणिदसंदीय् संखेऽ-बदिमाण-पमाणपादो । एदमस्वपदं सन्वत्य जहान्यस्य जाणिकण जोजयन्यः।

पर्यायाधिकनयसम्बधी स्वर्धनक्षेत्रकी प्रक्रपण मिष्यादिश्यनस्यानके स्वयान है। मारबा-न्विकसमुद्रातनत नारकी सामाइनसम्बन्धि श्रीयोंने भनीनकालकी सर्वेदण सामावनोक सादि तीन लोकोंका सर्वस्थातयो भाग, निर्वेच्लोकका संब्यातयो भाग सीट प्रमुख्येक्षेत्र मर्सव्यातगुणा क्षेत्र स्वर्ध किया है। यहाँ पर कारण मिष्यादिष्यके समान कहना सादिए।

सम्यिक्तपादि भीर असंवतसम्यादि आरची अभिने सबने सर्ववद्दिशे वर्षात्र अस्यात्र प्रतिमादिक स्वात् स्वात् है। वर्षावतस्यवात विद्यात्र वर्षात्र स्वात् वे स्वत् स्वत्यात्र प्रतिमादिक स्वत्यात्र स्वत्यात्य स्वत्यात्र स्वत्यात्य स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्यः स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्यः स्वत्यात्यः स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्यः स्वत्यत्यात्यः स्वत्यत्यात्यात्यात्यः स्वत्यत्यात्यात्यात्यात्यः स्वत्यत्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्या

वापि अपर जावर सपने दिन्दे वर्गस्तवसाय विषयसी साथी स्टूटनारिसे साने हैं, तो भी नियंगीकमा अवस्थानको भाग है। क्यांकोच परण है, कर्मिट, हिन्दू करने सप्त कर संक्षा सामा, दिवसायती, अध्य वर्गम्त्य पुण्टिन कर केर्यास प्रकार वर्ष साथ है होता है। यह स्पेयह वर्षच च्यासमय कान करके हैं। इन कर्मिट्स

विदियादि जाव छट्टीए पुढवीए णेरङ्एसु मि<sup>ङ्</sup>छादिद्विसासणे संम्मादिद्वीहि केवडियं खेतं कोसिदं, छोगस्स असंखेञ्जदिनांगो <sup>॥१०॥</sup> सत्याणसत्याण-विहारवदिमत्याण-वेदण-कसाय-वेउविवय-मार्गितिय-उद्यहणः मिच्छादिद्वीणं उववाद्विरहिदसेसपदिद्विसासणग्रम्मादिद्वीणं च परविगाए सेननगर पद्माणकारुपडियद्वनादे। I

एंग वे तिष्णि चतारि पंच चोइसभागा वा देस्णां ॥ १८॥ एरच् ' वा ' सद्म्रचिद्र्यं तात्र वत्त्रइस्सामा । सत्याणमरयाण-विद्वारविष्रवाण

बेदण-कसाय-वेडस्व्यसमुम्पादगदेहि विदियादि पंचपुडविमिन्छादिङ्किसासणसम्मादिङ्कीहि चंदुण्हे लोगाणमसंखेजनदिमागो, अद्वादञ्जादो असंखेजजगुणा अदीदकाल फोबिदो। एव कारणं पुरुवं व वत्तव्वं । मारणतिय-उववादगदेहि मिच्छादिईहि अदीदकाले एगी बेहम मानो विदियाए पुढवीए फोसिरो । तदियाए वे चोइसमाना, चउत्थीए तिष्ण चोहसमाना,

द्वितीय प्रिथिवीसे लेकर छठी प्रथियी तक प्रत्येक प्रथिवीके नारिक्योंने निध्या होंटे और सांसादनसम्पन्दिए जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंस्थात मार्ग स्पर्श किया है ॥ १७॥

स्वरंशानस्यस्थान, विद्वारयत्स्वस्थान, वेदनां, क्षाय, विक्रयिक और मारणानिक समुद्रात तथा उपपादपदको प्राप्त सिच्यादाष्ट नारकी जीवाकी तथा उपपाद्वितहित क्रीर द्वीप पदमितिष्ठितं सासादनसम्यन्द्वष्टि जीवीकी स्पर्शनसम्बन्धी क्षेत्रमञ्जूषा वर्तमानक्ष्ये प्रतिबद्ध होनेसे क्षेत्रप्रहरणाके समान है।

उक्त जीवोंने अविविद्यालकी अपेक्षा चौदह भागोमेंसे कुछ कम एक, दो, वीक

चार और पांच माग स्पर्श किये हैं ॥ १८॥

यहांपर पहले 'वा' शब्द से स्वित अर्थको कहते हैं — स्वस्थानस्वस्थान, विहार यस्यस्थान, वदना, द्रवाय और वैक्रियिकसमुद्रातगत द्वितीयादि पांच पृथिवियाहे प्रिया र्रोष्ट और सासाइनसम्बर्ग्य नाराई योने सामान्यलोक स्वाद चार होकाँका समस्यादा भीग और अद्भारित असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श दिया है। यहांवर बार्य पूर्वके समान ही कहना चाहिए। दूसरी पृथिवीम मारणानिकसमुद्यात और उपानिक मिष्यादृष्टि नारको जायाने असीतकालमें एक यटे चौद्द ( र्षे ) माग सर्ग किया सीसरी पृथियोंके नारकी जीवोंने दो यटे चौदह (हुई) माग, चौथी पृथियोंके नार्राहरी

र दिशीयारित मानश्करण विष्याद्रशिमित लागादनस्यन्तिशिक्षीहरमात्रस्येवमात्राः, दूरा ही पर काशास पेर प्रदेशमाणा वा देशोनाः । छ . छि. १, ८,

पंचमाण चनारि चोदममामा, छडीए पंच चीहममामा, मध्यस्य बेरहयाणमगम्मले नेणगा कि वराद्ये । एदं मानदानस्मादिर्शेणं वि वसदर्व । जबरि उवसदी जस्यि ! किमक्मेदेशि-महीदकाल एशियं गोर्स होदि ? जिम्ममन-पोमणं पडि सम्मादिहीणं व जियमामाना । भोगग्निमंद्रालमेटिदा अपनेवज्जदीन मनुदा निष्ट्षहि कथे पुषिवजीते ? ण, तत्थ वि वेरंद्यानं विन्यमण-पर्वमं पढि विरोहामात्राहो ।

सम्मामिन्छादिहि-असंजदसम्मादिशीह केवडियं खेत्तं पोसिदं.

लोगसा असंबेज्जदिभागों ॥ १९ ॥

एदेनि दोण्डं गुणहागाणं चहमाणकाले सत्याणादिपंचनदाद्वियाणं मार्गातियपदाद्विय-अमं बदसम्मारिष्टीणं च परुषमाए रहेन मंगी । एदेहि चेव अदीदकाले सत्थाणादिवंचपद-

भारत बहे बांदह ( 👶 ) भाग, पांचवां पृथियोके नारविकाते चार वहे चाँदह ( 👶 ) भाग श्रीर छुटी पृथियोंके नार्शक्योंने पांच पटे चीदह ( ते ) भाग प्रमाणक्षेत्र स्पूर्श किया है। इस क्षमी प्राधिवर्षोंके सारवित्रोंका देशीन क्षेत्र नारवित्रोंके आगृश्वक्षेत्रसे क्षम वहना थादिए। इसी प्रवारसे उक्त प्रधिविधोंके सर्थ प्रवान साम्राहनसम्पादिए अधिका भी रपर्यानक्षेत्र करना चाहिए। विदोध वात यह है कि उनके उपवादवह महीं होता है।

र्राष्टा- उक्त नाराहियाँ हा अर्तातकालमें इतना (सुत्रोक्त) स्वर्धनक्षेत्र वया होता है ?

समाधान-इरुमा अधिक स्पर्धातक्षेत्र इसालिए होता है कि उक्त पशिविवीमें तिर्गामन भीर प्रवेदानके प्रति अर्थाम जाने और गानेकी ब्रोवश स्वयंशि जीवींके समान मिक्यारिए आंगोरा नियम नहीं है।

शंका - भोगभनिकी स्थान से संस्थित असंस्थात औष समूद्र नार्राक्षणीने कैसे कार्या किये हैं है

समाधान-नहीं, क्योंकि, यहांवर भी नारक्रियोंका निर्ममस और प्रवेश होनेमें कोई विरोध नहीं है। अर्थान पारणान्तिकसमहातकी अवेक्षा नारकी जीवीका उका क्षेत्रमें प्रवेदा शीर निर्मामन यम जाता है।

द्वितीय प्रथिवीते लेकर छठी पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके सम्परिमध्यादृष्टि आर असंयत्तमस्यादि नारकी जीवोने कितना क्षेत्र स्वर्श किया है ? लीकका असंख्या-

भवां भाग स्पर्श किया है।। १९ ॥

सभ्यतिक्याद्वि और मसंयतसभ्यव्हि इन दोनी गुणस्थानीके स्वस्थानस्वस्थान. विकारकारकारात. केंद्रता, बनाय और वैकिकिसमादात, इन पोच पहाँपर स्थित मारकी सीवीकी तथा मारणानिकपदस्यित अवेयतसम्बद्धि जीवीकी पर्तमानकालमें स्पर्शनकी प्रस्पाणा क्षेत्रप्रहरणाके समान है। दिसीय प्रथिशीसे लेकर छठी प्रथियी सकके उक्त गण- हिदेहि मारणंतियपदहिदअसंजदसम्मादिद्वीहि य विदियादि-छद्विपद्वविवेसेसिएहि चर्द्स होगाणमसंखेरजदिभागो, अष्ट्राइउजादे। असंखेरजगुणो फीसिदो । कारणं पुन्तं व वतन्तं। विदियादि-छसु पुढवीसु असंजदसम्मादिद्वीगमुनवादो गतिय ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं क्षेत्रं पेरिंदं,

लोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ २०॥

एदं सुत्तं बट्टमाणखेत्तपरूवयंं, उविसिम्रसुत्तेण अदीदाणागदकालविसिद्धसेतपर्व-णादी । एदस्य परुवणाए खेत्तनंगी ।

छ चोइसभागा वा देसृणा ॥ २१ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेजिवयसमुग्वादगदेहि निन्छा दिद्वीदि तीदाणागदकालेस चदुण्डं लोगाणमसंखेजनदिभागी, अहाइजनादी अमेसेन्यपुर्वा की सिद्दी । एत्य कारण पुन्यं व वचन्यं । एसी 'वा' सहस्यो । मारणतिय उवनाहरारी मिच्छादिद्वीहि तीदाणागदकालेस छ चोहसमामा चिताए जीपणसहस्सणूण हिंद्वनवृहि

स्यानपती स्यस्थानादि पांच परस्थित जीवीने भीर मारणान्तिकारहरियन असंवन्तारानि अधिने मर्गतन्त्रात्में सामान्यलोक बादि चार लोकीका अवश्यानयां मान मीर मर्गा हायसे असंविकातमुणा देख रुपर्रा किया है। इसका कारण पूर्वके समान ही कहता बाहिए। द्विनीयादि छद पृथिवियोंमें असंयतसम्यग्दिष्ट आयोका उपपाद नहीं होता है।

मात्रवी पृथिवीमें नारिह्योंने मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र सार्व किया है!

स्रोकका अमेल्यावयां माग स्पर्ध किया है ॥ २० ॥

यह गुत्र धर्नमानकालिक क्षेत्रकी प्रकपणा करनेवाला है, क्योंकि, भागेके गुकारा सतीत सतामत दालविशिष्ट क्षेत्रको प्रमूपणा को गई है। इसकी भगीत् बनेमातकार्यक दारीनशेवदी बदयमा शेवदे समान है।

मात्रभी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि मारकियोंने अवीतकालकी अवेक्षा बुछ बन हर

**प**टे चीदह माग स्पर्ध किये हैं ॥ २१ ॥

स्यस्य नस्यम्थान, विदारवास्यस्थान, घेदना, क्याय भीट वैजिविकानुवानना मिरपारार नारकी भीवान अनीन और अनागन कालम सामागलोक आहि बार हो है। समेक्यानवा साम भीर सहारहिष्मि समेक्यानगुणा क्षेत्र कारी किया है। यह यर भी हात पूर्वदेशमान करना चाहिर। यहा 'चा' शहदा मध्ये है। मारणानिकममुना हर हरपाद परान सिध्य राष्ट्र मारडी प्रायोग मनीन भीर भनागनकलमें विश्व पृथितीहेडड

र करण्या । इ.स्था जिल्ह र जिल्लेब्स्ट उपनेत्रवातः यद पतुर्वेदवाता वा देवेना । इ.सी. है.सी 4 x'eg : 4444 ' (8 44- )

सहस्मिद्द छला फोसिदा। ण फेबर्स हेहिन्सबोयणेहि चेबं छला, किंतु बल्णो वि देशो स्रोमामार्शीण अन्मेनरे वेग्द्रण्टि अन्युची अस्ति । सं कपे णब्बदे ? 'विदिवाण पुढवीण एपो चोरममाप्ती देवला 'हिंद सुचवरणादा । अन्यहा प्रदस्त देवलचे विदिव्ण संपुन्ती एपो चोरममाप्ती होज्ज, निवाण जीत्यमहत्त्ववीलां । एरस पुणी केल स्वेचलूली एपो चोरममाप्ती के पुण बुन्यदेनिलास्वाद्यासामाल्युद्धिन-विनिद्धितिक्तिस्वाद्यास्यास्वाद्यास्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वाद्यास्वा

सासणसम्मादिष्टि-सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, टोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२ ॥

हजार पोजनते कम भीर कपासन पार पृथिवियासम्बन्धी पार हजार योजनीने कम छह कटे भीदद (क्रि) भाग प्रमाण देख रामी किया है। यहां पर केपल पृथिवियोंने स्परसन एक एक हजार योजनीते ही कम क्षेत्र नहीं समझना, किन्दु स्वय भी देश (क्षेत्र) लोक-माहीक मीतन साहिकारी स्प्रमाण (सम्प्रण है

ग्रंका-पद केसे जाता ?

समापान — दिनाय पृथियां ना स्वर्तान विशास वक्त यह चीन्द्र आग है ? एत स्वर व्यवसंत उक्त वात जाती जाती है। यदि वेता न माता आय, तो एत पृथियीका देशोन हेश्व पिडिन भणीत् प्रतिमत होजर सम्पूर्ण पत पहें चीन्द्र (र्ह्) आग हो जायगा, धरों क विश्वा पृथियोश पत हजार योजन उत एक राजुमें ही मविष्ट है।

शंका-यहाँ पर एक बंदे चौदद माग किस क्षेत्रसे कम कहा है।

समापान-पेसी मारांका करनेपर उत्तर हेते हैं कि गरकातिवायाग्यागुपूर्व और पंचित्रप्रविविधातित्रायाग्यागुपूर्व, इन दोनोंसे धनिषद्ध क्षेत्रको छोड्कर अन्य रोप क्षेत्रसे कम वहा है।

शंका-पायुसे रके हुए सर्वक्षेत्रसे कम उक्त क्षेत्र वयाँ नहीं कहे !

समाधान —नर्हा, फ्योंकि, बहांपर भी भातुपूर्धनामकमैके विपाकके मायोग्यक्षेत्रके संभय होनेमें कोई विरोध नर्हा है।

सावनी पृथियीके सामादनसम्यग्हाट, सम्यग्निस्पाहीट और आसंयदसम्यग्हाट नागिक्योंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? टोकका असंख्यातमां भाग स्पर्श किया है ॥ २२ ॥

१ म मती ' पनेह्दी ' दृति पादः ।

य केवीसमिल्लाकस्याहरूयेयमागः । स. सि. १, ८.

. एदेसि तिष्हं गुणहाणाणं सत्तमाणः पुडवीणः मार्ग्गतिय-उपवादपदा जन्मि। नेवर्ग पद्टिपहि तिब्बिगुणहाणजीवहि तीदाणागद्वहमाणकात्रेमु नदृष्टं लेगाणमसंसेज्बदिस माणुसखेतादो असंखेडजगुणो कोसिदो । कारणं प्रवयं व बत्तव्यं । तिरिक्खगदीए तिरिक्खेस मिच्छादिशहि केवडियं सेतं भौति

ओधं ॥ २३ ॥

ंसत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मार्गितिय-उपवादगदेहि मिन्छादिद्वीहि तीदाकार बङ्कमाणकारेख सन्वरोगो फोसिदो । विहास्वदिशस्याणपरिणदेहि वीदाणागद्दम्हमाणका तिण्हं लोगाणमसंखेउजदिमागो, तिरियलोगस्स संखेउजदिमागो, अद्राइज्जादो असंवेजगु फोसिदो । असंखेजजेसु समुद्देसु तमजीवविरहिदेसु कर्घ विहारविदमत्याणपरिषद तिरिक्खाणं संमत्रो १ ण तत्य पुच्यत्रेरियदेत्राणं पयोगदो विहारविरोहामात्रादो। अदीहरू

इन तीनों ही गुजस्यानयर्ती जीवोंके सानवीं पृधिवीमें मारणानिक *और उप*ण ये दो पद नहीं होते हैं। दोप स्वस्थानादि पांच पदींपर थियमान उक्त तीन गुणस्थाना जीवाने बतीत धनागत थीर वर्तमान, इन तीनों काटाम सामान्यलोक बादि बार लोडी वसंख्यातथां माग और मनुष्यहोक्से वसंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। सका का पूर्वके समान ही कहना चाहिए।

विहरंतितिरिक्खेहि छुत्तेखेचायणविहाणं चुचेद-पुच्चेवरियदेवपयोगादे। उविर जीयणहरू

तिर्यंचगतिमें वियंचोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! जीव समान सर्वेलोक स्पर्श किया है ॥ २३ ॥

स्यस्थानस्यस्थान, येदना, कपाय, मारणान्तिकसमुद्धात और उपपादगत मिरणाई तिर्येच जीवॉन मृत्र मिवप और वर्तमान, इन तीनों काटॉम सर्वेटोक स्पर्ध हिंदा है विद्वारयतस्य स्थानसं परिणत तिर्येख मिध्यादृष्टि जीयोंने अतीत, अनागत और वर्तमान सीनों कालोंमें सामान्यलोक थादि तीन लोकोंका लसंक्यातयां माग, तिर्यन्लोकका संस्थात भाग और अदाईद्वीपसे असंस्थातगुणा क्षेत्र स्वर्श किया है।

श्रंका - त्रस जीवांस विरक्षित असंख्यात समुद्रामें विहारवन्स्यशानसे परिवर !

तियेचोंका अस्तित्व केले संभव है ? समाधान — नहीं, पर्योक्त, पूर्वभवके वैरी देवोंके प्रयोगसे विहार होतें हैं। विरोध नहीं है। और इसलिए वहां पर उनका अस्तिन्य भी संभव है।

अब अतीतकालमें विद्वार करनेवाल तियंचींस स्पर्श किय गय क्षेत्रके विवाहरें 

१ तिर्पंगती तिम्बा तिर्पेनेवस्पादशिमिः सर्वतीकः स्त्रष्टः । सः वि. १, ८० २ अग प्रती 'त्तच ' इति पाटः ।

षितमेर-बुलमेर-बुंडस-रक्षम-माणगुणर-णगिद्यरपन्यदादिरुद्वरोषं मोतृष सन्वं फुसंति षि स्वराजीयलबारहे रन्युपर्र ठिवेय उद्गमेगूणवैजासगंडाणि करिय पद्गागारेण ठरदे निरियनोगाम मार्गमदिमार्गमचार्ग होदि । वेडव्यिममुख्यादगदार्ग पदमायकाले संवर्भगो । शीदाणागदकालेषु निष्दं लोगाणं संनेअदिमागो, दोहि लोगेहितो असंखेज्ज-शुणा पातिदो । कारणं, बाउकाइयजीवा पहिदोवमस्त असंग्रेरजदिभागमेचा विजन्यण-परामा बहुमाणकाले होति', से रज्जुबद्दं यंचरज्जुबाह्नं अदीदकाले फुसंति सि !

सातणसम्मादिशेहि केवडियं खेतं फोसिदं'. लोगस्स असंखेजदि-भागों ॥ २४ ॥

ष्ट्रस्य गुचस्स अत्यो खेचन्द्रि पस्विदो !

t. e. 34. 1

सत्त चोदसभागा वा देसूणा ॥ २५ ॥

एत्य ' वा ' सर्हो पुरन्ये- सत्याणसत्याण-विहारविहसत्याण-वेदण-कसाय-वेडान्त्रियसमुख्यादगद्रसामणसम्मादिद्वीदि चीदाणागद्रकालेस विष्ट्वं लोगाणमसंखेअदिमागो.

मेरप्रमाण, तथा बुलायल, बुंबस्तिरि, दबरगिरि, मान्योश्वर और मगेन्द्रवर वर्षतादिकाँक्षे यद रोवको छोड़कर सभी तिर्वेष सर्व द्वीप भीर समुद्रोका स्पर्श करते हैं। इसलिए एक साम बोजन बाहरपवाले राजुमनरको स्थापन कर ऊपरको ओरसे उनेवास खंड करके मनराचारसे स्थापित करनेपर निर्यंग्डीको संस्थातय मागप्रमाण देख हो जाता है। वैक्रि विकसगुद्रातगत निर्पेकीका रपरान पर्तमानकालमें क्षेत्रमरूपणाके समान है। सतीत सीर बनागतबाटमें सामान्यरोक बादि तीन सोझीका संब्यातयां माग और तिर्यग्रोक तथा सनप्यसोक, इस दीती होकीसे मसंख्यातगणा क्षेत्र क्यूरी किया है। इसका कारण यह है कि पस्योपमके भसंक्यातम भागमात्र यायुकायिक जीव पर्तमानकालमें विकिया करनेमें समर्थ होते हैं, और ये पांच राज़ बाहरववाले पक राजुमतरममाण क्षेत्रको सर्वातकालमें स्पर्श करते हैं। सामादनसम्पर्दाष्टे तिर्पेच जीवीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असं-

रुपातको भाग क्पर्श किया है ॥ २४ ॥

इस सबका धर्ध शंत्रप्रस्थणामें कहा जा खुका है।

सामाइन्सम्पर्राष्टि तिर्वेचीने भृत और भविष्यकालकी अपेक्षा दुख कम सात बटे बीटह भाग स्वर्ध किये हैं ॥ २५ ॥

दस सबसे स्थित 'या' शादका अर्थ कहते हैं -- स्यस्थानस्यस्थान, विहारपत्स्य-स्थान, यहना, क्याप और धेनिविश्वसमुद्धातगत शासादनसम्बन्धि जीवाने भतीत और

<sup>.</sup> बामान्त्रमध्यानिमिताबस्यामः वधवानः स न चार्यसमाना वा दशीनाः । स. बि. १, ८,

ंतिरियलीमस्स संसेज्जादिमागो, अष्ट्रार्ज्जादो असंगेजगुगो फोनिदो। एय नात्र सासणसत्याणसत्याणसेचाणयणविवाणं युज्यदे— स्वृण-कालोदग-मंबबुरमणस्य सिससम्बेदेस णरिव 'सरवाणसत्याणसासणा, तत्य पण्णनवनजीवाणममावादो। सर्वः अतिव सत्याणसत्याणसामणा, तत्य तस्जीवाणमृप्यनिद्रमणादो। सत्यायप्रस्यण सन्ये दीवा तिष्ण सम्बद्धा चीदकाले पुसिज्जीति चि सेसिमाणयणहिमिमा पर्वण अंत्रदीवो खेसागिवेदण—

सत्त जब सुष्ण पंच य राष्ट्राय चंद्व एक बंच सुष्णं च ।

जब्दीवरसेदं गणिद्कलं होह गायावं ॥ ४ ॥ अनागतकालमें सामान्यलोक सादि तीन लोकोका ससरयातयां माग, तियंग्लोका तियों भाग और अदार्देशियों ससंव्यातगुणा क्षेत्र स्वर्ध किया है। सब यहांवर विवन

्द्रोनेवाले त्रस जॉर्वोका लमाय है। हां, सर्पद्रीपॉम स्वस्थानस्वस्थान पहवाले सा सम्पग्दिए जीव -द्देशि हैं, पर्योक्ति, यहांपर जसजीयोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। स्व स्वस्थानपद्दियत सासादनसम्यग्दाए तिर्येच जीवोंने सर्वद्रीप और तीन समुद्र म्वीव -स्पर्च-क्रिये-हैं, रसलिप उनका स्पर्चनक्षेत्र लानेकेलिप यह प्रक्रपणा दी जाती प्रमृद्वीपके क्षेत्रका गणित करनेपर—

सात, भी, शून्य, पांच. छह, भी, चार, एक, पांच और शून्य अर्थात् ७२०५६५ वर्षयोजन प्रमाण अम्बूहीपका क्षेत्रफल होता है, पैसा जानना चाहिए ॥४॥

बंर्देवस्य इष्ट्रमण्डं ॥ ११३ 🛊 वि. सा.

एदस्स एया सलागा होदि १ । एदेण पमाणेण लवणसमुदे कीरमाणे सी जंब-दीवादी खेलगणिदेण चडवीसगणी होदि। वर्ष प-

> बाहिरसर्वयमो अन्मंतरसूर्वगमप्रिहीको । जेबदीवपमाणा खेडा ते होति चउवीसा ॥ ५ ॥

एदीए गाहाए सन्धेसि दीव-समुदाणं प्रथ प्रथ खेचफलतलागाओ आणेदन्वाओ । तत्य अद्वर्षं खेचफलसलागाओ एदाओ-

## 1 2 1 28 | 288 | 202 | 200 | 280 08 | 802 28 | 294002 |

लवणसम्रहत्वेचफलवुष्पच्यो पमाणेण एगं होदि। लवणसमुह्यमाणेण धाद्दसंहिहः कीरमाणे छग्नणो होदि । कालोदयसमुदो अङ्कावीसगुणो होदि । पोक्खरदीवो बीसुचर-सद्गुणी होदि। पीक्खरतमुदी चदुतदछण्णउदिगुणी होदि। एवं लगणसमुद्वंबृदीव-

इसकी वर्धात जानुद्धीपके उक क्षेत्रफलकी एक शलाका (१) होती है। इस ममाणसे स्वणसमृद्रका माप करनेपर यह अस्कृशियके क्षेत्रफारले चीबीस गुणा होता है। कहा भी है-लयजसमुद्रकी बाह्यसूचीके वर्गको उसीकी माभ्यन्तर सुवीके बर्गके प्रमाणसे स्त

इस गायाके अनुसार समस्त द्वीप और समुद्राँकी पृथक् पृथक् क्षेत्रफल बालाकार्य

करनेपर अन्त्रशिपके क्षेत्रप्रसप्रमाण उसके चौकीस खंड होते हैं # 4 #

हे माना साहिए। उनमेंसे थाठ द्वीप समुद्रोंकी सेक्फल शताकार इस मकार होती हैं-१, दप्र, १४४, १७२, २८८०, ११९०४, ४८१८४, १९५०७२.

उदाहरण-(१) स्वणसमुद्र बाह्मस्वी ५ साख , आभ्यन्तरस्वी १ साख योजन. 41 - 11 = 44 - 1 = 28.

(६) भातकी लंडद्रीय बाहासूची १३ लाख, मान्यन्तरसूची ५ साच योजन. १3' -- 4' == १**६९ --** २५ == १४४.

(३) कालोदधि-महासूची ६९ हाज, माभ्यन्तरसूची १३ लाल योजन. २९' - १६' = ८४१ - १६९ = ६७२। इस्यादि ।

श्वणसमुद्रका उत्पन्न हुमा क्षेत्रफल मधने प्रमाणकी मधेका यक होता है। सदय-समुद्रके प्रमाणसे भातकीसंहका प्रमाण करनेपर धातकीखंड छह गुका होता है। बालोशिक समद्र अवार्तसमुणा है । पुष्करवरकीय एक सी वीतमुणा है । पुष्करवरतमुत्र बारसी द्रवाबने गुणा है। इस प्रकारले स्थणसमुद्रको अन्तुद्वीपप्रमाणदासाकाओंसे द्वीप और सायरीसाहन्त्री

र बाहिरवर्ग्यामी अध्यानस्वरूपायपितियो । सनसात करिनिया हिटे बाँगवरदीरविसंवरवाण हा हि. व. क, इद. बाहिरपूर्वकां सम्मारपूर्वकारमिहित । अनुवानविष्यं तिस्वदेवाने अवावि । वि. ता. ३१६.

सलानाहि दीव-सायरबंधूदीवमलागाओं ओनद्दिय गुजनास उप्पादेदचा । १। Cरगंदानमे जीवहार्ग १२०।४९६।२०१६।८१२८ । एवं उत्रिर्मुणगारमलागाहि लवणमप्रसंबृद्धिकः गुणिय जंबूदीवजोयणगदराति गुणिदे इच्छिददीव-मायराणं संगहनं होदि। संगीह ह चेत्र खेत्तकसमाणेदुमिन्छामो ति अत्ययो इन्छिद्वसमुद्दार्ग स्वराममुद्दुपत सलागाणयणाविषाणं वृच्यदे- लवणादयसमुदादो कालोदयसमुदी सेवक्टेण अहारीमण विन्दि उप्पाहकतमाणे दो रूचे ठविय पडमस्य बट्टी णान्य वि एमस्वमवणिय संवेगर

(३) कालोइकसमुद्रकी ममाणसलाहा ६७२ । 💖 = २८गुनहार हैस मकार स्थापन की गर्र गुणकाररासाकार्मों स्थापसमुद्रकी जार्द्वीरामान उदाहरण—(१) घातकीदीव-गुणकारदालाका ६। ६ x २४ x ७९०५६९४१५० घातकीडीपका क्षेत्रकडा (२) कालोदाधि-गुणकारशलाका २८; २८ x २४ x ७२०५६९४१५० कालोइधिका क्षेत्रफल। (३) पुष्करहोष-गुणकारशलाका १२०। १२० × २४ × ७९०५१९४६५० पुष्का द्वीवका क्षेत्रकल। हत्वाहै। भव केवल समुद्रोका ही क्षेत्रकल निकालना चाहते हैं, इसलिए अपने अपने सर समुद्रोको स्वयासमुद्रममाण गुणकारमासम्बद्धाके निकालनेका विधान कहते हैं—

विरित्य सोलस दाद्व अन्मोन्जन्मामे करे सोलस होनि । वे दुर्शीय चनारि जानि कालोदयसपुरस्त ग्रहाबीस गुणमारसलामा उप्पन्तीन । वेहिं तनणोदयमुद्दस्त जम्मूद्धीपममाण दादाकाएँ अपयोतितकर गुणकार उत्पन्न करना वाहिए जो इस महार बोर हैं— १, ६, २८, १२०, ४९६, २०१६, ८१७८। चेदाहरण—(१) खगणसम्दर्भी नाम्बूटीपराखाकाएं २४। छ. स. की ठीव सा. समन्त्री

रालाकार्ष २४ । ३६ = १ लयणसमुदकी गुणकारराजाचा ।

(२) पातकसिंडडीएको प्रमाणराजाका १४४। १९४= ६ गुणकारराजाकारी

शहाकाओंको गुणित करनेपर पुनः उसे जम्मूदीपके मतरामक योजनांसे गुणा करनेर इच्छित झीर सीर सागरीका क्षेत्रफल आता है।

स्वणोदकसमुद्रसे कालोदकसमुद्र शेषणलकी अपेसा अहास मुणा है। हवे क्ष्माद करनेके लिय दो रुपको स्थापनकर मयमसमुद्रकी खुदेश अद्वारस गुणा ह । । क्ष्मादर रोग तक प्रमुक्त स्थापनकर मयमसमुद्रकी खुदि नहीं है, इस्रोट्स प्रकृत हमहर हो र एक कपका विरायन कर प्रयमसमुद्रको छोड नहीं है, इसाउप पर साछह ही होते हैं। जारें कार था ५४, ६५का १९एल कर उसके ऊपर सोल्ड देकर परस्पसे गुनव ६५०० तील्ड ही होते हैं। उन्हें दूना कर उनमेंसे चार कम कर देने पर कालेदकसमुददी मार्गि

स्वेतक्ते मुनिदे कालोद्यमधुद्दस सेवक्तं होदि । वनगवमुद्दारो पोकसासमुद्दो स्वेतमुनिदेव चवास्तिद्दछण्ण उदिमेत्तमुनो होदि । तम्द्रि मुगगरे आणिज्ञमाणे विभिन्न समुद्दा क्वास्तिदछण्ण उदिमेत्तमुनो होदि । तम्द्रि मुगगरे आणिज्ञमाणे विभिन्न समुद्दा क्वास्ति क्वासि क

उदाहरण-कालोदिय लयणसमुद्रसे दूसरा समुद्र है, भनः कादालाका २.

२-१-१: 1-१६: १६×२-४-२८, बालीइवतम्बुद्धी गुणवाधातात. व्यालीद्वसमुद्दधी गुणवाधाताता. व्यालीद्वसमुद्दधी गुणवाधातात्रामा द्वारा एक्यमसमुद्रके शिवकली: गुणा परंक पालीद्वसमुद्रको श्रम्भ का जात है। छवणसमुद्रकी मेपा पुष्करसमुद्र भीत्राम प्रकार को असी पाला पुष्करसमुद्र भीत्राम प्रकार के स्वीत पाली एक्यमिय पुष्करसमुद्र भीत्राम है। स्वालीद्व सीत्रामीत स्वालीद्व सीत्रामीत स्वालीद्व सीत्रामीत स्वालीद्व सिरतामी हो। वर्षास्त स्वालीद्व सीत्रामीत स्वालीद्व सिरतामी ही। वर्षास्त सामित सामित कर प्रकार मेपा प्रकार मेपा प्रकार सीत्रामी ही। वर्षास सीत्रामीत सामित सामित अस्त सीत्रामीत सामित अस्त प्रकार सीत्रामीत सीत्रामीत सामित अस्त सीत्रामीत सीत्रामीत सामित सामित सीत्राम सीत्र

उदाहरण-पुष्करसमुद्रकी भागशालाका है.

1-1-1: 1 1 1 2 2481 248 248 2 482

४ ४ ४ विस्ताराति २। रे १ = १६ १ ५१२ - १६ = ४५६ पुष्पस्यपुरशे गुणवाररातावार. रम गुणवारसातावारी स्व गुणवारसातावारी से व्यवसायुद्धे क्षेत्रकारों गुण्या वस्ते पर गुणवारसात्रवारी के स्व गुणवारसात्रवार के स्व गुणवारसात्रवार के स्व गुणवारसात्रवार के स्व गुणवारसात्रवार के स्व गुणवारसात्रवारसा

बारमस पर कम करके राज्या विस्तानकर भार मणक करके मान साहर हकर परस्पर गुणा करनेपर बार हजार छशानवे होने हैं। उसे दुगुणावर कृषक क्याप्यकर पहेंचेची विरक्षनगरिकों विरादित कर कपके प्रति बार वेकर परस्पर गुणा करनेपर गुणे करे चउसड्डी उप्पन्नति । पुनो पुन्धिनलदुगुणिदराक्षिटित एदमयणिदे चउरचम्<mark>यस्</mark> गुणमारसलामा होति । एदाहि लवणसमुद्देवेचकले गुणिदे चउरयसमुद्देवकले होरि। एवमणेण बीजपदेण सब्बसमुद्दार्ण खेतकलमाणेदव्यं ।

तत्य सन्यपिन्छमस्स सर्यग्रमणसमुद्दस खेतकजागयंग मग्गदे- दीव-माणः क्वाणि अद्धिदे समुद्दसंखा होदि । ताओ समुद्दसञागाओ रुव्गाओ करिव विस्तिष क्वं पिड सोलस दाद्ग अग्गोणणन्मत्ये कदे जोपणलम्खनगोग छचीतमदस्वादिग तितहस्सपदुप्पणेण जगपद्रसिह मागे हिदे एगमागो आगन्छिदे । युगो पर्द दुगुणिय पुघ हृतिय पुविनल्छित्ररुणं विरत्लिप रूवं पिड चतारि दाद्ण अप्णोज्यनस्व कदे छप्पण्यजोपणलस्वाए सेटिं खंडेद्ग एगबंडमागच्छिदे । तं पुविनल्डहुगुणिद्राजिष्द अविष्दे सर्यभूरमणसमुस्सद् गुणगारसलागा होति । एदाहि स्वयमसुद्दस्वेचक्रले ग्रीवें

चाँसट संग्या उत्पन्न होती है। पुनः पहलेकी तुगुणित राशिमेंसे इस राशिकी कमा देगर चीचे समृदकी गुणकारशलकार्य हो जाती हैं।

उदाहरण—चतुर्धसमुदकी क्रमशलाका ४।

४x४x४ १११=६४; ८१९२-६४=८१२८ चतुर्थं समुद्रकी गुणकारशहासः

इन गुणकारवाटाकाओंसे छंबणसमुद्रके क्षेत्रफटको गुणा करनेपर बीधे समुद्राक्ष क्षेत्रफट हो जाता है। इस प्रकार इस उक्त बीजपदसे सभी समुद्राका क्षेत्रफट विकारण चाहिए।

उनमें सबसे अनिम जो स्वयम्भू संगाससुद है, उसके क्षेत्रपाठको निकारने ।

विधान कहते हैं—सर्वहीय और समुद्रोंकी जितनी संख्या है, उसे आधा करने पर सर्व समुद्रोंकी संख्या हो जाती है। उन समुद्रशालाकामोंकी एक कम करने विराजनकर और प्रत्येक रूपके प्रति सोलह देकर आपसमें गुणा करने पर तीन हमार कर सी छातीससे गुणित एक लाल योजनके वर्गसे जगमतरमें भाग देने पर पर माग मान है। पुना हसे दूना करके गुणक स्थापित कर पहले से विराजनकी विराजितकर प्रति करने पर स्थापित कर पहले से वार देकर मागसमें गुणा करने पर छपन लाल योजनके प्रमाणसे जगमेजीको लीत करनेपर कर्म कर के स्थापसमें गुणा करने पर छपन लाल योजनके प्रमाणसे जगमेजीको लीत करनेपर कर्म क्षेत्र करनेपर कर्म कर स्थापत कर क्षेत्र का जाना है। उने पहले हुगी की गई राजिमों स्थाप देमपर स्वयंभू सब समझकी गुणकारवालायां है। जातों हैं।

सर्वभरमणसम्बद्धसः खेलफळं जगपदरस्य वासीदिभागी सादिरेगी होदि'। एत्य करणगाहा-

सोल्ह सोल्साई गुणे रूप्णोशहितलागसंचा वि । दगणिह तरिह मोहे चटकपहडं चडकं त ॥ ६ ॥

संपरि सन्वसमुदाणं रोचफलसंकलणा युवरे-लगणसमुदस्स एमा गुणगारसलागः, कालोदयसमुदस्स अद्वाबीस । एदेसि संकलणसाणिज्ञमाणे 'ऋषातमादिसंगुणमेकोनगुणो-नमविविमच्हा' एदेण अञ्जाखंडेण आणेदल्वं । एपामादि कारण सोलसाप्यकमेण गदा वि

इन रालाकामंति स्वयणसमुद्रक रेजपासको मुणित करलेपर स्वयम्मूरमणसमुद्रका सेपपास जापनतरका साधिक प्यासीयां भाग शाता है। इस विषयमें करणमाधा इस-प्रकार है—

विपक्षित समुद्रकी कमरालाकाकी संवयामेंसे यक कम करके प्रोप संक्याके प्रमाण सोलहको सोलहसे गुणाकर उपलब्ध सांशिको दूना कर हे - भीर विराटन सारित्रमाण बारकी पारंस गुणाकर लामको उस लिगुणित सारित्रमेंसे घटा देनेयर विपक्षित समुद्रकी गुणकार-सालाकार का जाती हैं ॥ ६॥

उदाहरण—सर्वेद्वीत-समुद्रोंकी संच्या = २४% सर्वसमुद्रोंकी संच्या <del>२४</del> = अ

४ म - १ = रू७ = सा १ व - स = व्यंभूरमणसमुद्रकी गुलकारराज्यका

भर सार्य समुद्रों के शेषणत्या संकातन बादते हैं—स्वयमसमुद्रकी गुणवारशासाय एक है, वासोइकसमुद्रकी गुणवारशासाय समुद्रति हैं। इतवा संकातन एनेकी निय उना प्रवासक प्राप्त शासाय के प्रवास करते होत्रको आहित गुणवार-राज्यकार आग देनेरे इचिछर पारित उत्तरत है। इतती हैं। इस मार्याचीस हरियान संकात से आगा व्यक्तिया मुंचित पक्को आहि लेकर सोसद गुणितकमसे सार्वा वही है, इसटिय से

१ तर्वपुरवनतपुरान गोणके अगतेशिष् वाग नवन्ती द्वांच वटतरवासीरिक्तेश्च आजर्दन पूर्ण पुनकान्य नासन्तर्वनस्यानेनी इतिहराजुण समापितं होति । ति. य. चन १०१.

बहु दो रूपे टबिय' अदिय पुष' टिविय उपिर एगर्स्य दाइस्वं। पुनो नं संज्येद 18,8,8% मुध्यि 'स्पेषु मुणम्थेषु बर्मार्गे ' एदेल अन्तामंडेच लढकिमद्रुप्पर्यम् स्वतेन अरि र्गेगुणेगु रुवणगुणगारेण मनिरमु जं लई नं रुगुणिय पंच अवनिर् पनमें स्टागनंदरत होदि। कथं पंच समुख्याः ? बुन्वविसम्मिष्मादिनसूम्वकमेन महमान नेन्द्रीर अवगयगरासी आगन्छिदि । यदाहि पुरत्नुगर्महत्यमनागाहि स्वयमहत्त्वनहर्ने गुन्दि लगणकालोदयमपुदाणं रोगक्ततं होदि । निन्हं समुदाणं रोगकलवंबलमा वृषदे-निन ह्वेस प्राह्नमञ्जीय प्रम् हिवय सेसम्ब्रिय ह्वस्मुत्रीर बगाण द्वीय वस्त्रीर सं टिनिय होटिम उनिसम्ह्याणि सेलिमेटि गुणिय ' रूपेषु गुणमर्थेषु बर्गानं ' एरेन जन्म

करोंको स्थापितकर आया करके पृथक स्थापितकर अवर एक कप दे देना बाहिए। इत उसे सोलहर से गुणितकर 'क्योंने गुणा और मधीने वर्गणा' इस आर्थांत्र देश कर क्पॉमेंसे एक कम कर माहिस संगुणित करनेपर तथा एक कम गुणकारसे मागरित जो राशि लाय हो उसे दुगुनाकर उसमेंसे पांच घटा देनेपर एक पसम सर्थात् हेडर

उदाहरण—स्वणोरक और कालादकका गुणकारमलाकाओंका संकलन— काळोदककी रालाका २, १×१६,१×१६,१६×१६ = २५६।

 $\left(\frac{\overline{\overline{\overline{\gamma}}} \cdot \overline{\overline{\gamma}}}{\overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\overline{\gamma}}}\right) = \frac{\overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\gamma}}{\overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\overline{\gamma}} + \overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} \cdot \overline{\overline{\gamma}} + \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} + \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} + \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} + \overline{\overline{\gamma}} = \overline{\overline{\gamma}} =$ 

शंका-यहांवर पांच केसे उत्पन्न हुए!

समाधान—पूर्विक पकको आदि छेकर धतुर्गुणितकमसे शुद्धिगन राशिकोन्नि देनेपर अपनयनराशि आ जानी है।

उद्दाहरण-पांचकी उत्पत्ति-१+४=५ अपनयनरासि (दो समुद्रोंकी अपनयनस्टाटाई/। रन पूर्वोक्तः संबद्धनराखाकाश्रोसे उपलक्षमुद्रसाबन्धी सेवक्टको गृतित करते हा उपणसमुद्र शीर कालोदकसमुद्र, इन देलोंका क्षेत्रफल हा जाता है।

उदाहरण— स्वणसमुद्रका क्षेत्रकल- ७२०५२९४१५० x २४:

लयणोदक और कालोदककी संकलित गुगकारशालाका २º:

७२०५६२५५० × २४ × २९ खयणोदक और कालोदकश संब<sup>65</sup> क्षेत्रफल,

वय नीन समुद्रोंके क्षेत्रप्रका संघटन करने हैं— नीन क्योंग्से दर कार्य

किर उसे पुश्क स्थापित करें। पुनः शेषको आया कर तपके ऊर संगणना स्थापन धार रुक्त और उसके ऊपर देपकी स्थापितकर अधना कर रूपके ऊपर वगवधाटन अंदर उसके उपर देपकी स्थापितकर अधनत और उपरिम कर्षोंस सीलामें पुटार

संदेण कदा चारि सहस्ता एलाडरी। 'स्पानमारितंगुणमकोतगुणोन्मधितमिन्छा' एरेण अञ्जारदेण लद्वाणि वे सदाणि तेहत्तराणि, एदाणि दुर्गाणिय एकावीसमयणिदे गुण्गारसलागामंकलणा होदि। क्रप्नेकशीसस्त उत्पत्ती। एरारूवं विरक्षिम चचारि दार्ण अष्णोष्णस्मत्तं करिय पंचिह गुणिय एगादिगदुग्गुणसंकलणं पविस्तं अवण-यणसलाग्यमाणं एकावीर्ते होदि। एरप् करणगाहा—

रष्ट्रसहामासुको चत्तारि परोप्पोण संगुणिय ।

पंचमुणे सिचन्या एमादिचदुगुणा संरत्नमा ॥ ७ ॥

एरय सन्तरय दुरुन्गगच्छं विरहेदन्यं ५।२१।८५।२४१।१३६५।५४६१। यदाओं अवणयणपुवससीओं अणसहेद्विमं चदुहि गुणिय रूपं पविश्वये उपपन्नीत जाव 'रूपोमं गुणा भीर सर्वामं वर्णना' इस मार्यासंडसे बार इजार स्यानये (४०९६) सच्या प्राप्त होती है। पुना उक्त प्रकारसे मान राज्यकार्गमें भे 'एक कम करके रोपको भाविसे गुणा करे, पुना यक कम गुणकारप्रवाहकाश माग दे, तो इच्छाति उत्तर हो जाती है' इस मार्यासंडसे सनुसार दो सौ सहसर (२३५) संस्था प्राप्त होती है। इस संस्थाको दूनाकर उसमें से इजीस घटा देनेयर गुणकारप्राज्यकाश्रमें संस्कृत हो जाता है।

उदाहरण-प्रथम तीन समुद्रीका संकलन- शलाका है।

₹ x ₹६ ₹ x ₹६

₹६ x १६ x १६ ≈ ४०९६;

1 × 18.

Both - 8 = Both = 203; 203 x 2 = 488; 488 - 28 = 424

तीन समुद्रोंकी संकलित गुणकारशलाहा ।

र्शका - यहांपर घटाई जानेवाली इपकीस संक्याकी उत्पत्ति केसे हुई ?

समाधान — वक्तवको विरक्षित कर उसके उत्तर चारको देवरुपसे देकर अन्योग्या भ्यास करके उसे पविसे गुणाकर एक अदि चतुर्गृतसंकलनको महेत्य करने पर अपनयन-बाह्यकाका मनाण दक्कीस हो जाता है।

उदाहरण—२१ की उत्पाचि—२ - २ = १, १ = ४, ४ × ५ ≈ २०, २० + १ = २१ तीन समुद्रोंकी भपनयनशास्त्रक.

इस विश्यमें यह करणगाथा है-

इष्ट दालाकाराशिका जो प्रमाण हो वसने यार चारको रखकर परस्परमें गुणा करे, युनः उसे पांचसे गुणा करे भीर किर एक भारि चतुर्गुणसंकलनराशिको प्रकेष करना चाहित्य रेसस करनेपर वपनयनराशिका प्रमाण भा जाता है ० ७ ॥

यहांवर सर्वत्र दो कर कम गच्छपाशिका विस्तत्र करना चाहिए। ५, २१, ८५, ३४१, १३६५, ५४६१, वे पटार्र जाने बाटी भुवराशियों मनन्तर मपस्तन राशिको बारसे गुजाकर 3.2 }

[ 2, 1, 3% द्रशांस्त्री श्रीपतं क्षंत्र करून्यो ति । मंत्री मांद्रामणानद्वतिविद्यमणानद्वामेनक्र प्रवासीतिक कुल्डे- रीव कारस्वारे अबे सक्ती सिक्षेत्र सर्व पति वेलित कृत्य आहेत्स्य रे

को चेरम्युनिकोररनस्त्रम्भे संविद्येक्ति, बगायुक्त अप्रयायको । १९ कुर्णार करने करि करि चेतरि कालि दार्व अल्लेलाकायो क्रीके तो पेल कुर्णकारकोत् संविद्दे नेहीत् पद्वामी आसम्बद्धि आकर्ष पर्दे को सार्ध् कर्ण लक्कार बारी, में बेरकरक्तामेन विवस्मादमीमवर्मभार भी नामा क्यों ज़िंदे क्यमों जामकादि । पुत्री सै स्वृत्ती करिय एथेन आहिता गुनिव नामार्थ र्जन कर्न्स कर कप्पट करवेपुर कमूल कोती हैं, भीर दुशी कमाने बनुमानुस्वनन्तृत वह 

रेड रेस्स लाक अन्त हैं है है अल्के के प्रतिसास स

त व ज भ प्रव नेपः न्य व ५ ५ न न्र्व व हेर्न्य

10. 4 3 m 7: 1 1 1 (१ ६ - सम्भवः १११) भ नेत्रवन्त्रमध्यक्षः इत्हर्तस्यान्त्रमध्यः

des serventarios fundamentalmente fait

क्क क्रम्यानकात्रकात्रका भावकर श्रेष सन् गार्गी है संवर्गक विकाननेका विभा कर्र हैं है व में ए लख्द कर दिल्ली संस्था है पह साधाकर प्रामीत शक्त बात । ही केम के रिक्त के प्रमाणक के प्रमाणक बात के पाँच इसकार पर की बुक्त प्रकार होगा हाता? कत्तार रूपर दक ६ क्वड प्रतिपत्त भाष्य श्रास्थ्योक मार्गम्यम् आग स्थाप स्थाप स्थाप € कम श्रद ७४ १४८ १४८ ११३ व द्वाप्त श्रीक वार्ट व प्रमास दुवरपार दुवरपार । मतं, प्रत्य के ए हे के महाराज्य स्थापन प्रत्य स्थापन महाराज्य है के महाराज्य स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन के एक के कि स्थापन है अर अस्य प्रस्त प्रशासनार के प्रशासन का क्षेत्र का प्रशासन होते. स्टब्स्ट के प्रशासन होते स्टब्स्ट के प्रशासन भूभ कर कथ है था ते न हेकर रक्त महि छत्तीरह है हैरेड्र ) कशिर मुश्ति समित समित Alle ar at aratem es en en f

पुनः उते, अपांनू १६ के गुलितकामसे उपलब्ध राशिको, पक कम करके आदि स्थानवर्गी परूषे गुलितकर, पन्नद्व रूपोर्थ भाग देनेपर व्यतीस अधिक सेताबीस द्वार कर्णान् संनालीस द्वार व्यावीस (४५०४०) रूपोर्स गुलित सन्न योजनके वर्गसे भाजित जगमनएका वह माग करता है।

स्त प्रमाणको तुगुनाकर उत्तमेंसे पूर्वोक्त करणगायासे तिकाली हुई आग्नेजीके भनेक्यात्रमें भागममाण अननयनाशिको पटाकर स्वयस्तुद्रके क्षेत्रफलसे गुणा करनेवर स्वयम्मूरमानामुद्रसे रहित होए समस्त समुद्रोका क्षेत्रफल हो जाता है। यह स्वेषकक सन्तना होता है, यसा पूर्वत्रपर उत्तर होते हैं कि यह जनतालीस भिषक सारह सो मर्थाय बारहसी उनतालीस (१२३९) क्योंसे माजित जनायतस्व एक माग प्रमाण होता है।

उदाहरण—|२ 
$$\left(\frac{ro'}{toooo' \times vooso}\right) - \frac{ro'}{4} \times \pi = \frac{ro'}{1226}$$
 स्वयम्भूरमणको छोर शेष समुर्गेका क्षेत्रकल.

(इसी प्रमाणको उत्पन्न करनेकी मिक्रवाकी विस्तारको लिये देखी गोम्मदसार जीवकांद्र सं, टीका च दिन्दी अनुवाद गाया ५४०, ए. ९६४ मादि.)

स्यवस्थ्रत्सवासमुद्रसं रहित रोव समुद्रोंके उत्तः क्षेत्रपत्नमेंसे मृत सर्यात् स्यादेके स्वयोदित और कास्त्रोणे इन दो समुद्रोंके प्रतरात्मक संवतात योजनप्रमाण होक्कलको प्रदानर युना होप शासिको प्रतरात्मक राजुके प्रमाणसेसे यटा देनेपर साथिक इकावन क्योंसे अगनसन्क संदित करनेपर एक खंद स्य आरत है।

मागमुचं तिरिक्संसासणसत्याणखेचं होदि । सेमपद्सासणसम्मादि**द्वीहि तंन्वे दीन वा** पुन्ववेरियदेवसंबंधेण पुरिवर्जिति चि कहु जोयणलक्खवाहल्लं तप्पात्रोम्मबाहर्लं स स्क पदरमुहुमेगूणवंचासुखंडाणि करिय पदरागारेण इहेद तिरियद्योगस्य संखेज्जित्राणो होही। ' वा ' सहस्स अत्था गदा ।

ंमारणंतियसमुग्यादगदेहि सत्त चोहतभागा देखणा पोतिदा । तिरिक्तताल मेरुमुलादी हेड्डा किण्ण मारणांतियं करेति चि बुचे णेरहण्स किण्ण उपवन्नति ? समानसे। जिंद एवं, तो हेट्टा समावदो चेव मारणंतियं ण मेलंति ति किणा घेप्दे १ बिंद समा सम्मादिहिणो हेडा ण मारणतियं मेलंति, तो तेसि मनणनासियदेवेसु मेरुनलाही हैडा हिदेसु उप्पत्ती ण पात्रदि ति बुत्ते ण एस दोसो, मेरुतलादो हेट्टा सामणतम्मादिश्ल मार्गितियं गत्थि चि एदं सामण्यावयणं । विसेसदो पुग भण्णमाणे नेरहण्सु हेहिन

उक्त एक खंडको तियंचोंके अवगाहनासम्बन्धी संख्यात स्च्यंगुडांसे गुना स्वतेन तिर्यग्रहोक्के संख्यावर्षे मागप्रमाण तिर्येव सासादनसम्यन्दरि श्रीवाका स्वस्थानकृत है जाता है । चूंकि, विद्वारवास्वास्थानादि शेष पदस्थित तियम सासादनसम्यादिकां क्रा समस्त द्वीप और समुद्र पूर्वमवके वेरी देवोंके सम्बन्धते स्पर्श किये गये हैं, इसकिए म योजन बाह्य्यवाले अथवा तत्मायीग्य बाह्य्यवाले राजुवतरके जरहाँ बोरले वर्तवात वर करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातयां भाग हो जाता है। समझाहे यह स्त्रपठित 'या' शस्त्रका अर्थ हुमा।

मारणान्तिकसमुद्धातको मान्त तियेष सासादनसम्यग्द्दियाने कुछ कम सात के

श्रीदह ( 👸 ) माग संपर्श किये हैं। र्शका — तिर्यंच सासादनसम्बन्हिं जीव सुमेरवर्षतके मूलमागसे नीं वे मार्ग

न्तिकसमुद्रात क्यों नहीं करते हैं। प्रतियंका -- यदि पेसी शंका करते हैं, तो आप ही बताइए कि तिपूर्व सामार्व

सम्याद्धि जीव नारकियों में पर्यो नहीं उत्पन्न होते हैं है

समाधान-पे नारिक्योंमें स्वभावसे ही उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्रतिसमाधान — यदि पेसा है तो सुमेरपर्यंतके मृत्यमागसे माँचे मी वे स्पन्नही

मारणान्तिकसमुद्धात नहीं करते हैं, पेसा मर्यो नहीं स्वीकार कर छेते हैं है गुंका—यदि सासादनसम्बन्धि जीव मेहतलसे नीचे मारणानिकसमुद्या है।

करते हैं तो मेरतलसे नीचे स्थित भयनवासी देवोंमें उनकी उत्पत्ति मी नहीं प्रात होती है। समाधान—उक्त शंकायर भवलाकार उत्तर देते हैं कि, यह कोर्र दोर ही. क्योंकि, मेरनलसे मीचे सासाइनसम्बद्धि जीवोंका मारणान्तिकसमुद्धात वहीं होते । बद् सामाण्य अर्थात् द्रश्योधिकनयका ययन है। किन्तु विशेष अर्थात् वर्षायां व

य्हंदिएसु वाण मारणंतियं भेलंति वि यस परमत्यो । क्यमेत्य देवलचं १ ण ताव हेट्टिम-जीयणसहस्सेण ऊणा सच चोर्समागा, वित्विखसासणेहि मनणनाक्षिपस मारणीवपं मेस्लमाणेहि तस्त वि छुवगसंभवीयलंभादी । मेरुपूलादी हेट्टा देखणकोयणलहर्स फुसंताण सातादणाणं सच-चारतमागेहि सादिरेगेहि होदच्चिनिहि । ण एस दोती, एमम्मं पयद्वेहि पडिणिययउपाचिद्वाणिहि समजीनिहि णिरंतरं ण सच रज्ज् क्रिसिन्बेति, तथा समरासंमगा। सी वि कर्ष णव्यदे १ देवणवयणणाहाणुववचीदो । उववादस्स एकारह चोहसमामा पीसिदा चि वचन्त्रं। सने अउर्च कथमेर् णव्यदे शिकम्मस्यकायज्ञीशितासणाणमेकारहःचोदम-

विवस्ताते कथन करने पर तो वे नारकियोंने भयुग मेरतलते भयोग गवनी वकेन्द्रियशीवीन मारणान्तिकसमुद्रात नहीं करते हैं, यही परमार्थ है।

र्शका-यहांपर अर्थात् मारणान्तिकतमुद्धातगत सामादनसम्बन्धिके क्षेत्रमे वैद्यालता मर्यात् इछ कम सात बढे चीदद मागका कथन केले किया, वर्योकी मेडनहरू अधीमागवर्ती एक इजार योजनेते कम सात बंटे चौदद (रॅं) माग री। माने नहीं जा तकते। इसका कारण यह दे कि भवनवासियोंने मारणानिकतमुखानको करतेवाछ निर्मेष सातादनसम्बादियों के द्वारा उसके भी छुए जानेकी संभावना वार्च जाती है। इसिटिए मेड-तलले नीचे कुछ कम एक लक्ष योजन ममाण क्षेत्रको कार्य करनेवाले निर्वेष सामाक्ष सम्बन्दिएयाँका मारणातिक दार्शनक्षेत्र साधिक सात बटे चीरह (१४) माग होना

समाधान-पद कोई दोष नहीं। इसका कारण यह है कि छहीं मागीकी महत्त, अर्थात् पूर्व, पश्चिम, बचर, दक्षिण, अर्थ और अधोदिता सामार्थ छहाँ मागाँसी जानेवाल, वर्व मतिनियत जावित स्थानवाले बतात्रीयाँके द्वारा निरातर सात राष्ट्र स्वर्श नहीं विदे

घंका-पह भी कैसे जाना !

समापान — 'वेदोान' वयनकी साववा अनुवर्णतसे । अर्थान् वर्णः मारणानिकः समुद्रात करनेवाले कसमीवोके द्वारा निरम्तर सात राष्ट्र प्रमाण क्षेत्र रुपरी किया जाना. हा भावता विकास कर्मा कार्या कार्या । इस भावतानुवर्णासे जामा जाता है हि मारणानिकसमुद्रातः करमेवाले बसाजीयोंके द्वारा सात राजुके रुग्यों किये ज्ञानेकी निरम्तर

न्वरण इपरको माध्य तिर्वेच सासादनसम्बन्धियाँन स्थारह वटे चीहह (१०) मान पर्ध किये हैं, वेसा कहना बाहिए। धुका - एक्से नहीं कही गई यह बात केसे जानी जाती है।

भागपोसगपरूवयतुत्तादो', सुदावंबिस्म उत्तरादपिवयमासगावसेरहत्वः वीहमसम पोमणपरूषयमुत्तादी च णब्धदे । एत्य महेते उपपादग्रेमगरेने सेते मार्गतिपर्कतनेन किमहं परुविदं १ ण , एस्य उत्तरादविष्यागाए अमारादी । नदविष्यागा हिल्लावना, सामणाणमेइंदिवसु अणुष्यज्ञमःभागं तत्यः मार्गितियोद्याणिवंत्रमा । तेव उत्तरम

एक्कारह चोहरमागा फोमणमूबलबमंदै । सम्मामिच्छादिई।हि केवडियं सेतं फोसिदं, लोगस्म अमंक्ष

ज्जदिभागों ॥ २६ ॥ पदस्य सुत्तस्य बहमाणकाले सञ्चषद्वरूपणाण् योनमंगो। मन्यानम्बान विहारविद्मारथाण वेदण-कमाय-वेउविययपद्दिदमम्मामिच्छादिङ्कीहि तीदाणागदकांत्रेमु विर्

समाधान-कार्मणकाययोगी सामादनसम्यग्दिश जीवीके ग्यारह यटे चीतृह (🚻 भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके प्रकल्क आगे कहे जानेवाले इसी स्पर्शनप्रकरणाकि स्वेम,तवासुराः बंधमें करे गय उपपादपरिणत सासादनसम्यन्द्रष्टियोंके ग्यारह बटे चीदह ( 👯 ) मागमान

स्पर्शन करनेकी महत्त्वणा करनेवाले सुबन्ने जाना जाना है कि उपगाइपदकी पात विवन सांसादनसम्यग्दिएयाने ग्यारह यटे चीदह माग स्रशी किये हैं।

र्योका — उक्त प्रकारसे इतना अधिक उपपात्पदका स्पर्धनसेत्र होते हुए मी वर्ष पर मारणान्तिक स्पर्शनक्षेत्र ही किसलिये प्रकाण किया है

समाधान — नहीं, पर्योकि यहां पर उपपादपदकी विवसाका अनाय है।

र्शका-उपपादपदकी विवक्षा न होनेका क्या कारण है !

समाधान — उपपादपदको विषक्षा न होनेका कारण प्रेक्टियॉमें नहीं उपग्र हैं पाले सासादनसम्बन्दि जीवाँका उनमें मारणानिकसमुदातका विद्यान है। श्रयांत् सामा दनसम्पन्दिष जीव प्रकेट्यियोंमें उत्पन्न महीं होते हैं, किर मी वे उनमें मारणान्तिकसमृहा करते हैं। इसलिए यहां पर उपपादकी विवक्षा नहीं की गई, और इसीलिए उपपादाही ग्यारह वटे चौदह ( र्रेंच्रे ) भाग प्रमाण स्वर्शनक्षेत्र प्रक्ष हो जाता है।

सम्योगभ्यादृष्टि तिथेवाने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंस्पातनी भाग स्पर्ध किया है ॥ २६॥

इस स्वकी वर्तमानकालमें स्वस्थानादि सर्व पद्सम्बन्धी सार्वनिवस्था क्षेत्र पणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विद्वारयन्दरध्यान, वेदना, कथाय मीर वैक्षिविकसमुद्रात इन वांच पर्दोवाले सम्बन्धिमध्याद्दष्टि शियचीने भूत और मधिष्य इन रोनों कालाम साम्बन्ध भादि क्षीन लोकोका असंक्यानयां भाग, तियंग्लोकका संक्यातयां भाग और अवस्थित

१ बन्मस्यवायज्ञोगीष्ठ xx सावगढन्माद्वितिष्ठ xx पृथारह चोद्यमाया देसूना । जी. को. ६६०० , ३ मतियु ' किरगबंधना ' इति पाउः। र म प्रती 'ग ' इति पाठी नारित । y सम्यासियादहिमिलोकस्यासंस्थेयमागः । स. सि. १, ८.

ठांगाणमसंबद्धवस्थानो, तिरियनोगस्य संरोज्ञदियामो, अहुस्कादी असंसेद्धमुणो । एत्य पद्धवहिष्यस्वना सासण्यस्ववार सुन्छा ।

अनंजदसम्मादिष्टि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, छोगसा

अपरीकेज्जिदिभागो ॥ २७ ॥ त्रिरिचरापीर तिरिचलेगु नि महाविकारी अध्याद्वदे । एदं ग्रुनं बहुमाणकाल-विशिद्दुभगंजरमम्मादिष्टि-संबदासंबदस्येषं बहेर परवेदि, तहा एदस्स परवणाए सेचभंगो ।

छ चोइसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

अभेजरममानिर्द्वाहि सरभागारे यहमागोहि तिष्दं लोगाणमसंग्रेटजादिमागो। तिरियलोगस्म संवेदगदिमागो। अद्वारज्ञारो असंवेदग्रपूर्णा अदीदकाले पोनिदो । एदे असंजदमम्मादिद्विणो सरभाणपरे सन्दरीवेस होति, स्वरण-कालोदय-सर्वभूगमणसम्बद्धस्य च । तम्हा सेससम्बद्धस्वभूगरज्जपदरं एत्य सरमागरोने होति। एदस्साणयणविधाणं पुन्ने व यादन्दं । विहार-वेदम-कसाय-वेदिगयपदेस्य बहुता अदीदकाले विष्टं लोगाणमसंस्वज्जिद-

यक्षेत्र्यातमुखाः क्षेत्र स्पर्तः क्षित्रा है। यहाँपर पूर्वावार्यिकनयकी स्वर्शनमक्काणाः सासादन-गुणस्थानकी स्वर्शनमक्ष्रपणीके तृत्य जानना चाहिए।

असेयतसम्यारीए और संयतानेयत गुणध्यानवर्ती वियोगीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका असंस्थानका भाग स्पर्ध किया है ॥ २७॥

'तिर्येयगतिमं तिर्वचीमं' इस महाधिकारकी यहांपर मनुवृत्ति होती है । चूंकि यह एय वर्तमानकार्वधिद्याष्ट्र असंवतसम्यप्रष्टि और संयतासंवत तिर्वचीके स्वयंग्रेशकता महत्वन करता है, इसलिए इसकी प्रमुखा शिक्ते समान ही हैं ।

एक दोनों गुणमानवर्धी निर्णय जीवोंने अक्षीत और अनामतकालकी अवेक्षा कुछ कम छह पटे चौदह माग स्पर्ध किये हैं 11 २८ 11

स्वरधानपद्वर धर्तमान असेयतस्वयनशि तिर्वयोति सामान्यहोक मादि तीन होक्षां असेव्यातयां भाग, तिर्वन्होक्ष्या संस्थातयां भाग और समाग्रेह्यणे असेक्यातयुक्त क्षेत्र भतीनकालमें क्या विचा है। ये असेवतस्वरणाष्टि तिये स्वसानस्वयन्त्रय सर्वे ग्रांगीमें होते हैं, तथा ह्यचलसुद्ध, बालोक्सलसुद्ध और स्वयम्पूरमालसुद्धमें भी होते हैं। इस्तिष्ठ रोच समुद्दीके शेवसे हैंना राजुनसर पढ़ीयर स्वस्थानसेक होता है। इसके तिकालका विचान पूर्वक समान हो करना साहिय । विदायसम्यस्थान, वेदना, क्याय और वैतियिकसमुद्धात, इन पद्मेपर पर्वनात जीवीने भतीनकालमें सम्मान्यलोक स्थानि तीन

६ असंगतसम्बद्धितः संगतावंदर्ते औदश्यासंस्कृषयातः वद् चतुरेष्टमाया वा देशीना । सः वि. १, ६.

A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

मार्गः, तिरियानेगम्य संसेरवदिमार्गः, अङ्गद्यवदि असंसेरवसुर्गः इसेति । इते 🔭 वेतिचर्वकरोतारो जोपगणक्तवाहरूलं मंद्रोज्जजोपणकाहरूलं वा राजुरहरं हमक्शिक्ट चुनैति ति । मन्देतिपरदे बहुमानेदि छ चोरममागा देखवा पेतिसा । इसे दि केक् कार्याते उत्तरि तेनिमुप्तकीम् अमाराही तत्य गमगामाता । स स उपनियेशा सि राज्यं भेजबारि, जरूपानंगा । उत्तरि श्वामश्रेत्रेयु मिन्छादिष्ट्रियो बरि उपाने हैं बर्जबरसम्मारिहुंनां संबद्दासंबद्दायं च उप्पणी किमिदि ण होत्रव ! मिन्छारिहिशे एण स्टिंड उपन्वति में, एरे वि दमानियन भेर उपम्बंत, म कीरि होगी। उपार्श है क, मेज्यन देवामने मेहममामनप्रमगाही है व एस दीमी, बहि हि बाहारी इन्हें किया पर्वत्रमन्मारिष्ठी सेवरासंत्रहा च उपारवंति, तो हि सन बोर्यदन व रे १. मार्ग्येक हो पर गण्यानीहे। उत्तरहरोहि अहीरहाते निर्म लेग्य

के के कर्मना को भाग, विवेशोकका संख्यानयाँ भाग भीर मार्ग्यापने सर्वकावपूर्व क्षण कर्म्मा किया है, क्योंकि, पूर्वभवके मेरी नेपीके भरोगको यक्त काल मेजिन वार्यानका क्लाम क्लान नो इन बाहायवाचा शानुमारका वार्यभेष स्थानकालये कार्य है। हिन्दू अभ्यानिकार वृश्यत्व वर्गाम जीवाने कुछ कम छह को कीहर मान (१०) ना है। है कर व अन्तर्कत्रों प्रारं वनकी वस्तिका सभाव होनेसे नहीर नागनहां हता है - बोन इन्योन-स्वरूप इन्तिन करते शतन संत्या सन्ति है अपना संत्यान होता स

देर' - सब्दृत्यान्य प्रतन गाँद स्वामित्रवर्गीते मिन्यादिष सनुन्त बाला है वर्गे का करोर नव अध्या में और अवनार्धयन निर्यमीकी क्लाणि क्यों नहीं होता नाहिले हिंदू हो क्ष के किलाजारे के तुल इजादिनांव उनाम बात क्या नहीं वात नार क्ष के किलाजारे के तुल इजादिनांव उनाम बात है, तो ये भी प्रवादिनां है। इनहीं है इंपर्क कहें इ.च. नहीं है। मीत कहा आया जिल्ला है, ता व भी हलाज होते, भी बता है इ.च. कही है। मीत कहा आया जिल्ला है प्रविश्व मित होते, भी बता है कर्म करा का अवन्त है, वर्गीक, तिह शामीनग्रेषक वृंगीन सात वर नै रह है। क्ष्म १ . ६ उनन द न १ मा !

क्रम राज्य - दह कर देन नहीं, वर्गीक, वर्गीय सर्वयंत्राकीने ब्रामीशी अन बाद क्रफारत्यारोह बोर भवनायान जीव क्रवच होते हैं, तो वी साव हो ्राज्यात्र संस्थित कर्षा व्याप्त काल कर्मा है। सा सा सामान्यात्र स्थापित स्था दल्ला हर है। कर्तन दर्भ अनुष्य है। इनक इन है, निर्वेच नहीं।

संसेज्जिदिमागो, तिरिपलोगस्स संसेज्जिदिमागो, अनुभूज्जादो असंरोज्ज्यगुणो पोसिदो । ए जहा- तिरिस्पोस तिरिस्त-देव-गेर्ड्यसम्मादिष्टिणो ण उप्पञ्जीत थि । इदो ? सहावादो । मणुसरद्द्यसम्मादिष्ट्रिणो पेव उपपञ्जीत, पुण्वं विच्छत्तसंस्त्रीह पद्रतिरिस्ताज्ज्ञचादो । ते वि मोराभूगीस पेव उपपञ्जीत, दाणादिसयनद्रसम्मादिष्ट्रीह पुराज्जिद वि तस्साणपण-विपाण पुण्यदे- सर्पपद्दयन्ददारो प्रामागो दोहि व पासेष्टि रञ्ज्यपद्रमागो रञ्जूण जप्पजोगमा संरोज्ज्ञा मागा या होति । तेसु रञ्ज्यिकसंमिदि केडिदेस अवसेता तिष्णि अद्वमागा रञ्जूण संसोज्ज्ञिदमागो या होति । एदेण विक्खंमायारेण हिदयमगिदिष्टि-उद्यादसंखं-

रिस्खंभकगदसगुणकरणी बहस्स परिद्वजो होदि । विस्तंभचडन्मागी परिठयगुणिदो हवे गणिदं'॥ ८॥

एदीए गादाए पदरागारेण कदे जनपदर अहसवावण्णमागन्मदियचाठीसीचर-चदुिह सदेहि खंडिद-एयमागी सादिरेगी आगच्छिद, तप्पाओग्गसंखेन्जरूपेहि छिष्णेग-

होक मादि तीन होकोंका मक्षेत्रपातपां भाग, तिर्पेग्होकका संवपातयां भाग भीर महार्ग्वापिक संसंक्यातगुणा होन क्यां क्यां दे पह हवा स्वारत है— तिवसी तिवस, देव भाग्या नार्दी करवार श्रीय मही उत्पन्न होते हैं, पर्योक्ति, पंता स्वाराप ही है। वेचल सायिक सम्पर्का हिन्द पर्योक्ति, उन्होंने पूर्वर्ग मियागयों सेविका परिणानीके हारा तिर्पेश माद्रकों बांध लिया है। सो ये भी श्रीय भीराभूमिक तियसी ही उत्पन्न होते हैं, पर्योक्ति, उन्होंने पूर्वर्ग मियागयों सेविका राया होते हैं, दे पर्योक्ति, सायपादियों हो उत्पन्न होते हैं है सेविका उपाय होते हैं, विश्वर्ग स्वार्ग प्रमीक्ति स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग होते हैं। इसलिय स्वर्ग माम्य प्रमान पर्वत ही ही सिका स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग सिका प्रपाद हिन्द सेवा स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग होते हैं। इसलिय स्वरंग प्रमान पर्वत है स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग होते हैं। इसलिय स्वरंग हम्म पर्वत स्वरंग स्वरंग हम्म पर्वत होते हैं। इसलिय स्वरंग हम्म पर्वत होते हैं।

रवर्धमा वर्षतसे वरमाववर्ती होत्र दोनों हो वार्मीस राहुके वांच बटे बाह ( 2 ) भाव सथया राहुके सम्मायीय संस्थात बहुमान मागण होता है। उन भागों हो पहुके विश्वनममेंसे प्रदा देनेवर सीन बटे बाह ( 2 ) भाग स्वरीप होत्र अथवा राहुका संस्थातवाँ भागमाना होता है। इस विश्वनम और आवामसे विश्वत सम्यायिके उपयादोगको —

विश्वतावरा वर्गकर उसे दशसे गुजा करके उसका वर्गमूज निकाले, यही वृत्त वर्णात् गोलाहति रोजकी परिधिका प्रमाण हो जाता है। पुना विष्कामके पशुमांगने परिधिको गुजा करवेपर रोजफा हो जाता है। ८३

हस गाथायुण्ये मनुसार प्रतराकारसे करनेपर माठ बढे सखायन मागने श्रीयन बार सौ चालीस (४४०-६) भागोंसे संहित साहिरेक एक मागप्रमाण क्रावजर होजा है 1 भागों वा । तं उस्सेयसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरिक्खसम्मादिहिंउववादंखेते होती संजदासंजदेहि सर्थाणपदिष्टिएहि तिण्हं स्रोमाणमसंखेजदिभागो, तिरियलोगस्स संसेज्जरि भागो, अहुाइज्जादे। असंखेजगुणो । एत्य सत्याणखेत्तमाणिज्जमाणे तिरिक्ससम्मारिह ज्वनादपद्रखेत्रमुस्सेघगुणगारवज्जिदं रज्जुपदरम्हि अवणिदे जगपदरं साहिरेषपंचण रुवेहि भजिदएगमागो आगच्छदि । तं संखेज्जुस्तेधंगुलेहि गुणिदं संजदासंजदसत्वा<del>पत्रे</del> तिरियलोगस्स संखेजनिदमागमेचं होदि। विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय वेदिव्यपर्पत देहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेअदिभागा, तिरियलोगस्स संखेजदिमागो, अगः

संजदासंजदिह तिष्हं छोमाणमसंस्रुझिदमाना, तिरियलामस्स संख्ञादमाना प्रश्न 
$$\frac{1}{3} \frac{1}{3} \frac{1$$

उपपादका क्षेत्रफल.

त्रिशेषार्थ - यहां उपलब्ध मागप्रमाणको सातिरेक कहनेका अभिन्नाय यह है कि मे रें का वर्गमूल रेरे ले लिया गया है यह यथार्थ वर्गमूलसे कुछ अधिक हो गया है किली मागदार कुछ बढ़ गया है। पदले इसी विष्कम्मको छेकट परिधिके मिन्न प्रमाण द्वारा कि क्षेत्रफल निकाला गया है। (देखी पृ. १६९.)

भथवा तथायोग्य संव्यात रूपोंसे माजित जगप्रतरका एक माग बाता है। अ संस्थात उत्तेषांगुलांस गुणा करनेपर तिर्पेच सम्यग्टार जीवींका उपपादक्षेत्र हो जाता है। स्वस्थानस्वस्थानपद्स्यित संयतासंयत तिर्यचीने सामान्यलोक मादि तीत हो सं

असंख्यातवां भाग, तियंग्लोकका संख्यातवां भाग भीर अवादीपसे असंख्यातगुणा के स्पर्धा किया है। यहां स्वस्थानस्यस्थानक्षेत्रको निकालनेपर उत्सेषगुणकारसे रहित निक ससंवतसम्बरहियाँके उपवाद प्रतरक्षेत्रका राज्यवतमर्थेस घटा देनेवर साधिक वृद्ध रूपेंसि माजित एक माग जगनतर बाता है।

उदाहरण-तिर्वेच सञ्चन्द्रशियोंना रुपपादवतरक्षेत्र =

जाता है, जो कि नियंग्टोक्टा संस्थातवा भागमात्र होता है।

विद्यारवास्वरयान, वेदना, श्रयाय और धैनियिकसमुद्यात, इन वहाँसे परिवत निर्मा विद्यारवास्वरयान, वेदना, श्रयाय और धैनियिकसमुद्रात, इन वहाँसे परिवत संवतासंवत अधिने सामान्यकोर आदि तीन छोडाँदा भरावपातपी माण, तिर्वहीदा t, 2, to.]

ज्ञादो असंतेज्ज्याणो अदीरकाले फोिशिदो । छुदो है संजदासंजदाणं चेरिपदेवसंवंचेण जोपणलक्सवाहर्ल तिरिपपदरस्स अदीरकाले पोसो अत्यि वि । मारणंतिपसमुग्पादगदेहि संजदासंजदिह छ चोरसमागा देशणा फोसिदा, तिरिच्छसंजदासंजदाणमञ्जूदकप्पी वि मारणंतिराण गमणसंभवादो ।

पंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्सपञ्जतः जोणिणीसु मिच्छादि-द्वीहि केवडियं खेतं फोसिदं, लोगस्स असंस्वजदिभागो ॥ २९ ॥

षदं सुचं बङ्गाणकालसंबंधि चि एदस्स पहनणाए सेनामेगी।

सब्बलागा वा ॥ ३० ॥

परिसंसादो एदं सुषं वीदाणागदकारुवंची। एत्य ताव ' वा ' तस्हो उच्चेद्-ति-विसेतणविकिद्वसत्याणतिक्वित्वस्यिद्धीहि तिण्हं रोगाणमसंखेज्जदिमागो, तिरिय-रोगस्स संखेज्जदिमागो, अद्दारज्जारो असंखेज्जपुणो पोसिदो। एदं खेषमाणिक्जमाणे असंखेजस्य समुद्रेस गोगभूमिपडिमागदीवाणमंतरेतु दिदेसु सत्याणपदाहिदतिविद्दा तिरिक्वा

संस्थातमां मान भीर बहार्रहोपसे असंस्थातगुणा क्षेत्र असीतकारुमें स्पर्ध किया है, क्योंकि, स्थातस्थित तियंशित पेरी देवाँक हरणास्त्रकासे एक साख पोत्रत पाहस्वयाते तिर्यक् मतरसा करोतस्वानमें स्पर्ध किया गया है। मारणानिकसमुद्धात्मक तिर्वस संवतासंवतीते हुम कम एह बटे बोदह (१) मान व्यत्ति विषे हैं, क्योंकि, तिर्वेस संवतासंवतीत्र अस्वतकार तक सारणानिकसमदातसे गयत संभव है।

पंचित्रियतिर्यंत्र, पंचित्रियातिर्यंत्र पर्यात और पंचित्रियतिर्यंत्र योनियतिर्योमें मिष्पार्षाट अभिने कितना क्षेत्र रार्थ किया है ? लेकका असंख्यावना भाग रपर्य किया है ॥ २९ ॥

यद स्थ यसमामकालसम्बन्धी है, इसलिय इसकी श्वरानियक्षणा शेवमक्षणाले समान मानना चारिय।

उक्त तीनों प्रकारके तिर्यंच जीवोंने अवीत और अनागत कालमें सर्पेलीक स्पर्श

कियादे॥ ३०॥

वारिरोपन्यायसे यह सुक्ष मूल और प्राविष्यकालसन्द्रश्यो है। यहांपर वहले 'वां' हाज्यका मर्थ कहते हैं—'वेंचे दिव्यतिर्थेख, वेंचे देवपतिर्थेखयांत मार फोतततो हत रोज विरोत बणास विशिष्ट क्षरणानयहरियत तिर्थेख सिय्याहरि शोधोंने सामाय्योक भादि तीन होश्योंने सर्वच्यात्यम् माग, तिर्पेखांकका संस्थातका भाग और महार्दिशयो सर्वस्थातगुणा होत्र कर्या किया है। इस क्षेत्रको निवासनेवर सर्वस्थात समुद्रश्ये और भोगमुनिके मितामात्त्रक होगोंके भारताखोंसे रियत क्षेत्रभे स्वस्थानवष्टियत उक्त तीन मकारके विषय महो हैं, इसक्षिप इस

णियं ति एदं खेतं पुरुविधाणेणाणिय रज्जुपदरम्हि अवणिय संसेज्ज्ञप्रविशंगुडेहि । विरियलोगस्सं संखेज्जदिमागमेचं पंचिदियतिरिक्छविगमिच्छादिद्विसत्याणसेनं है। विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउच्चियपद्परिणद्विविहमिच्छादिद्वीहि विण्हं लाँग संखेजजदिभागो, तिरियलोगस्स संखेजजदिमागो अङ्गाइजजादी असंखेजजपुणी फीरि कदो ? मिनामित्तदेववसेण सन्वदीव-सागरेगु संचरणं पढि विरोहामावादो। तेणत्य सं गुलबाइल्लं तिरियपदरमुद्धमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण टर्दे वंचिदिपतिरी तिगमिच्छादिद्विविहारवदिसत्याणादिखेचं तिरियलोगस्स संखेळदिमागमेचं होदि। 'वा' स

क्षेत्रको पूर्विधानसे लाकर और राजुमतरमेंसे मटाकर संक्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करे तिर्येग्छोकका संख्यातचे मागश्माण पंचेन्द्रियतिर्येच, पंचेन्द्रियतिर्येचपर्यात और योति इन तीन प्रकारके मिथ्याइष्टि तियंचाँका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है । विहारवास्यस्यान, वे कपाय मौर वैश्वियिकसमुदात, इन पर्दोसे परिणत उक्त तीन प्रकारके मिध्यादृष्टि तिर्ये सामान्यलोक धादि तीन होकोंका असंस्थातयां माग, तिर्थग्लोकका संस्थातयां माग बढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, पर्योकि, पूर्वमवके मित्र या शत्रुरूप देवें बरासे सर्व द्वीप और सर्व समुद्रामें संचार (विद्वार) करनेके प्रति कोई विरोध नहीं इसलिए यहांपर संख्यात अंगुल बाहस्यवाल तिर्यक्पतरको जगरसे उनवास क्षेत्र की प्रतराकारसे स्थापित करनेपर पंचेन्द्रिय तिर्येच आदि श्रीन प्रकारके मिध्याहि तिर्ये

गदो । मारणंतिय-उववादगदपंचिदियतिरिक्खतिगमिच्छादिद्वीहि सव्वलोगो पेक्षिर छोगणालीए बाहि तसकाइयाणमसंभवादो सन्वलोगो ति वयणं क्यं घडदे? णएस दे मारणतिय-उनवादद्विदतसजीवे मोत्तृण सेसतसाण पाहिरे अत्यिचप्पडिसेहारो'।

मागमात्र होता है। इस प्रकारसे 'या ' राष्ट्रका अर्थ हुआ। मारणान्तिकसमुद्रात और उपपादपद्गत पंचेन्द्रिय तिर्यंच मादि तीन प्रकार मिष्यादारे तिर्येच जीवोंने सर्वहोक स्पर्श किया है।

जीवासम्यन्धी विद्वारवत्स्वस्थान मादिका क्षेत्र हो जाता है, जो कि तिर्थग्टोकका संस्थात

श्रेका - छोकनाछीके याहिर मसकायिक अधिके असंभव दोनेसे 'सर्वनीक स्व किया है ' यह यथन कैसे घटित होता है !

समाधान-यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्रात और अपगरि रियत त्रसंजीयोंको छोड़कर शेप त्रसंजीयोंका त्रसंगारुकि वाहिर मरितायका प्रतिरोधि क्रि

गया है।

र बनवाद-मारनदिवरित्यदत्तस्वविक्रम हेन्द्रता । तनमारिकाहिरन्दि य गांव वि क्रिनेहि सिर्धी मो औ १९९०

## सेसाणं तिरिच्छगदीणं भंगो ॥ ३१ ॥

सेतांणिमिद उत्ते सामणमम्मादिहि सम्मामिन्द्रादिहि असंबद्धमादिहि संबद्धाः संवदा, अव्यक्षिमसंभवादा । एक्टिस तिरिस्तरादीण तिरिस्तरादीणमिदि सदुत्तिमे कर्ष पददे १ ण एस दोसो, एक्टिस वि तिरिस्तरादीण गुण्डाणांदिभेएण सदुत्वितिहामादी। पदिस पदुन्दे गुण्डाणांप पस्वणा पद्धमाणकांत त्वेतसमाणा । अद्योद स्वत्वेतसमाणा । अद्योदसाय स्वत्वेतसमाणिक प्रस्वादसमाणिक प्रस्वादसमाणिक प्रस्वेतसमाणिक प्रस्वादसमाणिक प्रस्वादसम्माणिक प्रस्वादसम्बद्धाः ।

पंचिदियतिरिक्तअपञ्जत्तएहि केर्चाडयं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंस्टेज्जदिभागो ॥ ३२ ॥

बद्दमाणकाते सत्याण-बदण-कतायपदे बद्दमाणवींचिदिपतिशिक्तवश्रपज्जवपदि पदुष्टं होगाणमसेरोज्जिदिमाणा, अद्वादज्जादो असंविज्जपुणा पीभिदो । मारणीतिय-उद्दशद्देशित विष्टं होगाणमसेरोज्जिदिमाणा गर-विश्वितोगितितो असंविज्जगणो ।

छेर विभेचगविके बीबोंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ ३१ ॥

' दीप' पेसा पद कहने पर सासादनसम्पर्टाटे, सम्याधनप्याहाँटे, मसंपतसम्प ग्टांटे और संपतासपत तिपँचीको महत्त करना चाहिय, पर्योक्ते, इनके श्रीतिरिक्त अन्य तिपँचीका महत्त करना मसेमय है।

र्थेका--- एक ही ठिवेंचगतिके होने पर 'तिरिक्यगदीनं ' यह बहुवचनका , निर्देश

कैसे घटित होता है !

समाधान-पद कोई दोष नहीं, वर्षोंक, यक तिर्धेवनतिसामान्यके होने पर भी

गुणस्थाम भाविके भेवसे बहुत्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

दन कक बारों गुजरुवानोंकी वर्षातमक्ष्या वर्तमानकाम क्षेत्रके समान है क्षेत्रके समान है क्षेत्रका कार्यका कियानिक क्षेत्रका करते कियानिक क्षेत्रका कार्यका कियानिक क्षेत्रका क्षेत्रका कियानिक कियानिक क्षेत्रका कियानिक कियानिक कियानिक कियानिक कियानिक क्षेत्रका कियानिक कियानि

पंचीन्द्रयाविर्यंच स्टब्पपर्याप्त जीवाने क्विनाधेत्र स्पर्ध किया है है साकका असं-

पयान्द्रवावयम् छण्डपपवाचाः एयातवां भागः स्पर्धः किया है ॥ ३२ ॥

वर्तमानकारमें रवस्पानस्वरवान, वेद्रमा, और करायसमुद्धात, इन पहाँपर वर्तमान, पोपोर्ट्रमार्किय सर्वपातकों सामाप्यकों क्यादि चार सोहींना सर्वपातकों मान और समाद्रियोग्ये मर्वच्यातमुक्त क्षेत्र स्टर्ग दिश्य है। मार्ट्याव्विकतसुद्धात और उपयाद प्रदावे पेवेट्रिय सम्पर्यपान विषयोंने सामाप्यकोंक मादि तीन कोशवेंड मर्वच्याकां मात्र मोद्र मनुष्यकेंक तथा विवादीक, इन दोनों कोशवेंड संवेद्यावनुष्या क्षेत्र स्टर्ग किया है।

, and

14, 4, 16

सव्वलेगो वा ॥ ३३ ॥

पंचिदिपतिरिक्तअपन्यतेति अणुबहृदे । एत्य ताव 'वा महि। इन्हें सत्याण-वेदण-कसायपदगदेहि पंचिदियनिरिक्सअपज्जनएहि निर्दं होगानक्केनिक भागा, विरियलोगस्स संवेजदिमागा, अहारज्जादा असंवर्जगुणा फोलिशा हो अहुार्ज्जदीव-समुदेस कम्मभृमिपडिमाने सर्वपहपन्यद्वरमाने च तेमि समारी। बरीर-काले सर्यपद्दपन्त्रद्दप्रमार्ग सन्त्र ते पुसति पि तिरियलोगस्य संवेजिदिमामनेन वेष होदि । तस्त्राणयणिवधाणं युचदे--सयंपहपन्यदन्मंतरखेतं जगपदरस्य संवेजदिकां रज्जुपदरान्द्र अवणिदे सेसं जगपदरस्य संयोज्जदिमागी होदि । तं संयोजपवित्रगुरी गुणिदे विरियलोगस्स संखेकदिमागी होदि । अवज्वचाणमंगुलासंखेळादिमागीपाहम्ब कर्ष संवेज्जंगुल्ससेघा लन्मदे १ ण, मुत्रपंचिदियादितसक्छेत्रसे अंगुलस्य संवेजी मार्गमादि कार्ण जाव संखेजजजीपणाणि चि कमवद्गीए हिटेसु उपाजमागागमप्रवर्ण संखेजजेगुत्तस्येप पिंड विरोहामावादो । अथवा सच्येषु दीव समुदेसु पॉनिहिंगितीस्

भंगारमाण उत्सेघ केसे पाया जा सकता है ! समाधान - नहीं, क्योंकि, मृत पंकीन्द्रधादि असत्रीयोके संगुरिके संक्यानुव नामी कारि करके संक्षात योजनी तक काश्विति दिसत कारीधीन ज्यात श्रीवाले कार्यात कार्य कीयोंके संस्थात अंगुछ उत्संघके प्रति कोई विरोध नहीं है।

अथवा, सभी द्वीप और समुदाम पेबेन्द्रिय तिर्वेच सक्त्यपर्यान्त जीव होते हैं। क्वीनी

पंचेन्द्रियवियंच स्टब्यपर्याप्त जीवोंने अवीत और अनागतकासकी अपेदा हर्वहों स्पर्ध किया है ॥ ३३ ॥

इस स्वम 'पंचेत्रियतिर्यंचमपर्याप्त' इस पदको अनुवृत्ति होती है। अर वर्षात 'आ' शायका अर्थ कहते हैं— स्यस्थात, पेदना और कपायसमुद्रात, इत पराही प्रव पंचीन्द्रय तिपंच अपर्याप्त जीशीने सामान्यहोक आदि तीन होडाँका असंस्थातबां मण तिर्येग्डोकका संक्यातमां मांग भीर भदाइद्वीपसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्वर्ग है। स्वर्ग अवृद्धिय भीर वो समुद्राम, सथा कर्मभूमिके प्रतिमागवाले स्वयंत्रमपर्यतके वरमायम व किपारिपंच एरायपर्याप्त अविवाह होना सम्मव है। अतीतकाएम स्वयंत्रमप्वतं सर्व परमागको थे जीव स्पर्ध करते हैं, इसलिए यह क्षेत्र तिपंत्रोकका संस्थातयाँ जानक होता है। अब उस क्षेत्रके निकालनेक विधानको कहते हैं— स्वयंत्रमपत्रतंश आमान क्षेत्र आप्रतरके संस्थावर्षे माग्रमाण है। उस रातुमतरमंसे घटा देनेपर दोर क्षेत्र आप्रतर्भ संस्थातमां प्राप्त होता है। उसे संस्थात स्थ्यंगुठीके गुणा करनेपर विषेत्रीका संस्थात भाग हो नार्के भाग हो जाता है।

धेका — मैतुष्टके मसंस्थातवें मागमात्र मवगाइनवाले शब्यवपारिक जीवीहें संस्थी

अपन्यमा अति । इ.दो, पुन्यवित्यदेवसंष्येण एत्वेथणबहुछन्तीविणकाश्रोताह-सन्मभूमियदिभागुप्पण्यभोतातियदेहवच्छादीणं सम्बद्धिन-समुदेसु संमवीवर्छभादो । महा-मच्छोगाहणिह एत्र्यंथणबहुछन्त्रीविणकायाणमित्यमं कर्ष णव्यदे है बरमणिह उत्तर अप्यायहुमादो । तं बहा- 'सन्वत्योवा महामच्छसिते पद्रस्स असंस्वन्त्रद्भात्मेषा तसकाह्यजीवा । तेडकाह्य जीवा असंस्वन्त्रया । को गुणभाते है असंस्वन्त्रतात्मेषो । तेसं पहि-भागो वि असंस्वन्त्रतात्मेषो । वं आवत्रतात्मेषो विक्ता है असंस्वन्त्रतात्मेषो । तेसं पहि-भागो वि असंस्वन्त्रतात्मेषो । वं आवत्रतात्मेषो विक्ताहिया । वात्रकाह्या विस्ताहिया । पणप्पदकाह्या अर्णक्या वि '। ण च सन्व ते पन्यता चेव, तसअपन्यत्रमणं वि तेतन्त्रस्याणं च संमवादी। ग च सुरवरिते चेव पीचिंदियअपन्यताणं सिमवो वि वोर्षु जुलं, तस्स विधाययसुष्ठामावा । महानन्यादिदेहे तेसिमत्यिचस्स स्वयं पुण इदमप्यावहृत्रसुलं होदि । तसपन्त्रपत्तात्वादो तसअपन्त्रवरासी असंस्वन्त्रगुणो । तेण जस्य तसनीवार्ण

पूर्वमकरे पैरि देवोंके सारत्यते एक संवनमें वड परकाविक आयोंके समृहसे ग्यास और कर्ममृतिके मतिमाणमें उत्पन्न दूप भीदारिकदेहपाछे महामण्छादिकोंका सर्वद्वाप और समुदोंने संमावना पार्ट आतो है।

ग्रंका-महामण्डशी सववाहनामें एक बन्धनसे यद पर्कायिक और्योका सस्तित्य कैसे जाना जाता है ?

समापान—पर्गणार्थक्रमं कहे पर्य सरपबहुत्यानुयोगद्वारसे जाना जाता है। यह इस प्रकार है— 'महामारस्के शर्मामं सबसे कम जगमतरके सर्वस्थानये मागमात्र जरहावरिक जीय दोते हैं। यत असकारिक जीयोंसे तेजस्थायिक जीय होते हैं। या असकारिक जीयोंसे तेजस्थायिक जीयोंसे शृतियोद्धायिक जीय रिशेष स्थापक होते हैं। कितने प्रमाण विशेषसे स्थापक होते हैं। स्थापक होते हैं। कितने प्रमाण विशेषसे स्थापक होते हैं। स्थापक स्थापक स्थापक जीय विशेष स्थापक होते हैं। स्थापक स्थापक जीयोंसे स्थापक जीय विशेष स्थापक जीयोंसे स्थापक जीय विशेष स्थापक स्थापक जीय विशेष स्थापक स्थापक जीयोंसे स्थापक श्रीय देशिय स्थापक जीयोंसे स्थापक स्थापक जीयोंसे स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक जीयोंसे स्थापक स्यापक स्थापक स्थापक

संभवो होदि, तत्य सञ्चत्यं वि पञ्जतेहितो अपञ्जता असंखेज्जगुणा होति। तन संखेज्जंगुलबाहल्लं तिरियपदरमेगृणवंचासखंडाणि करिय पदरागरेण ट्रंर तिरि लोगस्स संखेजजदिभागमेचं पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तसत्याण-वेदण-कसायसेतं होरि। ' वा ' सदद्वी गदी । मारणंतिय-उववादगदेहि सञ्जलोगो पोसिदो, सञ्जल गमनामन पडि विरोहामावा ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपन्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिईहि के डियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो'॥ ३४॥

पदस्स सुचस्स अत्था खेचाणिजागद्दारे परुविदो चि णेह परुविज्जदे।

सब्बलोगो वा ॥ ३५ ॥

पत्य ताव ' वा ' सद्द्वो उच्चदे- सत्याणसत्याण-विहारविदसत्याण-वेदण-क्रमण वेउन्त्रियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेजनदिमागो पोसिदो, वीदाणागदकालेख वेल्पिरी संपंचेण वि माणुसोचरसेलादो परदो गमणाभावा । माणुसखेचस्स पुण संखेज्जिदमणे

संमायना होती है यहां पर सर्वत्र ही पर्याप्त जीवोंसे अवर्याप्त जीव असंस्थानगुर्वे होते हैं। सत्तवय संग्यात भेगुल याहस्यवाले तिर्यक्षमरके उनंचास खंड करके प्रतराहारसे सारि करने पर तिर्पेखोकके संख्यातय मागमात्र पंचेत्रिय तिर्पेच छारपवर्षाण जीवांका श्वास वेदना भीर कपायसमुद्धातगत क्षेत्र होता है। इस प्रकारसं था र बारका मर्ग समात हुन।

भारणान्तिकसमुद्धात और उपपाद्गत पंचेश्द्रियतियंच स्टब्स्यप्यान्त जीवाने सर्वे स्पर्श किया है, क्योंकि, उनके सर्थ लोकमें गमनागमनके प्रति विरोधका भगाय है।

मनुष्यगतिमं मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोमं मिध्यादि श्रीभे

किवना धेत्र स्वर्ध किया है ? लोकका असंख्याववां माग स्पर्ध किया है ॥ ३४ ॥ इस सुत्रका मधे क्षेत्रानुयोगद्वारमें प्रकृषण किया जा चुका है, इस्तिर वह गर क भक्षण नहीं किया जाता है।

मिथ्यादृष्टि मनुष्य, मनुष्यपर्यात और मनुष्यनियोंने अतीत और अनापी

कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्वर्श किया है ॥ ३५ ॥ भव यहांपर परिल 'था' दाम्बा मर्घ कहते हैं — स्वस्थानस्यस्थान, निर्ण प्रभावर पाहल था ' दाश्वका मध कहते हैं — स्वस्वातस्यस्यात, विवस्त कार्यकातस्यस्यात, विवस्त कार्यकातस्यस्यात, विवस्त कार्यकातस्यस्यात् । विवस्त कार्यकातस्यस्य । विवस्त कार्यकातस्य । सादि चार रोष्ट्रांका समेक्यातयां भागवन्त्री किया है, वर्षोक्त, शर्मात भीर सनागर्गहार्त्र के देवाह राष्ट्रांका समेक्यातयां भागवन्त्री किया है, वर्षोक्त, शर्मात भीर सनागर्गहार्त्र के देरों हे सम्बन्धि मी मानुशेत्तर दीटसे परे मतुष्यों है गमनका मनाय है। हिन्दु महुण्यात

मिच्छादिद्वीणं आपासगमणादिविस्तिविदिरहिदाणं जोयणस्वराबाहरूरेण फासामावारो । अपना सन्यपदेहि माणुसलेगो देखणे पोतिको, पुन्तेविस्यदेववर्षणेण छट्टं देखणजापण-स्वस्तुत्पायणार्शभवारो । पसो 'वा 'सहद्वो । मार्ग्यविष-उपवादगरेहि सन्वलेगो पोतिदो, सन्यलेगो गमणामभ्ये विरोहामावारो ।

सासणसम्मादिर्द्वाहि केयडियं स्नेतं पोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदि-भागो' ॥ ३६ ॥

रा २२ त एदस्य गुचस्त अत्था पुरुषं परुविदा ।

सत्त चोइसभागा वा देखणा ॥ ३७ ॥

सत्पाणसत्पाण-विहारविसायाण-वेदण-कपाप-वेउण्वियसपृत्यादगेरीहे गानण-सम्मादिष्टीहि चदुण्हे लोगाणमसंरोज्जिदमागो चोलिदो । माणुसनेचस्य गेर्यज्जिसमागे पोतिदो । अथवा विहासिर-जबसियदेहि माणुनरोत्ते देवूलं चेलिदे । केण ठलं रै विष-

संस्थातयो माम स्वतं किया है, वयोंकि, वाकासममनीह विद्याद सालिये विरहित विस्था-रहि जीयोंके एक साम प्रोमको बाहराते सर्वत्र स्वतंत्र भावत है। स्वया, गर्व परेंक्र प्रोस्ता मिरपारहित मुद्दुकोंने देतीन महुप्यत्रोककः स्वतं किया है, वर्षोकि, वृदंभकं वैरी देवोंके सम्बद्धते उत्तर हुएक सम एक लाम योजन तक उनका जाना भाना संगव है। इस महार यह 'या' दारवृद्ध कर्य समान्त हुमा।

मारवाशिक संस्थान और उपरावपकान करा तीनों बकार के मनुष्य विकास है अविने सर्वेदोक स्वतं किया है, क्योंकि, इन दोनों वहाँकी भवेशा सर्वेदोक के मौनर आने भानेमें कोई विरोध मही हैं।

मनुष्य, मनुष्यवर्षाय और मनुष्यती सामाइनसम्बग्दिः जीवीने विजना संब इसमें किया है ? लोक्सा अर्थास्थातमा भाग स्वर्ध किया है ।। ३६ ।। इस सम्बन्ध भर्ष यहले कहा जा सुका है।

मनुष्य, मनुष्यप्याप्ति और मनुष्यनी सातादननप्यारि औदीने अदीन और अनागतमानकी अपेशा बुछ बम सात बुट चीटह माग रुपये किये हैं।। ३०॥

स्वराजनस्वर्थान, विदारवारवाधान, वेदला, वयाय और वैक्षिप्र समुद्रानगन काका इनसम्बद्धि सुत्राधीन साधारशीक सादि बाद लोडॉडा असंव्यानको साज क्यां किया है, स्वया मानुष्योक्षण शेवणानको साथ क्यां किया है। अधना, विदारवणकाधानीह आपंड पहुँची क्योंसा बेसीन समुण्योको क्यां किया है।

र्शका-पर देशान परसे दिनता बम रोब दिव सन है ?

१ समादवतन्वनारिविद्योगसम्बद्धसम्यः कथः बहुदंदसामा वा दर्दाना । स. वि. १, ८.

कुछसेल-मेरुपव्यद-जोइसावासादिणा । माणुसेहि अगम्मपदेसस्स तस्त कर्प मानुन्ति धवएसा १ ण, लद्धिसंपण्णमुणीणमगम्मपदेसाभावा । मारणतियसमुग्धादगदेहि सव बोर् भागा देखुणा पोसिदा । कि कारण ? सासणाण मारणंतिएण भवणवासियलेगारो रा गमणामावादो, उवरि सञ्बत्य मारणतिएण गमणमंगवादो । उववादगदेहि तिल्हं सेतालन संसेज्जदिमागो पोतिदो; तिरियकोगस्स संखेज्जदिमागो पोतिदो । ष ता वार सासजार्ण मणुसेसुत्पञ्जमाणाणं पोसणं तिरियलोगस्स् संसेज्जिदिगाणी होति सुन्ति दुवाहुसेचफलस्स णरहपअसंजदसम्मादिद्विमारणतियखेचफलस्य तिरियतोगार्तनार्थः मागनुबलनादो । पादीदकाले अहरज्जुमाऊरिय हिददेवसातणाणं मणुस्तेतुणव्यमाण मुवनादपोसपं तिरियलोगस्य संखेज्जदिमागो होदि, छन्नावकमणियमवर्तेण प्रमानि

समाधान-वित्रापृधियी, इत्लाचल, मेधपर्यंत मीर ज्योतिक भाषास भारिते (१ प्रदेश विविधन है।

शंका-मनुष्यांसे अगम्य प्रदेशवाले इस कुलावल आदिके क्षेत्रको भागपारे । यह शंता केले मात है ?

समापान—मदी, क्योंकि, सम्बद्धसम्बद्ध मुनियोंके लिए (मनुष्यतीकें होत)

सराय बरेशका ममाय है।

मारणानिकममुद्रातगत सासादनसम्बन्धिं मनुष्यीने कुछ कम सार को बीर (रं) माग रगरों किये हैं। इसका कारण यह दे कि सामाइनसायग्वाहियाँका नारणां समुद्दानके द्वारा मयनयासियों के नियासलोक्स मीच गमन नहीं दोता है। दिन्तु कार सा मारचारिकसमुदातके सारा गमन संभय है। उपपादगत उक्त तीनी प्रसारक सालाहि सम्यक्ति मनुष्याने सामान्यस्थीक माहि तीन सोकीका अर्धक्यानयी मान स्ता किली क्षेत्र निर्वेग्हे। इस मंद्रयानची भाग दरशे किया है।

र्शहा — मनुरुपि उत्पन्न होनेवाले जारकी सामादनसम्बन्धियाँका स्वर्गातमे है निर्देग्टोडी संस्थातयो साम नहीं होता, प्योहि, ( सतंत्यात योजन शिश्त सेनीशी विदेग्टोडी संस्थातयो साम नहीं होता, प्योहि, ( सतंत्यात योजन शिश्त सेनीशी हिलाह) माने दोनों शेरके देशकार य मुताकार शेत्रीका शेवनका, नारकी मधेवनकार्णि के के कार्या कीर व मर्गत्वाटम ही माट राजुदमाल क्षेत्रक समेववात्य प्रमाणनाण वारा की हात की है हात है। हात की हमाट राजुदमाल क्षेत्रक व्याप्त करके हिन्दु भीर महास्त्रक होते को स्वाप्त की हमाट राजुदमाल क्षेत्रक होते को स्वाप्त की हमाट स्वाप्त की हमाट स्वाप्त की हमाट स्वाप्त की स्वाप्त की हमाट स्वाप्त की स्वाप्त रीने बाटे सामादनसम्बद्धि देवीना स्वत्रमा स्वत्रमा नार्वेत हिवन भार सतु । " विकास देवि बाटे सामादनसम्बद्धि देवीना स्वताहसम्बद्धी स्वतिहोत्र विदेशीम्ब निर्देशीमा

है। दिस्चानुर द्वीलास्टरमा इस परका अर्थ बहुत राष्ट्र नहीं द्वजार प्राप्त । सन्दर्भ के १८८८मा न मी का भुग है। (देना पू. १८०.) इस पटका अन बहुत कार नहीं हुआ। मार्ग का श्री मी का भुग है। (देना पू. १८०.) इस पटकी यगासाय सार्वकर्ता निकालार को स्ट्रा रुपा है। स्वत्व है व उन सरहारे बहे से बेंट्र विशेष्ठ मात्र हों। विशेष्टवर्षणी स्थिप

1, 2, 20 ]

मान होता है, चयोंकि, मयहतरमें संक्षमणे समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दृक्तिन, ऊपर भीर भीवे, हरामार छह दिशामोंने ममनाममस्य यद मध्यम-नियमके करते वैतातीस साम गोजन विव्यक्तमाले ए माट राजु वासेचयाले होता में मारी भीरते महाप्यतीको को मोनेमाले मीविक प्राप्त होता है। भीर मं तिर्वेशिक स्वयादाया पाया जाता है। भीर मं विर्वेशिक संव्यक्तमाले पाया जाता है। भीर मं विर्वेशिक स्वयादाया पाया जाता है। भीर मं विर्वेशिक महाप्योपिक प्राप्त होता है। भीर मं विर्वेशिक महाप्योपिक मार्गिक स्वयादाय मीविक स्वयादाय मान होता है। भाग होता है। भ्योंकि, यहांतर भी वारों ही दिशामोंके मार्गोसे आगमन हेला आता है।

समाधान—मय उर्गुक मारांशाचा वरिहार करते हैं— न तो मारके सामाहत, सम्प्राह्में हो माध्य वर्षक उर्गुक्त मारांशा है, त्यांकि, तिभिष्ठिक उर्गुक्त सम्प्राह्में स्थान के बरले तिर्वेशिक संविद्यालयों माग नहीं स्वीकार किया गया है। और म देव सामाहत्वस्याव्यक्तियों नामाय करके भी उक्त देव भाव होता है, क्योंकि, भाव राष्ट्र असे उक्त देश भाव होता है, क्योंकि, भाव राष्ट्र असेव्यक्ति सामाहत्वस्याव्यक्ति मारां स्वयक्ति तथा उर्वित भीषांका में पालकी तथा किया महिले बहुने भीत उर्वेक्ट प्रयासक समुख्यक्तिक स्विद्यक्ति की माहत की एक या हो विद्यक्ति स्वयुव्यक्तिक स्विद्यक्ति की माहत की एक या हो विद्यक्ति महिला स्वयंति विद्यक्तिक संव्यक्ति भागमा स्वयंति याया आता है।

र्शका-तिरछे जाकर पुनः विवह करके सासारनसम्बन्धि देव, मनुष्योमें क्यों कर्षा अत्यव होते हैं !

समापान — मनुष्यातिसे रहित हिरामें स्थमायसे हैं। उनका यसन नहीं होता है। तथा, मनुष्यातिके सम्मुल शाकर और विमह करके मनुष्योंने करका होनेकाले त्रीवोंका भी भेत्र बहुत नहीं पाया जाता है, प्रयोकि, यस सेवके विर्पालीकके संक्रालयें ज्जदिमागपहाणचादो । तम्हा एवंबिहाणियमवसेण तलकोसणमेचस्तेव संगहो कावनी मणुसोववादिणो देवसासणा मूलस्रीरं पविसिय कालं करेति चि भणंताणमित्रणाल तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागमेत्तमेदं फोसणं समत्येदव्वं । तिरिक्खसासणेसु मणुरेत्रै प्पन्जमाणेसु वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो फोसणसुवलन्भइ, तिरिक्खसासणसम्ब इट्ठीणं चउग्गईसुप्पज्जमाणाणं तिरिक्खमवाभिम्रहसेसगइजीवाणं च तिरिच्छं गंत्ग रिन्स् करिय उप्पत्तिदंसणादो । अतएव च ' तिरोऽख्यन्तीति तिर्यश्चः'। एदेतिमेवीवत भी अतिय चि कुदो णव्यदे ? देवसासणीववादस्स पंच-चोहसमागपोसणपरूवणणाहाणुववित्री तदा ण पुच्बुत्तदोसप्पसंगा चि सहहयव्यं।

सम्मामिन्छाइडिपहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केव<sup>डिय क्षेत्र</sup>

पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ ३८ ॥

सम्मामिच्छाइद्वीणं बद्दमाणकाले सगसन्वपदेहि खेत्तमंगो । सत्थाणपरहिणी चरुष्टं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुवखेचस्स संखेज्जदिभागो पासिदो। विहासी

र्शका—इन तियचाकी इस प्रकारकी तिरही गति होती है, यह कैसे जाता शर्मा समाधान-भग्यथा देव सासनसम्बग्दृष्टियोंके उपवादसम्बन्धी वांच बहे बीर्र (र्हे) मानमाण स्पर्शनक्षेत्रकी प्रकपणा नहीं हो सकती थी। दसलिय पूर्वीक होन की

प्राप्त होता है. येमा श्रद्धान करना चाहिए।

मनुष्योंने सम्यागिश्यादृष्टि गुणस्थानमे लेकर अयोगिकेवती गुणस्वन ग प्रत्येक गुणस्थानवर्षी जीवीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है? लोकका अवंस्परती हरी रपर्ध किया है।। ३८॥

सम्यामिष्णाद्धि मनुष्यांका वर्तमानकालमें स्परीनक्षेत्र भपने सर्व वर्तांनी होणे हेन्द्रद्रहरणांके समान है। स्वस्थानस्वस्थान प्रशिधन उक्त गुणस्थानवर्गी मधुर्यान कर्तन हों कारि कार हो हो है। ससंक्यानयां साम भीर मानुपतिका संव्यानका स्वर्णन

मागकी ही मधानता है। इसलिय इसप्रकारके नियमके पदासे भेठके तलमागके स्पर्धनमाह ही संग्रह करना चाहिए। मनुष्योम उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्राष्ट श्रीव मूनग्रारी प्रपेदा करके मरण करते हैं, पेसा कहने घाले आचार्यों के अभिप्रायसे तिर्घलोकका संशास मागमात्र स्पर्धन होता है, देसा समर्थन करना चाहिए। तथा तिर्यंच सासानसम्बद्धाः भीर मनुष्याम मी उत्पन्न होने याले अविमें तियंग्लेकि संवयातय मागामाण स्वर्तनम पाया जाता दे, पर्योक्ति, चारौँ गतियाँमें उत्पन्न होने चाले तियँच सातादनसःगरीयोह मे िर्यवस्यके मिम्सिय द्वीप गतिके जीवोंके तिरछे जाकर भीर विग्रह करके उनाहे के जाती है। भीर इसीलिय वे 'तिरछे जाते हैं सत्तवव तिर्वेष हैं 'वेसी खावित की गाँ है।

सत्याण-वेदण-कसाय-वेदिवयपरेहिं चदुर्व्द लोगाणमसंदोडनादिमागो, माणुसरेनहम संदे-जनिद्मागों पीसिदो। अदीदाणामदन्दमाणकालेमु मणुममानदिक्षाने मणुममान मिच्छादिद्विमंगो। पारी मारणीतियमपादगदिद्वि विष्टूं ते,गाणमसंदोडनदिमागो, विदिन् तिमास संदेजनदिवाणो पीसिदो। वे कर्ष १ मणुममामादिद्विदेवेषु मारणीवेष करेना संदोडनपेण-संदेजनविमाणेषु चेन मारणीवेष करेति, वाण्येवत-नोदिक्षिण्य तैरिकृप्यमाण् अमानादो। तत्य प्रयोजिस्स वदाए नदि असंदोडननोपणतन्तवाहरूले होति, ते। वि विदिष्योगस्य असंदोजनदिमागेषु चेन वेत्र प्रांगिदे होत्न । नेणदमप्याणे। मणुना प्रयंतिदिख्या प्रदायुगा पण्डा समर्थ पन्य तिविष्येषु उत्यक्षाने एदे गोस प्रपानं। कृष्योग्दमणिन्नदे १ सर्पयदण्यदादो उत्रिमारोगिक्षसं 50य--

स्यातं पाष्टरागुणितं पाष्टरासहितं विकृत्यम्पद्दरं । स्यासिवाणितसहितं सदमादीः तद्ववेग्यसम्य ॥ ६ ॥

किया है। विदारकारवस्थान, वेदना, कवाय भीर विशिवकामुद्धान, हन एराँगी भीराम मनुष्योंने सामानवशेष भादि चार होशेका भर्तप्यानवां भाग भीर मनुष्योगकरे। संस्थानकी मान क्यों क्या है। भरीत, भनागन भीर वर्तमान, हन तीरों बांगोंने मनुष्य सर्वतन-सम्परिधियोंक स्थाननकपना मनुष्य सम्पावस्थादियोंके समान है। विशेष बान यह है कि मारवाधिकसमुद्धातमान सर्वयत मनुष्योंके सामायशेश भादि सीन होगोंका सर्वकार्यान मनुष्यों मनुष्यों भीरामिक संवयस्था मानुष्यों के सामायशिक भादि सीन होगोंका सर्वकारण

र्षेता---मारणारितकसमुद्धातगर मर्सपतसम्परक्षि मनुत्योंने तिर्परनेका संग्रान्ति मानुत्योंने तिर्परनेका संग्रान्ति

समापान — देवीम साध्यातिकत्तमुद्यात करने वाहे कावण्डाह सनुष्य संक्यान सार्ग वाहे संवयात विस्ताम की माध्यातिकत्तमुद्यात करने है, क्योदि, जनने साम्यत्य सार्वाद के स्वीद क्षेत्र करने साम्यत्य सार्वाद करने सार्वाद करन

र्गुक्त - बळायुग्न मनुष्यांना यह उपग्रद्देश केले निकाला जाना है ! समाधान - स्वयंत्रप्र पर्वतसे उपरिच होक्के विषक्त्रप्रदेश क्यारित करके -

स्थानको सोसहस गुना करे, पुनः सोतह जोते, पुनः तांत, यह भैर यह मदान् एकती तेरह (११६) का भाग देवे। पुनः स्थासका निगुना जोत्र देवे, तो प्रश्नसं भी स्टब्स परिभिक्ता समाज मा जाता है ६९॥

६ आ ७ १ दो. पनाधी वंबेन्द्रसाधी दा " इति द रा १

इस मापाके अनुसार परिधिको निकालकर और विषक्तमके खुनुर्माणने गुणार चुना संस्थान अंगुजोंने गुणा करने पर निर्यम्लेकके संस्थानये आगण्यमाण आरवानिकारेत को अपना है। यह केव समार्गदीयसे ससंस्थातगुणा होता है।

उदाहरत-ध्यवंत्रत पर्यतित ब्रवस्ति मत्म मर्यात् मतिथी क्षेत्रका विकास

$$\xi = \frac{c}{d} = \frac{c}{3} + \frac{c}{3} \times \frac{\xi f}{\xi f} + \frac{f}{6} \times \frac{\xi f}{3} = \frac{\xi f \circ f f}{3 \cdot n f} + \frac{c}{4 \cdot n f} = \frac{1}{4 \cdot n f}$$

यह प्रश्यानिक मसुदानातः सस्यत्रसायान्ध्ये समुद्योकः क्षेत्र है हो शहुन्ति सहयोगित कुछ प्रविक हेतिक नाग्या निर्वेत्योक्त सर्याम् ७ ४ १ राहुना संन्यानां साम नर्य रिकारिक स्टब्स योजन शिकास योज सह हैतियो सस्वयातसुमा नहा है।

करणान्यद्रमत अभेगताव्यवस्य अधिने नामास्याभीक आर्थि तीत श्रीरी ही भारतो आर्थ प्रेम तिर्वशिक्ष अंव्यातमा आग्र कार्य क्या है। बद हमरबार है नगी अर्थ ज्वालये सार राष्ट्र आयत्र और यह राष्ट्र विश्वल के विश्वल के क्यारचे अस्पत्र प्रदान है तथा हमा स्वाप्त होते हैं तो सी बद रपरेतिस्य विशेष्त क्यारचे अस्पत्र प्रदान है, वर्षीह, नामान्य स्थान होते हैं तो सी बद रपरेतिस्य विशेष्त क्यारच स्थान होता है, वर्षीह, नामान्य स्थान स्थान स्थान वर्षीह मार्थी स्थान होते पाने क्यार स्थाप है, वर्षीह सामान्य स्थान प्राप्त जाता है। बद वर्ष क्या

करणकरन बतुष्यंची वर्गमानदारिक नगरीनदी प्रदाना धर्वेड स्वतं है। इरक्ट-वर्गकरण स्वतं धंयतायोग स्वत्यंत अर्थानदाव्ये सावायोगि सर्वे कर संबंधि स्वतंत्रप्य स्वतं धंयतायोग स्वत्यंत्व अर्थनत्वयं स्वायं श्रीत् माणुसवेत्तरसः संसेजदिमागो, संसेजा भागा वा पेशिसा । मार्गितपामुग्यारगेदीहः चदुष्टं होगाणमसंसेटजदिभागो, अहुाइउजारो असंसेज्जगुणा पेशियो । कार्गं विनिय वर्ष्यं । पमवसंबरपाहरि जाव अजांगिकेवित ति जोर्थं ।

सजोगिकेवरीहि केवडियं क्षेतं फोसिदं, होगस्स असंखेजदिभागो, असंक्षेत्रज्ञा वा भागा, सन्वहोगो वा ॥ ३९ ॥

एदस्म सुचरस अत्यो पुन्नं उचो चि संपदि ण उन्चदे । एवं पन्नचमशुन-मणुसिणीसु। वन्नदे मणुक्षिणीसु असंनदसम्मादिद्वाणं उचनदो णत्य। पमचे ने बादारं गरिय ।

मणुसअपउजत्तेहि नेयडियं सेत्तं पोसिदं, छोगसा असंखेउजदि-भागो ॥ ४०॥

सत्याण-वेदण-कवायसबुरवादगदेहि चडुण्डं लोगानमवंदोडजरिमागो, माणुन-रोजस्स संरोज्जदिभागो पोसिदो। मार्ग्लविय-उपनादगदेहि तिण्डं लोगाणमर्गमंत्रजदिमागो, दोलोगेहिंतो असंरोज्जवुनोर पोसिदो।

लेक मादि बार लेकिका भर्तपातवां आग भीर मनुष्यतेष्ठवा संस्थानवां साम अववा संस्थान बहुमामममाण होत्र स्वतं किया है। मारणानिकत्ममात्रामन संवमानेवन मनुष्यते सामान्यलोक मादि चार लेकिका संस्थानकां भाग भीर भग्नांद्रीचे सर्वस्थानगुष्य होत्र स्वयं विश्व है। इसवा कारण विचार कर कहना यादिय। ममस्यवन गुण्यानिस स्वाधर सर्थाविकाली गुण्यान तक मलेक गुण्यस्थानवीं मनुष्योवा स्वयंत्रहेश भोवदस्यकारे समान लोक्या मर्वस्थानवां मार्ग है।

संयोगिकेवली जिनोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका असंस्पान्धां मान,

असंख्यात बहुमाग और सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ३९ ॥

दस रोपका समें पहले वह सावे हैं, हमालिर सब नहीं बहने हैं। हभी सवारसे वर्षात्ममुख बीर सहावनियाँका करानेस्ट्रेस जनाना चाहिए। विशेष वान यह है हि सहावानियों से अक्षेत्रकारपटि जीवोंका जपाद नहीं होना है, और समससंदन्त क्रिक्ट वर्ष सहावन्त्रकारणाज्ञ से तेमल वर्ष साहायन्त्रमाहाय नहीं होते हैं।

हरूपपूर्याप्य मनुष्यान कितना क्षेत्र स्पर्श किया है । होहहा अभेरपाइता

भाग स्पर्श किया है ॥ ४० ॥

क्षरपात्रश्वरात्रत्न, वेद्या और व चायसमुद्रात्रत्तत्र क्षरप्यक्षंण अनुर्योवे क्षत्रस्थः लेक साहि यतः क्षर्वेषद्व सर्ववयात्रयं भाग और अनुष्यक्षत्रपा संस्थापत्र सम्य कराई दिस है आराजातिकस्थात्रात्र और उपयादय्यात वक्षः अधिन स्थापयशंच साहि तीन है। स्थाप अर्थस्थातवां भाग और अनुष्य तथा तिर्वेश्योक्षयं सर्ववयातगुष्य सेव वयर्गे दिया है।

## सन्वलोगो वा ॥ ४१ ॥

सत्थाण वेदण कसायममुग्यादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंग्रे नदिमाणे, माणुग्वतस् संखेखदिमाणे, संखेखा भागा वा अदीदकाले पोतिदा । मारणंतिय-उदगदगरेहि <sup>मुन्</sup> लोगो पोतिदो, सन्दरस्य गमणागमणे विरोहाभावा ।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्टि-सासणसम्मादिट्टीहि केविडयं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो<sup>'</sup> ॥ ४२ ॥

पत्य ताव मिन्छादिद्वीणं उच्चदे- सत्याणसत्याणपरिणदेहि तिण्हं होनाणमंत्रके ज्जदिमागो, तिरियलोगस्स संखेजजदिमागो, अङ्काहज्जदो असंखेजजगुणो पेशिदो। एं विहारविदितरवाण-वेदण-कसाय-वेजिव्यपदाणं पि वत्तव्यं । मारणतिय-उववादगरेहि त्रिवं लोगाणमसंखेजजदिमागो, णर-तिरियलोगहिंतो आसंखेजजगुणो पोसिदो । सात्रवासम्बद्धिस्य सत्याणसर्थाण-विहारविदितरवाण-वेदण-कसाय वेजिव्यपदाणं खेतां । मार्गितिय

रुव्यपर्याप्त मनुष्योंने अतीत और अनागतकालक्षी अपेक्षा सर्वनोकस्पर्य किया है ॥ ४१ ॥

रयस्थानस्यस्थान, वेदना और कथायसमुद्धानगत लब्ब्यपूर्यान्त मुज्योते सामन्य लोक आदि चार लोकोंका लसंस्थातयां भाग, मनुष्यक्षेत्रका संस्थातयां भाग अथवा संस्था यहुमाग अतीतकाल्ये स्पर्धा किया है। मारणानिकसमुद्धात और उपपद्मत मनुष्येत सं लोक स्पर्धा किया है पर्योकि, उनके सर्वेष्ठ गमनानागमनमें कोई विरोध नहीं।

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादिष्ट और सासादनसम्बन्धि औरोंने कितना हेर्र स्पर्ध किया है ! लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥ ४२ ॥

यहांपर पहले मिरयादृष्टि देवांका रवदां तरेल स्वतः व । १००० व । १०० व । १००

१ देरगर्गः दर्शक्षावादिमानादनकःवन्तिमिन्नोषरवालंक्वेदमागः अष्टी मद बहुदंडमागा वाहेरूपा

जववादगदाणं पि संघोषमेव होदि। एसा षष्ट्रमाणपमाणपरवणा । अदीदाणागद-परवणहमाह-

अट्ट णव चोइसभागा वा देसूणा ॥ ४३ ॥

सत्याणसत्थाणिमन्छारिद्वीदि विष्ट्रें लेगाणमसंस्वेज्ञदिमागा, निरियलोगस्य संस्वेज्ञदिमागा, अद्वाद्वज्ञदो अमंद्यज्ञपुणी पोसिदो। एत्य आपकारणं वचन्दे। साम्या-सम्मादिद्वीदि सत्याणसत्थाणपरिणदेदि विष्ट्रं लेगाणमयस्वेज्ञदिमागा, निरियलोगस्य संस्वेज्जदिमागा, अद्वदःज्ञादो असंगज्ञपुणी पोसिदा। एत्य वि ओपकारणं वचन्दे। विद्यादिमागा, अद्वदःज्ञादो असंगज्ञपुणी पोसिदा। एत्य वि ओपकारणं वचन्दे। विद्यादिमागाया विद्यापाणस्याप्येज्ञदेवि अप्याद्यापाणस्य अद्वद्याद्यादिद्वावज्ञपद्याच्यापाणस्य अद्वद्याद्याद्याचा देवाण पोसिदा। विच ज्ञाप विद्यापाणस्य स्वयापाणस्य विद्यापाणस्य स्वयापाणस्य स्वयाप

ामुद्धान भीर जपपार्वर्याल लोगोंका भी राधीनरोत्र भोग रेक्सकपणीक समान है। होना । इसवकार यह पर्तमानकालिक राधीनरोत्रके प्रमाणकी प्रकाण समान हूँ । अब असीन ।र मनागृत कालुमस्कृषी स्परीनरोत्रके प्रकृष कुरनेक लिए भागेका वृद्ध कहेन हैं—

निष्यादृष्टि और सागादनसम्पग्रदृष्टि देवीने अर्थन और अनागढकानकी अरेखा र कम आठ केट चीदह भाग और इड कम नी केट चीदह भाग रक्षा किये । प्रवा

क्यरपानदरस्थान पद्यांने सिप्यादिष्ट देवीने सामान्यतीन आहि तीन कोडोका क्यातवी आत. निर्यालीकरा संस्थातयो साम और आहोद्दीयने सर्वस्थातगुरू देव किया है। यहांपर कारण भोषके समान कहना चाहिया। कारणावता नाता निर्यालेकर इत्यासप्यादिष्ट देवीन सामाप्यतीन साहितात होत्रीका अस्त्रेक्यावदी मात, निर्यालेका त्रयो माता भीर अहादिवायने असंक्यावगुर्णा देव करती किया है। यहांपर भी कारण समान दो करना चाहिय। विदासप कारणान, वेदना, क्याच और वैदिश्च समुद्रम्न, हिसे परिवाल विद्यादिष्ट भीर सासाप्यतिकस्थादिष्ट, को सामान्यानती देवीन स्थालकर्वा मा भार कहे थीहर (१६) भाग करती विष्य देश

द्रीका-पद्रां भाट बढे चीत्र भाग दिस शेषसे बम हैं !

समापान-सतिव पृथिषीतः अध्यनम तलसम्बन्धी एव इकार योक्सीसे, तस्त विद्यांत अगम्य प्रदेशीले, कम्म हैं।

सारवातिकवरमुदानगर विश्वाहरि और साराइनसम्बद्धाः हेवीने संदराक्षके राष्ट्र और अपर सात राष्ट्र, इस प्रकार कुछ कम मी बढे में इह ( क्वे.) आप क्यां - down

मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीहि पंच चोदसमामा देखणा पो मेदेसिम्बबादामात्रा । छकावकमणियमे सेते पंचचोद्दसमागकोर चदुम्हं दिसाणं हेहुवितमदिसाणं च गच्छंवेहि तदा मारणं पिह का दिसा पाम ? सगहाणादो कंडुन्जुना दिसा णाम । संमवादे। । का विदिसा णाम ? सगद्वाणादो कण्णायारेण द्विदस्ते वीता कृष्णायारेण ण जाति तेण छकानकमणियमी जुजेर । ण हापेन उन्तरि सिरिसा होति चि विषमो, एगंगुडादिविषपेहि ति

काऊन तिरिक्त-मणुमाणं विदियदेडेण समुप्पनिद्वाणपावणे विरोहा उप्पन्नमाणितिसम्युवचादखेचे गहिदे पंच रज्ज् सादिरेया क्षिण हिते हैं। उरगाहरदमन मिध्यादाष्ट्रि और सासाहनसम्यादाष्ट्रि देवॉने हुए ( हो ) भाग न्यदां किये हैं, प्यांकि, सहस्रारकस्पसे ऊपर इन दोनों गु

र्थ हा — छदाँ दिशाभीं भाने भानेका नियम क्षेत्रेयर सासादनम् राजनीत पाँग बटे चीहर मागवमाण नहीं बनना है ? मनापान - वेभी घारोडा नहीं करता चादिय, वर्गोक, वारी करर तथा नांवडी दिशानोंडा गमन करनेपाट जायोंडे मारणानिकसम्। विशेष मही है।

ग्री-दिशा दिन कहते हैं?

ममायान — भाने स्थानसे वालकी मरह भीचे शेवकी दिशा करते वे दिसार्य छह है। होती है, क्योंकि, सन्य दिसाओंका होता सर्गमन है वंद्य-विदेशा दिन करने हैं ? ममाराज — मर्गन क्यानमें क्यांगा है माहास स्थित शेवका विशिया वृष्टि प्रारक्षानिकसम्बातः भीर उत्पाद ग्रहमन समा प्रोत कर्णसारे

करून जिल्हा समेव जहां जान है. इसीलए एट दिशा और समझ समी नार er bei gig g aur fann & .... feets and when a ---

13.8, 84. j फीसमाञ्चमके देवफीसमाप्रस्वर्ग ा अहिपसेचारो ऊगरोचस्म बहुमुबरेसा। वं कर्ष प्रव्यदे १ हेहा दंहापारेण ओपरिय ्रविभाव काळण मनणनातिपुरापण्याणं पदम-निरियहंबेहि अहीदकाल हदरापाण आयारप रुवबादसेन्तारः उवस्मिमागस्त संखेज्जगुणमा विमाणसिहस्यस्त्रह्नारः रुद्धराजादा सहस्मा रुववादसेन्तारः उवस्मिमागस्त संखेज्जगुणमा विमाणसिहस्यस्त्रह्नोयणप्रमाणं वि माणोग 1 224. ष्ट्रबाद्वानात् अवारणमानस्य वाय्ववयुज्ञन्याम् । उत्तरिमभागो, तहस्तारुरिमपञ्जनताणस्य स्वरायमाणज्ञीयणेहितो बहुत्रचारी । तं इरो जनातम् । तहरताजनारमारमान्यानारमः व्यवस्तानारमः व्यवस्तानारमः व्यवस्तानारमः व्यवस्तानारमः व्यवस्तानारमः व्यवस्त सम्मामिन्छादिहि-असंजरसम्मादिङीहि केवडियं सेतं पोतिरं, लोगस्त असंखेज्जदिभागो'॥ ४४ ॥ पदस्त ग्रुचस्त अत्यो खेनपस्त्रणाए उची चि हह व उच्चेदे । अह चोइसभागा वा दैस्रणा ॥ ४५ ॥ समाधान - देशो बाह्य करने पर उत्तर देते हैं कि नहीं होता है, वर्धों है, श्रीधह की अपेक्षा कम होन्दी अधिकताका उपदेश पापा जाता है। चणा च्या चारा वाता व समाधान चानि वंशकार भागमादेशींसे जनरकर भीर विमह करके अवनवासियोंसे

द्वाभाव जीवांके भवत और विताव हवांके वारा भनेत्रवातम व एक स्वत्ववात्त्रात्त्र विद्यांक जीवांके भवत और विताव हवांके वारा भनेत्रवातम प्रकाशिक त्रवांके वारा भनेत्रवातम प्रकाशिक तरकार वेद्यांके वारा स्वत्ववात्त्रात्त्र के विद्यांके वारा स्वत्ववात्त्रात्त्र के विद्यांके वारा क्षाण्य के विद्यांके वारा क्षाण्य के विद्यांके कार्यांके वारा के विद्यांके विद्यांके वारा कार्या विद्यांके विद्यांके भागत तकार देव के विद्यांके वारा कार्यांके वार्यांके भागत तकार देव के विद्यांके भागत वार्यांके वार्यांके भागत वार्यांके भागत वार्यांके वार्यांके भागत वार्यांके भागति वार्यांके वार्यांके भागति वार्यांके भागति वार्यांके भागति वार्यांके भागति वार्यांके व

माहरूबबर्ड्डास्याहे मेहोबरबाटबरेबदार बडी पहुरेहबार वर देशेल । इ.स्. १ र.स.

सत्याणसत्याणपरिणदेहि सम्मामिन्छादिष्टि-असंबदसम्मादिङ्कीहि तिष्ठं सेषान्तरं सिखे अदिमानो, तिरियलोगस्य संखे किद्रमानो, अद्वाद्रज्ञादो असंखे ज्वनुनो शेषिरी। एसी 'वा 'सहहो । विहारविसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिक्य-मारणित्यसपुग्वारमेरी असंबदसम्मादिङ्कीहि अङ्क चोहसभागा देखणा पेतिसदा। उत्रवादगरेहि छ बोर्यमण पेतिसदा, अच्छुदक्तपादो उविर मणुसविदिरिचाणधुनवादाभावा। एवं सम्माभिन्छिरिङ्कैं पि। णविर मारणेतिय-उववादगदा णिर्द्य।

भवणवासिय-वाणवंतर-जोदिसियदेवेसु भिच्छादिट्टिसासणसम्म दिट्टीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, छोगस्स असंखेजदिभागो ॥ १६॥

वाणवेतर-जोदिसियमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीणं स्वेतमंगो । अवनानिः मिच्छादिहीहि सत्याणसत्याण-विदारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिव्यवसमुग्यादगेदिशः माणकाले चदुण्दं लोगाणमसंखेजदिभागो पोसिदो। अहुादुःजादो असंखेज्जपुषो। उत्तर्भ परिणदाणं पि एवं चेव वचववं। जदि वि एदं बहुमसंखेजजतेहीमेनं, तो ति विधिः

स्यस्थानस्वर्धानवर्षाश्चित सम्योगम्यादृष्टि और असंवतस्वरदृष्टि योते साम्ये होक मादि तीन होनों का असंव्यातयों भाग, तिर्थन्तिकका संक्यातयों माग और मादिति सर्वस्थानगुष्म होन स्पर्श दिया है। यह 'या' दाग्वका सर्थ है। विहाद्यस्थास्थान, वेद, स्थाय, वैकिषिक और मारवातिकसमुद्यातगत असंयतसम्यन्दृष्टि वेथाने हुए बहे योते बौद्द (र्द्ध) माग स्पर्श किये हैं। उपपाद्यद्वगत असंयतसम्यन्दृष्टि वेथाने हुए बहे योति (र्द्ध) माग स्पर्श किये हैं। उपपाद्यद्वगत असंयतसम्यन्दृष्टि वेथाने हुए क्षा और वे स्थाय होनेका समाय है। इसी प्रकार सम्यग्निस्थाहृष्टि वेथान भी स्पर्शन जातना पादि। विद्याय होनेका समाय है। इसी प्रकार सम्यग्निस्थाहृष्टि वेथान भी स्पर्शन जातना पादि।

भरनरामी, बानस्यन्तर और ज्योतिक देवोंमें मिध्यादृष्टि और सामारत्यण इटटि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्भ किया है ? लोकका असंख्यातर्य भाग स्पर्ध किया है।। १८ ॥

यान यान और स्थेतिक विश्वयद्यि नथा सामाइनसस्यादि देवीहा हार्ट केवदबराजोद समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विदारक्ष्यस्थान, वेदना, बताव और केट दिक्षमुद्रमन्त्रमन स्वनवाको विस्थादि देवीन वर्गमानस्थान सामान्यत्रीह आर्दिन दोर्चेडा सम्बन्धान्यो साम स्पत्ती दिया है। तथा मानुष्यत्रोद्धक्ष आर्द्यान्युवा कि सर्व दिवा है। स्वयाद्यस्थान कन देवीहा सी इसी प्रदारके स्वयादकेष स्वर्ग वादिराहरी इ. इ.स्यादकेवनस्थानी साम समेन्यान क्षेत्रीवसाण होता है, तथानि निर्वादोद स्वरंती

इ महिद्वा १४५ १ (हे बहुत)

तेत्तरम् अभेषेर्वजित्वारि चैव उपयोदेण बहुवागकोले फुनेदि, तिरिवलेत्तप्तकारिम् तर् स्वज्जदिमापे चैव मयणावासाणववहागोदी, वस्यदिहरिमें मीर्ण्णजीरमार्ण गमणा-ताबादी, हेहा ओपरिप उपपज्जमाणाणं तुहु थेवचादी । मारणविषयमुन्यादगोदी निर्द होताणमसंखेजजितिमापी, पर-तिरिवलीमेहितो असंखेजज्जुणो । मवणवीगियवासणमम्मा देहीणं संचर्मगो ।

अदुद्धा वा, अह णव चोहसभागा वा देसूणा ॥ ४७ ॥

भवणवासियमिन्छादिङ्कादि सत्याणमत्याणवरिणदेति चदुण्डं लेगानमभैनेगज्जदिन् मागे। अष्ट्राइज्जादो अमेलिज्जमुणा पासिदो । विदारवदिसत्याण-पदण-कमान-वेडिव्य-पदेढि अबुद्धा वा अङ्ग पोर्सनमामा वा देखणा । अबुद्धर-ज्ञ मयवेच विद्यति । कप्पमादुद्ध-रुज् जादा १ मेदरलुलादो देहा देल्लि, उपरि जाव भोषम्मनिमाणविदरपदरदेश नि दिवहरज्ज् । उपरिमदेवपयोगण अङ्ग रुज्य । मार्ग्यनियमग्रुग्यादंगदेदि यव चारममामा

सर्व भागममाण रेज ही उपयान्ते ज्ञार पूर्वभावकारमें नरहें किया जाता है, व्याहि, विशेषक्र मध्य भागमें और उत्तर भी सर्वयागयं भागमें ही भागवार्थी हेवीं कामार्थीं मध्यस्थात है। स्था, सिव दिसासे दिमान भविष्य हैं उत्तर दिसारे छोड़ हर भागतियाँ मध्यस्थात है। स्था, सिव दिसासे दिमान भविष्य हैं उत्तर दिसारे छोड़ हर भागतियाँ मध्यस्थातियाँ मध्यस्थातियाँ स्थान स्वत्य है। स्थान करनेका भव्यस्थाति है। स्थान स्य

मिथ्यारिष्ट और सातादतसम्पारिष्ट भवनत्रिक देखोंने अर्थान और अज्ञान कालकी अपेक्षा लेकनालीके पाँदर भागोंमेंने इक कम साहे कीन माग, बाट माग और नी माग रवर्श किये दें।। ४७॥

स्वरधानस्वरवानगरिकत अवनवासी विश्वासि हेवीने सामान्यकोक आहि कार सीवर्षेक्ष महाज्यातवर्ष आग और आहार्योधिय अभेस्वातमुका क्षेत्र करते विचा है। दिस्क-परवरक्षात्र, पेद्रवा, कावाप और विविद्य समुद्धात्र क्षेत्र हेवीने कीवर आगे.वेंस देवीन ताहे तीन आग, (है) अथवा आह आग, (है) प्रवास क्षेत्र करते विचा है। अवन-वासी देव ताहे सीन पह कर्य है। विदार करते हैं।

शंबा-साबे सीन राष्ट्र केसे दूप !

समाधान -- भंदरायस्यः सहमागते सांध संस्था द्वियां नव हो बाहु और झरा सीधमेंद्रायोः विमानके शिकायर दिधन भ्यत्राईड तक केंद्र राष्ट्रः देस स्वार सिजावर साह सीन राष्ट्र दुर्गः

उपरिम अर्थान् क्रवरके आत्य-प्रस्तुत करण्याती हैये के सदीसती बाह राहुरकाच

देसणाः पोसिदाः। उपरिःसत्त, हेट्टा दोग्णि, एवं णय रज्जु । उपवादगरेणदेवि स्थि स्रोगाणमसंसेजजदिमागो, विरियलोगस्स संखेजजदिमागो, अश्वाइज्जादो असंसेज्ज्युने। जोयणलक्समाहक्षं तिरियपदरमदीदकाले किण्ण पुसिऋदि ! ण, तिरिच्छेण भग्गाईरहेन गंतुणः हेट्टाः मुक्तमारणंतियाणमुववादेणः हेट्टवरिमासेसखेचफुसणाभावादो । पुत्रे वर्ष तिरियलोगस्त संखेजिदिमागत्तं खुज्जदे ? संगाविहदपदेसादो हेट्टा गंतृण तिरिक्त पल्लिक्ट्रेय संगमवणेसुप्पण्णाणं तिरियलोगस्स संखेअदिभागो उववादफोसणं होदि। अन्तर किण्ण होदिः १. मवणवासियपाञान्गाणुपृत्विपितस्यासपदेसाणमवहाणवसण मार्गित संभवादो । भवणवासियसासणसम्मादिष्टिसञ्चपदाणं भवणवासियमिञ्छादिहिनंगो। वा वेतरभिच्छाइद्विःसासणसम्मादिद्वीहि सत्थाणेण तिष्टं लोगाणमसंखेजदिभागो, तिरिवलेगस

विद्वार करते हैं। - मारणान्तिकसमुद्धातगत उन्हीं - मधनधासी देवाने नी बटे- खेदह (रा) माग स्पर्श किये हैं। मंदराचलसे ऊपर होकके अन्त तक सात राजु और नीवे तीवी प्रिविधी तक दो राजु, इस मकार मी राजु होते हैं। उपपादपरिणत उक देवांने सामान्यले भादि तीत लोकोंका असंख्यातयां भाग, तियालोकका संख्यातयां भाग और अगामिक संस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

. गुका — भयनपासी मिथ्याद्यष्टि देवोंने अतीतकालमें एक लाख योजन बाह्तवा

तिर्यक्षतरप्रमाण क्षेत्र क्यों नहीं स्पर्श किया है र-

संमाधान-महीं, क्योंकि, तियगुरुपते भवनस्थित प्रदेशको जाकर नीव नार णातिकसमुद्रातको करनेपाले जीवाँके उपपादपदकी अपेक्षा नीचे और जारक संग क्षेत्रको स्पर्धान करनेका समाय है।

शंका-तो फिर मयनयासी देवोंके उपपाइपदकी अपेक्षा विर्यालीका संव्याल

भाग स्पर्शनक्षेत्र कैसे यन सकता है ?

समायान - मपने रहेनेके स्थानसे नीचे आकर पुनः तिरछे क्पते पहर हारे अरवे भ्रथमों जायम होने याले जीयोंका तिर्यन्तोकके संक्यात्वे मागवमान उपनात सक्ष्मित्री स्पर्धानक्षेत्र हो जाता है।

शुंका-पद स्वर्शनक्षेत्र भन्य प्रकारसे क्यों नहीं होता है !

समापान-क्योंकि, मवनवासी देवोंके योग्य बातुपूर्वनामकासे प्रतिबद्ध मार्क मेर्चों स्वरपानके बचासे मारलागितहसमुदात होता है, इसलिय उक्त स्पर्धतिमेर प्रकारसे नहीं बन सकता है।

मचनवासी सासादनसम्बन्धि देवोंके स्वस्थानादि सभी पर्वे का स्वर्शनसंव महरहा । >>> विश्वाराष्टि देवोके समान हैं । विश्वाराष्ट्रि और सासाइनसक्वाराष्ट्रि वानायूमार तर्ने इराधानरररवानकी अवेहा सामाप्यहोक आदि तीन कोकोका ससंस्थातको मान, होते

धीनाज्यशिक्षामी, अङ्गारजादी अर्थव्यक्षपुणि। ते करा- एगं व्यवश्रे दृष्टिय नायाभीमा-धीराज्यश्रीमृति सामे दिरे वेत्रायामाण पद्याणं दिश्वि नेद्यायामामाद्रवाय सेरोक्स्यर्व-प्राण्याणायः गुण्टि धर्मक्रेयुव्यक्षि बादाई निरिध्यंत्मान संस्वेद्धदिक्षासम्बं व्यवस्तरे दिर्गतः। अर्थान्यक्ष्येष्यविषयः। वेत्रायामा अर्थ्युव्यक्षि आसार्गतः त्रिवेष वर्गतेत्व्यर्य-स्वेति व्यवस्थान्यप्रकारि गुण्टि निरिध्यंतामा संस्वेद्धदिक्षामे देशि । विद्यवदित्यामा-स्वेति व्यवस्थान्यप्रकारि गुण्टि निरिध्यंतामा संस्वेद्धदिक्षामे देशि । विद्यवदित्यामा-देश्यक्ष माण्यं वेटिव्यवस्थामयदिक्यादितिः साम्यवस्थानिद्धति सम्यवस्थान्य आहुद्ध-चेत्रस्थामाम् देशिया प्राप्ति । व्यवस्थान्य अङ्गायक्ष्यामा देशा प्राप्ति । साम्यवस्थानिद्धान्य सहस्थान्यदेशिय वर्णावस्थाना प्राप्ति । व्यवस्थान्य विद्यवस्थानिद्धान्य स्थानिद्धान्य स्थान्यवस्थानिद्धान्यः। अस्तिद्धान्यस्थाने व्यवस्थानिद्धान्यस्थाने स्थाने व्यवस्थाने स्थाने स्याने स्थाने स्थाने

क्लंकचा शंक्यालयो साम और व्यार्गहीयारे व्यार्थ्यालयुक्ता शेच वर्षो किया है। यह इस वर्षा है का व्यार्थ क्यांत्र प्रमानिक स्थान प्रमानिक स्थान प्रमानिक स्थान प्रमानिक स्थान प्रमानिक स्थान स्थान है। वर्ष श्री क्यांत्र स्थान है। वर्ष श्री श्री क्यांत्र स्थान स्थान

विद्यार नक्यान, वेदना, बयाव और देविक्यप्रविध्यत मिरपार्टी भीर मामा-इस्ताप्यर्टीय प्रवस्ताती देविंत रवास्त्राते व्यादे अतंत्र का प्राप्त प्रवस्त कार्य देविंदि बीहर (१) मान कर्या विवे दें। हिन्तु प्राप्तकाले व्यादे क्यार देविंदि मोगोल कुछ बाम भार वर्ट पीड्ड (१) माग कर्या दिवे हैं। मारणानिकत्त्राद्वासमा उक्त -दोनों मुन्नपास्त्राती प्रवस्त देवीं में वर्ट पीर्ट्ड (१) माग क्यार दिवे हैं। वर्षाद्वी संपेदा कर्म आंगोल सामान्यरोक भारि मीन रोशीका असंक्यात्रवी माग, निर्वेग्डोक्य संक्यात्रवी भाग और बहार्टीयरंस असंक्यात्राह्या देक क्यार दिवा है।

होदा — करपावडी भरेशा तिर्घाशकते असंस्थातगुणा शेष वर्तमानकालमें स्थात करके रियत स्पानर देय भरीतकालमें कैसे तिर्धेग्लोको संस्थातमें मागकी स्पूर्ण करते हैं ( मोगाहणाओ उपवाद्विसिद्वाओ एगई करिय गहिरे होति । तेण निरियजेणावे 👯 मिन्छादिष्टि उववादरोत्तमसंरोजनगुणं जादं । पोमणाम्ह पुण जीवप्पडिहिर्वणाह्यके ण घेप्पति, किंतु तीदकाले उववादपरिणदमिन्छ।दिहि-सासणसम्मादिहिंवेवोहि विश संतमेव घेप्पीर, बेतोस वि ण देवा णेरह्या वा उप्पत्नीत, ण च एरियां नि लिदिया, किंतु सण्जि असण्जिपचिदियतिरिक्तः मणुमा चेत्र । ण च वैत्रावपरण सोधम्मादिसु तिरियलोगवाहिरेसु कप्पेमु अत्यि, तथावदेसामावा । ण च हन्सवाल बाह्छितिरियपदरिन्ह सन्बत्य वेतरावासा चेव, जोदिसियवासाणं बेलंघरपण्णगारित्राहण च अमावप्पसंगा । ण च भूमीए चेव वेतरावासा होति वि णियमा अत्य, आगृतर् हियाणं पि वेतरावासाणं संमवादो । ण च विरियलोगे चेव वेतरावासाणमत्थिवालेले हेडा पंक्रवहरुपुढ्वीए वि भृत रक्ससावासाणमुबरुमादो । तम्हा किंचूणमनीपर्ण वेजा बाहल्लितिरियपदरं ठिवेप सत्तकदीए जोबिड्डिय पदरागारेण टडदे तिरियलीगम पंतिमा भागवाहल्लं जगपदरं होदि । एवं चेव जोदिसियाणं पि वचच्यं, णवीर उवनार्व

१ राज्यकी दुग्तिना नानगरिनदृश्या अधिवन्तर्थन । तम्माने तिथिया वृत्र देशा विकृत सर्वे संबद्धानि वातावा रव सबति निरित्या । विवाहरकात्रीतिकात्र वर्षाण । वात्रान्तिकात्र वर्षाण । वात्रान्तिकात्र सम्बद्धानि वात्रावा रव सबति निरित्या । विवाहरकात्रीत्रियरहेरतकात्रियासः ह हर्रान्ति सरवानि देत: वर्गदेश्वतिन : सरवागानि द्वितित्तुर्थाने उत्तर साराता ह ति. प. पव १९६-

समाधान - यह कोई दोप नहीं, फ्योंकि, सर्व जीवींकी उपपादविशिष्ट जनवारि थोंको पकट्टा करके प्रदेश करने पर 'सेव' यह नाम होता है, इसिंटए मिश्यारिह करने देवांका उपपादस्त्र तियंग्डोक्ते संसदयात गुणा हो जाना है। पर स्वरीनम् प्रतिष्ठित अवगाहनार्य नहीं प्रहण की जाती हैं, किन्तु अतीतकारमें उपपादपरिणत थीर सासदनसम्बन्दि व्यन्तर देवास स्पर्शित क्षेत्र ही प्रदण किया जाता है। मी न तो देव अथवा नारको जीव उत्पन्न होते हैं और न एकेन्द्रिय व वि केन्द्रिय प्रहों केवल संग्री व असंग्री पंचीदित्यातिर्थेच और मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं। तथा विष् वाहिर स्थित सीर्थमंदि कर्लोमं भी व्यन्तर देवाके आवास नहीं होते हैं, क्याँकि प्रकारके उपदेशका समाव है। सीर न साल प्रोजन बाहल्यबार निर्वक्ष्मतरम ही सर्व देवोंके आवास होते हैं, अन्यंथा चन्द्र, सुर्वादि ज्योतिष्क देवोंके आवासींहा और वर्ष पर्धम आदि मवनवासी देवाँके आवासोंक अभावका प्रसंग प्राप्त हो जायना। धा व्यत्तर देवीके आवास होते हैं, ऐसा भी नियम नहीं है, क्याँकि, आकार्म प्यन्तरों के श्रावास सम्मय हैं। और न तियंग्लोकमें ही प्यन्तर देवीं के श्रावासी हैं महिन नियम दे, पर्योक, नीचे रत्रप्रमा शिवांके पंकवहुल भागमें भी भृत और राह्स नावह क्र देवीके आवास पाये जाने हैं । इसलिय कुछ कम क्षेत्रको नहीं जोडकर दो लाब बाहरपवाल निर्माणन हा इसालप कुछ कम अवको नहीं जोड़कर दा स्थान बाहरपवाल निर्माणन का भ्यापिन करके सातको हिन सर्घान् पर्गसे अपवर्तितकर प्रवासन स्थापिन करने एक निर्माणने स्थापिन करके सातको हिन सर्घान् पर्गसे अपवर्तितकर प्रवासन स्यापित करने पर निर्यालोकक संस्थातय आगप्रमाण बाहर्स्याला अगप्रतर है। जाती । हमी प्रकारसे ही ज्योतिका देखेंका भी स्वर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। विहेत होते

णि णरजोयगमदबाहर्छ तिरियपदरं सत्तकदीए संडिदे पदरागारेणं हुर्ददे तिरिय-। रोजनदिभागपाहाई जगपदर होदि'। म्मामिन्छादिष्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केत्रडियं खेत्तं पोसिदं,

असंखेज्जदिशांगो ॥ ४८ ॥ दस्स सुत्तरस अत्यो- सरंथाणसत्थाण-विद्वारवदिसरथाण-वेदण-कमाय-वेउन्त्रिय-

दिपरिणदेहि सम्मामिन्छादिहि-असंबदसम्मादिद्वीहि भवणवासिम-वेंतर-जोदिनी [ण्डं लोगाणममंखेजनदिमागी, अट्टाइजनादो असंखेजनगुणी पेशिदी | दिहा वा अह चोदसभागा वा देसूणा ॥ ४९ ॥

त्थाणसत्थाणभवणवासिय-वाणवेतर-जोदिसिय-सम्माभिव्छादिद्रि-असंजदसम्मा-तेण्दं लोगाणमसंयोजनिद्यागो, तिरियलोगस्य संयोजनिद्यागो, अहाइजनादो

गो पोसिदो । णवरि भवणवासिएस चदुण्हं छोगाणमसंखेजनदिभागो पोसिदो. वं । विद्वारविद्यारयाण-वेदण-कसाय-वेउव्विप-मारणीविषयदपरिणदेहि सम्मा-ः उपपादक्षेत्रको हाते समय भी सी योजन पाढत्ययाले तिर्यक्पतरको सातके,

दितकर प्रतराकारले स्थापित करनेपर तिर्थग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण बाहस्य-तर होता है।

म्पन्मिथ्याद्दष्टि और अर्सयतसम्बन्दिष्ट मवनविक देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध*ः* लोकका असंख्यातयां माग स्पर्ध किया है ॥ ४८ ॥

द इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्वस्थानस्यस्थान, विद्वारयःस्यस्थातः विद्वाराः केपिक और मारणान्तिकसमुद्धान, इन पद्दांसे परिणत सम्यग्मिश्याद्वश्चि और ान्दरि भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंने सामान्यलीक भादि चार

संस्पातको भाग और भडाईद्वीपसे असंस्पातगुला क्षेत्र स्पर्श किया है। व्यक्तिमध्याद्वरि और असंगतसम्पन्दरि भवनन्त्रिक देवोंने अवीत और अनागत<sup>्</sup> देशा कुछ कम सादे तीन भाग और कुछ कम आठ बटे चौदह माग स्पर्ध ४९ ॥ स्थानस्यस्थानपर्याले भवनवासी, वानव्यन्तर भीर ज्योतिष्क सम्यामध्यादर्षे

तसम्यन्द्रष्टि देवीने सामान्यत्रोक आदि तीन होकीका मसंस्थातयां भागः. ा संबदातयां भाग और अहार्द्धीयसे असंबदाततुषा क्षेत्र स्पर्श किया है। विशेष कि भवनवासियोंमें सामान्यलोक धादि बार लोकोंका भर्तक्यातयां भाग स्पर्श

ला कहना चाहिए । विहारवास्यस्थान, धेदना, क्याय, पेत्रिविक और मारणा-अहरूरी द्राविदानं एकपवदशकोति जीवकर। तरित्र खगानदेतं सोविष तेत्रावि जोदिनिया ह



मिच्छादिद्धिः अमंजदमम्मादिद्दीहि अदद्वा चौदमभागा देखणा चोइँममामा देमुना पोमिटा । नवि मन्मामिन्छादिईनि मान मोधम्मीमाणकपत्रामियदेवेसु मिच्छादिद्विण

सम्मादिहि ति देवीर्घ ॥ ५०॥ सन्धाणसन्धाण-विहारवृदिसन्धाण-वेदण क्रमाय वेद्रविद्यय

दिहीहि बहुमाणकाने चहुन्हं लोगाणमसंखेजनदिभागा, अङ्गाहन्नादी मारणांतिय-उत्रवादपरिणदृहि तिण्हं लोगाणमयस्य ज्ञादिमागी, णर-ति। गुणा वामिदा । मनमुणहायजीविह अध्यद्यणा पटेम वहमाणहि व्यदिभागो, अहुरहज्ञादो असंस्वेजन्तमुणी पोपिरो । नीदे काले मे। मिच्छादिहि सम्मणमस्मादिई।हि सन्थाणमन्थः णगरपरिणनिहे चर्णन मानो, अहुद्दिन्त्रादो असंबेन्त्रनमुणी पोमिटो । तं त्रहा- सहर्य ह विन्धहा, मेटीचट्टा अनेम्ब्रजननायणविन्धहा, प्रहण्णयवा मिन्सा । तः

निक्समुद्रातः इत पुर्वेसः परिवातं सम्यग्निष्याद्वष्टि और असंगतसम्यान्ति स्वात्ययमे कुछ कम सादे जीन यह चीवह (ंं) भाग गरा विश्व ह इष्ट कम बाद यह धाउह (६) भाग अपने विश्व ह विशेष यात पह है। ् इष्टि देवोंके मारणान्तिकपद नदी दोता है।

मीधम और डेजान कल्पनामी देनोमें मिश्यात्रिक गुणस्थानन मम्बरहार्ष्ट्र गुणम्यान नक प्रत्येक गुणम्यानपूर्व। देशका स्वर्णनंतर देशके

ह्यस्थानस्यस्थाह, विद्वारयः स्वस्थान, रहना, क्यायः गार १४ थर मिरमाहोत् देशान पनमानकात्रम भामान्यत्रीक आहे यह अवर्षा स्थापना व्यविक्षांत्रम् । व्यवस्थानम् । स्वयः व्यवस्थाः । स्वयः । व्यवस्थाः । स्वयः । व्यवस्थाः । स्वयः । व्यवस्थाः । प्रतिकृतिकः । स्वयः । व्यवस्थाः । स्वयः । व्यवस्थाः । स्वयः । व्यवस्थाः । स्वयः । स्वयः । स्वयः । स्वयः । स्वय प्रस्तित में यो प्रदेशन देवान सामान्यव्याह भारत सामान्यवस्थाहर । १००० । भारतम् में यो प्रदेशन देवान सामान्यव्याह भारति सोच स्थापन स्थापन । त्रहरूष्ट्र वर्षः त्यापः त्राच्या वर्षाणाच्यापः वर्षः त्यात् त्राचः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः हें बहुत के माह जान है है जा के प्रतिकार के किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं कि प्रतिकार के किए है कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं किए हैं कि प्रतिकार के किए हैं कि हैं कि किए हैं कि किए हैं कि किए हैं कि एक हैं कि किए हैं कि है कि किए हैं कि हैं कि किए हैं कि भीत के देवार के कुछ सम्मान स्थापन के देवार स्वतास्त्र के देवार स्वतास्त्र के देवार स्थापन के देवार स्थापन के द स्थापन के देवार के देवार स्थापन के स्थापन के देवार स्थापन के देवार स्थापन के देवार स्थापन के देवार स्थापन के द The transfer of the same of th and the second s

.

4

- 1

معع

166

ł

: ť

کوچ ار

,

विमाणाणि अमंखेञ्जजोपणवित्यदाणि वि घेप्पति, सो वि सम्बविमाणखेनफलसमासो तिरियलोगस्स असंखेजदिमामो चेत्र होदि । तं जहा- एमविमाणापामो असंखेजजोपण-मेषो वि बहु असंखेजजोपणविषरां मेणापामं शुणिप विमाणसंहतं संखेजजोपले शिणिद तिरियलोगस्स असंदेजदिमागो हेति, एम्बेजकविमाणापाम-विषरामाणं सेदियदमबम्म-मृतादो असंखेजज्ञपणपमाणचादो'। तं सोपम्मीताणविमाणसंखाए शुणिदे वि तिरियलोगस्स असंखेजजदिमागो होदि वि । एत्य सन्यक्रपाणं क्रमण विमाणसंखापक्रयमाहाओ---

बसीतं सोदम्मे आस्त्रीतं तहेव ईसाल । याद्य समयज्ञारे अदेव य हेति माहिटे ॥ १० ॥ माद्ये करो माद्रोस्यो य चलाति सम्बहस्तातं । एम्र बस्पेष्ठ य एयं चडासीतं सम्बहस्ताता ॥ ११ ॥ पण्णातं तु सहस्ता कंतय-काश्विरस्त कत्येष्ठ । सम्बह्म-महास्त्राम्त्रीत य चलासीतं सहस्तातं ॥ १२ ॥

प्रकारणंकविधान विध्य अर्थोन् संक्यात और ससंक्यात योजन विस्तारयाले होते हैं। यहांवरे यहि सभी विमान असंक्यात योजन विस्तारयाले हैं, येला समग्रकर महत्व करते हैं तो भी सभी विमान असंक्यात योजन विस्तारयाले हैं, येला समग्रकर महत्व करते हैं तो भी सभी विमान के स्वेता के प्रकार के स्वान करते हैं तो भी एक इंध्र मानामाल होते होत है। इस्तित्य ससंक्यात योजनपत्र के लिए होते है। इस्तित्य ससंक्यात योजनपत्र के स्वान के मानामाल योजन विषक्त मानामाल योजन विषक्त के स्वान के मानामाल योजन विषक्त मानामाल योजन विमान करते प्रकार करते करते होते हैं के स्वान करते प्रकार करते करते होते हैं के स्वान करते होते हैं स्वान होते हैं होते हैं स्वान करते होते हैं स्वान होते ह

प्रकार हैं— सीपर्मकरपमें पचील हाल विमान हैं, उसी प्रकारने देशानकरपमें भट्टारित हाल, सनाकामस्करपमें पारत हारर तथा माहेटदकरपमें भाट साथ विमान होते हैं है है ?

प्रक्ष और प्रक्षोत्तर फरामें दोनें कर्योंके भिरावर चार लाख विमान हैं। इस प्रकार इन करर बताद गये टह करवेंमें विमानेंकी संबया चौरासी साम होती है व ११ ॥

क्षेत्रे— इर००००० + १८००००० + १२००००० + ८०००० + ४०००० स्ट ८५००००० सीधर्माह एह स्पर्भोदी धिमानसंच्या,

छान्तय और बाविछं इन दोनों बन्योंने पयास इजार विमान दोते हैं। शुक्र और महाशुक्ष बन्यमें बालीस इजार विमान हैं है १२ है

६ ' अवस्थानवृणकृषियमाननादी ' इति पाउः प्रतिमाति ।

छच्चेत्र सहरसाई सयाग्वरणे तहा सहरसारे I सनेव विभागसया आरणकपण्यारे चेप ॥ १३ ॥ एक्ससमं नित्र देत्रिनेस तिसु मध्यमेसु सत्ति । एक्कानअदिविधाना तिमु गेराजेमुधिनेमु ॥ १४ ॥ रेक्ट्रताणकरिमया जब चेत अगुदिसा विमाणा ते । तह य बणुनरणामा पंचेत हवेति संखार ॥ १५ ॥

विहार-वेद्य-कमाय-वेउव्वियपदेहि अह चोद्यभागा देखना पोनिहा। मण्ये चीराहेडि मिन्छादिकिमासणेढि णव चोइसमागा पोनिदा । स्वताहदाविके चे रनमाना पेनिया । सोधम्मकःषो धरणीतलादो दिवद्वराज्यमोस्मरिय विशे विकास क्लिएरिइनि मन्यानमन्यानपरिनदेशि चर्क लोगानमसंगेत्रजिनामी, अन्त वर्तत्रोहत्वतुमा प्रतिकृति । विहारमहिमन्याण वेदण-कमाय वेदिनगपद्मिमारि मा माना देवता पोलिसा। एवं अनेत्रदसम्मिदिद्वीणं वि। बारि मार्गिनियुव मा क्षे करण, प्रशादेश दिरहु पोद्यमाया देखणा पीमिदा । केणवे देशेपादी कोधावकरे

राजार भीर सद्द्धार करणों छद इतार शिमान होते हैं। भागत, प्रावत केंग करतुन, इन बार पर्शीमें मिलाकर सातगी विमान होते हैं । १३ है

लाउरना मीत विवारमाँ गना सी न्यास्त विमान, मध्यम तीन प्रीश्वराजे र कार दिशन और उपस्मिन्दिन वैश्विकों इत्यानवै विमान होते हैं है रेड है.

बन केरपने के अपन भन्ति । क्षापाल में स्मान नीत है। उन कार के

क्या में ए पाच विद्यात होते हैं है है है है

िक्तान्य विकास के कार प्र जिल्लान्य क्यान के बेहता, अस्य या और बेहिस्य समुखास, इतः गर्दे के बात के से क्यान कि कार्या केंग्रान कराज मिलारांप और सामायनमुग्रामानार्थ विश्वासम्बद्धाः का नाह वह का र्ग है है है जात अपने दिन है। सारणारितवात्रका विभाव है। का भारत करें है। सारणारितवात्रका विभाव विभाव करा विभाव कि स्टिस कार पारवाच प्रवास वास्त्राच करा सम्पाता । कार्यक पृत्ते के की की की भीतह ( हैं ) भाग कार्या किये हैं। प्रयाश्यद्यां तन हों हैं। हेर केंद्र को तहते हैं , अन्य कार्य किये हैं, बयादि, बीधमेंकार धार्मन में हैर्ड हैं अब कार्य को दर्ज हैं , अन्य कार्य किये हैं, बयादि, बीधमेंकार धार्मन में हैर्ड हैं अबक राज्य केंद्र के बार किया है। अस्मान अध्या है, ब्रांसिक, शीधर्मका प्राप्त न स्मान है। के बार किया है। अस्मान अध्यानवानवानिकान सम्मानिकार विजन सामाण है। के बार के बार कार वासीयाः अस्करात्राः साम् अति अपूर्वित्याः स्वित्याः विषयः साम्याः स्वर्ते । कार वासीयाः अस्करात्राः साम् अति अपूर्वित्याः अस्वयात्रात्राः सम्बन्धाः । स ोशनक स्थापना साम, कर महादेशीयर संवेशवानामा स्वापना है। रेशनक स्थापनाम वेशना, कवान स्टेर वैजितिक समूद न, इन वर्षीस वर्रिन हेड हैटाई। कर कर कर कर कर ( है ) जान आहे हिंच है।

१५८ १५० १५ मान कार्त थि। १५८ १६८ १६ सम्बन्धान्य देवींचा मी कार्यमपत्र शामा व<sup>[द्वा</sup>र्स १९७६ मध्यमणार्थन सन्दर्भ है। तः अन्यवन्त्रकार्यः वृष्ट्रचे साम्यानिकसम्बन्धः स्वी स्वीर्धः स्वर्धः सन्दर्भ स्वर्धः स्वरं स् बर कोहर । ते वाल जैन इरणार्या अवस्थानुमान्यों को की प्री हैं हैं हैं जो से सर कोहर । ते वाल जैन इरणार्या अवस्थानुष्य वस बहु वह की रहें हैं है जो से सिव हैं .

अत्य तेण देवोपनिदि सुनवपणं गुहु सुपडमिदि ।

सणक्कुमारपहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासिवदेवेसु मिच्छा-गृहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, स्रोगस्स भेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

एरेसि पंतरूदं करपाणं चरुगुणहाणभीवेदि जदासम्यं सत्याणसत्थाण-विद्वास्वदि-ग-वेदण कसाय वेउध्यय-मारणिवय-अवग्रद्वितिक्देहि जरुष्ट् . छोगाणमसेरोजनिद-, अष्ट्राहजनारो असस्यज्ञागुणो पोसिरो । एसा बङ्गाणपह्मणा ।

अट्ट चोदसभागा वा देसूणा ॥ ५२ ॥

र्षयक प्रवासियण्युगुणहाण भीवेदि सर्याणसत्याणवरपरिणदेहि अदीरहाति च्युव्हे जनसंद्राज्ञ व्युव्हे जनसंद्राज्ञ व्युव्हे जनसंद्राज्ञ विद्रारय स्वित्याण विद्राप्त विद्राप्त

चृति देवोधे भोपरपरानसे सीधर्मकरपर्मे कोर्र विशेषता नहीं है, इसाहिद 'देवोध' : सक्त-सनन महे मकार सुपटित होता है।

सनत्कृपारवस्यते सेकर शतार तरसारवस्य वसके देशोमें विध्यादि गुवस्थानसे कर अमंग्रतस्यादि गुवस्थान वक प्रत्येक गुवस्थानवर्धी देवीने कितना क्षेत्र स्पर्धे ह्या है है लोकका अमंस्यावर्धा माग स्पर्ध किया है ॥ ५१ ॥

हरासानस्परकान, विदारवास्परकान, वेदना, क्याप, वैत्रियिक, भारवास्तिकसमुद्धात शेर उपपद, हम पहेंगे प्रथानेमय परिवार उठा, पांची करवीके वार्थी, गुकरवानीम रहने-वाले देवीने सामान्वतीक भादि चार त्रीकीक सर्वकानयी माप और सहर्राद्वीयके सर्व-कराशनाम् श्रिष्ट करवी किया है। यह वर्तमानकालिक स्वर्णानके श्रेषकी प्रकरण है।

सन्द्रमारकरपे हेकर सहस्रारकरण तकके मिण्यारिट आदि पारों गुण-रधानवर्धी देवोंने अवीत और अनागत कालमें कुछ यम आठ वटे चौदह माग रपरी किये हैं।। ५२।।

हत्तर प्रारादि वांच करवांके वारों गुणस्थानवर्धी परवानस्थवान परवारिकत हेवांने भर्तातकारमं सामान्यतिक भादि चार त्योकांच भर्वव्यावयां नाम और समृद्धियते भर्तर्यातमुक्ता प्रेम स्पर्त दिया है। विद्वारयात्वरस्थान, वेदना, कवाय, वीकियक और मार वाश्विकतमुक्तान, त्य वहांसे पार्चकत कर देवांने हुए कम भावत्वर वोहद (१५) मारा स्वर्ता विदे हैं। वयवादयारिकत सनाकुमार भीर मारेन्द्र करववासी देवांने हुए कम तान सदे बोहद (१४) मारा स्वर्ता किये हैं। महा भीर महाचेत्रर करववासी देवांने हुए कम हाह

कष्पवासियदेवेहि आहुङ चोहसमामा देयमा पासिदा। संतप-का भागा देवला पातिदर । सुक महामुक्तदेवीदे अद्वर्षणमः नीहमः सदर-सहस्सारकव्यवामियदेवेहि पंच चौहनमागा देवमा पानिदा

इंडीणं मारणंतिय-उत्रवादा णन्यि । आणद् जाव आरणच्चुदकणवासियदेवेषु मिन्द

असंजदसम्मादिङ्टीहि केयडियं खेत्तं गोसिदं, ह्रोगस भागो ॥ ५३॥

प्दस्त सुनस्त बङ्गाणसेनप्रवयस्त अन्यो पुर्व प्रतिदे। ( छ चोहसभागा वा देसृणा पोसिदा ॥ ५८ ॥

भिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्माभिच्छादिद्वि-अमनदमम्मादि सत्याणपद्वरिणदेहि चहुन्हं लेगाणमग्रंसेन्जदिमागो, अहुार्ज्जादो अमंसे एसो 'ना' सदद्वा। विद्वारवित्तरयाण-वेट्ण-कनाप-चेडिन्य-मारणीनियपिर तीन यटे चाँदह (२८) माग स्पर्धा किये हैं। सानव और कापिष्ट करावा कम चार पटे घौरह ( रॅंट) माग स्पर्धा किये हैं। शुक्र और महाशुक्र करणवा

कम साढ़े चार यदे चौदह (२८) माग स्पर्श किये हैं। शतार और सहस्र देवींने कुछ कम पांच बटे थीदह ( हैं ) माग स्पर्ता किये हैं। विरोप बात यह मिष्यादृष्टि वेयोंके मारणानिकसमुद्धात और उपवाद, ये दो पद नहीं होते हैं। आनतकरपसे लेकर आरण-अच्छुत तक करपत्रासी देवोमें मिथ्यादृष्टि लेबर असंयतसम्यार्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवाने क्रितना किया है ? होकका असंस्थातवां भाग स्वर्ध किया है ॥ ५३ ॥

पर्तमानकालिक स्पर्नान्सेयके मक्रपक इस स्वका सर्थ पहले कहा जा इसछिए पुना नहीं कहा जाता है। चारा गुणस्यानवर्ती आमतादि चार करववासी देवाने अवीत और अनागव भवेशा बुछ कम छह बडे चौदह माग स्वर्ज किये हैं॥ ५४॥ स्वस्थानस्यस्थानपद्यस्थितं भिर्मात्रम् १॥ ७४॥ धसंयतसम्याद्धि जीवीन कारणा

۲

خر

٠:

si

ď

भागा देखणा पासिदा, विचाए उवरिमतलाही हेट्टा एदेशि गुमणाभावादी । मिच्छादिहि-सातणसम्मादिहीणं उरवादो चदुण्हं लेगाणमसंदोडज्जदिभागी, माणुसखेचादी असंखेअ-गुणो । कृदो १ एगपणदालीसजीपणलक्खविक्लंभ संरोज्जरज्जुआपद्मववादखेलं तिरिय-स्रोगस्स असंखेडजदिभागं ण पांचेदि वि । सम्मामिच्छाइद्वीणं मार्णतिय-उचवादपदं णत्य । असंजदसम्मार्डीहि उववादपरिणदेहि अद्भुष्ठक-चाह्तसमागा देख्णा पासिदा । आरणस्चदः कप्पे छ चोहसभागा देखमा पोतिदा । किं कारणे ? विश्विष्य असंबद्धमादिष्टि-संबदा-संजदाणं वेरिपदेवसंबंधेण सच्चदीव-सापरेख द्विदाणं तत्थुववादीवलंभादी ।

णवगेवञ्जविमाणवासियदेवेसु मिन्छादिहिपहुडि जाव असंजद-🚁 सम्मादिद्रीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, छोगस्स असंबेज्जदिभागो ॥५५॥

एदस्स सुचस्स वहमाणपरुवणा खेचभंगी । अशिदपरुवणा वि सेचवंगी। चेप । हुदी ? चदुण्हं सोगाणमसंदिज्ञदिभागतेण, मःणुमसेचादी असंदिन्जगुणतेण च समाणतु-्र इदा ४ घट्ट ्र वर्लमादो ।

एड बट बीरड ( 👣 ) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, विवा पृथियोंके उपरिम तलते मीचे इनके गमनका समाप है। उक्त विश्वाहिए और खाखादनसम्बन्दाध देवींका उपवादकी 🗸 अपेशा रार्शनक्षेत्र सामान्यलोक बादि चार लोक्षेत्रा असंख्यातयां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे 🦽 असंख्यातगुणा है, वयोंकि, पैतालीस लाख योजन विष्क्रभयाला और संव्यात राज्यमाण भायत उका देवींका उपपादशेष भी तिर्यन्त्रोक्के संवतात्वे भागको नहीं प्राप्त होता है। सम्परिमध्याद्दि देवाँके मारणान्तिकसमुद्धात और उपपादपद नहीं होते हैं। भानत-प्राणत े, सम्योगम्यादाप्ट देपाक मारणान्तकसमुद्धात भार उपभादभर भदा द्वात द्वा भागतःभाभत र्भ बस्त्रके उपगादपारिणतः भसेवतसम्यग्दिष्ट देवीने कुछ वय साद्रे पीव बटे चीतृह (११) भाग स्परं विथे हैं। भारण भीर भच्युतकस्पर्में उक्त पद्यरिणत शीर्योंने कुछ कम छह बंदे चौरह ( र्क ) आग स्पर्श किये हैं । इसका कारण यह है कि पैरी देवींके सम्बन्धते सर्व हीप और सागरोंमें विध्यान तियेंच धसंपतसम्बन्धि और संयतासंपताँका भारण अध्युतकरवर्षे / उपपाद पाया जाता है।

नवंबेवेयक विमानवासी देवोंमें मिध्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयवसम्पन्दृष्टि गुणस्यान तक प्रत्येक विमानके गुणस्थानवर्धा देवाने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥ ५५ ॥

इस राजकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्रकपणा शेवपरूपणाके समान जानना चाहिए। तथा अतीतवालिक स्पर्शनयस्पणा भी क्षेत्रप्रयुपाके समान हो है. वर्षीके, सामान्यलेक ूर्ध सादि चार हो बॉके मसंख्यातर्थे मागसे तथा मनुष्यक्षेत्रसे मसंख्यातगुणित क्षेत्रका मगस्य ्र समानता पाई जाता है।

अणुद्दिस जाव सञ्चट्टसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदममा दिद्वीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

एदेस द्विदअसं जदसम्मादिद्वीहि सत्यागमत्याण-विद्वारवदिसत्याण-वेदणकम्म वेउन्त्रिय मारणतिय उत्तरादपरिणदेहि चदुः होगाणमसंखन्त्रदिभागा, माणुनहेनते असंखेड्युणो, णवगेवज्जादिउवरिमदेवाणं तिरिक्खेस चयणोववाराभावादी। णवि पंक परपरिणंदेहि सन्बद्धसिद्धिदेवेहि पाणुमलोगस्य संवेज्जदिमागी पोसिदो ।

एवं गदिमग्गणा समता I

इंदियाणुनादेण एइंदिय-वादर-सुहम-पञ्जतापञ्जतएहि केविंडिं खेतं फोसिदं, सब्बलोगों ॥ ५७ ॥

एइंदिएहि सत्थाणसत्थाण-चेदण-कसाय-मारणंतिय-उत्रवादपरिणदेहि तीद्व बहुमाल कालेस सन्वलोगो फोसिदो । वेउन्वियपरिणदेहि बट्टमाणकाले चदुण्डं लोगाणमसंवेअरि

नव अनुदिश विमानोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानशासी देवोंमें असंपत्तमा ग्राष्ट्रि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यातवां आग स्पर्ध किया કૈના 4૬ મા

रन नय अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें रहने वाले स्वस्थानस्वस्था<sup>त</sup> विद्वारचारवरस्वान, चेदना, कपाय, बैकियिक, मारणानिक समुद्धात और उपवादक कि असंयतसम्यन्दिह वृष्येने सामान्यक्षेक आदि चार ठोकाँका असंस्थातया भाग भीर मार्ड संत्रसे असंस्थातगुणा सेत्र स्पर्धा किया है, क्योंकि, नवप्रेत्रकादि उपरिम कश्वाम देवाँका ज्यवन होकर तियंवोंमें उपपाद होनेका अमाव है । विशेष बात यह है कि स्वशी नाति पांच पदासे परिणत सर्वाधिसिद्धिके देवाने मनुष्यलोकका संव्यातम प्राण क्रिया है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमागणाके अनुवाद्ते एकेन्द्रिय, एकेन्द्रियपर्यान्त, एकेन्द्रियअपर्यातः एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रियपर्यात, बादर एकेन्द्रियशर्यात, बहुन एकेन्द्रिय, हार्द एकेन्द्रियपर्याप्त आर बहुन एकेन्द्रियशर्यात आर्थेत कितना क्षेत्र सर्व किया है। सर्वेठोक स्पर्न किया है॥ ५०॥

स्यस्थानस्थरवान, पेदना, क्याय, मारणान्तिकसमुद्धात और उपवार, हा वर्षि प्रकृतिक क्राकृते परिणान पकेन्द्रिय जीवींने अतीन और पर्तमानकालमें सर्वत्रोक कार विभाव है। विभिन्न पर्परिणन परेन्ट्रिय और्येन पर्नमातकालमें सर्वत्रोक सार्ग हिंदा है। आर्थनी पर्परिणन परेन्ट्रिय और्येन पर्नमातकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकाला अहिलाती

१ १न्द्रियातुरादेन पृदेन्द्रियेः सर्वेडोडः शृष्टा । स. मि. १, ८.

मापो पोसिदो । माणुमांवर्ष ण ज्यादे । अदीदकाल निष्टं लोगावमसंगत्रिद्वागे, जरनिरियलोमेहितो असंगेळपुणो पोसिदो । अदीदकाले निष्टं लोगावमसंगत्रिद्वागे, जरनिरियलोमेहितो असंगेळपुणो पोसिदो । अदीदकाले पंचण्डदुणहाई निरियपहाँ विडम्समाणा वाडराद्वर पुर्लीत रिव । वादिदेदिन-बादेरे एंचण्डदुलाई असंगळपुणो फोमिदो ।
सिर्वादे उद्यालकाल निष्टं लोगाणां संखेळादिमागो, दोलोमेहिंग असंगळपुणो फोमिदो ।
कि कार्यो है जेव पंचाल्यवाहल्क रुज्युदेदे वाडकाह्यजीगानुदि बाइराहिंद्वर्यात्राहिन्द्र अहुद्वर्योओ प्र, नीम पुडवीणं हेहा हिद्यीमार्थाग्याप्यस्थान्त्र ।
साद्वर्यल लोगोहिंद्दशाडकाह्यमंत्रं च एसह पदे लोगाम संगळदिवागो होदि नि ।
पेदीह अदिकाल वि एथियं पेय संगे पोर्यिद हिस्स्वर्यक्रियलामेहिंदि स्वात्रेप्त ।
साव्यव्यव्यव्यापायोदे। विडिययपद्यिपादि बहुमायकाले पहुल्ल लोगामसंग्रं अदिमाने,
माणुसखेलाहो अमुणिद्विगमो कोगिदो । भीद काले निष्टं लोगामसंग्रं प्रदाहित्याले,
देलिमेहिंतो असंग्रंज्युणो फोगिदो । मार्णानिय-व्यवाह्यविलेदि नीद स्वमाणकालेख

धान बरते किया है। इस विषयमें सनुष्यक्षेत्रका प्रमाण बात नहीं है। उसी जीयोंने बर्णन वाहमें सामाप्योग्न धारि तीन कोतीना कांस्पाताया धार और ताताने तथा तिर्देशकों कांस्पाताया धार और ताताने तथा तिर्देशकों कांस्पाताया धार और ताताने तथा तिर्देशकों कांस्पाताया धार केंद्र ताताने कुत्रकांस्त्रक तिर्वेश्वास्तरकों विषया करनेयाने घामुकाधिक जीव निश्ता वर्णा वर्षा है। इसायान, कुत्रका भीर कांस्पादामा, इस पहेंसी परिवार वाहर पहेंसी, वर्षा और कांस्पाद वर्षा है। इसायाया वर्षा कांस्पाद की किया है। अस्ति कांस्पाद की क्षा धार वर्षा है। इसायाया धार धार करेगी कराय निर्वेशकों के स्वाराय धार धार करेगी कराय किया है। इसायाया धार धार करेगी कराय निर्वेशकों कराया किया है।

श्रीदा - बादर परेतिहरूप और बादर धरेतिहरूपपर्याप अधिवा सामावर्गाव वर्णाह

तीन होवाँके संवधानमें भाग क्यहाँनक्षेत्र होनेका क्या बारण है ?

सम्पान—एमका बारण यह है कि योब राजु बाहकवव ला राष्ट्रकारकाल केव बायुक्तविक अविधि वरिवृत्त है और बाहर वहेरिय अविधि करो पृथ्विवर्ष क्यान्य है। इस पृथ्विवर्षोक की दिवस बीस प्रीस हकार योजन बाहकववारे तीन हैन बालकर वेश बीह लोगानार्थी दिवस वायुक्तविक आयोंने हेक्को व्यक्तिय बालेवर नावन्योंने करों, तीन लोगोन्य संस्थानयों आप हो जाता है।

 सञ्चलेगो। पोसिदो। एवं वादोहेदियअपङ्जनाणं पि वृत्तक्वं। णवरि वेडिक्वं क्षेत्रों सुद्दुमेहेदिय-सुद्दुमेहेदियपङ्जनापङ्जनपदि सत्याणसत्याण-वेदण-कसार-मार्फिक्वस्स -परिणदेहि तिसु वि कालेसु सञ्चलेगो। पोसिदो, 'सुद्दुमा जल-यलागाने सन्तर्व हेंते' नि वयणादो।

वीइंदिय-तीइंदिय-चर्जिदिय-तस्सेव पञ्जत्त-अपज्जतण्हि<sup>क्रेत्रीज</sup> खेत्तं फोसिदं, स्टोगस्स असंखेज्जदिभागो<sup>°</sup> ॥ ५८ ॥

पदस्सत्यो- वेइंदिय-वेइंदिय-चर्डार्स्टिएहि वेसि प्रज्ञचेहि य सत्याणज्ञातः विद्यात्वदिसत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि विण्डं लोगाणमसंखेडजदिमागो, विरिष्ठाल्य संखेजजदिमागो, अष्ट्राइज्जादो असंखेजजगुणो पोसिदो ! मारणंतिय-उत्रवादपरिणदेहि वि लोगाणमसंखेजजदिमागो, दोलोगेहिंवो असंखेजजगुणो पोसिदो ! वेसि चेत्र अत्रवर्षे सत्याणसत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंखेजजदिमागो, माखुनवेषरं

सर्पछोक स्पर्धा किया है। इसी प्रकारके वादर एकेन्द्रियप्रपर्यान जीवोंका मी सर्धार्थ कहाना साहिए। विदोष यात यह है कि उनके बिक्षियकसमुद्धात नहीं होता है। स्वत्यं स्वस्थान, वेदना, कथाय, मारणानिकसमुद्धात और उपयादगरियन सङ्ग पकेन्द्रिय पकेन्द्रिय स्वस्थान और सहम एकेन्द्रियप्रययोन्त जीवोंने तीनों है। कार्लोम सर्वत्रेष्ठ किया है, पर्वोकि, 'सहमकायिकजीय जल, स्थल और लाकार्य सर्वत्र हैते हैं। कार्लाम सर्वत्र होते हैं। कार्लाम सर्वत्र होते हैं। कार्लाम सर्वत्र होते हैं।

द्वोन्ट्रिय, द्वीन्ट्रियपर्याप्त, द्वीन्ट्रियत्रपर्याप्त; त्रीन्ट्रिय, वीट्रियपर्याप्त त्रीन्ट्रियत्रपर्याप्त; चतुरिन्ट्रिय, चतुरिन्ट्रियपर्याप्त और चतुरिट्रियत्रपर्यात और कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? सोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ५८ ॥

इस स्वका अर्थ कहते हैं—स्वस्थानस्थरवान, विहारवानस्वस्थान, वेहता और कां समुद्धानसे परिचान डीट्रिय, बीट्रिय, चतुरिट्रिय और उनके पर्यात और्थने सम्प्रतन्ते भादि सीन छोड़ीहा अर्सर्यातयां भाग, तियंग्छोकचा संव्यानयां मात और आर्थित संस्थानगुणा रेज स्वां किया है। मारणानिकसमुद्धान और उपपारपद्माणित उठ ईस सामान्यछोक भादि सीन छोड़ोंडा अर्मर्थ्यानयां भाग और नरछोक तथा विदेश्योक, वर्ष छोड्योन ससंस्थानगुणा रोज स्वां किया है। स्वस्थानस्यस्थान, बेहता और क्लान्यहाँ परिचार कर्षी डीट्रिय, बीट्रिय और स्वाहिट्रिय सप्योन्त क्षीवोंने सामान्यतीं कर्म सार छोड्योंडा ससंस्थातयां माग और सानुपरोवसे स्वंस्थानगुणा रोज स्वां दिया है।

१ विकटेन्द्रियेटेंकस्याधक्षेत्रयायः सर्वेडोको वा । स. ति. १, ८.

असेन्द्रज्ञायुणी कोसिदी । एसा बहुमाणपरुवणा पुच्युत्तरसंभातणणिमित्तं कदा ।

सब्बलोगो वा ॥ ५९ ॥

एरथ ताव 'वा ' सहद्रो उच्चदे- बीइंदिय-तीइंदिय-गडींरदिएहि तैसि चेव पञ्चतिहि य सत्थाणसत्याण-विहारविहसत्थाण-वेदण-कसायपरिगदेहि तिण्हं छोगाणमसंखे-ज्जदिमागो, तिरिपलोगस्स संखेज्जदिमागो, माश्रुसखेचादो असंखेज्जगुणी अदीदकाले पोसिदो । विगर्तिदियसत्याणत्या सर्यपद्दपन्त्रदहस परमागे चेत्र होति वि तक्षे परभागे पुरुषं च पदरागारेण ठइदे विगलिंदियसत्याणसत्याणस्ते सं तिरियलोगस्स संखेनजिदमारामेसं हैं।दि । सेसरदेदि बहरिनंबंबेण विचलिदिया सन्वत्थ विशिवपदरवर्गतरे हैं।ति वि पदरा-गारेण ठहदे एदं वि खेतं विरियलोगस्य संखेडजदिभागमेनं चेव हे।दि । मार्रणविय-उपपादपरिणदेहि सब्बलोगो पोसिदी ! तेसि चेव अपन्तत्तेहि सत्थाण-वेदण-कसाय-परिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेजजदिमागी, तिरियलोगस्त संखेजजदिभागी, अङ्काहजादी असंराज्यप्रणा पेतिसरा । मारणंतिय-उपवादपरिणदेहिं सञ्चलोगी पोतिदो । पंचिदिय-

वर्तमानकालिक रार्शनक्षेत्रकी प्ररूपमा पूर्व और उत्तर वर्धके अर्थान बरीत और शतानत बारसम्बन्धी स्पर्धनसेयके संबारनेके दिव की गई है।

द्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त कीबोंने अतीत और अनागत कालकी अवेशा मर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ५९ ॥

यहांपर पहले 'या' शारका अर्थ कहते हैं- स्वस्थानस्यस्थान, विहारयास्यस्थान, षेदना और क्यायसमझतपरिणत होन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और उनके ही पर्याप्त जीवींने सामान्यहोक मादि तीन होकींका मसंस्थातयां माग, तिर्थग्होकका संश्थातयां भाग भीर मानुषक्षेत्रसे बसंख्यातनुषा क्षेत्र मतीतकालमें स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थानस्य विश्वलेटिय औव स्वयात्रभगर्यतके परमागर्मे ही होते हैं।

इसलिए परमानवर्ती क्षेत्रको पूर्वके समान प्रवराकारसे स्थापित करनेपर विकलेग्द्रिय औषाँका स्वस्थानस्यस्थानक्षेत्र तिर्धग्लोकके संब्यातचे भागमात्र होता है। रोप पर्वेकी मधेशा धेरी आँगोंके सामध्यस विकलेन्द्रिय जीव सर्वत्र तिर्वद्वतरके भीतर ही होते हैं, इसलिए प्रतराहार से स्वापित करनेपर यह क्षेत्र मी तिर्धग्ठोकके संवपात्वें मागमात्र ही होता है। मारणान्तिकसमुद्रात और उपपाइपरिणत उक्त जीपोंने सर्वछोक स्पर्श किया है। उन्हीं श्रीवादिते सामानसरवान, वेदना भीर क्यायसमुदातपरिणत भववीत्र जीवाने सामान्यसोक भारि तीन लोकाँका असंस्थातयां भाग, तिर्थेग्लोकका संस्थातयां भाग तथा भदाक्रियसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। भारणान्तिकसमुद्धान तथा उपशत्रपरपरिणत विकलेन्द्रिय बापयांका जीवाने सर्वलोक स्वर्श किया है। पंचेदिवयतियेव अवर्यान्त जीवाका स्वर्शनक्षेत्र विस्कित्रप्रज्ञवाणं जघा कारणं उचं, तथा एत्य वि पुत्र पुत्र

पंचिदिय-पंचिदियपञ्जत्तएसु मिच्छादिङ्घीहि के लोगस्स असंसेन्जदिभागो<sup>'</sup>॥ ६०॥

. एद्स्स सुचस्त परुवणा खेचपीचिदियदुगपरुवणाए तुल्ला कातावलंबमं पडि साधममादो । अट चोइसभागा देसूणा, सञ्चलोगो वा ॥ ६१

इविधवंचिदिवामिन्छादिङ्कीहि सत्याणगरिणदेहि तिव्हं सीग त्रिरवज्ञानम् मान्ने ज्ञादिमागो, अङ्गाद्रज्ञादो अमेनेकन्तुगो । एत्य वेत्रातामहद्द्रांनं अदीरकाल पंचिदियतिरिक्षेत्रहि सत्याणीकपसेनं च पे गंगेज्बिसामा दिस्मेदच्यो । एसी 'या' सहयमिद्द्यो । विद्वार ह्माच-वेजियमसिवदेदि अह चोहममागा पासिदा, मेरुम्लादी उत्तरि ।

इंडारों समय जिस मकार (उत्ता क्षेत्र देलिका जो ) कारण कहा है, उसी मी दृषक दूशक होत्रियाहि थिन हेन्द्रिय संपर्धान सीवाहा सेन बतनान हुव वरे दिय और वंचे दियपयामा में मिष्यादृष्टि जीवोने किन्ना से

दे हैं ने इका अमेल्यानमें माग स्वर्ध किया है ॥ ६०॥ इस सुबदी महत्त्वा पंचे हिन्द बीह गंचिहित्रवर्णाल, इत दोसीही व राज व है, क्योंक, होती है। स्यानीयर प्रतीमानहाल है प्रश्नक्त है । स्यानीयर प्रतीमानहाल है प्रश्नक्त है पति समान

इनेन्द्रव त्रीतः वंतिन्द्रियवधील भीरोने अनीत श्रीर अनामा कार इट इस अट बटे पीर्ट माम और मनतीक स्पर्ध किया है।। इर ॥ ६वें-त्रव विद्युष्टीय व्यक्ति सामान्यत्वीक भागि नीम सामान्य स्थानिक सामान्यत्वीक भागि नीम सामान्य सामान्यत्वीक

देहेश संद्यालया साम बीट अम्रावद्याचा आद गाम साहाश मार्गा हो। इति संद्यालया साम बीट अम्रावद्याम् संस्थान गामा १७ । सामाहणाई इत्रह क्ष्यान हो। त्यान्त्रह बीट व्यक्त होते व्यक्त नमुना श्रमु होगा है। इत्र भिष्ट जाराज्य है। स्वर्धां को के स्थानीक स्था न क्षत्रमानक क्षत्र नक्षत्र गर्याः हिर क्षत्र का स्वर्धां नहीं स्थानीक स्थान स् विद्रकारकार्यक विकास कार्यकार वास्ति । वह या उत्तर्भ स्वर इ.स. १९४४ कार्यकार वास्ति । वस्ति वास्ति । वस्ति । 

١, ٤, ﴿﴿ إِنْ إِنَّا

[ \$04

• २१ जेवर मंतरं सञ्चरम् पुज्यवद्यरिवदद्वविद्यंशिदियावमुबलंभा । मार्खाविय-उवसद्यरिवदेहि प्तीसगाणुगरे वंचिरियफीसणपरू**य**र्ग

सासणसम्मादिहिष्पहुंडि जान अजोगिकेवित्र ति औषं ॥६२॥ एदेसि गुणहाणाणं यहमाणकालिभिद्वदेतं चरहराणा एदेसि चेत्र तेचाणिओग-द्वारोपन्दि उत्तपहरणाय वन्ता । इसे १ सामयपद्वि कार संवदामंत्रदे वि सनस्याण पदुण्दं छीमाणमतंत्रेअदिमागचेण, माणुसत्तेचादी असंरोजमुणचेण च एदेसि चेव त्रेष्णाणित्रोगद्दारतचपदेहि साध्यसुवसंभादो । संसमुणहाणाणं वि सञ्चपदेहि सरिसचरंसः त्ववात्वात्रात्रात्व वात्रः व वात्रः व वात्रः व वात्रः व वात्वात्रः । वाव्यात्रः वात्वात्रः व वात्वाव्यवः वात्व वाही च । अदीदकालमस्सिद्वः पस्त्रवं सीरमाणे विः वर्तिष भेदी, वीर्विदिषवदिरिवायनः पहिचळ्याणमभावा । सजोगिकेवली ओषं॥ ६३॥ पडि भेदामावा ।

पत्प वि तिविधं कालमस्मिद्ग औषपस्चणा चेव कादच्या, उभयत्य पंपिदियर्ष वानां प्रकारके पंजित्तिय जीव पारे जाते हैं। मारणानिकसमुदात भीर उपपाइपइपरिणत वाना अवारक प्रवान्त्व जाव वाच वाच वाच व मारणात्त्वक्तायुक्ता जार ज्यवाद्वपर्यास्त्व ज्ञा दोनों प्रकारके श्रीयोंने सर्पेटोक स्टर्स किया है, क्योंकि, सर्तातकाट ही यहाँ पर विकसा व. सामार्नवस्वार्वि गुणस्थानमे लेकर् अयोगिकेवली गुणस्थान तक मर्वेक गुण-

त्वातास्थवन्य हिंद अंतर संविद्धिययर्थान्त व्यवस्थान्य व्यवस्थान्य व्यवस्थान्य व्यवस्थान्य व्यवस्थान्य व्यवस्थान यानवर्षी येथेन्द्रिय और संविद्धिययर्थान्त वीशिक्षां स्वर्धनेश्वेत्र ओपके समान है ॥ देश॥ इत ग्राणस्थानाही वर्तमानकालविश्विष्ट कार्यानको महत्वमा, स्वरी जीवीक सेनानुयोत-रक आध्यम कहा गर स्वयंक्रपणक मुख्य है, यथाक, पास्तवसंक्रयादाए मुक्स्पालक इस रेस्सास्यम् मुक्स्पान तक सर्व दर्शेम स्पृत्तिक सामान्द्रोक आहे पार शोकोक ंद सरमास्थत गुनस्थान तह स्वय परामा स्वामान्यस्थल स्वाह स्वाह स्वर स्वयंत्र स्वयंत्र स्वाह स्वाह स्वर स्वयंत्र स्वयंत्र मागल और मानुबराबरों सर्ववयात्वाजे होत्रहें रखें पूर्वेतः जीवोक होत्राह ज्यावन भारत थार, भागुपशंत्रक जन्मज्यावाण स्वतं स्वतं प्रवास्त्रक आवार, स्वतंत्रक स्वतं स्वतं प्रवास आवार, स्वत इति हुने वये पहेंद्रे साथ साथस्त्र पावा जाता है। तथा प्रसम्बस्वतानि सेट गुणस्थान-हारत वह गय पराक साथ साथस्य पाया जाता है। तथा अभवस्य प्रमान देशी जाती है। अनीतकासका दार ग्रावस्थान से संदेशों है साथ सहस्रता देशी जाती है। अनीतकासका आध्य सेकरके आवान मा रावध्वाक साथ करवाता वृक्षा जाता व र जातावस्तरण आवाब स्वकरण प्रकृतिकारी करते पर भी कोई भेद नहीं है, क्योंकि, संबोधित आवाब स्वकरण अविके सिंद सुक्त सयोगिकेवली जीवोंका स्वर्शनक्षेत्र ओपके समान है ॥ ६३ ॥

वहां पर भी तीनों कालों हो आध्य लेकर भाग स्वर्शनमक्वणा ही करना बाहिर, . चेपामा वाबाम्बोण १३६मम् । वः वि. १, ८.

## पाचिंदियअपज्जत्तएहि केवडियं खेतं पं खेजदिभागो ॥ ६२ ॥

एदस्म मुचस्म परुवणा खेचभंगा। उत्तमेव किनि मावा १ ण, मंद्रबुद्धिभवियज्ञणतंभात्रणदुवारेण फलोवलंभादो ।

<sup>सञ्चलोगो</sup> वा ॥ ६५ ॥

सत्याण-वेदण-ऋसायपरिणदेहि वीदे काले तिण्हं लोगागम लागस्स संस्वेन्त्रदिभागो, माणुसत्त्रेनादो असंस्वेन्त्रमुणो पासिदो। अपरज्ञचाणं व तिरियलोगस्स संसेजदिभागचं दरिसेद्व्यं । एसो मारणंतिय उत्रवादपरिणदेहि सञ्चलोगो कोसिदो, सञ्चलेगाम्हि एरे

अपन्त्रतार्गं गमणाममणवडिसेहाभाता ।

एवभिदियमग्गणा समता ।

टब्स्पवर्धात पंचेन्द्रिय जीवोने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है रूपानरा माग स्पर्ध किया है ॥ ५४ ॥ इत स्वको स्वर्शनमञ्ज्ञणा क्षेत्रप्रद्भणाके समान है।

रोका - कही गई बान ही पुन- क्यों कही जाती है, क्योंकि, कह दूरों केर्द पाल मही है ? ममापान - नहीं, क्योंकि, मंदयुक्ति मध्यमनोके संवासनेकी संयस बरनेबा फार पाया जाना है।

हरप्यपान पर्पेन्ट्रिय जीवीन अतीन और अनागन कानही अपन हरसं हिया है ॥ इत् ॥

हेबरणात्रम्बनाम, परमा भीर इत यमस्यामगरिवन इस लाजगरान्य विश्वानक्षत्रकातः, यहता भोर क्य प्रमादात्रपोणातः उतः, साध्यपाः स्वानक्षत्रेत्रकारम् सामान्ययोकः भादिनीतः सार्वाच्यात्रका साध्यपाः स्वानक्षत्रकारम् संस्थानकः भागान्त्रज्ञातः भारत् तीतः सार्वादा असम्पातवा भागः । सम्बद्धानकः साम् और मनुष्यासम्बद्धानमुणा स्वतः स्वतं क्रिया है। वहा वर नाण देवें हुए <sup>त्राप</sup> कार भनुष्याच्या भावपातगुणा भच भाग दिया है। यहा क रूके हुए <sup>त्राप</sup> बीबाई समान हा निर्वेद्धादना संबंधातयों साम (स्लाना बणा) प्रशास के इंग्लिम तु यह सर्व के mend Ed ... 2 5 14 4 5 47 5 5 500

कायाणुवादेण पुढविकाहयःआउकाहयःतेउकाहयः वाउकाहयः 1280 दरपुढविकाइय--वादरआजकाइय-घादरतेजकाइय-वादरवाजकाइय-दरवणफदिकाइयपत्तेयसरीर-त्तस्सेवअपज्जत-सुहुमपुढविकाइय-सुहुम-उकाहय-सुहुमतेउकाहय-सुहुमवाउकाहय-तस्सेवपञ्जत्त-अपउजतपृहि डियं सेत्तं पासिदं, सन्वलागां ॥ ६६ ॥

षुद्रविकाह्य आउकाह्य तेलि चेत्र सन्यसुद्रुमेहि सत्याणसत्याण चेदण कसाय-विय-जनवादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सन्बलोगों पासिदो । बादरपुडिनिकाइय-माउकाइय-तेसि चेव अपन्त्रत्त बादातेउकाइय-तस्तेव अपन्त्रत्ववणःकदिकाइयपत्तेय-दरिणिगोदपदिद्विद-तेसि चेव अपज्जत्तपदि य सत्याण-नेदण-कसायपरिणदेहि गर्वडमाणकालम् विष्टं लोगाणमसंखेजिदिमागो, विस्थिलोगादो संस्वेजनगुणो, उचादो असंखेबनमुणो पामिदो । तिरियलोगादो संखेबनमुणनं क्रमं णव्यदे हैं

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, अप्रिकायिक, वायुकायिक ा बादर प्रियोक्तायिक, बादर जलकायिक, बादर अमिकायिक, बादर बायु-और पादर वनस्पविकाधिकप्रत्येकग्रारीर जीव तथा इन्हीं पांचांके बादर काप-अपर्याप्त जीव; यहम पृथिवीकायिक, यहम जलकायिक, यहम अमिकायिक, कापिक और इन्हीं सहम जीशोंके पर्याप्त और अपयीप्त जीगोंने कितना क्षेत्र । है ? सर्वलोक स्वर्श किया है ॥ ६६ ॥ स्यानसस्यान, चेदना, कवाय, मारणान्तिकसमुद्रात भीर उपपादपद्रपरिणत प्रवासन्ताम् अस्याः भारताम् विद्यास्य विद्यास्य भार प्रवास प्रवासन्तास्य । इ. श्रीर जलकायिक जीव श्रीर उन्होंके सर्वे सद्भवायिक अधिने तीनों ही ब्हिक हारी क्यि है। खस्यान, पेदना और क्यायपक्ष्परिणत बाहर पूर्विशी-दर जलकायिक और उन्होंके अपर्यान्त भीशोंने, बाहर अधिकायिक और उन्होंके र निर्मातिकापिकवरोकशारीर बादरानिगोदमतिष्ठिन और उन्हेंकि भएगीत त, अनागत और यर्तमान, इन तीनों कालोंने सामान्यलेक भादि तीन लोडोंक

मान, तिर्यम्होकते संक्यातगुणा तथा मगुण्यक्षेत्रते वासंक्यातगुणा क्षेत्र स्पर्ध उक्त जीवोंने निर्यंग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है, यह कैसे जाना?

विवादेन स्थान(बार्थिक: सर्वेतीक: स्पृष्ट: । स. सि. १, ८.

उच्चदे- एदे पुदवीओ चेत्र अस्सिद्ग अच्छति । सन्त्रपुदवीओ च सचानुबालक पढमपुढवी सानिरंगएनारञ्जुकंदा 👔 । विदियपुढवी छहि सनभागेहि समईरासम्ब हंदा रिक्षे । तदिसपुढवी पंच-सत्तभागाहिय वे रज्जुहंदा रिक्षे । चउत्पहुती नर्गः सचमागाहिय-तिब्लिरज्जुरुंदा 🛛 ३५ | । पंचमपुदवी तिब्लिसनभागाहिय चर्नालर्ज् १३ । छहपुदवी वे-सचमागाहियपंचरञ्जुरुंदा पुँ । सचमपुदवी व्यन्तवकार्यः छरज्जुरुंदा 👪 । अहमपुदवी सादिरेयएगरज्जुरुंदा । पडमपुदविवाहर्ष्ट अवीदिनाः हियजोयणलक्सपमाणं होदि १८०००० । विदियपुदवी वर्ताः के स्वरूप २२००० । तदियपुदवी अद्वानीसज्ञायणसहस्सवाहल्ला २८०००। चउत्यपुदवी चार् नोयणसहस्सवाहल्ला २४००० । पंचमपुदवी वीसनोयणसहस्सवाहल्ला २००१ ण्डपुदनी सोलमजोयणसहस्सनाहल्ला १६०००। सनमपुदनी अङ्गनोयणसहस्तरा ८०००। अहमपुरवी अहनोयणबाहल्ला ८। एदाओ अहपुरवीथी नः निर्मा तिरियलोगबाहरूलादो संसेजगुणवाहरूलं जगपदरं है।दि । मारणंतिय जनगदर्गः समाधान – ये बादर पृथिवीकायिक आदि जीव पृथिवियान ही आप्रा रदते हैं। और सभी पृथिवियां सात राजुबमाण आवत हैं। बचम पृथिवी साधिक ए धीर्न है (१)। दितीय पृथियी छर यटे सात भागोंसे अधिक यक राजु बौड़ी है (१ दर्शय पृथियी पांच बडे सात मार्गोले अधिक दो राजु चौड़ी दें (२३)। चौडी कृष्णि यटे सात मागोंसे अधिक सीन राजु चीड़ों है (३५ँ)। पांचवी पृथियी तीन बटे सात शिधक चार राष्ट्र चीड़ी है (१६)। छटी पृथियी दो बटे सात मागोंने मधिक पांव राई दै (५) )। सातर्यो पृथियी एक यटे सात मागसे अधिक छह राजु सीही हैं। मारवी पृथिती कुछ मधिक यह राष्ट्र बीड़ी है (१)। मधम पृथिवीही है। है (१) सम्मी दत्तार योजन प्रमाण है। १८०००)। जिमीय पृथियो वर्षान दत्तार योजन । (३२०००)। तृतीय वृधियी अट्टाईम हज्ञार योजन मोटी दें (२८००) नीर्था वृधियी ! हमार योजन मोदी है (२४०००)। पांचर्य पृथिमी बीम हजार योजन मोदी है (१४०००)

एडी पृथित्री सोल्ड हजार योजन मोडी है (१६०००)। सानवीं पृथित्री साह हारि मोटी है (२०००)। सदर्भी पृथियों अट योजन में टी दै (८)। इन भारी पृथियों अट योजन में टी दै (८)। इन भारी पृथियों भन्दान्याचारम् स्थापितं वरतपर निर्परशहरू बाहरूपन् भन्यानगुणा बाहरूपमाति । राज्य ५ ) हाता है (तथा पू का) इसलिय जन्म बाहस्थम सम्यानगुणा बाहस्य-----मारकार-विश्वमुद्धान भीर उपयाद्यय्यस्थित उत्तर जीयोन भूत, प्रविष्य जीवि

वादाणागदन्द्रमाण्याल्सु सञ्चलोगो पोसिदा । इदो १ तसस्यचादो । वेऊणं पुरन्भिगो वादाणान्ववङ्गणपनाल्य तप्यलामा पातवः। इदा १ तस्तवः वादाः। वज्य अवादममा पत्ररि वेउच्चिपपरिणदेहि वेद्दमाणकाले प्रवृद्धं लोगाणमसंवैद्धदिमार्गा, सीदे तिन्द् वेशाणमसंरोजिदिमामो, तिरिपलोगस्स संरोजिदिमामो। वं जधा-वेउकारमा पान गान पेत्र वेजन्त्रियसरीतं उहार्वेति, अवज्ञतेसु तद्मादा। ते च पञ्चासकम्मभूमीसु चेत्र हाँति वि। त्रत्र प्रधानमञ्जूषे व्यवस्थानम् व्यवस्थानम् । व त्रावस्थानम् व व वायस्य । सर्वप्रहरक्टर्षसमामुखे व्यवस्रे बद्धे विरिष्ठोगस्स सरीम्रदिमागोः होदि चि । अपना भारतंत्रकाहरपञ्जाया कम्मभूमीए उपर्वव्या बाउत्तरंभेषा संस्कृतमञ्जासका हास्त १५४ जनवा विस्तराहरू भारतावाभारतपञ्जाम करणायुगाय व्यवस्था पावस्थाय सावस्थायपास्टर स्वास्थायप्र स्वीद्रकाल सन्दमावृतिय विज्ञच्यति चि माहिद् वितियलोगस्य संरोजादिमागो चेत्र होदि। विष्काल प्रभागानुसम् १९०५मा । व भावत् स्मारमञ्जावतः एवळाद्भामा अव वसद् दरतेत्रकाहया बादरपुद्धविभेगी, बादरपुद्धविकाह्या इव बादरतेत्रकाह्या वि सन्त्रपुद्धविकाह्या १६९०७ कार्याः पान्यक्षान्त्रभागः पान्यक्षान्त्रभागः । स्य पान्यक्ष्याः भ कन्यक्ष्यः । स्वति चि । वाद्यि वेउच्चिपपदस्य वेउक्तास्यवेउच्चिपपदभंगो । याउकास्यानं वीद्यानः च्छात । व । वचार वजनवर्षका जनसङ्ग्रहणा । वजनवर्षका । कालेस नेवकास्याणं भंगे! । प्रचिर वेउन्दियस्य यहमाणकाले माणुसस्वेषमस्वितीः प भाजातु । अदीदकाले वेउध्यिपरिवादेहि वाउकाहपहि तिन्हं सोमाणं संकेजनीदमागो, व्यक्ति असंस्वेज्ज्ञयुर्वो पासिदो । सत्याण-वेदण-कक्षापवरिणदेहि बाहरवाउकाहपहि मां बालोंमं सर्वलोक स्वर्ध किया है, वर्धोंकि, उनका यह स्वर्धनसेन्द्र समायसे ही है। ना बालाम च्यलका रचना क्या का बचा का जनका यह रचनावस्त्र स्थापन दा दे। विक्र जीवीका स्वरोत्तरीय प्रोधीकाविक जीवीक समान जानना बादिए। विशेष वात १४४. जायाका रुपहानक्षत्र प्राथमकात्रक जायाक रामान जामना चाहरू । ।वदाद पत के पहित्यकत्मुद्धातपद्चारिण्यः भौगिहायिकः जीयोने चर्तमानकालमे पांची महारके क पात्राप्यक्तस्य वाण्यस्थारम् वाधाः क्षाः स्थानं प्रवासावकालम् पाया स्वास्थकः स्थानं स्वासावकालम् पाया स्वासक सर्वरयात्वयां मागः तथा स्वत्रसलम् सामाय्यकेकः साहि तीतः लोकोका सर्वस्थातवां र तिर्वेग्लोकका संख्यातयां भाग रासं किया है। यह इस प्रकारत है—

तारकाविक पर्यात जीव ही वैविविकत्तरीरको उत्पन्न करते हैं, पर्योक्त, स्वयात महत्वावरः प्रवात वाव द। वाववष वत्राराण्या व्यवस्य करत द। व्यवस्य व्यवस्य विदेश करते द। व्यवस्य करते वा व्यवस्थ कैरिक हार्तरके उत्पन्न करतेका सामित्र है। और वे प्रवास और कर्मणूमिसे कावधहारारक अस्पत्र करनका साम्रका लगाव द। जार व प्रवास जाव कम्पूर्णम स्तिलिए स्वयम्प्रमापर्वतक परमागवर्ती रेडको जगामतरकपते करनेपर तिर्दे रुपातवर्गमाम देता दे। सपया कर्मभूमिम जन्मम दुए पादर तेमस्काविक पर्यास <sup>९९</sup>वावचा भाग हाता ह**ा स्वया कमभूमिन उत्पाहर प्राहर ता**वस्कायक प्रवास सरहत्रपुरे मतीतहालमें संय्यात प्राम्न पाहरूपयाले सर्वे तिर्वस्थातक प्रवास सर्वे तिर्वस्थातको पारत हैं, प्रसासर्थ प्रदेश हरनेपर तियंशोकका संस्थातक स्थापक स्थाप ि फरत है, पर्सा अध्य भद्रण करनभर (तथानाकः) परणात्था भाग का दाता ज्ञारकायिक जोयोंका स्पर्धातसेत्र बादर पृथियोकायिक जोयोंके स्पर्धातसेत्रक जरबाएक, जायाक, रूपमानसन चार्र प्राथमाध्यापक जायाक रूपमानसकती कि, तादर पृथियीकायिक जीयों हे समान काहर नेजस्कायिक जीय भी समी ार, याद्र प्राध्वाक्षापव, जायार, समान वाद्र गजहरूमावक जाव मा समा ते हैं। विशेष वात यह दें कि विक्रियकपट्डा स्परांत तेजस्काविक अविशेष तदा प्रवार पात यहदाक यावनप्रभारका स्परान तमस्मापक जायाक समान जानना घाहिए। यायुकापिक जीवाँका स्पर्धनसेत्र भनीत भीर राधान आगाम साहित्य धायुकायक आयाका १४२१मदात्र भवाव साह ते अस्कायिक अधिके समान है। विदेशिय यात यह है कि पर्वभावकास्त्रमें त्रवर्धायर जायार समान है। एथीय बात यह है के प्रतानकासम मनुष्यक्षेत्रमत विरोधमा नहीं जानी जानी है। अनीतहासमें पीहाप्रक्ष्य भेचे प्रकारपात विशेषमा गरा ज्ञामा ज्ञामा है। ज्ञावकालम पार्ट्यप्रक्षप्र प्रक जीवान सामाध्यक्षक माहि तीन लाकांचा संबंधातका माम और थ्यः ज्ञाबान सामान्यकात् भावः वात्रः व्यापना व्यापना व्यापना भावः भावः विद्यास्त स्वापना भावः भावः भावः व्यापन विदेशलेखः, इत दीवीं लीवोति असंस्थातातात्वा सेत्र स्वर्धः हिसा है। व्यस्पातः प्रभावत्यः, ६० वाना स्टानाः अवस्थातपुर्णाः दात्र स्थनः १९४५ ६ । स्थयानः (र स्वायसमुद्रातेषारेणते यादृरवायुद्यायिकः त्रीयोने अर्थातः, धनायतः सौर

८५०'] छक्खंडागमे जीवदाणं

वीदाणागद्वन्द्रमाणकालेस् तिण्हं लोगाणं संखेजन्नद्दिमागो दोलोगोहितो वर्गकान्त्रः कासिदो । वेजन्वियपदस्स बङ्गमाणकाले स्वचमंगो । तीद् काले वेजन्वियपदस्स बङ्गमाणकाले स्वचमंगो । तीद् काले वेजन्वियपदस्स बङ्गमाणकाले स्वचमंगो । मार्गितिय-ज्ववाद्यरिणदेहि वाद्रवाजकाह्यहि सन्वलोगो पोतिरो । ते माद्रवाजकाह्यज्ञपत्रज्ञचाणं । णविरे वेजन्वियपदं णित्य । सुनुमतेजकाहय सुदुमाणकाले विसं पञ्चन-अपज्जनाएहि य सत्याण-वेदण-कसाय-मार्गितिय-ज्ववाद्यरिणदेहि केल् गद्वन्द्रमाणकालेस् सन्वलोगो पोतिरहो । वाद्यपदिविकालस्य स्वयन्त्रमाणकालेस्

[ {, 8, 7

वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरतेउकाइय-वादरवणक्री काइयपत्तेयसरीरपञ्जत्तएहि केवडियं खेतं पोसिदं, लोगसा अंते ज्जिदिभागो ॥ ६७ ॥

पदस्य सुचस्य अत्यो जघा खेचाणिओगद्दारे उची तथा वचन्ये।

सव्वलेगो वा ॥ ६८ ॥

एरय ताव 'चा ' सद्द्वो बुधदे— बादरपुढिविकाइयपज्जत-बादरआउझाराता भाररणिगोदपदिद्विदपज्जतप्दि य सत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिर्ह होगालतंत्रे

भरवात जीवात भर्तात, भरतात्व भीर वर्तमात, इत तीतो बालामें तर्वहोड स्वर्ता हिता है। बादर शिवशिकायिक, बादर अध्यायिक, बादर तेत्रहायिक और रा बनस्यतिकायिकमध्येकन्यीर पर्याप्त जीवाते हितना क्षेत्र स्वर्ग हिवा है। होए

बर्मस्वातर्श माग १२पी किया है ॥ ६७ ॥ १म मुक्त बर्च अंगा शेषानुयोगजारमें कहा गया है, इसी प्रवासी वहना वर्षा इन्हें अस्ति अर्तात और अनागतकात्रकों अदेशा गरेनोक १२वी क्षिति है। वर्षातः 'बा' शाल्या वर्षा बहुते हैं— मागानसालान, वेदस बीट वर्षान्ति परिकत बहुत रूपियोजाविक वर्षान, बादुर जलकाविक वर्षान और बार्गनिर्मार्थना

पर्नमान, इन तीनों कालोंमें सामान्यलोक सादि तीन लोकोंका संस्वातयो भाग भीर नर्ज होंक तथा तिर्पालोक, इन दोनों लोकोंते असंस्वातगुचा क्षेत्र रूपमें किया है। विशिव्हर्ण सानपदका रपर्यानकेत्र पर्यमानकालमें क्षेत्रमूरप्याके समान है। अतीतवारमें वैदिशिक सानपदका रपर्यानकेत्र पायुकायिक त्रीवोंके वितियकपदके रपर्यानक समान है। अतीतवारमें विद्यक्षित सामुदान और उपपादपद्यित पादप्यायुकायिक त्रीवोंत स्वत्रोक समान है। अस्त्रीत समुदान और उपपादपद्यित स्वपूर्वा अधिक स्वर्यान सानवार सातिय । क्षित क्षत्र वह स्वर्यान स्

Itut

लारेमामा, निर्मित्रामारा संग्रेजमुणो, माणुग्यमारा असंग्रेजमुणो पीसिरी। मारणंतिय-उपग्राप्तीरन्दि सम्मलेमो पीसिरी। पार्त्तवण्यस्मायप्रियम्तिराजणप्रि स सर्याप-प्रेत्य-क्ष्मायप्रियोदि तिष्टं लेगाण्यमंगेरज्ञिद्दभागो, निर्मित्रोगस्स संरोज्ञिदिमामा । किं कारचं १ सप्यपुरवीत पार्त्तवण्यतिकार्यप्रवेषसारीयव्यत्या गरिष, विषाण उपरिममामे पंत्र जान्य 'ति आर्तिप्यण्यारा । जप्या, प्रवेषसारियज्ञ्ञमा निरिप्रलोगारी संरोज्ज्याम् संग्रे पुनित । पुरो १ सार्त्तिणोग्यिदिह्यप्रव्याण्यास्त्रस्य-क्ष्यनामारी । च प्रयोगसारियज्ञ्ञक्विरिक्सार्तिमोद्दरिह्दप्रव्या अरिष । बार्तिणोद्दरिह्दा सप्ते प्रयम्तिराज्ञक्विरिक्सार्तिमोद्दरिह्दप्रव्या

कीत जोणीभूदे जीवो वक्तमह सो व अञ्जो वा । जे वि च मुलदीचा ते पत्तेया पदमदाए ।। १६॥

हरि गुत्तवयणादी मध्यदे ।

पर्यात श्रीयोते भागान्यलोक आदि तीन होसाँका असंस्थातवां भाग, तियालीकते संस्थात-गुणा और सानुवरित्रसे ससंस्थातगुणा सेव स्पर्ध किया है। मारणानित्रकसमुद्धात और बरपारवरपरित्यत श्रीयोत सर्व सोक करारे किया है। सस्यातवसमान, पेतन और बराज-समुद्धातप्रचित्रका वाहर यनस्थातिकाविकायेकारारित पर्यात श्रीयोते सामान्यहोस कार्य सोन होत्रोत ससंस्थातयो भाग और तियंग्रीका संस्थातयो भाग करारे किया है।

श्रंथा -- बादर यतस्यतिकायिकास्त्रेकतारीर पर्याप्त अधिके तिर्पालीको क्रिक्टिक क्षेत्रपाली आगमात्र दर्शानके हीनेका प्रया कारण है !

सामान्य स्थापन वर्षा कार्य कार्य स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्य

वयान अव दात ६ १० १००० नामानाम अव विश्वास्त्र संस्थातगुणे तेरके न्यो कर्ये । स्थाता, प्रवेशकारित पर्याप्त आयोगा विश्वास्त्र संस्थातगुणे तेरके न्यो कर्ये । स्थापित, सारपंत्रियोगामितियान वर्याप्त आयोगामित्र संस्थातगुणे नामान्य नामान्य स्थापित अयोगामित्र संस्थातगुण नामान्य स्थापित स्थापित अयोगामित्र स्थापित स्था

क्री दोते हैं।

[ 1, 1, ...

· वादरणिगोदपदिद्विदयज्ञत्ता सन्त्रासु पुढवीसु अस्यि ति कथं पन्तरे शिलपुरव विज्ञमाणपुढविकाइयपज्जचपोसणेण सह एगचेणुवदिदृश्यसंखेज्जाणि तिरियपराणि 🕅 वक्खाणनयणादो णव्यदे। तम्हा पत्तेयसरीरपञ्जत्तेहि पोसिदखेत्तेण तिरियहोगारी हेर्न गुणेण होद्य्यमिदि । जधा पत्तेयसरीरवणप्कदिकाइयपञ्जता सव्यास पुर्वातु हि तथा बादरआउकाइयपज्जेचीहे वि सन्वासु पुढवीसु होदन्वं । अधवा बादानिगेदारी द्विदपञ्जत्तपत्तेगसरीरा चेत्र सञ्जयुदवीस होति । बादरिणगीदाणमजीणीभृद्रवेतमान पञ्जता चित्ताए उत्ररिममागे चेत्र होति ति कहु वाद्रस्वणफदिकाद्यपवेषसासा पादरणिगोदाणमजोणीभृदे चेत्र घेचृण तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो ति देवनी मारणंतिय-अववादपरिणदेहि सञ्चलामो पासिदो। एवं बादरतेउकाइयपज्जनाणं दि स्वनी णवरि वेउध्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो वत्तव्यो।

वादरवाउपज्ञत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, स्रोगसा संवे<sup>न्तरि</sup> भागो ॥ ६९ ॥

र्चका-वादरनिगोदमातिष्ठित पर्याप्त जीव सर्व पृथिवियाँमें होते हैं, यह कैसे अप समापान- 'सर्य श्रधिवियोंमें विद्यमान श्रधिवीकायिक पर्याप्त जीगाँहे सर्वते साय प्रत्येसे उपदिष्ट शर्सक्यात तिर्थेक् प्रतरप्रमाण स्पर्धनिक्षेत्र होना है । हत होते हैं।

इसटिए प्रत्येकदारीर पर्याप्त अधिसे स्ट्रप्ट क्षेत्र निर्याशिकसे संव्यातपुता वि चाहिय । जिम प्रकारस प्रत्येकपारी प्रवस्तातिकायिक पर्याप्त जीव सभी गुणिवियाँ । है, उसी महारस बाहर जलकायिक प्यान्त जीव भी सभी पृथिविपोर्म होना वादिश वर्ष बादरनिर्मादमनिष्ठित पर्यान्त भ्रत्यकदारीरयाहे अवि हा सर्व वृधिविधाँ होते हैं। हर्त निगेद के बयोनीमून मन्देक शारिर पर्यात औष ही नये गृथिवियाम हात के स्वीतीमून मन्देक शारिर पर्यात औष वित्रा गृथिकी उपरिम मागम है। हत इप्रक्रिय बादर निर्माद्देशि अधानीमृत बादरवनस्पतिकायिकमध्येकमरीर श्रीव श्राहर करके सर्वात् उनकी साक्षा 'तिर्थलोकमा संकारपार्या माण होता है 'वेसा भर्वे प्रात् कर्ता व्यादियः मारवान्तिकममुद्धान और हपनाद्यद्यारेणन जीवान सर्थ होत हमा दिन है। हिंग प्रमुख्य मारवान्तिकममुद्धान और हपनाद्यद्यारेणन जीवान सर्थ होत हमा दिन है। हिंग प्रकार में बारत नेपालनात्र में महारक्षे बाहर तेमावादिक पूर्वाच कार हवगाहवहगारिकान जीवीन सर्थ होत हारा १६०० -महारक्षे बाहर तेमावादिक पूर्वाचन जीवीका भी हगरानशेष कहना बादिव । दिन हो बहु है कि कहनादिन होते बह है कि वेजन्यायक प्रयान जीवीका मी स्वर्शनक्षेत्र कहना बाहिया। । । सम्बद्धिक वेजन्यायक जीवीके वैद्धियकसमुद्धान पद्या स्वर्शक्षेत्र निर्वेग्टोहडा शासाने सम्बद्धाना है । ऐका करून के विद्धायकसमुद्धान पद्या स्वर्शनक्षेत्र निर्वेग्टोहडा शासाने मान होता है, देश कहना चाटिय।

बारम्मपृक्षपिक पर्याप्त जीशीने कितना शेव स्वर्ध किया है। हेडी

केणपातना माग सार्च किया है।। इर ॥

एदस्स सुवस्त अत्ये। जपा खेलाणित्रोगद्दो उत्ते। तथा वत्तन्त्री, बहुमाणकाल-मस्मित्व हिद्वादा ।

सन्बहोगो वा ॥ ७० ॥

सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिन्यपरिणदेहि तिण्डं लेगाणं संखेन्जिदिमागो, दोलोगेहितो असंखेन्जगुणो पोसिदो। मारणंतिय-उपग्रद्यशत्यदिषदेहि सन्वलोगो फोसिदो।

वणकित्वाइपणिगोदनीवनादरसुहुम-पजत-अपञ्जतपृहि केव-डियं सेतं पोसिदं, सज्वलोगो ॥ ७१ ॥

यणप्रतिकार्यणिगोदभीवगृहमपत्राप-अपञ्जवगृहि सत्थाण-वेदण-क्रप्ताय-सार्य-तिय-उबवादपरिगदेहि तिगु वि कालेगु सन्वलेगो पोतिदर । यादरवणप्रदिकादय-यादरिगोग्द-सेतं पञ्जप-अपञ्जवर्दि सत्थाण-वेदण-क्रसायपरिगदेहि तिगु वि कालेग्रु

इस स्वका अर्थ जैया क्षेत्रानुषोगशास्में कहा है, उसी प्रकारसे यहां पर कहना चाहिय, वर्षोकि, वर्तमानकासको माध्य करके यह स्व स्थित है भर्यांत् कहा गवा है।

पादर बायुकापिक पर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ७० ॥

स्त्यानस्त्यान, वेदना, बचाव भीर पैक्षिपससुद्धावपरिणत उक्र अधिंति सामानकोक भादि सीन लोगोंना संस्थातको आग और मनुष्यलेक रूपा तिपालोक, इन स्वानकोक भादि सीन लोगोंना संस्थातिक अपिता सीन अपिता सीन पोर्चित उक्त अधिन सर्वेश स्वान किया है। मारणानिकसमुद्धात और उपपाईपद-पुर्चित उक्त अधिन सर्वेश क्या किया है।

पनस्वितिकाधिक जीव, निषोद जीव, बनस्वितिकाधिक बाद्र जीव, पनस्वितिक एस्न जीव, वनस्वितिकाधिक बाद्र पर्याप्त जीव, वनस्वितिकाधिक बाद्र अपर्याप्त जीव, वनस्वितिकाधिक बाद्र अपर्याप्त जीव, वनस्वितिकाधिक प्रस्म अपर्याप्त जीव, निषोद प्रस्म अपर्याप्त जीव, निषोद प्रस्म अपर्याप्त जीव, निषोद प्रस्म अपर्याप्त जीव, निषोद प्रस्म अपर्याप्त जीव जीव, निषोद प्रस्म पर्याप्त जीव जीव जीव जीव स्थाप्त अववित्त स्वाप्त अववित्त स्वाप्त अववित्त स्वाप्त अववित्त स्वाप्त स्वा

स्वरुपात, बेदमा, बसाव, सारणानितकसमुद्रात और उपवाद, दन वहींने प्रशिक्त धनस्तिकस्थिक निगोद जीव और उसके स्वस्त तथा वशींन और स्वर्णता स्थानित होते हैं कारोंने सरेलेक स्वर्धी क्या है। वस्त्यात, बेदना और क्यायसमुद्रातवप्रयश्चित वादर धन-स्रतिकाथिक, बादर निगोद उनके पर्योप्त तथा अपवीद्य जीवोत तीरों ही कारोंने समागप-

तिष्टं होगाणमसंखेजदिमागो, तिरियहोगादो संखेजगुणो, माणुसखे पोसिदो । मारवंतिय-उपवादपरिवदेहि तिसु वि कालेसु मध्यलोगों पे तसकाइय तसकाइयपञ्जत्तएसु मिच्छादिद्विषहुहि

केविल ति ओघं'॥ ७२॥

वट्टमाणकालमदीदकालं च अस्सिद्ण जधा औषम्हि सासणा कदा, तथा एत्य वि कादच्या। णवरि मिच्छाइङ्गीणं पींचदियमिच्छादिहि उनवादपर्दं मोन्ण अष्णत्य सन्वलोगनामावा ।

तसकाइयअपज्जताणं पंचिदियअपञ्जताणं भंगो । बट्टमाणकालमस्सिर्ण जघा पंचिदियअपज्जनाणं परुवणा करा, यहमाणकालमस्मिर्ण परुवणा कादच्या। जधा अदीदकालमस्मिर्ण

क्तायपदेदि निन्हं सोमायमसंखेजिदिभागो, विस्यिलोगस्स संखेळिदिभागो, रोक मादि तीन रोक्षेका समस्यानयां माग, नियंग्टोकसे संस्थानगुणा और

मगंच्यातगुजा क्षेत्र स्वशं किया है। मारणान्तिकसमुद्रात शीर उपगानपा त्रीयोने माना ही कालाम सर्वतीक स्पर्श किया है। त्रमकाषिक और त्रमकाषिक पर्याप्त जीवोंमें निध्यारिट गुनार मपोगिकेरणी गुणव्यान वक मत्येक गुणव्यानवर्गी जीवोंका स्वर्णनवेत्र श्रो

है।। ७२॥ बर्नमानकार भीत भनीतकारुको आश्रय करके जैसी भाग काशीत्रवक्ताम काहि हुमस्यानाँकी प्रकारणा की गई है, उसी प्रकारण वाल पहिला मा करना थार्ड

कात यह है कि जगहाबिक और जगहाबिक परीत मिध्याहाँव जीताडी शा चेतिन्द्रविष्यादृष्टि श्रीवीच समात ज्ञातना साहित, चर्चात, मारणान्त्रसम्ब हरतारुवहरा छोड्डर सायत्र अर्थान रोव पहाँमें सर्वणाटनामाण स्वर्गनहात्रका सम्प वस्कात्वक तरस्यवयात्र जायोका स्वयंत्राचनाय स्वयंत्राच्यात्र । हम न तोहहा अमस्यातमा माग है ॥ ७३ ॥

बन्द नव ,ठवा बाध्य बरब जिल्ल धवारचे पेनल्डम एक्कायपूर्वात अव है से हेर्याचा च. ८६ ह टेमा प्रचारम्भ वहावह प्रचारम्भ वेपान्त्रय साध्यववात त्राप्त स्ट चरका च. १६ ह टेमा प्रचारम्भ वहावह भी वनसामच एका माध्य करत साहाराण बरकः वः दवः जया जस्य कलानवानवा भाष्यम् वर्षः भाष्यम् वरदः स्वरं वर्षः जया जस्य कलानवानवा भाष्यम् वरवः स्थवनातः वदना क्रियानवर्षः होत्रक हे चे के मान्यान्य भार्य नीत साहत हो क्यां वर्ग सह हा हो। सह हो सह हो सह हो सह हो सह हो। सह हो सह हो सह सहस्त है चे के मान्यान्य स्थाप नीत सहस्ता सहस्ता सहस्ता सहस्ता हो। फोसणाणुगमे जोगमागगामोसणगरूवणं

पहला कदा, तथा एत्य वि कायच्या ।

व्यसंरोजज्ञमुणो, मारणंतिय-उपभादपदेहि सन्यसोगो पोसिदो नि पंचिदियअपज्जनाणं जोगाणुबादेण पंचमणजोगि पंचविजोगीतु मिच्छादिट्टीहि केव-

डियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७२ ॥ एदं ग्रुपं बहमानकातमस्मिद्गं हिदमिदि एदस्य प्रस्वनं कीरमाने जथा सेचानि-रांमालणहं परन्यणा कार्डमा ।

भौगहार रचमण-विज्ञागितिकारिट्टीनं पहच्चा पहचा परच्च वारणाज जना उत्तर स्वयं वारणाज जना उत्तर स्वयं वारणाज जना उत्तर जह चोहसभागा देखणा, सञ्चलोगो वा ॥ ७५ ॥

प्रमण-प्रविज्ञांगिमिन्छानिहाँहि सत्याणसत्याणविणदेहि तिण्हं लेमाणमसंसे ण्जदिमामी, विस्वित्वासम् संविज्वदिमामी, माणुस्त्वेषादी असंवेज्ज्ञमुनी पीसिदी। ज्यादमाणाः, गात्रप्राच्यादमाणाः, भाष्यवस्यादाः ज्याद्यवस्याः । एत्यं सत्याणतेषाण्यमाविषाणं जाणियं साद्द्वे । एसो । वा । सहयनिद्दयो । विहार-

भाग और भड़ार्रद्वीपत सम्बुणतमुणा होत्र स्टर्ग किया है, तथा मारणानिकलमुद्धात और मात भार ब्राह्मस्वायस असम्प्रात्माया सम् हारा हिन्य है, तथा आरणाहानकसम्बद्धात आर उपपाहपरपारिणत जीयाने सर्पाताक रुपस् किया है, इसमहारते जैसी पेवेन्ट्रियकारपपरीस जयपादणद्वाराज्य जायान स्वयंत्रक स्वयं क्रिया है, संस्थान्तरस्य जाना प्रयान्यस्थ्यस्य बीह्यांकी प्रक्रपणा की गई है, जसी प्रकारसं यहाँपुर भी स्पर्शनप्रक्रपणा करना चाहिए।

योगमार्गणाके अनुवादस पांची मनोयोगी और पांची वचनयोगियोम मिण्यादृष्टि विनि क्विना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यातमां भाग स्पर्ध किया है। लोकका असंख्यातमां भाग स्पर्ध किया है। विध्या ६० राज १६व। ६ : लाक्का जाएपावना मान राज भागा ह ॥००॥ यह सम समितानहालका साध्य करके स्थित है। स्मृतिद सम्भी महत्वा करनेवर पद चुन जातान कारून जातान जरफ तरचव हा क्याल्य कार्या जन्यान ज्ञान ज्ञान

ी संत्राजुषात्राद्धार पांचा धर्मावामा भार पांचा व्यवनवामा ।मद्दाहार जावाका मकरण वर्ष है, उसी प्रकारते यहां पर भी मंशुद्धि शिक्योंहे खंमालनेहे दिव स्थानमा मकरण <sup>वाहर</sup>ा पांचों मनोयोगी और पांचों बचनयोगी मिष्टवार्ट्स जीजोने अवीत और अनागत े अवसा इन्छ कम आठ बटे चीदह भाग और सर्वनोक स्वर्ग किया है ॥ ७५॥

। अपना ३० ४-१ वा० ४८ चान्छ माग वार प्रवास राज १०४१ व ॥ ०५॥ सम्बानसम्बन्धाः वहंबरियत पांची मनायामी और गांची प्रवनवामी मिरगरारेष्ट व्यवसायवस्थात १३ पारण वाच्या वाद्याच्या वाद्याच्या प्रशासन्त व्यवस्थात । अस्य व्यवस्थात । अस्य स्थानस्थात । अस सामान्यसम्बद्धाः आदि तीतः सोक्षांका असंस्थानस्यं भागः, निर्देशसम्बद्धाः संघ्यातस्यं भागः सामान्यकार आदि वात स्टाइन्डा समस्यात्वा भागः, तिपास्त्राह्म सम्यात्वा भागः स्वितंत्रसं ससंस्थातमुद्धाः शेष रामः क्रिया है । यहां पर समस्यातस्यस्यातः शेषकः ्ष्यक्षत्रका नामार्थान्यक्षत्र करात्रः । अस्त ६ । यदा पर प्यान्यक्ष्याम् स्वयक्ष का विधान ज्ञान करके करना चाहिए। यह 'या 'शहरूके स्वित अर्थ है। विहार-वागावरास्त वारवाववरा-गांवादाशार हे बिहावरवावववदात अही पर्वदेखनामा वा देशोना हार्ने

₹५६]

वेदण-कसाय वेउन्त्रियपरिणदेहि अह चोइसमागा देखणा पोसिदा। पर **छ**क्षंद्रागमे जीवडाणी वेदालीसस्विहि छिप्यामानो, अघोलोगं साद्ध्यउन्श्रीसस्विहि छिप्यामाने मागूनसाद्वहारस स्त्रीह छिणागमागा, णर-विरियलोगहिनो असंवेज्ज्याना

र्व उर्च होदि। मार्र्णतियपदेण सन्वलागी पेसिदो।

सासणसम्मादिट्टिणहुडि जाव संजदासंजदा ओघं'॥ बहुमानकालमस्सिद्ग जघा स्तेचाणिजागहारस ओपन्हि एर्सेम प होजानं संचयस्त्रणा स्टर्म, तथा एत्य वि निस्सम्भातणहे पस्त्रणा कार्यमः

विसेनो । अरीदकालमस्सिद्ध नथा पोसणाणिओगदारस्य औपरिद वीदाना वनवश्यान, वेहना, कराय भीर धैनिविकन्यप्रीरणत उत्ता सीर्योने कुछ बम भाउ की (र्र) माम कारी किये हैं, जो कि धनाकार सोकको माठव मामसे कम नेन साम ( करोंगे विमन्त करने पर यक माग, अधवा मधोलोकको साहे घोडीस (१४)। विवक्त करने पर एक मान, मणवा अध्यक्त कार्य भागता कार्य पावता । करोम विभन्त करने पर एक माग समाण होता है। सर्पात कम नाह कार्यक र

विकालने पर बड़ी देशीन माट राजु ममाण मा जाता है। उद्ध्यान—(१) पनजोक-३४३ - ३४३ ८ = ८राजुः

(२) बाधीलोक- १९६ ÷ ४९, = ८ राजु.

(1) क्रायंत्रीहरू १४३ - १४३ - ८ सतु.

इस्तरहार सामान्यारोकः भादि सीन छोड़ीका संस्थानको ज्ञाम और नालंडरी निर्देश्टरेडिये असक्यानगुणा के ब स्पर्ध हिया है। मास्त्रामिक सामे साम और नार्यः -क्या रिक्त के

रामाप्रवसम्बर्गार्टीक गुणानाममे छेट्टर भंपनार्गपन गुणानाम नद्र वर्गा ही कारहर्मे शुक्ते सर्वेत्यामी बीर याची क्यनयोगी बीरोहा स्वयंत्रयेत बाबहर्वा È. 31 ,

हर्ना क्षांत्र व्याप्त व्यव् हरी। श्रेष नृत्रामग्राम् भागम् १४ वर्गा हृदवारी चेत्रमानकात्वा माध्यय करक देवी। धव न्यागडारक भाषा इन बागे हवामान केवडच्या की वह है। उत्तर वहारध यहां यह भी ग्यागडारक भाषा इन बागे हवामान करना कारण हरें का मानवार कर जाना है. धार का है हिरायना नहीं है. प्रतंत्रह एस शहरता हरें का मानवार कर प्राचार पान करें दिरायना नहीं है. प्रतंत्रह एस शहरता हरें का मानवार कर जाना है. धार करें की स्थापन करें हैं प्रतंत्रह एस शहरता हरें चेती कार्यकानुसंध्य के भागान भाग कार दिस्तान नहीं है। धर्मनकानहीं नाहर -वेती कार्यकानुसंध्य के भागान धर्मन वीत भनामन की होती भगाम हम कार्यकान t de constant of direct and a distribution of d

, एरेहि चट्युगहाणश्रीरेति छुत्रवेतपुरुवगा कारा, तथा एत्य वि कार्यया, विशेषाभावा । महि सामण्यमसादिहि-अर्थवर्यममादिहीय उदबादे। महिन, उदबादेण पंचमन-विच-जेलाणं सहस्रवरहाणवरस्याविरोहा ।

पमतसंजदपहुि जाव सर्जागिकेवलीहि केवडियं स्रेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ ७७ ॥

एर्सिमम्हर्षं गुनहामानं ज्ञचा पेत्रवागित्रोतारास्य जोपस्य तिर्णि काले जिस्मद्रम परवणा करा, तथा एरच वि कादन्य । जिद्द एवं, तो सुने जोपमिदि किष्ण पर्रादर्द ! म, तथा पर्रवसाय कायज्ञामाविकामाविकामाविज्ञास्य विवाहनसम्बाहत्तेष्ठपाडिसेह-मञ्जादा ।

षर्मा श्रीवांत रपार्रिन रेक्करी महत्त्वा की गर्द है, उसी महारत यहां पर मी करता चाहिए, क्योंकि, उसमें कोर्द विशेषता नहीं है। विशेष वात यह है कि सासाइनसम्पर्वाह और अस्वत्तसम्पर्वाह और अस्वत्तसम्पर्वाह सेने उपयादक साथ पांची महोचीन अर्था से विशेषता पांची महोचीन अर्था से विशेषता सहावस्थानहरूप हिरोध है, मर्यान् उपयादमें उक योग सेमय नहीं है।

ध्रमणधंयत गुणस्थानते रुक्त सयोगिकेतली गुणस्थान तक शरोक गुणस्थानवर्ती उक्त क्षीवॉने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है ? लेकिका असंस्थातवर्श माग स्पर्ध किया है ॥ ७७ ॥

इन भार्डे गुणस्थानांकी स्पर्धानायुरोगदारके भोषमें शीनों कार्योका आध्य करके जैसी स्पर्धानमक्त्रणा की गाँ है, उसी मकारसे यहां पर मी करना व्यहित।

र्श्वदा-परि देमा है, तो स्वमं ' भोव ' देशा पर क्वों नहीं कहा है

समाधान — नहीं, वर्षोंक, उस महारदी प्रहरणा कावयोगके मविनामांवी सर्वेगि-केयशीहे वार्षों महारके समुद्रातक्षेत्रके प्रतिवेध करतेके छिए है।

त्रियोगी - यदि धनमें 'ससंखेजनिद्याणो ' पद्दे स्थान पर 'ओपं ' देसा पद् दिया आता तो केवल मनोयोगी और वधनयागियों । स्पर्धनक्षेत्र बताते समय, जो केयल साययाणे निमित्तसे ही केवलीके समुद्धान होता है जिसका कि स्पर्धनक्षेत्र लोकका ससंख्यातयां आग, ससंख्यात पद्दामा दोर सर्वेलाक है, उसका मित्रेच नहीं हो पाता, मर्थात् सोनह प्रसंग उपस्थित हो जाता। उसी सनिहारसिके मित्रेचिके लिए स्पर्भे 'ओपं 'यद न देकर 'सतंत्रेजनिद्माणो 'यद दिया है।

१ सयोगदेवित शे कोइस्यातं स्पेयमागः । छः छिः १, ८०

कायजोगीसु मिच्छादिट्टी ओघं'।। ७८ ॥

सत्याजसत्याज-वेदण-कसाय-वेडन्विय-मारणैतिय-उववादपरिणर्कावके<del>षिकः</del> रिद्वीनं तिसु वि कालेसु सञ्चलोगनुबलंगारोः, विहारविसरयाण-वेउन्तियपरेषि पान काले विच्हं सामानमसंखेआदिमामचेण, विरियलोगस्य संखेआदिमामचेण, कार्यके अमंत्रेज्जिरेगुनवेगः अदीद्काले अह-चोदसमागवेग च तत्लुव्यलेमारो, सुने 🖮 निरि उत्तं।

सासणसम्मादिहिष्पहुडि जाव स्रीणकसायवीदरागच्युन

ओवं ॥ ७९ ॥ मेरेनिमेहारमर्थं गुणद्वाणाणं विविद्यं कालमसित्रम् सत्याणादिवसम् स्वत्या बीत्रकाचे पेत्रवाशिक्षोगर्रोपिन्द जया तिरिह्कालमस्सिद्व एकारमध् गुन्ता म चना दितमत्त्रा करा, तथा कार्यमा; गत्य एत्य कोनि निसेशी !

सजोगिकेवली ओधं ॥ ८० ॥

कानवंशिववीमे निध्यादि श्रीतीका स्वर्शनक्षेत्र श्रोपके ममान सर्वशेष है ॥अर्थ इवस्थानकप्रधान, पेवृता, कपाय, पेकियिक, मारणान्तिकरामुदान भीर स्थान बन्दरिक्य कावरोगी विष्यादित भीयोजा स्पर्शतकार मीलाम्बर्का स्वार्थी सार्वाह पाना हर है। ईररूण्य क्याक्यान और वैशिषव्यव्यास्थित सम्म त्रीयाँने धर्नमानहास्त्री सामानानी कर्णय जीन ने रही वे सर्वभाव में सामन , निर्वेग्लोक संक्षान स्वतान क्षापन । कर्णय जीन ने रही वे सर्वभाव में सामन, निर्वेग्लोक संक्षान मानने, भीर हा प्रकार क्रकरणमृत्य केषधी भोजा, मृत्रा मनीनदालमें भाद बढे चीदद (हैं) मानक्ष्ण क्सर्र बले कृत्यना पार्ट आती है, इसिटल सुचमें 'ब्रोम' पेसा पर बड़ा है।

संभादन सम्बन्धित गुणस्यानम् हेकतः श्रीणकृतायशीतमागश्रवस्य गुणसान स

कर्नेड सुरुष्यानसी बाययोगी जीशीका सार्यनवत्र श्रीपके समान है ॥ ७९ ॥ हर महत्त्र मुख्यमानोदी मीनी बागीकी माध्य बरोह स्वश्यामारि वर्षे से इंदर्ज करने पर कर्मानानुपानपुरक्ष सोगर्ने दिस प्रकारमें नीती वार्योचा साथा क्रिया हरी करने पर कर्मानानुपानपुरक्ष सोगर्ने दिस प्रकारमें नीती वार्योचा साथा क्रिया हरी कुण्यान के आपन हिस्स प्रकार में तो बाधाबा मायत मार्थ के कुण्यान के अपने के कुण्यान के किए के अपने के किए किए के करारा कार्यत्र, करोर्ट, बहुर वर कार्र विशेषका नहीं है ।

कारणेसी सर्वतिहरतोडा सर्वतिशेव श्रीयह समान श्रीडडा व्यवसार्य

बाब, ब्रम्थ्यात बहुबाम बीच मोरीहाई ॥ ८० ॥

पदस्स ग्रमस्य प्रमारंभा किंत्रहो १ ण, सञ्चोगिकेवलिःचमारिसग्रमादा काय-जोगाविणामाविणो भि मदमेहाविज्ञणावसीहणकलमादो । एमजोमं कार्ण जोणामिद् उसे षोसगाणुगमे वजननोगिषोसणपरूवणं जावाविषाभाषणा । प्रश्तिकाष्ट्रणावपावपावपावणावपाव। रणनाम प्राहण जामाणाव पर वि अपिष्रकाहाणुक्कोदी कामजीमी वि सहुष्ट्रं समुम्पादाणमाधिकं वरिन्छिन्जदे पे, म ाव आव्यवण्यात् व्यव वादा कावजामा १व चढुण्ड एक्ष-पादाणमाद्व व महान्यव्य पह स्ताही प्रति हिमाणि प्रति अस्ति, हमाणि च णस्ति भि (ण) णव्यद् । जाण पुरत बताम आवामान ७ प रुमाण प्रमाण आत्यम् रुमाण च णात्य १व (५४) गण्यन् । जात्य समर्वति प्रदाणि तेति पुरत्यणात्रो अपिपुरत्यणात् तृष्टा कि एतियमेष् चेत्र णय्यन् । जात्य प्रमात प्रवास वात राज्यसम्बद्धाः ज्ञान्यराज्यसम्बद्धाः स्व राज्यसम् पुर गुचारमा कार्यज्ञामितिह् चडिनहत्तमुग्यादाणमस्यिचयदुष्पायणकलो वि ।

ओराहियकायजोगीसु मिन्छादिद्वी ओर्घ ॥ ८१॥ दार्शियस्त्वणाम् अपिषं खुज्यदे । पञ्चनहिष्यस्वणाम् खुण जीवषं णस्पि, आराहिषजीमें विरुद्धे विहारचेउच्चिषपदाणमङ्क-पोहसभणनाणुक्छमाद्गे। तुरी एत्य आसाळवता कोरदे- सत्याणुसस्याण-वेदण-सत्याय-मारणीवयपरिणदेहि तिस व कालस मदपर्यणा कारद्र — वरवाव्यवस्थानम्बद्धानम्बद्धानमार्याणमार्यस्य विद्या । व मार्व्यः सम्बद्धामो पोसिदो । उदबादो णस्यि, दोष्ट्रं सहायपञ्चाणस्वस्यपविसेहा । बङ्गाणकाले

र्शका — इस सबके पृथक् भारम्म करमेका क्या फल है ! संकान का देश हैं के दूरा, पर्धोंक, सर्थानिकेवलीमें हैंड, क्लाशाहि चारों सम् त्रमाथान— त्या महत्त्र कता, प्रभावः, स्वयामक्वलात दृष्ट, क्यादाद कारा स्था बात कापयोगके कावित्रामाधी होते हैं, इत् बातका संदेगपाधी अनीकी बात करानेके लिए कोत कार्यवासक आवासमान कात के देख बातका सद्दार्थाया जनाका बान करात इस एक्का पूपक निर्माण किया गया है, और यही एकके पूपक निर्माणका पान करात

वेहा मुक्ति श्रीर इस एवड़ा यह थी। समीत यह समास हरहे श्रीय ! पेका करने पुर भी बोयत्र भाषयातुष्विति कायवोगी स्योगिकेयवोने वंह कायति पता कदन पर मा माम्रात-भभ्यमानुप्रवाचस काम्यामा स्वाम्भन्यता प्रदेशक्ष्या सम्बद्धाता मान्यत्व ज्ञान जाता है, जित पृषक्ष स्वनीमीवकी क्या उपयोगिता है? सम्माधान - पद कार दान नहां, प्रणाक, 'आप' पसा कहनपर सा प माक वेपारित पह होते हैं, और ये माम पह नहीं होते हैं, पेसा, विदोध नहीं माना जाता है। किन्त ववारत पर दाव दा भार प भागून पर गर्दा हात वे, पर्ता, विचार गहा जागा आता द सक्य पद संमय है जनहीं महत्त्वार माध्महत्त्वाहें साथ समान होती है, रिनामान ही जाना पद तमध ह अन्तरा महत्रवाद नावमहत्रवाद साम समान हाता है। हतनामान हा जाना ता है। हतालेच पुराष्ट्र राषका भारंभ काययोगी संयोगिकेयलीम बार्स प्रकारक समुद्राः

भारतात्र भारतपात्र करणक्य भारतपात्र है। औदाहिकक्राययोगी जीवोमें मिच्याहिष्टयोका स्वर्धनक्षेत्र जोपके समान सर्वः ता ८६ ॥ हरवाधिकत्तवकी प्रक्रपणामें तो भोषपना पाडिन होता है, किन्तु वर्षावाधिकतवकी

हरणायकत्ववर प्रकरणाम वा भाष्यवा पाठन हाता है, क्वां प्रथायकत्वका मार्मे भोषयमा परित नहीं होता है, क्वांकि, भीशरिककाययोगक निरूप करनेपर माम भाषपता घाटत नहा बाता है, वधाक, भादाहरूकायधानक भिट्ट करनाय प्रास्त्वरधान और वैक्षियिक वरोंके स्वरंतिका क्षेत्र भाउ कटे वीवह (क्रि) भाग नहीं सरवारमान आर प्राप्त प्राप्त रुप्यानका स्व माठ पट पाइक (हैं। याग नहा ताता है। इससे वहाँपर अदमक्तपणा की जाता है। स्वस्थानस्वस्थान, देशमा नहा गता ६। इसस यहापर अदमक्ष्यणा का जाता है। क्यस्थातक्यस्थान, पहना, क्याप हरणारितकाद्द्यारिणात औरारिककाययोगी विस्पादिये जीयोने तीनो है। कालोने विभागकभवनात्मात् भावात्मकन्ययाम् । स्वयाद्यः जायान ताना हा कालास हयतं किया है। यहांपर उपयाहण्य नहीं है, वर्षाकि, भीनारिककाययोग सीर क्षता १६०० ६। पदापर वधनाइपद् गढा का वचनाकः गादारक्रकावयाः बार इ. इत दोनोक्षा सहातवस्थानस्थानस्था विरोध दे । यतीमानकाससे वीकेविकण्डपारीमा -चेउन्त्रियपिरिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंख्यादिमागो, माणुसखेतादो असंबन्धाको स्मित्री सीदाणागदेषु विण्डं लोगाणं संखेजनिदमागो, दोलोगेहिंनो असंबन्धाको, नाक्कार चेउन्त्रियपकोसणस्स पाघण्णविवस्त्वाणः । विहारपिरिणदेहि औरालियकायमोगिनकारिकी चडुमाणकाले विण्डं लोगाणमसंखेजनिदमागो, निरियलोगस्स संखेजनिदमागो, अङ्गास्त्रको असंखेजन्याणो पोसिदो । वीदाणागदकालेखु निण्डं लोगाणमसंखेजनिदमागो, विविक्तांत्रका संखेजनिदमागो, अङ्गास्त्रनादो असंखेजनागुणो पोसिदो ।

सासणसम्मादिङ्ठीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, होगसः असंकेजीः भागो ॥ ८२ ॥

एदस्स वहमाणकालसंबधिमुचस्स खेताणित्रोगदारे ओरालियकायजीपिमानः सम्बन्धेव परुवणा कादण्या ।

सत्त चोदसभागा वा देसूणा ॥ ८३ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउब्वियपरिणदेहि साम्बनम

औदारिककाययोगी सामादनसम्यग्दृष्टि जीवाने किवना धेन स्पर्ध किवा है।

होकका असंस्थातवा माग स्पर्ध किया है ॥ ८२॥ इस पर्तमानकालसम्बन्धी स्वत्रकी क्षेत्रातुषोगद्वारमें कहे गये औरारिकार्योग सासार्वनसम्बन्धीयाँकी क्षेत्रकरणा करनेवाठे स्वके समान स्पर्धनमञ्जूषा करना नार्यः

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा इछ कम सात है बैर्रा माग स्पर्छ किये हैं॥ ८३॥

.....र ॥ ०५ ॥ इपस्थानसस्यान, विद्वारयस्यस्थान, वेदना, कपाय मीर वैक्रिवेड्स्पर्तर्श

18, 8, c4, 7 दिङ्गीहि निष्टं लोगायमसस्त्रेज्जिदिमागो, निरियलोगस्स संदोज्जिदमागो, माणुसरोत्ताहै षोसणाणुगमे बापजोगिकोसणपरूकणं प्रसार पान प्राप्तिहै। । उन्हादी णात्रि । मारणीतियवरिवहेहि सम चोहसमामा देखणा पातिदा । प्रेण जणा ? इमियरभारपुदवीए उचितमहत्त्वेण । सम्मामिन्छादिद्टीहि केवडियं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंबेन्जदि-भागो ॥ ८४ ॥ रद्दसः द्वाचरसः परुवणः स्तेचाचिश्रेभादारोसितयसःपजोगासम्मामिन्छादिद्विस्वर-परूवणाल् तुस्ता । सत्याणसत्याण-विद्वास्वदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिगदेहि औरा-्वत्रवानाम् व्यवस्थात् । अस्तिवस्यानां वोतिहो । मारणीत्व-वन्तराः पाट्य-असंजदसम्मादिद्वीहि संजदासंजदेहि केवडियं क्षेत्रं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥ सासाइनसाचारियाने सामान्यतोक भारी तीन लोकोका असंक्यातयां भाग, तिर्याजीकका साधादमात्रवाच्याः प्रचान सामान्यताः म्याद ताम त्यामानः म्याप्याच्या भागः स्वयंवाकाः संब्वातयां भागः भीतः भातुपरित्रते भतंत्वातगुणाः सेत्रः स्वयं किया है। इन शीवीके उपयादः रवयावया वात मार वाद्यवस्वया माराव्यास्त्रमा स्व प्रवस्ताच्या व रश्य साथाम अप्याद्य पद मही होता है। सारमानिक कम्प्रदेरियत कक्क सीवीने कुछ कम सात करे चीहर (गुरू) चैत्रा — यहांपर कुछ कमले किनना कम क्षेत्र समझना चाहिए !

्वाता है। मारणानिकरक्षरियात कक जीवीने हुए कम सात करे बीहर (क् साम स्पूर्ण किये हैं। साम स्पूर्ण कम सेव समस्ता चाहिए! औदिरिकरायपीगी सम्प्रीमध्यारिष्ट जीवीने कितना धेन स्पूर्ण किया है। के सेवहा वर्णन करणाने एक साम प्राप्त किया है। ८४॥ के सेवहा वर्णन करणाने एक सम्प्राप्त पर्णन औदिरिकरायपीगी सम्प्रीमध्याहिए। के सेवहा वर्णन करणाने एक सम्प्राप्त किया है। ८४॥ के सेवहा वर्णन करणाने एक सम्प्राप्त किया है। ८४॥ के सेवहा वर्णन करणाने एक सम्प्राप्त वर्णन औदिरिकरायपीगी सम्प्रीमध्याहिए। के सेवहा वर्णन करणाने एक सम्प्राप्त वर्णन औदिरिकरायपीगी सम्प्रीमध्याहिए। को स्पूर्ण के स्पूर्ण के सम्प्राप्त किया है। स्पूर्ण के स्पूर्ण के स्पूर्ण के स्पूर्ण किया स्पूर्ण के स्पूर्ण किया स्पूर्ण के स्

सत्याणसंत्थाण-विहारचदिसत्याण-वेदण-ऋसाय-चेउिक चदसम्मादिहीहि संजदासंजदेहि चदुण्हं स्रोगाणमसंसेन्जदिमागे गुणो वड्डमाणद्वाए फोसिदो ।

छ चोहसभागा वा देखुणा ॥ ८६ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेदण-ऋसाय-वेजिवयप दिहीहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेजजदिभागो, विरियलो अङ्घाइज्जादो असंसेज्ज्ञगुणो । एसो 'वा'सद्द्यचिदस्यो । मार परिणदेहि छ चोइसमामा देखणा पोसिदा, अन्छदकपादा उवरि संजदासंजदाणमुनवादामानादो । पमत्तसंजदप्पहुडि जान सजोगिकेनलीहि केनडियं

लोगस्स असंखेज्जदिमागो ॥ ८७॥ पदेसिमदृष्टं गुणहाणाणं तिण्णि वि काले अस्सिद्ण परुवणं

स्वस्थानस्वस्थान, विदारवस्त्वस्थान, वेदना, क्याय, वैत्रिविक भी समुद्भातपदचरिणत असंयतसम्यग्हिः और संयतासंयत जायाने सामान्यः ष्टोंकोंका मसंक्यातयां माग, और मनुष्यद्योक्तसे ससंक्यातगुणा क्षेत्र वर्तमा किया है। औदारिककाययोगी उक्त दोनों गुणस्यानवर्ती जीवोंने अतीत औ

फालकी अपेक्षा इन्छ कम छह यटे चौदह माग स्पर्ध किये हैं ॥ ८६ ॥ स्वस्थानस्यस्थान्, विहारयन्सस्थान्, वेदना, क्याय और वैक्रिविकसमुदात परिचत भौशारिककाययोगी असंयतसम्यग्टिष्टि भीर संयतासंयतीने सामाग्यतीक होहाँ हा सर्वस्थातयां माग, तियासोक्षका संस्थातयां माग और अवादीयान माग होत्र स्पर्ध किया है। यह वा ' राज्यसे स्थित भर्ष है। मारणानिकसमुवान भी परपारियत उक्त झीयोंने कुछ कम छह बटे चीहर (१४) माग स्वर्ध हिन्दे हैं।

मञ्जूनकरासे क्रार संसंयनसम्प्रवृष्टि भीर संयनासंयन जीयोंका उपपाद नहीं होग प्रमुचमंपत् गुणस्यानमे लेक्टर संयोगिकेवली भीदास्त्रिकापयोगी चीजी 🕒 🛴

षोसणाणम् कारजोगिकोसणपरूपण् पोत्तमार्णं मुलोपपमचादिपरुवणाय समाना परुवणा काद्वा । णवरि सजीगिकेवलिन्दि चाड-पदर-सोगपूरणाणि णारिय'। तं कर्ष णज्यदे १ सजागिकेवलीहि लोगस्स असंस्थेज्जा मागा सन्वलोगो वा फोसिदी वि सुचेण अणिरिद्वचारी ।

ञोराहियमिस्सकायजोगीसु मिन्छादिद्वी ओपं ॥ ८८ ॥

सत्याणसरयाण-चेदण-कसाय-मार्ग्णतिय जनवादपरिणदेहि ओसालियमिस्सकाय-जीमिनिक्यदिद्वीदि विमु वि कालेमु जैम सम्बलोगी फोसिदी, वेण ओपचमेदेखि ण विकासदे । विद्यास्विदेसत्याण-वैज्ञवित्रयददाणमेत्यामाता शोपर्च छुज्बदे ? होंदु शाम

क्षेत्र भीर रपरांत मनुयोगद्वारके मूलोप प्रमचादि गुणस्थानोदी प्रकरणाके समान प्रकपण करता चाहिए। विशेष बात यह दे कि संयोगिकेवली गुणस्थानमें कपाट, मतर और छोडपूरणसमुद्रात नहीं होते हैं, (क्योंकि, भीशारिककारयोगकी अवस्याम केवछ एक दंहसमुदात ही होता है।)

र्धेता-पद देसे जानते हैं कि भौदारिक राययोगी संयोगिकेवलों के कराट माहि तीन समदात नहीं होते हैं! 3900 वस पात्र समापान — 'यह बात संयोगिकैपस्थिति स्रोकका मसंबंधात बहुमाग और सर्वेक्षोक

रपर्या हिया है ' इस एक्से निर्देष्ट नहीं की गई है। (अतः हम जानते हैं कि वीदारिक-काषयोगी संवोगिकिनमें कपाटाहि तीन समुद्धात नहीं दोते हैं।) विज्ञार्य - बाहारिककायरामकी अवस्थाने केवल एक पंचसमुदात ही होता है। कपारसमुदात बादि नहीं। इसका कारण यह है कि कपारसमुदातमें औरारिकामिथकाय-

प्रेम, श्रीर प्रतर तथा छोकपुरणसमुद्धातमें सामेणकायरोग होता है, ऐसा नियम है। साहिए वहां, भौदारिक काययोगकी अकपना करते समय संयोगिकेयलोंने कपाट, अतर और छोक-वीदारिकमिधकापयोगिपोमें मिध्यादृष्टि जीबोंका स्पर्धनक्षेत्र जोपके समान र्वलोक है ॥ ८८ ॥

वस्तानसस्यान, वेदना, क्याव, मारणान्तिकसमुद्रात और उपपादपक्ष्यरिणत औहा-

विभवायरोगी विष्णादि श्रीवान तीनों है। कालाम सुंकि नवंलीह रास्ट दिया है। लिए भोषपना इन पशावाले जीवाले विरोधको मात नहीं होता है।

वायाना । रीहा — बीदारिकामधवाययोगी जोबोमें विहारयन्त्रस्थान और पैक्रियिकासुहात, स्न का जनाव कार्या कार्या कार्यामा अधिक विद्वारव संस्थान व्या केर्य वैकियकसम्

र बांतातं दृष्ट्वं क्वास्त्रातंत्रं य दश्य विश्वाद्वा पदरे य कीमूरी कम्बेड क हीदि कादस्त्री स

₹₹8:1

छ रखंडांगमे जीवडांगं

एदेसि दोण्हं वि पदाणमभावो, तथावि पदसंखावित्रक्खामावा विज्ञामाणक ओषपदकोसणेण तुछत्तमत्थि वि ओषत्तं ण विरुज्यदे ।

सासणसम्माइडि असंजदसम्माइडि सजोगिकेवलीहि के फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८९॥

प्देसि विष्टुं गुण्हाणाणं ग्रहमाणपरुवणा खेचमंगो। सत्याणसत्याणने उन्त्रादपरिणद्ञीरालियोम्सससासणसम्मादिङ्गीहे अदीदकाले तिण्हं लोगाण

मार्गा, तिरियलोगस्स संखेजनिर्दमार्गा, अङ्गाइजनादो असंखेजनगुणो । कपं ति संसेन्जदिमाग्तं १ देव णेरहयमणुर्म् तिरिक्तसामणसम्मादिहीहि तिरिक्तमणुर्म सरीर यत्त्व ओरालियमिस्सकायजोगेण सह सामणगुणमुञ्जदेवेहि अरीदकाले स बाह्छरज्जुपदरं मजिज्ञ्छसमुद्दवज्ञं सन्त्रं जेण कृतिज्ञदि तेण तिरियहोगस्य सह

मागो ति वयणं शुक्रदे । एत्य विहार-वेउन्विय-मारणंतिय-पदाणि णात्य, एदेसिनी मिस्सकायज्ञीमण सहअवद्वाणिनिरीहा । उत्रवादी पुण अस्यि, सामणगुणेग सह अ दान, इन दो वहाँका समाव मले हाँ रहा आवे, तथापि वहाँकी संक्याकी विवसान क दनमें विषमान पद्दोंके स्पर्धानको भोषपदके स्पर्धानके साथ तुस्या सक्याका विश्वणाण विष विरोधको मान नहीं होता है। जारारिकामिश्रकाययोगी सासारनसम्यग्दृष्टि, असंयतमम्यग्दृष्टि और संगेरि हेनती बीरोने किनना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यावर्ग माग सर्वाहि १ । ७० ॥ ₹ 11 co. 11

रन तीनों है। युणस्यानों हे स्पर्शनकी यनंभानकारिक प्रवरणा क्षेत्रके समावे। स्वस्थानस्थानः, वेदना, कपायममुद्धानः भीर उपपानसञ्जिक प्रस्पणा शरकः १०००० सामानन्त्रसम्भानः, वेदना, कपायममुद्धानः भीर उपपादपद्धानः भीराधिन्नप्रधाराणे सामाइनसम्यादि जीवीन अनेन हाल्ये सामाग्यलोक भारि नीन संबंधिक प्रवासकार्यस्था है। स्वास्त्राम्यस्था साम, निर्वाचीक्या संभागकात्रम् सामाग्याचेकः साहि तीन साकाका मन साम, निर्वाचीक्या संक्यानयां भाग भीर सङ्गिद्वीगम् असेनयानगुणा शयः शर्मा दिणारी र्वेद्या - निर्वेग्टोहरू। संन्यातयां भाग केने कहा ? ममायान — मुंकि देव, नारको, मनुष्य भीर तिर्थय मामाहनभावारीर हैर्सि ्ययामान्य । निर्वेष भीर मानुश्वोमें उत्पन्न होकः शारिकाय सामाहनमान्यस्य पावक साम्र साम्यक्तान्यस्य मानुश्वोमें उत्पन्न होकः शारिका महण करके भीतासामध्यः पायक साथ मासादनेवालागात्रका धारण करते हुए अनीतकालार्थ संवद्ध समुद्रशाकी सक्यत सत्तर करतात्रका धारण करते हुए अनीतकालार्थ संवद समुद्रशाकी प्रश्चा करते हुए अनीवहारमं भारत करते हुए अनीवहारमं हीयर सप्रक्षण स्टब्स सम्बद्धण सामुण राजुनवहरूप क्षेत्रका स्पर्ध हिना है, स्वास्त्र अपरे इश सक्यालया माग यह वसन गुन्तियुक्त है।

पदा पर विद्वार प्रकार है। दे श्री पर विद्वार की स्थापन और मारणांश्वर पर वह होते हैं और से श्री सारणांश्वर पर वह से हैं होते है, क्वाह, संसादनामध्यानह साथ व्यवधानका विश्वपा है। किन् उद्यान

उदाण प्रवासी स्टम्ममण् उपयार् वर्तमा । मिन्छादिशीणं पुण मार्स्तिय उपयाद्वर्याण स्टम्मि, अर्थना औरालियमिरियं (दियअवज्ञावसानी सहाये पाडाणे च वक्षमणोवक्षमणं करेमाणो स्टम्मि व वक्षमणोवक्षमणं करेमाणो स्टम्मि व । मरवाणतर्याण-वर्त्यण कराय-उववादवरिणदेहि असंवदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि अर्थावदसम्मादिहीहि स्टिस्तानो, अद्दार्व्याद्व अर्थावज्ञायो कोसिट्र। कर्प विस्थिताम्स्र संग्रेजिद्मानार्थ । ए पूर्व विस्थिताम्स्र संग्रेजिद्मानार्थ । ए पूर्व विद्याप्त संग्रेजिद्मानार्थ है । ए पूर्व विद्याप्त संग्रेजिद्मानार्थ है । प्रत्य वह-मार्थिहि अर्थावक्षमसम्प वह-मार्थिहि अर्थावक्षमसम्प वह-मार्थिहि अर्थावक्षम् वीदिक्षमान्यक्षम् संग्रेजिदिसीम्पराव्यवस्य वह-मार्थिहि अर्थावक्षम् वीदिक्षमान्यक्षम् संग्रेजिदिसीम्पराव्यवस्य । व्यवस्थावहि स्वीपिक्ष्मिस्त संग्रेजिदिसीम्पराव्यवस्य । वस्य स्वयवस्थावस्य अर्थावज्ञादिसान्य, विद्याप्त संग्रेजिदिसीम्पराव्यवस्य स्वयं । स्वयं स्वयं स्वयं क्षाव्यवस्य स्वयं । स्वयं स्वयं स्वयं क्षाव्यवस्य । स्वयं स्वयं वाद्य स्वयं स्व

उपवाद पाया जाता है। विश्वादाष्टि श्रीयोके भी मारणानिक भीर उपयाद्वद पाये जाते हैं, क्यांकि, भागस्विक्य भीदारिक्रमियायायायी प्रेक्षीट्रम्य अपयांत्व सांहि, स्वस्थान भीर परस्थान मेर- परस्थानमें भागकमण भीर उपकाय करती हुई, अयां जाती जाती; यां जाती है। स्वस्थान स्वस्थान, प्रेक्षात भीदारिक्रमियकाययोगी असंवत-स्वस्थान प्रेक्षात क्यांत्व क्यांत्य क्यांत्व क्यांत्य क्यांत

प्रमापान—गर्दा, क्योंकि, पूर्वमें तिर्वेच और मनुष्योंमें भानुको बोवकर पीछे वस्त्रवासको महत्व कर, और वहाँनमोहनीयका स्वत करके संधी हुई भानुके वसले मोगामूनिकी, रचनायोंक मर्सक्यात द्वीपोम वत्यत हुए, हथा, भवन्दारिके मृत्य करनेके मध्या सामग्री वर्तमान, देव औदारिकमिक्सवर्यगांगी मार्सवस्त्रवस्थित होयोंके द्वारा करीतकारामें क्यों

/ किया मया क्षेत्र तिर्यग्लेकका संख्यातया भाग पाया जाता है।

स्पाटसमुद्धारको प्राप्त, भीशारिकामध्यमामं वर्तमान स्पोगिकेयिद्धांमें समाप्यद्येत सारि तीन टोक्नेंडम संस्थायतां आग, तियंग्डोक्डम संव्यातवां आग, और ' सम्राद्धांचेत सर्वस्थातगुणा क्षेत्र स्वर्ध किया है। सर्ततमाद्रको क्षेत्रसां तियंग्डोक्टरें। संव्यातगुणा क्षेत्र स्पर्त किया है। यहां पर क्यादसमुद्धातगर क्षेत्रको क्षेत्रसां स्पर्वान-रेक्टराक्तयो जगमत्रके उपायतका विधान जान करके कहना चाहिए।(इसके लिए-देको क्षेत्रसम्बद्धा पर्दा (क्षेत्रस्था विधान जान करके कहना चाहिए।(इसके लिए-

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिद्वीहि केवडियं सेतं पोसिं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९० ॥

एदं सुत्तं जेण बट्टमाणकाले पडिचद्वं तेणेदस्स वक्खाणे कीरमाणे जवा हेक्ती ओगहारे वेउच्यियकायजोगिमिच्छाइड्डिप्पहुडि-बद्धसुत्तस्स वक्लाणं करं, तब **ए**न

विंकायब्वं । अट्ट तेरह चोदसभागा वा देखूणा ॥ ९१ ॥

सत्याणसत्थाणपरिणद-वेउव्यियमिच्छादिट्टीहि तिण्हं होगाणमसंखेजबंदिगा तिरियलोगस्य संखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहास्त्रिक्त वेदण-कसाय-वेजिन्यपरिणदेहि अह चोहसमाना फोसिदा । उनवादो गरिय । मार्नाम परिणदेहि तेरह चोइसमागा फोसिदा, हेट्टा छ, उपरि सत्त रज्जू । घणलोगमेगहनस मैं वेरसमागूण-सत्तावीसरूवेहि खंडिदएगखंडं फोसंति ति युत्तं होह ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है।

लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥ ९० ॥ चृंकि यह सूत्र यतमानकालसे सम्बद है, इसलिए इसका व्याच्यान करने पर मकारसे क्षेत्रात्रयोगद्धारमें विकिथिककाययोगी मिध्याद्यष्टि आर्दिक जीयोसे प्रतिबद्ध सूच

व्याक्यान किया है, उसी प्रकारसे यहां पर भी करना चाहिए। वैक्रियिककापयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेसा बुछ का अ षटे चौदह, और कुछ कम तेरह षटे चौदह माग स्पर्ध किये है ॥ ९१ ॥ स्यस्थानस्यस्थानपद्परिणतः धैकियिककाययोगीः मिष्पाद्यप्टि जीयाँने सामान्त्रः

सादि तीन छोत्रींका असंस्थातयां भाग, तियंग्लोकका संख्यातयां भाग, शीर मनुष्टार्थ असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विद्वारयत्स्यस्थान, वेदना, क्याप, मीर क्षिति समुदातगद्परिणत उस्त ज्ञायाने कुछ इस आउ पटे चीवृह (र्प) मार्ग सर्ग हिंदी यहां पर उपनाइपर नहीं होता है, (क्योंकि, मिध्रयोग और कार्यज्ञानविषक क्षित्र कर योगों साथ उपपादपद्का सहानयस्थानलक्षण विरोध है)। मारणाशिकार्युक्त परिचन बक जीवीन (कुछ कम) तरह बटे बीदह ( रहें) माग स्वर्धा हिये हैं, जीति क त्रलेख मीज एट राजु और उत्तर सात राजु जानना चारिए। धनाशास्त्रीहरी हो सात बटे नेज एट राजु और उत्तर सात राजु जानना चारिए। धनाशास्त्रीहरी हो हो

भाट बट तेरह (र्र) मागले कम सचारण (२६र्र) क्योंते संदित (हिन्द) ले पर यह क्षेत्र प्रमण्ड पर यह संह प्रमाण केवहा स्पर्ध करते हैं, पेता मर्थ कहा गया समाना बाहिर।

सासणसम्मादिङ्गी ओषं ॥ ९२ ॥

पदस्स बङ्गमाणपरुवाम स्वेषमंगो । सत्थाणसत्थाणपरिणद्वेडव्वियकायकोगि-सासणसम्मादिद्वीदि विष्टं स्रोपाणमधरोजादिभागो, तिरिपरोगस्स संखेळादिभागो, अङ्काद-ज्वादो असंदेडव्वगुणो । यत्य विरियतोषस्य संखेज्वदिभागपुरुवणं पुण्यं व वषस्य । विहासपदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेडव्वियदिणदेहि अङ्क चोहसभागा फोसिदा । स्ववादो णतिय । मारणवियपरिणदेहि पारह चोहसभागा फोसिदा । तेणोधमिदि ज्वादे ।

सम्मामिच्छादिही असंजदसम्मादिही ओषं ॥ ९३ ॥

जेणेदेसि बदमाणस्टबणा खेचायम्हयणाए तुत्सा, तेणोपं द्वोदि अदीद्वम्हयणा वि फोसणोपेण तुन्सा। सं जद्दा- सत्याणसत्याणपरिणदेहि तिण्हं स्रोगाणमसंखेज्जदिमागो, तिरियस्रोगस्स संखेज्जदिमागो, अद्वाद्यज्ञादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विद्यायदिसत्याण-वेदण-कसाय-येटजिय-सारणंतियपरिणदेहि अद्व चोद्दसमागा देशणा फोसिदा। असंजद-

वैक्षिपिककाययोगी साम्रादनसम्पन्दिष्ट जीवीका स्पर्शनक्षेत्र ओपस्पर्शनके समान है ॥ ९२ ॥

इस सूचकी पर्तमान रुप्तानमरूपणा होन्ममरूपणाहे समान है। स्वरधानस्वस्थान-पर्पारणन विविविकत्तायोगी सासाइनसम्बद्धारी जीवोने सामाप्यकोक भादि तीत होक्षेत्रा मर्थनव्यातमां माग, तिर्थ-लोकक संक्यातयां भाग, और अव्हार्य,शेल मर्थनव्यातगुणा होन स्पर्य क्रिया है। यहां पर तिर्थ-लोकक संक्यातयं भागकी प्रकरणा पूर्वके समान ही करना चाहिए। विद्वारस्वयस्थान, वेदना, कपाय और वैविविकतगुद्धान, इन प्रदेशि परिणत विकिविकत्ताययोगी आयोंने कुछ कम भाट यहे चीवह (ई) भाग स्पर्ध किये हैं। स्पर्णत प्रवाहपुर नहीं होता है। मारणानिकत्तमुद्धातपुरक्षे परिलत का जीवोने स्पर्णत कर विविविकताय है। (११) भाग स्पर्ध क्रिये हैं। इसलिय सुवसे दिया गया 'भोध यह पर युक्तिसनत है।

वैक्रिंपिककाययोगी सम्पिनध्यादृष्टि और असंग्वतसम्पन्दृष्टि जीवोंका स्पर्धन ओक्के समान है ॥ ९३ ॥

पूंचि दत दोनों गुणस्थानपतां जीवोंका वर्तमानकालिक स्पर्धनमक्यणा क्षेत्रसम्बन्धिक स्पर्धनमक्यणा क्षेत्रसम्बन्धिक स्पर्धनमक्यणा क्षेत्रसम्बन्धिक स्पर्धनमक्यणा मो भोगस्त् हार होती है। वर्तामकालिक स्पर्धनमक्यणा मो भोगस्पर्धनमक्यणाने समान है। यह स्व मकारते हैं— स्परामक्ष्यसम्बन्धनिक मोनिक स्वाचिक स्पर्धनम्भ स्वरक्षानपर्धाने स्वाचानपत्नीक क्षानि स्वाचानपत्नीक काहि सीन लेकिन में क्ष्यस्वयान्य माग, विस्तिक काहि सीन लेकिन मानिक स्वाचानपत्नीक काहि सीन लेकिन मानिक स्वाचानपत्नीक काहि सीन लेकिन काहि सीन लेकिन काहि सीन लेकिन काहि सीन काहि सीन

सम्मादिष्टिस्स उववादो णत्यि । सम्मामिच्छादिष्टिस्स भारणतिय-उववादो पति। तेन

्वि ओघत्तमेदेसि जुजदे । वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिहि सासणसमादिहि <sup>अहं</sup> पोसिदं, छोगसा असंवेजि जुदुसम्मादिद्वीहि केवडियं सेत्तं

भागो ॥ ९४ ॥ एदस्स सुचस्स वहमाणपरूवणा खेचमंगो । सत्याणसःयाण-वेदणकमाण सार

ःपरिणद्वेउन्वियमिस्सकायजोगिमिच्छादिद्वीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमुमसेउबिदको ्विरियलोगस्स संखेन्जदिमागो, अङ्गाइन्जादो असंखेन्जगुणो फोसिदो । विहास्वरिन्प ्येउन्यिय-मारणंतिपपदाणि णत्यि । सासणधम्मादिष्टिस्स वि एवं चेत्र वचन्त्रं, बतार -बोदिसियदेवाणमसंखेनावासेमु विरियलोगस्स संखेजदिमागमोहृहिय हिंदे <sub>सानग</sub> मुप्पिदंसणादो । असंजदसम्माइद्वीहि सत्याणसत्याण वेदण-कसाय उदगद्वादर्गात ंघउण्डं लोगाणमसंखेजादिमागो, अहुाइज्जादो असंखेजगुणो फोसिदो, बाण्वेतर जीति

िंपिकिषिककाययोगी असंवतसम्यन्दिष्टि जीवोंके उपपादपद नहीं होता है। ं सम्योगिष्यारिष्ट श्रीवीके मारणामितकसमुदात और उपपाद, ये दे। पद नहीं होते हैं। हिं "बहां पर भी भोषपना पन जाता है।

वैक्रियिकमिवकाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यादृष्टि जीर प्रश -सम्यारिष्ट वीरोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है श लोकका असंख्याता मान हो ्रक्रिया है ॥ ९४ ॥

रस मुपदी यर्तमानकालिक स्वरीनयक्रपणा क्षेत्रके समान है। स्वस्यानसारी चेर्ना, क्याय और उपपादपर्यरिणत चेर्नियकमिश्रकाययामि मिध्याहरि जीवनि कर्म बाटम सामाग्यक्षेत्र मादि तीन क्षेत्रोंका श्रसंस्थातयां माग, निर्वेग्लोहन संशानी है। भीर समादियसे ससंस्थातगुणा श्रेत्र स्थरी किया है । येत्रियिकमिश्रहायोगी गृही विदारवस्वास्त्रम् भीकविक और मारणालिकसमुदात, वे पद नहीं होते हैं। सामान न्दिर गुणस्यानकी मी स्परीनवरूपणा इसी प्रकारते कहता वादिए। विपाती हुई के जिल्हा आपडो स्थान करके स्थित यात्रस्थानर श्रीर ज्योतिक देयाँके ससंस्थान श्रीवाणी है है

इन्स्तानकार्यात प्राप्त पानध्यानर आंद ज्यातिक नेवार ससंस्थान साथानि है। इन्स्यानस्थाना प्रेर्ता, बदा है। स्वयनकार्यात प्रेर्ता, बदा है। स्वयनकार्यात प्रेर्ता, बदा है। स्वयनकार्यात प्रमुख्यात है। पार्वपर्वासिक विकास कार्यामा हो। स्वस्थानस्वस्थान, वेहता, बदा प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्व ः क्रांच्येचा सर्वच्यानये प्राप्त सीट सर्वार्वियोगे सार्वच्यात्राणा हेन्द्र रुपर्य दिया है।

भवणवासिएम् एदेसिमुबबादामावाः सम्मादिद्विउववादपात्रीगमसोधम्मादिउवरिमविमाणाणं विरियलोगस्स असंविद्यदिमागे चेव अवद्गाणादाः।

आहारकायजोगि आहारिमस्सकायजोगीस पमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, टोगस्स असंखेज्जिदभागो ॥ ९५ ॥

पदस्य सुपस्य वद्रमाणपस्यणा खेवमंगा । सत्याणस्याण-विदायविस्तयाण-वेदण-कसायपिणदेहि आहारकायजागिपपमधंजेदिह-शीदे काले चद्रण्डं लोगाणमसंखेडजादि-मागो, माणुसलेचस्य संखेळादिमाणे कंसिस्ट्रां । उवचाद वेडन्विमं णालिय । मारणिवय-परिणदेहि चदुग्डं लोगाणमसंखेजदिमाणे, माणुसलेचारो असंखेजज्ञुणो । आहारिमस्य-कारजोगिपममधंजेदिह सर्याण-वेदण-कशायपिणदेहि चुर्ण्डं लोगाणमसंखेजजादिमाणो, माणुसखेचस्स. संखेजादिमाणे फीसिद्रां ।

> कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिद्वी ओघं ॥ ९६ ॥ सत्याणसत्याण वेदण कसाय उववादपरिणदेहि मिच्छादिद्वीदि विस वि कालेस

पानव्यन्तर, स्थोतिष्कः भीर मयनवासी देवीम दनका, अधीत् वैकियक्तिश्रकाययोगी श्रीयोक्त, व्यपणदः नहीं होता है। सम्यग्हारे औयों हे उपवादके प्रायोग्य सौधमीदि, उपरिम विमानौंहा तिर्पालीक्षके असंस्थातयें पाणमें ही अयस्यान देखा जाता है।

आहारकराययोगी और आहारकभिश्रकाययोगी जीवोंने प्रमचसंपरोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंख्यावनां माग स्पर्ध किया है ॥ ९५ ॥

इस स्वर्का पर्वमानकालिक स्वर्गनम्बरुणा क्षेत्रम्मणाके समान है। स्वर्मान-स्वर्मान, विदारपरवस्यान, वेदान भीर क्यायसमूद्रानविष्णत माद्रास्क्राययोगि मसन-संयत आयोने मतीत्रकालमें सामान्यलेक आदि सार लेकिका मत्रेयरावती मान, सेर मतुष्य-श्लेक्चा संस्थाययां माम स्वर्ध क्या है। माद्रास्क्राययोगियांके उपपाद भीर विविधिकपद नहीं स्तेत हैं। मारणानिकस्वयिक्त माद्रास्क्राययोगी गीयोने सामान्यलेक मादि सार खोखान मत्तेष्मात्रयां भाग शीर मानुष्यकेस नेत्रकाययोगी गीयोने सामान्यलेक स्वर्ध किया है। सीर क्यायसमुद्धान, इन व्यंसे परिचत साह्यस्वतिमहात्ययोगी मत्त्रसंयतीने सामान्यलेक साहि कार संबंध सर्वायां भाग भीर मानुष्यक्षेत्रका संवयात्रमां मान स्वर्ध किया है।

कार्मणकाषयोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंकी स्पर्शनप्रस्पणा औषके समान है।। ९६ ।।

हमस्थानस्परधान, वेदमाः कवाय और उपपादपदपरिणत कार्मणशाययोगी मिस्या-कार्म्व जीवोने तीनोदी कार्टोमें वृद्धि सर्पटांग स्वर्ध किया है, इसस्पित सुक्ते 'ओप ' जेण सच्यलोगो फोमिटो, तेण गुत्ते ओपमिटि गुत्तं । एत्य विद्यासिक्याननेत्रीया

मार्गितियपदाणि गरिच । सासणसम्मादिहीहि केवडियं सेतं फोसिदं, छोगस असंबे<sup>बिर</sup>

भागो ॥ ९७ ॥ ·एदस्स सुत्तस्स बहमाणपरुवणा खेत्तर्मगा ।

एक्कारह चोइसभागा देसुणा ॥ ९८ ॥ एरय उपवादवदिरित्तमसपदाणि णरिय, कम्मइयकायजोगविवक्सारो । उत्तर बहुमाणा साम्रणा हेट्टा पंच, उपरि छ रज्जुओ क्रमंति वि एक्कारह चोहमुमाण केलि? खेचं होदि।

असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं स्रेतं फोसिदं, लोगसा <sup>असंह</sup> ज्जदिभागो II **९**९ II एदस्स परवणा खेचमंगो, बहुमाणकालपडिबद्धचादो ।

छ चोद्दसभागा देसूणा ॥ १०० ॥

एड बटे चीदह सात स्पर्श किये हैं ।। १००॥

पद कहा है । यहां, अर्थात् कामणकाययोगी मिच्यादृष्टियोंके, विहारयन्स्यस्यान, के मारणान्तिकसमुदात, इतने पर नहीं होते हैं।

कार्भणकाययोगी सासादनसम्परदृष्टियाने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है शिक्ष असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है।। ९०॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है। कार्मणकाययोगी सासादनसम्पग्टिए जीवोंने तीनों कालोंकी अध्या इत इ ग्यारह बटे चौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ ९८ ॥

यहांपर उपवादपदको छोड़कर द्रीप पद नहीं हैं, क्योंकि, कामंगकाययोगकी विवर्ष की गई है। उपपाद्यदमें धर्तमान सालादनसम्बन्धि जीव मेठके मूलमागत नीचे वांव धी स्ति अप अप्युत्तक्ष्मतक छह रातु ममाण क्षेत्रका स्पर्धान करते हैं, इसिटए ग्यार्ट हैं चीदह ( रेंग्रे ) माग प्रमाण स्पर्श किया हुआ क्षेत्र हो जाता है। कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दिष्ट जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। होहर्र

असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है।। ९९ ॥ पर्तमातकालसे प्रतिसंवद होनेसे इस स्थकी स्पर्धनप्रकृषणा क्षेत्रप्रकृषणा है समार्थ सामणकाययोगी असंयत्सम्यग्दष्टि जीवोंने शीनों कालोंकी अपेशास इंड इर

दान दि उत्राह्मद्देशके थेर । विशिष्ताधीनहत्त्वमादिनो केन्द्रशिक राज्यकी द्रायतम् हे वे कृत्यम्बास्यक् कार्यमानम् छार । द्वा कृत्व व्यान्ते वस्त्रे व काश्चे, देशस्त्रेयद्वास्त्रीति वित्रिशेषुवास्थामा ।

सनोगिर नहीहि हेनडियं सेत कोतिरं, छोगसा आसंग्ना भागा सन्बहींगी वा ॥ रहर ॥

रसाराहेर हो होताह असीरका यादा कोतिस योगरेशिशिसासकर्व andiagramity spally university willy attend to tolling. 1944.91

et a strike tette 1

देराजनरेण हारिनेर-पुरिसनेरएस भिन्जादिहीहि वेत्रिय रोस धीतिः, लीगसा खतंशीस्वादिभागो ॥ १०२ ॥ द्रशत क्षेत्रात देववा स्वत्राती) बद्दातकात्रविद्वाती ।

वेशनको त्रता कर शत्र जाकरके अलग होते हैं, संगठिए स्तीनताम्यवानि और चून of the same style type 1991 by a big big the title and definition we and the second style the same second s mi g' atib' attel negatitistelle afging batit attil gini g's organish the system of the part of the part of the state of the state of the same of the s हिल्ला बहुतात श्रीर सर्थित स्तरी किया है ॥ रेटर ॥

Butufittion till galbeit they begebell ageite sait ibe & करोडे, होडकरन स्थित बातकारोंने हेवती संगानकी मामकात बहाराम क्या किय क

att of f the timitaly strip tall for the adventioned and antico string to another and anticology and and anticology and another another and another and another another and another another and another another and another another another another another another another another and another an वहां करत है। आकृष्टामागुरा गम संदक्षक रुपरा क्या का प्यास्त इत्तप्रकार बीगमार्गला समात हुई।

हेरवाह्याचे अन्तरास्त्र क्षाप्ती और बहरपूरी श्रीसूर्व विस्पादिक्षीने ga tan yan gi tijeet Angealut mil tan bel gi feet il ब द्वायकात्रा) सावस द्वापुष्टे कार्यत देस द्वायको सक्तमा देव के सामान है । एक प्रकार वा गानका जागरकार्यका जाग रहेगा कार्या के गा के ने का

t gente fa willigen in g. Sapatanya anno anno a d a) a) q. ( a, ya ( a, y.

बैन सन्तरोगो फोसिदो, तेन सुचे ओपमिदि युचं । एत्य विद्वारवदिसत्याण-वेउन्य मार्गितिययदाणि गरिय ।

सासणसम्मादिद्वीहि केवडियं स्रेतं फोसिदं, लोगरस असंक्षेत्री भागो ॥ ९७ ॥

मेचं रेहि।

एदस्य सुत्तस्य बहुमाणपरुवणा खेलभंगा ।

एक्कारह चोइसभागा देसूणा ॥ ९८ ॥

एत्य उत्तराद्वदिश्चिमेसपदाणि णत्थि, कम्मश्यकापजीगविवस्तादी । उत्त बहुनाया मानगा हेड्डा पंच, उपरि छ राज्युओ कुसंति वि एक्कारह चौहसभागा कोसि

असंजदसम्मादिश्चीहि केवडियं क्षेत्रं फोसिदं, लोगस्स असंरे रजदिभागो ॥ ९९ ॥

ब्रम्य प्रमाम नेत्रभंगी, ब्रमाणकालपश्चित्रतारी ।

छ नौरसभागा देसूणा ॥ १०० ॥

कड़ कड़ा है। कड़ों, अर्थान कार्यलकामगीनी मिरवादक्षिपीके, विवारयक्षकामा, बैकिनिक औ करण्यात्रेत्वलगुरुत्त, इत्ते वद् मही होते हैं।

कार्वकद्राययोगी मानादननक्याररियोंने क्रियना शेष स्थरी किया है। हीका अर्रपान्तं अन्य स्त्यं हिया है ॥ ९०॥

इ.स. ब्यूचकी वर्तमामकादिक स्वर्णीनवस्त्राणाः क्षेत्रके समान है। बार्नेयबालकोती मामादनवस्पादवि श्रीवीन तीनी कालीबी श्रीका बड़ बन

करन्तु बढ़े भीतर जास स्तर्भ िं "॥ १८॥ दक्षांतम इत्यालका है। बो कई है। सामनागर्ने 🥇 Americante Men

ाष देश्यका क्षेत्र इत्य क्षण्यमस्थानम् err ( [] ) are ू धेव हो

मध्य की हैं।

कर्यवर है सम 44. 1

. 11

एत्य वि उवनादपदमेनकं चेन । तिरिक्ताकंतद्वममाहिको नेणुनिर छ रज्जूनो गैत्रुणपज्जेति, तेण फोसणकेत्रपरूचण छ-चोर्समागमेतं होदि । हेहा फोसणं पंचरज्जु-पमाणं ण रुम्मदे, जैस्पासंजदसम्मादिहीणं तिरिक्तेसवनादामाना ।

सजोगिकेवळीहि केवडियं खेतं फोसिदं, छोगस्स असंखेज्जा भागा सव्वछोगो वा ॥ १०१ ॥

पद्रपारकेनलीहि लोगस्स असंसेन्जा भागा कोसिदा, लोगपरेनिहेदबादबलप्स अपबिह्जीवपदेसपादा । लोगपूर्ण सन्यलोगो कोसिदा, बादबलप्स वि पविह्जीव-पदेसपादा ।

## एवं जोगमगगणा समता ।

वेदाणुवादेण इत्यिवेद-पुरिसवेदएसु मिच्छादिद्वीहि केवडियं सेत्तं फोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ १०२ ॥

एद्रस सुचस्स प्रत्यणा खेचमंगो, बद्दमाणकालपृद्धिबद्धचादे। ।

यहां पर भी केवल उपपादरहरी होता है। तिर्वेच असंपतसम्बरिक और चृंकि मेठतलसे उपर छद राजु जाकरके उत्पद्ध होते हैं, इसलिए स्वर्गनस्टब्स अस्पना छद बटे चीरह र्रंट भाग मसाण होती है। मेदललसे भीचे पांच राजु ममाण स्वर्गनस्टब्स वारा आता है, क्योंकि, नारकी ससंपतसम्बर्गाहि आयोका तिर्वेचीम उपवाद नहीं होगा है।

कार्मणकाययोगी सयोगिरेविहियोंने कितना धेय रपर्व किया दे ! सोहहा

असंख्यात बहुनाग और सर्वेत्रोक स्पर्ध किया है ॥ १०१ ॥

प्रवासमुद्रातको मात केपलियोंने लेकिक ससंस्थात बहुमान वपर दिये हैं, क्योंकि, लेकिययन स्थित बातप्रकामें केपली भगवानके आमामद्री मातपाहुदानमें मंदिर नहीं करते हैं। लेकियुपलस्वात्तासे स्थलित क्यों दिया है, क्योंकि, लेकिक आमो

इसप्रकार योगमार्गेणा समाम दुई ।

वेदमार्गवाके अञ्चवादते स्विवेरी और पुरुषदेरी जीवोने मिष्पार्शस्त्रीने हिन्नता क्षेत्र स्पर्ध किया है ! होकका अमृष्णावशं भाग स्पर्ध हिया है ए १०२ ॥ वर्षणावश्वरक्षे सम्बद्ध होनेके कारण इस पुषुक्ष महत्त्वा शेषके समाव है ।

र देशकारेन-मार्द्दर्गमधारविदेशीकरताकेल्देवनामः स्टब्स वर्षा वय वयूदेसमात वा देशका अर्दे-कोडी वा ! स. कि. १, ८.

अट्टबोइसभागा देसूणा, सब्बेलागी वा ॥ १०३ ॥

मत्यानत्येदि मिन्डादिष्टीहे अदीदकाले तिण्दं लोगाणमसंरोड्यदिमागो, तिरि न्हेनस्म मेन्द्रेड्यदिमागो, अबुग्ड्यदेशे असंरोड्यपुणो कोसिदो । एत्य वाण्येतस्त्यों निकासमे संसोज्योयनवादन्तं रुट्युनद्शं च पेगून निरियलोगस्य सरीक्षदिमागो सादेदस्यै विद्युत्तिस्मन्याननेदन-कमान-वेदनिक्यपरियोदि अहं भोजस्थागा कोसिद्रा, अबुरु-व्ययन्त्रेड्युत्तरस्थितमणमणित्वादेशिरिय-पुरिमवेद्यिम्ह्यादिक्षणमुग्लेगाहो । मार्गलि व्यस्त्र-किमोदि मन्द्रकोगो कोसिद्रो, दुपद्यरिगद्यिम्ह्यादिक्षणमग्रम्यदेशायासो ।

सामगतम्मादिधीहे केवडियं खेत्तं फोसिदं, छोगस्स असंसेज दिनागे ॥ १०४ ॥

वरम्न सुनम्म प्रवासा सेतर्भको, बद्दमाणकाशविषद्वनारे । अट्ट पाद चोर्सभागा देखणा ॥ १०५॥

नों देरी भीत पुरुष है। विश्वादक्षि भीषोंने अतीत और जनामत कालकी अपेश्व इक दश अरद दोर पीर्ट्समाम तथा सर्वजीक स्पर्ध किया है।। १०३॥

क्षण्याक्षण महिन्दी भीत नृतर्यन्तुं विश्वासदि प्रीयोनि भनीत्रकायमें सामागर्योक्ष स्थान क्ष्में का क्ष्में काता नी साम, निर्वेशतेक्षण संभावनी साम भीत भन्नदिविधो संस्थात क्ष्में का क्ष्में कात है। नहीं तर वास्त्रकार संभावनी साम भागि आपारीकी, तथा संस्थात स्थान कर्षक अर्था कर कर ने दे व्यवनार में तक्ष्म कर्षक विश्वास स्थानीयो साम सामनित साम क्ष्में का क

के बेर बुरुवेरी सामान्त्रमध्यानीत भीतीति हिताता सेच गार्थ हिया है है

रोक्षकः अर्रश्यास्त्रण माम बार्य दिया है ॥ १०४॥

करेज्यनचारम्य सम्बद्ध होते च कारण हम स्थापी स्थापना सेपायनामा हे समान है। मी. जीर पुरुषोरी मामाज्यसम्पारत दिसींन जोति और जातान कारणी जोगी इन्हें क्या जाल करें में दर क्या मी. बहे चीतर माम स्थाप दिये हैं ।। है ५५ ।। मत्याजरभेदि सातावासमादिशीदि विष्टं होगाणमसंग्रेज्यदिभागो, विरियहोत्सस्य भैगेजिदिमागो, अहारज्यादो अगंरोज्ज्युणो फोसिदो, अदीदकाठिविजस्यादो । एरंग वि पुण्यं व विक्ति गरेणाणि पेसूण निरियहोत्सस्य संग्रेज्जिदिमागो दिसिद्धा । एरो। 'या ' साद्दे । विद्याप्य निर्देश क्ष्य क्षेत्रिक्त । विद्याप्य क्षेत्रिक्त, अहु-रज्ज्यादन्तरज्ञ्यपद्यम्भवेदे देविरिय-पुरिसतात्वाणं गमणागमणं परि पिक्तिहामा क्षिण मार्ग्लोविप्यश्चिद्दे व्यव चोद्यसमामा देख्या फोसिदा । हेहा पंच रज्ज्य फोतां किष्ण हम्पदे हैं ण ने क्षेत्र मार्ग्लोविप्य क्ष्य सायाणं विदिक्त-मणुरसेतु मार्ग्लीविपन्तर-मणाणममार्गादो विरिवेद्दि हैं स्वयं पुरिसवेद्दात्वात्वाणं जिरवर्षाद मार्ग्लीवे मेल्लमाणाणममार्गादो विरिवेद्द प्रकार चार्यक्रियस्य पुरिसवेद्दात्वात्वाणं जिरवर्षाद मार्ग्लीवेदे मेल्लमाणाणममार्गादो च । उचनादपरिणदेहि एक्कारह चोदसमागा देख्या फोसिदा । ग्रुचे उचनाद-प्रतिक्रं है एप, फोसणसुवे उचनादिवस्यसमात्रा । जिरवादा जागच्छेविद पंच

उक दोनों घेरपाले स्वस्थानस्य सामाहतसम्यव्हि श्रीयोने सामान्यलेक आदि तान होजंबा व्यस्त्वातयां भागः तिर्पेलाक्यः संवतातयो भाग और अशास्त्रियले व्यसंप्रता पूर्वके तान होजंबा व्यसंप्रतायो भागः तिर्पेलाक्यः संवतातयो भाग दाने वादांपर मा पूर्वके समान तीनों सेत्रीको प्रदाण करके तिर्पेलाक्यः संव्यातयो भाग दानोता चाहिए। यदी ध्यपित 'था' शास्त्रा वर्षे हैं। विदारवास्यस्थान, घेरमा, क्याय और धैकिथिकसमुद्धात-परिणत उक और्योने प्रष्ठ कम भाउ वटे बीरह (क्रि) भाग स्वर्धा क्रिये हैं। क्याँकि, आदः सत्तु बादस्थारो शासुमतके भातर देव सी और पुरुषेदरी सामादनसम्यव्हि और्योक सममागमनके प्रति प्रतिभाव कमाय है। भारागितकसमुद्धातपरिचत उक आँर्थोने कुछ ' कम नी बटे घीरह (क्रि) भाग स्वर्ध किये हैं।

र्श्वहा—मेरतलसे भीचे पांच राजुपमाण स्पर्दानक्षेत्र पर्यो नहीं पाया जाता है !

समापान--नद्दां, चर्चांक, नार्टाक्यांके की और पुरुषदेदी तिषयों और मनुष्यांमें मारणात्मिकसमुद्धात करनेवाके सासादनसम्यरमध्ये औयाँका अभाव है। तथा नरकातिके मार मारणाम्बक्तसमुद्धात करनेवाले की और पुरुषदेदी तिर्वेच सासादनसम्यरमध्ये और्योका भी अभाव है।

डवपान्पर्पाणित उक्त जीवोंने कुछ कम ग्यारह बटे चीरह (१४) माग श्यर्स किपे हैं।

शुंका-स्थमें उपपादपदसम्बन्धी स्पर्धातका प्रमाण क्यों नहीं कहा !

समाधान---नहीं, क्योंकि, स्परीनानुगमसन्वर्थी सूत्रमें उपपादपदकी विवस्ताका समाप है।

मरकगितसे आनेपाले जीवोंकी अपेशा पांच रामु, और देवगातसे मानेपाले जीवोंकी

रज्य, देवेहिंवो आगच्छेवेहि छ रज्यू फोसिदा चि एकारह चोदसमागा फोसणसेनं होदि। सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं सेत्तं फोसिदं,

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०६ ॥

एदस्स सुत्तस्स परुवणा खेत्तमंगो, यहमाणुकालविवक्खादो ।

अट्ट चोहसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ १०७ ॥

सत्याणत्येहि विर्ह लोगाणमसंसेज्जदिमागो, तिरियलोगस्स संखेळदिमागो, अङ्काइज्जादो असंखेजजगुणो फोसिदो, वीद्कालीवनक्यादो । विहारविसत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्त्रिय-मारणीतियगरिणदेहि अङ्घ चोद्समागा देखणा फोसिदा । णवरि सम्मा-भिच्लाइहीणं मारणीतियं णत्यि । उत्रवादगरिणदेहि छ चोह्ममागा देखणा फोसिदा । णवरि सम्मामिच्लादिहीणं उत्रवादो णत्यि । इत्थिवेदेसु असंजदसम्मादिहीणं उत्रवादो णत्यि ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदि-

गागों ॥ १०८ ॥

अपक्षा छह राजु स्पर्धा किये गये हैं। इस्र प्रकार ग्यारद बटे चौदह ( 👯 ) माग उपपादका स्पर्शनक्षेत्र है।

स्त्रीवेदी और पुरुपवेदी सम्यग्निभथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवाने कितना

क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ १०६ ॥ धर्तमानकाटको विवक्षा होनेसे इस समुक्ष प्रदूषणा क्षेत्रप्रकृषणाके समान जानना

चतमानकारका विवश हानस रच सुनका महत्त्वा स्त्रमण्या समान सामान

उक्त जीवोंने अठीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चीदह माग स्पर्श किये हैं ॥ १०७ ॥

सस्यानस्य स्रोंबरी और पुरुषेबरी हतीय व चतुर्ष गुलस्थानथर्ती जीवोंने सामान्यलोक सादि तीन होकोंका ससंस्थातयां माम, तिर्पालोकका संस्थातवां माम, और मनुष्यलोकसे सांदि तीन होकोंका ससंस्थातयां माम, तिर्पालोकका संस्थातवां माम, और मनुष्यलोकसे सांदि विद्यार्थ के से स्थातका स्थात कर जीवोंने कुछ सम बाह यह चीद्द ( र्रा ) माम स्थात किये हैं। विद्यार्थ वात यह है कि सम्यागम्ध्यार्थ का बाह यह चीद्द ( र्रा ) माम स्थात किये हैं। विद्यार्थ वात यह है कि सम्यागम्ध्यार्थ कीचोंके मास्यागिकसमुद्रार्थ कोचोंके मास्यागिकसमुद्रार्थ कीचोंके उपयाद विद्यार्थ है। कियार्थ है कि सम्यागिकस्थार्थ कीचोंके उपयाद पर नहीं होता है। इत्रांध कीचोंके उपयाद पर नहीं होता है। इत्रंध कीचोंके उपयाद नहीं होता है। इत्रंध कीचोंके उपयाद नहीं होता है।

स्तीवेदी और पुरुपवेदी संयतामंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है !

रोकका अमेर्यावयां भाग स्पर्ध किया है ॥ १०८ ॥

१ अनंबनुबन्दाराधिनः संबनावंबन्दीशीहरवातंब्दोदमायः बद् बनुदेशमाया वा देशोनाः। स. वि. १, ८०

एदस्स मुचस्स पह्रवणा रोचभंगो, निवनिरादवद्वमाणकालनादो ।

छ चोइसभागा देखुणा ॥ १०९॥

सत्याणसःयाण-वेदण-कताय-वेडण्यिषाणिहिः तिष्टं छोताणमसंखेन्नदिमागो, विरिष्ठोगस्स संदेश्वादिमागो, अद्वाद्नात्री असंखेन्नगुणो पोसिरो, विविषयत्त्रीदकाल-षादो । मारणीतपरिषदिष्ठ छ चोहसमागा देखणा फोसिरा, अन्तुरक्षणारी उत्तरि विरिक्षसंजदासंनदाणमुख्यादामाया ।

पमत्तसंजदपहुडि जाव आणियट्टिउवसामग-सवपहि केवहियं सेत्तं फोसिदं. स्टोगस्स असंखेज्जदिमागो' ॥ ११० ॥

ष्ट्रस्य सुप्तस्य बङ्गाणपरूवणा खेचभंगा । अदीदकाले एदेहि सत्यांग-विहारं-वेदण-कसाय-वेदिवयपिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंदेज्जदिमागो, माधुसखेचस्स संखेज्जदि-मागो फोसिदो। पमचसंजदे वैज्ञाहारपदाणं वि एवं चेव वचववं । णवरि इत्यिपेदे वेजाहारं

पर्तमानकालको विवश्य दोनेसे इस स्वकी स्पर्शनमकाणा क्षेत्रमकाणांके समान जानना चादिए।

सीबेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने अधीत और अनागवक छकी विवधासे इस्ट कम रह पटे चौदद माग स्वर्ध किये हैं ॥ १०९ ॥

सस्यानसरमान, पेरना, बदाव और विशिवकपरगरिवत स्तियों भीर पुरुषेपरेर संवतातंत्रत आयाँने सामान्यद्येक साहि तीन स्रोकांका अवंश्यातवां भाग, तिवंश्लोकका संक्षातवां भाग, और अग्रार्काण के अक्षात्राण केत्र रस्ते किया है। पर्योक्त प्रदांतर स्त्रीनसास्त्री विषक्षा की वर्षे हैं। मास्यान्तिकपर्यारिकत उन्त और्थेने कुछ कम छह करे चीदह (१) भाग रुप्ते किये हैं, पर्योक्ति, अप्युतकराक्षे अपर नियंव संवनाक्षयत आयाँका उपवाद नर्दी होना है।

स्विदी और पुरुषोदियोंने प्रमत्तायत गुणशानसे लेकर अनिश्विकरण उप-सामक और ध्वर गुणसान तक प्रत्येक गुणसानवर्धी जीगोने कितना क्षेत्र स्वर्ध

किया है ? लोकका असंख्यातमां माग स्पर्श किया है ॥ ११० ॥

हस स्टबर्ग वर्तमानकालिक स्वर्धनमध्यमा सेनमध्यमाने समान है। अभेतकालमें स्वरधानस्वरधना, विद्वारणस्वमान, वेदना, क्याय और वेशियकामुळ्यारिका रहाँ उस आवान तावारवलोक भादि चार लोगों जा सर्भवानको माण, भीर मञुण्यतेकस संवानको भाग स्वर्धा किया है। मन्त्रचेवन गुणस्थानमें नेत्रससमुदान और आदारकामुदान, सन दोनों ही पहोंगे स्वरी मकारसे स्वर्धनस्वेत कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि ट्यांदिस्स

१ प्रमणायनि इतिवादसान्तानी सामान्तान्तं स्पर्धनम् । सः सि. १, ८.

पोसिदो ।

णृत्यि । मारणंतिय-परिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेजदिमागो, : णजंसयवेदएसु मिच्छादिही ओवं'॥ १११ ।

सत्याणसत्याण-नेदण-कसाय-मार्त्णावय-उत्रत्राद्वरिणद्वण्डु स विकालेस जेण सञ्चलामो फोसिदी; विहारपरिणदेहीह तिस वि . संदेज्जिदमागो, तिरियलोगस्स संवेज्जिदिमागो, अङ्गहरुजादो असं वैण ओपूर्व खुजनदे । किंतु वैजन्तियपदस्स ओप्यमेंगी ण होदि, त

माणकाले विरियलोगस्य संसेजिदिमागमेचमदीदकाले उमयस्य वि चि १ ण, पदविसेसविवनसामावण ओघणिहेसस्स विरोहामाया । . सासणसम्मादिङ्गीहि केनिडियं खेतं फोसिदं, लोगस

भागो ॥ ११२ ॥

रीज्ञस और माहारकसमुदात, ये दोनों पद नहीं होते हैं। मारणान्तिकपर्ण प्रमाण्यकोक् मादि चार छोक्षोक्षा ससंवयातयां माग, श्रीर सदार्गायो स्व राशं किया है। नवंतकरेरी जीवोंमें मिध्यादृष्टि जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र ओवके £ 11 888 11

र्वका — मस्यानम्बस्यान, वेदना, कराय, मारवानिक भीट उपया परियान मधुमकवर्षी मिष्णारिष्ट जायोन तीना ही कालाम स्विक सर्पनीक स्पर्ध पारणा नेपुण करणा मान्याच्या कर्मा जीवाने हीतो ही कालीम सामान्यलीह मादि र विद्यात्पन्यस्थात्वः साम् विद्यात्वः साम् व्यात्वः साम् व्यात्वः साम् व्यात्वः साम् व्यात्वः साम् व्यात्वः साम हराय किया है। इसलिए सुक्रमें कहा गया शोपपना परित है। जाता है। किन्तु की कराधानकोत्र मोमक समान पटिन नहीं होता है, प्रयोक्ति, पटां पर, मधान भी ६६छ। ४. ६६० ), अस्त्राच्या स्थान् भाष्यक्राणाम् भीर भारेस्यक्रणणाः सार

प्रदेशकार्य वाट वटे चीन्ह (र्) तथा पांच वट चीन्ह (र्हें) मागदमान स ममायान-नहीं, क्योंक, पर्विशेषची विषधाचा चनाव होनेस स्वसं भी विर्देश विरोधको यान नहा होना है। नवंमहर्वेदी मामादनमस्यास्त्रि चीजीने किन्ता

ब्रम्गायान्त्रा बाग स्वत्य किया दे

एदस्स बहुमाणपरूचणा रोचमंगी।

वारह चोदसभागा वा देखुणा ॥ ११३ ॥

सत्पाणसत्पाण-विहारमदिसत्पाण-वेहण-कमाप-वेठिवयपिणवेहि ण्युंसपसासणेहि सीदाणागदकलेसु तिर्व्ह लेजाणमसंदिकबिक्साला, विदियलेस्ट्स संख्वादिमाला, ब्रह्मद-ब्वादी असंख्याणो फोसिदो, पदाणीकरोतिस्यतासव्यासायादियादी। उववादपिरणेहि एका-द्वादी असंख्याणो परेषण फोसिदा, ण्युंसगवेदितिस्वासायेख्यप्यवमाणदेव-वेदद्याणं छ-पेचरच्यावहल्यतिस्पिदरफोसणोवर्छमादी। मारणितप-पीणदेहि बाह चोदसमागा फोसिदा, वाद्य-तिसिक्साणं पंच-सचरच्यादल्लरज्यपदरकासणोवरुमादी।

सम्मामिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखे-ज्विदेशागों ॥ ११४ ॥

प्रस्त सुचस्त चड्टमाणपरुचणा स्वेषभंगो । सत्याणसत्याण-विदारविद्वारयाण-वेदण-सत्ताप-वेडिवपपरिवरेहि णुद्वसप्वेदतम्मामिन्छादिद्वीहि तीर् काले तिण्डं लेगाणम-

इस सम्बद्धा वर्तमानकालिक स्पर्शनप्रकृषणा शेत्रप्रकृषणांक समान है।

नपुंतकवेदी साप्तादनसम्पग्दछि जीवोने अवीव और अनागवकालकी अवेदा पुन्न कम बारह वटे चौदह भाग स्वर्ध किये हैं ॥ ११३॥

द्वारामत्यव्यान, विदाराम्यव्यान, विद्वान, क्याय भीर विविवक्यद्वारिणत मर्चु-सक्येदी सालाद्वनसम्बद्धि अधिने भागित भीर भगात्व्यानमें सामायकोक भादि तांत-हार्वोद्या ससंस्थात्वा माग, विदंग्लोकत सम्वादायं माग, शीर अद्वादित्येत स्वत्यात्वाचा देश रार्वोदेशित है, क्योंकि, यदांत्र तिर्चेच सालाद्वन जीवरात्विकी प्रभावता है। उपपाद्वार-परित्य उक्त ओधीन कुछ कम स्थादक करे बीहद (१३) माग रुपो विश्वे हैं। रुपोंकि, वर्द्ध राज्येदी तिर्चेच सालाद्वनसम्बद्धि जीवीमें उत्पाद होनेवाके देपोदी अपेदा एड राहु, भीर भारतिस्थात अपेदा गांच पाडु, रहामकार निकल्प त्यादह राहु वाहरूपयाले विदेश्यतरामाण रुप्यंतरक्षेत्र वाचा जाता है। सारामान्त्रिकतप्वर्वरित्य उक्त अधिन साल रहे थीरह (१३) माग रुपों विद्योद सुमानसम्बद्धा राष्ट्रभाव पांच राहु भीर विश्वोदे सात राहु, इसाम्बद्ध

नवसक्तेदी सम्योगिष्यादृष्टि जीवाने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका

अमेख्यातवी माग स्वर्ध किया है ॥ ११४ ॥

इस सुत्रकी पर्वमानकाशिक स्पर्शनमक्त्रणा क्षेत्रके समान है। सस्यानलस्थान, विहारशस्त्रस्थान, वेदना, कराय और यैजियिकवद्यरियन नयुंसक्येदी सम्यमिन्यादि जीयोंने मतीत्रकालमें सामान्यत्रोक मादि तीन सोशीका मसंत्रमानयां भाग, तियासोकस्य

१ सम्यानिष्यादश्चिमिर्वोद्दरशास्त्रीयमागा शृहः । स. हि. १, ८.

२७६ १

णूरिय् । मार्ग्णतिय-परिणदेहि चदुर्ग्हं छोगाणमसंस्त्रअदिमार्ग

णजंसयवेदएसु मिन्छादिड्डी ओवं'॥ ११: सत्याणसस्याण-वेदण-कसाय-मार्गितिय-उनवादपरिणर् स वि कालेस जेण सन्बलोगो कोसिदी; विहास्परिणदेहि तिस् . पंत्रेजनिक्मामा, विरियलागस्य संत्रेजनिक्मामा, अञ्चादज्ञाद्दे उ प्रत्यक्षास्त्राम् अन्तर्दे । किंतु वेडिवेडववदस्स अध्यमेगो ण होदि, माणकाले विरियलोगस्स संस्वेजदियागमेनमर्दिकाले उमयन्य चि १ ण, पदनिसेसिनियकसामात्रण औषाणिहेसस्य निरोहामाया ।

सासणसम्मादिट्टीहि केवडियं सेतं फोसिदं, लो भागो ॥ ११२ ॥

वैज्ञस और आहारकसमुदात, ये दोनों पद नहीं होते हैं। मारणान्तिकपर वज्ञच जार भारतसम्बद्धाः च प्रभागपः भवा चात हः मारणायकपर सामाम्यद्धोक जादि चार छोक्कोका असंस्थातवां माग, और अमादीयसे नपुंचकवेदी जीवोमें मिथ्याहाष्टे जीवोका स्पर्धनवेत्र अोपके

र्शका—सस्यानसस्यान, पेराना, कवाच, मारणान्तिक भीट उप यका — कल्लाकार्याम् वरमा वर्षाः व परिणतं मधुसक्वेत्री मिष्याद्दिः जायोने तीनां ही कालोनं सुंकि सर्वेशोक स्व परण्या गुडण्यात्र । १९०० व्या ज्ञानी व्या ज्ञानी व्या ज्ञानी व्या ज्ञानी व्या ज्ञानी व्या ज्ञानी व्याप्त व्याप विद्यातम् भागः, तिवालोकसः संख्यातम् भागः, और अस्मार्यकाः जन्म क्षत्रच्या है। इसडिए चुक्रमें कहा गया की घरना घटित ही जाता है। हिन्तु है स्पर्ध । स्था था स्थापन क्षान कार्य का जावना बाटा वा जावा व । कार्य व स्पर्धकरोत्र स्थापके समान घटित नहीं होता है, स्थाकि, वहां पर, सर्थात् व व्यवास्त्र भाषण जाता. वार्ता वर्ष वार्ता वर्ष प्रधानः वदा वर्ष भवात् वर्ष वर्षा वर्ष भवात् भवात् भवात् भवात् व (९९वा ४ २००१) जानवण्यात्रका व्यानामास्त्रात् स्वयानका प्रवासका प्रवासका प्रवासका प्रवासका प्रवासका प्रवासका प्रव 

. समाधान—नहीं, क्योंके, प्रशिदोषकी विवसाका मनाव होनेसे स्ट्रमें क निर्देश विरोधको प्राप्त नहीं होता है। नयुंसकनेदी सामादनमस्मारकाः वसंख्यातवां माम 👡 🔊

एदस्स बहुमाणपरुवणा रोचमंगा।

. वारह चोदसभागा वा देसूणा ॥ १९३ ॥

सत्याणस्त्याण-विद्वास्विद्वश्याण-विद्वा कमाय-वेटियवपिवदेहि बहुववस्य-वेदीः वीदाणागदकालेमु विष्टं लेगाणममंगरेज्जदिमाना, जिम्बितानम् मंगरेजदिदानः, अद्भव-ज्जादो अस्तिज्ञमुलो फीलदो, पदाणीकरोनिकमानायनामिकानिकार। उत्तरहर ग्लेटीर एका प्रवेमगोदिकामाना देगणा फोलदा, वर्षमगोदिक्तिम्बामानिकान्यन्तर्वेदे वेद्यवारं छ पैपरज्ञुवाहरूलिसियदरकोमानावर्गमादा । मारलिय पनिवदेहि दानद चेत्यवन्ता फोलदा, जार्य-निविचयाणं पैय-मचरज्ञ्वाहरूलाज्ञुवरकोमकोहर्गमाने

सम्मामिन्छादिद्वीहि वेयटियं खेत्तं फोनिदं, लोगम्म असंबे-ज्जदिभागों ॥ ११४ ॥

पदास गुचरम पहुमाववस्यका योगभंगा । सम्यादमन्द्रास्तरितन्द्रास्तरितन्द्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रवेदिवयवस्विदेदि वर्षुमयवेदमम्मामिन्द्राहिद्द्रांस्तर् निर्दे सोनान्द्रसः

इस स्वयी यर्गमानकालिक क्यर्शनप्रक्रमण श्रीवप्रश्चनके समाव है ३

नपुंतपुर्वेदी वाहाइनहत्त्वाहरि अधिन अर्थन और अन्नार्वेष्ट करेका पुछ क्षम बाह्य करे चौदह आग स्वर्ध किये हैं ॥ ११३ ॥

स्वराधानस्वर्धात, विद्रात्वारवायात, व्यूता, वच व वी वी विद्रात्वारवीक कुत्र सम्वेदी सार्वाद्रात्वारायाद्वि अधिके स्वर्धात व्यात्वाद्वात्वा सार्वाद्रात्वाच्याद्वि अधिके स्वर्धात्व सार्वाद्वाच्याद्वे सार्वाद्वाद्वे सार्वाद्वाद्वे सार्वाद्वाद्वे सार्वाद्वाद्वे सार्वाद्वाद्वे स्वर्धे स्वर्धे क्रम्य क्रम्य क्रम्य स्वर्धे स्वर्धे विद्राद्व स्वर्धे क्रम्य स्वर्धे क्रम्य

महत्तवादेवी सम्बाधितध्याद्यांत श्रीयोने विकास धेव बरदे विका है ! ही ववा

अमेल्यावर्ग माग स्पर्ध किया है ॥ ११४ ॥

इस सुदकी यांगामकावित्र कार्यामध्यापण क्षेत्रके स्थान है। सामाननावन्त्र न विद्वारवायकाथान, सेहना, पायाद और वैतिरिक्टर्डालन नदुन्वकी साथिकारांद्र श्रीवृति स्नीतकामध्ये कार्याणकोक साहितीन सोकीका समन्तिकारण अन्, विकासीका

g preferent anderembitemter if H. C .

संयेज्जदिमामा, तिरिपटीमस्य संयेजदिमामा, अद्वार्क्जाः अर्थयेज्जपुरी, वि 🎺 पाधण्यादी । मार्गनिय-उत्तरादा मन्त्रि ।

असंजदसम्मादिहिःसंजदासंजदेहि केवडियं क्षेत्रं फोनिदं, हं र असंखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥

> एदस्य सुत्तस्य बहुमायपरुषणा सैनुसंगा । छ चोइसभागा देखुणा ॥ ११६ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिमन्याण-वेदण-कमाय-वेदिकापपरिणेदीहः गर्नुगर्गाद-त्र जदसम्मादिहि-संजदामंजदेदि निष्टं लेगायममंगेक्जदिमागा, निरियनीयम्म मनेका मागा, अद्वाद्वजादी असंबेदजपुर्या । एसा ' बा ' महदूरे । मारगंतिययरिगदेहि छ चैह मामा देखणा फोमिदा, अच्तुदकष्पादे। उपरि निरिक्तामंत्रदसम्मादद्विन्यंत्रदार्गतद गमणामाता । उत्रवादपर्दं णश्चि । णत्ररि असंज्ञदमम्मादिद्वीदि उत्रवादपरिगदेदि . होगाणमसंस्वेजदिमागो, अहुरम्जादो असंसम्बद्धगुणो ।

पमत्तसंजदपहुडि जाव अणियद्धि ति ओवं ॥ ११७ ॥

संख्यातमां भाग, और अदाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। पर्योकि, महीरि रादिकी प्रधानता है। यहांपर मारणान्तिकसमुदात और उपपाद, य दे। पर नहीं होते हैं। नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दाष्टि और संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र

किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्वर्ध किया है ॥ ११५॥

. इस स्थकी यर्तमानक:लिक स्पर्दानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

कुक्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौर माग स्पर्ध किये हैं ॥ ११६ ॥

स्वरधानस्वरधान, विहारवग्स्यस्थान, वेदना, क्षत्राय और वीकायकपद्वपरिवार नर्ड सक्येदी असंयतसम्यन्द्रष्टि और संयतासंयत आयाने सामान्यलोक आदि तीन लेकिक असंख्यातयां भाग, तिर्यंग्लोकका संख्यातयां भाग, और अहाईद्वीपसे असंख्यानगुणा होत्र स्पर्श किया है। यह 'बा' शब्दका मर्थ है। मारणान्तिकपद्परिणत उक्त जीवाने इछ कम छह बटे चीदह ( 🕏 ) माग स्वशं किये हैं। क्योंकि, सब्युतकस्यते उत्तर असंयतसम्पन्ति श्रीर संयतासंयत तिर्पेचोंके गमनका अभाव है। यहांपर उपपादपद नहीं होता है। विशेष बात यह है कि उपपाद्वद्विता असंयनसम्यन्दि अविने सामान्यलोक आदि चार लोहाँकी असंख्यातर्षा भाग और बदाईडापसे असंख्यानगुणा क्षेत्र स्पर्दा किया है।

उक्त नपुंसकवेदी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणसान तक प्रत्येक गुणसानवर्धी जीवोंका स्वर्धनक्षेत्र ओषके समान लोकका असंस्थावर्ग

भाग है ॥ ११७॥

पमने तेज्ञाहाराभागादो ओपमं ज खुउजदे ? ण, सुने पद्विवस्तार विणा साम-ष्णाणिदेसादो । सेवं चितिय दत्तवाँ ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिपहुंडि जाव अजोगिकेवलि ति ओर्चं ॥ ११८ ॥

एदस्स सुचस्स बहुमाणाहीद्कालवरूवमा ओषाहो व भिवनदि वि सुचे ओष-मिरि भणिर ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ११९ ॥

एमजोगी किया करो १ प, पुरुक्तिन सजीतिजेयस्स अदीर-यहमामकालेस सुष्ट्रसामाबारी एमजीगचाणुववचीए । एदस्स वि सुमस्स अत्यो सुगमा वि ण कियि सुम्बदे ।

## एवं वेदमागणा समत्ता ।

र्सको – ममस गुणस्थानमें नयुंककोरी क्षीबीके तैजन और माहारकसमुद्रतका भमाव दोनेसे सुत्रीक भोगयना नहीं घटन होता है !

समाधान - नहीं, पर्धोक्त, खुवमें ठक दें नों पर्धिक्षेत्रें की विवशके विना सामान्य विदेश किया गया है।

क्या गया है। द्रीय पर्शेका स्पर्दानक्षेत्र विचार बरके बटना चाहिर ।

अवगत्रदेशे बीबोर्मे अनिष्ठतिकारण गुनस्थानते केका अपोधिकेदळी गुणस्थान सक अत्येक गुणस्थानदर्भी जीवोंका स्वर्धानक्षेत्र ओपके समान है ॥ ११८॥

इस स्वा) वर्तमान और भनीतकालसम्बन्धी स्वर्शनद्रस्यमा भोगस्वरीनग्रह्यमासे भिन्न नहीं है, इसलिक सबसे 'भोग' यह वह बाड़ा है।

अपगुरुवेश समोगिकेवली जिन्हेंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ ११९ ॥

शुंश-जगरके खबता भीर इस खबता, मधीन देलों खबीना, एक योग (समास) वर्षी नहीं किया है

समाधान-नहीं, पर्योष, समस्त्रेयताहिके शेषने सपीपिनेपराके शेषके भरीत भीर दर्तमानकारमें समानताका सभाव होनेसे प्रत्यागयना नहीं पन सकता है।

इस सुबक्ता भी भर्ष सुगम है, इसलिए विरोध कुछ भी नहीं कहा के ता है। इसमकारसे पेडमार्गणा समान हुई।

. १ अवस्तर्वदेशमां च सामान्येन्तं स्वर्डेनस् । सः छिः १, ८, ५८० । रुक्खडागमे जीयद्वाणे

कसायाणुवादेण कोधकसाई-माणकसाई-मायकसाई-छोभकसाईसु मि<del>ञ</del>्छादिद्विपहुडि जाव अणियट्टि ति ओघं ॥ १२० ॥

[ १, १, १२०,

एदस्म सुत्तस्स अदीद्-बद्दमाणकाले अस्सिद्ग परुवणे कीरमाणे फोसणमृत्येषादी ग केण वि अंसेण भिज्जीदे चि ओघमिदि सुचत्रयणं सुट्ट संबद्धं । तदे। मृलोघपरुवणं सुद्ध

. प्रमालिय एरय सिस्सार्ग पडिबोहो कायच्ये। I

लोहगयविसेसावबोहणद्वम्रत्तरमुत्तं .मण्णेर् —

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयउवसमा सवा ओघं ॥१२१॥ इरो ? ओपसुद्रमसांपराइयउनसम-खनगेहितो एदेसि निसेसामाना । सो च वेसेसामाना सिस्साणं सन्गिदरिसेयच्ना ।

अकसाईसु चटुट्टाणमोघं ॥ १२२ ॥

कपायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लोम-हपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुगस्यानसे लेकर अनिवृध्विकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-

त्यानवर्धी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओषके समान है ॥ १२० ॥

इस सुत्रकी अतीत और यर्तमानकालको आध्य करके बक्रपणा करनेपर स्पर्शनातु-रोगद्वारकी मून भोषत्ररूपणाने किमी भी भंदासे भेर नहीं है, इसलिय ' गोष ' पेसा सूत्र-रचन सुसम्बद्ध है। सन्दर्य मूल भोष्यक्रपणाको मुख्यकार, संमाल करक यहाँपर शिप्योंको क्षित्रोधित करना चाहिए !

सब सोमहरायगत विशेषनाके सबबोधनार्थ उत्तर श्रव कहते हैं-

विश्वेष बात यह है कि लोमकवायी जीवोंमें ग्रह्मसाम्परायगुणस्थानवर्धी उप-

तुमक और सुपक जीवोंका क्षेत्र ओपके समान है ॥ १२१ ॥ क्योंहि, बोधिनकपित स्हमसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपरामक भीर शपकास

हत्रायमार्गनाही रुष्टिने ब्रहापित इन जीवीं हे कोई विदोपता नहीं है। यह विरोपताका समाय रिप्पों है टिए मर्टामंति दिवाना चाहिए !

अकरायी जीवोंने उपगान्तकपाय आदि भार गुणन्यानवानोका स्पर्धनक्षेत्र

रोब के समान है।। १२२॥

र क्याबाद्धादेव बङ्गादवावणी

<sup>.</sup> बदरादणी च संबद्धीई शहैनहा है.

षोसमाग्रममे महिन्युद्अग्माणिकोसगरहरूणं णामेगदेसमाहणे वि णामिछतंपस्त्री होदि नि चहुद्दाज्यहेल हीदरागानं पहुन्हे राणहाणाणं महणं होरि । वेति परूपणा सुगमा, जोपनमाणवादी । णाणाशुनादेण मदिअन्णाणि-सुदअन्णाणीसु मिन्छादिङ्की और्यः एवं वट्यायमग्रामा सन्छ। 11 823 11 े जेण सस्याण-वेदण-कताय-मारणेविय-उत्तवादपरिणद्मदि-गुद्दमण्नानिनिन्दादिद्दीदि विमु वि कालमु सब्बलामा, विहार-वेडव्यिपरिणदृष्टि अह चौरममामा कामिरा, सैन ओपिनिदि लुम्बदे । सासणसम्मादिट्टी ओघं ॥ १२२ ॥ भोषो जेन अनेपरवारी मिन्छादिद्विजीवादिमेदेन, नेन करमीवान दाच रहमें होदि चि च प्रकार है है जेजोधेय सामयसमादिहीयं प्राप्तिक प्रधानको अस्ति स्थान

'किसी भी मामके एक देशके महण बरमपुर भी नामवालाँका सामण्य हो क्रण्य है । इस न्यायहे शतुसार 'वतुस्याल' दाल्य वर्षात्रकृत्य आहि वीजात वर्षा द : इति स्थापनः अधुनारः विद्याल्यानः हान्यः वयहारण्डवाय सात् व नगाः स्था युवारयात्रीका प्रदेश हो जाता है। उनके श्यातिकी प्रवण्या से यह सामान होनेस स्थापन है। मानमार्गवाके अञ्चवादमें मत्यज्ञानी और धुनाज्ञानियोंने निध्यासीन श्रीका

रपर्धनक्षेत्र जोपने समान है ॥ १२३॥ वर्षाक स्थाप का कुछ । वृद्धि दश्यमासम्प्राम, वृद्धा, वयाच, माराजानिकसमूहान की वर्षप्रकृत रियान सरवासार कराया । वर्षात्र कराया । वर्षात्र कराया । वर्षात्र वर्षात्र स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्व विषय अवस्थात तथा स्वाधाना भारतीया जावान ताना हा काराम सारण र परा या है, तथा विद्यारणस्परधान और हैदि विषयामुहानपर्यात्वन अवस्थ आहे वर से रहे त्य है, तथा विहारवायवस्थान भार भार । यह ग्याहानायहंबाराज्य असाह भार ह ४) आग हरते किये हैं, हरातिय सुचीता 'आय' यह स्थाह साहन ही झाल है। उक्त दोनी प्रकारके अवानी सामादनसम्पन्ति श्रीकाका क्रम्प्टिंग बार्च

Raises & Entire actes fest mich fich act bies & et bie bie समापान (बस भाषने साथ सासाहरूसाराहरू क्रांचान करणान करणान

गहणं । केण सह एत्य प्रण पगरिसेण पचासची विज्जदे ? सासणसम्मादिहिस्स उ बहुमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेजनदिमागी, अहुाइज्नादी असंखेजनगुणी सगर

खेनवरुंमादो । वीदे काले वि सत्याणेग विण्हं होगाणमसंखेबबदिमागस्स, विरिय संखेजबदिमागस्स, अहाइजादो असंखेजबगुणस्स; विहारविदसत्याण-वेदण-कसाय-वेद परेसु अह चोहसमागमेचस्स, मारणंतिप-उननादपरेसु वारसेकारस-चोहसमागखेच मादो । एदमत्यपर्द सञ्चत्य वत्तव्यं ।

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं स्तेतं फोसिदं, हो असंखेज्जदिभागों ॥ १२५ ॥

एदस्स मुचस्स प्रवणा खेचमंगा, बहुमाणकालसंबंधिचादो ।

भागो, तिरियलोगस्य संसेज्जदिभागो, अद्वारज्जादो असंसेज्जगुणो कोसिदो । एसं

अट्ट चोइसभागा देसूणा सन्वलेगो वा ॥ १२६ ॥ सत्यानपरिगदेदि विभेगणाणमिन्छादिद्वीहि वीदे काले विण्हं लोगाणमसंखे

मंश्रा-हो यहांपर हिस भोषके साथ मकर्वतासे मत्यासि है ! समाधान-सासारनगुणस्यानके भोषके साथ प्रकर्पतासे प्रत्यासति है, प वर्तमानकारमें सामान्यरोक मादि चार होकोंका असेवपानयां माग मीर महार्र बर्सक्यात्रमुचा अपने सर्वपदेशिक रचरीनरोत्र पाया जाता है। अतीतकालमें भी सरवान

और अहाईद्वीप्रसे असंब्यानगणाः तथा विद्वारयास्यस्थानः येवनाः कवाय और यैकि बहुँ में बाट बट बाइइ (क्) भागमात्रात्रधा मारणानितक भीर उपपाद, इन दो वहाँमें बारद बटे बीइट ( 🔡 ) भीर स्वारद बटे बीइट ( 🔡 ) मागप्रमाण स्वर्धनका क्षेत्र क्षाना है। यह अधेपद सर्वत्र कहना साहिए।

भरेसा रामान्यरोक भादि तीन होक्रीका भर्मस्यानयां भाग, तिर्यग्होकका संस्यानयां

हिम्पन्नानियोंमें मिष्यादीट जीवोंने फितना क्षेत्र स्पर्न किया है ? सी क्षमें स्पातनों माग गार्थ किया है ॥ १६५ ॥

वर्तमानकारको सम्बन्ध होनेके कारण इस सूचकी स्वर्धानप्रकरणा क्षेत्रके समा

स्वरुदानस्वस्यानपर्ने परिचन विभेगवानी मिण्यारवि त्रीयोने नतीतकाणमें <sup>साम</sup>

[बर्मण्यानी बीबोने बरीत | बीर बनागत काउँकी अरेवा बाट पटे पीदर कीर मर्देशोद्ध रंपर्य दिया है ॥ १२६॥

होत्ह कार्द्र हीन होत्हींका बसंक्यालयां माग, निर्यग्लोकका संक्यालयां मागः और बदार्थ क्षमंत्रातमुद्रा सेव कार्य दिया है। यह 'वा' शत्युद्धा प्रणे है। विद्वाप्ययवस्यानः वे

र विकास केंद्रों क्रिया नहानों के कामभाग रहताएं। सही : चहुई बबाता जा देवें ता , वर्ते होंवो

सद्देशं । बिहारवित्सत्याणं वेदण-कसाय-वेजिध्ययपीणदेहि अह चोहसमागा रेहणाः वहरूत । वहरूत विकास स्वास्त्र में कार्य भारत्यं विवयपरिवादेहि सञ्चलामा फोसिदो । सेसं सम्बं।

सासणसम्मादिङ्ठी ओषं'॥ १२७॥

इदो १ वर्डमाणकाले समसन्वपदाणं चदुण्हं लोगाणमधरोजिदिमागचेण, अङ्कार-ङत्। ४२नाणकाल व्यवस्थात्र १६१८ लागानावाकवादाराज्यः ॥ ४६१८ जनादी असंस्तिजन्मणचेणः वृद्धि काले सत्याणस्य निष्ट् लोगाणममंत्रेजनिमागचेन, जनादा असंस्वजन्याण पणः पाद काल सत्याणस्य १७७ लागाणमणः व्यवस्थापः पणः विरियलोगसम् संस्वजनिभागषेणः, अहारजनादाः असंस्वजम्युषयेणः, विहास्यदिमाणानः व्यविकासस्य वार्वज्ञानमाम्। जहुन्द्रभावाचेण मार्गाविषसः देवस्यान्। ज्ञात्वज्ञास्य वर्षः विश्ववाद्यः पानः वद्यान्यतायः वडाव्यवप्रदाणं द्याग् मठ-वाद्यावाणयः। वाद्यावप्रसः वद्यावाण्यः मागतेण, ओषसासणसम्मादिद्वितेषेण सरिसमुवर्तमादी । कर्षं मारिने सगर्व । वर् नामपुर्णः, जानपात्रभवानमाभुद्धस्यम् वास्तः प्रवणमादाः । वस् देन्बद्दियणपृणिक्षेष्रण्यवद्दासभ् सरिते विस्तवाहेक्षणणप्रवर्तमः।

आभिृणिवोहिय-सुद-भौषिणाणीम् असंजदसम्मादिष्टिणहुडि जाव सीणकतायवीदरागछहुमत्या ति ओघं ॥ १२८ ॥ कराय, और विकित्यक्ष्यरिणत उक्त जीवाने कुछ इस बाट बरे बौहर (1) माग क्या किय

क्षणाय, भार पाकाणकपहचारणात उत्ता जायान कुछ ब म बाह बट बावह (११) माग वरहा हर है। मारणानिकसम्बद्धातपद्रपरिणत जना जीवाने सब्देशक वर्णा किया है। देश कर्ण गिम वरहा हर है। जात्वकलम्बत्ववद् पारण्य कमः जापान सवलाक रूपतास्वा ह। हार मण पामम ह। विमामानी मासादनसम्परहृद्धि जीवीका हर्यनेश्वेत्र जीपके समान है ॥ १९०॥ विभागामा भाषाव्यवरणस्था । व्यवस्था रच्यावन व्यवस्था समान ६ ४ ८ ८७॥ विभागामाने सासाहनसामस्थिता स्थानिहीत के एके सामान होनेसा सामान स्थ

्षभावनात् साधादनस्तव्यन्दाध्याचा चपरानदाच अत्यक्ष समान दानचा चाटण यद दे कि पर्वमानचालमें सकीए सर्वयरीके दर्गानदेशकी सामायलीक साहि बार होकोटे सर्गः ६ १४. भवाभान ११८६० रचनाच स्वयप्तायः राजानसम्बन्धः सामान्यदारः स्वादः स्वरः स्टास्टस्ट स्वयः प्यातयं भागते, तथा भन्नदेशैयते सारायानग्राणितस्त्रते स्वतीत्रकारसं रपयातस्य स्थानस्य ष्यात्य भागस, तथा महादृश्यस असस्यानग्राज्ञासम्बद्धाः ज्ञात्वम्यस्य वयस्य पानस्य स्थानास्य स्थानास्य स्थानास्य ग्रामान्यस्त्रोद्धाः स्थानिक स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य ानाव्यक्षत्रः आहर तान व्यक्तात्रः भवस्यवात्य आगत्तः सावश्यकः व्यक्तात्व आगतः, गरा हार्द्वतिक्षेत्रे असंस्थानमुणित् देवेष्ठते, विद्वारयस्ययम्, वेर्त्ता, क्यायः क्षे. र वेशिवसमुद्धानः होर्रहायस मासवधानपाणा सम्बद्ध, स्वहारपास्यस्याम, पर्वा, म्याप मार बाहायहम्प्रहान, पर्वाम हुए कम माठ कटे कोहर (१४) मामसे, भीर मारणानिकसमुद्रानका हुए कम ने बहुत (हैंड) आगडी अपेसा, भीयमहरित सासाहन सम्पादी गुरुरात है ए व स

र्थका — साहरवसाथ डोनेवर स्ट्रॉम 'ओम ' वह झारा रहाए हैंसे क्या श समाधान — नहीं व्योकि हासाधिकनयानस्थनक स्टब्स्सोकी सहस्तम होनेतर

न्यायसम्बद्धाः १४४८ १४५ आतः ६। अभिनिद्योधिकसानी, धेवतानी और अवधिकानिधीने अनंपनुसम्बद्धारे हुन्द वेत्रम् श्रीणक्षप्रपृष्ठितमाष्ठकस्य गुणस्थाम् वहः सप्टेकः गुणस्थामस्य स्थितः कानादबन।दल्डानां कादभवेत स्वश्नद म म ।

स्वाहर्यकार्यकाम् सामाचना स्ववस्य । स्वाहितिकाचित्र मुक्ताचित्रकाचेत्रेत्रकाम् सः दान स्वाहर्यः । सः ११ व

'सुउजदे ।

एदस्स सुत्तंस्स अत्थो सुगमो, मुलोधम्हि वित्यरेण परूविदत्तादो । तत्य नाम-विसेसणेण विणा सामण्येण परुविद्मिदि चे ण, सामण्येण परुविदे वि सा मदि-सुदणाण-परूत्रणा चेय, मदि-सुद्रणाणवदिरिचछद्रमत्यसम्मादिष्टीणमणुत्रलंभा । ओधिणाणविरहिंद-्सम्मादिद्वीणमुब्दंमा ओधिणाणस्स ओघर्च ण जुज्जदे चे ण, एत्य द्व्यपमाणेण अहिंगारा-मावा । ओवअसंजदसम्मादिद्विआदिफोसणेहि ओधिणाणअसंजदसम्मादिद्विआदिफोसणाणं सिरसन्त्रवर्छमादो ओधिणाणस्स ओघत्तं जुल्लदे चेय ।

मणपञ्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव स्वीणकसायवीदराग-**'छद्रमत्था ति ओधं ॥ १२९ ॥** 

अदीर-बद्दमाणकाले सन्वपदाणमीघसञ्चपदेहि सरिसन्तवलंभादी एत्य वि ओघर्च

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ १३० ॥

. इस स्वका अर्थ सुगम है, क्योंकि, मृटोधमें विस्तारसे प्रस्तपण किया जा चुका है।

धुंका- उस मृद्धोय स्पर्शनमहत्पणामें तो आनमार्गणाहर विशेषणके विना सामा-.म्पसे ही कथन किया गया है है समाधान-महीं, क्योंकि, सामान्यसे महावित होनेपर भी यह मतिहान और शुत-

श्चानकी ही प्ररूपणा है, पर्योके, मतिहान और धृतझानसे रहित छग्नस्य सम्यादिए जीव महीं पाये जाते हैं।

दांका — अवधिशानसे रहित सम्यग्हिए जीव तो पाये जाते हैं। इसलिए अवधिशानके ंभोषपना नहीं घटित होता है है

समाधान-नदी, पर्योकि, यहां पर द्वायप्रमाणके अधिकार या प्रकरणका समाप है। भीष असंयतसम्यग्दप्र आदि जीवेंकि स्पर्धनक्षेत्रके साथ अवधिकानी असंयतसम्य-श्हीषु आदिकाँके स्पर्शनसम्पर्न्धा क्षेत्राँकी सहदाता पाये जामेसे अवधिशानके श्रीवपना घटित

'हो ही जाता है। मनःवर्षयञ्चानियाँमें प्रमचसंयवगुणशानसे हेकर धीणकपायबीवरागछत्रस गुण-

स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्वर्धनश्चेत्र ओधके समान है ॥ १२९ ॥ सर्वात और वर्तमानकारुमें मनःपर्वयक्षातियोंमें संमधित सर्ववरोंके स्पर्धानकी भीप-वर्णित सर्वपर्रोहे स्पर्शन हे साथ सरहाता पाई जानेसे यहां पर भी भीषपमा युक्तिसंगत है।

केवडइानियोंने सपोगिकेवडी जिनोका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है।। ११०॥

षोसगाणुगमे संनद्दषीसगार वर्ग एदस्त अत्थो सुगमे, ओपन्दि परुविदत्तादो, केनलगाणविदिशचमजोगकेनलील भावा ओघसजीमिवस्यणाणं पहि सामण्या ।

अजोगिकेवली औषं ॥ १३१ ॥

जानारा नाम । एइसम् वि अत्यो सुगमा, ओपहिंदू पस्विद्वादो । पुत्र सुवारंग हिम्हो १ ए, स्वरण १३ जरण छणाम, जरबार राज्यक्ष पान्। उत्र छणारण १३ महास्त्र स्वाप्ति । १३ महास्त्र स्वाप्ति स्वाप्ति प्रवास

संजमाणुयादेण संजदेमु पमत्तसंजदपहुडि जाव अजोगिकेवलि ं ओषं ॥ १३२ ॥ पर्य औषपूरुवणादी व को विं भेदी अधिव, विविवस्दर्भवसमासमादी। व

परच आपवर्षकादा ण का । व भदा आत्म, १वनकः जिमसाम्बन्धविद्धाः संज्ञाः अत्यि, तेनिमसंबद्धवर्षसंगादे । सजोगिकेवली ओषं ॥ १३३ ॥ इस स्वका अर्थ सुनाम है, क्योंकि, भोगमें महत्वल किया जा जुका है। इसमें कन

यह मो है कि वेषण्डामसे रहित संयोगिवेषित्यों समाय होनेसे भोषवाचेन संयोगिव जिनोंकी महत्रणाभीके प्रति समानता है। ्र विवस्त्रामिन । विवस्त्रामिन । इ. तिमान । विवस्ति ।

भोपमें महावेश होतेसे इस खुबका भी मर्थ खुगम है। वंदा — ता किर प्रवर सुबना भारत कितालिए किया गया है! 

संभाषान — महा, क्याक, स्वकार भार भ्यापक वाल्यक कामाव कार काना कारके साथ प्राथासिका असाय होनेसे एक योगपना कन वहीं सहना था, काना कार इसम्बार मानमार्गणा समाप्त हुई। संवयमार्गणाके अनुवादमें संवतीम प्रमावनंत्रत गुरुत्तानने सहर अहीत.

क्षेत्रपारणाम् ज्यास्य संस्थान् भगवणस्य अन्यानम् स्टब्स् अस्यास्य त्री गुणसान् वतः प्रत्येतः गुणसान् त्री जीवीका वरसम्बद्धे स्टब्स् स्टब्स् अस्याः द्विष्णाम एक आपक द्विष्णामा रहा जारावा प्रकारण व आपक एक एक है है। यहाँवर आग्रवस्थास कोई भी भेड़ बड़ा है, क्योंक, सहस्रह सब्दर सब्दर है हैंदस है ्षेत्रपर माध्यमण्यात् कार्याम भागात् भागात् । प्रभावः भागात् भागात् । स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स संपतीम मयीविकेवलीका रचर्यनकेव प्रोवके महान है। १३६।

र सबाह्यत्रोहें बंदरामां गरेंचा अअस्ति व गर्मात्र व भ . . 

पुघ सत्तारंमी किमहो १ ण, पुन्तिल्लेहि सह फोसणेग पच्चासत्तिज्ञमानप्पदंसन फलचादो । सेसं सुगर्म ।

सामाइयच्छेदोवहावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदपहिंड जाव अणि यद्विति ओधं ॥ १३४ ॥

एदं पि सुर्च सुगमिनिदि ण एत्य किंचि वचच्यमित्य ।

🐃 परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदेहि केवडियं स्रेतं पोसिदं, लोगस्स असंक्षेजदिभागो ॥ १३५ ॥

कसाय-वेउन्त्रियपरिणदेहि चदुण्टं लोगाणमसंखेज्जदिमागो, माणुसखेत्रस्स संखेजदिमागो; मार्गितियपरिगरेहि चदुण्डं लोगाणमसंखेअदिमागो, माणुसखेनादो असंक्षेत्रगुणो वीदे काठे फोसिदो । पमचे वेजाहारं गरिय, लद्वीए उपरि लद्वीणममाया ।

एदस्स बद्दमाणपरूवणा खेचमंगा । सत्थाणसत्याण-विहारविदसत्याण-वेदन-

मंदा- तो फिर १थक सुत्रका आरंग किसलिए किया गया है !

समाधान-मही, पर्योकि, पूर्योक्त जीवींके स्वर्शनके साथ संवीतिकेवलीके स्वर्शनसे

प्रत्यामितके भमावका प्रदर्शन करना है। पृथक् सूत्रका एक है। दोर बर्ध सुगम है।

सामापिक और छेदोपसापनाञ्च।द्विसंपतीमें प्रमत्तसंपत गुणस्थानमे लेकर अनिः इतिकर्म गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवती जीवोंका स्पर्धनथेत्र ओघके समान है ॥१३४॥

यह सूत्र मी सुगम है, इनलिए यहांपर कुछ मी वक्तव्य नहीं है।

परिहारिक्छिद्विमेपनोमें प्रमान और अप्रमानसंपन्तीन किनना क्षेत्र स्पर्ध किया है है केल्क्स अनंख्यात्वां माग स्तर्भ किया है ॥ १३५ ॥

इस सुवर्धा वर्तमानकालिक स्पर्धमानवाणा क्षेत्रप्रवर्गणाके समान है। स्पर्धान क्षरदान, विदारचन्द्रपरयान, येदना, क्षाय भीर येत्रियकपदपरिजत इक्त अधिने सामाग्यमेक कादि कार छोबींका असंस्थानयों माग भीर मनुष्यक्षेत्रका संस्थानयों मागः तथा मारबानिकः बर्फरिकत इक डीवेंने सामान्यसीच भादि चार स्रोचीका भगवपानवी माग और मनुष्य-क्षेत्रके बर्ककानगुष्का क्षेत्र धर्नातवालमें शार्त विणा है। विशेष वात धर है कि प्रमत्तगुण-

बुखरी द्वरिययो बही होती हैं।

स्टानमें टैजनसमुद्रान और भारान्यममुद्रान, वे दो पर नहीं होते हैं, क्वींकि, सन्धिर जनर

स्रुहुमसांपराहयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराहयः उदसमा मोधं ॥ १३६ ॥

ſ ŧ.

खः

एदस्स सुचस्स अत्यो मुगमो, ओपन्हि परुनिदचादो ।

जहानसादिवहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्टाणी ओपं ॥ १३७ ॥ चदुण्दं हाणाणं समाहारी चदुहाणी; सा ओपं भवदि, जहाक्खाद्गंजद्चदुगुण-ाणं परुवणा ओघसरिसा चि जं युनं होदि।

संजदासंजदा ओषं' ॥ १३८ ॥ संजमाणुबादेण संजमासंजम-असंजमाणं कर्ष गहणं होदि १ एमा संजमाणुबादो जममेव परुवेदि, किंतु संजर्म संजमार्यजममसंजर्म च । वेणेदेशि वि गहणे होदि । रवं, तो एदिस्सं मागणाए संजमाणुवादवबदेसो ण, खजदे हैं ण, अंव लियरणं व पदमासेञ्ज संजमाणुवादववदेसजुर्चाए । सेसं गुगमं ।

यहमसाम्परायिकञ्जदिसंयवोमें यहमसाम्परायिक उपग्रमक और शपक श्रीरोक्त त्र ओपके समान है।। १३६॥ मोधमें मरुपित होनेसे इस खूबका भर्य सुगम है। ापारुवातविद्यादितंपतामें अन्तिम पार गुणम्यानवर्ग जीवोद्या रचर्यनधेत्र

चार स्वानोंके समाहारको चतु स्थानी कहते हैं। उन चारी गुणस्पानोंकी स्नाहीन

मक्रवना क्षेत्रके समान होती है। अर्थान, प्रयाक्ष्यातस्यमञ्जूक मानस बार गुणस्यावीरी मक्रपणा भोगके सहदा होती है, देला कहा गया समझना चाहिए। संपतासंपत जीवाँका स्पर्धनसेत्र औपके समान है।। १३८॥ र्युंडा — संवममार्गणाहे अनुवादसे संवमासंयम और ससंवम, इन रोगांचा महस्र केसे होता है !

समाधान -- संवयमार्गणाके समुवादसे न वेचल सवसका ही भटन होता है. दिश्व संयम, संयमासंयम भीर भसंयमका भी प्रहण होता है।

र्वेदा-परि वेद्या है तो इस मार्गलाको सवमानुपादका नाम देना पुन्त नहीं है ?

समापान-नहीं, क्योंकि, 'श्राध्यम 'वा निज्ववन क समान प्राधान्यकृत्या गाधव लेकार 'संबमानुवादसं 'यह स्वपंदसं व त्ना युक्त युक्त हो जाना है

असंजदेसु मिन्छादिट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टि ति ओर्घ ॥ १३९ ॥

परं पि सुनं सुपमं, ओयस्टि मिच्छादिहिआदिचतुमुगडाणपरूवणाण परःविदत्तारो।
प्रथं संजयनगणा सवता।

दंसणाणुवादेण चक्तुदंसणीसु मिन्छादिट्टीहि केवडियं सेतं

पोसिदं, स्रोगस्स असंक्षेत्रदिभागे ॥ १४० ॥

एदं सुचं सुगमं सेचाणित्रोगहारे उचहाहो ।

अट्ट चोहसभागा देखणा सव्वलोगो वा ॥ १४१ ॥ सरपानसेहि चक्सुदंसिणिमच्छादिद्वीहि निष्टं संगालमसंस्वतिमागे, विस्पि टोगस्य मेसेस्विटिमागो, अट्टास्वादो असंसेडबसुलो, विस्तिन्दरण-कमाय-वेडिस्पि

च्यास्त्र नारकवादमाया, अङ्कार्यादा असस्यज्ञमुणाः ।वहार-वदण-कमायन्वउ परिनदेहि देख्यङ्क चादममायाः, मारणांत्रिय-उपवादपरिणदेहि सन्यलोगो। पोसिदो ।

अमेपन जीरोंमें मिथ्यादृष्टिगुणस्थानसे लेकर असंयनमस्यादृष्टि गुणस्थान तक अन्येद गुमस्यानसर्थे अमेयन जीरोंका स्पर्धनरोत्र ओपके समान है ॥ १३९ ॥

. यर गुत्र भी शुगत है, क्योंकि, भोषते मिन्यारिट मादि कारगुणस्थानीही प्रदः क्याभोवा निकाल दिया गया है।

इस ब्रह्मार श्वयममार्गना समाप्त हुई।

र्सनमार्गानके अनुसर्ग चशुर्रगनियोमें मिष्यार्शि जीतीन क्रितना क्षेत्र स्पर्ग हिपा है है हेटका अनेत्याता माग सर्ग किया है ॥ १४० ॥

बह सब सुनन है, वर्षों के, क्षेत्रानुष्णाद्वारी हुनका अप कहा आ पूका है। चसुदर्शनी सिष्ट्यादि बीबोने अनीत और अनागत कानकी अवेधा हुछ कृष

बार बरे बेंटर मात और महेरीह सार्व हिया है ॥ १४१ ॥

करणात्रस्य कानुहरीनी मियाराष्ट्रि श्रीवीन सामाग्यतेषः माहि सीन सार्थोषां क्रमेश्वात्यो स्था निवेद्यां क्रमेश्वात्यो स्था निवेद्यां क्रमेश्वात्यो स्था निवेद्यां क्षमेश्वात्यो स्था निवेद्यां क्षमेश्वात्यां क्षमेश्वात्यायां क्षमेश्वात्यां क्षमेश्या

त्र अ अध्यक्तात् च व्रज्ञानात् राज्यस्य १ च. वि. १, ४. त्र दश्याद्व ८५ चषुत्रप्रायतः प्रियणप्रवादिवामक्षण्यात् नात्री वयदिवस्तर् । च. वि. १, व.

सासणसम्मादिहिषहुिंड जान सीणकसायनीदरागद्यस्या ओषं ॥ १४२ ॥

आपमाम्बरमादिद्वित्रादिमयलगुणहाणाईना चनगुरंमणिमामणमम्मादिद्वित्रा व्यवसाराणाः भागसंदर्भ वनसुद्देशयनदिदिषम् । वनसुद्दमावसाराज्यसम्बद्धः । कृ

ं उ अचनस्युरंमणीसु मिन्छादिट्टिप्पहृद्धि नाव मीणकनायर्वादराम् मत्या ति जोषं ॥ १४३॥

ा १५ पान । १५८ । एदं वि सुर्च सुमर्स, आपहिंद् विश्योग प्रमित्वाही। य च ऑपरम्बिटिन्छा-्र बाहिरमाणकमानपरजनमुण्हाणाणे अपन्यस्यणीयगिहराणि काम, वर्णायन भादी । वेणेदेसि सध्येसि वि ओपचं खन्जदे ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिमंगों ॥ १२२ ॥ धगममेदं ग्रचं।

तासादनतस्यारि गुणस्यान्ते हेक्त धीणक्षापक्षीवरागाहरूम् गुणस्तन हर प्रत्येक गुणस्थानवर्ती चाहुदर्धनी जीवीका क्यानक्षेत्र आपके ममान है ॥ १४२ ॥ शोव शापार्वधारमध्ये शादि सक्षेत्र ग्रेवणात्राम् करिदा्यो सम्पारक्षमध्यक्रि भाव सारावितसम्बारण वाति वस्तुल शुक्तवाताल व्यवस्था वाति वाति सारत शुक्तवाताल कर्या । वाति वाति वाति वाति वाति व घटित है। जाना है। अपछुदर्गानियोमें मिध्यादारी गुणस्थानमें लेकर शीलक्षावर्णमानास्त्र पुणस्थानं तदः प्राचेदः गुणस्थानकर्ती अपभुदर्शनी औधीका क्रस्टन्तिक केर्ने हर ॥ यह गुत्र भी गाम है, क्यों। अंग्यास्त्रणामें विश्वासी मन्त्रक हिल्ल करू यद राज भा समात है, ज्यान, जायमान्यामा । भार भाषप्रकृतिम मिन्यारीए भार्ट सीएक पाएक्यम एकस्पन अक्टरिएक क्रिकेट the manufactor one stock to the second second manufactor to the second second manufactor to the second seco

गण है। अवधिरदानी जीवाका रूपधनकेंत्र अवध्यतानियो**क सदान है** दे हैं हैं है

## केवलदंसणी केवलणाणिमंगो ॥ १४५ ॥ एदं पि सगमं ।

एवं दंसणमग्गणा समता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियमिच्लादि ओषं ॥ १४६ ॥

जेण सत्याण-वेदण-कसाय-भारणंतिय-उववादपरिणदेहि किन्हः जील-काउलेस्सि मिन्छादिहीहि तिसु वि कालेसु सक्वलोगो, विहारपरिणदेहि अदीर-बहुमाणेष वि लोगाणमसंखेड-बिद्मागो, तिरियलोगस्स संखेजिदिमागो, अष्टाहु-बार्श असंखेजिए व बहुमाणकाले वेडिन्यपरिणदेहि ( तिन्हं लोगाणमसंखेड-बिद्मागो, ) तिरियलोगस् संखेजिदिमागो, अहुहु-जादो असंखेड-बागुणो; अदीरे पंच चोहसमागा गीविदा, वे ओषपं जुजरे। विहार-वेडिन्यपरेसु देखण्डु-चोहसमागापोसणखेत्तामात्रा ओषपं ण पर इदि पच्चवहुःणं ण कापच्चं, सुने पदिविस्तामात्रा। । सच्चलोगत्तमेनेण सरिसनमालोगि आपनुववसीए।

केयलदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र केयलज्ञानियोंके समान है ॥ १४५ ॥ यह सूत्र मी सुनम है।

इस मकार दर्शनमार्गणा समाग हुई।

हेस्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णहेस्या, नीरहेस्या और कापोवहेस्यावाहे मिथ्या इटि जीवॉका स्पर्णनारेत्र ओपके समान है ॥ १४६ ॥

शृंकि स्वश्यानस्वस्थान, वेदना, कथाय, मारणानिकत्ममुद्धात शीर उपवाद्यद्याध्या है। करायान, विद्याद्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्वयं क्षेत्र स्वयं क्षित्र स्वयं स्वयं स्वयं क्षित्र स्वयं स्वयं स्वयं क्षित्र स्वयं स्य

द्येका — विहारचान्यस्थान श्रीर धैकिविकममुद्यान, इन देर वहाँ में देशीन शाड की

बीन्ह ( ﴿ ) भागप्रमाण स्पर्धनशेषके धमाप होनेत शोधपना महित नहीं होता है ! समापान —पर्धा प्रांवः नहीं बरनी शाहिए, पर्याद, मुक्त प्रविशेषणी विशेषणी समाप है । पर्यक्रीस्थमाण शेषकी मुख्यनाही हेलने हुए भीधपना बन जाना है !

ય કેરાયણ ત્ર વસ્ત્રો કરાયો કર્યો કરેલી ભાગદિવાર કરેલોયા સ્પૃત્રા કુ સ. મિ. રે, તે, ત્રાપ્ત કાર્ય કોર્ટ ફિટાનો સ્પૂર્ણ કુ સો મેરે, તે, ત્રાપ્ત કાર્ય કોર્ટ ફિટાનો સ્પૂર્ણ કેરાયો કોર્ટ, ત્રાપ્ત કરતા

بؤو

सासणसम्मादिङ्गीहि केविडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंसेज्जिदि-भागो'॥ १८७॥ ॥ २०० ॥ एदस्त सुनस्त परुवणा खेचमंगो, अल्लोणगड्डमाणनादो । 1888

पंच चतारि वे चोहसभागा वा देसणा ॥ १६८ ॥ त्र । १४१८ च ११६४ मा ११ ४४६४ । ११८० । सत्यानसत्यान-विद्वार-वेदन-इसाय-वेदन्वियपरिनदेहि किन्द्र-भील-काउन्नेसियर-सामणीह तीरे काल तिन्हं लोगाणमसंसेजिरिमामी, तिरियलोगस्य संदेशिसमी, जहार-सार्वणाह पाद काल भाक कालावाचनाद माना, भारत्वलास्य सदनाद वासा, जहाद जादी असंवित्तमुणी वासिदी । देवे भोजून जाद्दय-अपरन्वसम्बन्धानिय-मानावाद स्थान जार जातरज्ञा गाणवा ५२ गापूर्य जार्थय अवस्थात्रप्रवासम्बद्धात्रप्रवासम्बद्धात्रप्रवासम्बद्धात्रप्रवासम्बद्धात्र विवनिहिष्यतिहिष्टेसम् चेत्र एदस्स विवस्तुव्हिमात्रा विविद्योगस्य संग्रेन्द्रिमागतः येच चत्तारि व चोह्सभागा पासिद्दा । भारहणहरूत्वा तिरिक्तित उत्पन्तभागामण परिस् ्व एसा कोसणपरत्यमा करा । देवहितो एईदिएस मार्स्थानय जनगणनायम् भारतः

उत्तः तीनो अञ्चबलेस्यात्रोवाले सामादनसम्परहाष्टि जीशीने कितना क्षेत्र स्तर्य या है ! लोकका असंस्थावमं भाग स्पर्ध किया है ॥ १४७ ॥ है। छातका असर्वाध्या नाम राज क्त्या है । एक व सन्मानकाछको स्याम करनेले इस स्वकी मक्त्या होको समान है। प्रामामकालका व्याम करमान इस प्रकार मञ्चामा प्रकार समाम के वित्ती अञ्चमलेक्याश्रीताले सामादनमुक्तमहिः जीवाने अतीव और अनामव

हालको अवेदा कुछ हम पांच बटे चीदह, चार बटे चीदह और दी बटे चीहह साम स्पर्ध किये हैं।। १८८।। स्वस्थानस्वस्थान्, विहारवासस्यान्, पेरना, क्याव और विहारवस्थान् रूप्त

मील और हाणोतहरवायाले सामाद्वसम्बद्धी आयोज स्वतंत्रहालमें सामान्यस्थ वारणा हणा भाव बार कार्यावस्थायास सामादनसम्बद्धाः जायान कार्यानमस्था सामान्यस्थः जायान तीत स्टेकाका ससंस्थाययां भागः विद्यासम्बद्धाः संस्थाययां भागः और सहारिशिंग ससंस्थान वात कारणका जात्रणकात्रण नाम विवश्यक्त कर्णात्रण भाग वाद जार्थकारण जावण्या । युवा क्षेत्र हर्यो किया है। कत्यवाती देवोंको छोक्कर मास्की अपयोग सवन्याती, वानार्थनर दीया देशन देवता कथा द । कश्यवाचा देवाका छाड्कर भारका, अववास स्वन वाच्या क्राहित स्वीत स्वीत है। यह उन्हा दीव वाचा ज्ञान वाच्या क्राहित है। भार प्रधानपत्त्व तथा तथाव्यात्र्यमा जिथ्यात है। मारवाजिकसमुक्तत्र भेर हणात्व्य प्रमाणक मामभागः राज्याक्षणम् वृत्तकामः र मामभागकः व्यवस्थानः व्यवस्थानः वृत्तकः व्यवस्थानः वृत्तकः व्यवस्थानः व बटे बोहर (१४) माम मीहरहेरपायाह पश्चिमी पृथियोह माम्बी सामाहमसम्पर्ध होसीन इछ कम बार बड़े चीहर ( ं ) भाग, और बांधानहरूपायांत नीमरी शिवसेंद्र सारकी तिस्तादनवाशास्त्रं हु होशोंने कुछ कम की कर बाक्षर ( क्षण करने कि है बार्स भागावनसम्बद्धाः साथान ३७ चम वर चट चावर । । सन्त वर्षसा वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व पति निर्देशोर्मे उत्पद्धं देनियातः सासादनसम्बद्धाः अवीदा देखदर मधान् स्नद्धं अद्धान्तः यह स्पर्धानमरूपणा की गई है। t matematicapidatestación de ve : attende de terme te te ... १ व मना । ।वारिव ' वात वात) बार्चत ।

उत्ते ग लन्मदि, देवाणमप्पणी आउवचरिमसमञ्जो ति पुन्त्विल्लतेउ-पम्म-सुक्कलेसाण विणासामात्रा । किण्ड-शील-काउलेसियतिरिक्ख-मणुससासगाणमेईदिएसु मारणीतियं मेल्ल माणाणं सच चोदसभागा उविर लब्मीत चि हेट्टिन्लखेचेहि सह वारसेकारस-णव-चोदस-मागमेचखेचं किष्ण लब्मदे १ ण, तिरिक्स-मणुसउवसमसम्माइद्वीणं उवसमसम्मचकालब्मंतरे सुद्ध संकिलिहाणं पि संनदासंनदाणं व किण्ह-णील-काउलेस्साओ ण होति ति गुरुवरे-संतरज्ञाणावणद्वं तहाणुवदेसादे। । देवेसु तिरिक्खगईए उववण्णेसु उववादस्स एकारसन्दस-अड्र-चोद्दसभागमेचलेचं किण्ण रुक्भदे? ण, किण्द-गीरु-काउरुस्साहि सह अच्छिऊण पच्छा ताहि सह उत्रवादाभावादो । ण च लेरसा उत्रवादसमाणकालमाविणी मन्गणा होई,

श्रंकां — देवाँसे पकेन्द्रियाँमं मारणान्तिकसमुद्धातः करनेवाले जीवाँके सासाइन गुण-स्थानसम्बन्धी क्षेत्रके प्रहण करनेपर पूर्वोक्त क्षेत्रके साथ यथायमसे बारह बटे चौदह (११) भाग, ग्यारह बटे चीदह (र्रं) भाग, और नी यटे चीदह (र्) भागप्रमाण स्वर्शनक्षेत्र वर्शे महीं पाया जाना है है

समाधान — वेसी बांका पर उत्तर देते हैं कि नहीं पाया जाता है, क्योंकि, देवोंके भएती भायुके मन्तिम समय पर्यन्त मपनी पूर्ववर्ती तेज, पश्च मीर जुरू छेड्याओंका विनास महीं होता है, इसलिए उक्त प्रकारका क्षेत्र नहीं कहा गया।

र्शंस-रूपा, नील बीर कापोत लेदपापाले तथा एकेन्द्रियोमें मारणानिकसगुदात करनेवाले सामाधनमध्यण्डि विर्येख और मनुष्योंके सात बटे चीरह ( एँ ) माग ती क्यार स्पर्धनक्षेत्र पापा आना है, इमिलिए उसे अध्यमन उक्त क्षेत्रोंके नाथ प्रहण करने पर बारह बट चौदह (र्हें) माग, स्वारह बट चौदह (र्हें) माग और भी बटे चौदह (र्हें) धाराज्याच क्षेत्र क्यों नहीं पापा जाना है है

मुमापान - नहीं, वर्षीकि, उददाममादकदकारके श्रीनर अल्पन संदेशकी प्राप कर भी निर्देश और मनुष्य उपशासनस्यग्दृष्टि श्रीयोक्ते संयनानंयतीके समान कृष्ण, नीव और बारोत छेदवार नहीं होती हैं, इस प्रकारका यक्ष दूसरा गुदका प्रवेदा है, यह बात बनसने है दिव येमा उपरेश नहीं दिया है।

र्द्धा — निर्वेचमनिम दलाय दोनेवाले देवाँमें उपगादगद्दा स्थारह बटे थीरह, दर्श बेट कोटड मीर माट बेट बीरड मागप्रमाण केव वर्गो नहीं गांगा जाता है है

समाचान-मही, क्योंकि, हुणा, मील और कार्यान कर्याओंके बाध रहकर पी है रन्हीं साथ उपान् नहीं वाया हना है।

विदेश वे - देवीने टीनी अञ्चलहरवार्य अवयोगकालमें ही होती हैं। बीठ निवस्ती

t. s. 188. 1 ष्टीसणाषुगमे दिन्द्-ाण-वाउटेरिसरकीसणपरूवर्ण

आधेषपुरनुचरकालेसु असंतीए आहारचनिरोहादो। तम्हा सुनुचमेन होर्दु, णिएसअवादो। सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहीहि केवडियं खेतं फोसिदं, ि २९३ लोगसा असंखेन्जदिभागो'॥ १३९॥

एदस्स बहमाणपरुत्रणा स्त्रेनभेगो । सत्थाणसत्याण-विद्वस्थिदिनस्थाण-वेदण कसाय-

टीमदिरया है। आता है। अनदत रूप्ण, नीद्ध और कारोतदिस्याके साथ रहनेवादे देखेंके र्रोमलर्था हा जाता हा समय्य रूप्त, नाल भार कार्यातलस्याक साथ रहनथाल स्वास उपयोद्द क्षमाय बनलाया, क्योंकि, देवीका मरण न तो अपर्योतकालमें ही होता है और म उपनाइका बागाप बतलाया, 'प्यापः, द्याचा भट्य भ ता व्यथासवालम हा हाता ह गाट म दूरी भारतुक समाप्त हुए विना हैं। भनः यह कहना युक्तिसमत ही है कि हत्य, मील और द्वरा जातु १ रामा ६४ (१४)। वर १ रामा १० १ रामा उपयोज्ञ है साथ रहकर धीछे उत्रवाह नहीं होता है।

दूसरी बात यह है कि लेखामार्गला उपवाद समान-कालमाविनी नहीं है, क्वोंकि, हें हैं। इत यह है कि लह्यामाण्या उपयहित्तमान कालमायना नहा है, नेपाह, आधेवरूप पूर्व और उत्तर कालोंने अविद्यान लहा है, अधारवनेका निरोध है। स्वलिए साधवरूप पूर्व थाट कालाव भावधवान लह्याक आधारपक्षा (वराघ हूं ) हसाल प्रिकेत हैं। हर्रामहरेयका प्रमाण होना चादिय, प्योहि, वही प्रमाण निहाँय पाया जाता है।

विभेषार्थ - यहांपर लेखामार्गचा उपवार-समानकाल भाविना नहीं है, पैसा वहनेका यह क्षीत्रमाय है कि जिस महारसे विविधित जीवके पूर्व भवको छोड़के प्रधान वहमका यह बावमाय है कि जिस अकारत विवादत ज्ञावक पूर्व भवका छाड़नक प्रधान उत्तर भवको महण करनेड साथ है। गति, योग, शहार आर्व प्रयासमय जिनमी ही मार्ग उत्तर भषका प्रदेश करनेक साथ हा गांत, थान, भाहार आहर प्रयासमय किनना हा माग-णार्च परिवर्तित हो जाती हैं, उत प्रकार छेरपामार्थना परिवर्तित नहीं होती है। इतका ्यार पारपावत हा जाता है, उस अकार छड्डामांवणा पारपावत गहा हाता है। हसका हारण यह है कि और जिस छेडराले मरण करता है उसी छेडराले ही उराग्न होता है। हसका कारण यह है। कांव । त्रास स्टब्स भरण करता है उसा स्टब्स हा उत्पन्न होता है, यसा प्रकारत निवस है। और इसी नियम है कारण भवनत्रिक देवोंक सववात्त्रकारमें तीन संगुप्त प्रभाग्व भाषा है। बाद इक्षा भाषात्रक कारण भाषात्रक वृष्यक जनवार्त्वकल्य वात कार्युव हेंद्रप्रमाहा क्रास्तित्व माना गया है। इसी बातका बिद्य करनेक हिए जो हेत्र दिया गया है। उद्दर्भभाका भारतत्व भागत वया द। इसा यतका तथ्य करनक तथ्य जा दत द्वाद्या गया द, उद्दर्भ भी विभिन्नाय युद्दी दे कि यदि उपयोह देशिक साथ दी देशिक परिवर्धका विश्वम उद्यक्त मा शामनाथ पर्राष्ट्र कर चाद उपपाद शायक साथ हा उद्यक्त पार्थवनका । तथन मन्दर्यनाथी होना, तो मरण करने हे प्रवेशालमें और उत्तरहालमें विवासित हैस्याहे ब्वरचमाचा हाना, वा मरण करनक प्यच्छल ब्यह उत्तरकालम व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था परिधातत हा जामस भाषार कामध्यमा चन जाता, व्यथान मरणकाव वार उपयान कावक पूर्वातरहाल भाषेष्य बन जाते और उनमें होनेवाली लेखा भाषार वन जाती। हिन्तु मर पुराक्तरहाल बाध्य वन जात बार जनम दानबाल ल्ड्य नाबार बन जाता। कियु भय परिपर्तन है हो जाने पर भी लेरागरियन होता नहीं है। हसलिए कहा गया है हि मापेर पारमतम्ह हा जान पर मा अध्यापारपतम् होता नहा हः हसाअद कहा गया हु १६ कापर-कर पूर्व और उत्तर कालोमें विवसित लेखाङा परिवर्तन न होनेसे आपारपता नहीं का सकता है।

ु . उत्तः तीनो मद्यभनेश्यानले सम्यग्निध्यादृष्टि और अभयनमस्यग्दृष्टि औशोन कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? सोकका अमंस्यातमं माग स्पर्ध किया है ॥ १४० ॥ पत्र राष्ट्र कार्या व भागमा जारूराज्य जारूराज्य स्वास्त्र है। स्वराधान हत स्वका जनभागका का कारामक्रमणा का कारामक प्रधान हत्त्वर्धान, विहारवात्त्वस्थान, वेहना, कवाय भीर वैक्षिकाहेवारेवा नीना अगुमकेरणकात रे सम्पद्भिष्यादश्चरमयुक्तस्यद्वातिम्बाह्मस्यानस्यमाग्-१ स. स्ते १, ८.

....

ı m

वेउन्त्रियपरिणदेहि तिलेस्सियसम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहीहि तिण्हं लोगाणमसंखे-ज्जदिमागो, ( तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो, ) अहाइज्जादो असंखेजजगुणो । छुदो ? पहाणीक्रयतिरिक्खरासिचादो । मारणंतिय-उक्ताद्यरिणदेहि क्रिण्ड-णीलेलेरिसयअसंजद-सम्मादिद्वीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेजनदिभागो, अद्वाहजनादो असंखेजगुणो, छट्ट-पंचम-पुदर्विहितो माणुसेसु आगच्छमाणअसंजदमम्मादिहींगं पणदालीसजापणलक्खविकसंभ-पंच-चत्तारिरज्जुआपद्रवेतुवलंभादो । मारणंतिप-उपवाद्वरिणद्काउलेरितपअतंजदर्ममा-दिई।हि विण्हं लेगागमसंखेज्जदिमागे।, विशियलोगस्स संखेळदिमागे।, अङ्गहसादो असँखेजागुणो, काउलेस्साए सह असंखेजेसु दीवेसु पडमपुडवीए च उप्पानमाणसङ्ग-सम्मादिद्विञ्चतरोचग्गहणादो ।

तेउलेस्सिएसु मिच्छादिद्विन्मासणसम्मादिद्वीहि केवडियं

पासिदं, लोगस्स असंक्षेज्जदिभागों ॥ १५० ॥ एदस्म प्रवणा खेनभंगा, अर्हाणवहमाणचादो ।

सम्याग्निस्यादि और मसंयतनम्यादि जीवाने सामान्यलोक भादि तीन लोहाँका मसंक्या-तथां मान, ( तिर्थन्तोक्तका संख्यातयां मान, ) भीर अहाईडीयमे अमेल्यातमुणा क्षेत्र स्टर्श क्षिया है, क्योंकि, यहाँपर निर्वेच राशिकी प्रधानना है। मारणानिकसमुद्रान और उपपाद-पश्चितिक इत्या और जीलकेश्वायाले असंवतसम्बन्धि जीवोंने सामान्यलोक आहि बार होबाँबा भरीबपानवी मान भीर मगुर्देदीयने भरीबनानगुण क्षेत्र साही हिया है. पूर्वीतिः छई। बीर बांबर्धा पृथियोग मन्त्र्याम भानवान अमदा। कृष्ण भीर नील छेदयाहे चारक असंयनसम्बन्धाः अधिके प्रतिकारित छात्र के 👵 🔒 भोदता वांच राष्ट्र भीर पांचवी पृथिवीकी भोदता चार

ज्ञाना है। मारणानिकसमुद्रानः और उपपादपद्रपरिणतः इंग्डिंक साग्रान्यरीय मादि मीन ગ્રામેશ્વાસવાં क्षेत्र बराईडीएये बर्धस्यानगुषा 4 दें। इब हेरलाहे साथ धर्मस्यात हीया ว ์ช ก็ตี

अन्तिवे क्रासित रेजका प्रदेश वि देवीदेश्यासाठींमें कि

क्तर्य हिपा है ! टोकका 🛴

बर्नहायद्यारको हरण

11.4. fa.".

e a क्री १४ ठ-मात्र १६५ पाट

कोसमायुगमे तेउलेसियकोसणपरूकणं

अड णव चोइसभागा वा देख्णा ॥ १५१ ॥ सत्याणपरपरिणदेहि तेउलेस्पियमिच्छादिहि सासगसम्मादिहाहि तीदे काले तिव्ह संस्थानपद्भारणहार वाजलाभवानप्छादाह सासगसम्भादहार वाद काल वाक् सोमाणममेलेज्जदिमामा, तिरियलोगस्म संस्वन्जदिमामा, अद्रविज्ञादी असंस्वन्जपुणो पानिदो । एमो ' रा , सरहा । विहारचेदण-रुमाप-वेजल्यपरिणदेहि अह-चोहस-1294 पालदा । एना चा प्रभावता । विश्वता विश्वता । प्रभावता ।

सम्मामिच्छादिहि असंजदसम्मादिहीहि केवडियं सेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंसेज्जदिभागो'॥ १५२॥

एदस्स परन्यमा सेचमंगा ।

... अट्ट चोहसभागा चा देसूणा ॥ १५३ ॥

सत्याणपरिणदेहि दोगुणद्वाणबीविहि तिष्हं सोगाणमसंस्वेज्वदिभागो,

वैज्ञानेस्पानाले मिध्यारिष्ट् और सामादनसम्पारिष्टि भौनोंने अवीव और अनागव काहको अरेका कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम नी बटे चौदह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १५१ ॥

र १९६४ । स्वरधानसम्बद्धानपर्वाधेनत तेजोलेस्यायाले विस्वास्त्री और सामाननसम्बद्धान जीयोतं सर्वतिकासम् सामान्यकोकः सादि तीतं होस्तेकः सर्वव्यातयां भागः तिर्वाहिकका संक्यातपा भाग, भार भहारद्वहाल संसद्धावस्था सन स्थलाकृता है। यह या ज्ञानूना नायहा विद्वारसम्बर्धान, धेरना, रूपाय मेंट योजियक्षित्रसे परिणत जीवान भाउ यटे सीहर (र्हे) विद्रशत्वन्तवर्तान् वर्तान् वत्वव वार व्यावविष्ण वर्तः वार्त्वव वार्त्वव वार्वित वार्वित वार्वित वार्वित वार्व भागः, मारणानिष्ठसमुद्रातपरिणतं वकः वीर्थोने मी यटे चौहद्द (हें) भागः भार उपणान् परपारियात उन्हों ओवोंने हेड़ बढ़े चौदह (१८) भाग रुपने सिन्हें हैं।

वैवोलेडमावालं सम्पीमध्याराष्टि और असंग्वसम्पन्छि जीवोने किवना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? स्रोकका असंस्पातवां माग स्पर्ध किया है ॥ १५२ ॥

रेत प्रकार प्राचित्र कार्य कार्य कार्य के विकास कार्य के विकास कार्य के विकास कार्य के किया है। अपेक्षा इस सम आठ बटे चीहरू भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १५३ ॥

च्यानपद्वरित्वत सम्यानिक्याहरि और असंयनसम्याहरि स्न होनो गुणस्थानवर्ती ्रेकोल्डरवावले सीचीन सामारकोहः भारि तीन टॉहर्डेस भतेस्थानको भाग, निर्वालेस्स

र तेत्राव य व्याप्त वीत्राय अस्ताय गर्नेत हैं। अवसीत्राय भागी देन्या होते विश्वेष होती, और १४४० र तारबंद का प्राचार अरबाय राज्य है. अरबारका गांचा राज्य होता का अरबार का राज्य है. १९४१ इ. एक है सम्बाद यह बोरबारात्व के १९ गांचा रहकार चायपूर हिंदिण देव वे अरुवा हो। हो तो १९४३ द सार्विकारात्वनवन्तात्वन्ति (विविक्त्यात्वनवनातः असी वर्षवनाता स देशोनाः । व हि. १, ८

होगस्स संसेज्ञिद्मागो, अष्टुाइज्जादी असंसेज्जमुगो । निहार-वेदण-कसाय-वेज्ञिय-मारणीविषपरिणदेहि देवण-अङ्गेह्समागा । उत्रवादपरिणदेदि दिवङ्ग-चोहसमागा देवणा पोसिदा । णवरि सम्मामिच्छादिद्विस्स मारणितिय-उनवादा णित्य । सणककुमार-माहिदे

वेडलेस्सा अस्यि वि उत्त्रादस्स देमूण विश्वि चौदसमागा किण्य होति ? ण्, सोघूम्मी साजादो संदोज्जाणि चेत्र जीवगाणि गेतृग सणक्रुमार माहिदकप्पपारमा होर्ण दिवरू-रण्डाहिह परिसमचीदो । तस्मुशिसपेरीते तेउलेस्त्रिया किण्य होति ? ण, तस्त हेट्टिम-विमाणे चेव तेउलेस्सासंभवीवदेसा ।

्, संजदासंजदेहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंसेज्जदिः भागों ॥ १५३॥

एदस्स परुवणा खेत्तभंगा, बट्टमाणकालसंबंधादी । दिवङ्ग चोहसभागा वा देसूणा ॥ १५५ ॥

२९६ ]

गरेपानर्था माण, भीर महार्रद्वीपसे ससंस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्धा किया दे। विद्वारय-स्वस्थान, रहमा, ब पाय, धीर्वावक भीर मारणान्तिकपद्वारिणत उक्त भीवीन कुछ कम माठ बडे बीहर र्दा ) माग बनमाँ किये हैं। उपपादपश्परियम उक्त अधिन कुछ कम छेड़ बटे चीनह र्थे ) मान राज्ञी किंत्र हैं। विज्ञान बात यह दें कि सम्यागित्रच्यारिए अधिके मारणानित्र-

रीहा — मान हमार भीर माहेन्द्रकरामें तेतीलेस्या हेली है, हसलिए उपवादका ोप मांज बंट चौर्ड ( र्रं') भागममाण स्पर्शनक्षेत्र क्यों नहीं होता है।

ममापान-नहीं, क्योंकि, सीधमें भीट ईशानकरूपने संत्यान योजन ही उत्तर हर बाराषु मार में र मार्ग्यकाच पारम्म रोक्ट देव राष्ट्रपट समाग है। जाना है। र्शेडा — नातन्तुमार-मार्ट्यू वस्त्रे उपरिम विमानके भागतक नेमोलस्पायांने जीव **ग्रों होते हैं !** ममायान-नहीं, क्योहि, उस करनेक भवन्तन विमानीमें ही नेकांवरवाहे ग दर्पेस पापा जाना है।

तेकोडेदरायाचे संयतासंयत बाबोने हितना क्षेत्र धार्व हिया है। सोहका पतिशासाम स्वर्ग हिया है।। १-४ ॥

हर्वेज्ञानहारम सम्बद्ध हानम हम स्वहं प्रद्राणा शेवह समान है हेज्ञ देश्य का व स्पतासंपतः जीवनि इठ इस देद बढे पीदह माग क्वता हिये

Editorits technitate antigistate ditte i district

· (18, 146. )

तरपाणसत्याण विद्वासपदिमारथाण-वेदण-कवाय-वेउन्नियपरिणद्तउलेसियसंबद्धा-संबद्धि तीदे काळ विन्दं सोगाणमसंसंबद्धिमागो, विधियसेमससं संसेबदिमागो, अक्रमानादे त्रकारकार् भारत् मार्चात्रकारकारकार्यकार्यकारकारकारकारका व्यवस्थानम् । असंदिन्द्रमुणा पोतिदो। मार्चित्रपदिगदिहि दिवहु-चोहसमामा पोतिदा। उत्रवादो गत्थि।

एदं गुचं मुगमं, ओपन्दि पस्विद्वादी ।

पम्मलेसिएस मिन्छादिद्विषहुडि जाव असंजदसम्मादिद्दीहि केव-डियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंसेन्दिमागो'॥ १५७॥

अंड चोहसभागा वा देसूणा ॥ १५८ ॥ ्राह्याणवरिणद्यम्मलेसियमिन्छादिहि-सात्त्वासम्मादिहि-सत्त्वदसम्मादिहीहि तीदे प्रात्म वर्षः व काले विष्टं लोगाणमसंस्वेन्त्रीरमागो, विरियलोगस्य संस्वेन्त्रीरमागो, अञ्चारन्त्रारो असं-

स्परचानस्परचान, विदारपास्परचान, वेदना, कवाव और वीकावेकपरचारणत तेओ ६९१धान६९१थान, १५६६५६५४४धान, ५६ना, १८५५ बाद वाकावक्रपद्भाराव तथा हेररायाळे संपतासंपत जोपोने मतीतहाळमें सामाग्यकोर मादि तीन ठोडाँहा मतंत्र्यातपो हर्यायाह रामवास्थत जायान नवावनस्थन चानान्यहार नाम् चान व्यक्तात नस्यम्यवास मान, तिर्याहोहरा संस्थातम् भाग, भीट महार्ययेषते असंस्थातम् क्षेत्र स्था किया भागः १०४५६१४५ २०४४१४४। भागः भार भुगस्थायस्य भवन्यास्त्रभा स्व रूपस्य भिरा है। सारमानिकसम्बद्धातपर्यरेगतं उक्त सार्थाते (इ.ए.कस्) हेट्ट बटे स्वीरह (१८) भागः स्वर्ध किये हैं। इन जीवाँके उपवादपद नहीं होता है।

१२० वादाक जनपारपर गर्भ ६००१ ६ । वेजोलेश्यावाले प्रमचसंयव और अप्रमचसंयव जीवोंका स्पर्वनक्षेत्र ओपके समान है।। १५६॥

ह । १ ) र ।। भीयमें मक्तित होनेसे यह सूत्र सुगम है।

पान्य वर्षात् वर्षात् वर्षात् । पान्य वर्षात्रात्में मिप्पादि गुणसानमें हेकर् असंपन्तस्परिटि गुणसान तक प्रस्तंक गुणसानवर्ग जीवीने हितना धेत्र स्वर्ध हिया है है ठीकका असंस्थावर्ग माग स्पर्ध किया है ॥ १५७॥ भार । . . . . . . क्षेत्रमरूपणामं कहे जानेके कारण यह सूत्र सुगम है।

पद्मलेडचावाले उक्त गुणस्थानवर्ती जीवीने अतीत और अनागत कालकी अपे कुछ कम आठ पटे चौंदह माग स्वर्ज किये हैं ॥ १५८ ॥

भ आठ ४८ मान्य भाग राज्य १४० १६ १६ ६८ १। स्वरुवानवद्दवरिवात वस्रहेरवावाले मिष्याराष्ट्रे, सासाइनसम्बन्धि भीर मसंवत रवरवाचवर्षणस्या भण्यस्यावाच्यावस्यादार्, जात्वावस्यवस्य णार वास्यव सम्यवदेष्टि जीवीने क्षतीतबालमें सामान्यलेक धादि तीन लोकोका व्यवस्थातमां माग, १ प्रमुखायम्बर्तेहोबस्यःसस्येयमानः । सः विः १, ८ Ħ 1A. t, <.

खेजज्ञगुणोः, विहार-वेदण-कसाय-वेउन्निय-मारणंतियपरिणदेहि देवणह बोहसभागा पोतिर्दी। उववादपरिणदेहि देवणपंच चोहसभागा पोतिदा'। णवरि सम्मामिच्छादिष्टिस्स मारणंतिय उववादा णरिष्य।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, छोगस्स असंसेव्जिर भागो ॥ १५९ ॥

्र एदं पि सुचं सुगमं, सेचाणिओगहारे उत्तरयादो। उत्तमेव किमिदि पुणो उज्येदे । ण, मंदुर्जादिसिस्स संभारणद्वं तप्पस्वणादो।

पंच चोइसभागा वा देसृणा ॥ १६० ॥

सत्याणसत्याण-विद्यारविसत्याण-वेदण-कताय-वेदविवयपरिणदेहि पम्मलेसिय-संजदासंजदेहि विण्डं लोगाणमसंखज्जदिमागो, तिरियलोगस्स संखज्जदिमागो, अङ्गुहज्जादो असंखज्जगणो: मारणंतियपरिणदेहि देखणा पंच चोहसमागा गोसिदा ।

तिर्यंग्टोकका संस्थातयां भाग और अद्गार्द्धीयसे असंस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है। विद्वार प्रस्वस्थान, वेद्दमा, कथाय, वैक्षियक और भारणानिकसप्यारणत प्रस्तेद्रयायाळे उठ जीयोंने कुछ कम आठ यटे चौद्द ( $\frac{1}{12}$ ) भाग स्पर्ध किये हैं। उपयादस्थारणत उक सामेंगे कुछ कम पांच यटे चौद्द ( $\frac{1}{12}$ ) भाग स्पर्ध किये हैं। विद्रोप यात यह है कि सम्मिनिष्ठारिष्ठ जीते के प्रस्ता किये हैं। विद्रोप यात यह है कि सम्मिनिष्ठारिष्ठ जीवोंक भारणानिकसमुद्रात और उपयाद, ये द्वायद नहीं होते हैं।

्षप्रदेशपात्रां संपत्रामंयत्र जीवॉने कितना क्षेत्र स्पर्ग किया है है लोकका असंस्थातवर्श संपत्रामंयत्र प्रिया है ॥ १५९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, क्षेत्रानुयोगडारमें इसका अर्थ कहा जा चुका है। दुंका — पहले कही गई बात ही पुनः क्यों कही जाती है !

सुमाधान—नहीं, वर्षोकिः, मंददुद्धि दिष्योक्ते संमाटनेके दिष पुनः उसका महराज किया गया है।

पद्यटेरपावाले संपवासंपत जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा इष्ठ कम पांच पटे पीट्ड माग स्पर्त किये हैं॥ १६०॥

क्त्यानस्यान, विदारवास्त्रस्यान, वद्ना, वचाय और विशिवकपद्गारिक एफ-हरसाहरे संवतामंदनी गामान्यहोड सादि तीन होडीडा स्वंदयानयां भाग, विवंदरोडस संस्थातयां भाग, श्रीट सहार्द्धराचन सर्वस्थातगुष्मा देव स्वर्धा दिया है। मारणानिकसमुक्रम-पर्वादिक इन्द्र औदीन इन्द्र स्वर्णाय पटे चीडह ( १ ) भाग स्वर्ध विव हैं।

१ वस्तम्त च कहाणवहाणारहतेत् हृदि वहत्तरह। अवगोदवताता वा देशूणा हृति विश्वेष है बोट की-पहरू

व करवादे बद्दावर्द वन चौरन साराव च देवते । बी. और ५४६० १ ववराचार्द्देतीकस्थानस्थितमानः वंद चतुर्देशमामा वा देशीमा । व. वि. ६, ४०

पमत्त-अपमत्तसंजदा ओघं' ॥ १६१ ॥ सगमभेदं सुर्वे ।

सुबल्लेस्सिएस मिच्छादिद्विषद्धि जाव संजदासंजदेहि केवडिये स्रतं पोसिदं, होगस्स् असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥

एदं सुनं सुगमं, खेचाणिओगद्दारे उत्तत्थादी ।

छ चोहसभागा वा देसूणा ॥ १६३ ॥

सरपाणपिणद्वास्त्रकेसिस्यामिन्यादिष्टि-सावणसम्मादिष्टि-सम्मामिन्यादिष्टि-असंबर्-सम्मादिद्वीदि विन्दं होगाणमसंख्वादिमागो, विस्थितेमस्स संदेबादिमागो, अङ्गादकादो असंदेक्तमुगो, विहार-वेदण-कमाय-वेडिवय-मार्गविद्यादिष्टि छ चौहतमाना देखणा सोविदा । उवस्य-दर्गाणद्वाकरोस्यमीन्यादिद्वीदि सातगाममादिद्वीदि य चदुन्दं होगा-णमसंखेक्वदिमागो, अङ्गादबादो असंखेक्वमुगो पेतिददे। विरिक्यमिन्यादिद्वि-सातग-

पह सूत्र सुगम है।

शुक्कलेदमाबालोंने मिध्यादिए गुणस्थानसे लेकर संयवासंयव गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती बीबोने कितना क्षेत्र सर्थ्य किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग सर्प्य किया है ॥ १६२॥

यह सूत्र सुगम है, फ्योंकि, क्षेत्रानुयोगद्वारमें इसका वर्ध कह दिया गया है। झुक्कुलेश्यायाले उक्त जीवोंने अवीत और अनागृत कालकी अवेक्षा कुछ कम छह

षटे चौदह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १६३ ॥

स्यस्थानवद्यस्थित गुरूलेद्यावाहे तिस्वाहाह, सासाइनसम्बग्ध्राह, सम्यक्षिप्रधा हि भीर भर्तपतस्थानाहि जीवाँने सामाग्यलोक भादि तीन छोवाँक असंस्थानावां भाव तिर्येखोक्का सक्यानावां भाव है। यहाँदे असंस्थानावां भाव तिर्येखोक्का सक्यानावां भाव है। यहाँदे सार्वाक्षिण है। विद्याहे प्रस्ताक्ष्य स्थान स्थान क्षेत्र है। विद्याहे प्रस्ताक्ष्य स्थान है स्थान है स्थान है स्थान है स्थान है स्थान स्थान है स्थान है स्थान है स्थान है स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान है स्थान है स्थान स्

पद्यतेरपात्राले प्रमत्त और अप्रमत्तर्ययत जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है॥ १६१ ॥

र प्रवाधक्रवीकीरस्यासस्यवस्थातः । सः तिः १, ८. २ तुक्षकेरविभिष्यास्त्रवादिवयतःस्वतानिकीस्त्यासंस्वयभावः वर वृत्रदेशमाया वः देशनाः । सः सिः १, ८. १ तुस्तरु य विद्वाचे परमो स्वादेशः होया ॥ गो. भीः ५४६.

सम्मादिद्वीणं सुक्कलेस्साए सह देवेस उववादमावा। पणदालीसलक्खानायणविवसंत्रेणं पंतरण्डावापामेण द्विद्रस्वेचमाऊरिय सुक्कलेस्सियमिच्छादिद्विन्तासणसम्मादिद्विमञ्जामां वेव सुक्कलेस्सियदेवेस्ववाद्वरुमा । ते तत्य ण उप्पन्नति चि कर्ष णव्यदे १ पंच चोद्दमगापु-यदेसामावादो ।: उववादपरिणद्वसंजदसम्मादिद्वीदि छ चोद्दसमागा फोसिदा, तिरिक्कलसंजदसम्मादिद्वीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसुववादुवर्लमा । सत्याण-विद्वार-वेदण-कसाय-वेउन्वियपरिणदसुक्कलेस्सियसंजदासंजदेहि तिण्हं सोगाणमसंबेज्जदिमागो, तिरियलोगस्य

संखेरबदिमागो, अद्वाद्रजादो असंखेरबगुणो; मार्रणनिवपरिणदेहि छ चोहसमागा फोनिरा, विरिक्यसंबदासंबदाणं सुक्कलेस्साए सह अरुखुदकषे उववादुवलमा । सम्मामिन्छ। दिद्विस्त मार्रगादिय-उववादा णरिय । पमत्तसंजदप्पहूदि जान सजोगिकेवलिं सि ओयं ॥ १६४॥

ष्टार योजन विषक्रमासे भीर पांच राजु आयामसे स्वित क्षेत्रको व्याप्त करके शुरूछेरगणले मिष्यादृष्टि और साखादनसम्यन्दृष्टि मनुष्यांका ही शुरूछेरयायाले देवाँमें उपवाद पाया काठा है।

जाता द । गुरा—गुरुवेदयायाचे तिर्वच, गुरुवेदयायाचे देशों में नहीं उत्पन्न होते दि, यह हैसे जाता है

समापान—चृकि, पांच बटे चौदद मानवमाण स्वर्शनक्षेत्रके उपदेशका समाव है. इससे जाना जाना है कि शुद्रशेदयायांशे तिर्वेच जीय मरकर शुद्रशेदयायांशे देवीमें नहीं उत्पन्न होते हैं।

उपवादयद्यित्वात गुद्रहेदयाबाठि समेवनसम्बग्धि औपीने कुछ कम छह केंद्र बीद्द मान (१)) क्या दिव हैं, क्योंकि, तिर्वेच सर्वयतमस्वग्धि औपीका गुद्धत्याके साव देशोंमें स्वत्याद् यावा जाना है। स्वस्थानसम्बात, विदायनस्वात, वेदता, क्याय भीर केंद्रित क्रिस्ट्यूप्रियत गुद्धतेद्वायाट संवतासंक्योंने सामान्यकोड मादि तीन स्टेलींड मर्वक्यान्य सात, निर्वेक्षीक्स संक्यानयां मान भीर महार्द्धायन भनेक्यानगुष्का भेत्र क्याँ क्यि है। सारमा निकद्युप्रियत क्या स्वीयोंने सह करे वीद्द्य (१) मान क्याँ क्यि है, क्योंकि, विषेक्ष संवतामंद्रयोद्या गुद्धतेद्वयोद माथ मञ्जूकरूपमें स्वयाद पाया जाना है। सार्य-विक्यार्ट्य गुक्तिस्थावादीक मान्यानिक भी स्वयाद व्याव जाना है।

श्याच्याराष्ट्र शुरूरत्याबाराक मारकात्मक भार उपगार, य दा पद मदा दाग द । अमणसंपत गुणस्थानमे हेकर मयोगिदेवशी गुणस्थान तक अत्येक गुणस्थानस्त्री इन्हिलेदपाराने अविद्या स्पर्धनस्त्र ओपके ममान दे ॥ १६४ ॥

र वर्षी बहुत्वर्षात्व व बंबारीश दृश्ति बाग शह बन्तो वा खुद्र बागे वाची दृष्टि हिं मिनिही हैं हो, बी. घरेन हैं य बंबारीश्वरीचेनमान्त्रों करेशाना व बंबान ते शहेरह हु बन्दि हैं, है,

एदं सुचं सुगमं, तदी ण किंचि वत्तव्यमिथ ।

एवं छेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएष्ट् मिच्छादिट्टिपहुडि जाव अजोगि-केविल ति ओयं ॥ १६५ ॥

षदं प्रषं गुगमं, यहमाणारीदकाले अस्मिर्ण आपन्दि पर्वावेरणारे। अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं पोसिदं, सन्यलागो ॥ १६६॥

सत्थाण-वेदण-कमाय-मारणेतिय-उववादपरिणदेहि तिमु वि कार्नेसु मन्दर्गनोत्ते पोमिद्रो । विहार वेडिन्स्यपरिणदेहि बद्दमागकान्ने तिष्टं रहेगाणमनेपेन्बदिमागो, निरिय-होत्तरम संरोक्षदिमागो, अङ्काद्वजादो असमिकसुणो, अर्थान्वामागु रेनियमेपेन्ब्यदि-मार्गमेषो तत्प तत्त्व अभव्यसित वि उवदेसादे। । अद्देश्व अङ्क पार्गमागा पेनिद्रा। प्रव मिक्समागा पासा।

यह सूत्र सुगम है, इसकिय कुछ भी भन्य यक्तस्य मही है।

सन्यमार्गवाके अनुवादते भव्यतिद्विक जीशोर्वे निष्यादृष्टि गुण्यानमे लेहर अयोगिकेनली गुणस्थान कर अत्यक गुणस्थानवर्ती जीशोक रश्चेनक्षेत्र आयोक मसान है ॥ १६५ ॥

यह शुप्र शुप्रम है, पर्योकि, वर्तमान और धर्मातकालको आध्य वरके केन्द्र्ये इसवा महत्वन हो गुका है।

अमन्यसिदिश जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ! सर्वतोह स्टर्श किया

है। १६६ ॥

द्यरभानरवर्धान, वेर्ना, क्याय, आरणातिकसमुक्कान और द्वयान्यरमां जन अभागमितिका अधिने तेनी ही बाराधि सर्वेशेन स्वाम विकार है। विरादकन्यर करेन प्रिकियकान्यपिता आरम्पाधितक अधिने वर्तमाननार्ध्य सामाण्यरेक आर्थन के दौरा असंस्थातवर्धाना तियंग्लीकर संस्थातको आर्थ, और आर्ग्डियोर असंस्थानमुक्का के द स्वाम विकार है। व्यापि, असंस्थात अभागवालो वेसेन्द्रवादि शांतिमोर्थे कर उर्देश असं-व्याम आरमामाण वहाँ वहाँ पर सर्थान उत्त उत्त स्थितिन वातिमोर्थे अभागवर्धा होनी है, स्वा प्रकार आयाचीका उपदेश सामा जाता है। उन्त आयोर्थे अमीनकार्थे आह करे बीहर (१४) भाग स्वाम विवे हैं।

इसम्बार भागमार्गना समाप्त पूर्व ।

द अवापुराचेन पानामा विषयप्रवापशीरवेनामाला हावायीत गार्यन्त हत. ति. १, ४, ४, ५ सामी

है।। १६७॥

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिहीसु असंजदसम्मादिहिषहुडि जाव सजोगिकेविल ति ओघं ॥ १६७॥

एदं सुचं सुगमं, ओधम्डि विश्वि वि काले अस्तिद्व प्रविद्वादी ।

सहयसम्मादिद्रीस असंजदसम्मादिद्री ओघं ॥ १६८ ॥ एदस्स बद्दमाणपरुवणा खेत्तमंगा । सत्याणपरिणदेहि खद्दपअसंबद्धमादिईहि विन्हं स्रोगाणमसंखेलदिमागा, विरियस्रोयस्य संखेलदिमागा, जहाइन्नादा असंखेन्त्रगुणी;

परिगरेहि तिन्हं लोगाणमसंस्रेजिरमागा, अङ्गह्जादो असंस्रेज्ञगुणा, तिरियलोगस संसेच्छदिमागो । तं क्यं लग्मदे ? बद्धाउत्रमणुमस्यस्यसम्माहिद्दीमु तिरिक्सेमुप्पन्तः मानेमु अमंसे अर्दावेसु अच्छिय सोधम्मीसाणकप्पेस उप्पन्नमाणसहयसम्मादिहिष्टुचरीर्ष सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे हेका अपोगिकेरटी गुगस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओपके समान

विहार-वेदण-कसाय-वेडिव्यय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ट चोहसमागा फोसिदा । उत्रवाद-

यह गृत सुगम है, वर्षोकि, तीनों ही कालेंका माध्य करके मोधम प्रह्मण किया शा चचा है।

साविक्रमम्यग्रहियोमें असंयतम्यग्रहि जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र औपके समान វិប १६८ ប . इस स्वर्धी वर्तमानकालिक स्पर्शनमञ्जूषणाः क्षेत्रके समान दे। स्पर्धानस्परधानपरः

परिचन अभेवन शायिकसम्यन्द्रियोने सामान्यलेक आदि तीन छोडींका असंत्यातयी गाण निर्देभ्तेष्टक संस्थानयां माग भीर भदाईडीयन असंस्थानगुणा क्षेत्र स्वर्श किया है। विशर्र कप्रवस्थान, वेदना, क्याय, वैतियिक और मारणानिकापद्वरिणत उमा तीयीन बाड की बीरर (री) माग स्वरी किये हैं। उपपान्यस्परियन क्षयंयन आविश्वसायारशियोंने सामानी-कोच करि होत. होचोदा सनेक्यातयो प्राय. बहाईई।यम सनेक्यात्मका और तिर्वेग्डोइडा संस्थालको प्राप्त कार्या हिया है।

देश- रदरात्यन अनंदन आदिश्मागन्ति अधिका स्वर्धनशेष निर्वेग्लीहर्दे संस्थात्वे मानववाच देने वाता जाता है है

मुद्दान-तिर्वेदीने काम दीनेगाँउ बढायुष्ट झाविद्रमध्याराधि मनुपाँहे असंख्यान द्वीराजिनद बरवे बुदः मनबवन सीवार्व और ईशानवसीव क्याप देतिकी

र बन्यस्यान्त्रस्य बर्ध्यस्यस्य क्रिक्तार्थस्य व्यवस्थान्त्रस्य विश्वतिकार्यस्य विश्वतिकार्यस्य विश्वतिकार्यस् earm d'assistant (a. fr. 1 de

मणुस्तेसुप्पञ्जभागवर्षयसम्मारिष्ट्रिगोसिट्वेषं च चेतृत सम्बर्द । एट्टिम सेवे आलिङ-माणे देवणजोपणवस्त्रवाहरूवं रज्जुषदरं वहुं सचयमोग छिदिय पररागारेल टरेद तिरिय-स्रोगस्स बाहरूवादो संवेज्जदिमागबाहरूवं चगपदरं होदि । एवं संजादे आवर्षं कर्ष खण्जदे १ ण, उववादविरहिदसेसपदस्वेचेहि तुस्त्रचमावेस्स्त्रिय ओपनुववर्षात् ।

संजदासंजदणहुडि जान अजागिनेनटीहि केनडियं सेतं पोसिदं,

होगस्स असंखेज्जदिमागो II १६९ II

एदस्स बङ्गाणपरःवणा सेवभंगा। सरवाण-विदार-वेद्धा-वस्ताय-वेटीव्यवस्तिहोद्दे खद्यसम्मादिद्विसंबदासंबदेदि चदुष्टं लोगाणमध्येयज्ञदिभागो, माणुमयेवस्य संगे-ज्वदिभागो, संस्रेजा भागा या, पोशिदा; खद्यसम्मादिद्विसंबदार्गवदार्ग विविक्तेयु अर्यस-यादा। मार्गवियपरिणदेहि चदुष्टं लोगाणमयेराज्ञदिभागो, अङ्काद-वादो अर्गवेक्ष्युको सीदे काले पोसिदो, पणदालीसज्ञायणलक्याविक्संभेग संस्रेजसज्ज्ञस्यद्योजस्योजस्योजस्योजस्य

शायिकसम्यन्दियोले स्पर्तित क्षेत्रको, सथा पटिने व्यवस्य मनुष्योते रुपम होदेवाहे शायिकसम्यन्दियोले स्पर्तित क्षेत्रको प्रदल करके निर्देग्लेखके संस्थानके भ्रामसमाय वर्णीक क्षेत्र पापा जाता है।

इस उन क्षेत्रके निकालनेपर कुछ कम यक लाख योजन बाहरवव ने शतूकरको अपरक्षे सातके वर्ग (४९) द्वारा छेड्कर प्रतराकारके स्थापित करने पर निर्वग्रेष के बाहरवक्रे संक्यातये भाग बाहरवयाला जनमतर होता है।

श्रीका - पेसा दोने पर स्वोक्त ओवपना की घटित होगा !

समाधान-नहीं, वर्षीके, उपपादपदको छोड़ दोन वहींके क्षेत्रीहे काछ सक्षातन्त्र देखकर भोषपना यन जाना है।

सायिकसम्बन्धियोमें संबवासंबव गुणस्थानमें सेवर अवीमिवेदती गुणस्यात्र तक प्रायेक गुणस्थानवर्धी ओवोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। सोवदा असंस्थानसे माग स्पर्ध किया है।। १६९॥

स्त गुजरी वर्गमानवादिक रुप्योनवादणा सेवयदप्याने समान है। वरत्यान स्वरुप्यान, विद्यादप्यस्त्यान, वेद्या- व्याव और दिविवरद्यांत्रिक रुप्योप्यमञ्ज्ञान वेद्या- व्याव और दिविवरद्यांत्रिक रुप्योप्यमञ्ज्ञान विद्याना व्याव और अपने स्वरुप्यान व्याव स्वरूप्यान स्यूप्यान स्वरूप्यान स्वरूप्यान स्वरूप्यान स्वरूप्यान स्वरूप्यान स्

पमचोदिगुर्णर्डाणाणं औघमंगो, विसेसामाता ।

ः . सजोगिकेवली ओघं ॥ १७० ॥

. एदं सुचं सुगमं, ओयम्हि परुविदचादो ।

ः वेदगसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्विपहुडि जाव अपमत्तसंजर ति ओर्घ ॥ १७१ ॥

ात चात्र । । १०१ ॥ पदस्य सुचस्स बेण अदीद-बद्दमाणपरुवणा मृत्रोधम्हि उचचदृगुणहाण अदीद

वहमाणपस्त्रणाए तुष्ठा, तेण ओवचं जुजदे ।

चत्रसमसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्वी ओर्च ॥ १७२ ॥ वद्यमाणपस्वणाए सञ्चपदाणे ओवर्च होदु णाम, विसेसामावा । अदीद-पस्वणाए वि.सरयाणस्स विरियलोगस्स संवैज्ञदिमागमेचखेनुवर्लमादे। विदार-वेदण-कवाय-वेउन्तिप

पदाणं य देम्रणह-चोह्समागमेचसेनुबन्धमादो आचर्च छुज्बदे । किंतु मारणंतिय उदबार

मरूपणा ओघके समान है, पर्योक्ति, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओवके समान है ॥ १७० ॥ यह सूत्र सुराम है, क्योंकि, ओवमें इसका प्रकृपण किया जा जुका है।

यह सूत्र सुगम ह, क्याक, बाहम इसका प्ररूपण किया जा जुका है। वेदकसम्पग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्पग्दृष्टि गुणस्थानमे रेकर अप्रमनसंप्र

गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्यनक्षेत्र जीपके समान है ॥ १७१ ॥ चूंकि, रस खुककी बर्तात बार यतमानकालिक स्पर्तनप्रपणा मूलोपमें बर्दी गर्

टक चारों गुष्टरमानोंकी अवात और यतमानकात्रिक प्ररुपमाके समान है, इसत्रिर मोर्फ पना वन जाना है। विवादानिकारमारतियोंने असेनकारमानी विभेत्र समानिक केल्क्ट मानि

जीपग्रमिकसम्पन्दिष्योमें असंपतसम्पन्दिष्ट जीवोंका स्पर्गनेक्षेत्र जोपके समान है ॥ १७२ ॥

ह ।। ६०४ ॥

ग्रिंका — वर्गमानकालिक स्पर्धानकी प्रकारणार्थे सर्व प्रदेशि ओपवाना मेले ही स्वा
स्वाव, क्यों है, उसमें कोई विदोयना नहीं है। सर्गानकालिक प्रकारणार्थे मी सर्व प्रदेशि मोवपनी
स्वा भाव, क्यों है, सर्गानकरणार्थे मी स्वस्थानवर्दका स्वानकोत्र निर्यालोक्का संस्थानवी
मागमात्र पाया जाता है। तथा, विदायक्वरभ्यान, वेदना, क्याय, और वैदिविक्यों हो
स्वानिकेक कुछ कम श्राट करे चौहह (हु) मागवमाण वाय जानेसे मोयपना कर जाता है।

<sup>्</sup>र सारे पर विषय भारतीयाँ सामान्योत्तर् । स. ति. १, ८० १ सीवर विषय भारताय स्वत्यास्य स्वत्यास्य सामान्योत्तर् । स. ति. १, ८०

परिणदाणमोषपं पत्थि, ओधिन्द उत्तं अट्ट-बोह्समागरोतं मोमूण चर्द्णः स्रेणाणम-संसेजदिमागो, माणुसरोत्तादो असंसेन्जगुणमेत्तपोसणसेनुवरुमा । कुदो १ मणुसगरि मोमूण अप्यत्य उदसमसम्मतेल सह मराणायुवरुमा १ ण एस दोसे, मार्ग्शतिय उवगदे मोनूज सेसपेदेहि सरिसचमरिय चि ओपलुवरवीदो ।

संजदासंजदणहुडि जाव उनसंतकसायवीदरागछदुमत्येहि केवडियं खेतं पोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ १७३ ॥

एद्स्स सुचस्त बङ्गाणपस्त्रणा खेचमंगा। सत्थाण-विज्ञार-वेदण-कताप-वेद्यिय-परिणद्ववसमयमाहिष्टि-संबदासंबदेदि तीदे काले तिण्हें लोगाणमसंस्वेन्वदिमागो, विरिचलेगास्स संख्यादिमागो, अङ्गार-कादी असंखेन्वत्याणो पोसिदो। मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेनविद्यागो, अङ्गार-कादो असंखेनव्याणो पोसिदो, मणुसग्दीर चेच मार्सावियदेवणादो। सेससण्याणङ्गाणाणोगपंगी।

किन्तु भारतान्तिकसमुद्धात और उपपादपद्मारिकत अधिके श्रीधपना नहीं बनता है, वर्षोंकि, भोधमें कहा गया भाठ बटे पीदद ( र्रून ) भागमाण होत्र छोड़कर सामान्यलोक श्रादि चार लोकोंका मर्वक्यतायो भाग और मनुष्यक्षेत्रको असंक्यातगुणे भागणवाटा स्पर्धन-क्षेत्र पाया जाता है। और इसका कारण यह है कि मनुष्यातिको छोड़कर मन्यत्र वयसान-सम्यक्यके साथ मरण नहीं तथा जाता है?

समाधान — यह कोई दोप नहीं है, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्धात श्रीर उपपाद, इन दोनों पदीको छोड़कर रोप पदीके साथ सरदाता है, इसलिय कोपपना यन जाता है।

संवतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपयान्तकपायशीवरागाडयस्य गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपयासम्यग्दिष्ट्योंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका असंख्यातयां भाग स्पर्ध किया है॥ १७३॥

स्त सुनकी यर्तमानकालिक स्वर्तनप्रस्ता क्षेत्रप्रस्ताक समान है। स्वस्थान स्वरमान, विदायन्त्रस्थान, वेदना, क्याय और विकिथकप्रयोग्यत उपरामसम्बद्धि स्वरात्मान क्षेत्रस्यान वेदना, क्याय और विकिथकप्रयोग्यत उपरामसम्बद्धि स्वरात्मान अभिक्षा संस्थातवां भाग, विविध्वीक्ता संस्थातवां भाग विद्यात्मान स्वर्तात्मान स्वर्तान स्वर्तात्मान स्वर्तान स्वर्तात्मान स्वर्तात्मान स्वर्तात्मान स्वर्तात्मान स्वर्तात्मान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तात्मान स्वर्तान स्वरत्वान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वरत्वान स्वरत्वान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वर्तान स्वरत्वान स्वर्तान स्वरत्वान स्वर्तान स्वर्तान स्वरत्वान स्वर्तान स्वरत्वान स्वर

सासणसम्मादिही ओवं' ॥ १७२ ॥

सम्मामिच्छादिही औषं ॥ १७५॥

मिच्छादिड्डी ओघं ॥ १७६ ॥ एदाणि विण्मि वि सुचाणि अत्रगद्दयाणि, ओवस्टि परुविद्चार परुवणा ण कीरदे ।

एवं सम्मत्तमग्ग्णा समता । सिण्णयाणुनादेण सर्ण्णासु मिच्छादिद्वीहि केनडियं खे

लोगसा अंसंखेज्जदिभागों ॥ १७७॥

एदस्त सुवस्त परुवणा खेचमंगा, समङ्गीणबटमाणकालचादो ।

अड चोइसमागा देसूणा, सव्वलेगो वा ॥ १७८॥ सत्याणपरिणदेहि साम्गिमिच्छादिद्वीहि चीदे काले विण्हं लोगाणमसंसेज

सासादनसम्पार्टिष्टि जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ १७४॥ सम्पन्मिष्यादृष्टि जीवाका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ १७५ ॥ मिध्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र जोषके समान है ॥ १७६ ॥ ये उक्त तीनों ही सूत्र शोधमें प्रकृषित होनेसे अयगतायं हैं, अधीन हन बाना हुमा है। इसलिए इनकी मकरणा नहीं की जाती है। इस प्रकार सम्पनन्यमार्गणा समाप्त हुई।

संजीमार्गणाके अनुवादसे संग्री जीवोंमें मिध्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्वर्ग । है ! होकका अमंख्यातवां माग स्वर्ग किया है ॥ १७७ ॥ यतैमानकासको साधाय करनेले इस स्यक्षी क्यांनमक्याणा शेवप्रक्रपणाके समान मंत्री जीवोंने अनीन और वर्नमानकानकी अवेक्षा इछ कम आठ वटे चीव माग और मर्बेटोक स्पर्ध किया है ॥ १७८॥ व्यव्यानव्यस्यानपरियन संबं निष्पाष्टीष्ट भीयोन धनीनवालमें सामान्यनोक धारि तीन होडोंडा असंस्थातयां माग, नियंग्होडका संस्थातयां माग, और अग्रादेशयां गराक्यात तिरियलोगस्स संक्षेत्रदिभागो, अङ्काइजादो असंक्षेत्रज्ञमुणो पोसिदो । विहार-वेदण-कसाप-वेउन्त्रियपरिणदेहि अह चोहसभागा, मारणतिय-उपवादपरिणदेहि सन्त्रलेगा पोमिदो ।

सासणसम्मादिहिपहाडि जाव सीणकसायवीदरागछदुमत्या ओधं ।। १७९ ।।

एदेसिमोघादी ण की वि भेदी अत्यि, साण्यरहिदसासणादीवामभावा । असण्णीहि केवडियं क्षेत्रं पोसिदं, सन्वलोगों ॥ १८० ॥

सत्याण-वेदण-कसाय-मार्गतिय-उत्रवादपरिणदेहि असर्णाहि तिस वि अदाम सञ्बलोगो पोसिदो । विहारपरिणदेहि तिण्डं लोगाणमसंग्रेज्जदिभागा, निवियलोगस्य संखेरजदिभागा, अहार्रजादी असंखेरअगुणी तिमु वि कालेमु पेरिमदी। वेउन्यिपपरिचदेहि चदण्डं होताणमसंखेजनिरमागा, माणुसखेचादी असंखेजनगुणी बहुमाणे पीमिटी । शीरे पंच घोहसभागा चि यचन्त्रं ।

## एवं स्विगमगणा समता ।

गुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विदारयरस्यस्थान, घेदना, कथाय, भीर वैत्रियकपद्यारितान संदी निष्याद्दश्चित्रीयोने भाठ बढे चीद्द ( 🕼 ) भाग स्पर्श किये हैं। मारणानिकसमञ्चात और उपपादपरपरिणत संबी आधाने सर्वलीक स्पर्ध किया है।

संसी जीवोंमें सासादनसम्यग्राष्टि गुणस्यानसे क्षेत्रर शीणक्षपायबीवरागढ्यन्य गुज-स्थान तक प्रत्येक ग्रुणस्थानवर्ती जीवोंका स्वर्धनथ्रेत्र जीवके समान है ॥ १७९ n

इस गुजस्थामाही स्पर्धानमहत्रजाना श्रीयस्पर्धनमहत्रजाते कोई सेन नहीं है.

क्योंकि, संक्रियसे रहित सामादनादि गुणस्थानीका अभाव है ।

असंबी जीवोने कितना धेत्र स्पर्श किया है ! सर्वलोक स्पर्श किया है ।।१८०॥ रपश्यानस्थरधान, येदना, वायाय, मारणान्तिक और उपपारपरपरिवत असंडी जीवोंने तीनों ही कालोंने सर्पलीक स्पर्श किया है। बिदारवन्त्वस्थानवद्दष्टिन कीकोंने सामान्यलोक मादि तीन छोक्षीका असंख्यातयां भाग, तिर्यन्तोकका संख्यानयां भाग, श्रीर ग्रमध्यारोक्से असंस्थानग्रणा क्षेत्र शामी ही कारतीमें स्पर्श किया है। वैकियकपर्पारकर बारोबी कीबींते सामान्यहीना भारि चार सोबींना असंस्थातना माण भार मनुष्यक्षेत्रसे असंब्रातम्या शेष वर्तमानकालमें कार्स किया है। अनीतकालमें यांव कर बंदह (1) भाग श्वरी किये हैं, देला बहना चारिय। इस बचार शंबीयार्गेषा समाप्त हुई।

इ प्रतिष्ठ "कोरिव" इति वाउः, स प्रती "को कि " इति वातः। ६ सब्दिभिः दर्वेडीमः स्टूडः । स. हि. १, ८.

एक्खंडागमे जीवद्रार्ग 1 tr 8, tct

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिडी ओवं'॥ १८१ ॥

उवबादस्स रज्ञुवायामा आहारणिकृद्धे ण सञ्मदि, तेत्र सञ्चलेगो पोसणामावा सेसं सुगमं।

णोपचं जुन्जदे हैं ण, सरीरगहिद्यदमसम् बहुमानजीवहि आऊरिद्सन्बलोस्वलमारी ।

सासणसम्मादिद्विष्यहुिं जाव संजदासंजदा ओवं ॥ १८२ ॥ एदस्स बहुमागपस्वणा खंचमंगा । तीद्कालपस्वणं मण्यमाणे पोत्रणीयान्दि चदुन्हं गुपहूम्मापं बहा उचं तथा वचव्यं । पवरि सामगसम्मादिहिः असंबद्धम्मादिहीहे दवनादपरिपदेहि निन्हं सागाणमसंखेबिरिमागा, निरियसागस्य संखेरबदिमागा, अद्वार-च्यादी असंग्रेजनगुणी पीसिदी।

पमत्तसंजदणहुडि जाव सजोगिकेवर्टीहि केवडियं खेतं पोसिरं, रोगस्त असंसेज्जदिभागो<sup>'</sup>॥ १८३ ॥

्रआहारमार्गनाके अनुवादसे आहारक जीवोमें मिध्यादृष्टियोका स्पर्टनसेव औपके समान है।। १८१॥

प्रदेश--- माहारमार्गनाकी मनेशा कथन करनेपर उपराहण्डका राजुममान मायाम महीं पूर्व जाना है, हमन्त्रिय सर्वशेष्ट्रमाण क्षेत्रके स्पर्शनका समाव होनसे मोपपना नहीं बनता है ?

ममापान - नहीं, क्योंकि, पारीर प्रदेश करने हे प्रथम समयमें यनमान जीवास व्याम सर्वेटीक के पांच जानेस मीपपना बन जाना है। शेर भर्ष सुगम ही है।

माबादनमम्बरहरि गुनस्थानमे लेकर भेषताम्बन गुनस्थान तक प्रत्येक गुन-स्पानवर्गी बाहारक जीरोंका स्पर्धनक्षेत्र बोपके मनान है ॥ १८२ ॥

इस स्वतः वर्गमानद्यात्रकः स्वर्धनवस्त्रपणः क्षेत्रकः समान है। स्वीतकालकी वह-

का करने उर स्वर्धन के थोपने देशा कि इन थारों गुलान मोडर स्वर्धन स्वर्धन कहा है, इसी कारसे बहुना बाहिए । विशेष बात यह दे कि उपयादगरियान मानगरनमध्यप्रांह मीर खंदनमारामाहि क्रांसीन मामान्यतीह बाहि नीन लोहोहा ध्रमंग्यानयां ग्राम, विद्यानीहरू बरातको माना भीत महार्वहीयने मध्यवरातगुणा शेव रुपरी दिया है

अक्तरक इति विभवनंत्रत गुनन्धानमें देश मर्थागिरेन्सी गुनन्धान तक पेंड गुरुधानवती अंतीन हितना धेन रुख हिया है ? मोहहा अपग्यानवी बाग

ne callegra a linin centre designation and artifection etc. The femiliar

एद्स्स सुत्तस्य परवणा अदीद-बट्टमाणेहि ओपतुल्ला। णवरि सञ्जेपकेवली पदर-रोगपरणपदा णविष्।

आहारएमु कम्मइयकायजोगिभंगों ॥ १८८ ॥

इरो १ कम्मइयकायजोगीतु सब्देतु अलाहारिनुवर्तमादै । अजोगिअलाहारिक्स्वलहमुचरमुचे मलदि-

णवरिविसेसा, अजोगिकेवर्रीह केवडियं खेतं पोसिदं, रोगस्स असंक्षेत्रजदिभागो ॥ १८५ ॥

एटं सर्च सवमं ।

( एवं आशरमगणा समता ) एवं फोसणाणमधे जि सम्मत्तविश्वीगराहं ।

इस स्वर्धी प्रस्तवा प्रतीत और वर्गमान इन, दोनों कालेंको भरेता मोववस्वराई समान है। विशेष पात यह है कि सर्वाविकेवलोंके प्रतर और लोकपृश्यममुहान, वे दो पर् नहीं होते हैं।

अनाहारक जीवोंने संभवित गुणस्थानरती श्रीवेद्या रपर्यनक्षेत्र कार्यणकार मोगियोंके क्षेत्रके समान है 11 १८४ ॥

इसका कारण यह है कि सभी कामेणकायधोगियों के ममाहारकपना पाचा करना है। भनाहारी भयोगित्रिनके स्परानक्षेत्रके प्रकण्य करनेके लिए उत्तर गृव बहुने हैं—

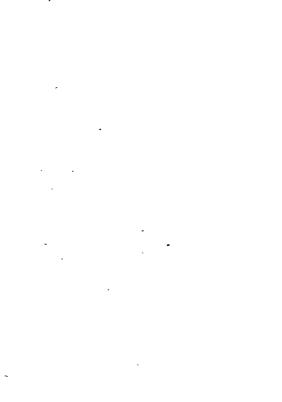
विशेषं बात यह है कि अयोगिकेवलियोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। होक्का असंख्यातको भाग स्पर्ध किया है।। १८५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

(१स प्रकार बाहारमार्गका समाप्त १६१) १स प्रकार स्वर्धनानुगम नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

१ जनातुरनेतुः विनवशिक्षिः वर्षेत्रीवः स्तुष्टः । कालायवत्त्वरुपिकित्तेवनस्यक्तिरेयसम्म, स्वत्रव पत्रदेवमाया वा देशेनाः । वदीपिनवन्तिना केण्यवातंत्वनेयमायः वर्षेत्रीकां वा १ व. वि. २, ८०

व अभोगवेबिको होवरवालंक्देवमायः । ह. हि. १, ८.









सिरि-भगवंत-पुष्फदंन-भूदविः पणीदो

## छक्खंडागमो

सिरि-चीरसेणाइरिय-विरद्दय-धयटा टीका-समण्णिदो

पढमचंहे जीवहाणे कालाणुगमो

पत्मकरुं हृतिक्वं<sup>।</sup> विषुद्सस्वत्यमुत्तवस्यमणं । णमिजण उसहसेलं कालविकामं भविस्मामा ॥

कालाशुममेण दुविही णिद्देसी, ओपेण आदेमेण य'॥ १ ॥ णामकालो टबणकालो दब्बकालो भावकालो चेदि कालो चटक्किरो । तथ बासकालो

णाम कालसदो । कर्ष सदी अपालं पडिवज्ञादि चे, व एस दोमी; में-परप्पानमपद्दस्यः कमें इच करां करों उचार्ण, सर्व बसोंके जाननेवाले, धार धरन सर्रत अर्थात् सस वाहित, देशे प्रवासिक गावासको समस्माद करके सब बाह्यानुसामातको स्टूरे हैं ह

कालानुरामसे दो प्रकारका निर्देश है, जोपनिर्देश और बादरानिर्देश ॥ है ॥ नामकाल, क्यापनाकाल, प्रत्यकाल, और भावकाल, इत मकारसे काल कर महारका है। उनमेरी काल ! इस प्रकारका मार आपकाल, कर क

रीका - हाम केत अपने आपका मितपादिन करना है? प्रभा कार्य कार्र होत नहीं है, क्योंब, सार्व्ह क्व-प्रस्वसासक स्टान्ट्ड

g er all dudigt. Geraublad bad bie ein रेसतपद ६४ सम्बद्ध

e ain setas in later mini de desa a a Er + 20 - 66 - 124 - 1

y viel acte and the die te de . weine tie . - extente

पडिवादीर्णमुबरुंमा । सो एसी इदि अण्णम्हि बुद्धीए अण्णारीवर्ण ठवणा णाम

दुविहा, सन्मावासन्मावमेदेण । अणुहरंतए अणुहांतस्य अण्णस्य सुद्वीण स सन्मावह्वणा । तन्वदिरित्ता असन्मावहुवणा । तत्य सन्मावहुवणा काली णाम' प **कुरिय-कुलिद-क्रालिद-फुलिद-मग्रलिद-**कलकोइल**पु**ण्णालावरण**संदु**ज्जोइयचिचालिहिय असन्भावद्ववर्णकालो णाम मणिभेद'-गेरुज-मही-ठिक्सदिस वसंतो ति बुद्धिवलेण ट दव्यकाली दुविहो, आगमदो गोआगमदो य । आगमदो कालपाहुडजागगी अणुव णोआगमदो दव्यकाले। जाणुगसरीर-मत्रिय-तव्यदिरित्तमेदेण तित्रिहो । तत्य जाणुग णोजागमदन्युकालो भविय-त्रहृमाण-समुज्ज्ञाद्मेदेण तिविहो । सो वि बहुसा पुर्व्य प चि णेह बुच्चदे । भवियणोआगमद्व्यकालो भविस्सकाले कालपाहुडजाणओ जीवो गद्दोगंघ-पंचरसद्वपास-पंचवण्णो इंमारचकहेद्विमसिलव्य वचणालवस्यणो लोगागास

आरोपण करता स्यापना है। वह स्थापना सद्भाव और असद्भावके भेदसे दी प्रकारन अनुकरण करनेवाली वस्तुमें अनुकरण करनेवाले अन्य पदार्थका बुद्धिके द्वारा समारोप सद्भावस्थापना है। उससे भिन्न या विपरीत बसद्भावस्थापना होती है। उनमेंसे पह अंकुरित, कुलित, करिलत, पुष्पित, मुकुलित, तथा कोयलके कलकल आलापसे प यनखंडसे उद्योतित, चित्रशिक्षेत यसन्तकालको सद्भायस्थापनाकालिक्षेप कहते मणिविशेष, गैठक, मही, ठीकरा इत्यादिकमें 'यह वसंत है ' इसमकार बुद्धिके बहसे स्थ करनेको असङ्गायस्थापनाकाल कहते हैं।

मतिपादक दाव्द पाये जाते हैं। 'यह यही है 'इसप्रकारसे अन्य यस्तुम युद्धिके हारा भ

आगम और नोशागमके भेदसे द्रव्यकाल दो प्रकारका है। कालविपयक प्राप्त बायक किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यकाल है। बायकशरीर, और तद्व्यतिरिक्तके भेद्से नो भागमद्रव्यकाल तीन प्रकार है। उनमें शायकदारीर नो भा द्रव्यकाल मायी, वर्तमान और स्वक्तके भेदले तीन प्रकारका है। यह भी पहले बहुत मरूपेंग किया जा चुका है, इसलिय यहांपर पुनः नहीं कहते हैं। मार्थिप्यकालमें जो कालप्राभतका हायक होगा, उसे भाषीनोशागमद्रव्यकाल कहते हैं।

जो दो प्रकारके गंध, पांच प्रकारके रस, आठ प्रकारके स्पर्श और पांच प्रका थर्णसे रहित है, कुम्मकारके चक्रकी अधस्तन शिला या कीलके समान है, यर्तना ही जिस्

१ भा प्रती 'पर्रदिवादीन-'; क प्रती 'पवादीन ' इति पाठः ह

२ अ-इ बलोः ' समाबद्वमा बर्गसंस्थानादिवातुद्वर्गतः विश्वदावाहेशितं काठो लाम ' इति पाठः । संस्कृतरावदावः केवतं सद्भावस्थापनायाः स्वरूपकोषकं थियाचकं प्रतिमाति, व तु मृत्तप्रेयावः । क प्रती सम्मार-रियमपूर्व = दि दिन्द्युरकन्वते ! देव बर्दवातुमानस्य पुष्टिकांदते । बा मती छ संस्कृतवादयांती मीपकन्यते

६ वितर "विभिन्नः गेरव- " इति पातः । व वती " विभिन्नः " इति पारी नोगकन्यते ।

अत्यो तब्बदिश्चिणोआगमदब्बकाले।' णाम । वर्च च पंचतिथपाइडे-काली नि य बकामी सत्भावपहत्रओं हवर गिरुको । वण्णापदेसी अत्रो टीहेतरहाई ॥ १ ॥ बालो परिगामभवो परिणामो दन्त्रराजसंभक्षे । दीर्ण्ड एस सहाओ कालो खनमंगरी नियदी ।। २ ॥ ण य परिणमह सर्व सो ण य परिणानेह अज्जनजोदि । विविद्वपरिणानियाणं हवड सडेऊ सपं काटो ॥ ३ ॥ छोपापासपदेसे एकोको जे दिया द एकोक्स ।

> रयणाणं रासी इव ते कालाग्र मणेयत्रा ॥ ४ ॥ जीवसमासाय वि उसं-

रुप्येचणविद्याणं अत्याणं जिलाकीबाराणं । . आणार अहिमनेण य सरहणे होह सम्पर्चे ॥ ५ ॥

लक्षण है. और जो खोबाबाबायमाण है, पेसे पहार्थको तहम्पितिरिक्त माग्याहरम्बाह बहुते हैं। पंचारितकायमाध्यमें कहा भी है-

'बाल' इस मकारका यह नाम शत्ताक्य निध्ययकारका मक्यक है। बार बह निध्ययकालद्रम्य अधिनासी होता है। दूसरा स्यवहारकाल अत्यम और प्रश्नंस होनेवाला है। तथा भावती, पत्य, सागर बाहिके रूपसे दीर्घवात तक स्थायों है ॥ १ ॥

व्यवहारकाल पुरुलोंके परिणमनसे जल्पन होता है, और पुरुलाईका परिलमन क्त्यबाहको द्वारा होता है। दोनाँका पैसा स्थमाय है। यह स्थयहारबाल शक्रमेगर है, बरुन विभागवास नियम सर्थान सविनाद्यों है है र ॥

यह कालनामक पदार्थ न तो रायं परिणमित होता है, और न बागको भाषद्वसे परिणमाता है । किन्तु स्ततः माना मकारके परिणामाँको मात होनेवाले पदायाँका काल सर्व सदेत होता है । ३ ह

लोकाकाराके यक यक मरेरापर रत्नोंकी राशिके समान को यक यक कपने रियन हैं, वे कालाल जानना चाहिए। ४॥

जीवसमासमें भी कहा है-

जिनवरके द्वारा वपहिए छह द्वस्य, अथवा पंच मस्निकाय, अथवा बद पहारीका शाहाले और मधिगमले धडान करना सम्पक्त है ॥ ५ ह

१ वर्गर्यप्रवस्थाती वर्गम्पेरंच अप्रवासी व । अप्रवाही अप्रती व्यवस्थां व कारी कि प्र ६ वेशारिङ, शा. १०८, १ दशक्ति स्ट १००, áunta. n. tv. ४ थी. बी. ५८८० 4 th #1. 41 ..

तह आयारंगे वि युत्तं--

पंचित्यमा य द्वाजीविश्वायकालद्व्यमणो य । आणामेको मात्रे आणाविचएण विचिणादि ॥ ६ ॥

तह गिद्धांपछाइरियण्पयासिदतच्चत्यसुचे वि 'वर्चनापरिणामिकया परतापरः कारुस्य' १ इदि दच्चकालो परुविदो । जीवद्वाणादिसु दच्चकालो ण युनो वि तस्ता ण बोर्नु सिक्ष्ण्जिदे, एत्य छदच्यपदुष्पायणे अहियारामावा । तम्हा दच्चकालो अरि धेचच्या । जीवाजीवादिअहमंगरच्यं वा णोआगामदच्यकालो । मावकालो दुविहो, अ णोआगामभेदा । कारुपाहुडनाणओ उवजुनो जीवो आग्रमभावकालो । दच्यकालम परिणामो णोआगामभावकालो मण्णदि । योग्गलादिपरिणामस्स कर्य कारुववएसो? ण

उसी प्रकारसे वाचारांगमें भी कहा है-

पंच शस्तकाय, पद्जीवनिकाय, कालद्रव्य तथा श्रन्य जो पदार्थ केवल आणा श जिनेन्द्रके उपदेशसे ही आहा ही, अहें यह सम्प्रक्ची जीव शाणविचय धर्मप्यानसे र फरता है, अर्थात् श्रद्धान करता है ॥ ६॥

तथा गृद्धपिष्टाचार्यहारा प्रकाशित तत्त्वार्थस्थमं मी 'वर्तना, विशाम, वि परत्व और व्यवस्थ, वे कालद्वत्यके उपकार हैं ' इस प्रकारसे द्वव्यकाल प्रकृषित शीवस्थान वादि मंग्रीमें द्वस्थान नहीं कहा गया है, इसलिए उसका ब्रमाव नहीं सकते हैं, क्योंकि, यहां जीवस्थानमें छद्द दृत्योंके प्रतिवादनका अधिकार नहीं है। इस 'द्वव्यक्षाल है' ऐसा स्वीकार करना चाहिए।

अध्या, आंव और अजीव आदिके पोगसे यने हुए आठ मंगकर दृज्यको नीमा ह्याकाल करते हैं।

धागम और नोमागमंद मेदसे मायवाट दो महारका है। वाट-वियवक माधून बावक और वर्गमानमें व्यक्त जीव भागम मायकाट है। द्रम्यकाटसे जनित परिवास धरिस्तमन नोभागममायकाट कहा जाता है।

t Ferei. 155.

';

ŕ

दोसी, केजने कारणोचपारणिकंपणचादो । वृषं च पंत्रीत्यपादुडे वनहारकालस्य अन्तिकं सम्भावसहामणं जीवाणं तह य पोग्गटात्रं च । परिवह्नासंमुओ काछो नियदेन पञ्चले'॥ ७॥ समजो जिनिसी बट्टा पर वाली नही दिवासी । मास रहू अपग संस्कृते वि काले पगदचाँ ॥ ८॥

णिव विदं वा जिल् उत्तादिदं हु सा वि तर उद्या। पीमान्डरनेन दिना तरहा बाना रहेन्त्र महा,॥ ४॥ १६१ पत्य केण कालेण पपदं ? जोत्रागमदो माक्कालेम । तस्म ममय भावनिय-गर-ध्व-महिन्-दिवसं-तक्ता-माम-वह स्वता-स्वन्तार विग वेट-तट-विग्रिट-मामास्वमार-त्वन्तर्थः । क्षयमेदस्य कालव्यवस्यो रे या, कञ्चन्ते भाग्यस्यने कर्यन्यन्त्राधार्यस्यन्त्राधार्यक्राहरू स्वयादो । क्षयमेदस्य कालव्यवस्यो रे या, कञ्चन्ते भाग्यस्य कर्यन्यस्थानस्य नाधार्यक्राहरू

रंका—पुत्रल भादि व्यवांके वरिवामके 'काल 'यह संबा है से संवव है ? समाधान-पद बार्द सेंग्य नहीं, क्योंकि, बार्यन कारकह क्रकारक निकंपकर प्रतादि हत्योंके परिणामके भी 'काल' संकादा क्यारात है। वहना है। हे इत्याक प्राप्ताभक्त भा कार राज्यक कहा थी क्या है... प्रवास्त्रिकायवाधुनमें क्युटारकाष्ट्रका कान्त्रिय कहा थी क्या है...

त्वतास्त्रहरूष स्वमायबाल आवाह, मध्य बुम्हाई श्राह के मान्त्री वस्त्रम् । त्वास्त्रहरूष स्वमायबाल आवाह, मध्य बुम्हाई श्राह के मान्त्रम् क्षप्राद्यक्ष रववायवाल जावार, तथव पुरुलार बार व हानुगर वसहार, काप्रमुद्दय और आकारामुख्यके परिवर्णनी को निमित्तकारत हो, दर निवसी वाल्डक धार १ ७ ० समय, निमिय, बाहा, बटा, माली, तथा दिन और हाहि, मास, इन्ड्र असन और राभयः भागाः वर्धाः वर्धाः वर्धः वर्धः वर्धः वर्षः स्वयः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व वर्षाः इर्षादि कालः प्रापसः है। अपूर्वि जीए, प्रतः एवं प्राप्तिक ह्रास्ते केने अस्त अस्त

वर्गमारित विर मध्या शिवकी, मध्ये पराव और मपायकी, कोर सम्मन वनमाराहत । धर भवन । १६१४वा, भवान घराव भार सवस्ववा, वाह सम्म बहा वह वर्षमा भी पुन्नस्वयंदे विना मही होती है, हर्सावर बाह्यक पुन्न के निर्मान प्राच्या करण वर्षित भनेक प्रकारने नालोगीत वटावर किस नालेश क्योंक्ट हैं। समापान - माभागमभावदालसं प्रयोजन है।

विभाषाम् मान्याः स्थाः स्थः वार्तः । १००० दासः स्ट स्टरः , पुन, पूर्व, वर्ष, प्रधोवम, सामरोवम बाहि इच है। पैका - में। जिल इसके 'काल 'वसा व्यवस्त केसे हुना ' 

नेनेति कालग्रन्द्रन्युरपत्तेः । कालः समय अदा इत्येकोऽर्थः । समयादीणमृत्यो बुन्त्रेन् अणोरण्यतस्यतिक्रमकालः समयः । चोइसरज्जुत्रागासपदेसकृत्रभणमेतकालेल बो

चोह्तरच्छुकमणस्खमो परमाणू तस्य एगपरमाणुक्कमणकालो समझो णाम । अमेनेज्य समए घेत्रण एया आवलिया होदि । तप्याओग्गासंसेज्जावलियाहि एगो उस्सामणसाणे होदि । सचहि उस्वासेहि एगो योवसण्णिदो कालो होदि । सचिहि योवेहि लगे लाम कालो होदि । साद-अहचीसल्येहि पाली णाम कालो होदि । वेहि णालियाहि सुदुवोहोदि।

इ पासक्याह पाला पाम काला हो।दे | बाह पालिपाहि स उच्छामानां सहसाणि त्रीणि सन्त शतानि च | विसन्तिः पुनस्तेषां सुद्धतों होक हप्यते ( २७७३ ) ॥ १० ॥

निमेपाणां सहसाणि पंच मूयः शतं तथा । दश चैव विवेदाः क्यांन्त्रे स्थानसः स्थापा

दश चैव निवेषाः स्युर्हेहवे गणिताः धुवैः (५११०)॥११॥ त्रिंग्रन्सहर्वो दिवसः । सहवीनां नामानि-पैदः स्तिस मेत्रस ततः सारमटोऽपि च ।

देत्यो देरोचनधान्यो वैश्वदेवोऽभिनित्तमा ॥ १२ ॥ रोहणो वखनामा च विजयो नैश्वतोऽपि च । बारणधार्यमा च स्थुमीयः पंचदरो। दिन (१५)॥ १३ ॥

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'जिसके द्वारा कर्म, मय, काय और आयुक्ती स्थितियाँ करियत या संस्थात की जाती हैं, अधात कही जाती हैं, उसे काल कहते हैं 'हस प्रकारधी काल शायकी स्मुत्याचि है। काल, समय और श्रद्धा, ये सब एकार्यवाची नाम हैं।

समय वादिका वर्षे कहते हैं। एक परमाणुका दूसरे परमाणुके व्यतिक्रम करनेनें मितना काल लगता है, उसे समय करने हैं। वर्षान्, चौदह राजु बाध्यायदेशों के मितकमनें मात्र कालसे को चौदह राजु अनिक्रमण करनेमें समये परमाणु है, उसके एक परमाणु करि क्रमण करनेके कालका नाम समय है। धर्मक्यात समयोको प्रदण करके एक आवर्षी होते हैं। तसायोग्य संक्यात आयलियोंसे एक उम्यास-तिभ्जास निजय होता है। सान उम्बासीय एक स्नोक्सीक काल निजय होता है। सान स्नोकांसे एक लय नामका काल निजय होता है। सादे महतीस ल्योंसे एक नाली नामका बाल निजय होता है। दो नालिकामांसे एक सुन्ने होता है।

उन तीन इजार सात सी तेदसर (१७३१) उच्छासीका एक मुद्रने कहा जाती है ह १० ह

विद्वार्मीन एक मुद्रनीमें पांच हजार परः सी दश (५११०) निमेर मिने हैं हरी। शींस मुद्रनीचा एक दिन सर्पान् सरोशन होता है। मुद्रनीके साम दस मकार हैं— है रीद, र श्वेन, है मैत, थ सारमट, ५ दैत्य, ६ विशेचन, ७ वेग्यदेव, ८ समिनिय। काळाणमे शिरेसरस्वर्ग

सावित्रे पुरस्केष दारसे दन दन द । पार्युक्तासने मार्चुक्यनोऽस्त्रे निशि ॥ १० ॥ विद्यारे सिस्सेनस विशोध योग्य दन द । पुष्पदन्तः सुरूपर्ये मुद्धीक्ष्योऽस्त्रो मनः (१५ ) ॥ १५ ॥ रामयो सानिद्यार्थे मुद्धीक्ष्योऽस्त्रो । पश्चारणि विदे पार्टिन पदाविक्ष व्यक्तिता ॥ १६ ॥

पंचदश दिवसाः पद्यः । दिवसानां नामानि-

नन्दा भदा जया रिक्ता पूर्णा च निषयः प्रशान् । देवनाधान्द्रमधेन्द्र। आकाशो धर्व एव च श १७ ॥

९ रोहण, १० वट, ११ विजय, १२ फैलच, १६ वाटण, १४ अर्थमन् और १५ झान्त । वे देहह शहर्त तिनमें होते हैं व १२~१६ व

रे सावित्र, २ जुर्थे, वे हात्रक, ध्रयम, ध्र

शांत्रि और दिनका समय तथा गुरुतं समान करे गये हैं। हां, बची दिनको एर

मुहर्न जाने हैं, और कभी राजिको छह मुहर्न जाने है । १६ ।

विशेषाये — समान दिन और राविष्ठी महेशा तो वन्द्रत मुहुनेदा दिन मेंन दर्भन दी मुहुनेदा विन मेंन दर्भन दी मुहुनेदा विन मेंन दर्भन दी मुहुनेदा विन होन दर्भन देश मुहुनेदा विन मेंन दर्भन दर्भन स्वत्य मुहुनेदा विन मेंन दर्भन स्वत्य मुहुनेदा विन मेंन स्वत्य मुहुनेदा होनेदा मुहुनेदा विन मुहुनेदा मेंन दर्भन स्वत्य मुहुनेदा मेंन दर्भन मुहुनेदा मुहुनेदा

चानुष्क दिनोंका यक पश होता है । दिनोंके नाम दल कवार है--भंदा, भदा, कथा, दिला और पूर्णी, दल प्रकार कफले प'व निर्मयन होती है । दलके देवता बचले करत, सुर्ये, रुद्ध, व्यवास और धर्मे होते हैं । १०४

विशेषार्थ — कार्य कार्य निर्माण कार्यक कार्यक विशेषां कार्यक वार्यक वर्षा वार्यक कर्यों के सिवारां कार्यक विशेषां के स्वार्यक कार्यक क्ष्यों के सिवारां के सिवारां के सिवारां के सिवारां कार्यक क्ष्यों के स्वार्यक क्ष्यों के सिवारां के सिवारां के सिवारां के स्वार्यक क्ष्यों के सिवारां के

द्वी पर्सा मासः । ते च श्रावणादयः प्रसिद्धाः । द्वादशमासं वर्षम् । पंचिर्षरे

र्षपुंगः । एवसुवरि वि वृत्तव्यं जाय कप्पो चि । एसो कालो णाम । कस्स इमे कालो । जीव-पोग्गलाणं । छुदे । तप्परिणामचादो । अघवा इमे सुअमंडलस्स परिवृद्धणतम्बन्धनः, तदुद्धरत्यमणेहितो दिवसादीणम्रुप्पत्तिए । केण कालो कीरिदे ? परमङ्कालेण । रूप कालो । माणुसखेनेकसुउजमंडले वियालगोपराणंतप्यज्ञापहि आवृरिदे । जदि माणुत- सेचेकसुउजमंडले कालो ट्विदो होदि, कथं तेण सव्यपागालाणमणंतसुणेण परीशे व्य स-परप्पयामकारणेण ज्वराति व्य समयभावेणावद्विदेण छड्व्यरिणामा प्यासिज्वेते ! न एस दोसो, मिणिज्जमाणदृत्वेहितो पुष्पभूदेण मागहपत्येणेन मत्रणविराहाभावा । प्यासिज्वेत ! न स्वाप्यास्वाप्यास्व स्वाप्यास्व स्वाप्य क्षेत्र कालव्यवहारो ! ण, स्वर्योगं कालामावे तत्य कथं कालव्यवहारो ! ण, स्वर्योगं

दो पर्सोका एक मास होता है। ये मास आवण भादिकके नामसे प्रसिद्ध है। बार्ष मास का एक पर्य होता है। योच पर्योका एक गुम होता है। इस प्रकार ऊपर अपर भी करो उपप्र होने तक कहते जाना चाहिए। यह सप काल कहलाता है।

गंका-पद काल किसका है, अर्थान् कालका सामी कीन है।

समापान — जीय भीर पुत्रलीका, अर्थान् ये दोनों कालके सामी हैं। पर्योकि, कार

तर्गात्मामानक है। मध्या, गरिवर्गन या प्रदक्षिणा सक्षणवाले इस सूर्यमंदलके उदय और मस्त होतेते

भवेषा, पारवनन यो प्रदेशिया संश्वापाल इस स्पर्यमङ्गलके उदय भीर भस्त हात्रस दिन भौर राजि सादिकी उत्पत्ति होती है।

र्यस — चार किसमे किया जाता है, अर्थान् कारका साधन क्या है। समाधार — प्रमार्थकार हुए सुरुष्ट स्टब्स्ट कार्यक

गमाधान - परमार्थकालने काल, भधान स्पवहारकाल, निषम होता है।

दों हा — बाट बहांगर दे, भयोत् कालका भधिकरण क्या है ?

गमापान—विवाहमोग्यर अनस्य पर्यायोगे परिपृतित सङ्गात्र मानुग्येषकावस्यी स्टेमेंडल में हैं। बाल हैं; भर्यान् कालका माधार मनुष्यरेषतावस्यी स्टेमेडल है ।

र विकास के कि मार्ग के कि मार्ग के स्वाप मार्ग मार्ग

पुरस्योत भवलन्तुने तथा महीपके समान न परमहामानके बारणस्य, श्रीर प्याधिके स्टब्स् सम्बद्धमा भवश्यित समान न परमहामानके बारणस्य, श्रीर प्याधिके स्टब्स् सम्बद्धमा भवश्यित इस बालके हाग छह प्रश्नीके परिणास केल प्रश्नाति कि

सन्तर्यन — यह बोर्ड दोण नहीं, बचीहि, मोते जानेवाने प्रश्नीने वृष्णाने माण्य (देरोप) अभ्योद समान माणनेमें बोर्ड विशेष नहीं है। महसमें बोर्ड मनवला बेच ही अप्ता है, बन्तेंपि, प्रश्नीद साथ व्यानवार माना है। मर्गान् निस्स दीवह, घर, पर सार्टि क्रम्य दन स्वेदा बरागांद होनेवार मी स्वयं माने भाषदा प्रदासन होना है, दने बहागिन

· ₹, 4, ₹. 7 1.00.17 कालेण वैसि यवहारादे। अदि जीव-पोग्गलपरिणामो काला होदि, वो सन्देग्र जीव-पो - C= #51 चंडिएण कालेण होदच्यं, तदी माणुसखेचेहमुज्यमंडलद्विदी काली वि ण पहरे रत्या हिंद्र एस दोसी, जिरवज्ञचादो । किंतु ण वहा छोगे समए वा संववहारी अस्यि, अजा : स्मृत्ये (

र्वेत सम्बद्धाः स्वामंडलिकिस्यावस्थितिस् चेत्र कालसंबवहारी पपटे। तम्हा एदस्सेव स rii. It कायच्चं । केनियरं कालो ? जणादियो अपन्यवसिरो । कालस्स कालो हि तची पुण <del>ere di</del> C अवाको या है व तात्र प्रथमेरी अस्ति, अवावहावपसंगा । बावको कि क्या अवस् نينها ب अभाष्यां वा । वदा कालस्य कालेण विदेशी ण पहेद १ ण, एस दोनी, ण नाव प्रुप \*\*\*\* -'15'

करनेके लिए जन्य दीवककी मायद्वकना नहीं हुमा करती है, देशी मकारसे बालदाय मी करमका हरू कार्य वायकता जायस्यकता वादा दुव्या करता है, इसा अकारस बालद्वरण भा सम्प्रजीय पुत्रल, सादि मध्योंके परिवर्तनमा निभित्तकारण देति। हुमा भी स्थान सावमा भार भार नेतर है। करता है, उसके लिए किसी अग्य द्वावर्षी आवस्वकता मही पहनी है। <del>-</del>fr इसीडिए अनयस्था दोप भी नहीं भाता है। -11 ध्यपदार केसे होता है। f

र्धका—देवलोकमं तो दिन-राविकष कालका सभाव है, दित वर्दा पर कालका

समाधान-नहीं, वचाँकि, यहाँके कालसे ही देवलोक्स कालका व्यवहार होता है। र्शका— विदे सांव भीर पुरुलोंका परिचाम ही काल है, तो सभी औव भीर पुरुलोंसे कालको संश्यित होना चादिए। तय ऐसी दसामें ' मनुष्यसेत्रके एक स्वसंहरूमें है। कार स्थित है। यह बात घटित नहीं दोती है।

समाधान - यह कोई दोप महाँ है, क्योंकि, उक्त करान निश्यात (निसंद) है। किन्तु छोकर्मे या शास्त्रमें उस मकारसे संस्थादार नहीं है, पर अवाहिनियनसम्पर्ध ाकत्व थानम् या चारतम् उत्त मचारस् व्यवपदार् गदा दः, पर् भगादाग्यमस्वरूपस स्पर्मस्त्वत्री किया-परिवासाम ही बाउदा संस्प्यदार सङ्ग्र है। स्मृतिस स्मृत्य ही स्ट्रस करमा चाहिए।

र्यंका—काल कितने समय तक रहता है ? न थन्त है।

समाधान – बाल बनादि और अवस्वतित है। अर्थाद् बातवा म स्पादि है.

रीका—बालका पश्चिमन करनेयाला काल क्या उसार प्रप्रमून है, अपना सक्त प्रमान है। हिमामून तो बहा नहीं जा सहना है, धावमा धनदरशारीका असर धन महत्त्वपुरः ) देशका ता करा महत्त्व महत्त्व का महत्त्व का महत्त्व का महत्त्व का महत्त्व का महत्त्व का महत्त्व क

समाधान — यह बोर्द बोच नहीं। इसका बारण यह है कि दूसके दशमें बहा स्था

पनस्वादोसी समयदि, अण्डस्वामा । णाणण्णपनस्वतेसी वि, इहवादो । व व वर्ण कालेण णिदेसो णिद्य, सुज्जमंडलंतरिहयकालेण तथी पुष्रभृद्युज्जमंडलिहयकालिणेत्वर्णे अपया, जघा घडस्स मानो, सिलायुचयस्स सरीरिमञ्चादिस एकिन्दि ने भेदनवारी, व एत्प वि एकिन्दि काले मेदेण' ववहारो खुज्जदे । किदिवियो कालो ? सामण्येष प्यक्षि तीदो अणागदो बद्दमाणो चि तिविहो । अपया गुणाहिदिकालो मयद्विदिकालो कम्मार्कि कालो कापहिदिकालो उववादकालो मायद्विदिकालो चि छिप्यहो। अह्वा अण्यविहो शिक्षा हिंतो पुष्पभूदकालामाया, परिणामाणं च आणंतिओवलंसा । जहत्यमयवाहो अञ्चयने कालस्य अणुगमो कालाणुगमो, तेण कालाणुगमेण । जिद्देसो कह्णं प्यासणं अधिवारि जन्मनिदि एयद्वो । सो च दुविहो, ओपेण आदेसेण चेदि । तस्य ओपिणेरसो इस

र्द्धा--बाल दिनने प्रकारका दोना है !

मनावान — सामान्यसे वक प्रकारका काल होना है। वार्तान, धनागन और वर्ष इनवरी सेवश्य तीन प्रकारका होना है। अथया, गुणिश्यतिकाल, ध्यविधितकाल, वर्षिशांवि बाल, वायांश्यात्काल, उपपादकाल और भाषान्यतिकाल, इस प्रकार कालके एड भेर हैं। अवसा बाल केवल प्रकारकों, वर्षाका है, वर्षाकि, परिवामीन गुणामून कालका धनाय है, तर्ग क्षात्रकाल प्रमेश कोते हैं।

यस्य भवनेत्रयो भन्तम बहेन हैं, बारेक भन्तमधी बातानृतम बहेन है। इस बाराज्यनेय । निरेश, बणन, जबारान, भनिष्यतिज्ञानन, ये शब बहार्गक नाम है। वर्र विरोध हो जबारवा है, भोतिनेद्रा भीर भन्त्रानिद्रेश। उस्त दोनी प्रबादि निर्देशिने बीर्यानेदेश उस्पादिकनवा प्रतिशास बहनेत्राया है, बयोदि, उसमें समान भागे संदर्शिन हैं। भोत्यनिक्टेंग रायोग्योवकनवा प्रतिशासन बहनेत्राया है, बोर्गिन, उसमें भागेना बर्लवणादी । किमहं दुविही शिर्मी उसहसेणादिगणहरदेवेहि कीरदे ? ण एस होस्रो, उहस-णयमवर्लविष हिदसवाशुग्गहहं वर्षोबदेसारी ।

ओषेण मिन्छादिट्टी केविनरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच सन्बद्धां ॥ २ ॥

ंजहा उद्देशे वहा शिरेसो होहि! वि आणावणहं आपियोद्सा करें। मेसगुणहान-पडिसेंद्रफले मिन्छारहिणिदेसो । कालादो कालम जिहासिङ्क्यमाने केवियर होति ति पुच्छा निजयण्यातस्यमिदं सुविभिदि पदुष्यायणकत्य । बदुत् वात्राजीवासिदे एगवयद-णिदेसो जादिणिवंपणो वि च दोमपो। 1 सन्द्रद्वा दि कालविगिह्बद्वातिगिदेश। हुदे। रै सन्दा अद्या काली असि जीवाणिसिदे वन्समाययसेल बन्द्रहृप्यवृत्तीर । अपदा, मन्द्रद्वा दि कालणिवे । क्यं ? मिन्छारिहीं कालचनण्यारिणामिनी परिणामिति क्येपि अभेदमानेक मिन्छारिहीं कालवाशिद्या । सन्द्रकार वाणाजीवे पहुष्य मिन्छारिहीनं बोन्छेरो णिद्य वि मणिदं होदि ।

भवलेबन किया गया है।

श्रंका - श्रुपमसेनादि गणधादेशोंने दो महारका निर्देश किसाहिए किए. 🕻 !

समाप्रात — यह कोई दोज महीं, वर्षोक, इत्याधिक और वर्षावाधिक, इन दोनें नवींको अवस्वत्रक करके रिधत प्राणियोंके अनुप्रदेश लिय दे। प्रकारक विदेशका करदेश किया है।

अधिमें मिथ्याराष्ट्रे जीव कितने काल तक होते हैं ! नाना अधिकी अरेका मई-काल होते हैं ॥ २ ॥

६ दिन्तृहर्देशीयार्वदारेष्ट्रया कर्व. बाहा ह स. हि १, ८

एगजीनं पडुन अणादिओ अपञ्जनसिदो, अणादिओ सपन वितिद्रों, मादिओं सपञ्जवसिद्रों । जो सो सादिओं सपञ्जवसिद्रों तल 1658 हमो जिहेसी। जहप्पेण अंतीमुहुत्तं ॥ ३॥

अमन्तिनिद्यनीनिन्छनं पद्गा अगादिअपज्ञनिदिमिदि मिनिरं, अन्तर निञ्चनस्य काहिमस्त्रतामात्राहो । मर्शामिङ्गिमञ्चतस्य अवाहिश्रो सपस्त्रात्रिहो। देश बद्दनहरूम मिन्छन्छान्। अन्त्रेगी मामिदियमिन्छन्छाने। सार्थे साग र देते । इत् कावादिमिन्द्र त हाली । तत्त्व जी भी मादिशी सप्रज्ञाभिदी मिन्द्रवहारी त्म को निरेमो । मी दुविही, नहम्मी जेहि । नम्य नहम्महानस्थानात् इत्यहें हा जोगी पूर्व । महत्वस्मी अनेश्वहूमं, एमी मिन्छत्वस्थारकार्वश्ची । व कर् कार्याचे व्याप्ति । असंवर्षक्षादिही या भवदानंत्री या प्रमानंत्री ए के विकास के विकास के मही। मार्ग तहरूरमानी मृहुन अस्टिए पुराधि सम्मादि औ हे सर्वतेष मह महत्त्वे वा मंत्रमामंत्रमं या अध्यमम्बावेण गंत्रमं या परिशक्त

वह भीरती प्रवेशा काल गीन बहार है, अनादि-प्रनन्त, अनादि-गान की हर्ष करते हो मादि और मान्य काल है, अनावर अन्यत, क्यान काल है, उनहां निदेश हम पहार है—हा के हरी कोत्र विस्तार्थ के नाहा मादि मान्त्र होत नपन्पचे प्रत्तवृत्र है ॥ है ॥

त्र विश्वासक्य मान्य विश्वासम्बद्धाः मान्य कार है का के अन्य के निक्या यहां भारी मध्य भीर भाग नहीं होता है। स्वयोशिक के के ताल वहा के करण पहा जाह ग्रंथ और मण नहीं दोना दें। भ पत्ति भनाव और मान्य होंगे हैं, हेंगी कि वर्षनहांगी के जी है कर का वह भाग पा भनात भार साहत बाता है, सेना हह प्रवस्ता प्रवासका संपत्ति वह में। तेन कि प्रवस्ता है, सेने के रे केट बर्फ हरता है, जेन हरण आतंद्रश मिला यहां है से बर्फा स्थान हरता है, के हरण आतंद्रश मिला यहां है हनमन हा भारि केट सम के के प्रति है । के अप है जिस भारति विस्ता प्रकार हनभार मा भारति । ति के प्रति है । के अप है कि विद्या के ति की प्रकारति है स्वाप्त का भारति । विकार हेर कर पहिल्ला कर का का का माना है। यह बननान है कर अपनान । इस माना है इस माना है कर बननान है हम अपनान । with the second of the second

हर्ड कार कार्या के जहां जाराज्ञासमाहरू जाता संवासिक स्थाप स्व हे हे कार वाद्यारण वर्षा वस्तानसम्बद्धारण वर्षा स्वतासपुर स्वाण क हे के हे हे के विकास स्वतास्त्र के हे बा स्वतासपुर स्वाण क वर्षा िष्ठ पार्च के जानवार स्टिस्ट्रेस्ट्रिस के दूबर भार अस्ति स्टब्स्ट्रिस के स्टब्स भार अस्ति स्टब्स्ट्रिस के स्टब्स the same of the sa

सन्त्रज्ञहण्यो मिन्छचकाले। होदि । सामणसम्मादिष्टी मिन्छचं किष्ण पहिचजाविदो िषा; सामणसम्मचपन्छापंदमिन्छादिहिस्स अहतिन्त्रसंक्षितिहस्स मिन्छचतन्हा विणहिजस्म' सच्चज्ञहण्यकालेण गुणेतरसंकमणाभाषा । उनकरसकालपदुष्पायगहसुचरस्रवं मगदि-

## उक्करसेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ४ ॥

अद्धर्योग्गलपरियहं जाम कि र युच्यद्दे- अनाहसंसार हिंडेतानं जीवानं दच्चपरियह्नं सेचपरियहनं कालपरियहनं भवपरियहनं भावपरियहन्तिदं पंच परियहन्तानं होति । जे ते दच्यपरियहनं ते दुविदं, जीकम्मपीग्गलपरियहनं कम्मपीग्गलपरियहनं चेदि । तत्य जीकम्मपीग्गलपरियहं वचहस्सामे। । ते जहा- जदि वि पीग्गलानं गमणागमनं पदि

## मिस्यात्यका सर्वज्ञपन्य काल होना है !

हुंका — सासादनसम्पारि जीय निष्यात्वरे वर्षो नहीं यान कराया गया है बर्धान् सासादनसम्पारिकों भी निष्यात्व गुणश्यानमें पहुंचाकर उसका ज्ञयन्वरात क्यों नहीं यतलाया है

समापान — नहीं, वर्षोकि, सालाइनसायकाये पीछ मानेवाने, मानेतान संद्रान पाले मिष्याग्यक्षी माण्डारसे विद्वविद्या मिष्याहरि जीवके सर्व ज्ञाग्यदानमे गुणान्तर-संवस्तवहा मसाव है, मर्यात् गुणस्थान-परिवर्गन नहीं हो सदस्त है।

भव मिश्यात्यके उत्हरकालके बतलानेके लिए उत्तरमृत करते हैं--

एक जीवकी अपेक्षा सादि-सान्त्र मिश्यात्वका उत्कृष्टकाल बुछ कम अपेक्टूहलक्ष्रि-वर्तन है ॥ ४ ॥

. ग्रंका - अर्थपहरुपरिवर्गन किसे कहते हैं !

समापान—इस धनादि संसारमें अगण करते हुए जीवोके क्रायणिकर्गन, अव-परिवर्गन, कालपरिवर्गन, अपयाधिवर्गन और आकर्यावर्गन, इस मनार पांच व्यक्तिन और इसते हैं। इसमें जो क्रायपविवर्गन हैं, यह हो अवशस्त्र हैं— क्राव्यपुरुक्तपरिवर्गन और कर्मयुक्तपरिवर्गन विवर्गने पहले नोक्रमयुक्तपरिवर्गकर्श करते हैं। यह इस स्वरूप हैं—

व्यवि वृहलेंके गमनागमनके मति कोई विरोध नहीं है, तो भी बुद्धि किसी

विरोही पन्नि, तो वि पुदीव आर्ट्टिकार्ट्स पोहस्मतीम्बन्धिके मन्त्रमाने अधिकः पोग्गलपरियहर्गतरे मध्य रोग्गतमानिहिह एक हो दि परमाण् च भूगो नि मध्यरोग्गतानन गहिदसण्या पोमालपरियद्दपदमममण् काद्दशा। अहीद्दहाने हि मन्तर्नारोहे मण्य-भागताणपणीनममामा मन्दत्रीवरामीक्षे अर्थनमुग्री, मन्दत्रीवरानिकारिमसमाक्षे अर्थन गुणहीणा चामालक्षेत्रा सुनृनित्तदो । कृता ? अयमनिदिण्डि अर्थनपुत्रेण निद्वागमनिय-मागेण मुणिदादीदकालमेनगन्य नीवस्तिममाणमुमुन्निद्योग्गन्विमागो स्लेमा ।

सन्त वि पंजाना गाउँ को भूगिता ह जीना। अमार् अमेन्सुनो गोमाउपन्तिसमारे ॥ १८॥

एदीए मुचमाहाए मह निगही किन्त होदि नि मिनदे व होदि, मध्येगदेनिह गाहरथमध्यमहरपत्रुनीहो । य च गर्यास्ट्र पगड्डमागस्य महस्य गर्गद्भवत्रभी अभिद्रा, ामो दद्वी, पदी ददी, इन्नादिष्ठ गाम-पदायमेगादैनपयहमद्द्वजनादी । तेय पोग्यजन

यक्षित पुरस्यसमायुपमको ) मादि करके नेकमपुरस्यदिवननके कदनेगर विवक्षित वारण अन्यत्रात्रा अनुसार होता है। जान का लगरियतनके भीतर सर्गपुत्रलयाशिमंने यक भी यरमाणु नहीं मोगा है, येता समसकर ल्यारपवनक भावर राज्यस्थानम् केत्रका कामानु का भागादा का भागाया उपरिवर्तनके मधम समयमे सर्व पुरुलोको मगुर्दोतसेवा करना चाहिए। मनीनकासमे वर्षे और्थों के हारा सर्ववृत्रलों हा अनन्तर्या भाग, सर्वजीपराश्चिमे अनम्मगुणा, और सर्व-विकासम्बद्धाः विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास है। कारण यह दे कि अमध्यसित्र जायांस अमन्त्र गुणे मार सिजाँक अनन्तर मागसे गुणित कालमाण सर्वेत्रीयराशिके समान मोग करके छोड़े गये पुत्रलोंका परिमाण पाया

र्शका—यदि जोधने माज तक मी समस्त पुत्रल मोगकर नहीं छोड़े हैं. तो— इस पुत्रलपरिवर्तनकप संसारमें समस्त गुझ्ल इस जीवने एक एक करके पुनः पुनः इस स्त्रमाथाके साथ विरोध पर्यो नहीं होगा है

सम्प्रधान—डक स्त्रमाथाके साथ विरोध प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, माथामें राष्ट्रकी प्रश्नुचि सर्वके एक मागमें की गई है। तथा, सर्वके अर्थमें प्रचतित होनेवाले भरता नष्टाच अन्य अन्य पात का जिल्हा है, पर्योक्षित प्राप्त जल गया, पर (जनपर) हत्यादिक याक्योंमें उक्त दान्त माम और पदाँके पक देशमें मदूश हुए भी वाये तिप्र ' एगो ' इति पाउः ।

ति. ६, ६०. गो. जी., जी. म. ५६०.

1.130

परिचट्टादिसमय अगहिद्सण्णिर चेच पोग्गले विष्टमेक्टरसशीरणिप्यायणहममर्शिदियहि अर्णतगुणे' सिद्धाणमणंतिमभागमेचे गेण्हिद् । ते च गेण्हंतो अप्पणे। ओगाहत्वचिद्दिरे चेय गेण्हिद, णो प्रच खेचिद्दिरे । प्रचं च-

> एयक्लेचोगाडं सन्त्रपदेसिट कम्मणो जोगां | बंधर जहुचहेदू सादियमध णादियं चावि ॥ १९॥

विदेयसमय वि अपिद्रोमालपरियहरमंत्रेर आहिंद्र चेत्र मेण्डद् । एतमुक्ससेण अर्णतकालमगिद्दे चेत्र गेण्डद्दि । बहल्येण दो-ममरम् चेत्र अर्गाद्दे गेण्डदि, पटम-समयगिद्दिगोमालार्थ विदियसमय जिल्लारिय अकम्मात्रां गदार्थ पुत्रो तदियसमय जिल्ला वेत्र जीवे योकम्मयज्ञाएण परिदाणपुत्रजीयहो । वं कर्ष जन्दे ? योकम्मसम् आराधर् विणा उद्यादिजिसेसुबरेसा । एसा योगान्यसिम्हकाला निर्देश होति, अरादिरास्पद्ध

भत्यय पुरुष्यरियर्तनके आदि समयमें औदारिक मादि तीन दार्गरोमेंगे किसी एक दारीरके निभावन करनेके लिए जीव समन्यसिटोंते सनन्तगुणे और सिटोंके सनन्त्र साम-सात्र मण्डीत संश्वाले पुरुषोंको ही महण करता है। उन पुरुषोंको प्रदण करना हुना भी सप्ते भागित रेत्रमें स्थित पुरुषोंको हो महण करता है, किन्तु पृथक् रेत्रमें स्थित पुरुषोंको नहीं महण करता है। कहा भी है—

यह जीव एक क्षेत्रमें भवगाढकारों स्थित, भीर कर्मकप परिलमनके योग्य पुत्रन-परमाणुमीको पयोग्ध (भागमीज मिष्याय भारि ) टेनुभारे सर्व महेनारे का संपन्न है। ये पुत्रस्परमाणु साहि भी होते हैं, भनादि भी होते हैं, भीर उमयकप भी होते हैं। १९. ॥ दितीय समयमें भी विवशित पुत्रस्थितनेक भीतर भगूरीत पुत्रस्थी होते हैं।

करता है। इस महार अन्द्रकाशकी अपेसा बनतकाल तह समूदीन पुत्रीहें। ही मह्म करता है। इस महार अन्द्रकाशकी अपेसा बनतकाल तह समूदीन पुत्रीहें। ही मह्म करता है। किन्तु अधनकाशकी अपेसा दो समर्थोम ही अन्दीन पुत्रीहें। प्रदूष करना है, वर्षोकि, मधम समयम प्रदूष किये पुत्रीही दिनीय समयम निम्ना करके अवस्थान (क्रांसीटिम स्वयंद्या) को साम दुष्य है। पुत्रल पुनः पूर्वीय समयम असी ही आंस्म नेक्स प्रदीविस परिवत हुए पांध जाते हैं।

र्शका — मधम समयमें गृहीत पुरुत्युंत हिसोन समयमें निर्मार्थ हो, अवसेहच अवस्थाको भारण बार, पुना सुनीय समयमें उसी ही जीवमें नेशक्रमेंपर्योगके परिचन हो जाना है, यह कैसे जाना है

सुमाधान - वर्षोकि, माबाधाबालके विज्ञा ही जोबर्मेंबे बहुव भारिके विवेषोद्या उपरेक्ष पाया जाता है।

यह पुरुषिरियर्तनवाल तीन प्रवादवा होता है-अपूर्णनप्रदेशाल, पूर्णनप्रदेशाल

र प्रतिषु 'दयो' दरि पारश । १ थी. ६. १८५ वर हम 'जरूकोर् दर्श स्तम 'स्टरोर्' द दर्श स्था-।

महिदगहणद्वा मिस्सयगहणद्वा चेदि । अप्यिद्योग्गाउपरियट्टव्यंतरे जं अगहिदेगागाउपरियट्टव्यंतरे जहिदगागाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागिद्वयागाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागिद्वयागाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागिद्वयागाउपरियद्वाच्यं गाम । अप्यद्योगगाउपरियट्टव्यंतरे गहिदगागिद्वयागाउपरियट्टाव्यं मक्ष्मण गहणकाओ मिस्सयगहणद्वा णाम । एवं तीहि पयारिह पोगगाउपरियट्टाव्यं जीवस्स गच्छिद । एव्य विष्ट्वयद्वाणं परियट्टाव्यंत्रे ते जहा-पोगगाउपरियट्टाव्यं समयपद्वि अपविकाओ अगहिदगहण्द्वायागाया । पुणे अगहिदगहण्द्वायागाया । पुणे अगहिदगहण्द्वायागाया । पुणे अगहिदगहण्द्वायागाया । पुणे अगहिदगहण्द्वाय कार्यकाले गेत्र्य सहं मिस्सयद्वा होदि । पुणे विविद्यवारे अगहिदगहण्द्वाय अगवकाले गामिय सहं मिस्सयद्वाय परिणमिदि । एदेण प्यारेण मिस्सयद्वायो व अर्णवाओ जादायो । पुणो गंवकाल अगहिदगहण्द्वाय गमिय सहं गहिदगहणद्वाय परिणमिदि । एदेण स्वर्ण कार्यकाले अगहिदगहणद्वाय गिराया । पुणे उपरिणमिदि । एदेण प्यारेण मिस्सयद्वायो व अर्णवाओ जादायो । पुणो गंवकाल अगहिदगहणद्वाय गहिदगहणद्वास्तानायो वि अर्णवाचं प्रवाणो सि । पुणे उपरिणमिदि । एदेण व्यंत्रे । विव्यंत्रे प्रवाणो कार्यो । पुणे उपरिणमिदि । पुणे पुणे प्रवेशे ।

श्रीर मिश्रमहणकाल । विवासित पुरुल्पारियर्तनके मीतर जो अगृहीत पुरुल्पि प्रहण करते हा काल है उसे अगृहीतप्रहणकाल कहते हैं। विवासित पुरुल्पारियर्तनके मीतर ग्रहीत पुरुल्पे ही प्रहण करने के सालको ग्रहीतप्रहणकाल कहते हैं। तथा विवासित पुरुल्परियर्तनके मीतर ग्रहीत हम दोनों प्रकारके पुरुल्पे आत्मसे अर्थात् एक साथ प्रहण करने के साल प्रहण को प्रकार करते हैं। इस साल हम स्वास्त्र प्रहण करने के साल प्रहण करते हैं। इस साल हम साल प्रहण करने के साल प्रहण करते हैं। इस साल हम साल प्रहण करने के साल प्रहण करते हैं। इस साल उक्त तीनों प्रकारों से जीवका पुरुल्परियर्वनकाल प्रवीत होता है |

विद्यापार्य — जिल पुरुष्परमाणुमोंके समुदायक्षप समयमबद्धमें केवल पहेले महण किये दुष परमाणु दी हो, उस पुरुष्टणुंजकी सुरीत कहते हैं। जिस समयमबद्धमें वेसे परमाणु हो कि जिलका जीवने पहिले कभी महण नहीं किया हो उस पुरुष्णुंजको असुरीत कहते हैं। जिस समयमबद्धमें दोनों प्रकारके परमाणु हो उस पुरुष्णुंजको निश्च कहते हैं।

शब यहांपर उक्त तीनों प्रकारके कालीके परिपर्तनका प्रमा कहते हैं।
यह इस प्रकार है-- पुरुष्णपियतंनके आदि समयसे छंकर अनुस्तकाल तक अपूर्वन
प्रहणका काल होता है, क्यांकि, उसमें दोप दो प्रकारके कालोंका आपा
है। पुत्रः मण्डीतप्रहणकालके अन्तमं पक वार मिथपुत्रलंगुंक प्रहण करनेका काल आता
है। पुत्रः भी दिलीववार सण्डीतप्रहणकालके द्वारा समनतकाल जाकर प्रकार सिधपुत्रलं पुत्रके प्रहण करनेका काल साता है। इसी मकार दर्गीववार भी अपूरीतप्रहणकालके द्वारा सनम्बद्धाल प्रतक्षा करक साता है। इसी मकार दर्गीववार भी अपूरीतप्रहणकालके द्वारा सनम्बद्धाल भी प्रशासन काल है। इसी प्रकार प्रवासन होता है। इस प्रकार किया प्रशास काल कर प्रकार प्रहोतप्रहणकालक प्रते परिणान होता है। इस प्रकार स्वासनकाल प्रशास काल कर प्रकार प्रहोतप्रहणकालक परिणान होता है। इस प्रमुख सनम्बाल प्रयान होता हुमा तक कर चला जाता है जब तक कि प्रहोतप्रहणकाल ही दालाकांद दी अर्णतं कार्ल मिस्सपगहणद्वाए गोम्ट्ग' सहं अगहिदगहणद्वा परिणमिद्दे । एयोदाहि देशि अद्वारि अर्णतक्कालं गामिय सहं गहिदगहणद्वा भविदे । एयमेट्रेण पपारेणं जीवस्स काल्यं मच्छिद जाव पर्यवणगिहिदगहणद्वासलागाओ अर्णतं पत्ताओं ति । एवं दे । पित्र पहण्णवारा गदा। पुणे गंतं कालं मिस्सपद्वाए गिमिय सहं गहिदगहणद्वाए परिणमिद्द । एदेण पपारेणं गिदिदगहणद्वासलागाओ अर्णतं पचाओं । नदो सहमगिहदगहणद्वाए परिणमिद्द । एदेण वि पपारेणं अर्णतं काले । मच्छिद जाव एर्यवणअगिहिदगहणद्वाए परिणमिद्द । एदेण वि पपारेणं अर्णतं काले । मच्छिद जाव एर्यवणअगिहिदगहणद्वाए परिणमिद्द । संपिद चउत्थविषयुद्धं मिन्समागों । मं ज्ञां अर्णतं गोहिदगहणद्वाए गोम्हण सहं मिस्समगहणद्वाए परिणमिद्द । एर्यमेदाहि देशि अद्वाहि अर्थाकाल गमिद जाव परवतणिस्सपगहणद्वाए परिणमिद्द । एर्यमेदाहि देशि अद्वाहि अर्थाकाल गमिद जाव परवतणिस्सपगहणद्वालागाओं अर्ण वर्ष परायाहि । स्वा परवत्वणिस्सपगहणद्वालागाओं अर्था च परायाहि । स्वा परवत्वणिस्द परिणमिद । पुणो उपिर एदेण चेव कमेण कालीं गम्हिट आव परिणमिद । पुणो उपिर एदेण चेव कमेण कालीं गम्हिट आव परिणमिद । प्रामाहिदासमागिद निष्मामिद निष्मामिद । प्रामाहिदासमागिद निष्मामिद । प्रामाहिदासमामिद जेव परिणमेदि । प्रामाहिदासमामिद जेव स्व परिणमिद । प्रामाहिदासमामिद जेव स्व परिणमिद्द । स्वा परिणमिद्द । स्व परिणमिद्द । स्व परिणमिद्द । स्वा परिणमिद्द । स्व परिणम

अनन्तत्वको प्राप्त हो आती है (इस प्रकार प्रथम परिवर्तनवार व्यतीत हुआ)। युनः इसके ऊपर अनन्तकारः मिधनद्दणकालकी अपेक्षा विताकर एकयार अगृहीतप्रदणकाल परिणत होता है। इस प्रकार इन दोनों प्रकारके काठोंसे अनन्तकाल विताकर प्रकार ग्रहीतप्रहणकाल होता है। इस तरह उक्त प्रकारसे जीयका काल तब तक व्यतीत होता हुआ चला जाता है जय तक कि यहांकी ग्रहीत्रप्रहणकालसम्यन्धी दालाकायं भी अनन्तताको प्राप्त हो जाती हैं। इस प्रकार दो परिवर्तनवार स्वतीत हुए। पुनः धनन्तकाल मिश्रमदणकालके द्वारा विताकर यक्ष्यार गृहीतग्रहणकालका परिणमन होता है। इस प्रकारसे गृहीतग्रहणकालकी जलाकापै अनम्तताको माम हो जाता है। सत्पद्मात् एकवार अगृहीतमहणकारुक्त परिणमग होता है। पता इस प्रकारसे भी अनन्तकाल तब तक व्यतीत होता है अप तक कि यहां पर भी अगृहीत-ग्रहणकालसम्बन्धी शलाकांद अनुस्तताको प्राप्त होती हैं। यह सीसरा परिवर्तन है। अब चतुर्थ परिवर्तनको कहते हैं। यह इस प्रकार है-अनन्तकाल गृहीतप्रद्रणकालसम्बन्धी विंताकर यक्तवार मिधमहणकालका परिवर्तन होता है। इस प्रकार इन दोनों प्रकारके कालांद्वारा अनन्तकाल विवादा है जब तक कि यहांकी विश्वप्रहणकालसम्बन्धी इत्याकार्य अनन्तताको प्राप्त होती हैं। इसके पक्षात् पक्षमार अगृदीतप्रहणकालक्ष्यसे परिणमित होता है। इसके प्रधात फिट भी इसके आगे इस दी कामसे पहलपरियर्तनके मन्तिम समय तक काल व्यक्तीत होता जाता है। (इस चनुर्थ परिवर्तनके समाप्त हो जानेपर) नोकर्मपुरस्परिवर्तनके

१ प्रतिप्र "गमेरण ज सई " दित पाठः ।

२ अमहिदमिग्धं महिदं मिस्तमगृहिदं तहेन महिदं च । मिस्तं महिदमगृहिदं पहिदं भिस्तं च अमहिदं च ॥ मो. जी. जी. म. ५६०.



एत्य अप्यादम् । सन्धरयोवा अगिह्दगहणद्वा। मिस्सपगहणद्वा अर्णतपुणाओ । वहण्याया गहिदगहणद्वा अर्णतपुणा । वहण्याये गोग्गाउपियद्वा विसेसाहिओ । उनक-रिसया गहिदगहणद्वा अर्णतपुणा। उनक्रमाओ पोग्गाउपियद्वा विसेसाहिओ। किं कारणप-गहिदगहणद्वा थोवा वादा ? बुच्चरे— वे जोकम्मपज्वाएण परिमय अकम्मभावं गहिदगहणद्वा योवा वादा है बुच्चरे— वे जोकम्मपज्वाएण परिमय अकम्मभावं जोग्गादें। वे पुण अप्यद्वागायपरियुक्वनेते ए गहिदा वे चिरेण आगर्च्यते, अकम्म-भावं गेतृय तस्य यिष्काहायहाणेण विण्ह्वच्यव्यव्यक्षाग्यादां। भिर्मेण आगर्च्यते, अकम्म-भावं गेतृय तस्य यिष्काहायहाणेण विण्ह्वच्यव्यव्यक्षाग्यादां । भिर्मेष्

सुहमिहिदेसंतुत्ते आसण्यं सम्मणिम्नशसुक्तं । पाएण परि ग्रहणे दन्नमिधिहसेटाणे ॥ २०॥

सद उक्त अपूर्वात, मिश्र और मुद्दांतसंवर्गी तीनों महारके कालोका अद्दर्वद्वत्य कहते हैं—सबसे कम अपूर्वातमहणका काल है। अपूर्वातमहणके कालसे मिश्रमहणका काल अनस्तमुणा है। सिग्रमहणके कालसे जयन्य पूर्वतमहणका काल अनस्तमुणा है। जयन्य पूर्वातमहणके वालसे जयन्य पुरुलप्रियंतका वाल विदोध अधिक है। जयन्य पुरुलप्रियंतका काल विदोध अधिक है। जयन्य पुरुलप्रियंतका काल मिश्रमहणके कालसे उन्हेद पुरुलप्रियंतका वाल विदोध अधिक है।

श्चेता-धगृहीतप्रहणकालके सबसे कम दोनेका कारण क्या है !

समापान — जो पुत्रल नोकर्मपर्यायसे परिणमित होकर पुत्रः सकर्मभावको मात हो, उम अवस्माप्यले अस्पकाल तक रहते हैं ये पुत्रल तो यहुतवार आते हैं। पर्योक्ति, उनकी हम्प, शंत्र, काल और सायरूप चार महारकी योग्यता मद्र नहीं होती है। किन्तु जो पुत्रल विवक्षित पुत्रलारियर्तनके भीतर नहीं प्रहण दिये गये हैं, ये विरक्तालक चार मते हैं, विपत्रालक कार मते हैं, व्यवस्थान प्रतान स्वति हम्प, होम, काल, मात्रक संस्कारक विवक्ष विवक्षाल कार्योक्त सक्तालको मात्रक संस्कारक विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष कार्योक्त सक्तालको मात्रक विवक्ष विवक्ष विवक्ष कार्योक्त सक्तालको विवक्ष विवक्ष विवक्ष कार्योक्त सक्तालको विवक्ष विवक्त हो जाता है। कहा भी है—

त्रो कर्मपुरहः वदेले बदावश्यामें पुरम अर्थात् भरर स्थितिसे संयुक्त पे, भत्तव्य निजेत द्वारा कर्मपुर अवस्थासे मुक्त कर्षात् रहित हुन्, किन्दु आस्ता अर्थात् जीवके अर्थोके साथ जिनका पकरेपाथमाद है, तथा जिनका भाकार अमेनिए अर्थात् कहा नहीं जा सकता है, इस प्रसास्त पुरल प्रस्थ पहुन्तति प्रस्थाने प्राप्त होता है व २०॥

सिवसावर्गनवस्त्रवनोक्तरस्त्याहितं अनित अनुसर्ग्या रगोकियते । इतः है सन्यादिवश्चार्यपर्वरकारसंद्रमात्रात् । गो. जो. जो. म. ५६०.

र अवायुरीवयंत्रकातः स्वन्तोतिः वर्षेत्रः रहोकः । दुवः, रिनयःस्वरेषकावसायेशयाद्वराम् बहुवास्त्रश्चायरमार् । स्वने निर्धितपुद्वरारिर्धनयस्य बहुवासम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धते स्वते । यो. यो. यो. य. ५६०. २ सम्बद्धितिनंतुनं जीवयरेषेत् स्वतं निर्वता वियोवित्यर्धसम्बद्धते पुरवदस्यं स्वनिर्देश्यस्याते रिक्

एदेण कारणेण अगहिदगहणद्वा योवा जारा । एसी णोकम्मपोग्गजपियद्वा मान।
जधा णोकम्मपोग्गजपियद्वा , जुना, तथा चेव कम्मपोग्गजपियद्वा । बनिर विसेसी णोकम्मपोग्गजा आहारवग्गणादा आगच्छीत । कम्मपोग्गजा पुण कम्मद्वयम्म-णादो । णोकम्मपोग्गजाणं तदियसमण् चेव मिस्सयगहणद्वा होदि । कम्मपोग्गजाणं पुण -तिसमयाहियाविज्याण् । जुदो १ यंथाविज्यादीदाणं समयाहियाविज्याण् ओकङ्गवर्यण् पचीदयाणं दुसमयाहियाविज्याण् अकम्ममावं गदाणं कम्मपोग्गजाणं तितमयाहियाव-जियाण् कम्मपञ्जाण्ण परिणिमय जण्योग्गजेहि सह जीवे यंथं गदाणग्रुकंमा । णवि देसि व पोग्गजपयिद्वेषु सुहुमणिगोद्जीवअपञ्जचण्ण पदमसमयतम्भवरयेण पदम-समयआहारण्ण जहण्युवयादजोगेण गहिदकम्म-णोकम्मद्व्यं येत्ण्ण आदी कायव्या । एत्य

> गहणसमयस्हि जीवो उप्पादेदि हु गुणंसप्रययो । जीवेहि अणंतगुणं कम्म पदेसेस सन्त्रेस ॥ २१ ॥

इस स्त्रोक्त कारणसे अगृहीतग्रहणका काल अल्प होता है। इस प्रकार इस स्वका नाम नोकर्मपुरलपरियर्तन है।

ब्लाद् लथान् पारवनन्त्र भारम बरना जाहरू। यहा पर उपयुक्त गामा इस मकार ह*ा* कर्ममहणके समयमें और अपने गुणांत मत्ययोंत, अर्थात् स्थाप वस्त्रातालें, अपिले समतनाणे वसोको अपने सर्व प्रदेशोंमें उत्पादन करता है ॥ २१ ॥

र वर्गप्रपारिसर्गनुष्परे-तृहस्तित् समये पूरेन अभिनाशिषदर्गनानेन पूरला ये मृतिवाः समयोपितः - ्रु साम्रतिकामग्रीत्य विशेषारितु समयेतु निर्माणाः पूर्विनित्तं क्रमेण त पुत्र देनैत मक्षेत्र कर्पयासिस्य वर्गनास्त्रप्परे ८ ं बारकारकर्मनप्परिस्तित् । स. वि. व. १०० स. मिल्यु ' न्यस्ति ' दृति पाटः ।

एवं द्व्यपोग्गलपरिपद्वणं गरं । खेल-काल-भा-भावपोग्गलपरिपद्वा भाविद्य गोण्डिद्व्या । तेसि गाहात्रो—

सन्ये वि पोमाना सन्तु एते मुमुधिया हु निरंग । असं आग्नाराने पोमानारियसंतारे ॥ २२ ॥ सम्बन्धिः रोगलंद तथासे सम्मादि रोगलंद तथासे सम्मादि रोगलंद तथासे सम्मादि रोगलंद रागलंद रागलंद

इस प्रकार हत्यपुरूलपरियमेन समाध्य हुआ। धेत्र, काल, अब कीर आवपुरूलपरि-यमेमीको कहलाकर प्रदेश करा देना चारिय। इन परिवर्तनीकी (संक्षेत्रसे वर्शकरियाहरू) साधार्ष इस प्रकार है---

इस जीवने इस युद्धलपरियर्तनहथ संसारमें यदा पदा बरवे पुता पुत्र अवन्यक्तर

सम्पूर्ण पुहल भोग बारके छोड़े हैं ॥ २२ ॥

हस समस्त सोकक शेवम एक मदेश भी देता नहीं है किने कि शंवररिवर्गववय संसारमें क्रमशा भ्रमण करते पुर बहुतवार नाना मवगारतागांसे इन श्रीवर्ग क गुझा हो॥ २३॥

बालपरिवर्तनसप संसारमें अमण बारता हुना यह जीव असर्विनी और अस्वार्विनी स्तारवे समर्पावी आयिल्योंमें निरंतर बहतवार उत्पन्न सभा और मार्ग है ३ ६५ ह

भववरिवर्तमका संतारमें अप्रण काता हुना यह जीव मिक्याबंक बसारे इक्क मारकार्यो स्ताकर (निर्वेच, मतुष्य और) उपरिम नैवेचक तक्की सर्वाध्यतिको क्रूनकर् प्राप्त हो गुका है ॥ १५ ॥

हास सि क, रन, पर तथा एवं विकास प्रवास विकास । करेल्य बुक्क कुनु हेस्स्य साबितास करेना काम प्रवास का पुरुष्यास्त्रीयसम्बद्धाः अस्य स्थापन

के सुनि, यू तर पर तम प्रसीमालय प्रान्थिय अध्यय विभव है । सबस्कारकोई हेर्से क् इति केपूरा मुख्या । प्रशाहनानि बहुता वधवमा सम्बन्त । । गां का वा चार्यक्

RECIRCLE OF THE TENEDRE FRANCE OF THE REST OF THE PROPERTY OF

u briebenten bij und gintenen gine a intermelben guge fe unter aum e. n. nennengen Gittenen eine, e. latermelben fe undergeme, unt fing ub die eine

सम्बासि पगर्राणं अगुभाग-गरेस्वधराणाणि । जीवा निष्ठत्वसा परिभमिरो मावसंसारं ॥ २६ ॥ परिपटिराणि बहुसा पंच वि परिपर्गाणि जीवण । विणवपगमक्रममाणेण दीदकाले अर्णनाणि ॥ २० ॥ जह मेण्हरू परिपर पुरिसा अष्टादणस्म विविहस्स । तह पोम्मक्रपर्यिष्टे गण्डर्स जीवा सरीराणि ॥ २८ ॥

अदीदकाले एगस्स जीवस्स सञ्दर्योवा भावपरिषद्ववारा । मवपरिषद्ववारा अर्षनः गुणा । कालपरिषद्ववारा अर्णवगुणा । खेचपरिषद्वतरा अर्णवगुणा । पोग्गतपरिषद्ववरा अर्णवगुणा । सन्वर्योवो पोग्गतवरिषद्वकालो । खेचवरिषद्वकालो अर्गवगुणो । कालपरि यद्वकालो अर्णवगुणो । मवपरिषद्वकालो अर्णवगुणो । मावपरिषद्वकालो अर्णवगुणो ।

यह जीव मिथ्यात्वके वशीमून होकर भावपरिवर्डनकर संसारमें परिभ्रमण करता दुवा सम्पूर्ण प्रकृतियोंके प्रकृति, स्थिति, अनुमाण और प्रदेश यंथस्थानोंको अनेकवार प्राप्त हुवा है ॥ २६ ॥

तिन-पचनोको नहीं या करके इस जीवने अतीतकालमें पांची ही परिवर्तन पुनः पुनः करके अमलवार परिवर्तित किये हैं 8 २७ 8

जिस मकार कोई पुरुष नाना प्रकारके पहाँकि परिवर्तनको प्रहण करता है, वर्णार बतारता है और पहनता है, उसी प्रकारसे यह जीव भी पुट्रव्यरिवर्तनकारमें नाना शरी नोका होहना और प्रष्टण करता है ॥ २८॥

अतीतकाठमें पक जीवके सबसे कम मामपरिवर्तनके बार हैं। मवपरिवर्तनके बार समयितिकार मास्ति कानतानुष्य हैं। काटपरिवर्तनके बार समयितिकार मासि मनतानुष्य हैं। काटपरिवर्तनके बार समयितिकार मासि मनतानुष्य हैं। क्षेत्रपरिवर्तनके बार काटपरिवर्तनके बार साहित समयितिकार मासि मनतानुष्य हैं। पुत्रज्ञारिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार काटपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार काटपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तनके बार क्षेत्रपरिवर्तके क्षेत्रपरिवर्तक

पुरस्यापितंतका कास समसे कम है। क्षेत्रपरिवर्तका कास पुरस्यापितंतक कारमें सनन्तगुष्या है। कास्यापितंतका कास क्षेत्रपरिवर्तनके कास्त्रके अनन्तगुष्या है। अयपापितंतर कास कास्यापितंतके कास्त्रके अत्यत्यापा है। आयपापितंतका कास अयपापितंतके कास्त्र अनन्त्रपृष्णा है। (क पापितंत्रके पितंत्र आतकारोंके स्थि देनो सर्वार्वार्वित्र ६, १०। व गोम्बरकार जीवकोड गाया ५६० टीका)।

१ ६४मा पर्यावद्वियो बहुवारारदेववंबदानाति । विश्वत्यक्तिदेव च भविदा तुम मारवंवरे १ ह. छै। ९, १०. वर्षेवर क्रिन्यनुमानस्टबर्चवभूमाति । स्वातम्बदुस्ताति भवता पुरि मारवंवरेश ॥ गो. बी. बी. व. १९०.

व वंपति संकारे कर्मवद्यार्थनदृष्टिनं हुन्तः। वार्गमद्भवत्यन् प्राणी वानाहुःसाहुते प्रसान्। यो. बी. बी. म. ५६०. १ यो. मी. बी. म. ५६०.

एदेशु परियद्वेशु पोग्गलपरियद्वेण पयदं । कम्म-णोकम्मभेदेण दुविहो पोग्गलपरियद्वो, तत्य केण पयदं ? दोहि वि पयदं, दोण्डं कालभेदामावा । सो वि इदो अवगम्मदं ? पोग्गलपरियद्वपाकपुरे दो वि पोग्गलपरियद्व एक्कटं कार्ण कालपावपुराविधाणादो । पदस्स पोग्गलपरियद्वकालस्य अदं देखणं सादि-सणिहण्यिक्षणाद्व कालप्राव्य होरि । वं कप ? पग्ग अणादिययिच्छादिद्व अपरिवर्तसारी अधायवयकरणं अपुन्वकरणं अण्यविक्रस्पाचित्रपादि पर्वाण तिणिय करणावि कार्ण सम्मचंगिहिरयदमसमप् चेत्र सम्मचगुणेण पुन्विकरणं अपरिविक्रस्पाचित्रपादि परियो प्राप्त तिण्य परणावि कार्ण सम्मचंगिहिरयदमसमप् चेत्र सम्मचगुणेण पुन्विकरणं अपरिक्षा स्वाप्त सम्मचग्री होरि व वक्सस्य पिहिर्दि । जहण्णेण अतिग्रह्वचित्रपाद सम्मचग्रीविद्वपरमसम् णही सिच्छवपण्यात्रो । कप्रधुप्पचि-विजासाणपेकको समग्री ।

इन ऊपर धरालोय गये पांची परिवर्तनीमेंसे यहां पर पुरलपरिवर्तनेसे मयोमन है। श्रीका—कर्म धीर नोकर्मके भेदसे पुरलपरिवर्तन दो मकारका है, उनमेंसे पर्शार किससे मयोजन है।

समाधान—यदां दोनों ही पुहलपरियर्तनों से प्रवोक्त है, क्योंकि, दोनोंके बालमें भेद नहीं है।

शंका - यह भी कैसे जाना जाता है !

समाधान—पुरुष्टपरियर्तनकारुके अश्वबहुत्य वताते समय दोनों दी पुरुष्टपरियर्त-मेंको इकट्टा करके कारुका अस्पवहुत्यविधान किया गया है। इससे जाना जाठा है कि दोनों पुरुष्टपरियर्तनोंके कारुमें भेद नहीं है।

इस पुरस्परिवर्तनकालका कुछ कम मर्थमाग साहि-सान्त मिण्यान्यका काल होता है।

र्शका—सादि-सारत भिष्यात्वका काछ कुछ कम अर्थवुत्ररुपरिवर्तन केसे होता है ! समाधान—वक मनाहि मिथ्यादार्थ भवरीतसंसारी (शिक्षका संसार करत दोन

है पता ) जीव, स्वय मुख्यस्त्य, सूर्यवस्त्य, सीर सिन्धुविकस्त्र, ह्व मकार हुन कों हैं। करणोंको करके सम्यक्ष्य प्रदेशके मयम समयमें हैं। सर्वयन्यपुर्वक हारा पूर्ववर्षी सरसेन संसारियन हटाकर प्रयोगसंदर्श हो करके स्थितके स्थित पुरुवपदिनंत्रके साथे बात प्रमाण ही संसारमें टहरता है। तथा, साहि-सान्त मिर्यान्यमा बात क्य से साम सन्तर्भूतंने मात्र है। किस्मु यही पर जम्मयकालसे प्रयोगन नहीं है, व्यक्ति, कहार स्वरुक्त स्विकार है। सन्यक्ति महण करनेके मयम समयमें ही सिन्दान्य पर्याप नह हो जाती है।

ग्रंका — सम्यक्ष्यकी जलाति और विष्यात्यका विनास हम दोनों विभिन्न कार्योक्त यक समय वैसे हो सकता है?

Anne

ण, एकिह समण पिंडागारेण विणह पडाकारेणुप्पणा-महियद्व्यस्पुतंना । सन् जहण्णमंतीसृह् चसुवसमसम्मचद्वाए अन्छिर्ण सिर्छतं गदी । नदी मिन्छतंण सिर्झा जांदो, विणहो सम्मचपडवाएण । तदी मिन्छत्तपज्ञाएण उबहुगोग्गलपरियहुँ गरिपहिर्ण अपिछमे भवग्गहणे मणुस्सेसु उववण्णो । पुणी अंतीमृहृतावसेने संसारे तिणि विकरणाणि काद्ग पटमसम्मच पिंडवण्णी (२)। तदी वेदगमम्मादिही जादो (३)। अंती सहस्य अर्णताणुवधि विसंजोएद्ण (४) तदी दंसणमोहणीयं खेवद्ण (५) पुणी अपपमची जादो (६)। पमचापमचपरावचसहस्स काद्ण (७) खामसेहिमाल्हस्यणी अपपमचसंजदहाणे अथापवचित्तेसिहीए विस्वित्तद्व्यण्णी (१०) अपुन्यकरणवावगो (१०) अणिप्ताची (१०) सहस्यवगो (१०) साहस्यवगो (१०) अपुन्यकरणवावगो (१०) अपिपहस्यक्षे पहिल्ला विद्याचित्रवाचित्रवाची सिद्धी जादो (१०)। एवमेदेहि चोदसेहि अंतीमुहुचेहि छणमद्वपोग्गलपरियहं सादिसपञ्जवसिदिमच्छचकाछो होिहै।

मिच्छत्तं णाम पज्जाञो । सो च उप्पाद-विणासलक्ष्वणे, द्विदीए अमावादो । अर जइ तस्स द्विदी वि इच्छिज्जदि, तो मिच्छत्तस्स दच्चतं पसज्जदे; 'उप्पाद-द्विदि-मंगा हैरि

समाधान — नहीं, पर्योकि, जैसे एक ही समयमें एण्डक्प जाहारसे दिनष्ट हुना और घटका आकारसे उत्तय हुना मुन्तिकारूप दृज्य पाया जाता है, उसी मकार कोई जीव सबसे कम अन्तमुद्धर्तमाण उपशाससम्यक्त्यके कालमें रहकर सिष्यात्यको मात हुना। इस दिल्य सिष्यात्यको मात हुना। इस दिल्य सिष्यात्यको मात हुना। इस दिल्य सिष्यात्यको मात हुना। इस दिल्यात्यको सिष्यात्यको मात हुना। इस दिल्यात्यको सिष्यात्यको हुन का अपंदुम्द्रवर्तमामाण संसारमें परिभाग कर, अतिन मथके प्रदेश करते पर मनुष्योग उत्तय हुना। पुनः अन्तर्गृह्वंकाल संसारके अवदेश रह जाते पर तीनों हो करलोंहो करिक प्रयमेणदामसम्यक्त्यको प्राप्त हुना (२)। पुनः विद्यात्यक्त स्वत्यक्त (३)। पुनः अन्तर्गृह्वंकाल हारा अनंतात्वकां क्रायत्य दिव्योजन करके (४), उसके याद दर्शनमाद्यायका स्वय करके (५), पुनः अप्रमत्यक्षेत्र हुना (३)। दिल्य समस्य और अप्रमत्यक्त दुना देश होता हो। दिल्य समस्य क्षेत्र क्षाय क्षायत्यक्त प्रवाद सिष्य समस्य स्वयं सिष्य स्वयं सिष्य स्वयं सिष्य होता है। स्वयं सिष्य होता है। स्वयं सार्व स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं सिष्य स्वयं सिष्य होता है। इस द्वार द्वार होता है। स्वयं सिष्य होता है। स्वयं होता है। स्वयं सार्व होता है। स्वयं सार्व होता है। स्वयं सार्व होता है। स्वयं सार्व होता है। सार्व होता है।

द्यंद्रा — तिथ्यात्य नाम पर्यापका है। यह पर्याय उत्पाद और विनादा लक्षणपाला है। वर्षों के, उसमें स्थितका समाय है। और यदि उसकी स्थित भी मानते हैं, तो निष्यात्य के द्रष्यपना मान होता है, वर्षों के, 'उत्पाद, स्थिति और मंग, सर्थान् स्वय, ही द्रय्यका सक्षणे

१ देवुवबद्धवीम्यठवरियद्वपुवदुवीमाकारिवद्वमिदि मण्यदे । अवधः

1, 4, 8, 7 षालाणुगमे मिन्छादिद्विकालगरूवनं दवियतम्सर्वा । इचारिसादो वि १ व एत दोसो, वमकमेण विलम्सर्व व दस्त्रं, व इ क्षमण उपाद-हिदि-भंगिक्छं सो प्रजाजो वि जिणोबदेसादो । बदि एवं, तो पुरिक्ता कमण उत्पादनहादनमागण पा परवाना । पा विभावन्याना । जार रेग जा उत्पादना विज्ञानको पि परवायम् प्रवस्तादि विज्ञाने, होंदु वेसि परवायम् , इस्पारी । वेसु हन् वजनार्वा विलोस् विस्तरीदि चे का तस्स हुक्विक्यमकोममवविद्यक्ताहा । सुद् ववहारा १२ छार १२ राजभाद ने ११ अस्य दुराजान्त्र ने अस्य दुराजान्त्र अस्य दुराजान अस्य दुराजान्त्र अस्य दुराजान्त्र अस्य दुराजान अस्य दुराजान्त्र अस्य दुराजान्त अस्य दुराजान अस्य दुराजान अस्य दुराजान अस्य दुराजा देव्याह्मपण्य अवलाकः छन्ता प्राणामा अध्य प्राप्ता स्थापन्त्राणाम् द्वाराणाः । सुद्ध प्रजापण्य जनवाम वर्षातः सम्बद्धः वर्षादः विवासा हो चेत्रः सम्बद्धानि । अत्रद्धं अस्मिदं कमेण विवि ाव कारक्षणाम्। जन्मानुक्रेनवस्त वस्तात्वकावनास्तु वयनातास्त्वस्तः व्यवहाद्यवकासः। भिरुक्षकं पि वंत्रणवञ्जात्रो, तम्हा एदस्य उप्पाद-हिदि-मंगा क्रमेण निल्न वि व्यवस्त्राः ति धेत्तवां। वणग्रजेति वियेति य भाग णियमेण प्रग्नवणयस्सा दव्बट्टियस्स सन्त्रं सदा अणुष्पन्णमृतिगृहं'॥ २९॥ इस मकार धार्य वचन है !

-

ėir

. 1

-

गर थाय प्रथम है। समाधान-पद कोई दोव नहीं, पर्योक्ति, जो शक्ताले (युगवन्) टापाइ, स्वव त्रभाषान — पद कार वाय नदा, प्रयाक, जा कम्मत (प्राप्त) रापा, व्यव भीर प्रीत्य, इत तीनी छक्षणीयाता होता है, यह द्रत्य है। भीर जो कमसे उनाइ, क्लिन भीर स्वयवाला होता है यह वर्षाय है। इस महारखे क्रिनेन्द्रका रुपरेश हैं। प्याता हाता है वह प्रवाद द । इस मण्याता स्वाप्त क्यार कर है। वैद्या — यदि वैसा है तो पृथियों, जल, तेज और पायुक्ते वर्णायवना स्वान होना है। समाधान — मेले ही उनके पर्यायपना मान हो जाये, क्योंकि, यह हमें हरू है। र्वका—किन्तु उन श्रीयवी मादिकोंमें तो द्रम्यका व्यवहार संक्रम दिशाई देता है? समाधान – वहाँ, यह व्यवहार गुळागुळात्मक संग्रह-व्यवहारक्षव नवज्य निरंधाकः भगाभाव मार्था वर्ष प्रवास प्रवास प्रवास वर्ष प्रवास करते पर छहा है। अब इत्याधिकावके मवलका करते पर छहा है इस्त है। न्यात्राच्याः । पात्राच्याः व्यवस्थाः व्यवस्थाः । प्रत्याच्यात्राच्याः । प्रत्याच्याः । प्रत्याच्याः । प्रत्याच भारत्मान्यः इत्याधिकतयः अवस्थानं करते प्रत्युचियो, कल्लाभिक स्पेतः इत्याद्वां हेत् भार बार्ज हरणायकावक अवस्त्रका करत पर शयथा, जल आवक अवह हाथ हार है, विहे, स्वेजनव्यापके सम्बन्धा माना गया है। किन्तु होय वर्षामाध्यक्तवर्था विवस्त पाक, प्रतिम्हानिक क्षत्रका भाग गया है। हास विवासक मचका प्रकास देने पर व्यक्ति क्रमाह भीट विनास, वे बेटे ही हासल होने हैं। आहुत वर्णवाधिक मचका प्रकास ित पर प्रवायक क्यान भार धनाया, यहा हा राध्यम होत है। ब्यान प्रवाधाय क्यान होते हैं। प्रयोधाय क्यान होते हैं। प्रयोधिक हासल होते हैं, क्योंकि क्यांसित, क्यानाहम

विषय करन घट मामस नाना हा वयायक स्वसंघ हात है, क्यांक, कडाहास, कान्याहम मनसिक्क, उत्तय हुई वर्षायका समस्यात वाद्या जाना है। मिस्याल भी स्वज्ञनसम्ब मनसाधकः वन्त्रम् द्वर प्रयापमा भावन्यान पाया राजा द्वा मन्यान्य का व्यवस्थान स्मिनित्र द्वाके उत्पादः स्थिति भीट भीतः व मीनी दी स्टब्स्य काम भावन्यद्वान् पाहिए। वर्षायनगढ नियमने वहार्थ उत्पत्त भी होने हैं और ब्ययकों भी म दन होने हैं। किन्तु तिक्षति विवास सद् वहीं सदी अनुवास और स्ववह हे अवान आवण्य है। १९०१ प्रवासकार सद्वार अवाच अवाच आहे स्वास्त है। े देश ६ जब बर्ट देशह एवं देशका कांच्या साह संवक्ष है अयान आद्यायम है है। १, १८ - इंड बर्ट देशह एवं देशका कांच्या वर्ग है क्या होट देशजनक है to distribute desire desire desire to constant mass and distributed as

इदि एसा वि गाहा ण विरुद्धते, सुद्धद्व-पन्नवद्वियणए अवलंबिय द्विद्याओं ' मिन्या सिद्धी जेसि जीवाणं ते ह्वंति मवसिद्धां ' इदि वयणादो सन्वेशि मध्यमिक्यं पोच्छेदेण होदन्त्रं, अण्णहा तन्त्रवस्थणिदोहादो । ण च सन्वर्त्रा ण णिद्वादि, अण्यत्य निरुद्धियणं होदन्त्रं, अण्णहा तन्त्रवस्थणिदोहादो । सो अर्णतो चुन्चदि, जो संखेन्या संसीजनसिद्धियणं संते अर्णतेण वि कालेण ण णिद्वदि । चुनं च—

संते वए ण णिहादि काछेणाणंतएण वि ।

जो रासी सो अर्णनो ति त्रिणिहिट्टो महेसिगा ॥ ३० ॥

जदि एवं, तो अद्भाग्गलपरियद्वादिरासीणं सन्त्रयाणमणंतत्तं फिट्टि जि उर्जे फिट्टढु णाम, को दोसो १ तेसु अर्णतवबहारो सुचाइरियवस्ताणपसिद्धो उवल्हमदे चे ज तस्स उवयारिणबंधणचादो । तं जहा- पच्चक्खेण पमाणेण उवल्द्धो जो थंमो सो जरा

यद उक्त गाथा भी विरोधको नहीं प्राप्त होती है, क्योंकि, इसमें किया गया व्यास्थान गुज द्रव्यार्थिकनय और गुज्ज पर्यायार्थिकनयको अवलम्बन करके स्थित है।

गुँका — 'जिन जीवाँकी सिद्धि मियणकाटमें होनेवाटी है, ये जीव मर्जाक्ष्य कहलाते हैं', इस पवनके अनुसार सर्व भन्य जीवाँका व्युच्छेद होना चाहिए, भन्या भन्यसिद्धांके छक्षणमें विरोध आता है। तथा, जो राशि व्यवसहित होता है, वह कमी नह नहीं होती है, ऐसा माना नहीं जा सकता है, स्थाँकि, अन्यत्र वैसा पाया नहीं जाता, अर्थांद स्थ्यय राशिका अधस्यान देखा नहीं जाता है!

समाधान— यह कोई दोष नहीं, फ्योंकि, मध्यसिद्ध जीवांका प्रमाण अनल है। और अनन्त पढ़ी कहलाता है जो संस्थात या असंस्थातप्रमाण राशिके व्यय होने पर मैं सनन्तकालसे भी नहीं समाप्त होता है। कहा भी है।—

व्ययके द्वेते रहने पर भी व्यनन्तकाळके द्वारा भी जो शाश समाप्त नहीं द्वेती हैं, <sup>उसे</sup> महर्षियोंने ' थनन्न ' इस नामसे विनिर्दिष्ट किया हैं ॥ ३०॥

शंका — यदि पेसा है, तो व्ययसहित अर्धपुद्रस्परियसँन आदि राशियाँका अन्तरत्व नष्ट हो जाता है ?

समाधान - उनका अनन्तपना नष्ट हो जाय, इसमें क्या दीय है !

र्शेका — किन्तु उन अधेपुरत्यपरियतेन शादिकोमें धनन्तका ध्ययद्दार सूत्र तथा धायायीके ध्याप्यानसे प्रसिद्ध हुमा पाया जाता है ?

समापान-- नहीं, क्योंकि, उन पुट्रत्यरिवर्तन बाहिमें धननतत्वका व्यवहार उपवार निकम्पनक है। अब हसी उपवारनिकम्पनताको स्पष्ट करते हैं-- जो पापाणाहिका स्नम

શ શો. લો. ૧૫૦,

उपयोरेण परनवर्गा जि लोप युर्चरे, तहा औदिणाणविषयपुर्व्हिप द्विदासीओ फेव-सस्स जर्णतरम विसम्रो जि उपयोरेण ताओ वर्णताओ वि युन्चेति । तम्हा तेसु सुनाद-रिपवस्ताणपितद्वेण अर्णतवयद्दीरण णेर्ड परमार्ग विस्त्रोद्दी। बहुना वर्ष सेते वि अक्सुयो की वि सारी अरिय, सन्वरस सपडिवस्तरसेयुवर्हमादी। एसी वि मन्बरासी अर्णतो, तम्हा सेते वि वर्ष अर्थतेण वि कालेण म निष्टिसा वि सिद्धं ।

सांसणसम्मादिट्टी केवचिरं काळादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च जहर्णेण एगसमञ्जो ॥ ५ ॥

एद्स्स सुन्तस अत्रयवर्षो युन्तं परिविद्दे नि षेष्ट बुन्चदे, युगरुत्तमया । एत्य एग्रामयानिस्वणा कीरदे । ते जया-दो वा तिष्णि वा एगुन्त्यद्वीण जाव पित्रोवमस्स असंविज्ञीर मागमेचा वा ववसमसम्मादिष्टणा ववसमसम्मवद्वाए एगो समन्नो अदिय वि सासगर्ष पहिष्णा एग्रासम्य दिद्वा । विदियसम्य सन्दे वि विन्छर्च गदा, तिस्र वि त्रीएम मायणाणमगात्री आहो नि तटी एग्रासम्य ।

प्रत्यस प्रमाणके जारा उपनष्य है, यह जिस प्रधार उपचारसे 'श्रत्यस है' ऐसा लेक्स कहा जाता है, उसी प्रशास भविष्यानके विषयन उद्यंजन करके जो रातियाँ दिया हैं, व राव समन्य प्रमाणवां के प्रयस्तानके विषय हैं, दस्तिय उपचारसे 'श्रम्यत हैं' इस प्रशासने कही जाती हैं। मत्रय सूच और भाषायोंके व्यावधानसे प्रस्तिय समन्तके स्पयदारसे यह व्यावधान विरोधकों प्राप्त महीं दोता है। कथा, स्वयंके होते रहने पर भी सहा अक्षय रहने-पाली कोई राजि हैं जो कि सूच दोनेवाली सभी राजियोंके मनिवस्ति समान पाई जाती हैं। इसी प्रस्तार यह सम्याधी भी अननत है. इसील प्रचंत्र होते रहने पर भी स्वतन

इसा प्रकार वह मन्त्ररादा मा अनन्त ह, इसाल्य स्वयक्त हात कालद्वारा भी वह नहीं समात होगी, यह बात सिद्ध हुई।

सासादनसम्पर्टार्ट जीव कितने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा जयन्यसे एक समय तक होते हैं ॥ ५ ॥

इस सुबदा मययपायं पहेल कहा जा गुका है, इसलिय पुनरक होगके भएते पहां एर नहीं कहने हैं। अब यहां पर एक सानवाँ। प्रकाश की जाती है। यह इस मकारसे हैं-हो सपत्रा तीन, इस मकार पक मधिक शुद्धित पड़ते दूष परकोपको अस्वसाय आगमाय उपदासत्त्रपादि जीव उरवामनग्यन्वके कालमें एक समयाय काल भयदिए इह जोने एर एक साथ सासाइनगुषस्थानको मात दूष यक समयमें दिखाई दिये। इसरे सामयमें सबसे सब विद्यात्यको मात हो गये। उस समय तीनों ही लोडोंने सासाइनसम्पर्दाश्योंका अमाय हो गया। इस मकार पक समयदमाण सासाइनगुणस्थानका माना जीयोंकी अधेका साल मात हुणा।

1

र सारायनसम्बद्धनीनार्जनायेश्वरा जवन्येनेकः समयः । सः वि. १, ८,

उनकस्सोण पिठिदोवमस्स असंस्वेज्जदिभागो ॥ ६॥ दोणि वा विश्व वा एवं एगुनस्वर्ङ्गण जाव पिठिदोवमस्स असंग्र वा उनसमसम्मादिष्ट्रिणो एगसमयमादि कार्ण जानुकस्मण छ आविष्य सम्मचद्वाण अस्य कि सासणनं पिडिवणा। जाव ते मिच्छनं ण गच्छीन अण्णे वि उनसमसम्मादिष्टिणो सासणनं पिडिवज्जि । एवं गिच्छनं कर्मा उन्हेति । एवं गिच्छनं कर्मा पिठिवज्जि अनुर्णं होर्णं स स्वयादि । क्षेत्रेज्जद्वि । क्षेत्रेज्जद्वि । क्षेत्रेज्जद्वि । क्षेत्रेज्जद्वि । स्वयादि । स्वत्र्वक्ष्मणकाले आविष्याण् असंग्वज्जद्विमाणमेनो । सात्र्व्वक्ष्मम्

सासादनसम्यग्हाप्टे जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्क्रप्टकाल असंख्यातवें मागप्रमाण है ॥ ६ ॥

पिल्दोबमस्स असंखेडबिदमागमेचा । एवं होति चि कहु सामणुकस्सकालु युरुवदे । तं जवा- एगस्स सामणगुणहाणुवककमणवारस्स बदि मन्त्रिमपविड विषाए असंखेडबिदमागमेचो सामणगुणकाले। ठटमिट्ट, संखेडबाब्रियमेचो ठिपाए संखेडबिदमागमेचो या, तो पलिटोबमस्स असंखेडबिदमागमेचडवक्

दो, अयवा तीन, अयवा चार, इस प्रकार एक एक अधिक शृद्धिहारा असंस्थातव मागमात्र तक उपरामसम्बन्धि जीव एक समयको आदि करके उन्धाधित्यां उपरामसम्बन्धके कालमें अविदेश रहनेपर साम्रादनागुणस्थानको प्रचे जय तक मिण्यात्यको मान्त नहीं होते हैं, तक्वक अन्य अन्य मी उपरामसम्बन्धासान्तरका कालावत्वाक्रमानको मान्त होते रहते हैं। इस मकारसे प्राप्तकालके बृशको छाया उत्कर्षसे पत्योपमके असंस्थातवें मागमात्र कालतक जीवोंसे अहान्य (परिपूर्ण) साम्रादन्य पाया जाता है।

र्शका-सो यह काल कितना है !

समाधान—धवनी, सर्थान् सासादनगुणस्थानवर्ती, राशिसे असंस्थानगुणः इस प्रकार है— सासादनगुणस्थानके निरन्तर उपक्रमणका काल आवलीके सर्व मायमात्र है। किन्तु सान्तर उपक्रमणके यार तो पर्योपमके ससंस्थातये मायमा पार इस प्रकार होते हैं, देसा मानकर सासादनगुणस्थानके उन्हरकालकी उन्यत्तिकां कहते हैं। यह इस प्रकार है—

पक जीवके सासादनगुणस्थानके उपक्रमण्यारका यदि मध्यम प्रतिवृत्तिसे स शसंस्थातर्षे मागमात्र सासादनगुणस्थानका काल पाया जाता है, सथया, संस्थान मात्र, भपया मायटोके संस्थानयं भागमात्र काल पाया जाता है, तो परयोगमके ससंस्

१ बाइर्वेन पायोपनावस्थेयमागः । स. ति. १, ८,

केषियं कालं लगामा वि इच्छामुणिइकलम्डि पमाणेणोबड्डिरे सगरासीदी असंसेज्नामुण याटाञ्चममे साराणसम्मादिश्विकाटमस्वर्ण ; ; सामणकालां होदि वि पेषच्यं। जदि वि एत्य सुर्च णत्य, तो वि एदं वक्साणं सुर्च 4 व सहहेदनां। -एगजीवं पडुच्च जहष्णेण एगसमओ'॥ ७॥ एदस्तरयो- एक्स्रो उपसमसम्मादिष्टी उपसमसम्मनद्वाए एगसमञ्रो अतिय नि सासणं गरो । जोद जनसमसम्मचद्दा महंती होदि, तो को दोसो १ ण, सासणगुणदाए वादा गरा । जार वादावान वह वहणा वादा जा भागा । भागा वादावाद विद्यास्त । जीवेचार वदसमसम्मचद्वार सेसाए जीवे सासवं पडिवज्जिति, वैविजी पेर सामणामुणकालो होदि वि आद्दरियवरंपरागदुवदेसा । युनं च-उवसमसम्मचदा जिनयमेचा हु होई अत्रसिद्धा । पहिवाजेना साणं तत्तियमेता य तत्सद्दा ॥ ३९ ॥ भागमात्र उपक्रमण वारोका कितना काल गाम होता ! इस महार इच्छारासिसे गुणित पाल भावमात्र वर्षकार्मः वाद्यक्षः वक्षावतः वाद्यकात्र वाद्यकः वद्याः वर्षाः वद्याः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर् राज्ञिकः ममाण्ड्राज्ञितं अप्यातितं करनेप्र अपनी राज्ञिके असंख्यातगुणाः सासाहनगुणस्थानका नाह होता है, देसा प्रदेश करना खादिए। देशवि इस दिवसमें को स्वासानम्भाषास्थानका नहीं है, तो भी यह ध्याध्यान सुबक्ते समान प्रचान करने योग्य है। एक जीवकी अवेक्षा सासादनसम्पर्ग्धाका जपन्यकाल एक समय दें ॥ ७ ॥ अब इत स्वहा अर्थ कहते हूँ— यह उपरामसम्पन्दि जीव उपरामसम्पन्दि भारते प्राची मध्योष्ट रहेनेपुर सावादनगुणस्थानको मात हुमा। रीहा — यदि वपनामसम्बन्धका काल अधिक हो, तो क्या देश हैं है समापान —नहीं, क्योंकि, उपरामसम्पन्नवहां काल मनिक माननेवर सासाक्त-तथानकालके भी बहुत्वका मसन मास होता है, अर्थात् सासाहनगुणस्थानका काल बहुत रपानकालका सा महत्त्वका भागा भाग होता है, भाषाय सामावस्थानका काल बहुत त्रा पहेगा। इसका बारण यह है कि जितने उपसामसायकायकालक होए रहनेपर सीव न ५५-।।, ६९६० ६९८७ पद ६१४८ १२०। इत्त्रपुणस्थानको मात्र होता है, इतना हो सासादनपुणस्थानका कार ६६०१६ आह हितने प्रमाण उपरामसम्पन्यका काल अवसिष्ट रहता है, उस समय सासामन-। मतन व्यापा उपवासक्तपुरूष्ट्य काल ज्यावार प्रकार व, उस समय वास्ताहन त्यको मान होनेयाले जीवोका भी उतने वमाण ही उसका, सर्पाष् वास्ताहन व्यापाय विकास ९ ९६ जात मित जप-पंतेक, समय । ब. बि. १, ८.

₹, 4, u, j

एगसमय सासाणगुणेण सह हिदो, विदियसमए मिच्छनं गरे।। एवं सांगणगुण्यां छद्दो एगसमञ्जा ।

उक्करसेण छ आवित्रआओं ॥ ८ ॥

एदस्स अत्यो गुरुषदे- एक्को उत्रममसम्माइही उत्रसमसम्मनद्वाए छ अतः लियाओ अत्यि वि सासणं गरो। । तत्य सामणगुगम्हि छ आविलयाओ अल्डिर्ग मिष्डकं गरो। इरो ? साहियामु छतु आविलयामु सेसासु सासणगुणपडिवन्नगामाता। पर्व च--

ठवसमसम्मतदा जर छात्रलिया हवेग्ज अवसिद्धा । तो सासणं पवग्जर गो हेट्टकटुकालेसुं॥ ३२ ॥

सम्मामिन्छाइट्टी केनचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोसहत्ते ॥ ९ ॥

स्त ऊपर यतलाए हुए प्रकारसे उक्त जीव एक समय भाव सामादनगुगरधानके साथ, वर्षात् उस गुगरधानमें, दिवाद दिया, और द्वितीय समयमें निष्यादकी प्रान है साथ। इस प्रकार सामादनगुणस्थानका एक जीवकी अपेक्षा जयन्यकाल एक समयग्रमाय वर्षातम्ब

एक जीवकी अवेशा सासादनसम्पर्शिका उत्कृषकाल छद्द आवलीप्रमाण है।।८।। सप इस स्वकाः वर्ष कहते हैं— एक उपशाससम्पर्शिक विव उपशाससम्पर्शिक कार्ट्स एह सायार्ट्योक रोप रहतेपर सासादनगुणस्यानमें गया। उस सासादनगुणस्यानमें एह आपर्था रह करके मिस्यात्यमें गया, प्रशीक, साशिक छद्द आवल्यिके रोप रहतेपर सासादनगुणस्यानके मात होनेका स्रमाय है। कहा सी है—

यदि उपरामसम्यक्त्यका काल छह आवर्त्यमाण अवशिष्ट होये, तो जाव सासादर गुणस्थानको सन्त होता है। यदि इससे अधिक काल अवशिष्ट रहे, तो सासादनगुणस्थानको नहीं जान होता है। ३२॥

(रम महार पक जीवकी वरेशा छड बावलीमनाव ही सासादनगुणस्थानका

रत्रप्रधान है।)

सम्परिमप्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेता जपन्यमें अन्तर्गृहर्त तक होते हैं ॥ ९ ॥

१ बन्दोंच बदानिविद्याः । त. ति. १, ८.

र दरनपटायणका कार्याजनेता हु समयमेणी ति । सम्बिहे आगानी अनुप्रत्यस्य होति । सन्दर्भ

३ बध्दन्दिष्टरदेशीनामीक्ष्येक्षता अक्ष्येनश्चर्तहर्दः । स. वि. १, ८.

. 9. 1

एदस्स अरथो - अद्रावीससंतक्तिमयमिच्छादिष्टी बेदगसम्मचसहिदअसंबद्र-संबद्धा-पमचसंबदा सत्तद्व बणा वा, आवित्याए असंखेडबदिमागमेचा वा, पिटदोवमस्य वज्जीदभागमेचा वा परिणामपञ्चएण सम्मामिच्छर्च गदा। तस्य सब्बलदुमनोमुदुच-द्रण मिच्छचं वा असंजमेण सह सम्मचं वा पडिचण्या । यहं सम्मामिन्छचं । एवं भिच्छचसा अंतापुरुचकाली सिद्धो । अप्पमचसंबदो किमिरि सम्मापिच्छचं च ? ण, तस्त संकिलेस-विसोदीहि सह पमचापुच्यगुण मोचूण गुणंतरगमणामावा ! त वि असंजदसम्मादिद्विवदिरिचगुणंतरगमणामावा । पञ्छा सम्मामिन्छादिद्वी संजर्म ार्संजर्म या किष्ण वीदो ? व, रुस्स मिच्छच-सम्मचसहिदासंजदगणे मोनून गुर्नेहर-रभावा । कि कारणे ? सहाबदों चेप । ण दि सहात्री परवज्वणित्रीगारहो, विरोहा।

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मेहिहामैदी अपूर्वस प्रकृतियोंकी सत्ता रक्यतेकोरे १९६१ अथवा वेदकसम्बक्त्यसहित असेवतसम्बन्धहि, सेवनासंबन नया प्रमुत्तसंबन धानवाले सात भाठ जन, अथवा आदलीं असंख्यातवें आगमात्र और, अथवा वस्ते-ससंस्थातय भागमात्र जीय, परिणामाँके निमित्तते सम्बन्धियायगण्यस्यातको प्राप्त यहापर सबसे कम अन्तर्महर्नकालप्रमाण रह करके मिध्यान्यको, अध्या मर्तवाले सायक्यकी मान दुष्। तब सायमिष्यात्व मह हो गया। इस प्रकार गायमिष्यात्वका र्वहर्तप्रमाण बाल सिद्ध हमा ।

हीया- यहां पर अप्रमत्तसंयत श्रीय, सायश्मिश्याचगुणस्थावते वहीं वहीं प्राप्त тŧ

समाधान- नहीं, प्यांकि, यदि अप्रमत्तकेयत जीवके सेहराकी कृति हो. तो प्रमत्त-गुणस्थानको, भीर यदि विगुद्धिको सृद्धि हो। तो अपूर्वकरण गुणस्थानको छोड्कर दुसीर धानोंमें रामनका समाव है। यहि सवमत्तलंपत जीवका मध्य भी हो, ना सस्वमनसम्ब गुणस्थानको छोड्कर दूसरे गुणस्थानोमै गमन नहीं होता है।

होता - सम्यागिश्वाहरि जीव भवता बाल वरा बर दे है सेदमकी अधका संदक्ष-को वर्षो नहीं प्राप्त कराया गया है

समाधान-मही, प्रवेशि, इस सम्बन्धियाहि श्रीवदा विद्याचसहित विद्या-जिस्यानको, अध्या सायक्ष्यादित असेयतगुष्यधानको छोत्कर दुसर गुण्डलाकोसे का अभाव है।

र्मका -- माप गुणस्थाओं मधी जानेवा वया बारव है ?

समाधान-देसा स्वभाव दी है। और स्वभाव दूबरेंके प्रशेक देश्य बही दुवा । है. बर्गीक, उसमें विरोध भाता है।

उक्स्सेण पलिदोवमस्स असंखेजजदिभागो' ॥ १०॥

एदरस अत्यो गुज्यदे- पुर्वाचर्जावा सम्मामिच्छर्च गंतूण तत्थंतोमुहुचमन्छिप जत ते मिच्छत्तं वा साम्रंजममुम्मत्तं वा पा पडिवज्जंति, ताव अली वि अली वि पुल्युत्तवीश सम्मामिच्छचं पडिवज्जावेद्व्या जाव सुन्तुकरसो णाणाजीवावेवसो प्रिदेशिमस्स अर्थः संबदिमायनेवकालो जारो वि । सो पुण समरासीदो असंखेजबगुणो । एदस्स वि कार्य पुर्ज व वचव्यं । तरो जियमेण अंतरं होदि ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहत्तं' ॥ ११ ॥ म्द्रमायो बुगद्द-एको मिल्छादिही बिसुज्यमाणी सम्मामिन्छम् परिगणी। इन्द्रनदुमतेन्द्रम् कालमन्छिर्ग बिसुज्यमाणी चेत्र सासंबम् सम्ममं परिवणी। संहिन् इतिय निष्ठमं किया गरी ? ण, विसोधिशद्धं संपूर्णमन्द्रिय संकिलेसं पूरिप मिष्णां गन्दनारमग्मामिन्द्रचकालस्य बहुचप्यसंगा । एविकस्से विसोहीए कालादो संहिनेम

नाना अभिने अपेशा सम्याग्मध्यादृष्टि जीवाँका उत्कृष्टकाल पन्योगमे मर्गर पार्वे मास्त्रमात है ॥ १०॥

इम गुपका मध्ये कहते हैं- पूर्णीना गुणस्थानवती जीव सम्यागिश्या वक्ते मा देश्यर भीर परांतर सन्तर्गृहर्तकाल तक रहकर जनतक थे मिथ्यान्यकी भाषा समेत्रासित कारक परे: बड़ी बान्त होते हैं, नवनक साथ श्रम्य भी पूर्वीक गुणस्थानवर्ती है। जीव साम िक्क सके अन्त करते जाना साहिए, जननक कि सर्वोत्कृष नाना और्वोर्वा भेगा रक्षरकार व वीपनवा सर्वन्यानयां सामगात्र काल गुरा हो । यह काल शपने गुणश्यान कर्र अंबरर्रा से सर्वस्थानमुला हाता है। इसका भी कारण पूर्वेह रामान है। वहनी बर्णरण । इसके वधा मु लियमन प्रामन की जाता है।

मह ही रही अनेथा सम्यामिक्याहि जीवका जमन्यकाल अन्तर्गृहर्गे है ॥११॥ इस म्परा भवे बहते हैं-जब मिल्यारीय त्रीत विज्ञत होता हुमा सम्यागिरयाल्डी प्राव हुआ। बुद अवंत्रम् अन्तर्मेहर्नदाल रह बर निश्च होना हुमा ही अनेननमहिर्ग

कारक बरोह के जा राजा है देश-महाम्बर पृथ्व करके, भर्तात सह प्रापृथ्यामा होकर, सम्मीमणार्थः कोब जिल्हानको करी करी करन हजा है

संचाहात - वहीं, वर्गाहे, विल्डिक संवृत्त काल मन अवने मुलक्षामने स्ट कार्ड बेर करे छार करण करके जिल्लासकी अजिलांत श्रीलंक सरवीत्मध्यालगांवीती कार्य बर्चका उस्त र' अपना । इसका कारण पर है कि एक मी विग्रविक कार्यन संहरी

CARRETREENICES, 4 St. C. C. \* 156 # 27 45 £ £274, 755 \$ 4. 70, 2, 6.

काळाणुमोने असंबद्धानादिद्विकाळपरूकणं विसोदीणं दोण्हं पि कालो दोण्हं विच्चाले हिदपडिमागकालसदिरो णिप्छएप संगेर 11 10 1 वि अदिपाएण मिच्छचं म जीदा । अचना वेदगमम्मादिही मंकिजिस्समान्त्री म र महोतुहाँ, मिचर्च गरी, सप्तलकुमंत्रीमुक्षकालम्बिक्स अविग्रहमंत्रिक्तमा मिन्छचं गरी। एक û sêkr कारणं प्रत्यं व बचव्यं । एवं देशिह बचारेहि सम्मामिन्छ चस्म जहण्णकाजुरस्वणा सद्दा سينيم نيم e esti

र्वं कपं १ एको विमुन्तमाणे निच्छादिही सम्मामिक्यमं गरी, सन्दारमार्थन सद्देवमच्छित्व संहितिहो होत्व मिच्छचं गरी । बुच्चिन्छन्द्रहेन्वकान्त्रीरी एगा उद्यास्त्रका वर्षात्र होत्राज्ञ । सम्बुक्तसाविकालमम्हवादो । अपना बेदगमममादिद्दी संक्रिजिस् माणामा सम्मामिच्छाचं मदो । सम्युक्कसममंतोस्युक्कराज्यपिसुद्दण अनंबद्गमसादिही 4 बादो । प्रय वि कारणं पुष्यं व वचन्त्रं । بتر

असंजदसम्मादिद्दी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पदुःच सन्बद्धा' ॥ १३ ॥

भीर विद्यासि, इन दोनोंका दी काल, दोमोंके मातराक्षमें विषय मानमान कारणारित भार विद्यालया होता है, इस महारहे भीमायस यह वर्षमात विद्याहरणा सार निष्याहरि श्रीव विश्वायको नहीं मान्त कराया गया । भाषा, सहराका मान्त होन्हान विश्वसारम् वाच भाववात्वका कहा मान्य करावा वाच । वाचवा गर्माव्यक भाग वाच्या । विश्वसारम्बरिष्टि जीव सम्प्रामित्रमात्र गुण्यसावद्ये मान्य हुम्म, श्रीर वर्षा वर्षा सर्वस्य पहरताम्प्राप्त आव पानवामान्याच गुजरवावका मान हता. भार बटा पर सवस्य स्रातामिकाल रहे करके स्वयित्रपाहरी हुमा है। विश्वालको सन्। बटा पर सवस्य जात्या दुवके समाम ही कहूना चाहिए। इस माह ही प्रशासिक सम्मान्या पटा पट हा

एक जीवनी जरेशा सम्पत्तिमध्यादृष्टि जीवना उत्तर काल अल्टीहर्न है । है र । यह इस मकार है— यक विद्यादिको सात होनेवाला विकासिक और सामाधिकाल यह दश्य भवार द्वा प्रशासका काम प्रशासका भाग दामपाला उभरपाटाह काव परकारकारण व को मात द्वामा प्रदेशक सम्बोदक सम्मोदन काम स्टब्स और संदेशपुत दा करने दिस्सान पर आग हैंगा। पहारे बनारावे नव हस्ते गुजरधानके उद्युव कारने हा करव (6.42) न है। आहं दुवा। प्रदेश बनाराच गय देवा। गुण्डवालय ज्ञेष्य्य बार्ट्स पर बहुद बार्ट्स क्यातामुख्य है, बचाँकि, यह सब्बोल्ड बिबाहरू समुद्राचन है। अदयः सहस्व पर बहुद बार्ट् विद्यान्तिक है। क्यांत्र, यह स्वान्त्र है। क्यांत्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त् स्वान्त्र विद्यान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त हित स्वतासक्यार्थि हो गया। यहांवर भी वास पूर्व स्वाह है कहना कार्रस क्रांत्र है करना कार्रस क्रांत्र है

आरंगतमस्मारि और हितने बाल तब होते हैं ! नानः हैं रहे। अर्थ नह र बहदग्रान्द्रपट्टन वाडीवरीहरू हेद कांक्र १ १६ ०

अदीदाणागद-बड्डमाणकालेमु असंजदसम्मादिड्डिबोच्छेदो गरिथ। इदो ! सहारो। रसो सहाओ असंजदसम्मादिड्डिरासिस्सित्थि चि कर्ष णच्चदे ! सच्चद्वा-वयणहो। इपे

. एसो सहात्रो असंजदसम्मादिद्विरासिस्सात्य चि कथं णच्यदे ? सच्यदा-वयणारो। बर्ग पक्खो चेत्र साहणचं पडिवउजदे ? ण, उभयपक्खितसिद्विज्ञचस्स जिणवयणस्य एकस्स ति पक्खसाहणचे विरोहाभावा। दिवायरो सुत्रो उदेदि चि वयणस्त्रेत किरियाविसेसणवारो सच्त्रद्विमिद्दे पावदि ? ण, तहा विवक्खाभावा। पुणो कथमेत्यतणविवक्सा ? बुल्तरे-

सन्या अद्वा नेपित सन्यद्धा, सन्यकालसंबंधिको नि वृत्तं होदि । एगजीवं पदुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥

एगजीव पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥ तं कर्षं १ अद्वातीसंतकाम्मयमिच्छादिद्वी वा सम्मामिच्छादिद्वी वा संजदानंत्रो

असंपतसम्परिः जीवोंका ब्युच्छेद नहीं है । ग्रेका—विकालमें मी असंपतसम्परिः राशिका व्युच्छेद क्यों नहीं होता !

समाधान—पेसा स्वमाय ही है। श्रमः—मसंयतसम्बन्दिः राशिका पेसा स्वमाय है, यह केसे जाना है

समाधान — सूत्र पडित 'सर्याचा' अर्थात् सर्यकाल रहते हैं, इस बचनसे जाना। र्वाका — विवादस्य पक्ष ही देनावेशों हिसे पात से सामान

र्शका—विवादस्य पक्ष ही हेतुपनेको कैसे मात हो जायगा ! समाधान—नदीं, पर्योक्ति, उमय पराके अतिहाय युक्त अर्थात्, उमयपक्षातीत, प

भी जिनवयनके पहा और साधनके होनेमें कोई विरोध नहीं भाता। गुंडा—'दियाकर स्वतः उदित होता है' इस पचनके समान क्षिताविशयण होनेसे

ंसन्तर्द ' ऐसा पाट होना चाहित ? 'सन्तर्द ' ऐसा पाट होना चाहित ?

समाधान — नरी, क्योंकि, उस महारकी विवसाका भमाव है। दौरा — ने। यहाँ पर किस महारकी विवशत है ?

समापान — यद विवसा इस प्रकारकी है— सर्व काल क्षित भीवोंके होता है, वे सर्वोज्ञ बरुटाने हैं, अर्थान् 'सर्वेद्यालसम्बन्धी जीव' यद 'सर्वाद्धा' पदका सर्व है।

पद जीवर्ग अरेसा अमेयनसम्पादिष्ट जीवना जयस्य काल अन्तर्मृति है ॥१४॥ चैक्का न पद करत केम संसद है !

समापान — दिसने पहुँछ धर्मयमसहित राज्यकृषमें बहुतवार प्रावि<sup>4</sup>र दिसा है, येमा दोर्ग वह में पहर्मदी अहार्रम प्रहतियोधी समा रमनेवाला विश्वारि क्री. स्रथस सम्बद्धियायगर्हाट, स्थवा संवतासंवत, स्थवा व्यक्तसंवत क्राव सर्ववतास्वारिह हुं<sup>सी</sup>

र स्वार पत्र बक्देर लोही । व वि. से. दे,

सच्चल्हमंतिषुहुचद्दमञ्ख्य मिन्छनं वा सम्माभिन्छनं वा संज्ञमासंजर्म वा अप्पाच-भाषेण संज्ञमं वा पदिवण्यो । उदिश्मगुणद्वाणेहित्री संकित्सेण ने असंदद्दसम्पत्तं पिट-वण्णा, ते अशिणहेण नेण संकित्तेसेण सह मिन्छनं सम्माभिन्छनं वा शिद्या । वे हेहिन-गुणहाभिद्दिते विसीदीण सासंज्ञमं सम्मनं पदिवणा, ते ताए पेर विसीदीण अशिणहाण् सह संज्ञमातिज्ञमं अप्याचमार्थण संज्ञमं वा शेद्या, अष्णहा जाइण्यालाञ्चवन्त्रीते।

उक्कस्सेण तेतीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि<sup>'</sup> ॥ १५ ॥

तं कर्ष १ एमको पमनो अप्यमचे वा च्युच्ह्युवसामगाणमेकस्दरो वा समज्ज्ञ-तेचीससागरीवमाउद्दिदिवतु अणुचरिवमाणवासियदेवसु उववण्यो । सार्यज्ञमसम्मचस्स आदी जारो । वरं चुदे पुरुवस्रोदाइवतु मणुलेसु उववण्यो । तत्व अर्यजदसम्मादिद्वी देश्च ताव द्विरो जाव अंतीमृद्रुवमेचाउअं सेसं ति । वदं अप्यमचमार्यण संवसं पदि-वर्षा (१) । वरो पमचाणमचपरावचसदस्सं कार्यण (१) खन्योदियाओगाविशोदीण विसुद्धो अप्यमचो जारो (१) अपुरुवस्वागे (४) अपिवद्विग्रवगो (५) सुद्दम-स्वयो (६) सीवकसाशे (७) सर्वागी (८) अनोगी (९) होद्दग विद्दो जारो ।

फिर घह सर्वेट्यु अन्तर्गृहतं काल रह् करके मिष्णायको, स्रया सम्योग्धरमायको, स्रयम संवत्तास्यमध्ये, स्रयम संवत्तास्यमध्ये, स्रयम संवत्तास्यमध्ये, स्रयम संवत्तास्यमध्ये, स्राप्त संवत्तास्यमध्ये, मात हुए हैं ये जीव उसी स्रयमध्योद्धरोह साथ संवत्तास्यमध्ये मात हुए हैं ये जीव उसी स्रयमध्ये साथ स्वत्यस्योद्धरोह साथ स्रयम्भयस्यमध्ये मात कराना पादिया जो स्रयस्य प्रत्यस्य साथ संवत्तास्य स्रयस्य स्वयस्य स्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्

असंवतसम्बन्धि जीवका उत्हर काल साविरेक तेवीन सामरोवम है ॥ १५ ॥ श्रीका —वह साविरेक तेवीस सामरोवमकाल केसे सम्बन्ध है ।

समाधान—पक प्रमक्तियत, मध्या भामत्तवीयत, भध्या वारी उदात्तवधीरी हे ति उदात्तवधीरी हो देव अवसामक जीव एक साम का तैतीस सामधिम भायुक्त ही विवित्तवाले अञ्चलः विभागवाली देवीम उत्यवं द्वामा, और इस प्रकार भावेतवाली त्यांचे आहे हुई। इस प्रधान वारी प्रवृत्त होकर पूर्व गीडियर्व ही भायुवाटे माद्रवारी उत्यव दुष्ता। व्हर्ताय का मात्रवाट का मा

९ डलरॅब बदाब्रेड-मानतेरमाचे साहिरेसावे । स. डि. १, ८,

385]

रहेरि एक्ट्रि अकेन्द्रहेर्चीह जनपुरुषकोडीए अहिरिवानि समजनवेर्वात्यकारो द्यांदाने दीवानं

वनंबर्यमारिक्षिम उन्हरमङ्गाना होरि। हिमहं समजगतेषीयसागरीरमागरे देवें उन्हों है है है के अनंबद्धाएं दीहता पुत्रनेमा । कुरी है बहि वेगीनम

बनाइ हिस्स देवेतु उत्तादिस्त्वीद्द, तो वासपुत्रवासीय आउए विच्छएन संवर्ष व बर्डार् । जो द्वा मनजननेनीमनागरोतमाउद्विदिष्यु देवेतुरवित्रप मनुमेन उराल के ब्रोहरू वह सके हमने बनेन मर बरियम प्रेमी निष्यपण संबंधी होति ने मन्त्रकार्वाक्तानां वस्त्रविक्तां हेरेगुपादिशे । चंत्ररागंतरा केवित्रं कालादो होंनि, णाणाजीवं पद्वन्य क्षको ॥ १६॥

बहरत युक्तम अत्यो सुगमी, अमंत्रहमस्मादिद्विन्दि वस्तिद्वादी ।

हर वे जनकर्षुरचीन कम पूर्वदेशी. काण्ये मितिक नेतीस सासरायम अस्वतसारास्त्रीय र्षेडः – क्रार्थ सर्थवनसम्बद्धि गुणक्यात्रकः ग्रन्थकान् बननाति द्वर कत्र औ

हैंद करत दह के ने व मानरंपन भापूरी क्यारियांते देवोंने हैं। दिगानिय उपम दर

लकार वर्षः कानमाः, समान् वकः समय कम ननीस सामरीमानी क्रियोन्सः है है है बाद है जान व हरणा जान का लगनवाहपार्व गुलक्यालक हानकें वीवेश जरी कत क कहता है का है कर दूर मेनीख सामराग्य आमुनी विभावतान है वीर्थ हमन करणा क प्रमा ना, कार्यकान्याताच सागृद व्यवस्थ रहन गुर निश्चमं वह शेवमंद्री व्यव हैं अन्तरा कि व के कम कम कम नेतिय सामानाम सामुकी विम्नियान वर्षीर हता हे जह म कर्ना है का, वह सम्बाद की वृत्दीरि ध्यालका म सम्बद्ध समाण । - ००१० हर हुए ज्ञान्य कारन हैंगा। ह्यांटर, सर्गान, सार्गन्यकानकान कारनी सीना देश्वह इन्ह वह सवद देव वृत्तं संस्तृत्म सानुद्रा दिर्गात्राल सनुस्राधानसमी eca con en e es e

111111 हर के उन कर करते हैं कर रेंच्यू वर्तवायमध्यान प्राचित्रकाल दें वर्तन हैं स्वतं

## एगजीवं पडुच जहण्णेणंतीमुह्तं ।। १७ ।।

तं कर्ष १ एक्को अहाबीससंतकिम्मयिनिच्छादिही अर्धवस्त्रम्मादिही पमचसंवदो या पुन्तं पि बहुती संवमासंवमगुणहाणे परियद्विदो परिणामपञ्चएण संवमासंवमं पिढवण्यो । सञ्चलहुमंतीसहुद्यहमच्छिन् पमचसंवद्यदे मिच्छचं या सम्माभिच्छचं वा असंवदसम्मर्ख या पिढवण्यो । पच्छाकद्रमिच्छचा सासंवमसम्मर्खा च व्यप्यसन्तमावेच संवदस्तमम् । विश्वण्यो । पच्छाकद्रमिच्छचा त्राह्मवायुववर्षीण् । किम्द्रं सम्मानिच्छादेही संवमासंवर्ष युणे ण, भीदो । ण, तस्त देसविरदिवन्वाण्य परिवमणवर्षीण् असंवना । युणे च-

> ण य मरह णेव संनममुदेह तह देससंजर्भ वावि । सम्मापिष्टादिही ज ड मरणेतं समुखाओं ॥ ३३ ॥

एक जीवकी अपेक्षा संग्वासंग्रवका अपन्य काठ अन्तर्भूहर्त है। १०॥
यह काठ इस प्रकार संग्य है— किसने पहारे भी बहुनवार संग्यासंग्रम गुलस्थानमें
परिवर्तन किया है पेसा कोई एक मोहकर्मकी अहाईस महात्योंकी सत्ता रक्तेयाना मिच्याहरि, कायवा समंत्रसवस्ग्रव्याद्ध स्यया समस्तंयन जीव युना परिणामीके विभिन्नते संप्रमासंद्रम गुलस्थानको माग हुमा। यहाँपर सबसे कम मन्तर्गुर्तने काट रह करके वर वर्षी प्रमासंद्रसत्य है, अर्थात प्रमास्त्रवाय सम्बन्ध स्थासंद्रम गुलस्थानको माग हुमा है, ते।
मिच्यात्यको, भाषवा सम्यामिच्यात्यको, अथवा अर्थवसम्यक्त्यको मान हुमा। अथवा, यहि वे प्रभाष्ट्रत मिच्यात्यका प्रभाष्ट्रत संस्वासायक्ष्यवाठ है, अर्थोत् संप्रमांपन होनके पूर्व निच्यात्यको स्थास सम्यामिच्यात्यको, अथवा अर्थवसम्यक्त्यको स्थास स्थास स्थास स्थास हुम। अथवा, यहि वे प्रभाष्ट्रत मिच्यात्यको प्रभाष्ट्रत संस्वास स्थास स्थास स्थास स्थास स्थास हुम। व्यक्ति,

ग्रंका-सम्पन्धियाददि जीव संवमासंवम गुणस्वातको किसतिए वहीं माप्य कराया गयानी

समाधान-नहीं, वर्षोंक, सन्यामन्याहि जीवके देशविश्तेक्य पर्यापने परि-णमनकी हारिका होना असंसव है। बहा में है-

संस्वितस्यारिक जीव म तो सरता है, न संवमको सन्त होता है, व देशसंवसको भी प्राप्त होता है। तथा उसके मारणान्तिकसमुद्धात सी नहीं होता है इ ३३ इ

६ एकबीर्व प्रति अवस्वेता हुई(हैं: १ स. सि. १, ८,

र हो संबर्ध न शिवादि देसबर्ध वा न बंबई आई। कार्य वा विच्छे वा परिवर्धिक आदि क्रियंक ह सम्बद्धिकारितार्थेत अहि आईमें हुए। वर्ष मार्च मार्च्यकपुण्यादी वि च न विस्तरित हु। दी. जी. ब १००४

1407

. धनखंडागमे जीवहार्ग

न्नकस्सेण पुन्नकोडी देस्रुणा' ॥ १८ ॥ वं क्यं १ एक्को विस्पिसो मणुस्सो वा अहावीससंवक्षिमो सिन्छारही सा पंचित्रियतिस्मितसंग्रुच्छिमपञ्जचाम्सः मच्छ-ऋच्छव-मंहकादिसः उववण्यो । सज्तहरू अनोमुद्रुचकारेन सन्त्राहि पञ्जचाहि पञ्जचयदो जादो (१)। विसतेत (२) सिं (१) होर्न संजमामंजमं पडिवण्या । पुन्यकोडिकालं संजमासंजममणुपालिर्ग मह मोधम्मादि-आरणन्त्रुद्रनेमु देवेमु उववण्यो । णह्नो संजमासंजमो । एवमादिन्होहे वीहि

अंतान्द्रमेहि ऊना पुन्यकोडी संजमासंजमकाली होदि।

पमत्त-अपमत्तसंजदा केविवरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुन्व सन्दर्भा ॥ १९ ॥ बैन निमु ति कालेमु पमवापमचयंबदेहि विरेहिदों एमी नि समन्नी परिथ, तेन

एमजीवं पदुन्य जहण्णेण एमसमयं ॥ २० ॥

मंबरामंबन भीतरा उत्हर काल कुछ कम पूर्वकोटि वर्वनमाण है ॥ १८॥ षड का प्रकार समय है - माहकर्मकी महादेश महादिशोकी गत्ता रलदेवाना देश किया मनुष्य विश्वासीय तीन, अंत्री प्रयोग्निय और पूर्यालक, येन संस्टीत िरुष शर्फ १९७९, मेहरारिशीन अनव हुना सर्ववयु अन्तर्गुटनेशाव हास नर्व इस्टेंबर न रहे न्वरवंश काल हुआ (१)। तुवा विभाग स्वा हुआ (१), विग्नवंश हरहे (1) अवराधवन्य ज्ञान हुना वर्ष पर पुरकारी काम तक शेपाराश्यमका पानन करहे हरा थे र शे वरेड नहां भारि लेडर भारत अन्युतास्त कारोहे देवीमें उत्पाद मार्गर करहा-धरम नह हो गया। इस महार मानिक मीन मनगढुनीन कम पृथ्वादिया। करर-सरवरा बाह होता है।

इनक् और अवसन्यवन हिनने काल नह होने हैं है नाना भी गेंही बनेपा मंदान होते । ११ । भाव कर है। बालीय सम्भ जीर वज्ञमभावनीको स्टब्सि उद्द भी सवत नहा है thist there exi

बहु होही बादा प्रमण बीच बयमनप्यत्रहा तपुन्य कात वह समय

तं जया- पमचस्स ताव एससम्भे बुच्चदे । एक्को अप्पमको अप्पमस्वाए सीलाए एससम्यं अदिदन्तिय वि पमचो आदा । पमचपुणेण एससम्यं दिद्वो विदिय-समप मदो देवो आदो । णहो पमाद्विसिह्संजमो । एवं पमचस्स एससम्पपस्वणा गदा। अप्पमचस्स गुच्चदे- एक्को पमचो पमचद्वाए सीलाए एमसम्यं अविवयसिय वि अप्पमची आदो । अप्पमचपुणेण एससम्यं दिद्वो विदियसस्य मदो देवो आदो। गहमप्पमच-गुणहुण्या अपया उत्तमसिदी ओदरमाणो अपुच्चकरणो एससम्यं अविद्यसिय वि अप्पमचस्य आदरम्या आदो । दिद्यसम्य मदो देवेश्ववरणो । एवं देवि पयोरिह अप्पमचस्स एस-समयपस्वणा करा।

उक्करसेण अंतोमुहत्तं'॥ २१ ॥

पमनस्त ताव बुच्चर्- एक्हो अप्यमची पमनपञ्जाएण परिणमिप सन्धुक्कस्त-मेतेष्ठदूचमस्टिप पिच्टर्च गरे। एवं पमचस्त उक्कस्तकालस्वणा गरा। अप्यमचस्त पुल्यान एक्को पमची अप्यमची होर्चण सन्धुक्कस्तमंत्रीष्ठदुचमन्द्रिप पमनो आरे।। एसा अप्यमचस्त युक्कस्तकालस्वणा।

प्रमत्त और अप्रमत्तसंयवका उत्कृष्ट काल अन्वर्मुहुर्व है ॥ २१ ॥

पहें प्रमासंयतका उत्हर काल कहते हैं— एक अप्रमासंयत, प्रमासंयतपूर्वायते परिणत होकर भीर सर्वाव्यक अन्तर्गृहेंते बालग्रमाण वर करके मिण्यान्यों मास हुआ | इस प्रकार प्रमासंयतके चल्ला काला कहते | इस अप्रमासंयतका उत्हर काल कहते हैं— एक प्रमासंयतका उत्हर काल कहते हैं— एक प्रमासंयतका उत्हर काल कहते हैं— एक प्रमासंयतकाया, अप्रमासंयत होवह, पहारत सर्वात्तर मन्त्रपूर्त बाल तक रह करके प्रमासंय

यह इस प्रकार है— वहुट प्रमलसंवतका एक समय कहते हैं। वक अप्रमलसंवत जीव, सममण्डाटके हीं जा हो जाने पर तथा एक समयमांत्र जीवित शेव रहनेवर प्रमण्डास्व हो। गया। प्रमण्डास्वानेक साथ एक समय दिखा, बीर हुवेत समयमें मरकर देव जरूप हो। गया। तथ ममाहिविद्यार संवय नष्ट हो। गया। इस प्रकार प्रमण्डास्व के व्यवस्था प्रकारणा हुई। यब अप्रमण्डास्व के वक्त समयमी प्रकारणा करते हैं— एक प्रमण्डास्व जीव प्रमण्डास्व होणा हो जोने पर, तथा एक समयमात्र जीवनके शेव रह जाने पर अप्रमण्डास्व होया हो। यव अप्रमण्डासक्व साथ पर समय हिस्स होने हो स्व स्व मामण्डास्व स्व स्व होने पर प्रमण्डास्व होता हो। सुना अप्रमण्डास्व साथ हो। सुना अप्रमण्डास्व करता हुमा अपूर्व हालासंव एक समयमात्र जीवनके हो वहा हो। अप्रमण्डास्व एक समयमात्र जीवनके हो। पहले स्व समय साथ हुमा, और दितीय समयमें प्रमण्डास्व होगा। इस सरह होने प्रमण्डासिक अप्रमण्डास्व एक समयदी प्रकारणा ही। गर्मा

१ उत्कवेंनान्तर्यहर्तः ! स. सि. १, ८,

चउण्हं उवसमा केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च जह ण्णेण एगसमयं ॥ २२ ॥

र्तं कथं ? दो वा तिच्यि वा अणियद्विउत्तमामगा सेटीदो ओदरमात्रा एगमुमर् जीविदमत्थि ति अपुष्यकरणउवसामगा जादा । एगसमयमपुष्यकरणेण सह दिहा विदिय-समए मदा देवा जादा । एवमपुञ्चकरणस्य एगसमयपरुवणा कदा । अप्यमनमपुञ्चकर्ण करिय विदियसमए कालं कराविय अपुट्यकरणस्म एगसमययस्त्रणा किणा कदेवि बुवे ण, अपुरुवकरणपढमसमपादो जाव जिहा-पयलाणं बंघो ण बोच्छिज्जदि ताव अपुष्ट करणार्णं मरणामाता । एवं चेव तिष्द्रमुवसामगाणमेगममयपरुवणा णाणाजीवे अस्मिर्ष् कायच्या । णवरि अणियद्वि-सुहुमउवसामगाणं चढंत-ओदरंतजीवे अस्सिट्ण दीहि पर्यारीह एगसमयप्रह्मणा काद्म्या । उपसंतकसायस्स चढंतजीवे चेय अस्मिद्ण एगमप्र-परूबणा काद्या ।

उकस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३ ॥

चारों उपञ्चामक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेका जधम्यसे एक समय होते हैं॥ २२॥

यह इस प्रकार है— उपरामश्रेणीसे उतरनेवाले दो, अथवा तीन अनिवृत्तिकरण उप शामक जीव एक समयमात्र जीवनके शेव रहनेपर अपूर्वकरण गुणस्यानवर्ती उपशामक हुए। तय एक समयमात्र अपूर्वकरणगुणस्थानके साथ दिखे । पुनः द्वितीय समयमं मरे, और देव हो गये। इस प्रकार अपूर्वकरण उपशामकके एक समयकी प्रक्रपणा की।

र्श्वता--- अप्रमत्तसंयतको अपूर्वकरणगुणस्थानमें हे जा करके और द्वितीय समवर्षे

मरण कराके अपूर्वकरणगुणस्थानके एक समयकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान-इसिटिए नहीं की, कि अपूर्वकरणगुणस्थानके प्रथम समयसे टेकर अद तक निदा और प्रचला, इन दो प्रकृतियोंका बंध व्युच्छित्र नहीं हो जाता है, तब तक भपूर्वकरणगुणस्थानयती संयतीका मरण नहीं होता है।

इसी प्रकार शेप तीन अपरामकोंके एक समयकी प्रक्रपणा नाना जीवींका आध्रप करके करना चाहिए।विद्रोप बात यह है कि अनिष्ठाचिकरण और सक्षमसाम्पराय गुणस्यानवर्ती वपशामक जीवोंके एक समयकी मरूपणा उपशामधेणी चढ़ते हुए और उतरते हुए जीवोंकी आध्य करके दोनों प्रकारोंसे करना चाहिए। किन्तु उपशान्तकपाय उपशामकके एक समयकी प्रकर्मणा चढ़ते हुए शीयोंको ही साध्यय करके करना चाहिए।

चारों उपग्रामकोंका उत्हृष्ट काल अन्तर्भुहुर्त है ॥ २३ ॥

१ चतुर्वाहुपदमदानां नानाजीवारोक्षया अध्ययेनेदः हमयः । छः वि. १० ८, ६ दल्बर्रेनानवर्षहर्तः । स. सि. १. ८.

1, 4, 58. 1

[ 142

तं कपं है सचह वा चउवण्या वा अप्यमचा अपुन्यकरणउपसामगा आदा जाव ते अणियहिंहाणं ण पानिति तान अच्छो नि अच्छो नि अच्छाना अपुरुवकरणगुणहाणं पहिः बन्धानेद्द्या । ओपरमाणअणिपाट्टेणो वि अपुन्तकरणं पडिवन्जावेदन्या । एवं पहुंत ओपरंतजीविहि असुण्यं होर्ण अपुन्यकरणगुणहाणं अच्छिदि जाय वरगाओगगउपक्रसांती अवस्थानसङ् अधान बाहुन अञ्चलसम्बद्धाः अञ्चल अस्ति । बहु विद्युवसाममाणसुक्कस्सकालपरूकणा जान पोत्रस्ति तान त्राणे सुरुमसापस्य उनसंतरसायगुणहाणं चडानेदन्ता । एतं पुणा जार जानसर पार जान अञ्चलकालो वहुनिंदन्तो जाव वणात्रोगुनकस्सर्भवीगुहुर्च पयो वि। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं'॥ २४ ॥ र कर्ष ? एक्को अणिपहिजनसामगो रगसम्य जीविदगरिय वि अपुण्वजनसामगो

प कथा एका आजनाइज्यतामा राजम्य वात्र्राप्य ।य अप्रवज्यतामा विदे एगममर्थ दिहो बिदियसम्य मदो स्यसचमे देवो बादो । एवं विष्हमुबसामगाण-वित्र प्रभावतम् । वहाः विवर्षः जन्यः अपवर्षः प्रभावतम् । प्रभावतम् । मासमयपरुवयाः वषम्यः । वयरि अनियद्विसहमत्रवसाममाणं चढणोपरणविद्याणेण वेहि यह इस मकार है— सात बाउने लेकर चीपन तक अग्रमसंयत और प्रकार ्ष केत अकार व — चाव नावल एकर बारण वस नावणवाचा आप प्रण्यास प्रकारामुणस्थानी उपशासक हुए। जह तक वे सतिशृत्तिकरणमुणस्थानको मही मान प्रतिक साथ साथ भी समामसंवित सीव सन्वित्तरागुणस्थानका महा मास है, तेष तक साथ साथ भी समामसंवित सीव सन्वित्तरागुणस्थानको मास करमा ह, तक तक कान कान भा भागमण्याचा आप अपूचकाणप्रभागका भागकाम द ! इसी प्रकारते उपरामधणीते उत्तरनेवाल सनिवृत्तिकरणागुणस्थानी उपरामकासी े दरात माराज व्यवस्थान व्यवस्थान मानुश्वकरणधुनस्थामा व्यवस्थान सा इ.स.मा चाहिए। इस महार वहुते सीर उत्तरते हुए सीरोसि राज्यपुरस्यावका भाज करावा जाक्षर । स्व भक्तर चक्रव भार उठरण हुए गायास (वरिष्ण) होकर अपूर्वकरस्याजस्यान उसके योग्य उग्रहण अस्तर्गहरूवकाल वृत्त (आर्ष) दाकर क्षेत्रकराणाुणस्थान वसक याग्य वर्टक कलावुद्धवकाल पूर्य इ.स.च. दे। इसके वधात निमयसे विरद (बातराल) हो जाता है। स्सी महारसे विद्या है। इतक वेबाद गायवंच १४८६ ( व्यवस्था वा वादा है। देवा वेबास्य वर्षामकोरे उत्तर कालकी महत्रवा करना चादिए। विदोर बात पर है कि वरशामकारः जल्लस्य कालका मानवारा मानवार । १४०० मान मानवार कालका मानवार एक उपसामकारण जीव बद्द करके प्रधान व्यवसामकरू वाहरू कालका करूनचर के व्यवसामकार्य वाहरू कालकार्य मही उत्तरता है, तह तह अन्य सम्य पहमसामकार्यिक संवत उपसानकार्य वाहरू बहाता बादिए। इस बहारसे पुनः संस्थातवार जीवोंहो चहाकर उपसानकाल ९ ४९६६ कान्याक्षतः कान्यः ६१म वकः ४५१मः च्याक्षरः । इ. बीबक्की अवेक्षा चार्रो उपज्ञामकोका जपन्य काल एक समय है ॥ २४ ॥ । भारता भारत उपजामकाका जयन्य काल ५० तमय है।। ५४॥ इस मकार है— एक अनिवृश्चिकस्य उपसामक जीव एक समयमाच जीवन क्ष मन्तर १ - ५० चानशासकरः उपनामकः वाव एक समयवाच जावन सार्वकरण उपनामक हुमा, एक समय दिला, और दिनीय समयम मरचको . बार्यकरण उपनामक हुमा, यर समय १२सा, बार हिलाय समयम मरयक एषा उत्तम जातिका श्रुपरिमानयासी देय ही गया। हसी सकार रोप मीनो ध्या उत्तम जातकः। अञ्चयधयानधामा ६५ का नवा ४ का भवार वय नामा एक समरकी मरुपणा करना चाहिए। विहोप कान यह है कि सनिपृत्तिकरण

पयारेहि, चढणमस्मिद्ण उवसंतकसायस्य एगपयारेण एगयमयपुरुवणा कायस्वा।

जनकस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५ ॥ तं जहा- एक्को अप्यम्बो अपुरुषउत्रसामगे जारो । तत्र्य सन्त्युकस्सर्मनेषुरुषः

माञ्छिय अणियद्विद्वाणं पडियण्णो । एवं तिण्हमुत्रसामगाणं वचन्त्रं । चदुण्हं खवगा अजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति, णाणा

जीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं' ॥ २६ ॥

तं कथं ? सत्तह जणा अहत्तरसदं वा अप्पमत्ता अप्पमत्तद्वाए खीणाए अपुत्र-करणखबगा जादा । अंतोष्रहुत्तमच्छिय अणियहिहाणं गदा । एवं चेत्र चदुण्हं स्व<sup>नाणं</sup> जाणिद्ण माणिद्वं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहत्तं ॥ २७ ॥

तं जघा- सत्तद्व जणा वा बहुगा वा अप्पमत्तसंजदा अपुत्र्यस्वगा जादा। ते तस और स्कासाम्पराय गुणस्थानी उपशामकोंके चढ़ने और उतरनेके विचानकी अपेका दोनी

प्रकारोंसे तथा आरोहणका आश्रय करके उपशान्तकपाय उपशामककी एक प्रकारसे एक समयकी प्ररूपणा करना चाहिए। एक जीवकी अपेक्षा चारों उपग्रामकोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहुर्त है ॥ २५॥

यह इस प्रकार है— एक अप्रमत्तसंवत जीव अपूर्वकरण गुणस्थानी उपशामक हुथा। वहां पर सर्वोत्कृष्ट थन्तर्मुहुतं रहकर अनियुचिकरण गुणस्यानको प्राप्त हुआ। इती प्रकारसे तीनों उपशामकोंके एक समयकी मरूपणा कहना चाहिए।

अपूर्वकरण आदि चारों क्षपक और अयोगिकेवली कितने काल तक होते हैं!

ंनाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर्भुहूर्त तक होते हैं॥ २६॥ यह इस प्रकार है— सात आठ जन, अथया अधिक से अधिक पक सी आठः अप्रमत्त्वसंयत जीव, अप्रमत्तकालके शीण हो जाने पर, अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती श्रवक हुए। यहां पर अन्तर्मुहृतं काल रह करके अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त हुए। इसी

प्रकारसे अनिवृत्तिकरण, स्कृमसाम्पराय, शीणकवायवीतरागछन्नस्य और अयोगिकेवली, रत चारों शपकोंके जयन्य कालकी प्रक्षणा जान करके कहलाना चाहिए।

चारों शपकोंका उत्क्रप्ट काल अन्तर्शहर्त है ॥ २०॥ यह इस मकार है — सात बाट जन अथया बहुतसे अप्रमत्तसंयत जीय अपूर्वकरण

१ बत्बर्रेनान्तर्युर्देः। स. सि. १, ८. ९ चतुर्गं धरकानामयोगकेवितां च मानाजीवारेश्चया एकजीवारेश्चया च जवन्यजोहरूमानुर्गृही ब. बि. १, ८,

8. 4. 84. 7 षाटाणुगमे खत्रग-अजोगिनेत्राटिकाटगरूवणं अवोस्रहुचमन्दिय अणियद्दिणो जादा । तस्हि चेन समए अच्छे अप्पमचा अपुन्नस्वनगा ज्यादा । एवं पुणो पुणो संसेन्ज्ञ वार्त । धान्य अव समय जन्म जन्म प्राथनिवस्था। बादा । एवं पुणो पुणो संसेन्ज्ञ वार्त चडणकिरियाए सदाए णाणाजीहे अस्सिद्ध अपुन्त-जात । ५४ ४मा ४मा महाज्यतार वन्याकारपार प्रवाद वायाचार करणुक्तरसकालो होदि । एवं चेत्र चुदुष्टं खनमाणं जाणिद्रण वस्त्वं । [ 444 हराम्बन्धः व्या एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ २८ ॥ र्राण्या । । तं जहा- एको अप्यमचो अपुन्यकरणो जारो अंतीसमुचमन्दिर्म् अणिपद्विखयगे। जीदी । एवं चेत्र चंदुण्डं संवगाणं जहणकालपह्नचणा कादना । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९ ॥ एको अप्पमची अपुन्यसम्मो जारो । तत्य सन्त्रकस्समंतीसुङ्ग्वमनिस्टर्ण अपि-पहित्रणहाणं पडिवण्या । एमजीवमसिसद्य अपुन्यस्त्रणकस्त्रकालो वादो । एवं चेव पद्भव्हं खनगाणं जालिह्य वचन्त्रं । एत्य जहण्युकस्तकाळा वे वि सरिता, अयुज्यादिः परिणामाणमणुकडीए' अमानादी । गुणस्थानी क्षपक हुए । वे यहां पर अन्तर्गृहनं रह करके सनिवृत्तिकरण गुणस्थानी हो गये । पुणसामा सपक दूप । व गहा पर बानाशहत रह करक धानशास्त्रकरण गुणसामा हो गये। इसी दो समयम काम धानमपासंक जीव मार्थकरण सपक हुए । हस मकार पुणसामा हो गये। "रचामार बारोकणिन्याके करने पर नामा जीवीका सामय करके बागुकेतात संपक्त प्रकार पुणसामा हो गये। एक जीवकी अपेखा चारी छवकोंका जयन्य काल अन्तर्युहर्व है।। २८॥ पुर इस महार हे — एक धामससंयत और धार्यकरण गुणस्थानी स्वक हुमा भूष भूष महार ६ — एक वासम्प्रतयन ज्ञाय भूयकरण गुणस्याना सवक दुसा इतिहास रह करके भनिश्चविकरण सवक दुसा। इसी महारते खारी सवक दुसा एक जीवडी अवेद्या चाराँ धवकोंडा उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहर्त है ॥ २९॥ पुरु जायका अपदा चारा चंपकाका जच्छट काठ जन्मद्रक्ष र ॥ १ ॥ यह सामामस्यत और सपूर्वकरम् सम्बद्ध हुआ ! यहाँ पर सर्वोहरूर सन्तर्महर्ग काल प्तः व्यक्षणायात् वाप्तः वाप्तः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्तः व्यक्तः व्यव्यक्तः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः व्यव्यकः विव्यकः विव े करतः बानभूतकराज योजस्थानस्य आम हुआ। यह एक जायका बाधव करह राजहा उन्हेंए बाल हुमा। रखी प्रकारते सारी संवकीका बाल जान करहे कहना ८५७। ८९८८ काळ दुवा। १ता अकारत आस सरकाका अक आम करक करना वहां वर अवस्य और उन्हेट, ये दोनों ही काल संक्या हैं, क्योंकि, अपूर्वकरण

परिणामां ही अनुहरिक्त बागाप होता है। विशेषां प्र-पदां पर अपूर्वकरण मादिके परिणामां ही अनुहरिके समाप कहनेका अशेषुहरूकोचे परिशासकतान्वभावपीतामा । कराशान्त्रते अपूर्ध विशिष्टको के गो. सी. कर पात रेडियामां हार्विका कथि । तथा विदित्त काल आन्त्रतक विशेषित करित सी. करे. प्रशास कार्यक्रमां अशिवनतान्वभीत्राचारः तथा सन्तर्भ । तो सी. सी. करे. आ. विशेष कार्यकांन अशिवनतान्वभीत्राचारः तथा सन्तर्भ । तो सी. सी. करे. ११. सजोगिकेवटी केविनरं काठारों होति, णाणाजीतं पहुण सम्बद्धां ॥ ३० ॥

ितु विकालेगु जेन एको विभागती गर्नतिविधिक्षेत्री शर्मि नेत्र मन्दर्श्य जन्मदे ।

एगजीवं पहुच जहण्णेण अंतीमुहत्तं ॥ ३१ ॥

र्षं क्यं रै एके शीनक्षाओं सजीमी बोर्न जीवपुरुष्यस्टित सन्मारं कीर पच्छा जीमनिरोदं किच्या अजीमी जारी र एनं सजीमिस्स जरणकालप्रकाम व्यवीत सन्दर्भना गरा र

. उक्कस्रोण पुळकोडी देमुणा' ॥ ३२ ॥

मिमिया इस प्रकार है— विवासित समयमें विद्यमान अविके संवारत समयसी अविके परिणामीके साथ सहराता होनेका अनुरुषि करते हैं। अधानतुलकालमें भिन्न समयसी

काल होते हैं ॥ २० ॥ चूंकि, तीनों ही कालोंमें एक मी समय सयोगिकेवली मगवातमे विराहित नहीं है।

्रातिक ताना है। इस्टिप सर्व काल्यना बन जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा सयोगिकेवलीका जयन्य काल अन्तर्गृहर्त है।। ३१ ॥ यह इस प्रकार है -- एक क्षीणकपायगीतरागद्यक्षयः संयत जीव सयोगकेवलीकी

्या ६५ मना६ ६ -- ५६ हाणकराययातरामद्रग्रस्य स्वत जीय स्वयंगकराला ४० अन्तर्महुँ के कट एक, समुद्रात कर, पीछे योगनिरोध करके स्वोगिकेयळी दुआ । इस प्रकार संयोगिजिनके जधन्य काळकी प्रकृषणा एक जीयका साध्य करके कही गई।

एक जीवकी अपेक्षा सयोगिकेवलीका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटी है ॥३२॥

र संयोगकेविद्धनों नामाजीवाधिस्था सर्वः काठः । स. सि. १, ४. २ एक्जीवं प्रति जयप्येनाम्वर्धेर्तः । स. ति. १, ४, इ. उत्वरेण पूर्वेद्योगे देखोना । स. सि. १, ४, ४.

तं जपा- एको सदयसम्मादिही देवो वा केरहभी वा कुन्यकोडाउक्स मणुलेसु उवयन्त्रो। सच मासे सम्मे अस्थिद्य गम्भवनेसलाज्ञमेण अह्वविस्तर्भ जादो (८)। अप्पमकस्रावेण संज्ञमं पिड्यन्त्रों (१)। पुनो पमचापमणवरावसहस्सं कादृण (१) अप्पमकहाले अपापमणकरूणं वादृण (३) अपुण्यकर्ताणं (४) अशिविष्ठकरणो (५) सद्मारावर्गो (६) स्वीवकसाओं (७) होरृण सजोगी जादो। अद्विष्ठ वस्त्रीहे समिह अतीमुद्रकीट उजपुण्यकोडिकालं विहरिया अजोगी जादो (८)। एवं अहित वस्त्रीहे अहिद अतीमुद्रकीट प उजपुण्यकोडी सजोगिकविष्ठताले होति।

( ओवपस्त्रमा समसा ) ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयमदीए णेरहएसु मिच्छादिट्टी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सव्वद्धां ॥ ३३ ॥

**क्षदो ! णिरयगदिम्हि सन्वकालं मिन्छादि**हिबोन्छेदाभावा ।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोगुहुतं' ॥ ३४ ॥

यह इस मकार है — एक क्षांपिकसम्पादीष्ट वेद मध्या मारकी जीव पूर्वकोटीकी सायुवाके सन्यामि उत्तर हुमा (८)। सार प्रमास गर्मी रह करने गर्मी मध्या करनेवाले जम्मादित साथ प्रमास हुमा (८)। सार पर्वका होने पर भग्नमकावासे संवयको मार हुमा (१)। युत्ता मार्ग भीर कामाकांस्वताकस्थान साक्ष्मां सहस्रों विदेवनीकी करके (२) स्वामक्तंस्वत गुलस्वानमें अध्यावकुकरावकों करके (१) सामकांस्वय गुलस्वानमें अध्यावकुकरावकों करके (१) सामकांस्वयावकांस्ययावकांस्वयावकांस्वयावकांस्वयावकांस्वयावकांस्वयावकांस्ययावकांस्वयावकांस्वयावकांस्ययावकांस्वयावकांस्वयावकांस्वयावकांस्ययावकांस्ययावकांस्ययावकांस्वयावकांस्ययावकांस्वयावकांस्वयावकांस्ययावकांस्ययावकांस्वयावकांस्ययावक

( इस प्रकार भोष प्रहत्यमा समाप्त हुई )।

आदेशकी अवेक्षा मतिमार्गणाके अञ्चलको नश्कमातिमें नाशकियोंने निष्मादृष्टि जीव कितने काल कक होते हैं है नाना जीवोकी अवेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ वह ॥ क्वाफि, सरकारिये सर्वकाल विश्वसादृष्टीके स्वरुक्तर मनाव है।

एक जीवकी अवेक्षा मारकी मिथ्यादृष्टिका जपन्य काल अन्तर्भृष्ट्व है ॥ ३४ ॥

६ विटेबेन राक्ष्युवारेन नरहमाठी नारवेषु क्षण्या पुविनीय विष्वादिकाँनार्मावारेक्षण कर्वः वृद्धः इ इ. वि. १, ८,

५ वदमीर्व मित्र मदावेशालद्वीतीः । स. हि. १, ८,

तं जधा- एको सम्मामिच्छादिही असंजदसम्मादिही वा पुर्वं पि बहुवास्तिः णमिदमिच्छचो संकिलेसं पूरेद्ग मिच्छादिही जादो । सच्यजदण्यमंतीमुहुचकालमिच्छ विसुद्धो होद्ग सम्मचं सम्मामिच्छचं वा पिडवण्गो । एवं मिच्छादिहिस्स जहण्णकालः परुज्ञपा गदा ।

उकस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३५॥

तं जहा- एको तिरिक्लो मणुसो वा सचमाए पुढवीए उवन्थ्यो। तत्य मिन्छवेण सह तेचीसं सागरोवमाणि अन्छिय उवट्टिदो । रुद्धाणि चेरहयमिन्छादिहिस्स तेचीनं सागरोवमाणि ।

सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिही ओवं ॥ ३६ ॥

कुदो ? शिरयमदिन्हि एदेसि देण्डं गुणहाणाणं णाणमजीवजहण्युकस्सपस्वणाणं एदेसि चेत्र ओपणाणेमजीवजहण्युकस्सपस्वणाहितो मेदामावा !

असंजदसम्मादिद्वी केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पडु<sup>च्न</sup>

## सन्बद्धां ॥ ३७ ॥

यह इस प्रकार है — एक सम्योगम्प्यादृष्टि, अग्रवा असंयतसम्यदृष्टि जीव, जो कि पहले भी यहुत बार मिय्याद्यको परिणत हो जुका है, सक्केराको परित करके मिथ्यादृष्टि हो गया। यहां पर सर्व अग्रम्य अन्तर्गृहृतं काल रह कर, विशुद्ध होकर, सम्यक्शयको अग्रव सम्योगम्प्यात्यको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे मिथ्यादृष्टिके ज्ञवन्य कालकी प्रक्षणा हुई।

एक जीवकी अपेक्षा नारकी मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है॥३५॥ यह इस प्रकार है — एक तियेच अथवा महुष्य सातवीं पृथिवोम उत्पन्न हुमा।वहीं पर मिथ्यात्वके साथ तेतीस सागरोपम काल रह कर बाहर निकला। इस प्रकार नारकी

मिध्यादृष्टिके तेतीस सागरोपम उपलब्ध हुए।

सासादनसम्यग्हीर और सम्योगभ्याहार्ष्ट नारकी जीवोंका एक और ना<sup>ता</sup> जीवोंकी अपेक्षा जमन्य और उत्कृष्ट काल ओफ्के समान है ॥ ३६ ॥

क्योंकि, मरकगतिमें इन दोनों गुणस्थानोके नाता जीय और यक जीवसम्बर्धी जपम्य काल थीर उन्हार कालकी मुक्तपणाभीका दृश्वी दोनों गुणस्थानोंकी भोषणत मानी जीव भीर यक जीवसम्बर्धी जपम्य और उन्हार कालकी मुक्तपणाभीले भेद नहीं है।

असंयतमस्यादि नासकी कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकार होते हैं ॥ २७ ॥

१ सामादनकावादेश सम्याज्ञायाद्येश सामान्यादः कालः । स. वि. १, ८, ६ सर्वन्याप्यदेगांनात्रांनायस्य सर्वः सामा । स. वि. १, ८,

फुरो ? जिरपगदिन्दि असंजदसम्मादिहिवरिहदकालामाया । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमृहुन्तं' ॥ ३८ ॥

٠ ٠ ٩, ٩, ३९, ١

र्ष जहा- एगो मिच्छादिही वा सम्मामिच्छादिही वा सम्मन्त बहुवारं पुन्वे परि-याहिर्ण अच्छिदो विसुद्धो होदण सम्मर्च पहिवल्ला । सन्य मध्यलहर्मनीहरूनमन्तिय सम्मामिच्छतं मिच्छतं वा गरे। एवं णिखगरिअवंतरमम्मारिष्टिस्य बर्ण्यकान-परुवणा गदा ।

उनकस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देखुणाणि ॥ ३९ ॥

र्षे जथा- एको तिरिक्तो मणुस्यो या अहारीययंत्रशम्मको मिन्छाटिई। सनमान पुरुवीण उपवच्यो । छहि पञ्जर्वाहि पञ्जनपदी (१) दिग्यंतो (२) वितुदी (१) पेदगमम्मर्खं पहिबल्लो । पुली अंतीबृहत्तावमेमआउद्दिरील मिन्छर्च गरी (४)। ब्याउने मंभिरण (५) अनोमुह से विस्त्रमिय (६) उवड्डिरों। एवं छहि अंते पुरु केहि उत्तरीत 'सेचीसं सावरायमाणि असंजदतम्मादिदिस्य उवस्यकाली ।

क्योंकि, मरकगतिमें भनेयतसभ्यन्ति। श्रीयोंने विस्तित बाटवा अवाब है। एक जीवकी अवेक्षा अमेथतसम्पादिष्ट नारकीका ज्ञपन्य काण कल्टर्डर 11 35 H 3

यह इस प्रकार है- यह बिश्यादृष्टि, अथवा अन्यश्मिष्यादृष्टि श्रीब, श्री वि साच-क्यमें पहारे बहुनवार परिवर्गन कर चुका है, युका विश्व हो कावे कावकाकरे रूज हुआ। यहां पर सर्वेश्रयु अप्तर्माहर्ने काल वह करने सावश्वित्यानको, अथवा विश्याक्यो मात हुआ। इस प्रवारते मरवातिमें असंवत्तसम्बन्ददिने अधन्य कालनी प्रवास्ता हुई ।

असंयहमस्यादि सारवीका उत्कृष काल कुछ कम नेतीन मामगेदक है ॥ १९ १ यह इस प्रवार है - मोहबर्स की अहारत प्रहातिये के खला क्यारे बाला क्य तिथ्य शथवा मनुष्य मिश्यादि शीय सालवीं पृथिवीमें उत्त्रव हुआ । दुन, छही वर्दीकर से पर्यात हो (१), विधाम हेता हुमा (६), विशाह रोवर (६), बहब सारक एवं। साम हुमा। यमा भारतीहर्त बालप्रमाण शायबर्मकी हिथतिके अवदेण्य रहेने यर किश्याच्यके मात्र हुआ (४)। यहाँ मानामाँ भवनी भावनी बांधनर (५), अन्तर्गुर्न बाट विभाम हेनर (६) विकास । इस प्रकार एट मान्युहरील कम तेरील कार्यराट्य प्रयाच मलंदरसायन देव: जार प्रचास होता है।

१ देवतीर प्रश्ने प्रवन्देशास्त्रीती है। है है, दे

ं छक्जंडागमे जीवहाणं

पढमाए जान सत्तमाए पुडवीए णेरहएसु कालादो होति, णाणजीवं पहुच्च सन्वदा ॥ २०

हरो ? मिच्छादिहिविरहिदसचण्हं पुडवीणं सन्त्रद्वा अभा एगजीनं पहुन जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४१

वं जहा- अपपषणो पुरवीस हिरुअसंजदसम्मादिही सम्म भिच्छत्तवता परिणामप्रच्यरण मिच्छतं गर्ग। सञ्जनहण्णमतीमहृत अन्तरस्यमं गरी । एवं सचण्हं पुडवीणं भिन्छादिहिषादेवसंवीमृहच

<sup>ज्वकस्सेण</sup> सागरोवमं तिण्णि सत्त दस सत्तारः सागरोत्रमाणि' ॥ ४२ ॥ पडमार पुडवीए एकं सागरोवमं, विदियाए पुडवीए तिप्यि म पुटबॉर सच सागरोवमाणि, चउत्योल पुटबील दस सागरोवमाणि,

प्रचारम सागरोत्रमाणि, छट्टीए पुढबीए बानीस सागरोत्रमाणि, सचमीए मयम प्रथिवीत लेकर सातवी प्रथिवी तक नारकियोंमें मिध्यार

बान तह होते हूं ? नाना जीवोदी अपेदा सर्वहाल होने हूं ॥ ४०॥ करतीह, मिध्यादिष्टि जीवींन रहित साती पृथिवियों हे नारकियों हा सर्वत एक जीवकी जनमा उक्त श्रापिविषोक्ते नारकी मिध्यादृष्टि जीवोका बलदंहतं है ॥ ए!॥

बह हम प्रकार है — बानी मानी पृथिवियाँने स्थित, तथा जिलने वह मात्र हिरा नहार है जाता है वेसा है है ससेवनसम्बर्धि संग्रेश सम्बर्ध कें। इ. वर्रवामां हे जिल्लाम निष्णालको मान हुना । यहाँ पर शर्व जयन्य सन्तर् दि हार्ड पुर्वेश होती गुणक्यानीम हिसी यह गुणक्यानही शास हुमा । स्स वाली कृतिवरोड मन्तर विच्यारि अपित सामगुर्त बालकी महत्या की गरे। टेन मनो राधिनियोद्दे निष्याद्देशि नीतीका उत्कृत काल समग्रः एक

इन, इन, मान, दम, मनगढ, बाइन और नेनीन सार्कानमनमाम दे॥ ४२॥ बरम र्रावरीन यह मामरायम, जिनाव श्रीवरीम नीन सामरायम, वनीव श्री कान्य कार्यहोत्रम् , ब्रोडी प्रेसिटीट देश सामहोतम् । कान्य प्राप्त साम सामानामा क के विस्त कार्य सामाग्रिम, बीट साकार जीवार में

कालाणुगमे जेस्यकालास्वणं

सागरोजमानि मिन्छादिद्विस्स उवस्सकालो । इदो १ एदेहिंगो अधिगरंपामाचा । वं हरी महादे १

एकं तिव<sup>1</sup> सच इस तह सचारह दु-तिहरेकअधिय दस ।

उबदी उद्धरसिंहिरी सत्तव्यं दीर पुत्रवीणं ॥ इष्ट ॥ इदि णिरयाउपंघयुचादो ।

---

r

-;

सासणसम्मादिद्दी सम्मामिन्छादिद्दी औषं ॥ ४३ ॥ उनकारमंग दोण्डं पि पलिदोनमसा असंबुद्धज्ञदिभागो । एगजीव पहुच्च जहणीन एगः समझो, अतोग्रहुचं । उनकस्तिम छ आवित्याओं अतोग्रहुचमेवमादिणा भेदाभावा ।

असंजदसम्मादिद्री केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुन्त सन्बद्धा ॥ ४४ ॥

त्त । . . . . र्च जहा- सचण्हं पुरुवीणं असंजदसम्मादिष्टिनिरहिदाणं सम्बद्धाणुवलंमादो ।

वरहार काळ है, क्योंकि, रनसे स्थिक बालुबंधका समाव है। भाव का प्रधाम, राज्य भाव माजुरवामा गमार का रोहा — यह कैसे जाना जाता के कि स्वीक कालसे अधिक नारकायुक्ते बंधका सभाव है ?

समापान- पर, तीन, साठ, दरा, तथा सत्तरह सागरीपम, तथा दीवे प्रविव पर अधिक दरा (२४११-२२) अधीव बार्स सागरीपम, तथा तीनसे गुणित प्याद एक बाधक दश ए र्राट्याचर / अवाद भारत सामाज्यम, स्था वामाज्य अवाच भारत सामाज्य स्थापन अवाच भारत है। इस्ट्रेडिंग माणांच तितीस सामाज्यम, इस महार सातीं पृथिवियोंकी उन्ह्रप्ट स्थिति

ब २०॥ इस मारकाषुके बंधमहर्शक स्वतं ज्ञाना जाता है कि स्वीच काटसे अधिक हत्त्वा श्राप्तियोक्षेत्र सामादनसम्परहष्टि और सम्पन्निम्पाहरि जीवोक्षा नाना और ाण रायाच्याक पातास्यतः याः सम्यागस्यास्य वात क जीव सम्बन्धी जपन्य और उत्हार काल औपके समान है ॥ ५३॥ व राष्ट्रपा चप्ट्र भार ४८८८ आपक राष्ट्रा है।। ०४ ॥ क्योंकि, उक्त दोनों गुणस्यानीका नामा जीवोची क्येसा जयस्य काल क्रमता एक

प्याक्ष, वक्ष, दाना अगरधानाकः नावा वाधाकः न्यराग वक्षरः राज नानाः रव य भीर भन्तर्गुहर्ग है। तथा उक्कृष्ट काल दोनों ग्रुणक्यानोंका वस्त्रीयमके असंक्यानमें मान व बार भागवाहरू है। तथा जारूर काल दाना गुणक्याताका क्याक्याक कार्यक्यात मान वक आवर्षा बोर्ना गुणक्यातीहा क्रमता अध्यय काल एक समय और सन्तराहरू पर आवश्च भवस्य वाना अभरपानाचा अभरा अध्यय काल पर समय बाद सत्त्र तथा तकुष्ट बाद छह्न सावत्वियां और सत्त्रमुद्धतं है। हत्यादि स्परी कोई भेद भूते है ा बर्जुड काल एवं भावालया बाद अन्तवनुद्धत द रहत्याद केपस कार सुद्द स्त्राही सातो राष्ट्रीययोमें असंप्रतसम्परदृष्टि जीव क्तिने काल तक होते हैं ? नामा ही अवेद्या सर्व काल होते हैं॥ ४४॥

की अपना चान फाट कांच के 11 वर 11 यह कांक हैं व प्रकार संस्था है — कि सानों पृथिवियां किसी सी कांखर्से असंपत-ष्टि श्रीयोंसे रहित नहीं पार्हे जाती हैं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४५ ॥

र राजा चडुण्य जहरूराणा अतामुहृत्त ॥ १५ ॥ व जहा चस्तु पुढवीस हिदयहुत्तो सम्मचप्रजहाबीससंतक्षमियमिच्छा

सम्मामिच्छादिह्नी वा सम्मर्च पडिविज्ञय अंतोम्रहुचमिच्छ्य मिच्छर्च सम्मामिच्छर्च पढिवष्णो । एसो सचसु पुदवीसु असंबदसम्मादिद्विबङ्णकालो परुविदो । जक्कस्स सागरोपमं तिश्णि सत्त दस सत्तारस वाबीस तेर्त

उनम्बर्स सागरायम तिष्णि सत्त दस सत्तारस वानीस तेर्त सागरावमाणि देसूणाणि ॥ ४६ ॥ वं जया—एको तिरिक्खो मणुसो वा अद्वानीसतंत्रकम्मित्रो मिच्छादिद्वी पडन

पुरवीए वा एवं जाव सचमीए वा उववण्यो । छहि पज्जचीहि पज्जचयदो (१) विसं (२) विसुदो (३) वेदगसम्मचं पडिवण्यो (४) । सम्मचेण अपपपण्यो उवकस्साउहिं मच्छिप निष्किडिद्ण मणुसेस उववण्यो । एवं तीहि अंताप्रहुचेहि छणा अपपण उचकस्माउहिदी असंजदसम्मादिष्टिउककस्सकालो होदि । णवरि सचमाए छहि अंते सुदुचेहि छणा उक्कस्सिट्टिद् चि बचन्वं, तत्य मिन्छचसुणेण विणा णिग्ममामारा

एक जीवकी अपेक्षा सातों पृथिवियोंके असंगतसम्यग्रिष्टि नास्की जीवोंका अपन फान अन्तर्पत्त है ॥ १५ ॥ वह हम प्रवाद है— सातों ही पृथिवियोंमें हिस्त पूर्वमें अनेकवाद सम्यवस्थान

हुमा माहकमेदी महारेत महतियाँकी समायाना निष्याहित मयम सनक्यार सम्यक्ष्याक्ष्य क्ष्यको मान हो कर भीर मानमुहित काल रह कर चुनः मिष्याचको प्रथम साम्योगकालाको मान हुमा। यह सालों ही पृथियमाँमें भागेयतसम्याहित्वा ज्ञापन काल प्रकाण दिया गर्ग। मानों स्वितिकोदि कांग्यानासम्याहित्वा ज्ञापन काल प्रकाण दिया गर्ग।

क्षण हुमा। यह नातों ही पृथिवियोमें भर्मयनसम्बर्धाष्ट्रका ज्ञयन काल प्रकास सिकामध्या मात्रों पृथिवियोक्ते असंयतमस्याग्द्रि नास्क्री जीतोका उत्कृष्ट काल क्षमणा हुँ इ.म. एक मारगोदम, तीन, मात, द्या, मनगढ, बाहन और तेतीम मारगोदम है॥ ४६॥

बह इस बहार है— मेहरुमें ही बहुईस प्रशिवां ही साम इसने वाला वह निर्देष सपदा मुल्य विवादरि जीय बहुती पृथितीमें, प्रथम दूसरी वृथितीमें, इस प्रधानी इस कर सामने वृथितीमें, इस प्रधानी इस इस कि इस एक्स वृथितीमें हम प्रधानी इस इस हिए हैं हिए हैं। हिए स्थान हमा (ए) हिए हैं हिए हैं), विद्यान स्वादी हमा हमा (ए), नामक पढ़े साथ प्रधानी मानी होंगे हैं इस इस हमाने हमें एसिन्याल इह इस्टें वहीं निक्श हर प्रधानीमें उप इस इस हमाने हमा हमा हमा हमाने कि इस हमाने हमाने प्रधानी उप का स्वादी हमाने हमाने

अतंत्रदसम्मादिद्विम्म आउत्रं बंधिय विस्तंतो होर्ग मिच्छचं गंत्र सचमप्रदः काटाणुममे तिरिक्तकाटपरःवर्ग जतनपुर सम्मवकालो बहुगा तन्मीद् ति युवे च, सचमनुत्रविषद्धानं मणुम् ----व्यदासावा । असंबद्धमानिहर्शेणं वि निरमितिरिक्साउर्वथमाना । जेण गुणेण जाउ بنيع و बंघस्त संमयो अत्यि, तेणेव गुणेण विम्यमादी च । ÷ तिरिक्तानदीए तिरिक्तेषु मिन्छादिङ्गी केनित्रं कालादो होति, غبث णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्वां ॥ ४७ ॥ इरो ? मिन्गारिद्दीदि विणा सम्बद्धा विश्विसमदीए अञ्चवलेमा । ٦٢ एगजीनं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥ १८ ॥ ř तं जहा- एक्को सम्मामिच्छादिही असंबद्सम्मादिही संबद्धनंबदी वा बदुनी व वर्षा- ५४४० कण्यामः रणाद्वः ज्ञानकार्यः वर्षान्यः कः ४२॥ मिच्छचयो मिच्छचं पढिवणो । सन्त्रज्ञह्व्यमंत्रीमृष्ट्वमन्त्रियं पुन्तुसमुनेतुं अन्तर्राम् मोंसे निकलना नहीं हो सकता है। ्रेका — मर्तवततास्वरादि गुणस्थालम् भागामा सचर्च सामुको बांपकर विभाज रोता हुमा मिरवायको मात रोकर सातवों वृथिवीते निकहन पर सारकर नामान करून <sup>मास</sup> होता है। ण ६ . समापान – महाँ, क्योंकि, सामयाँ कृतिवीके मारकांका मनुष्यामें क्यार मही दोका है। तथा, असंपत्रतस्यहरियों सी मारक और तियस आयुक्त बंधरा अभाव है। हमरी कात पह मो है कि जिल गुणस्थानले माजुका हैए सीमप है, उस ही गुणस्थानले सामुका हैए सीमप है, उस ही गुणस्थानले सामुका निर्ममन भी दोता है। विवेषमातिमें, विवेषोंने मिष्यादृष्टि जीव किनने बात वह रोने हैं। जाना विवासी अवेधा सर्वकाल होते हैं ॥ ४७ ॥ अपदा सम्बन्ध रूपा रूपा २००। वर्षोक्ष, विश्वाद्धि जीवीके जिला किसी भी कालमें तिर्वेवपति नहीं परि जानी है। एक औरही जरेग्रा विरंप निध्यार्थि जीहहा जपन्य हात अनुहुन् 11 28 11 ् । पर इस महार है— वहते बहुमवार क्रिप्सायमें ध्यस्य हिया हैंबा एक सार. NG AN ASSESSED TO THE STATE OF प्रदार, मध्या मानवारमध्याच्या मध्या त्यामध्या उत्तर किराज्या केत हरू वर तस्ति ज्ञास्य भागपुर्देतं बास रह बरचे पूषेच गुण्डसमोदेशः विश्वी दव गुण 

ध्यखंदागमे जीवद्राणं

गदो । एवं बहळाकालपरुवणा गदा ।

<sup>डक्</sup>रसेण अर्णतकालमसंबेज्जा पोग्गलपरियट्टं' ॥ ४ एको मशुसो देवो गेरहजो वा जणादियगुष्टिमसंवक्तिमें जो मिच्छ

 चिसु उववष्णो । आवित्याए असंखेबिदिमागमेचाणि पागगलपरिपद्याणि बच्चार्वि गदो । अससेन्ज्यपोग्गलपरिपद्दाणि चि वयणादो अर्णवीवलदी कर्णवमाहणं किष्णाविण्डिके ? ण, अर्गवमाहणमंतरेण पोग्गलपरियट्टस्स अर्णव डबायामावादो । पोग्गलपरियद्दाणि आवलियाए असंखेजदिमागमेवाणि चेवा

पञ्चदे ! बाहरियपरंपरागद्वक्साणा तद्वगदीए । सासणसम्मादिङ्की सम्मामिच्छादिङ्की ओवं'॥ ५०॥

इदो । वाणेगजीवजहरूपुक्कस्मपुरुवणादि विसेमामावा । हैपानको मात्त हुमा । इस मकारसे निर्वेच मिक्यादृष्टिके जयन्य कालको मक्यपा हुई ।

एक बीवको अवेद्या तिर्पेच मिध्यार्टि बीवका उत्कृष्ट काल अनन्त काटक भसंख्यात पुरुलपरिवर्तन है।। ४९ ॥

्र बंद्राच्या १ ॥ ७५ ॥ सारकसंघी छात्रील महत्रियाँकी मत्तावाष्टा एक महाच्या, देव संयवा मारकी सन्तार्थ विष्णाहरि जीव निष्णोंसे क्यास हुमा। वहांवर सावटी हे. ससंस्थातव मागमात्र पुरस्ती इत्वाही परिवार्तन करके अन्य गतिको बला गया। विद्याः कर्यः कर्यः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः विद्याः । विद्याः - १ समेरवात् पुरस्यरिवर्गन् १ इस महारसे धवनसे सनम्मताही हरस्थि होती है, हसाठिव सुक्रमेंस ' सम्मन ' पर्का महल क्यों नहीं निकाल दिया जाता !

समाधान — बहाँ, क्याँकि, सनम्पदके प्रहण किए विना पुरस्परिवतंतके सनम् टाडी उपल्लिका बीर कोई बपाय नहीं है।

वहा — निरंप मिध्यादृष्टि बनाय गये इतः पुरुव्यस्थितः, ' मायद्वीहे महंबतः वर्षे मागमात्र ही होते हैं, 'यह कैसे जाता ? समायान - नहीं, क्योंकि, भाषाय-परम्परागन ध्यारयानसे उक्त क्षतका हम रोजा है।

भागादनमध्यारीष्ट्र त्रीर मध्यमिष्यारीष्ट्र निर्वेषोद्धा हान त्रोपके ससर करोड़ि बाना थीर वह बीवमानाथी विधाय थीर हम्हर बाहरी प्रवचनामें सद र देने ही सम्बद्धानावान होई विशेषना नहीं है।

t tarend andres . Haritage a. fa. t. c.  बाटाणामे विस्वितकाटः स्वर्ग

असंजदसम्मादिङ्डी केनिचरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुः r ç! j सब्बद्धां ॥ ५१॥ प्रतः १ वीदाणागद्द-बहुमाणकालेषु असंजदमम्मादिक्विनिहिद्दिनिरिक्छगदी ښو پېښو

एगजीवं पडुच जहष्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५२ ॥ 

वामवस्यक असंजद्सम्मादिही जादो । सन्वत्रहुमंत्रीसहृत्वमन्त्रिय विद्यादीर हृकस्त्री र्धनमार्धनम् महो, संक्रिलेनण द्वनकम् मिन्छक् सम्मामिन्छक् ना गरी । एवं नरस्य-कालपरूवणा गदा ।

डबास्सेण तिण्णि पल्टिरोचमाणि' ॥ ५३ ॥ र्थं जया- एक्हो मणुस्ता बद्दिस्ताउत्रो सम्मर्थं पेन्व दंग्रयमहर्वाषं सदिव देवचरद्वरतिरिक्तेम् उववण्यो । तिथ्यि पत्तिरीवमाणि सन्य सम्प्रेण गर अस्ति सर्

असंयवसम्पन्छि विशेष औव किवने काल वक होते हैं ? नाना बीसीकी अवेथा सर्वकाल होते हैं ॥ ५१ ॥ प्रकार २१० ६ ॥ ३६ ॥ वर्षोदि, वर्तात, अनामत भीर वर्गमान, इन नीनों ही बालॉर्स अक्षवनतास्वरहि जीवासि रहित तिव्धमति महीं पाई जाती है।

एक जीवनी जरेशा असंयवसम्यादि विधेषीका जन्म बात कार्नार है।। ५२॥ पढ हरा महार है— यह विस्पार्श्व, अथवा सार्धामस्पार्श्व, अथवा संदन्तरंदन विषय जीव विश्वासीहे. विक्षित सर्वतसम्बद्धि हुमा । वहां सर्वतसु कारणा करणाव त्वय आव परणामानः मामयस्य मस्यासयम्बद्धाः ह्याः यदाःसवस्यु स्वस्त्राः यस्य इदं करके विद्यादिसे बहुता हुमा स्वसासयम्बद्धाः सात्र हो गयाः चुना सहस्रो वहुना हुमा

विष्णायको भयवा सायमिष्ठायको मात हुआ । इस प्रकार ज्ञास कारल कारण पहाः हुए। असंबदमान्याहरि विवेचका उत्तह काल तीन बन्यापम है ॥ ५३ ह अवभवनान्त्रपद्धाः वाम पद्धाः वाद्धाः काल काल महत्त्व काल काल कर्या काल कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर् यह दश करण द्वा प्रमाणवाद्यांक यह अद्याप सार्वणवाद्य कहत करहे अस्ति स्थाप हो। वह कर कर करण हो। वह से क निमादभाष्या सम्प्रणा, २०५०चा क्यार्ड्डरक नामकात्र वण्का द्वा व्याप्त स्थापन पोषम काल्यमान सम्प्रकृतेक साम्राह्म वरसम्, और देव दी एका दिस प्रकारक

e geale uit aurentelle. in fe t. . t a see alie eieleefe i.e. fa t. ..

३६६ ] देवो जादो । एवं विरिक्खेसु असंनदसम्मादिष्टिस्स उक्कस्सकालो परुविदो । **छ**क्षेंद्वागमे जीवहाणं संजदासंजदा केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुन्व [ 2, 4, 48 सब्बद्धा ॥ ५४ ॥ ख्दो १ तिसु वि कालेसु संजदासंजद्विराहिदतिरिक्सामावा । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ ५५ ॥ तं जहा- अड्डाबीससंवकस्मियमिच्छादिङ्की असंजदसम्मादिङ्की या परिणास पञ्चएण संजमासंजमं गदो । सञ्चलहुमंतोमुहुचमच्छिय पुञ्जुचाणमेककर्रं गदो । उक्स्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ ५६॥ एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा मिच्छादिङ्की अङ्कावीससंतक्तिमओ सन्निपंचिदिय-विरिक्सम्मृन्छिमपञ्जवमङ्क-कच्छ-मच्छवादीमु उववण्यो । छहि पञ्जवीदि पञ्जवपदी (१) विस्तृते (२) विसद्धे (३) संज्ञमासंज्ञमं पडिजण्गो । एरेहि वीहि अंतेपुहुचेहि ऊलपुच्चकोडिकालं संजमासंजममणुषालिह्ण मदो देवो जादो । तिर्पयोमें मसंयतसम्याद्दिका उन्हाए काल कहा । संपवासंपव विर्थेच कितने काल का होवे हूं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकार च्याहि, तानों ही कारोम संयनासंयनोंसे रहित तिर्ववीका समाय है। एक जीवकी अवेधा मंपनामंपन तिर्वेचका जपन्य काल अन्तर्गृहर्न है ॥ ५५ ॥ वह इस महार दे— मोहकमंकी महाइस महानियोंकी सत्तावाला मिच्याहरि, मया यह जीवही जवेशा संपनामंपन नियंगका उरहर काल कुछ कम प्रेहीरी

होते हैं ॥ ५४ ॥ असंवनसम्बन्धिः जीव वृश्चिमाहिः निमित्तते संवमासंवमको मात हुमा । वहां वर सर्वनपु असम्प्रानं चात रह करके पूर्वेश्व गुणस्थानामसे किसी यक गुणस्थानको मात हो गया। (रस प्रचार सन्तमंडून बाल मिल हुमा।) वर्षकाम है ॥ ५६ ॥ में उद्योग बहारेन दमें उद्देशियों श्री समावादा वह निवेच वा मनुष्य मिलारीर हिंदू विकास महाराज्य सम्बद्धां निवास स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन के खंदरित होता हुआ (!), विशास हेदर (४), बीट विश्व होराट (३), रोवसामनकरी केत हैं हैं है वर्ग के अपने बूँडे रीम हम पूर्वहादि शास्त्रमाल सम्मानामां गांसार

पंचिंदियतिरिक्स-पंचिंदियतिरिक्सपञ्जन-पंचिंदियतिरिक्स-जोणिणीसु मिच्छादिट्टी केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सन्यद्धा ॥ ५७ ॥

ङ्रो ? विद्य वि कालेतु पंचिदियवितिकत्तवियमिच्छादिद्विवितिहदपंचिदियवितिकत्त-वियाणुवलंगा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमहत्तं ॥ ५८ ॥

एवको सम्माभिन्छ।दिह्री असंबदसम्मादिह्री संबदासंबदो वा दिहमगो। भिन्छसं पिठवणो। । सन्वरुहमंतीसुहृचमन्छिप पुरनुमाणमण्यदरं सुर्थ गदो । तेण अतीसुहृचमिदि सुने पुर्थ ।

उकसं तिष्णि परिदोवमाणि पुन्वकोडिपुधतेण अन्भ-हियाणि ॥ ५९ ॥

तं ज्ञा- एकको देवा वाहको मणुस्ता वा अध्विद्पंचिदियतिरिक्यविदित्ति तिरिक्लो वा अध्विद्पंचिदियतिरिक्षेत् उवक्ष्णो ! साध्व-हरिय-युरिय-गर्युतावेदेतु

पंचिन्द्रिय विषेच, पंचेन्द्रिय विषेच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय विषेच योनियन्त्रियों में मिध्यादृष्टि जीव किनने काल तक होते हैं है नाना जीवेंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ५७ ॥

पर्योक्ते, तीनों ही कारोंमें श्रीनों मकारके पेवेन्ट्रिय तिर्पेष मिण्याराष्ट्रेपोते रहित उक्त तीनों मकारके पंपेन्ट्रिय तिर्पेष नहीं पाय जाते हैं।

एफ जीवजी अपेक्षा उक्त तीनों प्रकारके निर्धेच मिथ्यारिष्ट बीबोंका जपन्य काठ अन्तर्पहर्त है ॥ ५८ ॥

तिसने मिरपायका मार्ग पहले कई बार देला है पेसा पक सम्यीमश्यादिष्ट करना स्रांत्यतस्त्रपारि, स्रथवा संवतासंत्रत निषय विष्यावदी आत हुमा। वहां वर सर्वेडणु स्रातमुद्धतं काल दह कर पूर्वेळ गुलस्वानोमें से किसी वक गुलस्थानको मात हुमा। इस दिर सुन्तों ' अन्तर्गुद्धतंबाल 'पेसा कहा है।

उक्त पंचेन्द्रिय विषयोंका उत्हर कात पूर्वकोटिष्टवस्त्वमे अधिक होन दत्त्यी-यम है ॥ ५९ ॥

अँसे, एक देव, मारबी, अनुष्य, अथया विवर्शन पंबेन्द्रिय निर्वयने विजिन्न अन्य तिर्वय औव, विवश्ति पंचेन्द्रिय निर्वयोंने अन्त्य द्वारा वर्षों पर संब्रा औ, दुरव और क्षेण अइंहपुच्चकोडीओ हिंडिद्ण असण्णि-इत्यि-पुरिस-णबुंसयवेदेसु वि एवं पेर अहुइपुज्यकोडीओ परिममिय तदो पंचिदियतिरिक्लअपज्यचरसु उववण्गो । तप अंतोमुद्रुचमच्छिय पुणो पंचिदियतिरिक्सअसण्णिपञ्जत्तएसु उत्तरिज्ञिय सत्यतणारिय पुरिस-णत्रुंसपनेदएस पुणा वि अहहपुन्वकोडीओ परिममिय पच्छा सण्णिपैचिदियविरिस्स पज्जचहित्य-णवुंसगवेदेसु अहहपुच्यकोडीओ पुरिसवेदेसु सत्त पुच्चकोडीओ हिंदिर्ण तरो देव-उत्तरकुरुतिरिक्सेसु पुन्तिक्लाउवसेण इत्थिवेदेसु वा पुरिसवेदेसु वा उत्तरणी वत्य तिष्म पितरायमाणि जीविर्ण मरी देवी जारी । एराओ पंचाणग्रदि पुन्वकाडीओ पुरुवकोडिवारसपुघचंसिष्णदात्रो चि एदासि पुरुवकोडिपुघचववदेसो सुचणिहिहो ग जुज्बदे । प एस दोसो, तस्स बहउल्लबाहत्तादो । बारसण्हं प्रव्यकोडिपुधताणं कप

मगर्च ? ण, जारमुहेण सहस्ताण वि एगत्तविरोहामात्रा । णवरि पंचिदियतिरिक्खपक्रच

एमु सचैवालीसपुरुवकोडीओ हिंडाविय पुरुषा विपलिदोवमिएस तिरिक्खेस उप्पादेदस्यो। नतुंगक पेर्सि कमसे माठ माठ पूर्वशेष्टि कालप्रमाण भ्रमण करके, बसंधी त्यी, पुरुष मीर नर्नुसक यहाँमें भी इसी प्रकारते भाठ भाठ पूर्वकोटि कालप्रमाण परिश्रमण करके, इसके पध्मत् पंथित्य नियंव संस्थापर्याप्तकार्मे उत्पन्न हुमा । यहां पर अन्तर्मुहते रह कर, पुनः पंचित्रिय निर्यय मसंबी पर्यातकों में उत्पन्न हो कर, उनमें के स्त्री, पुरुष और मपुंसक वेरी जी कों में फिर भी भाउ भाउ पूर्वकेटियों तक परिश्रमण करके, पाँछे संबी पंचेन्द्रिय तिर्पेव पर्यापक म्हाँ और अपुंतक वेदियोंने भाउ भाउ पूर्वकोटियां, तथा पुरुषयेदियांने साम पूर् बोरियां अवस करके उसके प्रधान देवकुर वध्या उत्तरकुरके निर्वेशीम पूर्वेशी मायुके बाले क्रिकेटियाँमें अध्यक्ष वुरुवेशित्याँमें उत्पन्न कुमा । यहां पर तीन परयोगम तक जीवित रह कर मग और देश हो गया।

र्थंडा — वे क्रपर कही गर्द पंचानवे पूर्वकोटियां पूर्वकोटिकादशपूर्यक्षय संबाहण है। इस्टिए, इनकी स्वनिर्दिष्ट पूर्वकीटिमुधक्य देशी संज्ञा नहीं बनती है है

ममाधान - यह कोई दोव नहीं, क्योंकि, यह पृथक्त दावर वैवुद्ववाची है, (इस

टिर कोरिएयक्न ने वचारांमय विवसित मनेश कोटियां प्रश्न की आ रावती हैं।)

देश--बारह पूर्ववेर्तिरप्रयक्त्योंने एकपना कैसे बन सकता है है मुमायात् - वर्षा, वर्षाहि, जातिके मुलते, अर्थात् जातिकी अवेशा, शहसीके मी

बरम होनेने विरोधका सनाय है। विरोप कार यह है कि पंचेर्त्र्य निर्वेचपर्यातकोंग्रे सेनालीस वृत्रेकोदियाँ तक भागन बरादे केंद्रे रीव कारोपायकांद्र तिर्थेवीय त्रमात्र करामा चादिए। वर्गीह, मनुर्थानाहराहे

द प्रील्ड 'हमपूरण' दृष्टि द्र हः ।

कुरो ? अपन्जननेषा एरेसिमपरिणदाणं पन्छा सेसपुन्नकोडीयो परिन्ममणे संमग्न-भावा ! अपन्जनस्या कथमिरिययेदस्स संमये ! ण, अपन्जनिरिययेदालमण्णोण्यितिहा-भावा ! पॅपिंदियतिरिन्छजोणिणीत् पण्णारस पुन्यकोडीयो ममाविष पन्छा देवसरक्रतेस्य उप्पादेदस्यो । कुरो ? वेदंतरतंकतीर्ण अभावादो । सरिप अष्णो कोह विसेसो ।

सासणसम्मादिट्टी सम्मामिन्छादिद्वी ओघं ॥ ६० ॥

हरो १ तिसु वि पंचिदियतिरिक्छेस द्विरदेशिणहाणाणं णाणाजीतं पद्वस्य जहण्णेण एपसमजो, अंतीमृहर्ष । उक्तरसण पिट्रायमस्स असंस्कादिमागो । एमजीतं पद्वय जहण्णेण एपसमजो, अंतीमृहर्ष । उक्तरसण छाविष्यात्रो अंतीमृहर्षिदि एदेहि विस्तामात्रा ।

असंजदसम्मादिट्टी केनियरं काठादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सम्बद्धा ॥ ६१ ॥

कुदो १ तिस वि पंचिदियतिरिक्खेस असंबदसम्मादिद्विरिरिहेदकालामावा।

साथ मपरितत हुप, अर्थात् छण्यपर्यात्तक हुप विना, उक जीवीके प्रधात् होर पूर्वकोदियाँ परिधानण करना संमय नहीं है।

ग्रंका- एक्प्यपर्वातकाँमें क्वियेद केले संमय है !

समाधान-नदी, फ्योंकि, हम्बवर्यात और द्यीवेद, इन दोनों अवस्थाओं में पर-स्वर कोई विरोध नहीं है।

पंचित्तिय तिर्वेव योतिमतियोंने उन्हर पूर्वकेटियाँ तकः धमण कराके प्रमान देवहुर भीर उच्चक्टरेंने उत्पन कराना चाहिए, क्योंकि, मोगन्तिमें येव्यदिकत्वका समाप दे। इसके वियोग सन्य कोई विदेश्यता नहीं है।

उक्त वीनों प्रकारके तिर्पेच साहादनसम्पर्टि और सम्परिमप्याद्यी जीहींद्रा काल ओवके समान है।। ६०॥

वर्षेकि, तांनों ही वंधेन्द्रिय तिवर्षोमें रिधत कर होनों गुणस्थानका सामा जीवेंची मेरेसा जामन काल एक समय और मस्तर्गुर्तने हैं। तथा वरहर काल पत्योपमचा बसेक्साउची माग है। एक आवादी धरेसा जामन काल एक समय और मन्तर्गुर्तने, तथा करहर काल एक सामादियां और अस्तर्गुर्द्तने हैं। इस मकार हन दोनों गुणस्थानींसे उक सीनों चेबेन्द्रिय अधिके कालों के को विभागत मही हैं।

उत्त तीनों प्रकारके तिर्पेष असंयतसम्पन्छि श्रीव कितने काल तक रोते 🕻 । नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥ ६१ ॥

वर्षोकि, तीवों ही प्रकारके पंचित्रिय विवेषोंने ससंयवसायगरिक आंधीते टिट्ट कालका मधाय है।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६२ ॥ ्राच्यात गर्ड-च जार-चन जातास्त्रहुल स द्वारा स्ट्रो १ मिच्छादिद्वी सम्मामिच्छादिद्वी संनदामंत्रदो वा निसोहि-संक्टिसकेन असंनदसम्मादिही होद्ण सञ्जहण्णमेवोमुहुचमन्छिय अविण्हमेकिलेस-विभोदीह

पडिवणागुणंतरस्स अतीमुहुत्तमेत्तकानुवर्रमादो ।

उनकस्सेण तिर्णिप पल्टिदोत्रमाणि, तिर्णिप पल्टिदोत्रमाणि, तिन्णि पिटदोनमाणि देस्रणाणि ॥ ६३ ॥

पॅचिदियतिरिक्स-पॅचिदियतिरिक्सप्य उन्तत्ताणं संपुष्णाणि तिणि परिदेशनमाणि। छुदो १ मणुस्त्रस्य पद्वतिरिक्ताउत्रस्य सम्मर्च येनृण दंसणमोहणीयं स्रविय देवताहुरू वर्षा वर्षावर्षात्र अपयो आउद्दिदमणुपालिय देवेसुप्यणस्य संप्रुणनिन्न प्रिटोवसमेचसास्त्रमसम्मचकालुबलंमारो । पॅचिदियनिस्थित्रोणिणीप्त देयणीतिण्यति देशिमाणि । इदो ? तिरिच्छस्य मणुस्मस्य वा अहावीयसंतक्रीमणणाः ५२णाणनाः देशुचरङ्क्पंत्रिदियतिरिक्खनोणिणीमु उप्पश्चिय वे मासे गन्मे अन्छिर्ण णिक्संतम् सहचपुषचेण विसुद्धो होर्ण वेदगसम्मचं पडिवन्त्रिय सहचपुषचन्महिय-न-मार्णानिय

एक जीवकी अपेक्षा उक्त वीनों प्रकारके पंत्रोन्द्रेय विर्धेच असंपवसम्बन्धीर जीवोंका जपन्य काल अन्तर्मृहर्त है ॥ ६२ ॥

प्योकि, कोर मिध्यार्थाष्ट्र, अथवा सम्योगस्यार्थ्य, अथवा संवतासंवत निर्वे ययाक्रमति विद्युद्धि, अथवा संहेराके प्रशंत असंवतसम्पाद्धि होकर स्वतं कम मन्तुहूर्व भवानमधा विश्वास, विवास सहस्यक प्रश्नेस असपतास्वर्धन्दाप्ट हाकर सवस कम अव्यक्त काल रह कर, अविनय संस्था और विश्वविक साथ यथाक्रमस दूसरे गुणस्यानको प्रत हुवा, ऐसे जीवके बन्तमुहने काल पाया जाता है।

उक्त वीनों पंचित्रिय निषेच अमंपनमस्यार्टिष्ट नीवेंका एक जीवकी अपेवा उत्हर काल ययाक्रममे नीन पन्योपम, नीन पन्योपम और हुछ कम तीन पत्योपम है।। हेरे।।

पंचित्रिय निषय और पंचित्रिय निर्पय पर्यानशैका सम्पूर्ण नीन परयोगम उन्हर कार है, क्योंकि, वर्जनियमायुक्त मनुष्यके, सम्यक्ष्यकी प्रदेश करते, दसनेमादनीयम हिता कर, देवकुर या उनारकुरक प्रेचिन्ट्रिय निर्मेश्वीम उत्था होकर, दशनभावणाः स्थितिक कर, देवकुर या उनारकुरक प्रेचिन्ट्रिय निर्मेश्वीम उत्था होकर, अपनी आयुक्तिनिर्मेश परिवाहन कर, दुशींने उत्पन्न होनेपाह जीवक ना सम्पूर्ण नीन पत्थीपमान अवसमानिक सारक वहा बाह पाया जाता है। येथिन्य तिर्वय योतिमतियाम बुर कम तीन परयोग बार है। क्योंकि, मोहकमेडी भट्टीरेस महानियोंकी सत्तापान निषय प्रथम मनुष्य विकास होट जीवर रेपहर भयवा उपाहरक पंचीत्र्य नियंत्र योजमानियोम उत्पन्न हारत और हो मास गर्ममें रहहर, माम छेनेवाले, और मुहतेश्वकायमें विगुद्ध होकर यहकसायकार्यम

षाटाणुगमे तिरिम्खकाटपरूवणं पतिदोवमाणि सम्मचमणुपालिय देवेसुववष्णस्म देख्याविष्णिपालिदीवममेचस कालवलंगादो । संजदासंजदा ओघं ॥ ६८ ॥ इत् १ तिसु वि वंशिदेपतिरिक्तेसु णाणाजीवं पद्रच्य सम्बद्धा, एमजीवं पद् जहरूपेन अंतेष्प्रदुनं, उदस्येन पुरुकोडी देख्या, हरुपारणा मेदामाना । एतरि न्यायिक वे मासे अंतोमुद्रचेहि ऊणिया वि वत्तर्य । पेचिदियतिरिक्सअपज्ञता केवचिरं काटादो होति, णाणाजीव पडुन्च सन्बद्धा॥ ६५ ॥ इदो १ वंचिदियतिरक्ताअपन्तत्तिरिद्दकाटाणुबटमा । -एमजीवं पहुन जहण्णेण सुद्दाभवगाहणं ॥ ६६ ॥ हुदो १ एइदिय-वहदिय-वहदिय-चडिरियपः जन-अवन्जन-प्रिदियनिविकार्यजन मणुसवन्त्रचापन्त्रचणुतु अन्यदरस्य सुराभन्तरमस्यायृहिद्देशिद्देविनिस्यानसम्यस्य मात करके मुहतेषुथकायसे मधिक हो मास कम सीन परयोपम तक सायकपको अनुपादक आत करक अंद्रतपुर्वशास्त्र कार्यक दा भारत कम ताल परवापम तक सारपुर पदा बाजुपादक करके देखीम उपयप्त दोने याने श्रीपुर कुछ कम तील परवापमामाण कारपुर वाज्यास्त्र पत्त भीनों मकारके पंधेन्द्रिय संयवासंयव विवंधोदा बाट अंपके मसन है।। ६४ ॥ वर्षेकि, तीनों ही महारके वंवेदिय निव्योंने बाना जोवोंडी घरेसा वर्षेडाल, एक जीवड़ी घरेसा जयन्य काल सन्ताहते, और उहिए बाल देंग कम पूर्वकेटियमास होता है, जारका भाषता जाभार काल धालाप्रकृत, भार बाह्य काल इ. ए काम पूर्व गारकाराच हाता र, इत्यादि हुएते भेदका समाय है। विदीय बात यह है कि बीलस्तियास है। साद कीर इ.ए. रत्यात् २०४८ भदश्य व्यवस्य हा । यदार यात्र वह हाहः यात्रवात्यक्ष हा सार्व वह ह छ। भत्तमहर्तिने वाम, मर्थात् जामको हेवतः सीमातिसीम संयमसंस्थाना सहस्य वहते सबस् पंचित्रिय तरापपवर्गमक निषंप किनने कात दक होने हैं। नाता शिहारी विधा सर्वकाल होते हैं ॥ ६५ ॥ प्रकाल केए क ए २२ ।। वर्षोद्ध, वेद्योदय सत्त्ववर्षातः तिर्वय श्रीयोसे स्ट्रिंग केर्सकी कास नहीं पा जाता। पढ़ जीवनी अवेधा वंपेन्ट्रिय तन्त्ववाल निवेधीका श्रद्धान कार सुरुवान ात्रमाण है ॥ ६६ ॥ भाष ६ ॥ घर ॥ वर्षाक, वर्षास्य, सीत्रिय बीतंत्र्य बहुत्तास्य एटा अह केल अपटाण्ड कतान, प्रभावत, हामच बाग्यंच ब्राग्यंच एटा जब कार स्वयस्थ्यं यव निर्धय वर्णायंक तथा स्वयुध्य वर्णाज्यंच भीर अवदार्थवादेख विक्रों एवं साबस्थ्यं 

उपविजय सञ्जदम्मकालमन्त्रिय पुल्तुचाणमणाद्रं सद्भा सुदामगम्मरमनेषमः जनचकाल्यलंमा ।

उक्संरोण अंतोमुहत्तं ॥ ६७ ॥

हदो १ पुरुतुनाणमण्यदरस्त पंनिदियतिविक्सत्रपरज्ञनगरम् उत्रपत्रित्य सणि-असण्यि-अपञ्जनसम् अहहुवारमुप्पिज्ञय णिस्सरिद्ग पुरुतुनाणमण्यदरं गदस्स अर्थेन महत्त्वनेनाकस्तकात्त्रवर्तमा ।

मशुसगदीए मशुस-मशुसपज्जत-मशुसिणीयु मिच्छादिट्टी केवित्रं कालादो होति. णाणाजीवं पद्वच्च सत्वद्वां ॥ ६८ ॥

खुरे। १ तिविधेसु वि मणुस्सेसु भिन्छादिष्टि-विरहिदकालाणुवलंमा ।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्ते ।। ६९ ॥ इदो १ सम्मामिच्छादिहिस्स असंबदसम्मादिहिस्स संबदासंबदस्स वा संक्रितेषः

भौर पहां पर सर्व जघन्य काल रह कर, पूर्वोत्त पकेन्द्रियादिकॉमेंसे किसी पकको प्राप्त <sup>हुव</sup> जीवके श्रुद्रमयप्रहणमात्र अपर्वाप्तकाल पाया जाना है।

एक जीवकी अपेक्षा पंचिन्द्रिय सन्ध्यपर्याप्तक विर्यचका उत्कृष्ट काल अन्तर्पृह्व

है॥ ६७ ॥

क्योंकि, पूर्वमें को गये पकेन्द्रियादिकोंमेंसे किसी एकके पंचिन्द्रियतिर्यं व लाज-पर्यान्तकोंमें उत्तरम होकर, संकी और असंकी कारवपर्यान्तकोंमें आह आह बार उत्तरम होकर, कीट उनमेंसे निकलकर, पूर्योक्त और्थोंमेंसे किसी एक आंवकी पर्यापको शात हुए शीवके सम्ममहर्त्वप्रमाण उत्तरम काल पाया आता है।

मनुष्यातिमं, मनुष्य, मनुष्यप्यीप्त और मनुष्यनियोमं मिथ्यादिष्टं जीव हिर्तने

काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ६८ ॥

क्योंकि, तीनों ही प्रकारके मनुष्योंमें मिष्यादृष्टि जीवांसे रहित कोर्र काल गरी पाया जाता है। एक जीवकी अपेक्षा उक्त तीनों प्रकारके मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका जयन्य कार्र

अन्तर्मुहूर्त है ॥ ६९ ॥ क्योंकि, सम्परिमप्पाद्दिके, अथवा असंयतसम्बर्गद्दिके, अथवा संवतसंव्यक्त

१ सनुष्यानी सनुष्येष्ठ विष्याद्वर्धनीनाजीशपेश्चया सर्वः काळः । स. सि. १, ८. २ एकजीवं प्रति ज्ञान्येनान्तर्धहर्तः । स. सि. १. ८.

1, 4, 00. 7

पमेण मिन्छचं गंतूम सन्दनहण्यमंतोष्ट्रहचमन्छिप पुन्तुनाणमण्यदरं गदस्स तिस्र मणुस्तेमु अतीमुद्रुचमेषिण्छनकालुबलेमा । ्र उनकस्सेण ति<sup>ण्णि</sup> पलिदोवमाणि पुन्यकोडिपुधत्तेणन्महियाणि 11 00 11

हरो । अणिवदजीवस्स अप्पिदमशुमेसुववज्ञिय इत्थि-शुरिस-णगुसयवेरीस अहडपुन्यकोडीओ परिममिय अपन्तचएसुन्नित्वय तत्य अतीसुहुचमन्छिय पुणी इत्य-भवनपत्रम् अरहरु प्रभावनम् व्राप्तापत्रम् अत्र उत्तर्भावनम् । तिचित्रं पलिदोवमाणि अन्छियं देवैग्रवगस्स प्रम्कोहिषुपत्तस्महियतिच्यपित्रीवम् वन्त्रमा । वनित्रं मणुस्यिन्छादिष्टिस्स चेव सर्वे नालीसपुन्यकोदीत्रो अदिया होति, व वेशाणः । पञ्जवमिन्छारिद्दीयं वेशीसपुरकोडीओ, मणुसअपञ्जवस्यु वेसिमुपकीर अमाबादी । मणुसिर्वामिन्छादिद्वामु सचपुन्यकोडीम् अहियात्रो, वेदंतरसंकंतीए अभागदो ।

संहेचारे बरासे निष्यात्वको यात होकर, सर्व अयत्य बातर्गहते बाल रह कर, पूर्वेक गुण चक्रधक बचात अवस्थावका बात द्वाचन, जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म द्वाच उत्तर स्यानोहेंसे किसी यह गुणस्थानहो यात हुए जीवहे तीनों हैं। प्रहारहे मुल्योंने सन्ताहेंहर्र-मात्र मिध्यात्यका काल पाया जाता है। एक जीवकी अरेखा बीनों प्रकारके मिथ्यादृष्टि मनुष्योका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटि-प्रयनत्ववर्षेते अधिक चीन पल्योपमत्रमाण है ॥ ७० ॥

चर्योक्ष, व्यवस्थित जीवके विवसित महाप्याम उत्पन्न होक्द, स्ती, पुरुष और प्रधारम् काषपासत् जावक राषधास्त मञ्जूषाम् ज्ञापस्य हारूर् स्वा, पुरुष भार मुझकहोदियाम ब्राम्सः ब्राह्म माह पूर्वकोटियां तक वरिक्षाण करके, हारायणाप्तकांम ज्ञापस मुद्रमानवार पास मानवार माठ माठ प्रदर्भावका राज भार क्रवल प्रस्क, क्रान्यवधार्यकाम वायद्र रोकर, यहाँ पर मानवाहर्त काल रह करके, पुनः स्त्री और मुद्रमक वेदियाँस साठ साठ पूर्ण रिकर, वहा पर काल्पाइन काल रह करक, पुनः स्वा आर महुलक वास्पाम बाड माड पूर नोडियां तथा पुरुष्योदियोंमें सात पूर्यकाढियां समय करके, हैयकुरु स्वया उत्तरकुरमें तीन गोरपा तथा पुरुवशास्थाम सात पुरुवशास्था ध्वमण करक, द्वजुरू स्वया उत्तरहरूम तान त प्रमोपमा तक रह करके, देवोम जापम होनेवाल जीवक पूर्वकोटिय्यवस्था मणिक न परचापमा एक ६६ करण, पंचान उटाज भागवाल जायक प्रयक्ताटप्रधायस माधक न परचीपम पार्वे जाते हैं। विरोध बात यह है कि ममुध्य मिच्यादिहें ही तीन परचेपमोर्स ने परवापम पाप जात है। विश्वप पात वह द है मेजुन्य स्मन्याराप्तक है। तान वन्यापमास वह सेताहीस पूर्वकादियां होती है। दीप मेजुन्योंके नहीं। पर्यान्त मिच्याहाट्टे मेजुन्योंके वह स्वाह्मस प्रकारचा हाता है। स्थाप भवाचार महा, प्रचान भवाचा है। स्थापित होती हैं। स्थापित महास्थापत्र महास्थापत्र भवाचा अपने स्थापता भूषभादधा भावक वादाः वा प्रभावः, मञ्जनकारप्रधान्त्रकात जनका अवस्था स्ट्री है। मञ्जूषानी मिध्याद्यप्टिनोंने सात पूर्वकाटियां भविक होतों दें, क्योंकि, उनके वेदपरि है जन्दरंत जीति वश्योवसानि पूर्वशेरी रूपक्वंश्यविकानि । स. ति. १, ८.

सासणसम्मादिही केनचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुन्त जहण्णेण एगसमयं ॥ ७१ ॥

कुदो ? उत्रसमगरमारिष्टीणं सत्तद्वत्रगणं उत्रगमगरमतद्वागः एगगमत्रो बिन्धि चि सासण्युणं सदाणं तरवेगसमयमन्द्रिय मित्रप्रतं पटिवन्त्रायमेगसमत्रोत्तर्नगरं। !

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७२ ॥

कुदो १ सेलेडजाणं उत्तसमयमादिङ्काण्यवसमयम्मचद्वाए एमसमयमादि कार्ष जायुक्तस्सेण छ आवलियाभा अन्यि ति सासणं पडिवण्याणं संगेडजवाराणुसंनिदसामण-द्वाणमंतीसङ्गतुवलंगा ।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७३ ॥

कुरो ? उवसमसम्मारहिस्स वयसमसम्मनदाय एगसमग्रे। अध्य नि सा<sup>मर्ग</sup> पडिवज्जिय विदियसमय चेत्र मिच्छन्ते पडिवणासासणस्य एगसमयदेसणारो ।

उक्त तीनी प्रकारके मृतुष्पोंमें सासादनसम्पग्टिए जीव कितने काल वक होंगे हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा जपन्यसे एक समय होते हैं।। ७१।।

क्योंकि, उपरामसम्बन्धिः सातः आठ जानेके उपरामसम्बन्धके कालमें पक समय होप रहते पर सासादनगुणस्थातको मात हुए. तथा यहां पर एक समय रह कर मिष्यात्रक्षे भात होनेवाले जीवोंके एक समयमगण काल पाया जाता है।

उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योंमें सासादनसम्पग्टिए जीवोंका नाना जीवोंकी अपेशा

उत्क्रष्ट काल अन्तर्मृहर्त है ॥ ७२ ॥

क्योंकि, संस्थात उपनाससम्बन्धियोंके उपनाससम्बन्धके कालमें पक्ष सम्बक्ते स्नादि करके उत्कर्षसे छ आविलयां दोष रहते पर सासादनगुणस्थानको प्राप्त हुए श्रीविक स्वयात पारोंसे अनुसंचित सासादनगुणस्थानका काल अन्तर्गृहुर्त पाया आता है।

उक्त वीनी प्रकारके सासादनसम्यग्दिष्ट मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा जप्ना

काल एक समय है।। ७३।।

क्योंकि उपशासस्याकीर जीवके उपशासस्यक्तयके कालमें एक समय राज रह<sup>त</sup> पर सासादनगुणस्यानको प्राप्त होकर, दूसरे समयमें ही मिध्यात्यगुणस्यानको श्राप्त <sup>दूप</sup> सासादनस्यव्यक्ति जीवके एक समयमाण काल देखा जाता है।

१ सासायनसन्याष्ट्रीनाजीवायेक्या जवन्येनेकः समयः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिष् 'सासणाणं ' इति वादः।

व साक्षेणान्तर्भृत्तेः । स. वि. १, ८,

४ प्रशीरं प्रति जवन्येनेकः समयः । स. वि. १, ८,

उक्कस्तं छ आविलयाओं' ॥ ७४ ॥

णुरो १ उत्तममाम्मादिष्टिस्त उत्तमसम्मचद्वाप् छ आवलियात्रो अधि वि सासमं पडिवन्त्रिय छ आवलियात्रो सत्य गमिय मिच्छत्तं पडिवण्यस्स छ-आवलित्रो-वर्तमा ।

सम्मामिच्छादिडी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमहत्तं ॥ ७५ ॥

पमचसंबद्-सेनदासंबद-अड्डाबीसमोहसंवक्तिम्मयिमच्छादिष्ट्-असंबद्सम्मादिद्व-पच्छायदाणं संदेकबसम्मामिच्छादिद्दीणं सन्वनहष्णमंतीस्रद्वसमच्छिय विसोहि-संक्लिस-बसेण सम्मच-मिच्छचाणि उबगदाणं सम्बज्दर्णतीसुहुजुबलंसा ।

उक्करसेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७६ ॥

सम्मामिच्छादिद्दीणं सर्व्युक्कस्ससम्मामिच्छचद्धाणं मिच्छादद्दि-असंजदसम्मादद्दि-

उक्त दीनों प्रकारके सासादनसम्पान्धि मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल छह आवलीप्रमाण है ॥ ७४ ॥

क्योंकि, उपरामसम्परिए जीयके उपरामसम्पर्कके कालमें छह भावशिवा देव रहते पर सांसादनगुणस्थानको मात होकर छह आवशीयमाण काल वहाँ पर विताकर मिय्याचगुणस्थानको मात होनेवाले जीयके छह भावशीयमाण काल पाया जाता है।

उक्त तीनों प्रकारके सम्पामिध्यादृष्टि मनुष्य कितने काल तक होते हैं ! नाना

जीवोंकी अपेशा जपन्यसे अन्तर्मृहर्त तक होते हैं ॥ ७५ ॥

क्योंकि, प्रमत्तवंपत, कायवा संपतासंपत, कथवा मोहक्योंकी कहाईस महतियोंकी सत्ता स्त्रवेगाले विस्पारिष भयवा असंपतस्यगरिष्ट गुणस्यानसे पीछे नाये दूप संस्थात सम्पामिनपारिष्ट जीवोंके सर्व जयन्य अन्तर्गुहर्त काल रह करके विश्वास और संहेशके परासे प्रयाजनेस सम्पन्त्य अथवा विष्यात्यको प्राप्त द्वप जोवोंके सर्व जयन्य अस्तर्गुहर्ते काल पावा जाता है।

उक्त वीनों प्रकारके सम्यग्निध्यादृष्टि मनुष्योका उत्कृष्ट काल अन्तर्गुदृर्व है ॥ ७३ ॥

विश्यादृष्टि, असंयतसम्यन्दृष्टि, संयतासंयत और प्रमत्तसंयत जीवाँसे संस्थात वारमें

<sup>&</sup>gt; शक्तीन बप्राविद्या । स. सि. १. ८.

९ सम्याधन्यारहेर्नोनाजीवार्यस्या पृद्योवारेस्या प अवन्यभोष्ट्रवान्तर्युहर्तः । ४. हि. १. ८.

Æ.

संजदासंजद-पमत्तसंजदेहि संखेजजवारमणुसंचिदद्वाणमंतोसुद्रुत्तवरुंमा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहूतं ॥ ७७ ॥

सम्माभिच्छादिहिस्त दिद्वमग्गस्स पुन्तुत्तचदुगुणहृणिसु एगजीवण्णद्रस्गुणवस्त्राव दस्स सन्यज्ञहण्यद्रमन्छिद्ग संकिलस-विसोहियमेण मिच्छादिष्टि-असंजद्सम्मादिष्टिग्रेण पडिबण्णस्स सन्बज्ञहण्णंतोमुहत्तमेचकालुबलंभा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहत्तं ॥ ७८ ॥

पुण्डनचदुगुणहणेस् अदिदृमगोगजीवण्णदरगुणपच्छायदसम्मामिच्छादिद्विस दीहद्दमन्छिप देस-सपलसंजमिवरहिददोगुणहाणे गदस्स सन्युक्तसंतोसुहुनुवरुंगा।

असंजदसम्मादिट्टी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सब्बद्धां ॥ ७९ ॥ ं

. इदो १ असंजदसम्मादिद्विविरहिदमणुस्ताणं सञ्वकालमणुवलंभा ।

संचित् हुए सम्यामिष्यादृष्टि जीवींके सर्वोत्हृष्ट सम्यामिष्यात्यका काल सन्तर्मुहुर्त पार्व

उक्त तीनों प्रकारके सम्याग्मिध्यादृष्टि मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा जपूर जाना है।

बार अन्तर्भहर्त है ॥ ७७ ॥ क्योंकि, किसने पूर्वम मार्ग देखा है, येसे पूर्वोक्त चार गुणस्थानोंमेंसे किसी एक गुण स्पातने पीछ याये हुए सम्यग्निम्थारिके सर्व जयन्य काल रह कर संहेश मीर विगुर्दिक यहास मिष्याराष्ट्र और असंयतसम्बद्धि गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके सर्व जमय मन

मेंहने बाल पाया जाता है

उक्त तीनों प्रकारके सम्यग्दृष्टि मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा उत्हृष्ट हार्ग

क्योंकि, पूर्वोक्त चार गुणस्यानोंबेंसे नहीं देखा है मार्ग को जिसने, पेसे जीवेंक हिसी जन्तर्पहर्त है ॥ ७८ ॥ यह गुणस्थानस पीछ माथ दूप सार्विमध्यादिके दीव काल तक रह करेके देवतंत्रम श्चार सदद्यमान राहत दे। गुणस्यानीत, अर्थान विश्वादष्टि श्वीर शर्मयतसारगारि सुचन्धारों में गये हुए जीवके सर्योत्हर भग्यमें हुन काल पाया जाता है।

उक्त तीनी प्रकारके अमंपनमध्यादिष्ट मनुष्य कितने काल तक होते हैं। नाना

द्वीरी अरेथा मर्वद्यात होते हैं ॥ ७९ ॥

क्योंक, सर्वयनसम्बन्धियोम रहिन सनुष्योका केर्द भी काल नहीं वावा जाता।

१ सर्वराष्ट्रप्रतारेगीनार्वं रातेष्ट्रया वर्षेत्र काला । स. सि. १, ८.

11

एगजीवं पहुरम् जहुष्णेण अंतोमुहुत्ं ॥ ८० ॥ रिष्टममामिन्छादिहि-सम्मामिन्छादिहि-संबद्धांबद्दन्यमम्भेबद्धायहाणेहिनो कार्यः

मेचकालुबलंमा ।

उनकरसेण तिष्णि पर्टिदोयमाणि, निष्गि पर्टिदोयमाणि सादिरे-याणि, तिरिंग पिट्योवमाणि देखणाणि ॥ ८१ ॥

परम सादिरमनहाँ दोसु वि विविद्धिवनेसु संबंधिनज्ञो, होण्डं परमामाष्ट्रसेव दमचम्बरमयाणं विसंसणहर्वेण प्रमुखाद्दो । तम्हा मञ्जूम-मञ्जूमप्रज्ञचण्या माहिरसाले विध्य पश्चित्रोयमाणि, अन्तरम देवलानि । कुरो १ - जहां उरेगी कुन निर्मा 'कि पापादो । कर्ष साहित्यनं है अहाबीसानंतकतिस्यिविच्छादिहिसम् युष्यक्रीहितिहार् सेन ्षात्रस्य । त्राच्या व्यवस्था । ज्ञानावात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रः अज्ञानात्रात्रः । व्यवस्थानात्रात्रः व्यव बद्धमणुमाउमस्य सदी अवीमुदूर्व संत्य सम्मर्च देम्ब देमबमोद्गीय स्टीस्य माम्मर्चेव

पुत्र जीवकी अवेधा मीनो प्रकारके असंयमग्रम्यग्टीष्ट मनुष्योका अपन्य कान अन्तर्धहर्त है ॥ ८०॥

१५ ६ ।। २० ।। वर्षोदि, देला है मार्गको जिलमे देले, मिरवाराध, वयवा सारकी मस्यारिक कपना च्याक दका है सामक असम असम अस्त अस्यादार, नाम्या संस्थानक स्थान स्वतास्वत, स्वयंत्र प्रमत्त्रस्यत गुण्डवाजीते साते हुए, तया सर्वे ऋषाच का गीरने हाक रहे धवनाध्यमा, ज्ञथन भाग्यस्थम गुणस्थामाधः साथ हुए, तथा स्वय स्थापः व्यापारः वस्य स्ट रिके ज्ञयमम् कालके सविरोधितः गुणस्थामास्तरके माल हुव जावके स्वयम् स्थापारः वस्य स्ट प्याचारक असंपनसम्बर्गाति मनुष्योका यसावस्या उत्हृष्ट काठ नीन पृष्यो , धीन परवीषम सातिरेक, और देशीन तीन परचीपम है ॥ ८१ ॥

मा परमापन पामाप्तम् जार पर्शाम तान पर्यापम ह ॥ ८६ ॥ यहाँ यह तानिहेंह राम्ह दोनों ही विक्रोयमाँ यह संबद्ध हरना बाहिय, कर्नेह पदा पर प्यातरूर राज्य दे । विश्व स्वयं पर स्वयं करणा चाहर, प्रदेश प्रदेश वह साथ प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश हैं सिनिक बर्गास प्रकारको माना हुए होता प्रदेशिक हिरोवज्ञक्योरे यह साथ जुल हुआ है व्य भ्याप्त भार भ्याप्तवयाचाचाम ता स्थापक मान प्रधापम कहर कार हर अस् सम्पर्धित मनुष्यतियोम, देशम तीन प्रयोदम कहर बाह है। वर्णाव, किस कर स्थ

चैका - नीन पर्यापमार सातिरेक थयाँन भाषत काल के स सदव है ? समाधान--- भारवर्षको सहारेस यहानदाँको सक्ता रसनसाने स्टूर्णकारीह हित बहुत पर कार्या ह गाउँ भारतिक स्थापन भारतिक स्थापन स्थापन भारतिक स्थापन भारती है। इन स्वरंतिक स्थापन स्थापन भारतिक स्थापन भारतिक स्थापन स्थापन भारतिक स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

e and dife distable allegation a se t

सह देखणपुल्यकोडितिमार्ग गमिय विपलिदोवमाउड्डिदिदेवसरङ्ग्वेसप्पवित्रय अपनी आउड्डिदिम्णुपालिय देवेसुप्पण्यस विश्विपालिद्रोवमाणमुक्ताः देखणपुल्यकोडिविमण् वर्षमा । मणुसिणीसु देखणातिष्ण पलिदावमाणि, अष्णाद्रस्वद्वाचीसत्वतःस्मिपिमच्या दिहिस्स विपलिद्रोविमण् मणुसेसुवविज्ञवा पत्र मासे गन्ने अच्छिर्ण विश्वेतस्य उत्तर सेव्याए अंगुलिआहोरण सच दिवसे, दंगीतो सच दिवसे, अविरामणेण सच दिवसे, मामणेण सच दिवसे, कलामु सच दिवसे, प्रणास सच दिवसे, अपणे वि सच दिवसे प्रियो विस्तु देवसे विद्या सम्मनं पडिविज्ञवा अपणो आउद्विद् वीविद्ण देवसे उत्तरम्मस पर्मुणवप्णदिवसेहि अहियणवमाखणविज्ञियोवस्वर्तमा ।

संजदासंजदपहुडि जाच अजोगिनेविट ति ओधं ॥ ८२ ॥ कुरो १ श्रोपातो भरामाता । णबरि संबदासंबदाणं सन्वतन्द्रं बोणिशक्षमणः सम्मणुर-मद्दरसंदि स्था पुष्यकोडी संजमार्स्वमकालो वचच्यो, तिरिक्साणं व मणुरमार्व अतामक्षकालेण श्रणुव्ययारुणामाता ।

पूर्वकोटीका विभाग विजाकत जीत परचोपमममाण आयुक्तमेकी रियतियाँठ देवकुर और एकत्कृतमाँमें बत्यम होकत, अपनी आयुरियतिको अनुपालन करके देवाँमें अरम हुए जीवर्ड तीन परयोपमेंकि करार देवीन पूर्वकोटीका विभाग भविक पाया जाता है।

मतुष्यित्रपाँसे देशीन शीन पर्योपन उत्कृष्ट काल है। यह इस मकारसे है-मोहर्सामी कहार्रेष महत्रपाँसी सका रक्षनेयाला कोई यक मिष्यारिय मतुष्य तीन पर्योपमारी सायुग्यें में पर्या हो स्वा इसे यह से मोर्ग्यमीय मतुष्याँमें उत्तम होकर भीर नी मास गर्ममें रह कर निकलता हुमा उत्तावराण र मंगुर स्वात्य राम तो सात दिन, रोते हुप्त सात दिन, सार्याय गमनसे सात दिन, रिवा हुप्त मोर्ग्यय गमनसे सात दिन, राष्ट्रा में सात दिन, तथा अग्य मो सात दिन स्वाप्त स्वात स्वाप्त सात दिन, तथा अग्य मो सात दिन हिंदा सार्या है। स्वाप्त मान्य सीवित रह कर देवाँमें कत्य हुप्त बादिक उत्तमाल दिवा है। अग्री भागुरियति प्रमाण जीवित रह कर देवाँमें कत्यम हुप्त बादिक उत्तमाल दिवासी अभिक नव मासांसे कम तीन परयोगम बात प्राप्त आहा हो।

संपतामंपत गुणस्पानमे टेकर अपोगिकेवली तक गीनो प्रकारके मनुष्पींच

उत्हृष्ट वा जपन्य काल ओपके समान है।। ८२॥

क्यों है, भोपवर्तित बाहसे इतमें बोर्ड भेद नहीं है। विशेष बात यह है कि संबंध संवर्ते के सर्वेष्ठ पोर्ति निष्ममक्या ज्ञामने उत्तय हुए जीवके भार वर्गोते कम पूर्वहोंडें क्ष्माय संवमानंवमका बाल बहना बाहिय, क्यों है, निर्मेशोह नमान मनुष्यों के अगा हेत्रे के सक्यान सन्तर्माहुन बाहसे ही सनुष्योंके प्रदेश बरलेका समाव है।

१ देवार्ग कामानीया कामा । का कि. १, ८,

.. ~ 2 ~ 2 t, 4, <4. 1 काञ्चाममे मणुसअरञ्जतकाञ्चरहवर्ण मणुसअपञ्जता केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुङ जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८३ ॥ प्रदियबाद्दर-मुद्दम-वि-वि-चर्डारिय-साष्णि-असण्णिपाँचिदियपञ्चवापञ्चवाणं मणुस-÷ जीवेसुप्पणाणं तकालवलंभा । ÷ ज्कत्सेण परिदोवमस्स असंखेन्जदिभागो ॥ ८४ ॥ पुरत्रपण्णमणुतअपग्ननपद्ध गरेतु तक्जाले चैन अष्णणे लीवे मणुतअपग्नचेर सुष्वादिय उत्पादिय अञ्चमित्रज्ञमाने पलिहोत्तमस्य असंस्टेन्डिसागमेषअणुसंपानः वारसलागुवलंमादो । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८५ ॥ जहण्णाउद्विदिकालदंसणादो ।

पुण्युवर्वाविहिती आगेतृण मणुसम्बद्धन्तम्यु उत्तरणास्य सुरामरमाहणमेतः

डकस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८६ ॥ लन्ध्यपर्यात्वक मनुष्य किवने काल तक होते हैं ? नाना बीगोंकी अरेगा जपन्यते शुद्रमनप्रहणप्रमाण काल तक होते हैं।। ८२ ॥ ा ध्रमाण्यक्षम्याम् भाष्यं पर्यात् वाच्याः व्यक्तिक्षः, वाद्याः व्यक्तिक्षः, वाद्याः सीर सहस्र, तया सीम्प्रियः, वीदियः, व्यक्तिस्यः, व्यक्तिः

प्रभावन प्रशास्त्र भारत बाद प्रशास्त्र व्यास्त्र मान्यम् अवस्त्र व्यास्त्र मार पान प्रवास प्रवास कार मण्यास्त्रकार मण्या मञ्जूष्याच्या मण्यास्त्रकार प्रवास विद्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार प्रवास कार्यास्त्रकार मण्यास्त्रकार प्रवास कार्यास्त्रकार कार्यास कार्या प्याप्तक मध्यमा बत्यस दाकर धन् मधान् धन्मकामा व्याप्तरमात्रका स्थापन द्रायस द्रायस होते स्थापन द्रायस विकास व स्वरचवयांत्रकः मनुष्यांका उत्कृष्ट काल पत्यांचमका अमेरचावर्व माय व ।। क्योंकि, पूर्वोत्पच सम्वच्योंकक मञ्जूष्योंमें बार जाने पर इसी बास्टमें हैं। बाद सन्व प्रभावन कार्याम् अनुस्ताम कार्याः मञ्जूषाम कार्यः भावन्याम अन्यः भावन्याम अन्यः भावन्याम अन्यः भावन्याम अन्यः भावन्याम अन्यः भावन्याम अन्यः पर कार्याचमक त्वर मानाव च्याप्ता एक अंबर्का अवसा वयन्य कान क्षेत्र सरहहरणहरूमान

े ।। वरोतिः पूर्वोतः वर्षाः स्वादः स्रोदोतं भावतं अध्ययमञ्जूषः स्वत्यासं स्वयः होतः उक्त सर्भवयात्त्वर मनुष्यांका उन्हर कान बन्तस्त है ॥ ८६॥

पुन्युत्तजीवेहितो आगंत्ण मणुसअपज्जत्तएसु उप्पण्णस्य अंतोमुहुत्तादो उत्रीप कालवियप्पाणमुक्कस्साउद्विदिअवज्जत्तसः वि अणुवलमा ।

देवगदीए देवेसु मिन्छादिही केवंचिरं कालादो हीति, णाण जीवं पहुच्च सव्बद्धां ॥ ८७ ॥

देवभिच्छादिष्ठिविरहिदकालामावा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८८ ॥

असंजदसम्मादिष्टिस्स सम्मामिच्छादिष्टिस्स वा संकिलेतेण मिच्छत्तं गंत्ग सव .जहण्णकालमान्छय पुन्युचदोगुणहाणाणमण्णदरं गदस्स अतोमुहुत्तमेत्तकःलुवलंमा ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि ।। ८९ ॥

मणुसमिच्छादिद्विस्स दव्यसँजमबलेग एककत्तीससागरोवमाउद्विदिदेवेसुप्पन्तिः मिन्छत्तेण सह अप्पणा आउद्विदिमणुपालिय मणुसेसुववण्णस्स एककत्तीससागरीवममेष देवमिच्छादिद्विकालदंसणादो ।

पर्योकि, पूर्वोक्त जीवीसे आकर संख्यपर्यान्तक मनुष्योमें उत्पन्न हुए जीवके अत र्भुद्रतं काळ पाया जाता है। तथा अन्तर्भुद्धतं से उपारम कालके विकल्प उत्रुष्ट आयुह्मित पाले लम्पपर्याप्तक जीवके भी नहीं पाये जाते।

देवगतिमें, देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवेंकि

अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ८७॥

फ्पॉकि, देवीमें मिथ्यादृष्टियों से रहित फोई काल नहीं पाया जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा मिध्यादृष्टि देवोंका जयन्य काल अन्तर्भृहुर्त है ॥ ८८ ॥ ं शसंयतसम्य रहिके, अथया सम्यामिष्याहिष्ट देवके, संक्षेत्रासे मिध्यात्यको प्राप होकर, यहां पर सर्व अयन्य काल रह कर पूर्वोत्त दो गुणस्थानों में से किसी पक्षको प्राप्त इ ऑवके अन्तर्महर्त काल पाया जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा मिध्यादृष्टि देवोंका उत्कृष्ट काल इकतीस सागरोपम है। ICS मिच्याद्यक्षे मनुष्यके द्रव्यसंयमके बळसे इकतीस सागरीयमकी भाषुरिधितवान देवाम उत्पन्न होकर मिध्यात्यके साथ अपनी आयुश्यितिको अनुपालन करके मनुष्यीन जन्मम होनेपाल जीवक रक्षतीस सागरीपमधमाण वेथाँके मिध्याहरि गुणस्थानका कार्य देखा जाना है।

र देवदर्श देवेष विश्वादयेनीवाजीशायेखया सर्वेश काला । स. मि. १, ८.

१ एडबीर्व प्रति वयन्त्रेशन्तर्भृतीः । स. वि. १, ८,

१ इन्देर्वेदिश नागरीवमानि । छः कि. १, ४,

ting 88.7 काराणुगमे देवकारुपरूवर्ग 1 सासंणसम्मादिही सम्मामिच्छादिही ओषं'॥ ९० ॥ <sup>षण्यप्रभारत जारामा</sup> प्राप्ताः असंजदसम्मादिङ्गी केविचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुस्क सब्बद्धां ॥ ९१॥ देवेसु असंबदसम्मादिष्टिविसहिदकालामावा **।** दश्य नवनस्यानाराज्यसम्बद्धाः ॥ १२॥ एगजीवं पडुच जहरूपेण अंतीमुहुत्ं ॥ १२॥ Ė ाभण्यादाहरत सन्मामण्यादाहरत या विसादिकाण सन्मण्याद्वात्रय सन् अहण्यासम्बद्धमन्द्रिय मिच्छव-सम्मामिच्छवाणमण्याद्दं गदस्य अंबोसुद्धवकालद्दसणाद्दा उनकस्मानिहिद्दिनेसुप्पव्यवनदस्य श्रेनमाणानमस्य पादाभावादौ अपयो उद्यस्म-७४कस्वाजहारदवशुण्यन्यवावदस्य ङक्माणाज्यस्य पादायावादा अपया जिल्ला हिर्दि जीविय मणुनेसु उद्युष्णदेवअसंबद्सम्मादिहिस्य तेषोसं सामसेवममेषकालुबस्दीतृ । सासादनसम्परदाष्टि और सम्पन्मिध्यादिष्टि देवीका काल ओपके समान है ॥९०॥ विविद्यासम्बद्धाः जार प्रान्यामन्याद्यः प्रमास्य क्षाण जापना प्रमान हा। १ मा वर्षोद्धे, सर्वे महारति, सर्वात् एक सीर माना जीवीकी अवेद्धा, ज्ञास्य सार अकृत कालले बोपमकाणांके साथ कोई भेद नहीं है। माधारकावाक स्वाय मार भार भार गया व । असंपनसम्पाद्यप्टि देव दिवने काल तक होते हैं [ नाना जीवोंकी अपेशा सर्वहात प्रभा । क्योंकि, देवॉम धसंयतसम्पारिट कोवॉस रदित कालका समाप है। ९४० जारका जाका जाकाजाना काट राम्या जान्य काट जान्य है। व गाँ स्वर्धांक, विद्यादिक, बदावे सावभावादिक देवके विद्यादिक वर्धाते सावभावादिक विधाक, भारत्यादार, भारत्य सम्बद्धक कालमान दि करके, प्रमान सिर्धाण्य स्थाप सम्बद्धक कालमान दि करके, प्रमान सिर्धाण्य सम्बद्धक कालमान दि करके, प्रमान सिर्धाण्य सम्बद्धक कालमान स्थाप प्त हाकर, पहा सन्न जपन्य स्तन्वभृत्यक कालप्रमाण १६ क.८का, प्रधान मध्यात्व व्यवस्थानिक मात्रा होनेवाले जीवके सत्तर्गान्य व्यवस्थानिक मात्रा होनेवाले जीवके सत्तर्गान्य क्षयस्थ . एक जीवदी अंदेशा असंपतमस्पार्टाष्ट्र देशोंका उत्कृष्ट काल वेनीस मागरोपस प्रत्य मायुकी स्थितिपारक देवामें उत्तम दूव संयनके मुज्यान म युके पानका करण्ड भावुमा क्यालभारक द्वास उत्पन्न द्वा स्थानक प्रत्यसम्ब से पुर सानका होतेले स्वयती स्वरूप स्थितिसमास्य अधिक रह कर, सनुस्त्रीम क्रमण होतेस्व र कामायम्बन्दार्गे सन्द्रियावार्ग्ये वायाचीनः दःव । सं वि १, ८ अत्यत्तमः वर्षः मृत्यां नामानाम् वर्षाः स्थानः वर्षः ।
 अत्यत्तमः वर्षः मृत्यां नामानाम् । र प्रजीव पति जय-वेजानार्वहर्तः । स कि १, ८ वत्वचेन व्यक्तिक-साग्रावयानि । त. हि. १, ८.

भवणवासियणहुिं जाव सदार-सहस्सारकणवासियदेवेसु मिन्छ। दिट्टी असंजदसम्मादिट्टी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुन्न सन्बद्धा ॥ ९८ ॥

तिण्हं पि कालाणं देवमिन्छादि्द्वि-असंजदसम्मादिद्विविरहिदाणमभावा।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतीमुहुत्तं ॥ ९५ ॥
प्रस्त अत्यो जघा देशेषिट एदेसि दोण्दं गुणहाणाणं जहण्णकालपह्वण इणः
तहा मवणवासिवपपहुहि जाव सदार-सहस्सारकप्पे। चि मिच्छादिष्टि-असंजदसम्मादिक्षेणं
जहण्णकालपक्वणा कादच्या ।

उकस्सेण सागरोवमं पलिदोवमं सादिरेयं वे सत्त दस <sup>चोहस</sup> सोलस अट्रारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ९६ ॥

एदस्पुदाहरणं- एक्को विश्वित्ते मणुरसो वा मिन्छादिद्वी भवणवात्रियदेवैठ उववष्णो । पलिदोवमस्त असंखेजबादिभागन्महियं सागरोवमं जीविद्य मिन्छवेणेग उर

मयनवासी देवोंसे लेकर शतार सहसार कल्पवासी देवों तक निध्यादि और असंपतसम्परिट देव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ९४ ॥

क्योंकि, निक्यादृष्टि और असंयतसम्यन्दृष्टि देवांसे विराहित तीनों ही कार्ती अनाय है।

एक जीवकी अवेक्षा उक्तः मिध्यादृष्टि और असंवत्तसम्बन्दृष्टि देवीका अवन्तः काल अनुसंस्कृति है ॥ ९५ ॥

इस ग्वका मधे, जैसा देवोंके भोषमें इन दोनों गुणस्थानोंका अधन्य कालम्बानी करों दे उसी प्रकारसे सवनयासीको माहि लेकर दोनार सहस्रातकत्य तकके निष्वा<sup>ही</sup> और मस्यनमन्दर्शाष्ट्र देवोंको मी जयन्य कालको प्रदर्गणा करना पाडिय !

उक्त निष्यादृष्टि त्रीर अर्मपनमध्यदृष्टि देवीका उत्कृष्ट काल साधिक सागरिषक्त मारिक पर्योदम्, माधिक पर्योदम्, माधिक दे। मारितपम्, साधिक सात सागरीपम्, साधिक दर्वे सागरीपम्, माधिक व्यवस्थानम्, माधिक क्ष्यार्थे सालक्ष्य और साधिक क्ष्यार्थे सालक्ष्य और साधिक क्ष्यार्थे सावरोदम् है। ९६ ॥

दमका बराहरण— यक निर्वेष भवदा अनुष्य मिण्याविष्ठ जीव सवनवाती देवी इन्सब हुना। वहां पर परयोगमके भवंकरातवें आगक्षे भविक एक सागरोपम तक जीवित हो है

Ħ t, 4, 9q. ] हिदो । एसो मिच्छादिहिणो बद्धआउत्रपादं पहुच्च काठो बुचो । अपना, अतामुहुन्त 1330 जबतामार्यक्ष वर्षा । यसे अवगवासियमिन्छादिहि-उकस्सकाले । एका विस जाउजधाद ५६-च उचा । ५वा जनगनावनाम् १८०० म्हण्याच्याः । १००० विद्यं तमान्यसम् । १००० विद्यं विद्यं तमान्यसम् । १००० विद्यं सावस्त्रम् । विवक्षणो । छद्दि पञ्जवीहि पञ्जवयदी (१) विसंवो (१) विग्रहो (३) सम्पर्ध ... पडिन्ना। अंतमुद्रम्नसाम्योगम्देण अद्भि साम्योगम् नीहि अंतमुद्रम्नि उत्पर भारपण्याः । जवायुद्धर्यवामसम्बन्धः जारुषः वामसम्बन् वासः जवायुद्धः वास्यः सम्मचेषाः सह जीविद्वा उन्बहित मणुनो जादे। एमा मनवनामिषस्त्रसंबद्धसमाहिदिसम उनक्रसकाला । बाणवेतर-बोदितियाणं वि एवं चेव वत्तव्यं । णश्रीर अतीमुहूण्वानिहीः بي जनस्त्रकाला । बाधवार-जाहात्तवाण ।व एव चव वचच्य । णवार अवासुर्द्रस्पवानदा-यमद्वेण अहिंचे चिन्द्रीवमं मिन्द्रगुवकस्तकालो होदि । एसो चेव कालो वीहि अंतो सद्देशह फणओ अर्तजद्रसम्मादिहिस्स उनकरमकालो हेरिर् । माथम्मीमाणे मिस्छा-

वश्च पर कारणा ज्यानस्थान । विद्यानस्य व्याप्तिकारियाणि । विद्यानस्य व्याप्तिकारियाणि व्याप्तिस्थाणि । पति मिन्छादिहिनो बद्धाउत्रस्य पादं पद्च काला वृत्ता । सम्मादिहिनो बद्धाउत्रस्य पान्नावनाण । पहुरुच अठीखुहुत्त्वबद्धामरोवमेव अन्मदियाचि वे सामरोवमानि मिन्छगुक्हामहाने। निस्वात्वक साथ ही प्रवृत्ति क्युत हुमा। यह निस्वाद्दि जीवका कद मासुक्तपातकी मेरेसा ानध्यापक लाथ हा प्रयायल ब्युन हमा।यह विष्याहाए ज्ञायका बच्च बातुष्कणावका बरसा काल कहा। सथया अन्तर्गहतं कम आधे लागरीयमले अधिक एक सामरीयम नक अधिक कार करो। अथवा कार्यक्षेत्र कम भाव सान्धायमस् न्यवर एक साम्धायन कमायन इ.इ. इ.र पर्यायसे त्युत हुमा। यह सरवारिक भीवरा बहायुक्तस्त्रम्थां भेरीमा कार कमायन ९६ मा प्रवास च्युत ६ मा। पद सामग्राह मापका प्रदाय व्यानका माध्या प्रवास प्रवास विश्वास प्रवास विश्वास महार बहु भवनपास। ।मरपादाष्ट्र द्वाका अक्टर काळ हु। ।वराधना का द सवसका ।काव देखा को सेवत मञ्जूष प्रमानिक देवाम माञ्जूको कांच काल उसे उद्योगनापानने पान करहे प्ता का अथत मञ्जूष ध्वानक द्वाम भावका बाध रूक्ष उस उद्दर्भाणांत धार रूस्स व्यवसारी देवीम उत्तव द्वारा भीर सर्वे वर्षालियोत वर्षाल होता ईमा (1) विभाग प्रमाणासी ह्या। उत्पाद ह्या। यार छडा प्रयानकात प्रयान हाम ह्या (१). (प्रधान हे (२). (रि.स.) होत्र हेक्ट (३), सामकावको मान्त हुया। दुनः भागतहान ह्या थापे सामग्रे सामग्रे क्षिण्ड तथा सीन भागतहानीस कम एक सामग्रेपण काल सामक्यक साथ सामग्रे पेंचे मापक तथा तान सम्ताग्रतास कम यक सामरायव काल कामक्चक साए ज्ञाक्त कर पर्यापते च्युत हो मञ्जूष हुमा। यह मयनगासी सस्वत्तसम्पर्राच्छा उत्तर होए ज्ञाक्त प्रयातर और स्पेतिष्क हेपाँका भी हसी प्रकारसे काल कहना व्यक्ति। विशेषका यह प्यतिक भार व्यातिक देशका भा इसा प्रकारस काल कहना ब्याह्य । विशेषका यह एक भारतीहर्वते कम भार प्रयोगमत भिष्टि एक प्रयोगम स्थान भार प्रशासना यह (प्रदानिका अहर कार होता है यह उत्तुत कार है। तीन धारामुंहतील कम करन ( usequaps) जन्म इति होता है । यह उच्छुण काल का गान कार्यप्रक्षणान कम करन त्रीयतसम्प्रदारि स्थलतः भीर उपोतिकः है योकः उत्तरह काल हो जाता है। सीसमें भीर प्रथमसम्बद्धाः स्थलकः भार ज्यानकः द्यावः । १९४ वातः दः व्यावः । स्थापः स्थल स्वयम् निरुपारति देवसः बाहः कातः प्रत्येषम् स्थलकः स्थलकः स्थलकः स्थलकः मार्थ । यह विस्पादिक बडायुर मानका अवसा कार कहा। सारवाहि अवस त्व है। यह त्वर्थाहार चे चार्युक पातका कारता कार चर्चा अवस्थाह शब्द युक्त पातकी व्यवसा वालबुर्दर्श कम वार्ष्य सामग्रेयस्थ वर्ष्यक अवस्थाह शब्द सामग्रेयस वसाहरत पास सबसे विसाहते बदयहें। वाच हतात पार पारावस ई वाच वह १० ४ . ११।

होरि । व सच दमं चोहम सोलसहारस य बीस वाबीसां । एदीए गाहाए सर् स्त्रम स्वयम किना विरोहों होदि ? ण होदि विरोहों, भिग्गविसयवादों । व जहा- वृष्टं पूर्व विवाद होते हैं । सामक्ष्यार माहिरे सब कारोर वमाणि माहिरेयाणि । स्वर-वर्ष्ट्रचारक दस सामोर्ग्यमाणि साहिरेयाणि । त्वा कारोर कार्य चोहम सामोर्ग्यमाणि साहिरेयाणि । त्वा कारोर कार्य चोहम सामोर्ग्यमाणि साहिरेयाणि । त्वा कारोर्ग्यमाणि कारीर पानि । महर-महम्सारकप्येस अद्वारस सामोर्ग्यमाणि साहिरेयाणि । जया देवि पपति सामाणि माहिरेयाणि । त्वा देवि पपति सामाणि माहिरेयाणि । त्वा देवि पपति सामाणि माहिरेयाणि । त्वा देवि पपति सामाणि माहिरेयाणि साहिरेयाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि साहिरेयाणि सामाणि सामाणि साहिरेयाणि स

पड़ा — सीपर्व देशानकरात लगाकर भारण मध्युन करा तक कमा। 'री करा, बा, बाहर, सेगाद, मशरह, थीन भीर वाईस सामरीपमणी हियति होती है 'रि राजादे साथ, इस कर सदका विशेष वर्षे सही होता है

अंते इट्ट्यमब्द्रमानरोत्रमेय साहिरेयाणि होति. बदस्य हेड्डो सम्माहिद्विस्तरराहामार।

गमातान -- विशेष नहीं होगा, क्योंकि, सूत्र और माथा, इन दोनेंका विषय कि दिन है। वर इस महारोग दें कि उक्त माथासूत्र ने। बंधारी भौती है, किन्तु सनवर्ष रिक्रमण सन्तरी सरेमा स्थित है।

भारत्वार बार्रान्य करामें कुछ अधिक सात सात्राराम, प्रश्नान्त्रीक कर्यां कर सा नात्राराम, प्रश्नान्त्रीक करावें साधिक बीवृद्ध सामरीयम, गुरु बराइन करावें साधिक बीवृद्ध सामरीयम, गुरु बराइन करावें साधिक बीवृद्ध सामरीयम, गुरु बराइन करावें साधिक बरावें कराइन सामरीय करावें सामरीय करावें

t E'er en' se ev afiet

मान प्रदान को व गाँदि पान अन्तर्वित आग्नाने वृद्यांच्यांचे को इत्यांचे को व अन्यांचे को व अन्यांचे को व अन्यांचे अन्यांचे अन्यांचे को अन्यांचे अन्यंचे अन्यांचे अन्यांचे

A 42 . WE wer care a all arm fegurt jeleben annaue guft' ffe fin ift.

क काम कडान क भारत्व हरत कराम ११ । तर्राहर हराह वह को वाम कृतिकार में हा १८३

و م، وو. ) <sup>बाटामुम्</sup>ये देवसङ्क्तमं सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिही ओषं ॥ ९७ ॥ एदरम ग्रुवस्त अत्यो ग्रुवमी, बहुसी पहानिद्वादी । ञाणद जाव णवगेवञ्जविमाणवासियदेवेसु मिन्छादिट्टी असंजद सम्मादिही केनिवरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सन्बद्धा ॥९८॥ इते । एदेश मिच्छादिहि-असंबद्धस्मादिहिनिसहिदकालामाना । एगजीवं पडुच जहल्लोण अंतीमुहुत्तं ॥ ९९ ॥ विद्येवार्य - यहां पर जो बद्ध मातुषातको भवेशा सम्यव्हारि भीर मिच्याक्षरि देशोंक्ष दी प्रवारक बालकी महत्त्वमा को है, उत्तका मंत्रिमाय यह है कि किसी महत्त्वमने अवसी दा करारक कालका कालपा का है, जनका भाववाद यह है कि किसा अञ्चयन भवना देवम-भवस्थाम देवायुका क्य किया। योग्ने उसने संदेश परिमाणीं निम्छले संदमकी

**...** 

---. . ۳,

\_

सदमनापरचाम वृथापुराच्या (कपाः पाठ वित्त पाठस्था पाठमाधाक व्यासवस्य स्वयम् । विराधना कर ही और रसीजित सवस्तेनामातके हारा सामुका धाता भी कर हिया। विषयती दिरायता कर देने पर भी यदि यह सम्प्रदृष्टि है, तो मर कर जिस करपमें अपन स्वयात विरायणा कर ६७ ५८ मा चार् एक पान्यकार है, वा मर कर जान करणा वारक्ष देवा, वर्दानी सामारवातः निधित सामुले सम्ताहितं हम अर्थ सागरीप्रममाण स्विक होगा, यहारा साधारणताः ।नाशतः बायुसः वस्तगुहतः स्ताः साधारप्रभागाणः व्यापकः अध्यकः पारकः होगाः करणतः कोतिष् — किसी मनुष्यते संयतः स्वयस्थामे अस्युक्करपतेः न्त्र कारत सामरतमान् सामुका कंप किया। वीधे संवसकी विरायना और वांधी हुई आयुकी अपवर्तना कर असंवतसम्बन्धि हो गया। वीछे मस्य कर विहे सहस्रास्क्रस्य भारता हुआ, तो पहाँको साधारण भारत को अहार सामको है। उससे माना प्रकार का आध्या सामको देवही हातु मत्तर्गुहर्ग कम सामा सागर मधिक होगी। यदि यही पुरुष संवमकी सिरा-पनाके साप ही समयकत्वकी भी विराधना कर मिष्णादृष्टि हो जाता है भीर पछि मरण कर जनाक कार से सारकारका मा स्वतंत्रमा कर भाग्याचार से जाता व जार पाठ मरण कर इसी सहस्राहरूपमें उत्पन्न होता है, तो उसकी आंतु यहाँ की मिश्चित अवस्रह सामहक्षी व्या त्वचारकपन वाक दाता है, वा व्यक्त वार्त पदा जा त्याब्व वावार्क सामुद्री पत्ती व्यक्ति सर्वाद्री सामक्षेत्र सामुद्री पत्तीपस्ट सर्वद्यात्रमें सामक्षेत्र सिंपा होती। देते त्रीवही पातातुष्क सिंपाहिट , मबनवामीसे लेकर सहस्रायकल्य तकके साम्रादनसम्पन्हिए और सम्पन्मिण्या-ष्टि देवोंका काल ओपके समान है।। ९७॥ आनव-माणवकत्वमें लेकर नव प्रवेषक विमानवासी देवामें मिध्यादृष्टि और पवसम्बाह्य देव किनने काल तर होते हूं । नाना जीवोक्ती अपेक्षा सर्वकाल होते

चर्योक, इन कल्यामें मिच्यादाष्ट्र और असंयतसम्यादिष्ट और्योसे राहित कालका व है। १६। एक जीवकी अपेक्षा उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती देवोंका जपन्य काल अन्तर्भहती



ब्रदो ? गुणंतरं संकंतीए अभावादो । एत्थ सादिरेयपमाणमेगो समओ, हेद्रिल्द-षक्रसाहिदी समयाहिया उविरन्ताणं जहण्णहिदी होदि ति आइरियपांपरागदुवदेसादो । उक्स्सेण वत्तीस, तेतीस सागरीवमाणि ॥ १०४ ॥

णवसु हेट्टिमेसु अणुदिसविमागेसु घत्तीसे सागरीवमाणि । चदुसु अणुत्तरविमाणेसु तेत्तीसं सागरीवमाणि संपुण्याणि, सुनै हि ऊलाहियवयणामावा ।

सन्त्रद्रसिद्धिविमाणवासियदेवेष्ट् असंजदसम्मादिट्टी कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सब्बद्धा ॥ १०५ ॥

तिस वि कालेस तत्थ असंजदसम्मादिद्विविरहाभाषा ।

एगजीवं पडुच जहण्युनकस्सेण तेत्तीसं सागरीवमाणि ॥१०६॥ पुध मुत्तारंभादी चेव णब्बदे सब्बद्दतिद्धिम्द जहण्युक्कस्तिद्विदी सरिसा ति । प्रणो जहण्युवस्सगहणं किमहं कीरदे ? ण तस्स मदयुद्धिजणार्श्वगहद्वतादो ।

एवं मदिसग्गणा समत्ता ।

क्योंकि, इन विमानोंमें अन्य गुणस्थानके संक्रमणका अभाव है। यहां पर सातिरेक (साधिक) का प्रमाण एक समय है, क्योंकि, एक समय अधिक मीचेके विमानकी उत्सार स्थिति ही ऊपरके विमानकी जधन्य स्थिति होती है, वेसा भावार्य-परम्परागत उपनेशासे ज्ञाना ज्ञाता है।

उक्त विमानोंमें उरक्रप्ट काल यथाकनसे बचीस सागरीपम और तेतीस

सागरोपम है ॥ १०४ ॥

अधस्तन नी अनुदिश विमानोंमें पूरे बचीस सामरोपमप्रमाण उरक्रय काल है। चारी अनुसरियानों पूरे तेसीस सागरीयमयमाण उत्हर काल है, क्योंकि, सूत्रमें द्वीन और अधिकताके मतियादक ययनका सभाव है।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंमें असंयतसम्यग्द्दि देव कितने काल तक होते

हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १०५ ॥

क्योंकि, तीनों ही कालोंमें वहां, अर्थात सर्वार्थिसिक्रिये, असंवतसम्बादवि देवींके विरहका समाय है।

सर्वार्थिसिद्धिमें एक जीवकी अपेक्षा जपन्य तथा उत्कृष्ट काल तेतीस साग्रीपम है।। १०६॥ द्रोका - पथक खबेक शारमासे ही जाना जाता है कि सर्वार्थसिकिमें जबन्य भीर

बलाय स्थिति सहका है। फिर भी सुत्रमें जयन्य और उत्हाद पन का प्रहण किस लिए किया ! समाधान -- नहीं, पर्योकि, उस प्रका महण मन्दर्दि अनोंके अनुप्रहके लिए किया गया है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

१ अ-कप्रलोः ' संबन्धिजहण्यात्र- ' हति पाठः ।

इंदियास्वादेण एइंदिया केवचिरं कालादो होंति, णाणातीरं ९इन्च सन्वद्धां ॥ १०७ ॥

टियु वि कालेयु एईदियानं विरहामानादो ।

एगजीनं पद्रन्य जहणीण सुद्दाभवग्गहणं ॥ १०८ ॥

प्राचान पश्चन पहिण्याणि सुद्दान्तगाहणा ॥ १०० ॥ अर्वेरियम प्रेरियमणितय सन्तबहणामेर्ग्रियद्वमन्तिय अर्वेर्ग्रिय उपनान सुरानम्माननेन प्रेरियमज्जानंभा ।

उत्तर स्थापन र स्वरूपन । । उत्तर सीम अर्णतकालमसंसी अपोगगलपरियष्ट्रं ॥ १०९ ॥ कोशीयो कोशिरकपतिवर अदिवद्धं कार्य अर्काद के आपनिवर्ण कर्षक र सम्बन्धा पेर पोग्यनपरिवर्शित अर्काद । कृते हैं क्रांसारी उत्तर कर्णक र प्रकार

्र १८६६ प्रभाग । इ.स.च्यापीयाके अनुसार्थ एकेन्द्रिय और कितने काल तक देले हैं जिली

की है, काल बहुर हैं। ई ।। १०७ ॥

कर हर, की वर्ष की का वीर्त महिल्य अपिति विरद्धका सताय है।

कह अंतरी अरेशा एकेन्द्रिय जीगाँका जयन्य काल शुद्रमध्यप्रवास

कार १९६ ।। करोक वंदोजनाये श्वित अस्त डीस्ट्याहिक जीतना तकेस्ट्रियोंने अलग्न देखाँ करोक्षणक कर स्टब्स जानदी अस्त्ये कालग्रमाण नदकरके, तुन वकेस्त्रियोंने निक्र सर्व केस्टिंग गामें के दाल्याद नशास्त्र जीतके स्ट्रानग्रादलग्रमाण वदेस्त्रिय जीतना वस्त

च्च रीवरी बीर्सा सहोत्रवः जीतीहा प्रश्तुतः चाल अनलकासम्बद्धः करकार करवररेकोवाहिता २०२ ॥

कर १८८ मार्च कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिकार क्षेत्रक क्षेत्रक कार्य कार्य कार्य इंदर्स है क्षेत्र कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के क्षेत्रक कार्य के क्षेत्रक कार्य का

TREATHER WELL A REPLY BY A SERVER SERVER AS A CONTRACT OF THE ASSET OF

चादरएइंदिया केनिवरं कालादो होंति, णाणाजीनं पहुन्न सन्तद्भा ॥ ११० ॥

षादरेहंदिपविरहिदकालाभावादो । किमहं वेसि णस्पि विरहो १ सहाबदो । एगजीवं पद्धच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १११ ॥

अभेईदियस्य सुरुमेईदियस्य या वादोईदिएस्य सन्यज्ञहणाउवरसुप्पविजय आर्जन्दियः मुद्दाभवग्यहण्यमेणवादोईदियमञ्जिदेशे उवलंबा ।

जनकस्सेण अगुलस्स असंस्वेज्जिदिभागो असंस्वेज्जासंखेज्जाओं ओसिपणि-उस्सिपिणीओ ॥ ११२ ॥ अगुलस्स असंबेज्जिदिमागो अगेपश्यिपणे वि कहु परागिलगेदिहेहिमविष-प्याणं पिडेसेंह कार्य उगिमिविषणगहण्हं असंबेज्जासंबेज्जाले वि लिहेसों करो । परा-पस्लाहेउबिसिविषणगिडसेहंहें ओसिपिलि-उस्सिपिलिशिहेसो करो । अणेदिओ सहसे-

पादर एकेन्द्रिय बीब किठने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ११० ॥

इंदिओ वा बादरेहंदिएंस उपन्जिय तत्थ जिद सह महल्लं कालमच्छिद तो असंखेजजा-

क्योंकि, बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे रहित कालका अभाव है।

श्चेका-जनका विरह पर्यो नहीं होता है !

समाधान-पर्योकि, देला श्वमाय है।

एक जीवकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय बीवोंका जपन्य काल क्षुद्रभवप्रहणप्रमाण है॥ १११॥

क्योंकि, किसी भन्य द्वीरिह्यादि जीवका, भध्या स्ट्रम प्रेन्ट्रिय जीवका सर्व जयन्य भाषुवाले बादर प्रेनेट्रियॉमें उत्पन्न होकर पुनः भन्य द्वीरिद्रयादिमें उत्पन्न दुप जीवके शुद्रमयमद्वनमाण बादर प्रेनेट्रिय जीवींकी भवस्थित पार जाती है।

एक बीवकी अपेक्षा पादर एकेन्द्रिय बीवोंका उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें साग्रवमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्षिणी और उत्सर्षिणी प्रमाण है ॥ ११२ ॥

श्रीतुक्ता अर्थव्याताच्या आग भनेक विकल्पका है, स्वित्तिय प्रत्यावती आदि श्रीतृत्वता अर्थव्यात्वां आग भनेक विकल्पका है, स्वतित्व प्रत्यावती आदि श्रीतृत्वता विकल्पेंका प्रतिवेध करके उपार्टिम विकल्पेंक प्रदास करनेके दिन्य सुक्षे 'श्रीके ब्याताव्यंव्यात' पेता निर्देश किया। प्रतर, प्रवर भादि उपरिस 'विकल्पेंक प्रतिवेध के प्रतिवेध क्रियों के स्वतिक तित्व श्रवतिर्विण क्षेत्र क्यात्वेश क्षेत्र क्षात्व क्षात्र निर्देश किया है। अग्य क्षेत्रित्यादि स्वयंवा सुक्षम क्षेत्रित्य क्षेत्र क्षात्व वादर प्रकेतिद्वपान उत्तव द्वाकर, प्रदोगर यदि श्रीत दीर्थकाठ

६ प्रतिषु 'पदरायिक्याओं ' राउ पाठः ।

संखेजजाओ ओसप्पिण-उस्सप्पिणीओ अच्छदि । पुणा णिच्छएण अष्णत्य गच्छिर विश्वं द्वंचं होदि । कम्मद्विदिमायलियाए असंखेजजदिमागेण गुणिदे बादरद्विरी जादा विणीः सम्मवयणेण सह एदं सुर्च विरुज्यदि चिणेदस्स ओक्खनं, सुनाणुसारि परियम्मवर्णे ण होटि चितस्सेव ओक्खनप्पतंगा ।

मादरेहंदियपञ्जता केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुन सञ्बद्धा ॥ ११३ ॥

इदो १ बारदेदंदियपज्जनाणं तिसु वि कालेसु विरहामाता । एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ ११४ ॥

सुदामवगाहणं संवेज्जावलियमेचं, एगं सुदुनं छातद्विवहस्स-वितद्रस्य पेत्रहः मेचसंडाणि कादण एगसंडमेचचादो । एदं वि कर्ष मन्त्रहे ?

तिष्मि समा छत्तीसा छात्रहि सहस्स चेत्र मरणाई । अंतोमहत्तकाले तात्रदिया होति खहमता ॥ ३५॥

तक रहता है, तो अर्थप्यातासंख्यात अयसर्थिणी और उटसर्थिणी तक रहता है। पुनः निमर्पः भन्यत्र चटा जाता है, पेसा अर्थ कहा गया समझता चाहिए ।

द्यंका — 'कर्मस्थितिको आवलीके असंख्यातयें मागसे गुणा करने पर बहर स्थि होती है ' इस मकारके परिकर्म-यचनके साथ यह सूत्र विरोधको ग्रास होता है ?

समाधान—परिवर्मके साथ थिरोप होने हस स्थान प्राप्त हाता है।

समाधान—परिवर्मके साथ थिरोप होने हस स्थान अवस्थितता (विद्वर्ग)
वहीं मात्र होती है। किन्तु परिवर्मका उक्त पथन स्थान अनुसरण करनेपाला वहीं है।
इस्तिटण इसके ही अवस्थितताका प्रसीव आता है।

पादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं? नाना जीवोंकी अर्पन

सर्वकाल होते हैं ॥ ११३॥

क्योंकि, बादर एकेन्द्रिय पर्यानकोंका तीनों की कालोंमें विरह नहीं होता है। एक जीवकी अपेशा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीनोंका जपन्य काल अन्तर्वी

है ॥ ११४ ॥

शुद्रमयप्रहणका बाल संच्यान भावलीत्रमाण होना है, व्यांकि, यह गुहुनेहे छ्याती इकार तीन सी छत्तीन रूपत्रमाण लंड करने पर यह लंडप्रमाण शुद्रमयका काल होना है।

र्येश--- पर भी केले जाना है समाधान--- पर मन्तर्युटने कालमें छवालड हजार तीन सी छतील मास हैं

र्यात्राच । जिल्ला अर्था क्षेत्र है स्टब्स् हैं। सेर इत्ये ही श्रुद्ध सेर होते हैं स्टब्स् हैं।

६ कर्रात तिरिन वका कावदिवहरवकातवस्ताति ह संतीप्रकृतवस्त्रे वरोति तिगीदशवधिव ह सहसा-६१-

चि गाहामुत्तादो । मुदुचस्त एवदियभागो संस्रेज्जाविष्ठयमेचो चि कर्घ णध्वदे हैं आवश्यि अणागोर चिस्तिदयसोद-माण-जिहाए ।

आवित्य आगामरे चितियत्तियत्तियत्त्याण्नेवहाए । माग्ययण्यव्यापति अवावर्वहायुद्धस्ताते ॥ १६ ॥ वेकटरंतम्यण्याणे वसायपुक्रेकरः पुषते य । पडिवादुवसार्मेतव सर्वेतर् संसार य ॥ १७ ॥ माणदा कोषदा मायदा तह चेव स्तेमदा । सुरस्वसार्वणं पुण विद्योवस्यां च बोद्वव्यं ॥ १८ ॥

इस गायासूत्रके जाना जाता है कि शुद्रभवका काल अन्तर्मुहर्तेका छपासठ हजार तीन सो छन्नासर्थ मान है।

र्गुका—मुद्दतेका छणासठ हजार तीन सी छत्तीसर्यां माग संख्यात आयलीममाण होता है. यह कैसे जाना है

हाता है, यह बस आना । समाधान—सनाकार दर्शनोपयोगका जधन्य काल आगे कहे जानेवाले सभी पर्रोकी क्षेपसा सबसे कम है। (तथापि यह संख्यात आयर्लीममाण है।) इससे चर्छारिन्द्रियसम्बन्धी

सपप्रद्रहातका जयस्य काल विदेशिय अधिक है। इससे, धोन्नेश्वियज्ञतित अवप्रद्रहात, इससे प्राणेश्वियज्ञतित सपप्रद्रहात, इससे ज्ञिद्धेश्वियज्ञतित अवप्रद्रहात, इससे मनोयोग, इससे ययनयोग, इससे काययोग, इससे स्पर्शतेश्वियज्ञतित अवप्रद्रहात, इससे स्वायहात, इससे

हिराकान, इससे धुनकान और इससे उच्छूनस, इन सवका अधन्य काल क्रमंदाः उत्तरोत्तर विशेष विशेष मधिक है।। ३६॥

तद्भयस्य केयलीके केयलहान और केयलदर्शन, तथा सक्याय आयके ग्रंहलेरियं, इंत तीनोंका जयन्य काल (परस्पर सदद्या होते द्वय भी) उरङ्गासके जयस्य कालसे विशेष भिषक है। इससे पक्त्यावितकैमर्गावारग्रहुष्णान, इससे युषक्तवितकैबीचारग्रहुष्णान, इससे उपरामप्रेणीति विजेषाले स्वक्षांमारग्यासंवत, इससे उपरामप्रेणीयर खड़नेवाले सुमसाम्परायसंयत, और इससे संपक्षभणीयर चड़नेवाले सुक्तमाम्परायसंयत, इस सबका जयस्य काल सम्माः उत्तरीस विशेष सिपिक है। ३०॥

स्वक सुक्तसारशरावके जयम्य कालसे मानकवाव, स्तिसे कोयकवाव, इससे मातकवाब, स्तिसे लोगकवाब और स्ति लाजवाबी जीवके सुद्रमयमहणका जयम्य काल क्षमराः उत्तरीत्तर विदेश विशेष स्थिक है। सुद्रमयमहणके जयम्य कालसे हृष्टीकरणका जयम्य काल विशेष मिक है, येसा जानना साहिए ॥ ३८॥

१ कसायपाहुदे अद्वापश्चिमात्राधिकारे १-३.

इदि गाहासुचादो । अंतोसुहुचं पि संखेआविष्यमेचं चेत्र, तदो एदेसि होषं विसेसी णित्य चि अंतोसुहुच्त्रयणं सुचत्यं संदेहसुप्पादेदि चि बुचे णित्य किरों। सुद्दाभवगगहणपाणिय अंतोसुहुचिमिद्दं मणिद्रिजणाणादो ताणं विसेसी अधिय वित्रागमादे । याद्रपुद्दाभवगगहणादो वाद्रदेदियपज्जचहणाउत्रे संखेज्ज्युणिमिदि भित्रः वेत्रणकालियाणाजपावहुगादो य । याद्रदेदियपज्जचविद्दिश्चो सन्त्रज्ञल्णाउत्रवादे संद्रियपज्जचयदित्वो सन्त्रज्ञल्णाउत्रवादे संद्रियपज्जचयद्विद्दिशो सन्त्रज्ञल्णाउत्रवादे संद्रियपज्जचयस्य जहण्णकाले सन्तर्वि वि

उक्कस्सेण संखेञ्जाणि वाससहस्साणि ॥ ११५ ॥

पुढिविकाइरास वावीस वाससहरतािण उकस्माउन सुरपिसद्वैपरिय। बारोरियः पञ्जचमबद्धियो असंखेञ्जवासमेनां किष्ण होटि नि वन्ते ण होटि तरवासंवेज्जारः

इन गायास्त्रोंसे जाना जाता है कि श्रुट्रभयका काळ मी संख्यात आवडीयमा होता है।

र्यंता — अन्तर्महर्त भी तो संस्थात सायसीप्रमाण ही होता है, इसलिए सन्तर्भा भार शुद्रमदयहण काल, इन दोनोंमें कोई भेद नहीं है। अतृत्य यह अन्तर्भुहर्तना बबनःर रह्मार्थ सन्देहने। उत्पन्न करना है ?

समापान — इसमें कोई सन्देद नहीं है, पर्योकि, सुजमें 'शुद्रमयनहण' देवा का सरक 'मानसुंहत' देसा ययन कहनेवाली जिन-भागासे उन दोनोंमें भेद जाना अति है। तथा, ' यातशुद्रभयगढणकालसे यादर पर्येन्द्रय पर्यान्तक जीवकी जापन की संन्यानमुखी है' इस प्रकारक के से ये बेदनाकालविधानसम्बन्धी सरवदद्वयद्वारी में जाना जाना है।

बर्दर पडेटिट्रय पर्यातको स्वितिक्ति किमी जीवके सर्व ज्ञापय आयुवाले बार्र पडेटिट्रय पर्यातकोमें उत्तक होकर, पुताः अन्य पर्यापमें चले जाने पर, बर्दर पर्वेदि<sup>द्</sup> पर्यातका ज्ञापय काल पाया जाता है, ऐसा अर्थ कहा गया समझना चाहिए।

एक जीवकी अवेक्षा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका उत्कृष्ट काल संस्कृत इवार वर्ष है।। ११५॥

पृथ्वित्राज्यक जीवाँमें बाईन हजार यर्वजी उन्हण्ड भाषु सुनिसद्ध है।

रीका — बादर योबन्द्रिय पर्यान्तक जीयोंकी समस्यिति असंस्थान वर्षेत्रमान वर्षे नरीं बेर्जा है !

समाधान -- नहीं होती है, क्योंकि, उनमें सर्गत्यातवार एक जीवडी इंगान

र मन्त्र 'इष्यर्षः वश्चित्रशः। समन्त्र 'इर नेष्ठः- 'इन्ति नातः।

ने बेरिय श्रेमारायने हरि बारे है

١, ٤, ١, ١١٥. बाङाणुगमे एांदियकारणस्त्रणं [ १९१

. . मेगजीवस्य उप्पषीय असम्बा। उकस्समंबेग्जमेषं तस्य संखेग्जमागमेषं या बार ++ जादे उपवज्ञदि तो वि असंसेवज्ञानि बस्सानि होति ति वृत्ते म होति, संसेवज्ञानि वासमहस्ताणि वि मुचण्णहाणुववचीहो तत्त्वाम् १००० । ३३ - १००० । १००० । १००० । १००० । १००० । १००० । १००० । १००० । भारतावरतामा १४ छापन्यस्थानम्यादः धनात्मानताव्यव्यवस्थानम्यवस्य । जनानस्य बाहरेद्दियपञ्ज्ञचत्रमु संसञ्ज्ञाणि बाससहस्साणि उत्तरसेण तत्य परिभमिय पुणी अणः िवदेस विच्छएण उपप्रजीदे वि मणिई होदि।

वादरेहंदियअपज्जता केनचिरं कालादो हॉाति, णाणाजीवं पडुन्च सन्बद्धा ॥ ११६ ॥ इदो । एदेसि सम्बद्धास विरहाभावादो ।

.

ئے

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११७ ॥ इदें। ? अवन्त्रचएसु नहन्गियाए आउद्विदीए तीचवमेचाए' उपलंगा । उषस्तेण अंतोमुहत्तं ॥ ११८ ॥

इरो । अवाधिविदित्री बारेरेंदेदियअपअत्तवृद्ध उप्पज्जिय जीदे वि संस्रेज्ज-

मसंमव है। वृक्ता — यदि कोई जीव बाहर एकेन्द्रियोंमें उत्कर संक्यातप्रमाण यार, संपंपा उसके

रुपातव मानममाण बार उत्पन्न होता है, तो भी असंस्थात वर्ष तो हो ही जाते हैं है समाधान-मदा होते हैं, क्योंके, यह देखा न माना आय, तो बाहर क्लेन्ट्रिय प्रभाषाम — महा दाव हा, प्रथाक, बाद प्रधान माना जाय, वा बादर प्रकानम्ब योक्ता उत्तर हात (संक्यात हमार वर्षमाण है। यह स्थितक्य नहीं सन सकता है। िद ताताचाम संस्थातवार ही बादर पहेनियाँकी उत्पत्ति सित होती है।

. पाताचान करवादार के चार प्रजासनाक जन्मक क्वा का का स्रविद्यासित कोई जीव बारर एकेन्द्रिय पर्योक्तकों उत्पन्न होकर संक्यातसक्का भाषपासत कार जाथ वादर प्रकान्त्रण प्रथम्पत्रकान उत्पन्न साकर सावधावसदस्य माण अधिकते अधिक काळतक उनमें परित्रमण करके पुनः सविपरित जीवोंमें बादर एकेन्द्रिय छन्ध्यपर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी । सर्वकाल होते हैं ॥ ११६ ॥

क्योंकि, सभी कालोंमें इन जीवोंके विरदका समाव है।

एक जीवको अवेशा उक्त जीवोका जपन्य काल शुद्रमवग्रहणप्रमाण है।। ११७॥ ्या भारता नुभा । स्वाहि, हास्वप्रवान्तिक श्रीवारी जायव आयुक्ती स्थिति उननेसाव स्वाहि छहमस् उक्त जीवोका उत्कृष्ट काल अन्वमृहर्त है ॥ ११८ ॥

म्यंकि, अविवाहित रिद्रववाला कोई जीव बाहर वहेन्द्रिय लब्धवर्यान्तकों

सहस्तवारं तत्वेव तत्वेव उपप्रजिदि, तो वि तेमु सब्वेमु अंतेष्ठकृतेमु एगडु ब्ले एगम्हत्त्रपमाणामावा । सुहुमएइंदिया केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं परु

सब्बद्धाः ॥ ११९ ॥

क्दो १ सन्बद्धा सहमेहंदियविरहामावा I

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १२० ॥

अणिपिदिदियसस सुदुमेइदियअपजनगरत सन्वजहण्णकालमन्छिय अणिपिदि

गदरस खदामवग्गहणवलंगा । उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ १२१ ॥

वं जहा- अणिदिएहितो आगेतूण सुद्रमेहंदिएसप्पन्तिय असंखेजनलोगमेवं वेहि मुकस्तमबहिदि तस्य गमिय अण्यिदियं गच्छदि । छुदो १ हेउसम्बन्धिणवयणीवरुंगादी।

सुहुमेईदियपज्जता केवचिरं कालादो होति. णाणाजीवं पड्न

सब्बद्धा ॥ १२२ ॥

जरपन्न होकर यद्यपि संख्यात सहस्रवार उन उनमें ही उत्पन्न होता है, तथापि उन सर्वे अन्तर्महर्तिके एकत्रित करने पर मी एक मुहर्तममाणका अमाय है. अर्थात् किर भी पूरा महत नहीं होता है।

बहम एकेन्द्रिय जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वे अने

क्योंकि, सभी कार्लोमें सुद्म एकेन्द्रिय जीवोंके विरहका अभाव है।

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवांका जयन्य काल क्षत्रमवग्रहणप्रमाण है।।१२०॥ क्योंकि, अधियक्षित इन्द्रियशेले जीवके सुकृम एकेन्द्रिय लज्यपर्यान्तकार्में हो जयन्य काल रह करके अविवक्षित इन्द्रियवाले जीवाँमें गये इस जीवक श्रद्रभवन्नद्ववमान जयन्य काल पाया जाता है।

उक्त जीवोंका उत्हर काल असंख्यात लोकके जितने प्रदेश हैं, तरप्रमान है ॥ १२१ ॥ जैसे, बविवश्तिन सन्य इन्द्रियवाले जीवाँसे बाकर. सहम एकेन्द्रियाँमें इत्वन्न होडर कार जीय वसंत्यात छोक्रममाण उनकी उत्हार मयस्थितिको वहाँ पर शिताहर मार्थ

इन्द्रियवारे जीवाम चला जाता है, क्यांकि, इस महारके हेनस्यकर जिन-यथन पाये जाते हैं।

बहुम एकेन्द्रियपर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अरेश सर्वहाउ होते हैं ॥ १२२॥

```
t. 4, १२8. 1
                                    कालाणुगमे एहंदियकालारूकणं
               सम्बद्धामु विरहामाता । सो वि कथं पन्नदे । अण्णहाणुनवाविहेउलन्सकोः
       सक्तियाजिणवयणादी ।
              एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ १२३ ॥
            प्राथात १ वेसि बहणाउद्वितिमेची । यस सुद्दामवर्गाहणे किन्य सम्प्रेद है गः
     अवज्ज्ञचे मोत्त्व अष्णत्य तस्त संमवामाता ।
            <sub>डकस्सेण</sub> अंतोमुहुत्तं ॥ १२४ ॥
           प्रगाउद्विरी संस्वेडनाविषमेचा वि कड्ड संस्वेडनवारं या तत्थेव पुणी पुणी
   उप्वन्त्रमाणस्य दियस-प्रस्त-मास-उड्डअयण-संवच्चरादिकाटो किच्या सन्मदे १ ण, वेसिय-
  हर्मकार असंभवा । सो वि क्यं कहन्दे हैं अंतीयहुचनयक्काहानुनवस्ति। क्यं
        वर्षोक्षि, सभी कार्नोमें सहम वर्षेन्द्रिय वर्षातक श्रीवोक्ते विरहेवा अमाय है।
       प्रमाणान — मन्यपातुषपत्तिस्यकप हेत्रके संस्थाने उपलक्षित जिन-पचनने जाता
जाता है कि सहम पहेन्द्रिय पर्याप्तक जीव सर्वश रहते हैं।
```

ार स्थम प्याप्त्य प्याप्तक जाव कावा प्रवाद । एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जपन्य काल अन्तर्पृहर्त है ॥ १२३॥ र्चका — यह अन्तर्मुहर्त काल कितना बहा लेना चाहिए ! प्रमाधान - उनकी, मर्थात् सहम यकेन्द्रिय पर्यान्तक आर्थोकी असन्य बाकुके बालप्रमाण लेना चाहिए।

हेंद्रा — इस सममें 'बानग्रहनं 'के स्थानपर 'धुदमयमहण 'इस पदका उपादान षयों नहीं किया गया है ा १००५ १५५६ । समाघान — नहीं, क्योंक, स्टब्प्यर्थानक जीवोंको छोड़कर मध्यत्र उसका, सर्यात् दिमयका होना संभय नहीं है। न्ध दाना सभव नहा ह । यहम एकेन्द्रियवयोत्तक जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्महुर्त है ॥ १२४ ॥ परा रागा अर राज्य का वारामा का एट भाव ना पडश्य व ११ राज्य । परा -- जब कि एक मायुक्तमेकी स्थिति संख्यात मायुडीयमाण है, तब संक्यात-

्यात मनाम स्वापना वर्षा का वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा है। समाधान — मही, क्याँकि, वतने चार वस वर्षावमें वाविच होना ससमय है, ने वाहमें कि मास, पर्य आदि बमाण स्थितिकाल पाया जा सहे।

कार्या । विकास स्वयं कार्यां कार्यां के स्वयं के स्वयं विकास क्षेत्र के स्वयं कार्यां के स्वयं कार्यां के स्वयं ातुषपाचिसे जाना ।

सन्द्र-साहणाणमेयत्तं ? ण, पमाणेणाणयंता । किंतु एगजीवजहणाजाउद्विसक्ति तस्सेयुक्कस्समबद्विदिकालो संखेजजगुणो, णाणाआउद्विदिसमृहणिप्कणाचादो ।

प्याचनमञ्जादकाला सस्रवज्ञातुमाः मामाआञाङ्गादेसमृहांगप्यमानादाः । सुंहुमेहंदियअपज्जता केवचिरं कालादो होंति, **मामाजीवं पुर** 

सव्बद्धा ॥ १२५ ॥

सुगममेदं सुर्चं, बहुसी परुविदत्तादे। कघमेग-बहुवयणाणमेगमहियालं ! व सर दोसो, सन्वत्य दोण्डमण्णोण्णाविणामावयलेमा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण खुद्दाभवगगहणं ॥ १२६ ॥

असंजदसम्मारिष्ट्रीणमबहारकालो आविलयाए असंखेडजदिमागमेको वि होते अंतोम्रदुचिमिदि सुचे णिहिट्टो । एसे। अवडजचाउड्डिट्टी जहण्यिया संखेडजाविल्येका अंतोम्रदुचिमिदि सुचे किण्ण युचा ? ण एस दोसो, पडजचाउआदो अवडजवजहानार्थ संखेडजमुणहीणमिदि पदुप्पायणह सुदामबग्गहणसुबदेसा ।

र्यका — साध्य और साधन, इन दोनोंके पकत्य कैसे हो सकता है! समाधान — नहीं, क्योंकि, उक्त कथनमें प्रमाणसे अनेकान्त है, अर्थाद, प्रमाण

रपर्य साप्य होने हुए मी अन्यका साधक होता है। किंग्नु यपार्थ यात यह है कि एक जीवकी जयन्य आयुश्यितिके कात्रने उन्नेते केंग्रिट मयरियतिका काल संख्यातगुणा होता है, पर्योक्ति, यह नाना आयुश्यितियोंके क्यूर्ण विभयन होता है

। नपान दाना द । यहम एकेन्द्रिय सम्मयपर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं ! नाना जीकी अरेघा सर्वहाल होते हैं ॥ १२५ ॥

पद्मा सरकार हाते हैं ॥ १२५ ॥ यह गुत्र सुराम है, क्योंकि, पहले बहुतवार महत्त्व किया गया है ।

गुका — पर बार के देव पार महाने कि प्रकार में हो सकता है। समायान — यह बार देव नहीं, वर्षोंकि, सर्वत्र ही एकत्रवन भीर बहुवन, ह

गभापान — यह कोई दोज नहीं, क्योंकि, सर्वत्र ही एक्यबन भीर बहुवबन, श दोनोंचा मित्रायायमहरूप पाता जाता है। एक वीकरी कोणाया जाता है।

एक जीवकी अरेशा उक्त जीवोका जपन्य काल शुद्रमवग्रहणप्रमाग है॥ ११६। येका -- मनेयनसम्बन्धरिक आयोधा अवहारकाल आवलीके मनेक्यावर्गे मानमान मर मी ' मन्तुमृत्तुं है' क्या कर्ना कि

होता हुना सी 'सानतुर्ति है ' येमा गुन्ते निर्देश क्या गाय है। एत यह हाएगर्यात के से के हक्य आयुक्ति में क्यान आयुक्तिमान होते हुए सी 'सानतुर्तिवसन है' ऐसा सुक्ते क्यां नहीं कहा है मुस्तिवत न यह कोई होता नहीं क्यांत

ममानान — यह बोर्ट दोन मही, बनीकि, पर्वानक आंबोडी (जयान) मार्डे टाप्यपर्यंत्रक जीवोडी जयान मार्गु संक्वातपूर्णी दीन दोनी है, यह बनसामेंहे जिर गार्डे स्ट्रायवण्डलका हपरेस हिया गया है। **उक्**रसेण अंतोमुहुतं ॥ १२७ ॥

सुनमंद सुपं, पहुनो पहरिद्यादा । बीइंदिया तीइंदिया चर्डोरंदिया बीइंदिय तीइंदिय चर्डोरंदिय-पञ्जता केवचिरं कालादो होति, णाणाजीव पहुच्च सव्यद्धां ॥ १२८ ॥

त वन्ति । विषा अधिकादि चि सुगममेदं सुचं ।

प्राजीवं पहुच्च जहल्लोण खुद्दाभवग्गहणं, अंतोमुहुतं ।११२९॥
'जहा उर्पे वहा विरक्षे ' वि भाषादे। वि-वि-चर्ठारियाणं बहण्यकाले मुरामवग्गारणं, तस्य अपञ्जवाणं संभवा । पञ्जवाणं अंतोमुहुणं, तस्य सुरामवग्गहणस्य संभवाभावा ।

उक्करसेण संसेजजाणि वाससहरक्षाणि ॥ १३० ॥ वीक्षेदियाणमेगुणवण्णदिवसा उक्करसाउद्विदियमाणं, यजीरियाणं छम्मासा, बीक्षेट-

उक्त जीवोंका उरकृष्ट काल अन्तर्भहर्त है ॥ १२७॥

पहले बहुतबार प्ररूपण किये जानेसे यह सूत्र सुगम है।,

होन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुसिन्द्रिय बीव तथा होन्द्रियवर्षाहरू, त्रीन्द्रियवर्षाहरू और चतुसिन्द्रियवर्षाहरू बीव किवने काल तरू होते हैं ? नाना बीवोंकी जवेश सर्व-' काल होते हैं ॥ १२८ ॥

उपदेशके विना ही जाना जाता है कि यह सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल कमग्रः शुद्रमवंब्रहण और अन्तर्भक्तिमाण है। १२९॥

भीता बहेरा होता है, येता ही तिहेरा होता है ' इस न्यायसे सामान्य द्वीन्द्रिय, मीन्द्रिय भीर चनुनिष्ट्रिय जीवींका जाम्य काल सुद्रमुबबहणमाना है, क्योंकि, उनमें सम्प्यपर्यात्तक जीवींकी संमायना है। किन्दु पर्योक्तक जीवींका काल मन्तर्शुद्रत है, क्योंकि, उनमें सुद्रमुबद्दरक्षी संमायना नहीं है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त बीबोंका उत्कृष्ट काल संख्यात इजार वर्ष है ॥१३०॥ व्यक्तिय जीवोंकी उन्तेसास दिवस उत्कृष्ट कासुस्थितिका समाण है, समुद्धिन्द्रय

१ दिक्छेन्द्रियाची नानाप्रीक्षेत्रका सर्वेः काठः । स. वि. १, ८.

२ प्रश्नेतं प्रति अवन्यत् ध्रमयप्रश्नम् । सः वि. २, ८. ३ अक्षेत्र संस्थेताति वर्षत्रसामि । सः वि. २, ८. याणं बारस वासा । जदो एवं. तदो संखेजाणि बाममहस्माणि चि ण घडदे १ ण एस देखे, एटाओं एगाउदिटीओं । एटाहि ण एत्य कजनमत्थि, भनदिटीए अहियारादो । का भर डिटी माम ! आउडिदिसमहा । जदि एवं. तो असंखेजजाणि वाससहस्साणि मर्बाहरी किन्न होदि ? ण एस दोसी. असंखेरजनारं संखेरजनाममहस्सनिराहिनंखेरजनारं न वरप्रप्यचीए संभवामावा । अणिपदिदिएहिंतो आगंतग अपिदिदिएस उपवित्रम संवे ज्जाणि चेन हिंडदि. असंसेज्जाणि ण परिममदि चि युनं होदि ।

वीइंदियन्तीइंदिय-चर्जरंदिया अपज्जता केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडच सव्वद्वा ॥ १३१ ॥

दबरेसेण विणा एदस्स सत्तरस अत्यो कव्येट । पगजीवं पड्डच जहण्णेण खहाभवगगहणं ॥ १३२ ॥ गगममेर्द सर्च ।

श्रीकोची सह मास भीर ब्रीन्ट्रिय जीवॉकी बारह वर्ष उरहर मायस्थित होती है। र्यहा-पदि पेसा है, तो स्वमें कड़ी गई संक्यात हमार क्योंकी क्रिक्त मही परित केली है है

ममापान - यह कोई दोष महीं, क्योंकि, वे वतलाई गई स्थितियों यह मापु सारक्षा दें, दरमें यहां पर कोई कार्य नहीं है । किन्त यहां पर मवस्थितिका अधिकार है। ग्रंग -- सर्वास्तिति विसे बहते है !

समायात-- मनेक माग्रान्यतियाँके समृतको प्रयश्चिति कहते हैं।

र्यहा-वर्षि देना है, मा अमंत्रवान हजार वर्षप्रमाण अवस्थित क्यों नहीं होती है।

मुमाधान-वह कोई दीप नहीं, क्योंकि, असंस्थानवह, अध्या संक्थान की करके दिनेची संवतानवार मी उनमें उत्तान होनेकी संवावनाका सनाव है। स्विविधित इन्द्रिक्क है अहिन का करके विवक्षित इन्द्रियवान आवीम उत्पन्न शोकर, संक्षानमहत्त्व वर्ग

ट अन्य करता है, समेरवातवर्ष अन्य नहीं करता है, वेशा मध्ये कहा हुना शवश्री Tree ! दीन्त्रिय, बेन्त्रिय और बतुमिन्त्रिय सम्मार्यापालक और किनने बात गर्

हैते हैं ! बारा बेलीबी बरेषा मर्रवाल होते हैं ॥ १३१ ॥ रचेंग्राचे दिना है। इस स्वता अर्थ बात है।

बद्ध व बदी बरेश उन्ह बीरोडा वपाय काल शुक्रमश्रद्वभाग है ॥११२॥ बह स्व स्वय है।

्र भ, ११५. ]

काटाप्रणेव विश्वदिवस्त्रवण्यामा विश्वद्विस्तर्वण्यामा विश्वद्विस्तर्वण्यामा विश्वद्विस्तर्वण्यामा विश्वद्विस्तर्वे । । १३३ ॥

पदं वि द्वागमं चेत्र । गवारी बोर्धदिय-वीर्धदिय-पार्वीदियप्रवण्याचाणं जहारुसे।
अंतरिवाहिया असीदि-सिक्व-मासीस्त्रप्रवण्यामा । अदि वि एविपवासमा अतीन् । अपमेदं विश्वदे । अतीन् प्रवण्यादि, तो वि वन्मवहिदिकातसमासी अतीन्द्वव्यमेणो चेत्र । अपमेदं वित्रप्तर्वे । अतीन्द्वव्यमेणो चेत्र । अपमेदं विद्यप्तर्वे । विव्यप्तर्वे । विविद्यप्तर्वे । विव्यप्तर्वे । विव्यप्तयः । विव्यप्तर्वे ।

भावादप-पाचादयपञ्जत्तएसु मिन्छादिड्डी केविंचरं कालादो हो। णाणाजीनं पहुन्च सन्यद्धां ॥ १३४ ॥ , राममनं सर्व । एगजीनं पहुन्च जहण्णेण अंतीसुहुत्तं ॥ १३५ ॥ पदस्स रावस्त अत्यो नया मुलेपस्टि मिन्छवसः बहुणकालपस्वगाद्धवसः

---

उत्ता श्रमा भाषा भाषा प्राणान्त वाम्भवता भाषा प्राणान्त वाम्भवता भाषा प्राणान्त वाम्भवता श्रम विश्व विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या के अविद्या के अविद्य के अविद्या के अविद्या के अविद्या के अविद्या के अविद्या के अविद्

अशान्य ६ ६० जानत ६ । समाधान — भाग्या, एउमें भानतंद्वर्यंत्रा उपदेश हो महाँ सहता था। इस मार्ग गानुष्णांत्रते जानते हैं कि उन भयों का जोड़ भानतंद्वर्यमात्र हो होता है। पेपेन्ट्रिय और पंपेन्ट्रिय पर्याप्तकोमें मिध्याधिट बीव हितने हाल तह होते । नाना जीवोंकी अधेशा सर्वकाल होते हैं॥ १३४॥

एक जीवकी जरेशा उक्त जीवोंका जपन्य काल जनतपुर्वेषमान है ॥ १२६ ॥ इस स्टब्ब वर्ध केया कालक्रकणके मुख्येयमें विष्णात्वक जवन्य ब्याटकी याले स्टब्ब करा है, पैसा है। यहाँ करना बाहिए। १ विता (बाज) वित्र है। १ वर्धार की जिल्हामान स्टेब्ब कर । व वि. १ उनकरसेण सागरोवमसहस्साणि पुञ्चकोडिपुभत्तेणन्भहिणाणि, सागरोवमसद्पुधतं ॥ १३६ ॥

सागरोवमसहस्साणि वि सुनै बहुववणणिदेसो करो । सासणसम्मादिट्टिपहुडि जान अजोगिकेवाले ति ओघं ॥१३७॥

पंचिंदियअपन्जता दीइंदियअपन्जतभंगो ॥ १३८ ॥

कटो ? ओघादो णाणेगजीवसासणादिकालाणं भेदामावा ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटीपृथक्त्वसे अधिक सागरोपमसद्गत और सागरोपमश्वप्रपत्त्वप्रमाण है ॥ १२६॥

ैक्षा उदेश होता है, तथेय निर्देश होता है ' इस म्यायसे सामान्य पंक्षित्रव अधिका उत्तरप्र काल पूर्वकोटी ग्रथकलने अधिक सागरोपमसहस्र है, तथा पंकारित्रव वर्षा

ध्तक जीवींका उत्कृष्ट काल सागरीयमशतपृथक्त्य है।

भव इन दोनों बालोंका उदाहरण कहते हैं— कोई एक जीव पकेन्द्रिय या किंक लिन्द्रियसे भाकर पंचित्रिय भीर पंचित्रिय पर्यापाकोंमें उत्यक्त होकर, अपनी स्थिति तह पर बर, अपन इत्रियको बाला गया। यहां पर पत ही सागरीयससहस्रके, अपने अस्तर्यक्त बहुत्वको देखकर 'सागरीयससहस्र' पैसा सुत्रमें बहुयसनका निर्देश किया गया है।

मामादनमम्यग्राष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके अविका काल ओपके

समान है।। १३७॥

भयों कि भोधप्रकपनामे माना भीर यक जीवसम्बर्धा सासादनादि गुनस्पाती । कारों में प्रकासमाय है।

पेचेन्द्रिय ज्ञारपार्याणक श्रीवीका काल झीन्द्रिय सहस्यपर्याणक श्रीवीके कालके ममान है।। १३८॥

१ स्वरंत क्यांत्रस्थातं पूर्वश्रीत्वस्थितं । छ. वि. १, ८. ९ वेतालं क्षांत्रस्थेतः क.ठा । क. वि. १, ८.

णाणात्रीनं पद्दम सन्तद्दा, एगजीनं पद्दम जहण्णेण खुद्दाभनमाहणं, उक्करसेण अंतोब्रहुचमिचाहणा भेदाभावा । णवरि पंचिदियअपज्ञनएसु गिरंतरुप्यज्ञणसवनारा चउनीस होति।

## एवमिदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सन्वद्धा ॥ १३९ ॥

कुदो ? सन्बद्धासु एदेसि संताणस्स विच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवगगहणं ॥ १४० ॥

एदस्सुदाहरण- एगो अणिपदकाइओ जीवो अप्पिदकाइएस उप्पिज्ञिय सम्ब-जहरूणं कालमन्छिय अणप्पिदकाइयं गरो । सद्दो जहरूणं सुदाभवग्गहणकाला ।

्र उक्कस्सेण असंखेज्जा होगा ।। १४१ ॥

नाना जीवोंको भेरहा सर्वकाल, एक आयकी भरेहरा जमन्य काल शुद्रमयमहण-प्रमाण है, उन्हर काल भरतमुंहर्त है, हत्वादिक कराते को है भेद नहीं है। विदोध काल पह है कि पंचिट्टिय स्टब्स्यपर्याप्तक ओवोंमें स्थातार निरन्तर उत्यक्त होके सम्यार चौथीस होते हैं। हत सहार व्हियमार्गणा समारत हुई।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, तरुकायिक, तेत्रस्कायिक और पायु-कायिक और कितने कारु तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेग्रा सर्व कारु होते हैं॥ १३९॥

वर्याकि, सभी कालोमें इन पृथिशीकाविकादियोंकी संतात-परम्पराका विच्छेद महीं होता है।

एक अविको अवेक्षा उक्त अविका अपन्य काल शुद्रमवब्रहणप्रमाण है ॥ १४० ॥ इसका उदादरण-अविवक्षित काववाला कोई वक् औष विवक्षित काववाले आँवॉर्म

एफ जीवकी अपेक्षा उक्त कीवोंका उत्कृष्ट काल असंख्यात रोक्प्रमाण है।। १४१ ॥

१ कामातुरादेन पृथित्यक्तें राषुकारिकारां नाताबीरावेक्षवा सके काळा। सः ति. १, ८.

< एक्च रं प्रति अव-वेन शुर्मश्प्रद्वन् १ स. ति. १, ८.

३ डल्डरेंबाहंस्वेदः कावः । छ. वि. १, ८.

प्दस्सुदाहरणं- एगा अणप्पिदकाहमा अप्पिदकाहपुर उप्पत्ति अप्पिदकाहपद्वितिमसंवेज्जलोगमेतं परिभामय अणप्पिदकारं गरी ।

वादरपुढविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइय काइया वादरवणकृदिकाइयपत्तेयसरीरा केविचरं काछादो जीवं पहुच्च सम्बद्धा ॥ १४२ ॥

ङ्दो १ सन्वकालमणुन्छिण्णसंवाणचादो । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुदाभवग्गहणं ॥ १८३ । एदस्खदाहरणं- एगा अणप्पिदकाहमो अप्पिदकाहपअपअचलस्य उनः जहण्णमाउद्विदि गमिय अणप्पिदकाहएस्य उनवण्णे। रुद्धो जहण्णेण खुदामव

उनकस्सेण कम्महिदी ॥ १४४ ॥ कम्महिदि चि बुचे किं सन्त्रीतं कम्माणं हिदीओ घेष्पंति, आहो एव हिदी घेष्पदि चि?सन्त्रकम्माणं हिदीओ ण घेष्पंति, किंतु एक्कस्सेय कम्महिद

इसका उदाहरण-अविवासित कायवाला कोई एक जीय विवासित श्राय आदि जीयोंमें उत्पन्न होकर विवासित कायकी असंक्यात लोकनमाण सर्वोत्त्वर विवासित कायको मात हो तथा। परिश्चमण करके पुनः अविवासित कायको मात हो तथा। बादरपृथिवीकायिक, बादरजलकायिक, बादरवेजस्कायिक, बादरवार और बादरवनस्पविकायिकमलोकश्चरीर जीव किवने काल तक होते हैं ? नाना अपेक्षा सर्वकाल होते हैं॥ १४२॥ पर्योक्ष, इन स्पोक जीयोंकी सर्वकाल अधिच्छम संतान पाई जाती है।

एक जीयको अपेक्षा उक्त जीयोंका जधन्य काल श्रुद्रमयग्रहणप्रमाण है॥ १ ६९का बराबरण — अधिवाक्षित काययाला केहि एक जीय विचारित कायके स पर्याक्त जीवोंमें उत्पन्न होक्त यहां की सर्व जधन्य आगुरियातिको विचाक्त पुनः अधियाँ कायिकोंमें उत्पन्न हो गया, तब श्रुद्रमयग्रहण्यमाण जधन्य काल उपलप्प हुमा। उक्त जीयोंका उत्कृष्ट काल कर्मरियतिप्रमाण है॥ १४४॥

इरो १ गुरुवरेसादो । तत्य वि दंसणमोहणीयस्म चेय उपकस्साद्विदीए सचरिसागरे कालाञ्चममे सावस्माङ्यमाळपरूवमं वमकोडाकोडिमेचाए ग्रहणं कार्य्यं, पाहण्णियारो । हुरो पहाणचं १ संगहिरावेसक्रम हिदीए । के वि आहरिया कम्मिहिदीदो पादरहिदी परियम्मे उपपण्या वि कच्चे कारणीव-विभाग । जाना जाना वार्या विभाग वार्या वार्य भारतवर्गः इति न्यायात् । ज् च बार्गाणं सामध्येण वृत्तकाला बार्गेगदेवाणं वार्रप्रविधान

प्रमाण वि सो चेत्र होदि ति, विरोहा । सामणावादरहिदिमणापयरिव परनिय संपरि कारवाण ।व ता वव कारवाण, व्यवस्था तामण्यवादराष्ट्रावमण्यवारण वस्तवय ववाद यदिरपुदविद्विद्धि भटणमाणे उदयासवसंद्रको पश्चीनणामाचा च । एदस्पुदाहरणं- अण-प्पिरवाहरकाहओ अप्पिरवाहरकाहण्म उत्पन्तिय तत्य सचिरिमागरोत्रमकोडाकोहिमेच-कालमस्छिय अणापिद्वादरकाइयं गदी । चादरपुडविकाइय-नादरआउकाइय-चादरतेउकाइय-चादरबाउ-काइय-वादरवणकृदिकाइयपतेयसरीरपञ्जता केविनरं कालादो होति, णाणाजीनं पहुच्च सन्वदा ॥ १३५ ॥

युक्ता उपरेश है। उसमें भी केवल दर्शनमोदनायुक्तमंत्री ही सत्तद् कोहाहोड़ी सागरीयम----र्चना - दर्शनमोदनीयकर्मकी स्थितिको प्रधानता केले हैं ? समाधान- क्योंकि, उसमें सर्व कमोंकी स्थित संप्रदेत है। हतत हा आयाप व मास्यावस याद्धास्थात यादकाम अवया ह हैसालय कायम कारणके उपचारका मानतान करते बाहरस्थितिको हो । कारिशति सह संसा मानते हैं, कारणक उपधारका अध्यक्षकान करण वादरास्थानका हा कमास्थात यह सम्मा भागत है, विक्तु यह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, 'भीच और मुक्यमें श्वियद होने पर मुक्यमें ही ारुत थर रूपन थाटन नहा हाता है, प्वाचित्र, गांच भार शुरुपन विधाद होने पर श्रीयवस ही स्वित्यय होता है। ऐसा न्याय है। हुसरों पात यह है कि वाद्रकायिक जीवाँका सामास्यक्षे

0 (84.)

----

٦٠٠٠

163.1

منب

ب

ţ

संवत्यय होता व पत्ता स्वाच हा नूसरा यात यह हा के पार रणायक आयाका सामान्यस कहा हुमा काल, वाहरकाविक श्रीवेक वक्षेत्रसम्बन याहर पृथियीकाविकाका मी यही ही नहीं कहा हुवा काल, धानरकाश्यक आवाक सकदरासून वादर श्राध्याकायकार सा यहा हो सकता है. क्योंकि, इसमें विरोध साता है। तथा, सामान्य बाररकायिक स्थितिको हैं सकता ह, क्याक, इसमायराध भावा ह। तथा, सामान्य बाहरसाधक स्थावका भ्रम्य महारसे महत्वल करके. अन् बाहरपूथिनीकाविककी हिंगतीको कहने पर उपचारके भालःबनमें कोई प्रयोजन भी नहीं है। नम कार प्रयाजन भा नहा ह । भव उक्तः कर्मीरेशनित्रमाण कालका उराहरण करने हैं — भविवरितन बाररकाणपाला भव उत्त क्षांस्थानमात्त्व कालका उद्देशका करना द्वा नावधारण वास्त्वावधार काही जीव विवासित बाहरकाविकाँ उत्तत्व होकर यहाँ वर सम्राट कोहाकोई सामरोपक अमाण काल तक रह करके भावित सेत वाहरकाथिकमें चला गया।

बाह्य तक रह वरक आधुवाराव व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्यक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस्थात्रक व्यवस् बाह्रवाष्ट्रकारिक्षप्यान्त और बाहरवनस्पनिकारिकः प्रत्येकशरीरप्यान्त और किनने काल तक होते हैं ? नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १६५ ॥

सब्बद्धामु एदेनि विरहामावा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४६ ॥

एदस्मुराहरणं-एगो अणारिपदकाइत्रो अस्तिदकाइत्म उत्पन्तिय मध्यबहन्त्रभैतेः महत्त्वमध्यिय अणारिपदकार्य गरे। ।

उकस्सेण संखेज्जाणि वासमहस्माणि ॥ १४७ ॥

सुद्वपुद्धविजीवाणमाउद्विदियमाणं वास्त्व वस्मगहस्मा (१२००), म्रायुद्धविज्ञाः याणं वात्रीस वस्सग्रहस्मा (२२००), आउकाद्ययन्जनाणं सन् वामगहस्मा (९०००), वेउकाद्ययन्जनाणं निण्णि दिवसा (३), वाउकाद्ययन्जनाणं निष्णि वासग्रहस्माणि (३०००), वणण्यद्काद्ययन्जनाणं दस वासग्रहस्माणि (१००००) उत्तरस्माउद्दिरिः पमाणं होदि'। एदासु आउद्विदीमु संयोजनादस्माग्रपण्णे संयोजनाणि वासमहस्माणि होति । उदाहरणं— एगो अणियद्काद्यो, अपियदकाद्ययन्जन्त्यमु उववण्णो । पुणो तिहरू चेव संयोजाणि वासमहस्माणि अस्तिय अणियदकाद्यं गदी।

क्योंकि, सभी कारोमें इन जीवोंके विरहका बमाय है। एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जपन्य काल अन्तर्भृष्ट्वे हैं॥ १४६॥ इसका उदाहरण-पक अवियक्षितकायिक कार्र जीव विवक्षित कायबाटे जीवों उत्तय क्षेत्रक सर्व-जपन्य अन्तर्भृष्ट्वेकाल रह करके अवियक्षित कायको प्राप्त हुआ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है ॥ १४७ ॥

उक्त जानान उरहुष्ट मान स्थाद का विशेष वायुरियतिका प्रमाण वाह्र हतार (१२००) वर्ष है। वर्ष्याद्वायां का व्याप्त के वार्योकी वायुरियतिका प्रमाण वाह्र हतार (१२०००) वर्ष है। उन्हकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण सान इतार (५०००) वर्ष है। तेन स्कायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन (३) दियस है। वायुकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन (३) वर्ष है। वास्पतिकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन हतार (२०००) वर्ष है। वनस्पतिकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन हतार (२०००) वर्ष है। वनस्पतिकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन हतार (२०००) वर्ष है। वनस्पतिकायिकपयांतिक जीयोंकी स्थितिका प्रमाण तीन हतार (२०००) वर्ष है। वनस्पतिकायिक स्थापतिकायां स्थापतिकायं स्थापतिकायां स्थापतिकायां स्थापतिकायां स्थापतिकायां स्थापतिकायं स्थापतिकायां स्थापतिकायां स्थापतिकायां स्थापतिकायं स्थापतिकायं

उत्सन्न हानपर सब्यान सदस्य पर हा जात ह। इसका उदाहरण-पर्यक अधियादित कायवाला कोई जीव विवक्षित कायवाले वर्षा सकीम उत्पन्न हुमा। पुनः उसी ही कायम संख्यात सहस्र वर्ष रह करके अधियक्षित कायकी

ब्राप्त हो गया।

र पृथिवेशाविष्टाः दिविषाः कुळपृथिवोशाविष्टाः सार्यविष्टापिषानेति । तन स्ट्रायोगाविष्टार्थ सरहा विकित्येदव वर्षवर्याणे । सार्यियोशाविष्टार्थ सार्वित तेर्वेश्वर्याणे । वनस्यते स्वित्यारे दर्ष वर्षेद्रायाने । जन्माविष्यां त्यार्थेत्रायाणि । वाद्याविष्टार्थां पीलि वर्षवर्याने । तेन स्विष्टार्थ पीलि स्वित्यानि १, ए. ग. १, १५

Gredideidich Grennblich Greinfanch Creibiet fe Demenstringuice, confinite sie 21 vas e con au artino e Ce-बात यह य द्वेतिहरूदद्व, एक बीग अदद एक हु। बाग्ड स्टाउ है। हुन। ह

1,1.

करो ? णाणाजीवं पडच्च मध्यदा. एमजीवं पट्टम जहाजेग सहामानास्त्रं अंतोग्रहचं, उक्स्मेण अयंध्याता होगा । पात्रचागमपात्रचार्ग च अंतीमहचिमध्येही सहमेईदियपज्ञतायज्ञतेहि विमेमामावा ।

वणफदिकाइयाणं एइंदियाणं भंगों ॥ १५२ ॥

कुदे। १ णाणाजीवं पद्च्य सुख्यदा । एमजीवं पट्च्य जटण्येण सुदामवत्माहर्ण, उक्करमण अर्णतकालमसंखेरवयोगगलपरियद्यमिनचेरण एउंटिवर्टिनी वर्णकरिकार्याने मेदाभावा I

णिगोदजीवा केविचरं कालादो हांति. णाणाजीवं पड्डन

सब्बद्धा ॥ १५३ ॥

मगममेरं सत्तं।

धगजीवं पड्डच जहण्णेण खहाभवगगहणं ॥ १५८ ॥ एदं वि सर्च सगमं चेय ।

उक्कस्सेण अङ्गाहजादो पोरगलपरियद्गं ॥ १५५ ॥

वनस्पतिकायिक जीवोंका काल एकेन्द्रिय जीवोंके कालके समान है ॥ १५२ ॥ क्योंकि, नाना जीवोंकी येपेक्षा सर्वकाल, एक जीवकी अपेक्षा जवन्य काल धुद्रमन

प्रद्रण और उत्हर काल अनन्तकालात्मक वर्सच्यान पुरल्परियनन है. इस कपसे पकेन्द्रियाँने धनस्पतिकायिक जीयोंके कालका कोई भेर नहीं है।

निगोद जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल हैते

हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है। एक जीवकी अपेक्षा निगोद जीवोंका जयन्य काल <u>श</u>द्रमवग्रहणप्रमान

है।। १५४॥

यह भी सुत्र सुगम ही है।

उक्त जीवोंका उत्क्रष्ट काल अदाई पुद्रलपरिवर्तनप्रमाण है ॥ १५५ ॥

१ बनस्रतिकायिकानावेकेन्द्रियवत् । स. वि. १, ८.

फ्योंकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल, एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल, श्रुट्रम<sup>त</sup> ब्रह्मप्रमाण और अन्तमुंहूर्त, तथा उत्हर काल बसंख्यात लोक है। पर्याप्तक बीर अपर्याप्तक अधिका काल अन्तर्मुहर्त है, इत्यादि ऋषसे सदम पकेन्द्रिय पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीवोंके साथ सहमप्रीयधीकायिकादिकके कालमें विदेशनाका समाय है।

و، م، وم<sub>ح، ]</sub> षाङ्युगमे तसम्माद्यकालम्बर्ण र्वे जघा- एगा अल्जकापादो आगंत्म निगोदेसुरवन्नो । तत्य अङ्गप्रका पोमालपरियङ्काणि परियाद्विर्ण अण्यकार्यं गरो । वादराणिमोदजीवाणं वादरपुढविकाइयाणं भंमो ॥ १५६ ॥ हुदो ? पाणाजीवं पहुच्च सट्यहा, पमजीवं पहुच्च जहुण्येच खुरामकगाहर्ण, उक्तरसेण सम्माहिदी हर्न्याण बाहरणिगोदाणं बाहरणुदविकारएहितो महामाता । तसकाइय-तसकाइयपञ्जतएसु मिच्छादिट्टी केनचिरं काटादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सन्बद्धां ॥ १५७॥ एगजीवं पहुच जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ १५८ ॥ हमकाइयाणं तेति पञ्जनार्यं च जहण्यकालो अंतीमुद्दनं । तसकारपाणमंत्रीमुद्दनः मिदि जमिवय सुरामनमाहणं वि किष्ण वृत्तं १ व, सरामनमाहणं चेनिसाहण जरून-भिच्छचकालस्स धीवचादो । सेसं सुगमं । जैले- कोई यक जीव सन्य कारते मा करते निर्मादिमा जीवाँसँ उपय हुमा। करो वारा — कार प्रक जाव काव बावल का करक स्वामायका जावाम उपक्र पर सहार पुत्रवरियतेन काल तक परिधामण करके साथ कावली मांग है। गया। पाररिनमीद जीबीका काल पाररष्ट्रिविबीकापिक जीबीके ममान है।। १५६॥ वर्षाक्ष वाका अविहा अविहास वर्षकार, वह श्रीवर्ध स्वसा अवस्य कार धुरमकः महणमाप भीट जरह काल कांक्शिनमाण है, इस क्यते बाहरनिर्मारिया अविहे कालका बादरपृथियोकाविक ज्ञांवीके कालसे कोई भेद नहीं है। वसकाविक और वसकाविकवर्षान्तकामें विध्याष्टि जीव किनने बात वह होते हैं। नाना जीवाँकी अपेशा सर्वकाल होते हैं।। १५७॥ एक जीवकी अवसा उक्त जीवोका जयन्य काल अन्तर्धात है ॥ १५८॥ वसकायक और उनके प्रशासकीका जम्म कार भारताहित है। विद्यालय व्यवस्थित अधिका भाजामुहत्रं कार्य है। विद्याल कर कर 'सद्भाव महणवसाण बाल है. यसा क्यों नहीं कहा ! समाधान वटी, वर्णान, शहभवग्रहणने बाल्को देखकर अधान् रसकी अपेक्ष वधन्य मिथ्या पत्र। बाल और भी छेंटा है। रोप स्वार्थ समग्रह। tives as an industrial parties of an indian a de merca apres alla la la la

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुरुवकोडिपुभत्तेणस्महियानि वे सागरोवमसहस्साणि ॥ १५९ ॥

तं जधा- दो जीवा धावरकायादो आगंतृग एगा तसकार्एसु, अण्गेगा तत्रकार पञचित्रसु उववण्णा । तत्य जो सो तसकार्एसु उववण्णो सो पुज्वकोडियुववन्मीर व-सागरेवनसहस्साणि तत्य परिमासय धावरकायं गदो । इदरो वि वे सागरेवनसहस्

परिममिष धावरं गदो, एको उवरि तत्वच्छणमंभवामावा । सासणसम्मादिट्टिपहुडि जाव अजोगिकेवित सि ओर्घ ॥१६०॥

ङ्रो १ ओपसामणादिमयलगुण्डाणाणं णागेगञीवजङ्णुकस्सकालहिंगे तम्बद्धः तसकार्यपरञ्चसामणादिसयलगुण्डाणणाणेगञीवजङ्णुकस्सकालाणं भेदामावारो ।

स्याप्त्रपादस्यलगुण्डाणणाणगत्रायत्रहण्युकस्यकालाण्यायात्रायाः तसकाइयअपज्जताणं पंचिदियअपज्जत्तभंगो ॥ १६१ ॥

इरो र पामाजीवं परुष सञ्चदा, एगजीवं परुष जहक्रीण सुदामसम्बद्धः, प्रमदायिक जीवोका उत्क्रप्ट काल प्रविकोटीप्रयक्त्यमे अधिक दो हजार साम्रोस्य

त्रमकायिक जीवोका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटी प्रयक्तयसे अधिक दो हजार सामराज्य और त्रमकायिक पर्याप्तक जीवोका उत्कृष्ट काल पूरे दो हजार सामराज्यकाव है।। १५९॥

असे- दो आव पह साथ स्थायरहायमे आहर पह हो सामान्य जनकारिक ब्रांकें में भीर दूसरा जनकार्यक वर्षात्वकार्ये उत्यम हुमा। उनमेंसे जो सामान्य वनकारिक के तमें बत्यक हुमा, यह और वृषेकोईत्ययात्योग माधिक हो हमार सागरीयन का उन्ने विस्त्रास करके स्थायरकारको मान हुमा। तथा दूसरा जीव भी दो हजार सागरीयावणक करने विस्त्रासन करके स्थायरहायमें यथा गया, क्योंकि, हमके ज्यार जमकायमें स्था संभव नहीं है।

मःभादनम्प्याद्यमे लेकर् अयोगिकेवलीगुणस्थान तकका काल प्रोपेक म्यान् ।। १६०॥

है || १६० || वर्षोद, भाषटे मामाइनाहि सदल गुणश्यानोते नाना और यह शेवडे द्वाल और उन्हेंच वालोंने जमदायिक नया जमदायिकपर्यानदोते नामादनहि संदर्ध

र क्षण्य क्षेत्रकर । क कि के ता

मुक्तमार्थीके नामा भीर वक प्रावके प्रयान भीर उन्हर कालीका केडि भेद गरी है। बसकारिकलक्ष्यवर्षात कोडी काल वंदीन्द्रियलक्ष्यवर्षात कोडी समान है 9% है। क्सोंकि, नामा कोडीकी भीरता सर्वकाल, वक्ष प्रावकी भीरता प्रयान काल सर्वकी

प्ता क, लागः काव का भारता सरकाल, वक्षा श्रीवदी सरका श्रयाय काव छन्तः १ दक्षेत्र द्वाराण्यारार होराहादक्षीलाहि । व वि. १, ८.

उक्तसेण बीरंदिय-वीरंदिय-चार्मादेय-पंजिदियअवज्ञचल्ल जहाक्रमेण अमीदि-सहि-चालीत-चहुजीत-अध्वबद्धमवेस षड्मद्वारपरियङ्गमंभूदअवोमुहुचकाला इच्चेदेहि विसेतामाता ।

## एवं कायमग्यामा समता ।

जोगाखुवादेण पंचमणजोगि-पंचवित्रजोगीसु मिच्छादिद्वी असं-जदसम्मादिद्वी संजदासंजदा पमचसंजदा अपमचसंजदा सजोगिकेवर्टी केविचरं कालादी होंति, णाणाजीवं पहुच्च सव्वद्धां ॥ १६२ ॥

बुदो १ मणजोग-विजानिहि परिणमणकाटादो तदुवनक्रमणकाटनंतस्य योजचादो। एगजीवं पडुटच जहण्णेण एगसमयं ॥ १६३ ॥

एद्स्म सुचरस अत्योगच्छयमुद्रायमहे मिच्छादिहिश्चादिगुणहाणानि अस्मिद्ध स्मातमयस्त्रमा छोत् । एत्य वाव जागराविश्वणराविश्व मरण-वापादिहि मिच्छमः गुणहाणस्स एमसमञ्जा परिवेज्ञदे । ते ज्ञा- प्रकृत सामचा मरमापिच्छादिष्टी अर्ध- अद्दरमादिही सेजदानंबदे पमचर्मजदे या मणजोगण अच्छिदो । एग्यमञ्जा मद्माद्धा संदर्भवादिही सेजदानंबदे पमचर्मजदे या मणजोगण अच्छिदो । एग्यमञ्जा मद्माद्धा संदर्भ कार्य, वार्विश्व संदर्भ वार्विश्व संदर्भ स्माद्धा स्वाद्धा साम्याद्धा साम्याद्ध

इस मकार कायमार्गेणा समात हुई।

योगमार्थणके अनुपादमे बांचों मनोषोगी और वांचों बचनपामी बीहाँमें विध्यारीट, असेवनसम्पारीट, संवतासेवत, प्रमवसंवत, अमनतसंवत और सर्वाति-फेरली फितने फाल तक होते हैं है नाना बीहाँकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १६२ ॥

पर्योक्ति, मनोयोग और यचनयोगके द्वारा दोनेवाल परिणमन कालले उनके उथ-

प्रमणकारका भन्तर भरा पाया जाना है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवाँका जयन्य काल एक समय है ॥ १६३ ॥

इस मुक्ते अर्थ विध्यक्त समुन्यादवार्थ विष्यादिष्ट ब्याद गुन्दरातीको साध्य करके यक समयकी प्रवचना की जाती है—उनसेंस पहते योगपरिवर्षत, गुज्यस्य वर्णा कई प्रत्य और त्यापान, इन बार्शिक द्वारा विष्यात्यपुरत्यावका यक समय प्रकचन हिस्स जाता है। वह दस प्रवाद है—तासादकारपार्याद, सायिष्टरायाद, अर्थविष्टरायादी, अर्थविष्टरायादी, स्विधार्यस्यादी, अर्थविष्टरायादी, स्विधार्यस्य व्या

र स्रोदाहराहेन बालामवर्गातेषु विश्वणावर्गवरणस्य देशवर्णवर्गवरणस्य स्वीतिक क्या-व्यापनिकास सर्वेत वाला वि. ति. १, ८.

६ दरबोशदेहरा बच्देर्दरः हदयः । ह- छि. १,८,



सेसु वा उप्पणो, तो कम्मद्रयकायजागी ओतारियमिस्तकायजागी वा। अघ देव-मेहरपुर जद उववण्यो तो कम्मद्रयकायजागी वे उन्यत्यस्य जद उववण्यो तो कम्मद्रयकायजागी वे उन्यत्यस्य पर्वे मरणेण रुद्धप्राभंगे प्रविक्तरणयमंगेलु पविस्त्तं दस मंगा हाँति (१०)। वाषादेण एक्को मिन्छादिद्धी विचिजोगेण कायजागेण वा अन्छिद्धी विचिजायोगोण राष्ट्रण तस्स मणजागी आगदो। प्रवासमय मणजागेण मिन्छचं दिद्धी विदियसमय वाषादिदी काय-जानी आगदो। रुद्धी विद्ययसमय वाषादिदी काय-जानी आगदी। उद्धी विद्ययसमय वाषादिदी काय-जानी आगदी। उद्धी प्रवासमयो। पर्वे प्रविचलदसमंगेल विचले प्रकारस मंगा (११)। एद्य उवववनंती गाहा—

गुण-जागरावती वाषादो मरणमिदि हु चत्तारि । जोगेलु होति ण वरं पश्चित्त्वदुगुणका जोगे ॥ ३९ ॥

एदिह गुजहांने द्विद्वीया इमं गुजहांने पहिच्यकंति, न पहिच्यकंति वि चाद्वं गुजपिद्वाच्या दि इसं गुजहांने वाच्यंति, न गर्यकंति वि चित्रं व्यवस्थानिदि संवदानंति द्वारं प्राप्त प्रमुद्ध के प्रवाद प्राप्त प्रमुद्ध के प्रवाद प्राप्त प्रमुद्ध के प्रवाद प्राप्त प्रमुद्ध के प्रम

गुनस्थानपरियर्तन, योगायरियर्नन, व्याधान और मरण, वे घारों बाते योगोंमें अर्थान् श्रीमों योगोंके होने पर, होता हैं। बिरुनु सुयोगिकेयलीके विग्रत्ने हो, मर्थान् मरण और

ब्याचात. तथा राजस्थानपरियर्तन महीं होते हैं ॥ ३९॥

इस विवासन गुणस्यानमें विधानान जीव इस मविवासन गुणस्थानको मान होने हैं, या नहीं, देवा जान करके, गुणस्थानोंको मान जीव भी इस विवासन गुणस्थानको मान हैं, अथवा नहीं, देवा विकासन करके मध्यत्रतस्थायहोंह, संयासंवय भीर ममलसंपनोंको बार महादेवे वक समयवी मञ्चणा करना चाहिए। इसी महादेस सनमलसंपनोंकी मी महण्या होती है, किन्तु विदोध कात यह है कि इनके स्थाधानके विना तीन महादेस यह समयकी महत्ववा करना स्वाहिए।

क आध्यती "बबहरवती "बन्यती "बनवरवंती "वृत्ति वृत्तः व

; छक्तंडाममे जीवद्वाणं णरिच ? अप्पमाद्-नाचादार्णं सहअगरहाणलक्ष्यपनिरोहा । सन्तागिकवित्सम् ज् पस्चणा कीरदे । तं जधा-एक्को खीणकवाओ मणजोगेण अच्छिदो मणजोगहा समओ अत्य ति सज्ञेगी जादो । एमसमयं मणजोगेग दिहा सज्ञेगिकेन्छी निदिग

वरणा भारत १५ वनाया भारत । इसवाय भारताव भारताव १५८० वनायाम् १५८० विज्ञोमी वा जारो । एवं चहुसु मणजोमेषु वंचसु विज्ञोमेषु पुरस्वसूणहाणार्थ समयपस्त्रणा कादच्या । ज्वकस्तेण अंतोमुहृतं<sup>'</sup> ॥ १६२ ॥

र विधा- मिच्छादिही असंजर्समाहिही संजरामंजदो पमचसंजरो (अपनर पंजरा । ज्यान ज्यानका जानका ज्यानका प्रवासका प्रवासका ज्यानका प्रवासका ज्यानका ज्यानका प्रवासका ज्यानका ज्यानक संजर्भ ) सज्जोगिकेव्छी वा अणिपद्जोगे हिंदो अद्वास्त्रवर्ण अपिद्जोगं गरो। क्य विष्पाओग्गुक्कस्समेतामुहुत्तमन्छिय अणिपद्ञागं गदी । सासणसम्मादिद्री ओर्घ ।। १६५ ।।

र्थका — अवमत्तसंयतके व्याघात किस टिप नहीं है ?

समाधान-क्योंकि, अवनाद थार व्याचात, रन दोनोंका सहानपस्या विरोध है।

स्य सयोगिकेवर्राके एक समयकी प्रस्तवना की जाती है। यह इस प्रकार पैक सीणक्रवायवित्रामहासभ्य औव मनोयोगके साथ विद्यमान था। उब मनोयोगके स एक समय अवशिष्ट रहा, तब यह संयोगिकेयली हो गया और एक समय मनीयायहः ९०० तमय नगाशक्ष ६६१, तय वह स्वयामकवला हा गया आर एक समय मनापाण इंडिगोचर हुआ। यह सर्वागिकेवली जितीय समयमें यचनवेगी हो गया। इस ब्रह्म कारणबर् ठुणा । वह संवागकवळा । छताच समयम चवनवागा हा गया १००० घारों मनोयोगोंम और पांचा चचनयोगोंम पूर्वोक्त गुणस्यानीकी एक समयसम्बन्धी प्रकृ करना चाहिए। उक्त पांचों मनोयोगी तथा पांचों वचनयोगी मिध्यादृष्टि, असंयतसम्यग्टी, तंपवासंयव, प्रमचसंयव, अप्रमचसंयव और सयोगिकेवलिका उन्हार काल अन्हीर्ग

ंत्र... व्यवस्थित योगमं विद्यमान मिध्यार्राष्ट्र, असंयनमध्यग्रहीष्ट्र, संयनासंग्र जन्म नाववादात् वाच्या ।वयमान ।मध्यादार, वत्तवतृत्तकः । कृतंदन, (अग्रमक्तंत्रन) और सर्थातिकेवली उस योगसङ्ख्या काल्केस्य हो अ पात्रक योगको याम हुए। वहाँ पर नन्यायकवला उस योगसङ्ख्या कालक स्वय के वाहित योगको याम हुए। वहाँ पर नन्यायोग्य उन्द्रह अन्यसुहनकाल नक रह हरहे हैं

वांचो मनोयोगी और पाची वचनयोगी मामादनप्रस्पास्ट्रियोंका काठ ब्रोही t entrepristi ( 4. jg. 1, c.

र डावादन्डस्टर्ट, व क्रान्ट

ा स्टेशिया इति १ जाणात्रीतं पहुच्च जुद्दणीण एगी समझी, उत्तरतेण पनिदीनमस्स असं-हरा १ भाषामान ४३२४ जरूराच ५२॥ छन्या ५०००० व्यवस्था अस्ति । सेज्जीदेशामी; एमजीदे पहुच्च जरूष्येण एमसमञ्जो, उन्हरस्या छ आव्हिपाञी; स्पेरीह - क्या करे पंचमण-यविज्ञोगसाम्याणं औषमास्योहितो भेराभावा । एत्य विज्ञोग-गुणपरावति-मरणir eritir वाचादेहि समयाविसहैण एगसमयवस्त्रवा कायन्ता । উ মধ্যে सम्मामिच्छादिङ्टी केन्निसं कालादो होति, णाणाजीनं पडुण्न

जहण्णेण एगसमयं' ॥ १६६ ॥

H

प्य ४,१४४१ च । उदाहरणं- सम्बद्ध नमा बहुमा वा मिन्छादिही असंबद्दसम्मादिही संबदामंबदा पमचसंबदा या अत्पिद्गण-वृत्रिवांमेंसु हिदा अत्पिद्वागद्दाए एगसम्ब्रो अन्य का प्रमामिष्ट चे गर्। एससमयमध्यिद्द्योगेण सह दिहा, विदियसमए सब्दे अणीपद्दीरं वन्त्रातिक व्यवस्ति । द्रायम्बनात्त्र्यक्षात्रात् व्यवस्ति । एवं मरणेष विषय ज्ञान्यस्त्रात् व्यवस्तात् । महा । एवं मरणेष विषा ज्ञान-गुणपरावस्त्रं वाचादेहि एनम्बद्धस्त्रणा चितिप वचस्ताः

<sup>उद्भस्तेण पळिदोवमस्त असंखेडजदिभागो ॥ १६७ ॥</sup> वमस्य अमंखेनजदिमागायामस्युवलंमा ।

क्योंहि, माना कार्योही भवेशा जयन्त्रेत एक समय, उन्हर्गत पन्यायमका बर्ग-

वयात्वां भाग, यह जीवहां भवेशा जवात्वेश एक समय, अन्दर्भ परचारमका सस् वयात्वां भाग, यह जीवहां भवेशा जवात्वेश एक समय भीर जारतीस पर मावित्यां, इस वयानवा भाग, ५७ जायका अवस्ता जयन्यस ५७ लगप भार उत्करन छद मायादया, सम रुपते वांचा मनोदागी और वांचा यचनवोगी साताहनसम्बन्दिको सालादया, सम रुपत पावा मनायामा भार पावा वचनपामा सात्माहनसम्बन्धारणा हाल्हा साव-सम्बन्धी सासाहमोहे साहते होहे भेद नहीं है। यह पर भी योगपरावन्त गुनस्मा साव-सहक्ष्मा साक्षाद्वनार कालस काह भर गढ़ा हूं। यहा घर भा पानपरावनन सुनस्थानका पतंत्र, मरण भीर व्यापातके द्वारा मामामके मित्ररीयसे एक समयका मक्यणा करना सारिका

पृथ्वि मनीवीभी और पश्चि वचनयोगी सम्मीमण्यादि और किनन कान तक होते हूं है नाना जीवीकी अपेक्षा एक समय होने हूं ॥ १६६ ॥ त है। जीना आवारत अवसा एक समय है। १ ६ १ १ १ १ । उदाहरण— विविदेश समोदीम भवना वयमदीमाँ स्थित साम भार जन, सवस वश्वरण— व्यवस्था मनाचार मच्या वचनवाम १२वव सान बाद जन, बदय बहुतसे मिरवार्टी, संस्टेनसस्यार्टी, संस्त्रासंस्त अस्या प्रमनसंस्त्र और उस, बदसे

बहुतस सम्याम्। अस्तवास्त्रप्रमाः, त्रावास्त्रपत अववा अवास्त्रपत्र अव उस स्वसंस्त्र प्रेसके बावमें एक समय् अवसिष्ट रहे जाने एक सम्यामस्यापको मान हुए और एक धारकः वाजम यह समय अवाधेष्ठ रह जान वर सम्याभववात्वव मान दूध आर यह समयमात्र विषक्षित योगके साथ हरियोचर हुए। हिनोव समयमे समीव सभी अविवक्षित त्त्रभ्यमात्र विवासन्त प्राप्तः भावः भावः भावः द्वः । क्ष्याः भावः भावः । व्याः व्याः व्याः । व्याः भावः । व्य प्रोप्तको चले गये। देशो प्रकार प्रस्मके विना सच् वेगस्यावस्तेत् , गुणस्यात्रक्षात् । वागका चंद्र गया । इस्त प्रकार अट्यक ।धना दार धागवायवान, श्रीयाधानप्र स्थापान, इन मोनोकी अवसा वृद्ध समयकी महत्त्वला विमन वर्ष्ट करना चाहित् त्रवातिमध्यादि जीवोद्या उरब्हेट काल वस्त्रीयमहे अवस्त्रात्वे साम है ॥१६७॥

प्रमास कराराह अवस्था अपूर पाल प्रभावनक जावना व वार प्रभाव प्रमास करार पाल प्रभाव प्रभाव प्रभाव प्रभाव प्रभाव प यापमः असंख्यानयं भाग लक्ष्यं बाल तक पाया जन हैं। रे तार्वादादाकान अस्त्राहर अवस्त्राहर । ता वि ।

द अवदत् पृत्वीपवात्त्वद्वाताः । तः वि. १, ०

एगजीवं पड्ड जहण्णेण एगसमयं ॥ १६८ ॥

एत्थ वि मरणेण विणा गुण-जोगपरावत्ति-वाघादे अस्पिदण एगसमपपस्त्रण जाणिय वत्तस्या ।

उक्करसेण अंतोमुहृत्तं ।। १६९ ॥

उदाहरण-एको सम्मामिच्छादिट्टी अणिपदनोगे द्विती अध्यदनोगं पहिन्यो तत्थ तत्याओग्गकस्समंतोमहत्तमन्छिय अगप्पिदजोगं गदो । लद्धमंतोमुहुतं ।

चदुण्हसुवसमा चदुण्हं स्वया केविचरं कालादो होति. णाणाजीव

पडच जहणोग एगसमयं ॥ १७०॥

उवसामगाणं वाघादेण विणा जोग-गुणपरावत्ति-मरलेहि णाणार्जावे अस्पिर्ण एगसमयवरूत्रणा काद्व्या । सत्रमाणं मरण-त्रायादेहि विजा जोग-गणपरावतीओ हो चेव अस्सिदण एगसमयपुरुवणा पुरुवेदन्या ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त सम्यग्निथ्यादृष्टि जीवोंका जयन्य काल एक सम्य है।। १६८॥

यहां पर भी मरणके विना गुणस्थानपरावर्तन, योगपरावर्तन और व्याघात, हन तीनोंका आश्रय करके एक समयकी प्रकरणा जान करके कहना चाहिए।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त सम्यग्निध्यादृष्टि जीवोंका उत्क्रष्ट काल अन्तर्धुहर्त

है।। १६९ ॥

उदाहरण-अविवक्षित योगमें विद्यमान कोई एक सम्यग्निध्यादिष्ट जीव विवक्षित योगको प्राप्त हुआ। घहां पर अपने योगके प्रायोग्य उत्हृष्ट अस्तर्महर्त काल तक रह कर<sup>हे</sup> क्षविष्ठक्षित योगको चला गया। इस प्रकारसे एक अन्तर्महर्त काल प्राप्त हो गया।

पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी चारों उपशामक और क्षपक किउने

कारु तक होते हैं १ नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होते हैं ॥ १७० ॥ उपशामक जीवाँके व्याचातक विना योगपरिवर्तन, ग्रणस्थानपरिवर्तन और मरावे द्वारा नाना जीवाँका आध्य करके एक समयकी प्रकरणा करना चाहिए। श्रवक जीवाँकी मरण और व्याघातके विना योगपिरथर्तन और गुणस्थानपरियर्तन, इन दीनाँका भाश्रय टेकर ही एक समयकी प्ररुपणा कहना चाहिए।

१ एक जीवं प्रति जवन्यंनेकः समयः । स, सि. १, ८.

६ बस्बर्वेतान्द्रपृष्ट्रदेः । स. वि. १. ८. १ अपूर्णापुरवमकानी स्वरकाणी च नानाजीशरेत्वया एकजीशरेखवा च जनग्वेनेकः समयः। स. हि. १, ६

उक्स्सेण अंतोमुहुत्तं<sup>'</sup> ॥ १७१ ॥

तं जया-चचारि उनसामगा चचारि खनगा च अणिपदजोगे द्विदा अद्धानसः एण अपिपदजोगं गदा । तत्य अंतोम्रहुचमन्छिप पुणो नि अणिपदजोगं पढिवणा । रुद्धमंतोम्बहचं ।

एगजीवं पहुच्च जहणोण एगसमयं ॥ १७२ ॥

एत्थ एगसमयवस्त्रका खबगुवसामगाणं देशिह वीहि पयारेहि जाविय वत्तन्त्रा ।

उक्स्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७३ ॥

एत्य अंतोग्रहुत्तवस्त्वणा जाणिय वत्तव्या। एत्य एगसमयवियप्पपस्त्रणहं साहा-

एक्फारस छ सत्त य एक्कारस दस य णव य अट्टे या । पण पंच पंच विकित य दु दु दु दु एगे। य समयगणा ॥ ४१ ॥

कायजोगीस मिन्छादिडी केविंचर कालादो होति, णाणाजीवं पडुन्च सन्बद्धां ॥ १७३ ॥

उक्त जीगोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृहुर्त है ॥ १७१ ॥

यह इस मकार है - अधियक्षित योगमें स्थित बारों उपशामक और श्रवक श्रीव इस योगके कालश्येस विवक्षित योगको मात हुय। यहाँ पर अन्तर्गहुन्ते वक रह करके पुनरिय अधियक्षित योगको मात हो गय। इस मकारसे अन्तर्गुन्ते काल मान्त्र हो गया।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जपन्य काल एक समय है ॥ १०२ ॥

यहां पर पक समयकी प्रकरणा श्रवजीके योगपरावर्तन भीर गुजरवानपरावर्तनशी भपेशा दो प्रकारते भीर उपशामकोकी व्याधानके विना देग्य शीन प्रकारीते ज्ञान करके करना वाहिए।

उक्त जीवोंका उत्हार काल अन्तर्हरूर्त है ॥ १७३ ॥

यहां भारतमुंहर्तकी महराणा जान करके कहना खाहिए। यहां पर एक समय-सम्बन्धी विकरवाँके महराण करनेके लिए यह गाया है—

मिध्यादृष्ट्यादि गुणस्यानीमें मामदाः ग्वास्ट, छड, साल, श्वास्ट, बरा, मी. आट, पांच, पांच, पांच, तील, दी. दी, दी, दी और पक, दतने एक सायवसमध्यी प्रदच्याचे विकस्य होते हैं। दर, ६, ७, १८, १०, ९, ८, ९, ९, १, २, २, २, २, १ ६ ४० इ

कावयोगियों में मिथ्यादिए और बितने बोल तक होते हैं। नाना बीबोही अपेक्षा सर्वकाल होते हैं। १७४॥

१ इक्क्बेंशन्डईर्दः। सः सि. १, ८.

६ कापपीतिषु विन्वाददेशीयार्थात्रोक्षया वर्षः काळः । छ. छि. ६, ८.

ङ्दो १ सन्बद्धासु कायजोागिमिच्छादिङ्कीणं विरहामाता i एंगजीवं पहुच जहण्णेण एगसमयं ॥ १७५ ॥

रंग्यान १९७१ व्यवस्थानिक सम्मामिक्छादिङ्की असंबदसम्मादिङ्की संबद्ध संबदो पमचसंबदो वा कायजागदाए अच्छिदो । विस्ते एगसम्यावसेष्ठे मिन्छािदी नादो । कायजोमेण एगममयं मिच्छतं दिहं । विदियसमा अञ्चामां गरो। अपना मन विज्ञोगेसु अच्छिर्म्स मिच्छारिडिम्स वैतिमद्भाष्यण् कायज्ञोगो आगरो । एगजपं कापनोंगेण सह मिन्छचं दिहुं । विदियमंम् ए सम्मामिन्छचं या असंजर्भन सह सम्मर् वा संत्रमासंत्रमं अष्यमचमादेण संत्रमं वा पडिवण्गा। सद्धा एगममत्रो। एत्य मरानवार

देहि एगसमञ्जो' परिय । इदो ? मुद्दे नाचाहिदे नि कायजीमं में न्ल अव्यजीमामता। ज्कत्स्सेण अणंतकालमसंखेचा पोग्गलपरियर्ट्ट ॥ १७६॥ वं तथा—एमो मिन्छादिही मग-वचित्रोमेस अन्छिदो अदाखएन कावतीनी

क्योंकि, सभी कालोंमें कारयोगी मिष्यादृष्टि जीवोंके विरहका ग्रमाय है। एक जीवकी अवेद्या कावयामा मिध्यादृष्टि जीवोका जयन्य काठ एक सन्त £ 11 264 11

हों — यह सामादनसायाहाँदे, यथवा सामानिस्याहाँदे, भएवा प्रांपनसायाहाँदे संपन्न मंग्रामंत्रम्, भाषत्रा प्रमाणान्त्रम् साथा साथाग्रहणाहाष्ट्र, भाषत्रा प्राप्तवावन्त्रः सपना मृत्यामंत्रम्, भाषत्रा प्रमाणान्त्रं सीच कायवागान्ते काटमें विद्यासन् था। उस केटले कात्र समय मन्द्रीय रहेने पर यह मिरवारिष्ट है। गया । तब काववीमक साल प्र पटना ५६ समय धवराव रहन पर यह मिश्याहाँगु है। गया । तब कायधागक साथ प समय मिथ्यान्व रिश्तांबर हुमा युनः हिनीय समयम यह माथ थोगका स्थापाम स्थाप सर्वाचीत् भीत व्यवचीत्रमें विद्यमान मिरुपार्टीट जीविक उन योगीके काटसंबंग गयान नवा । तह पर समय कारवागर साथ विश्वाप्त उस वागर हमा। दुनः दिन्य सावणाः त्वरा १ एक कर कामन काननाहरू साथ । मध्यान्य हाश्यासर हुआ। युनः १३०० वर्षः सर्वाहरूपान्यहो, अथया सन्यमके साथ सरवक्त्रमहो, स्वयंत स्वसानंवनको, स्वयं सन्तम् केषद्व साथ संयम् वात्र हुना । इस वहार यह नमय रूप्य हो नया । वर्शन जनवान के प्रस्ता विभाग हो। इस प्रदार यह समय स्टब्स् है। तथा । प्रश्ना विद्या अपूर्ण है। तथा ह त्रित पर भी दावयागदा छाड्डर छात्र वागदा था व दे

ष्ट बीनहीं अपना कायथामी मिश्याहीष्ट्र नीनोंक्ता उत्हर काल अन्तनकातानक बर्गमयात्र बुहत्वराधिनतेन हे ॥ १०६ ॥

े हेट के कर के 10 कि 11 है दुन- मनोद म ध्वया वयने वंशमें व्ययम न यह मिध्याहिंदू ईव, इस देनह ton de productor day of a

t estrat excluser Person & G. C.

१, ५, १७८.]

जादे।, सब्युकस्समंत्रोसुद्वयमिष्ठद्ग एदंदिएस उप्पष्णाः । तत्य अणंवकारममंत्रेक्वन पोगगरुपरियद्वं कापजोगेण सद्द परिपट्टिद्ग आविष्ठयाए असंग्रेजदिमागमेचयोग्गरु-परिपट्टेसुप्पणेस वसेसु आगंत्य सब्युकस्समंत्रोसुद्वयस्थिय विवजीगी जादे। सद्दी कार्यनोगास्य सकस्मकारोः ।

सासणसम्मादिट्टिपहुडि जाव सजोगिकेविल वि मणजोगि-भंगो ॥ १७७ ॥

एदं सुचं सुगमं, मणजोगे णिरुद्वे पर्वचेण पर्विद्वचादो । णवरि मरण-वाचादा सम्मामिच्छादिहि-असंबदसम्मादिष्टीणं णिवा । साम्रणसम्मादिष्टि-संबदासंबद-वमचर्मबदानं वापादेण एगसमञ्जो णिवा, मरणेण पुण अतिव ।

ओराटियकायजोगीसु मिच्छादिटी केनिनरं काटादो होंति, णाणाजीवं पड़च्च सन्बद्धा ॥ १७८ ॥

हुदो १ ओरालियकायज्ञोगिमिच्छादिहिसंताणस्य सम्बद्धामु बोच्छेदामारा ।

कालराय हो जानेसे काययोगी हो गया। यहां पर सर्वोत्तर भारतमुंहर्नकार तक रह करके परेतित्रयोगें उत्तरम हुमा। यहां पर भारतकालप्रमाण भारत्यात पुरस्वायिक काययोगके साय परिवर्तन करके भावसीरे असंस्थातमें भागमात्र पुरस्वायिकों हो एक रहते पर असजीवोंने भारत भीर सर्वोश्वर भारतमुंत काल रह करके चक्रवोगी हो गया। इस मकारसे काययोगका जरहर काल मात हुमा।

सासदनसम्पर्धि शुणस्थानसे ठेकर सयोगिकेवटी गुणस्थान तक काव-योगियोंका काल मनोयोगियोंके कालके समान है ॥ १७७ ॥

यह पुत्र सुगम है, वर्षोक्षि, मनोयोगके तिरुद्ध करनेवर वहले प्रवेदो (विक्ताको) प्रकृष क्रिया जा पुत्र है । विरोध बात यह है कि कायवारी सम्बोधस्यादि और स्रवेदन-स्वयादिवीके मध्य और व्यापात नहीं होते हैं। तथा बायवारी सासाहकसम्बद्धाहर संवतासंवत और प्रमत्तरंग्रीके प्यापातको संवसा यह समय नहीं होता है, विश्व सत्वरंग्र संवतासंवत और प्रमत्तरंग्रीके प्यापातको संवसा यह समय नहीं होता है, विश्व सत्वरंग्र

जीदारिककाययोगियोंमें मिध्यार्टाट और किठने काल तक होने हैं। माना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं॥ १७८ ॥

क्योंकि, भीदारिकवाययामी मिष्याद्धि जीवीकी परम्परोक सभी काटोंबे क्विन्तु-वृक्षा भमाव दे।

## एगजीवं पहुच जहण्णेण एगसमयं ॥ १७९ ॥

. एस्य मरण-गुण-जोगपरावचीहि एगसमये। प्रवेदव्यो । बाबादेल एगसमाने । उच्मदि, तस्स कायजोगाविणामाविचाटो ।

## उनकस्सेण वाचीसं वाससहस्साणि देसृणाणि ॥ १८० ॥ वं जवा-एगे विशिवको मणस्मो देवो वा वाचीसमहस्सवागाउद्विरिष्य एर्गिण्य

प जना न्या। ातात्रस्या मणुस्सा द्वा वा वावाससहस्सवासाउद्दिहरमु एश्वय उववण्णो । सञ्चनहष्णेण अंताप्रहृचकालेण पञ्जिष गदो । ओरालियअपञ्चनकालेणुर्व वावीसवाससहस्साणि ओरालियकायज्ञोगेण अच्छिय अष्णजोगं गदो । एवं देसण्वातीक वाससहस्साणि जादाणि। अथवा देवो ण उप्पादेह्द्वो, तस्स ज्ञहुष्णअपञ्चनकालाशुवर्जम।

सासणसम्मादिट्टिप्पहुडि जान सजोगिकेविल ति मणजोगि भंगो ॥ १८१ ॥

एदस्स सुचस्स अत्यो सुगमो, पुर्व्यं परुविद्वादी । णवरि वापादेण एत्य एक् समयपरुवणा परुवेदच्या ।

एक जीवकी अपेक्षा औदारिककाययोगी मिच्यादृष्टियोंका जपन्य कार एक समय है ॥ १७९ ॥

यहां पर मरण, गुणस्थानपरायतन और योगपरायतनकी अपेक्षा पक समर्प मरुपणा करनी चाहिए। किन्तु यहां पर व्याधातकी अपेक्षा पक समय नहीं पाया जाता है, क्योंकि, यह काययोगका अविनामार्थी है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल कुछ कम बाईस इजार वर्ष है ॥ १८० ॥ जैसे—एक विषेच, मतुष्य, अध्यया देव, बाईस इजार वर्ष हो आयुस्पिविवाले दें दिन्नोंमें उत्पन्न हुआ। सर्वज्ञयन अन्तर्गृहुंकालंत पर्वातपनेको आत हुआ। सुरः एवं श्रीदारिकारिकार्यागे काल की साम हिमार वर्ष औदारिकार्यागों के साम करके पुतः अन्य योगको आत हुआ। इस प्रकारिक कुछ कम बाईस हजार वर्ष हो जाते हैं। अस्पित स्वात् कुछ कम बाईस हजार वर्ष हो जाते हैं। अस्पात स्वाप्त कुछ कम बाईस हजार वर्ष हो जाते हैं। अस्पात स्वाप्त कुछ कम बाईस हजार वर्ष हो जाते हैं। अस्पात स्वाप्त कुछ वर्ष वर्ष पर हो जाते हैं। अस्पात स्वाप्त करान स्वाप्त करान वाहिस, क्योंक, देवोंसे साकर परेतिह्रयोंने क्या होनेवाले जीवके जयन्य अपरांतहाल नहीं पाया जाता है।

सामादनसम्परहरिषे ठेकर सपोगिकेवली गुणस्थान तक श्रीदारिककायपोगियाँग काल मनोपोगियोंके कालके समान है ॥ १८१ ॥

इस स्वका मधे सुगम है, क्योंकि, गूर्वम कहा जा सुका है। विदेश बात वह है वि यहां पर व्यापावकी मेरसा एक समयकी प्रकृता करना चाहिए। ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्टी केनिवरं कालादो हॉति, णाणाजीवं पडुच्च सन्वद्धा ॥ १८२ ॥

करो १ जोरालियमिस्सकायजोशीम मिन्छानिहिसंवाणनोन्छेदस्स सम्बद्धाम जमाना। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसम्बर्णा ॥१८३॥

तं बहा- एमो एईदिओ सहमवाउकाइएस अघोलोगेते हिएस खुदामबग्गहणाउ-हिदिएस तिष्णि विग्गहे काऊण उपवण्णो । तत्य तिसमकणसुरामबग्गहणमपन्त्रचे। होद्ण बीविय मदो, विग्गहे काद्ग कम्महयकायजोगी बादो । एवं तिसमऊलसुरामबन् ग्गहणमोरालियमिससबहण्यकालो जादो ।

उक्तस्तेण अंतीसुहुत्तं ॥ १८४ ॥ तं ज्ञथा- अपज्ञक्षण्यः उपवित्वयः संग्रेज्वाणि भरम्गद्दणाणि तत्त्यः परिपद्भियः युगो पञ्जक्ष्यः उपवित्वयः ओसालियकायजोगी बादे। । एदाश्रोः संग्रेज्वभरग्गद्दगद्दाको मिलिदाओं यि स्टूचससेवे। चेत्र होति ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिष्यादिष्ट और कितने काल तक होते हैं ! नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १८२ ॥ वर्षोंक, औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिष्यादियोंकी वरस्वराके विष्टेक्का सर्व-

काळॉमें भभाव है।

एक जीवकी अपेद्या औदारिकमिश्रकाययोगी मिश्यादृष्टि श्रीबोंका अपन्य काल होन समय कम शुद्रभवप्रदणप्रमाण है ॥ १८३ ॥

असेन प्रतिष्ठित और अधिलोक्ते अत्वर्धे दिया और शुद्रमयमहम्मसम्ब आयु.
स्थितियात्रे स्वमयापुकापिकार्मे तीन विमद करके अत्यत्र हुमा। वर्श पर तीन समय कम सुद्रमयमदणकाल तह सर्वययांचा हो, जीवित वह कर मरा। पुनः विमह करके कार्नेक नायगारि हो गया। इस मकारसे तीन समय कम शुद्रमयमरणममाच औरग्रविक्रीमकाप-योगका जयम्ब काल तिर्द्ध हुमा।

उक्त जीवोंका उत्हार काल अन्तर्शहर्त है ॥ १८४ ॥

जैसे— कोई यक जीव सम्प्ययां जारों उत्पन्न होक्ट संकान सहसहस्त्रसाद इनमें परिवर्तन करके पुनः पर्याज्यों उत्पन्न होक्ट भौगारिककारयोगी हो गया। इन सब संकात सर्वोद्धे सहच करनेका कास सित्त करके भी गुरुतके मन्त्रपत्र ही रहता है, अधिक वहीं होता है। सासणसम्मादिट्टी केयियरं कालादे। होति, णाणाजीवं पर्न जहण्णेण एगसमयं ॥ १८५ ॥

रं ज्या- सचह जणा बहुआ वा सामणा सगदाण एगममश्रा अहिंग वि अंग लियमिस्सकायजोगिणी जादा । एगसमयमञ्जिदण विदियसमण विच्छनं गदा। स्वे ओरालियमिस्सेण सामणाणमेगममञ्जो ।

#### उक्कस्सेण प्रटिदोवमस्स असंखेडजदिभागो ॥ १८६ ॥

तं जधा- सचट्ट जणा बहुआ वा सातणा ओराहियमिस्सकायजोगिणो जाता! सातणगुणेण अतेमिहुचमन्छिय ते मिन्छर्च गदा। तस्तमण् चेय अण्ये सातणा जेण हियमिस्सकायजोगिणो जादा। एवमेक-दो-तिल्ये आदि काद्ण जाव उक्स्मेण पश्चि चमस्स असंखेन्जदिमागमेचवारं सासणा ओराहियमिस्सकायजोगं पडिवज्जदिखा। ले णियमा अंतरं होदि। एवमेस कालो मेलाविदो पहिटोबमस्स असंसेन्जदिमागो होदि।

#### एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १८७ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्पग्दाट जीव कितने काठ तक हो<sup>ते हैं।</sup> . नाना जीवोंकी अपक्षा जयन्यसे एक समय होते हैं ॥ १८५॥

जैसे—सात बाड जन, बचवा वहुतसे सासाइनसम्यन्दिए जीव, अपने योगके कर्ण पक समय बबदोप रहते पर औदारिकमिश्रकाययोगी हो नये। उसमें एक समय रह इसे द्वितीय समयमें मिष्यात्यको मात हुए । इस प्रकारसे औदारिकमिश्रकाययोगके हार सासाइनसम्यन्दिएयोका एक समय सम्य हुआ।

उक्त जीवोंका उत्क्रष्ट काल पत्योपमके असंख्यावर्षे भागप्रमाण है ॥ १८६॥

जैसे— सात आड अन, अथवा बहुतसे सासाइनसम्बन्धि जी व औदारिकमिष्रार्थ योगी हुए। सासाइनगुणस्थानके साथ अन्तगृहते काल रह करके पीछे वे मिष्यात्यहे जी हुए। उसी समयमें ही अन्य दूसरे सासाइनसम्बन्धि जीव औदारिकमिष्रकापूर्वे हुए। इस प्रकारसे एक, हो, तीनको आदि करके उत्कर्षसे पत्योपमके असंस्थात्य मानती यार सासाइनसम्बन्धि जीव औदारिकमिष्रकाययोगको प्राप्त कराना चाहिए। इसके प्रकी नियमसे अन्तर हो जाता है। इस प्रकारसे यह सब मिलाया गया काल पस्योपमके अर्थ

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य कारु एक समय है।। १८७॥

र्त जपा- एको सासणो सनदाए एगसमञ्जो अत्य चि ओराठियमिस्सकायजोगी जादो । विदियसमए मिच्छच गदो । ठद्रो एगसमञ्जो ।

उक्करसेण छ आविलयाओ समऊणाओ ॥ १८८ ॥ .

र्त जया- देशे वा ण्राह्ञो वा उत्तमसम्मादिही उत्तमसम्मवदाए छ आवित-यात्रो जित्य वि सासर्व गरे। एगसमयमन्छिप कार्ल करिप विशिक्त-मणुरसेस उत्तु-गरीए उववन्त्रिय जोतालिपमिसस्कापनोगी बारो। समऊग-छ-आविल्यात्री अन्छिप क्रिक्टन गरे।

असंजदसम्मादिही केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोसहत्तं ॥ १८९ ॥

तं बधा- सचह जणा बहुमा वा असंजदसम्मादिहिणो णराया ओराठियमिस्त-कायजोगिणो जादा । सम्बल्हं पञ्जींच गदा, बहुसागरीवमाणि पुच्चं दुबरोण सह दिदचारो ।

उक्करसेण अंतोम्रहत्तं ॥ १९० ॥

कैसे— यक सासाइनसम्यन्दि जीव मयने कालमें यक समय मवतिष रहने पर भीदारिकमिश्रकाययोगी हो पवा भीर दितीय समयमें मिण्यात्यको मात हुमा। इस मकार यक समय मात हो गया।

उक्त जीवोंका उरहरू काल एक समय कम छह आवलीप्रमाण है।। १८८।।

अँते— कोई यक देव अथवा नारकी उपरामसम्बन्धि औव, उपरामसम्बन्धके कालमें छह आवली कालके दोव रहते पर सामाहन्यसमानको प्राप्त हुमा। वर्षा पर यक्त समय रह करके मरण कर विवेध और मनुष्योम कनुष्यति जल्पन होकर औहारिकानिय-कावयोगी हो गया। वर्षा पर यक समय कम छह आवसी तक रह करके मिच्यानको प्राप्त हुमा।

श्रीदारिकमिश्रकाययोगी असंयवसम्पन्दिष्ट जीव कितने काल तक होते हैं। माना जीवोंकी अपेक्षा जयन्यसे अन्तर्मुहते काल तक होते हैं।। १८९॥

असे— सात बाट जन, अपना बहुतसे मसंगतसम्बन्धि नारको आप भीतारक-मिभकाययोगी हुद । और बहुतसे सागरायम कात तक पहले दुःसीके साय रहे हुए होकेसे सर्वलयु कालसे पर्यास्त्रियोको बात हुए ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मृहर्त है ॥ १९० ॥

12.4.1

तं वया- देव-गिरस्या मणुस्सा सचह जणा बहुआ वा सम्मादिष्टिणो अत्ताः मिस्सकायजोगिनो जादा । ते पज्जितं गदा । तस्समए चेव अष्णे असंबद्धमम्प्रितं जोगानियमिस्सकायजोगिणो जादा । एवमेक-रो-तिष्णि जानुकस्सेण संखेजबराता । एदाहि संखेजबस्तामाहि एगमपज्जिचद्वं गुणिदे एगमुद्रचस्स अता चेव जेण होति, अनेन्द्रदृष्टिमिदि युनं ।

#### एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहृतं ॥ १९१ ॥

वं जपा-एको सम्मादिही वावीस सागरीयमाणि दुक्केकस्यो होत्व जीवि छट्टीरो उन्तरिय मणुसेसु उपाण्यो । विम्महगदीए तस्त सम्मनमाहपेण उपशिक्षक केम्मन्त्रम् आरातियगामकम्मोदएण सुअंघ-सुस्त-सुरण-सुद्रपानप्रमाणुगेम्बन्धा कामन्त्रीतं, तस्म जोगयद्वत्तर्यमणारो । एदस्स जहण्यिषा आरातियमिस्महायशेम कहा होति ।

#### रक्करोण अंतोमुहत्तं ॥ १९२ ॥

हैंगे— देव, नारकी, संघया सनुष्य सात आठ जन, अघया बहुतसे सानव हैंच, भैरारिविधाकापयोगी हुए। ये ताव पर्योत्तयनेको आग हुए। उसी सावप्रे हैं। है अर्थ्य बन्द्रक संब्यातयार तक साथ साथ साथवासायग्रादि क्षीय निधकापयोगी होते हैं। इस संचय कार्य साथवासायोगी यक साथवासायग्रादि क्षीय निधकापयोगी होते हैं। इस संचयत साथवासायोगी यक साथवासायको गुणित करने पर वह सब बात वृद्धि क हुनुदेव अन्तर्यत हैं। होता है, इसलिए स्वकारने साथगुँडूने काल कहा है।

इ.स. अंदरी अवया उक्त अविदेश जपन्य काल अन्तर्मृहते है ॥ १९१ ॥

बैंग्र— छरी पृथिनिका कोई एक सम्यादि आस्त्री बाईन सागर सह रूगीने व वस असीन अन्यादि विकास कीता वहा। पुत्रा छरी पृथिनीमे निकलकर महुवां सच्छ हुवा: विकासिनी, सम्याद्यके आहालमाने बहुयमें साथ है गुनववहितो पृथ्वाया दिवके वेच उस बीची भीतारिकासकार्यके उनुमा सुविध्या, सुरुस, सुपूर्व की हु कर्मा है हुइल्डाम्बा बहुद्दाती भाव है, नगींड, इस समय हुनके पावडी बहुबता हैवं असी है। वेच बोचे भीताविकास स्वात्र वाल होता है।

क्क केरके कोचा केलामिक्सियकाययीमी अर्थयत्वाचारियोध प्रकृति

ŗ

ŕ

एदं कस्स होदि ? सम्बद्धाराद्वीवमाणवासियदेवस्स तेवति सागरीवमाणि झुइ-लालियस्स पहुद्धदेवलस्स माणुसगन्मे गुरु-सुवंत-पित-सासि-वस-सा-सा-लोहि-सुक्कामाद्विदे अद्दुन्गोपे द्रसं दुष्यत्वे दुष्याते पमार्ड्डोयमे उप्पण्यस्स, तत्य मेदो जोगो होदि वि आदित्यपंप्तासद्वदेसा मंद्रजांगेण योगे पोरगठे नेण्डंतस्स ओतालियमिससद्ध दश्च होदि चि उपं होदि । अथया जोगो एत्य महल्लो चेत्र होदु, लोगरसण् वर्षक्र पोगस्स आगच्छा, तो वि एद्स्स दश्चि अपन्वसद्धा होदि, वितिसाय द्रित्यस्य सर्ष्ट् पन्वसि-समाणणे असामित्ययारे।

सजोगिकेवली केविषरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च जहः ष्णेण एगसमयं ॥ १९३ ॥

एसी एगसमजी फस्त होदि? सचहजणाणं दंडादो कवाढं गृत्ण वत्य ध्यसमय-मच्छिय रुजर्ग गदाणं, रुजगादो कवाढं गृत्ण एगसमयमच्छिय दंढं गदकेवटीणं वा ।

र्शका- यह उत्हार काल किस आंचके होता है ?

समाधान—सेतील सागरेत्यमकाल तक सुखरी लालित पालित हुद तथा दुःसीत सरित सर्पार्थालियितात्रियात्रा विवस विद्या मुन, बांतरी, विद्या, करित (क्या) वर्षी, मार्गाववात्र सर्पार्थालियितात्र्या प्रयो मार्गाववात्र स्वाद्या कर्या हुन हुन स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या कर्या हुन स्वाद्या स्वाद्या हुन स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्

औदारिकामिश्रकाययोगी सयोगिकेवली कितने काल वक दीते हैं है नाना शोरोडी अपेक्षा जपन्यसे एक समय दीते हैं 11 १९३ 11

द्यंका-चह एक समय शिलके होता है ?

स्मापान—दंबसमुक्तातरे करादसमुक्तातको मात होवर और वहाँ पर समय रह कर मतरसमुदातको मात्र हुए सात मात्र केयकियोके यह पक समय होता है। अपन्त, रुपकसमुद्रातको करादसमुद्रातको मात्र होरू से पर समय रह वरके दंशसमुद्रातको मात्र होतसात केयकियोके यह पक समय होता है।

१ का पड़ी " वस्त्रति समानो " इति पाडः इ

र्व बधा- मिच्छादिद्वि-असंबदसम्मादिद्विणो देवा णेरहणा वा गवनविकेषे द्विदा कापजोगिणो जादा । सच्युक्कस्समंतोष्ठहुचमच्छिप अष्णजोगिषो बादा। अर मंतोष्ठहुचं ।

सासणसम्मादिही ओघं ॥ १९९ ॥

पाजाञीतं पदुच्च जहप्योग एगसमन्नो, उक्तस्येण पिठदेश्वमस्स अमंबेज्जिरियके एगजीतं पदुच्च जहप्योग एगसमन्नो, उक्तस्येग छ आवलिपानी, इवेदेहि जोपसाक्यो मेरामाता ।

सम्मामिच्छादिद्वीणं मणजोगिभंगो ॥ २०० ॥

पानावीरं पद्म जहुण्येण एयसमञ्जा, उक्करसेण पतिद्वारमस्य असंवेजिदिवाले एमवीरं पद्म जहुण्येण एगा समञ्जा, उक्करसेण अतामुहुचिमिषण्य मणश्रीविक्स्य मिन्द्वारिद्वारिता वेजित्वयकायजागिसम्मामित्व्वारिद्वीणं विसेसामासा ।

वेउन्त्रियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिङ्की असंजदसम्मादिङ्की 👯 निरं काटादो होति, णाणाजीवं पदुच्च जहण्णेण अंतोसुहत्तं ॥२०१॥

क्रेंग-- समीयोग या वयनयेशामें स्थित मिष्यादृष्टि और वार्गयत्वाववृद्धि हैं देव क्यारा नारकी क्षीत वितियवक्याययेशी हुए और उनमें स्थालहर धानाईहाँ क्या कर करके अन्य येलाया दे हो गये। इस मणारी उत्तर कालकण धानाईहरी मात हो गया।

देशिरिककावयोगी गामाद्रमण्डपष्टि जीवींहा काल जोपके ममान है। ११९ । माना जी तेथी कंपसा कण्यति एक समय, उन्तरीय पर्योगमण समेश्यावर्ग करे. इस्ताबद क्षेत्रिकी मोता कण्यति एक समय और उन्तरीय एक सावशी, इस क्षेत्रे को क्षार्वरीय स्थापनावर्गाक सावशे कमी वेशी तह सर्वी है।

देशियद्दशयथीयी मध्यम्ब्यादीय श्रीतीहा काल मनीयौतियों हे मन

हैं ( २०० )) बारा प्रीयोधी मोधा प्रयान कार जक समय, मधा प्रस्तृ काल वालायावा वर्ग

करानक प्राप्त है। वह प्रेनकी संपक्ष ज्ञानक नासन, नगी उत्तर कार्य पाना करानक प्राप्त है। वह प्रेनकी संपक्ष ज्ञानमंत्र कह समय कीर प्रकारित कार्यपूर्व है। ज्ञानक क्रमेनकी कव्यक्तिकार होएं जीवीस वैश्वितकह गयेगी। स्वाधीकार्यादिसी वर्षि केंद्रे हिल्लामंत्र वहीं है।

रिवरिकानकावयोगी की सेंवे जिल्लातीन और अर्थयनगणपारीन और सिंवे कात तक देते हैं। बाबा की रोबी अरोबी जारवीन अरतेनुत्वे कात तक देरी हैं <sup>सुत्राही</sup> एत्य तार मिन्डादिहिस्स जहण्णकाला गुण्दे- सपष्ट जमा पहुत्रा वा दस्वस्तिगिणो उविभिमोबज्जेस उववण्णा सम्बल्हमुंबीसुन्देण पत्रज्ञांच गदा। संपद्दि सम्मादिहीणं जुणदे-संखेज्जा संजदा' सन्यहदेवस दो विमादं कादण पज्जिंच गदा। क्रिमट्टं दो विमादे करा-विदा १ बहुवोगगलम्बल्हं । सं वि क्षिमट्टं १ थोवकालेण पत्रज्ञिसमाण्हं । मिन्छादिही दो विमादे क्षिण्ण कराविदो १ ण, तत्य वि पहिसेद्दामाथा।

उकस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०२ ॥

सत्तद्व जणा उक्करसेण असंखेडजिटेका वा मिच्छारिट्टियो देव-गरस्प्र उप-विजय वेउव्यिमस्सकायओगिणो जारा, अशोष्ट्रचेण पञ्जिल गरा। तस्मम्प चेव अणो मिच्छारिट्टियो वेउञ्जियमिस्सकायओगिणो जारा। एवमेक्क-देा-निन्न उक्करमेन पिट्टोवमस्य असंखेडजिट्मागमेचाओ सलागाओं सन्मेति । एदादि वेउव्यिमस्स्व

यहो पर पहले भिष्णारिक्ता जाग्य काल वहते हूँ— सान बाड जन, सप्या बहुतसे हृष्णांलेगी और उपित पंथेयवाँमें उत्पन्न हुए और सर्पल्यु स्वत्याहर्नेकाससे पर्याप्तकरनेको साम हुए अब साम्यारिका जाग्य काल कहते हूँ— संक्यात संयत हो किस्ह करते सर्पार्पासिज्ञियानायासी देवाँमें पर्याप्तियाँकी पूर्णको साम हुए। ग्रीस — दो पिनह किस किए कराये तो है है।

समापान—बहुतकी पुद्रह्वयर्गणामाँके प्रदण करानेके हिप हो विग्रद कराये गये हैं!

ग्रंका—बहुतसे पुरलोंका ग्रहण भी किसलिय कराया गया र

समाधान—मन्यकालके द्वारा पर्यास्तियोंके सन्यम करनेके लिए बहुनसे पुत्रतींका महण भावदयक है।

र्यका-मिध्याद्यक्षि जीवके दो विमद वर्गों महीं कराये गये !

समापान-नहीं, क्योंकि, उनमें भी प्रतिवेधका अभाव है, अर्थान् मिस्तारीह जीय भी दो विमह कर सकते हैं।

वैक्रिपिकमिश्रकाययोगी निध्यादृष्टि और असंयत्तमस्वरृद्धि बीक्रोंका उत्कृष्ट काल पत्योपमके असंस्थातर्वे माग् दे ॥ २०२ ॥

सान आह जन, सथया उन्करीते ससंस्थानस्थितान विश्वाहारि और देव, स्वयं न नारकियोंने उत्पन्न होकर पैतियिकीमधकाययोगी हुए, और सन्तर्गहुर्नने यहाँ निर्देश पूर्वताको प्राप्त हुए। उसी समयमें हो अन्य विष्याहरि जीव पैतियवनिधकायपेणी हुए। इस प्रकारते एक, हो, तीनवी आहि क्षेत्रर पत्योपम्बं ससंस्थानमें सायमान

र स सान्य प्रतिषु "सदीरवार्तकेष्या सवदा १ स. २ प्रती द्व रवीहतः पाटर। २ स-प्रान्त प्रतिषु "समादारी" रति पाटी नारित १ स.२ प्रती द्व सरित १

ग्रिणिदे पलिदोबमस्स असंखेजिदिभागमेचो वेउ*ित्रपा*मिस्सकालो होदि । असंबर दिहीणं पि एवं चेत्र वत्तव्यं । णविरि एदे एमसमएण पिन्दीत्रमस्स असंसेन्स भेषो उबकस्सेण उपपडवंति, राधीदो वेउव्यिमिस्सकालो असंस्वेज्ज्युणी। तं क्रं ग आइरियपरंपरागदुबदेसादे। देवलीए उपवजनगणसम्मादिद्वीहिती देव भएरस्य उप

जारपा प्रभाव हुन राज्या । जाराज्य जाराज्या गाया स्थाप १४ व्यास्थ्य जार माणमिच्छादिष्टी असंसेज्जसेहिषुणिदमेचा हैं।ति चिकालो त्रि तात्रदिगुणो क्रिण है त्ति युत्ते, ण होदि, उहपस्य वेउन्त्रियमिससद्वासलागाणं पलिरोगमसस् असंसेन्स्री मागमेनुबदेसा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०३॥ रं नियान पड़को दश्यक्तिमा जनाश्रिष्ठ ए ॥ ५०२ ॥ मंनोमुद्रुचेम पड़जींचे महो । सम्मादिद्वी एको संजदे। सम्मद्रुचेस दो विगदे कार्य जनवणो, समज् उत्राच्यो, सब्बलहुमंतीमुहुत्तेण प्रअति गरी ।

भीने विकासिध कायपोगी भीयोंकी रालाकार्य पाई जाती है। इनसे मैक्सिकिसिमार / योगहर कालको गुणा करने पर पश्चीपमुदे असंस्थालय मागममाण धिकापिकारी पामका काल होता है। अभेयतसम्प्रकृषियोक्षा भी काल हसी प्रकारसे कहता क वाराचा कार्य बारा घर कार्यावाराव्याच्याच्याचा भा काळ इसा अकारस कार्या व्य विरोष बात यह दे कि ये असंयुक्तसम्पार्शीय भीव एक सभवमें परपोपमके मसंस्थानहरू १४२।४ कान पद ६ १८ व सरावाताव्याहाय जाव एक समयम प्रवासक कार्याता मात्र उष्ट्रस्त्रासे उत्पन्न दोने हैं, क्योंकि, इस उत्पन्न दोनेवाली रासिसे वैकाविकानेमा योगका काल अर्लक्यानगुणा है।

प्रमाधान — भाषाधीवरस्परागत उपदेशसे जाना आता है कि एक समदर्ने उत्तर हीत्रेवाली ससंयनसम्बाद्धिसीतास उक्त काल ससंस्थानसुमा है। होता - देवलाहमें कणात्र देनियात्र वास्त्रवालाहणा है। वहाँ - देवलाहमें कणात्र देनियात्र वास्त्रवालियोक्षेत्रवया माराव्यति ।

रोनेबाहे विश्वारीय तीय अवन्य में धावपान राज्यासायवास स्वया माधारपान । सोनेबाहे विश्वारीय तीय अवन्य में धावपान मुग्नित्यमाण होते हैं, हैगायिय विश्वो

मिमाधान वसा भागाम पर उत्तर उत्तर हाता है। वसा भागाम पर उत्तर उत्तर है। है नहीं हाता है। क्याह, सारी ्या कर्म इस्ति प्रमान सम्याद हे बाद प्रस्तिनगढ । इ. गढी होता है, क्याक, क्या इस्ति प्रमान सम्याद हे बाद प्रस्तिनगढ । इस्ति होता है, क्याक, क्या च्या कर जाताच्या जा पाठ कार अध्ययकारशास्त्र पाठावकारधारणाव्या क्षेत्रभक्ता राजाकारमञ्जूषात्रकः अधिकार्यान् भागसाय कारका कार्या है।

वह बोहरी अपना इन बोहर हा तपन्य हाट अ-105न है।। २०१॥

कह उत्योदना बाच ह्यातम् वाच मा मान्यः कादः मनापुत्रः ह ॥ ०००॥ वह उत्योदना बाच ह्यातम् वाचमार्थे हा १४४६ हमा वास्मारी

हर्ने हे हैं को प्रयास मानु हेवालम या प्रकार मानुवाद कर है अन्य हैना भार भारत बहुत्सा करात के या विकास हैना अके संस्थानिय भारत होना भार भारत स्थारत करात के या विकास सम्मानिया के स्थानिय स्यानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थ द्वारा इत्ता प्रयानपत्ति। प्राप्त हुनः । यह महानुस्य भागानमा महत्त्व स्व कान । वर्षामा इत्त्वेत्र वः व्यवह इत्तर हुनः । यह महानुस्य भागानमा महत्त्व स्व कान । वर्षामा महत्त्व ।

उक्कस्सेण अंतोमुहृत्तं ॥ २०४ ॥

तं जधा- एको विश्वित्वी मणुरसी वा मिच्छादिही सचमपुर्वविणेग्हणुमु उत्रवच्छी सन्वितिरेण अंत्रीमुहत्तेण पञ्चितं गरी । सन्मादिहिस्म- एवी बद्विरपाउत्री मन्मूर्च पंडियन्त्रिय दंसणमोहणीयं राविय पदमपुद्रविणेरहण्यु उत्तवन्त्रिय मन्यियेण अंतीमृत्रुचेल पन्जिस गरे।। दोण्हं जहण्मकालेहिंवो उपस्तकाला दो वि संगेत्रज्ञगुणा। कपमेर् पन्नेर ? गुरूबदेसादी ।

सासणसम्मादिडी केविवरं कालादो होति. णाणाजीवं पद्म जहण्णेण एगसमयं ॥ २०५ ॥

र्त जथा- सचह जणा बहुआ वा मानगमस्मादिहियो नगदाए एसी समक्षे अश्यि वि देवेत उत्रवरणा । विदियसमर् मध्ये भिन्छत् ं गरा । सट्टी एग्रमझे ।

उक्करसेण पछिदोवमस्स असंखेऽजदिभागो ॥ २०६ ॥

एक जीवकी अवेधा उक्त जीवोंका उत्हृह काल अन्तर्महर्त है ॥ २०४ ॥ असे - बोर्ड वक तियेच अथवा मन्द्र मिश्यादृष्टि और सानकी एकिहाँहे आर्थि होते

उत्पन्न हुआ और सबसे बड़े अन्तर्भुट्टर्नबालने पर्वाभियाँकी पूर्णनावी प्राप्त दुशा। अब ससंवत्तसायाद्विकी बालप्रक्षपणा करते हैं-केंद्र यक यहनरकायाक अधि सावक करें। आव दीबार दर्शनमोहनीयका शपण करके और प्रथम पृथियोंके नारिक्षोंमें रूप्या होकर सबसे बढ़ भारताहर्तकाल ते पर्यातियाँकी पर्याताकी माध्य हमा । दोनाँके अध्यय बाहराँसे बोसी है। बाह्य काल शब्यातमुणे हैं।

शंका-पद केसे जाना है

समापान-गुरके उपहेरासे जाना कि बैकियिकामधवायदीनी विश्वाहिक क्षेत असंवतसम्बारिक वहा जीव की अवेशा बतताय बार अधन्य बाहाँ में हर्नी हे अपन बाह भारतमेहर्नप्रमाण है।ते हुए भी संर्यानगुणित हैं।

वैक्रिविकामिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्द्राष्ट्र और दिवने दात हुट होते हैं !

माना जीवींकी अवेक्षा जयन्यसे एक समय होते हैं ॥ २०५ ॥

अते — सात बाह हत, भगवा बहुत्तसे सामाद्वसम्दर्श के व अपने तुलवद्य वहे कामप्रे यह समय अवदीय रहने पर देवींने उत्तव हुए और दिनीय सहदने सरदे सह भिश्यान्यको मात हुए। इस मकार एक समय मान हो गया।

उस्त औरोबा उरहृष्ट बात परयोगमधे अनंत्यावर आग्रहमान है ॥ २०६ श द प्रतिष्ट के बार्थ करते हैं है है है है

ते बहा- सनद्र जमा आहुकस्तमेन पनिदेश्यमस्य असंनेव्यदिमावयेण व का वेन्तिन समर अदि कार्म जार उत्तरमंग समऊन-छ-आरनियामे सम्बद्धाः की ति देशेनु उत्तरमा । ते सम्ये कमेन मिन्छने गहा । तस्त्रमण् चेर पुर्ध र कार्य देशेनुकरमा । एवं निर्देशे पानावितः अस्मिद्य सामग्रद्धाः पनिदेश्यमस्य अविवेदकी कार्यक्षा स्वास्त्रीये असंनेवक्षाण आहा नि ।

एगर्जावं परस्य जहण्णेण एगसमयं ॥ २०७ ॥

र्व जरू- प्रको सामने। समदाए एमसमन्नो मन्त्रि ति देशेगुराको, स्पिक इक्क विकार को र तदी समस्यो।

उरमञ्जा छ आपलियाओं समजणाओं ॥ २०८॥

र्ग जना-राक्षेः तिनित्योः मणुष्योः या उपसमयम्मणद्वात् **छः अ**वित्याः के कोकति कामार्त्तः सेन्द्रण यूनसम्बन्धाः उन्तर्गतित् देनेसुरक्षित्रयः समप्रति स्वर्णः वित्तः कामार्त्त्वः विद्यान्ति स्वर्णः

कैक-काम कार्य प्रमा अस्ति । स्वापीन परिमाणिके अभैनवाराचे आग्रामाण केर्य क्रक हे अवस्था चीम अमतका आदि करका प्रवर्तना यस स्वयं क्रम वह आविश्विक्य क्रम्यक्वक क्रम अहारा रचक पर वे खबंद स्वर देगीने प्रमाम बूद। तृता वे बार कर्मन विश्वक्यक्या अस्ति बुद्ध होते स्वताने हैं। तृतिक स्वयंत्र स्वर सम्प्रद्वाधायको अस्ति स्वर्धिक स्वयं हुंद क्रम व्यवस्ति स्वरत्य जाना अतिका साम्यक्ताव्यक्षके सामाज्ञावावाका स्वर्धिक क्रम वृत्त करके सामाज्ञावाच्या स्वर्धिक क्रम वृत्त करके सामाज्ञावाच्या स्वर्धिक क्रम क्रम वृत्त करके सामाज्ञावाच्या स्वर्धिक क्रम क्रम वृत्ति स्वर्धिक स्वर्धिक स्वरूप करके सामाज्ञावाच्या स्वर्धिक स्वरूप करके सामाज्ञावाच्या स्वर्धिक स्वरूप करके सामाज्ञावाच्या स्वरूप क्रम स्वरूप क्रम स्वरूप क्रम स्वरूप क्रम स्वरूप स्वरूप क्रम स्वरूप क्रम स्वरूप स्वरूप क्रम स्वरूप स्यूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरू

अब हैं रहें। बहेता उन्हें हैं है। अपन्य बहुत गृह समय है।। २००॥

केव - व ह अब काभावनकावातीय और वार्य व शृतकातक कार्यने वह वर्ध कवाप्त रहन वर उटन कार्य हुन। भीर दिशीय समयत ही विस्तारको अपने ही वर्ध कब बचार केव कवारको व वे ८ हारहर हो तथा।

देवां का दावर का वात हा वात हा हा हुए हा का का साम स्थाप कर साम कर साम का साम कर साम कर साम कर साम कर साम कर स

आहारकायजोगीस पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होति, णाणा-जीवं पहुच्च जहर्ष्णेण एमसमयं ॥ २०९ ॥

तं जहा- सचट्ट जणा वषचसंत्रहा मणजोगेण वचिजोगेण वा अन्छिदा सगदाए सीणाए आहारकायजोगिणो जाहा । विदियसमर सुरा, मृतस्रीरं वा विदृहां । सद्देर रग-समञ्जे । एत्य वाधार-गुणपरावधीहि एगे। समजो ण सम्मादे ।

**उफस्सेण अंतोमुह्तं ॥ २१० ॥** 

तं जहा- आहारसरीरमुद्दाविद्यमधर्मजदा मग-बचिज्ञेताद्विदा आहारस्वायज्ञेतिगो जादा। जाथे ते ज्ञोगेतरं नदा, ताथे पेत अग्ने आहारस्वायज्ञेतां परिवण्मा । एवमेनादि एगुचरस्त्वीत् संविज्जसरुमात्राज्ञो रुम्भेति । एदाहि एगं स्वयज्ञोगदं गुनिद् ब्राहारस्वाय-ज्ञोगदा उचकरिसया अंतोब्रहृष्यपमाणा होदि ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ २११ ॥

आहारककापयोगियोंने प्रमुख्यत और किठने काठ तक होते 🕻 नाना और्वोकी अपेक्षा जपन्यमे एक समय होते हैं ॥ २०९ ॥

जैसे— सात बाट प्रमुखसंबत प्रशेषोग प्रथम प्रवासकारोगे साथ वर्षप्रकार का विश्व के अपने से स्वास क्षेत्र के स्वास क्ष्म का स्वास क्ष्म का क्ष्म का का अपने के स्वास क्ष्म का अपने का का का अपने का का का अपने का स्वास का

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट फाल अन्तर्महर्त है ॥ २१० ॥

एक जीवकी अवेक्षा आहारककाययोगी श्रीवोंका अपन्य काल एक समय है॥ २११॥



र बिद्ध 'पविद्रो ' रति पादः ।

६ बडिइ ' बादे ' हाँड पाटः ।

तं जवा-एको पमनमंत्रदे मणजीगे यत्रिजोगे वा अन्छिट्। आहल्कासी गदो । विदियसमए मदो, मुलसगीरं वा पविद्रो ।

उकस्सेण अंतोमहत्तं ॥ २१२ ॥

तं जघा-मणजीमे विचित्रोगे वा हिद्यमनमंत्रदेश आहारकायतीमं गदेर्ग, मन्त्र स्करसमंतीम्रहत्तमाञ्चय अल्लानीमं गदेर ।

आहारमिस्सकायजोगीषु पमत्तसंजदा केविचरं कालादो **हॉति**, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतो<u>सहत्तं</u> ॥ २१३ ॥

तं जघा- सत्तद्व जणा पमत्तर्सजदा दिहमागा आहारमिस्सजोगिणा जारा, सव्यवहर्मतोमुहत्तेण पजाति गदा। एवं जहण्णकाला पश्चिता।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१८ ॥

र्वं जया-सत्तद्व जणा प्यमसंत्रदा दिहमग्गा आदिहमग्गा वा आदागिस्सकार जोगिणा जादा, अंबोमुहुनेण पज्जींस गदा। तस्समए चेत्र अपगे आदागिस्सकार जोगिणो जादा! एवमेक दो-विण्णि जान संखेज्जसलागा जादा वि कादस्त्री पुणी

जेसे—मनोयोग या वयनयोगमें विद्यमान कोई एक प्रमन्तवत जीव सहार काययोगको प्रान्त हुआ और द्वितीय समयमें मरा, अथवा मृत्र दारीरमें प्रविष्ट होगया।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भुहुर्त है ॥ २१२ ॥

जैसे—मनोयोग या यवनयोगमें विद्यमान के हैं एक प्रमुखसंबत जीव आहारक हाय योगको प्राप्त हुआ। यहां पर सर्वोत्कृष्ट अन्तर्महतकाल रह करके अन्य योगको प्राप्त हुआ।

आहारकमिश्रकाययोगियोंमें प्रमचसेयवजीय किवने काल वक होते हैं। नाना जीयोंकी अपेक्षा जधन्यसे अन्तर्धहर्वकाल होते हैं।। २१३।।

्रतिकार प्रकार प्रभाव अन्यश्चितकाल हात है ॥ २१३ ॥ असे — देखा है मार्गके क्षिण्डोंने पेसे सात बाट प्रमत्तसंपत जीव बाहारक्षिण काययोगी हुए और सर्वेटसु अन्तर्युहर्तसे पर्योप्तपनेको मात हुए। इस प्रकार ज्ञयन काळ कहा।

जल कहा। उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृहर्त है ॥ २१४ ॥

जैसे— देखा है मार्गको किट्रॉने पेले, नयवा शहरमार्गी सात आउ प्रमानंवक जीव शाहारकानिश्रकाययोगी हुए और अन्तर्मुहतेले वर्षांदेवयोकी पूर्णताको प्राप्त हुए। उसी समयमें ही अन्य भी भमत्तरंवत जीव शाहारकानिश्रकाययोगी हुए। इस प्रकारते प्रके ही तीनको आदि छेकर जय तक संच्यात रालाकाएं पूरी हों, तथ तक संच्या बढ़ाते जाना

१ ज-जा प्रलो: अत्र 'विदियसमय सदी ' इत्यधिकः पाठः; क प्रती स-बलोस्ट्र तथाठी नीपछण्यते ।

```
و، م، وود. )
                                           कारमणुगमे कायजोगिकालपरूवणं
                एदाहि सलागाहि आहारिमसकापजोगार्द गुणिदे आहारिमसकापजोगस्स उक्रसकालो
                अंतोमहत्त्रमेची होदि।
                      एगजीवं वडुच्च जहण्णेण अंतीसुहुत्तं ॥ २१५ ॥
                     वं जघा- एको पमनसंबदा पुष्यमणेगवारमुहुगविदआहारस्रीरो आहारमिससकाय-
             जामी जादो, सञ्चलहुमेवीग्रहुमेण पञ्चिति मदो । सदी जहणकाली ।
----
                    डक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१६ ॥
                   वं जघा- एको पमचसंबदो अदिहमगो। आहारमिस्सो जादो । सन्विपिरण अंतो-
           स्टुचेण जहळाकालादो संखेजजापुणेण पज्जसिं गरो ।
                 कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्टी केवचिरं कालादो होंति, णाणा-
         जीवं पहुच्च सन्बद्धा ॥ २१७ ॥
                इदो १ विग्महमदीए बहुमाणजीवाणं सम्बद्धामु विरहामावादो ।
               एगजीवं पडुन्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २१८ ॥
      चाहिए। पुनः हन रालाकामाँसे आहारकानिधकाययोगके कालकी गुणा करने पर धाहारकः
      मिसकाययोगका अन्तर्भुद्रतंत्रमाण उत्हार काल दोता दें।
            प्यागन्त्रा अन्यस्वयमाण जन्म काल वर्णा व .
एक जीवकी अपेक्षा आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंका जमन्य काल अन्तर्भ्रहर्व
    है।। २१५॥
           भीते - पूर्वमें मिलने अनेक यार भादारक शरीरको उत्पन्न किया है पेसा कोई एक
   ण्या — प्रथम । असन भारत भारत वाद्या अस्तर होता वाद्या प्रथम । इत्या द्वा वाद्या प्रथम । इत्या द्वा व्याद्या प्र
   मान्त हुमा। इस प्रकारसे जधन्य काल मान्त हो गया।
          उक्त जीवोंका उत्हर काल अन्तर्मुहूर्व है ॥ २१६ ॥
         ्या जाराका अर्थन कार्य कार्यहरू था । । । ।
असे — नहीं देखा हैं मार्गको जिसने ऐसा कोई यक ममससंयत और बाहारकः
 जस्य — नदा द्वा द मामका काचन प्या कार प्रकारणप्या जाव भावादक
विश्वकायरोगी दुवा, भीर जयान कालसे संहयातमुख सबसे बहु वातमुहतेदास क्योंक्सिसी
 पर्णताको माप्त हुमा।
        कार्मणकाययोगियोम् मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं। नाना
जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २१७॥
       चयाहि, सभी कालोमें विमहमतिमें विग्रमान जीवोहे विरहता मनाव है।
      एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल एक समय है।। २१८ ॥
```

•

तं जहा- एगो। मिच्छादिष्टी विग्गहगदिणामकम्मवर्गेण एगविगाहे कार्यो। पुणो अंतीमुद्दचेण छिण्णाउँथ। होर्ण बद्धाउवर्गेण उपयाणावरम्थमण कार्यक्राणी जाहे। विदियसम्य ओराजियमिस्सं वेउच्यियमिस्सं वा गर्दे। छद्धो एससम्बे

## उक्करसेण तिण्णि समया ॥ २१९ ॥

तं जथा— एगो सुदुमेईदिया अहा सुद्दमाउकाहण्यु तिन्नि विगाहं मार्वाभे । अंतोसुद्दमेण डिज्जाउओ होर्ण उपपन्नपदस्तमयपद्धुडि विसु विगाहस् निन्न समयं कम्महयजोगी होर्ण चउत्यसमण् ओरालियमिस्सं गरे। । सुदुमेईदिया सुदुमें इंदिएस उपपन्नमाणाणं तिन्नि विगाह होति ति निप्यमो क्यं मध्यदे १ निव क्व निपमो, किंतु संभवं पद्धन्य सुदुमेईदियगाइणं करं। बाररेईदिया सुदुमेईदिया वक्क निपमो सुदुमेईदिय उपपन्नमाणा तिन्नि विगाह करेंति ति एस निपमो चनन्नो, आहरिन परस्तायद्वादे । विन्निविगाहकरणदिसा अन्त्येन वम्हरोगुहेसे वामदिसालोगर्यका

जैसे— एक मिथ्यारिष्ट जीय, विषद्भगतिनामकाँके बदासे एक विषद्भविकार जातिकसमुद्भातको मास हुआ। पुनः अन्तर्भुद्धति द्विमायुष्क होकर बांधी हुई मायुके वस्त्रे अर्थे कार्यकारिक प्रयम समयमं कार्यकार्ययोगी हुमा। पुनः द्वितीय समयमं औदारिकांक समयमं अर्थाराकांका समयमं समयमं

<sup>्</sup>रे एक जीवकी अपेक्षा कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट काल <sup>तीन</sup> समय है ॥ २१९॥

<sup>ं</sup> जैसे—पफ ख्हम प्केन्द्रिय जीव बाधरतन स्ट्मवायुकाविकॉम तीन विम्रद्वा<sup>ने</sup> मारंणांतिकसमुद्धातको प्राप्त हुआ। पुनः अन्तर्मुहुनंसे छित्रायुक्क होकर उत्पन्न होनेके प्रपन्न समयसे रुगाकर तीन विवहाँमं तीन समय तक कार्मणकाययोगी होकर चीचे समर्थन क्षीवारिकमिश्रकाययोगको प्राप्त हो नाम न

र्शका — खहम एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले स्हम एकेन्द्रिय जीवके तीन विवर्ष होते हैं, यह नियम कैसे जाना ?

समाधान — ययाप इस विषयमें कोई नियम नहीं है, तो भी संमायनाकी सेप्स यहां पर सुक्षम एकेन्द्रियोंका प्रहण किया है। अतप्य सुक्षम एकेन्द्र्योंने उत्पन्न होतेगाँ यादर एकेन्द्रिय या सुक्षम एकेन्द्रिय अध्या असकायिक जीय ही तीन विश्वह करते हैं, यह नियम प्रहण करना चाहिए, क्योंकि, यही उपदेश आचार्यपरम्परासे आया हुआ है।

वब तीन विष्रष्ट करनेकी दिशाको कहते हैं— प्रक्रालोकवर्ती प्रदेशपर वामदिशा

٠,

तिरिच्डेण द्विष्यणं तिष्णि रज्ञुमेचं गंत्ण तदो साद्दसरञ्जूणि अपो कंडुज्जुनं गंतूण तरो संद्वहं पदुरञ्जुमेचं आगंतूण कोणीरसाटिरहोगपेरेतगुहुमवाउकाद्रपसु उप्पजनाणस्तं तिष्णि विग्गहा होति।

सासणसम्मादिटी असंजदसम्मादिटी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२० ॥

तं जपा- सारागसम्मादिही असंजदसम्मादिही एगविगाई कार्णुपणणपदमसम्प् एगसमञ्जो कम्महपनायजीगेण रुम्भदि ।

उक्कस्सेण आविष्ठयाए असंखेज्जदिभागो ॥ २२१ ॥

से जथा- सासणसम्मादिद्वि-असंबदसम्मादिद्विणो दोण्णि विग्गहं कादृण बद्धाउ-वसेणुष्यिञ्जव दोण्ण समय अध्वय औरातिव्यमिससं वेउदियमिससं वा ग्रेहा । वस्तमण् पेव अष्णे कम्मद्रयकायञ्जीभेणो जाद्दा । एवमेमं कंप कादृण एरिसाणि आवित्याए असंसेज्जदिभागमेचं कंप्रयाणि होति । यदाणं सलागिदि होण्णि समय गुणिदे आवित्याए असंवेज्जवागमेचो कम्मद्रयकायज्ञोगस्स उक्तस्वकालो होदि ।

सम्बन्धी छोडक पर्यन्त मागले तिरहे दक्षिणकी भेर तीन राजुवमाण आकर पुना साट्टे दश राजु मंथिने भेर वाणके समान सीधी गतिसे आकर पश्चान, सामनेकी भोर चार राजुवमाण साकर नोजवती दिशामें स्थित छोडके अन्तवर्ती सहम वायुकाविकॉर्स समुख्य होनेबाले आपूंक तीन विमद होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दिष्टि और असंयतसम्यग्दिष्टि जीव कितने काल क्क होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा जपन्यसे एक समय होते हैं ॥ २२० ॥

असे-- पोर्ट सासादनसम्पद्धारि भीर असेयतसम्पद्धि जीव पर्छ विश्वद्ध करके अपन्न होनेके प्रथम समयमें पर्छ समय बर्माणकाययोगके साथ पाया जाता है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्याववें भागप्रमाण है ॥ २२१ ॥

जेले— पूर्व पर्यावको छोड़नेके प्रधान किनते ही सासादनसम्पराष्टि और ससंवत-स्वाविष्ट जीव बांधी हुई आयुक्ते प्रशासे उत्तय होकर निमहणतिमें दें विग्रह करते, हो समय हह कर, पूरा औदारिक्षिमकाययोगको मण्या विविद्यक्तिमकाययोगको प्राप्त हुए। इसी समयमें ही दूसरे भी जीव बार्मवदाययोगी हुए। दस प्रकार इसे एक कांडक करते, इसी प्रस्तात्के अन्य अन्य आवरीके असंक्यातर्य भागमात्र कांडक होते हैं। इन बांडकोसी इराजामानी दोनों समयोको गुणा करने पर आयरीका असंब्यातयों मागमात्र कांगवहाय-योगका उत्तरह बाल होता है।

१ स-६ प्रतोः 'कार्याए सङ्घाज्यसम्बद्ध '। आ प्रती ' -कार्याएसं उप्पाजनायस्य' ' रृति पाढः । ९ प्रतित ' एरिसाने ' रृति पाढः ।

एगजीवं पड्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२२ ॥ सगममेदं मत्तं ।

उक्कस्सेण वे समयं ॥ २२३ ॥

इदों ! एदेसि सहमेइदिएस उप्पत्तीए अमात्रा, बाइ-हाणिकमेण हिदलोणी उपचीए अभावादो च ।

सजोगिकेवली केवचिरं कालादो होति. णाणाजीवं पडुच्च जर

णोण तिण्णि समयं ॥ २२४ ॥

तं जहा- सत्तद्व जणा वा सजीगिणो समगं कवाडं गदा, पदर-लोगपूरणं गत्न भूओ पदरं गंतूण विण्णि समयं कम्महयकायजीगिणी होदण कवाडं गरा।

उक्तस्सेण संखेज्जसमयं ॥ २२५ ॥

इदो ? तिण्णि समझ्यं कंडयं काऊण संखेजजकंडयाणमुबलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्युक्कस्सेण तिण्णि समयं ॥ २२६ ॥

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जघन्य काल एक समय है ॥ २२२ ॥ यह सत्र सर्गम है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल दो समय है ॥ २२३ ॥ पर्योकि, इन सासायन या असंयतगणस्थानवर्ती जीवोंकी सहम एकेन्द्रियोंने बत्पाचिका अभाव है। तथा वृद्धि और हानिके अमसे विद्यमान लोकके अन्तमें भी उनकी डत्पचिका अमाय है।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली कितने समय तक होते हैं ? नाना बीबोंडी अपेक्षा जपन्यसे वीन समय होते हैं ॥ २२४ ॥

जैसे-- सात अथवा आठ संयोगिजिन एक साथ ही कपाटसमदातको प्रात हुए, बीर मतर तथा छोकपूरणसमुदातको माप्त होकर पुनः मतरसमुदातको माप्त हो, तीन समय तक कार्मणकाययोगी रह करके कपाटसमुद्धातको मात हुए।

कार्मणकाययोगी सयोगिजिनाका नाना जीवाँकी अवेक्षा उत्कृष्ट काल संस्थान समय है।। २२५।।

क्योंकि, तीन समयवाले कांडकको करके उनके संख्यात कांडक पाये जाते हैं। एक जीवकी अवेधा कार्मणकाययोगी सयोगिनिनोंका जयन्य और उरहर हान धीन समय है ॥ २२६ ॥

· 1. 4. 279. ] माराणुगंमे इत्पिनेदिकालपरमणं

इसे १ पदरादी लोगपूरणादी वा कवाडस्स गंमणामावा (

वेदाणुनादेण इत्पिवेदेशु मिच्छादिट्टी केनचिरं फालादो हॉति, णाणाजीवं पहुन्च सन्वद्धां ॥ २२७ ॥

इदो १ सम्बद्धारा इत्यिवेदमिच्छादिष्ठीणं विरद्धामाता ।

एगजीव पहुन्न जहण्णेण अंतोमुहुत्तं'॥ २२८ ॥

र्वे जपा- एको इत्यिवेदगो। सम्मामिन्छादिही असंजदसम्मादिही संजदासंजदी पमचर्सजदो वा परिणामपञ्चएण मिन्छर्च गंतूण सञ्बजहण्णकालमन्छिम अण्णामणं गरी। <sup>उनकस्तेण</sup> पलिदोवमसदपुधत्तं'॥ २२९ ॥

तं जपा- एक्सो अवात्पदवेदो हित्यवेदेस उववण्णो । पुणा तत्य हित्यवेदेण पित्रायमसद्युधचं परिषष्ट्रिय अवारिपद्वेदं गरी।

चराहि, कामणकारपोगी सपोगिजिनका प्रतर और लोकपूरणसमुदावसे लीटकर पाटसमुदातमें जानेका भमाव है। इस प्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

बेदमार्गणाके अनुवादसे सीवेदियोंने मिण्यादृष्टि जीव किनने काल तक होते हूं ? ॥ जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २२७ ॥

क्याँकि, सभी कालोंमें स्वीवेदयाले निस्वादृष्टि जीवोंके विरदका मनाव है। एक बीवकी अपेक्षा उक्त भीवोंका जपन्य काल अन्तर्यहर्त है। १२८॥ जैते— कोर्र वक स्वीवदी सामामित्याहाँहे, मध्या मसंगतसम्बद्धांह मध्या

अल— कार करा जावन कार्यामध्यामार, जावन अल्पालकाराध, अथवा संवतासंवत, संवता ग्रमणसंवत जीव परिणामों जिमित्तसं निध्यावको ग्रास दोकर सबसे जयस्य सन्तर्मुहुनं वालप्रमाण रह करके सन्य गुणस्थानको यला गया। उक्त जीबोंका उन्क्रप्ट काल पत्योपमञ्जनपूर्यक्त्य है ॥ २२९ ॥ जैसे— मविवासित वेदवाला होर्र यक जांच क्रांविदिवाम उत्पर हुमा पुनः यहां वर

जस— भाववाभात वर्षाणा जार ५० गाउ व्यावार्थात २०५५ दुना अनः वहा पर स्रोविश्वेत साथ वर्षायमसात्र्यक्य बाल तकः वरियतेन करके भविवाभित वेर्को बला गया। र कविषेषु विष्यादियांनात्रांनायेश्वया वर्ष काल, । स ति र, ८.

१ प्रजीव प्रति जवायेनाग्तवंद्वते । सः वि. १, ८.

हे बल्करेंन पश्योपमस्तपूमन वस् । स ति. १, ८.

सासणसम्मादिङी ओद्यं ॥ २३० ॥

णाणाजीवं पदुच्च जहण्येण एगसमओ, उक्तस्तेण रासीदो असंसेज्ज्ञमुनी, कि वमस्स असंखेडजदिमागोः एगजीवं पंदच जहण्येण एगसमञ्रो. उक्करनेण छ असरि याजा. इचेएण ओघादो वितेसामात्रा ओविमिदि वर्त्त ।

. सम्मामिच्छादिदी ओघं ॥ २३१ ॥

दुदो ? णाणात्रीवं पडुच जहण्णेण अंतामुद्रचं, उक्कस्सेण सगरामीदो असंसेक्स पितदोवमस्स असंसेज्जिदिमागोः; एगजीवं पद्रच्य जहण्यक्रस्तेण अंतेमुहुनं, रि

ओपाडी मेटामाचा I असंजदसम्मादिद्री केवचिरं कालादो होंति. णाणाजीवं पर्<sup>स</sup>

सन्बद्धां॥ २३२ ॥ बटो 🖁 इत्थिवेद्रस्टि अमंजदमस्मादिदिविरहिदकालाणवर्लमा ।

एगर्जीवं पडच्च जहण्णेण अंतोमहत्तं' ॥ २३३ ॥

र्गादिरी गामादनसम्पग्दष्टि जीवाँका काल ओपके समान है ॥ २३० ॥ माना अथिंकी भवेशा जपन्यने एक समय, उन्कर्षस अपनी शशिसे असंब्या<sup>नगुना</sup>

कारो.यमधा मनंक्यानयां मागा, यक जीयकी भोशा जयम्यते यक समय भीर उन्हरीते हैं। बावरीयमान काल है, इस मकार भीषो कालसे कोई विदेशवता नहीं है, अनव और

दर पर रायमें दशा र्मा देशी मञ्चारिमध्यादृष्टियोंका काल औषके समान है ॥ २३१ ॥ क्यों के, जाना आयों की भिक्षा क्रमण काल भग्नगृहते, भीर उन्हर काल भारी

कर्पराने असंबरातगुनित चारवायमके असंस्थातय साथ है। तथा एक श्रीवर्ता भेपसा अवाय कीर रमुष काल कम्मब्दुने हैं, इस प्रकार आयोग कालसे कोई भेद नहीं है।

र्श दे दियों ने असंपत्रसम्यारिश जीत कितने काल तक होते हैं । नाना बी में

बरेश हर्रहात होते हैं ॥ २३२ ॥ क्यों है, क्रोबेन्योंने अनंबनमध्यादि त्रीवोंस विश्वति केर्दे काल नहीं ना करत है।

एड देवडी अवेथा उक्त दीवोडा जवन्य काल अन्तर्भेड्वे हैं ॥ १११ ॥

र बामाप्रमानक्ष्यपर्य प्रविश्वितादरान्त्रामी बाबाग्रतीत्तुः, बाबा हु सः, तिः, रहे क

n für mannen greiere urrunt ab, u. e. j. u. fe. e. e. g mad timb annappefet ja fe, t. c.

याताणुगमे इधिवेदिवाटनस्वणं वं जधा- एमा मिन्छादिष्टी सम्मामिन्छादिष्टी संजदासंजदो पमचसंजदो । इश्चित्रेद्शो परिणामवयाम् असंजदसम्मादिही होत्य सन्दजहण्णमेतीसुद्वणमिन्छय जहण्य कालाविरोहेण गुणंवरं गदी । लद्धी जहण्यकाली ।

उषकस्सेण पणवण्णपलिदोनमाणि देसूणाणि'॥ २३८ ॥

हुदो । अज्ञापिदवेदस्स पणारण्यानिहीनमानिहीदेवीस जवनित्राय छ पञ्जनीत्री समाणिय अंतोम्रहुषं विस्त्रमिय पुणो अंतोमुहुषं विस्त्रहो होहुण वेदगसम्मसं पहिवस्त्रिय सम्मचेष आउद्विदेमणुपालिय कालं काद्ग पुरिसवेदं पडिवण्णस्स सीहिं अंतोग्रहचेहि ऊणपणवण्णपलिदोवसुवलंभा ।

संजदासंजदणहुडि जाव अणियट्टि ति ओपं ॥ २३५ ॥ बदो १ ओएं पेन्सिट्ण उचगुणहाणाणं मेदाभावा । णवरि संजदासंजदजनकसः कालाह अतिय निसंसो । तं अपा — एको अहनीससंतकान्मओ त्यीवेदेस कुण्डाहरू

अंते- पर मिरवारिष, या सम्वामिरवार्थि, या संवतास्थव भववा प्रमत्तवंवत अश्वन पर भारताहार, या कायामान्याहार, या कायावावय भारता या सम्बद्धाः प्रोवेदी जीव परिचामोके निमित्ततं सर्वयतसम्पर्धाः होकर और सर्वमायस्य सन्तर्गक्रवे प्राप्तः आप पारणात्मकः । नामचाः ज्ञान्यवाकान्यस्य वास्य ज्ञार व्यवसम्बद्धः व्यवस्य ज्ञार व्यवसम्बद्धः ज्ञार व्यवसम्बद्धः ज्ञार व्यवसम्बद्धः ज्ञार व्यवसम्बद्धः ज्ञार व्यवसम्बद्धः ज्ञार व्यवसम्बद्धः विस्तवस्य व्यवसम्बद्धः विस्तवस्य स्वयसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्यः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्यः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्यः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बद्धः विस्तवसम्बदः विस्तवसम्बदः विस्तवस्तवसम्बदः विस्तवसम्बदः विस्तवसम्बदः विस्तवसम्बदः विस्तवस्तवस्यः विस्तवस्यः विस्तवस्

एक जीवकी अपेधा सीवेदी असंयत्तसम्पादृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट काल बुछ कम वन पल्योपम है।। २३४॥ वर्षोह, हिसी अविवासित अन्य वेदचाले जीवहें पचवन वस्त्रोपमधी भागुस्थितिवाली

च्यारात होता वायवादाच कार बद्याल जावक रचका रच्याराका वायाच्यात्वा मि उत्तर हो, छही वर्वातिवाँको सम्पा कर, अन्तर्गुहत विभाग करके, पुनः अन्त ाम वर्त्यन हो, छहा प्रवाध्याधाका साम्बंध कर, ज्ञालगुह्नव व्यवस्था करका, प्रवास्था करका, प्रवास करका, प्रवास कर विद्युक्त होकर विद्यक्तवकृत्यको साम कर सम्प्रकृतक साम मधनी आगुरियतिको ्वत्यक्ष हाकः, व्यक्तव्यवस्य का मात्र कृष्य वायकः भाव क्षयः। कार्यास्यवाकः इत करः, मरणदे। करके पुरुष्येदको मात्र हुए जीवकः तीत्र मन्तर्गहरूपीये कम प्रयक्त संयवासंपत गुणस्थानमे लेकर अनिश्वचिकरण गुणस्थान तक सीवेदी जीवोंका षके समान है।। २३५॥

व्यक्ति, भाषक कालको देखने दूप स्थान गुणस्थानोके कालीम कोई भेर नहीं विवास, आधक कालका १९२० दूर स्वतानः ग्रेणस्थानक कालाम कार भी नहां संयतासंयतके उत्कृष्ट कालमें विशेषता है। यह इस प्रकार है—मोहकर्मको गृहारेस उ वदक वचववास पन्योपमानि देशोनानि । सः सिः १, ८.

VVa 1

12.531

ः स्टब्संडागमे जीवटाणं महदादिस उत्तरन्त्रिय वे मासे गरमे अध्छिदण णिष्किडिय सुद्वेषुवेतसमुति सम संबनातंत्रमं च जुगर्वे धेतूण वेमासमुद्रतपुष्पण्णप्रव्यक्रीडि संबमासंबनमतुरानिर सं देशे बारो वि । ओपम्डि प्रण अंतीमुहनुणपुरुक्तिडिसंत्रदासंत्रद्वकस्पक्षती हर्ने गम्बन्छिमरव्यवमन्छ-कन्छेर-महकादिस लद्दो, प्रथ सो ण लन्मदि, सम्बन्धिनेनु हैं

देशकाता । प्रिसनेदएस मिन्छादिही केवचिरं कालादो होति. णाणार्जा पद्मन सन्बद्धां ॥ २३६ ॥

दिन वि अदास प्रतिसदिमिन्यादिक्षीणं विरहासंसता । एगर्नीनं परुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३७ ॥

करो ? अनेजरमञ्मारिद्विस्य सञ्मामिच्छारिद्विस्य संजदासंजदस्य पमनपंत्रास का शिक्षमागरम मिन्छारिष्ठी द्वीरण सन्वज्ञहण्णमन्छिय गर्गतरं पश्चिम्बल की श्राप्त विकास

क्य कि नी समाचात्रा कोई एक श्रीय स्थिती का इक्ट, मर्केट शाहिते उपान दोकर, भेर के बान्य मर्जर्व रह, निकार करके मुहर्नपूरायाचने ऊपर सामकाय शीर संवसासंवयने कुण्काल अवत्य अरके का मान्य भीर मुहतीयुगवरायोव कम गुर्वकोडीयर्वतमाना संवमानेवर्वन विकार वर्षे अन्य भीत देव की गया । किन्त भीगकालप्रक्रमणार्थे जो भागति हैं की कुर्कर पर करे संवन(संवनका अकुष काल कहा है वह संबी समादिशा प्योग प्रश्न करते के इक दिन के की जाता जाता है, जह गर्दा पर महीं गामा जाता है। जनीहि, साम्हिं।

कारी के का प्रदेश करान है। इसके दिवाँने विश्वादिक श्रीत हितने काल तह होते हैं है साम श्रीतीही श्रीती कोशक रेने हैं।। क्ष्रहा

करों है, नीनों ही कारोंने पुरुषंत्रती मिश्यारपि श्रीवीका विस्त्र समेवत है।

कड है। दी अनेवा अपन्य काल अन्तर्वेष्ट्रने है।। २३७॥

करा व कथा है मार्तवा क्रियंत, यात मध्यमध्यापार्थि, भगवा मध्यमित्रवार्थी,

कथ्य क्रान्स्यत्, कार्या प्रमान्ध्यत्के, विस्तादिव द्वावन कीन स्वेत्रमान काव स्व वार्ट बाल मूच कर तथा बाज र जवार बीएफे बालीत है बाद वामा बाता है।

त के कहा ते अन्याप्ति से बहुत्य है। कह बहुति विषय विषय है प्रति है के बहुति व वहीं व हिम्म के प्रति है है से स

मान्य मान्याच्या व्याप्त व्यापत a mer week street street streets as a first the contration of the fit

- ME AR HE AREA CONTRACTOR SE. W. A. A.

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं' ॥ २३८ ॥

एदस्पुराहरणं-एको तथी-णवंत्रयवेदेसु बहुवारं परियद्विद्वीवो पुरिसंबेदेसु उद-बण्णो । पुरिसवेदो होर्ण सागरोवमसद्रपुषचं परिमामय अणप्पदवेदं गदा । तिसदमादि करिय जाव णवसदं ति एदिस्से संखाए सद्रपुषचमिदि सच्चा ।

सासणसम्मादिष्टिपाहुि जाव अणियिष्टि त्ति ओघं' ॥ २३९ ॥ इते ? एदेसि उचगुणहाणार्ग णांगानीर्न पदृष्य जहण्युरक्रसकालेहि ओपादो भेदामाया । णवरि संजदानंजदाणमित्यियेदमंगो ।

णबुंसपवेदेसु मिच्छादिट्टी केवचिरं काटादो हॉति, णाणाजीवं पडुच्च सव्बद्धां ॥ २४० ॥

कुदो १ सच्यदासु एदेसि विरहाभावा ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट फाल सागरोपमग्रवपृथवस्य है ॥ २३८ ॥

हसका उदाहरण— की भीर नयुंसक्येदी औथों बहुन वार परिध्रमण किया हुआ कोर्र पक और पुरुपेपरियोमें अलग हुआ। पुरुपेदरी होकर सागरोपमधानपुष्पाय काम तक परिध्रमण करके प्रविपरित येदको चटा गया। तीन सी को आदि करके में ती तक्यी संख्यादी 'दानपुष्पाय' यह संख्ये हैं।

सासादनसम्यग्हिंसे लेकर अनिष्टृतिकरण गुणस्वान तक प्रत्येक गुणम्यानवर्डी पुरुपवेदी जीवोंका काल जोपके समान है ॥ २३९ ॥

पर्योक्ति, इन गुणोक्त गुणस्थानीका नाना जीव भीर यक जीवर्डा अधेशा जयन्य और उरहण कालके साथ भोषसे कोई भेद नहीं है। विरोध बात यह है कि पुरुषेत्री इंग्रतासंप्रतीका काल स्वीवेदी संप्रतासंप्रतीके समान है।

नपुंतरवेदियोंने मिथ्यार्दाष्ट श्रीव कितने काल तक दोते 🕻 दै नाना श्रीकेंद्री अपेक्षा सर्व काल दोते हैं ॥ २४० ॥

क्वोंकि, सभी बालोंमें इन जीवोंके विष्टका भभाव है।

१ वरक्षेत्रं सागरोपमध्यपुत्रवस्य । सः सिः १, ८. ९ अ-आ-क प्रतिषु "अप्परवेदं " इति पाउः। स मणी तु स्वीष्ट्रपाउः।

६ सामादनकप्रयादनिकृतिकादरान्त्रानो साकायोगः काळः । स. ति. ६, ८.

४ महिन्देरेषु दिव्याद्येनीनाजीवारेश्वता करें: बात: । छ- हि. १, ८-

एगजीवं पडुच्च जहल्लेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४१ ॥

कृदो ? सम्माभिच्छादिहिस्स असंजदसम्मादिहिस्स संजदासंजदस्स संजदस्त ग मिच्छचं गेतृण सन्वजहण्णद्वमच्छिप गुणंतरं गदस्स अतेशहतुचरुछम।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोगगलपरियदः ॥ २४२॥

पदस्युदाहरणं- एकको परिममिदस्यी-पुरिसवेदद्विदिगो णवुसपवेदं पडिविज्य स्दस्युदाहरणं- एकको परिममिदस्यी-पुरिसवेदद्विदिगो णवुसपवेदं पडिविज्य तमच्चदेतो आवित्याए असंखेजजिदमागमेनपोग्गलपरियद्वाणि परिममिय अणावेदं गरी।

सासणसम्मादिट्टी ओघं ॥ २४३ ॥

सम्मामिच्छादिट्टी ओवं ॥ २४८ ॥

एदाणि दो वि सुचाणि सुगमाणि ।

असंजदसम्मादिही केनचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पड्ड सव्वद्धां ॥ २४५ ॥

एक जीवकी अपेक्षा नपुंसकतेदी मिथ्यादृष्टियोंका जघन्य काल अन्तर्दुर्ग है।। २५१।।

क्योंकि, सम्यामिष्यादृष्टि, या असंयतसम्यादृष्टि या संयतासंयत, मधवा संवा जीयके मिष्यायको मात दोकर भीर यहां पर सर्थ जधन्य काल रह करके मन्य गुनस्यानके भारत होनेवाले जीयके अन्तर्गहर्तकाल पाया जाता है।

उक्त श्रीवींका उरहर काल अनन्तकालात्मक असंख्यात पुहलपरिवर्तनप्रमान

है ॥ २४२ ॥ इसका बदादरण— जिसने पुरुषेवद और क्रांवेदकी स्थितितमाण परिश्रमण किंग है, देसा कोर्र पर ऑप नयुंसकपेदकी मात्र होकर, उसे नहीं छोकृता हुमा सायलीके स<sup>ई</sup> स्वातुर्वे सामामात्र पुरुष्टियनेनीतक परिश्रमण करके समय पेदकी मात्र हुमा ।

सामार्नम्पण्यादि नर्पुमक्येरी जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २४३ ॥ सम्यागम्पणदि नर्पुमक्येरी जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २४८ ॥

मस्यग्मिष्यादृष्टि नर्षुमकवेदी जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २४४ ॥ ये दोनों दें। सूत्र सुगम हैं।

अमृयतमम्बरमध्य नर्षुमकरेदी जीव कितने काल तक होते हैं ? माना वीर्रों अदेखा मुर्वकाल होते हैं ॥ २६५ ॥

र क्षत्रीत वृति अध्येतात्त्रीतीः । सः वि. १, ८,

य बलवेंबातनाः बाजीतंस्वेबाः पुरुवानिताः । स. वि. १, ८.

६ बाजासन्वन्यस्थापनिदृष्टिनादाप्रसानी नावास्थन् । स. थि. १, ४. ४ क्लिक्करत्वस्थादोतीनातीनोत्रका नके काला । स. वि. १, ४. सुगममेदं सुचं ।

एगजीवं पडच जहण्णेण अंतोम्हत्तं ॥ २४६ ॥

बुदो ? मिन्छादिहिस्स संबदासंबदस्स वा दिहमग्गस्स असंबदसम्मर्च पढिवक्षिय सन्दबहण्यदमन्छिय गुणंवरं गदस्संतोष्ट्रहुत्वरुंभा ।

टक्कस्सेण तेत्तीसं सागरीवमाणि देसूणाणि ॥ २४७ ॥

दुरो १ अद्वार्धाससंतर्कानमास्य सचमयुद्धीय । उत्पन्तिय छ पत्रज्ञचीओ समाः भिष विस्तामिष विद्युद्धो होद्य सम्मर्च पडिवन्त्रिय अंतीसुद्दुचावसेसे आउए मिन्छचं गृत्य आउअं पंभिय अंतीसुदूचं विस्तामिय निम्मदस्य छद्दि अंतीसुदूचेहि उत्पतिचीस-सामनोबर्छमा ।

संजदासंजदणहुरि जाव अणियद्वि ति ओघं ॥ २४८ ॥ इदो १ णाणगर्वावजदण्यक्यसम्बाहेदि ओघादो विसेसाभावा।

यह सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवाँका जयन्य काल अन्तर्गृहर्त है ॥ २४६ ॥

पर्योकि, इष्टमार्गी मिध्यादिष्ट या संवतासंयत जीवके असंवतसम्यक्तको मान्त होकर सर्पेजपम्य काल रह करके अन्य गुणस्थानको मान्त होने पर अन्तर्गृहर्त काल पाया जाता है।

उक्त जीवोंद्रा उत्हृष्ट काल बुछ कम तेवीस सागरीयम है। १४७ ॥ पर्वाकि, मोहदमंदी क्ष्मुयांस महतियांकी स्वचायले किसी जीवक सातर्यों पृथियोंक अथव होकर, एव एवंगितवांकी सम्प्रक करके (मिश्रम कर और तिशुद्ध होकर, तथा सम्प्रकचको प्रात होकर, आयुक्ते अन्तर्युह्ध स्वयोग रहने पर, मिष्यायको जाकर, आगामी मयसम्प्री आयुक्ते यांचकर, बन्तर्युह्ध विश्वाम करके निकलनेवाले आंवके छह सन्तर्यहातीक स्व तेवीस सामर्थियक काल पांच जाता है।

सम्बद्धाः तास कम ततास सागरायम काळ पाया जाता ह। संयतासंयतसे लेकर अनिश्चिकरण गुणस्थान वक नपुंसकवेदी जीवोंका काल

ओवके समान है ॥ २४८ ॥ क्योंकि नाना भीर एक जीवकी अवेका जवन्य और उस्क्रप्ट कालके साथ ओवले

कोई थिदोपता महीं है। १ पृक्त्वीर प्रति जनस्वनातर्बहुर्गः। स. ति. १,८.

२ डत्कर्वेण त्रयस्त्रिहत्सागरीवमानि देशोनानि । स. वि. १, ८,

द प्रतिषु ' सचपुरवाषु ' इति पावः ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिपहुडि जाव अजोगिकेविल ति और्ष ॥ २४९ ॥

. छुदो १ णाणेगजीवजहण्युक्कस्सकालेहि ओघादो विसेसामावा । एवं वेदमण्या समजा ।

कसायाणुवादेण कोहकसाइ माणकसाइ मायकसाइ छोभक्साई मिच्छादिट्टिपहुंडि जाव अपमत्तसंजदा ति मणजोगिभंगो ॥ २५० ॥

कुरो ? दच्चिट्टयणयावर्षवणेण । पज्जबिट्टयणए अवस्विद्यमाणे अखि विशेषी । तं व्यहस्सामो । तं ज्ञा- कोषकसाई मिच्छादिट्टी एगजीवं पट्टच जहण्येण एगमपं। एरच कसाय-गुणपरावित-मरणेहि एगतमञ्जा व्यच्यो । वावादेण एगमप्रेण ए रुम्मीर, कोषस्तेव तरपुप्पचीदो । तं ज्ञा-एको सामणे सम्मामिच्छादिट्टी अमंजद्रसम्मादिट्टी वंबर्ग-संबदो पमचसंबदो पा कोषकसाई एगतमपं कोषकसायद्वा अस्वि ति मिच्छतं गरो । एगसमपं कोषेण मिच्छतं दिट्टी विदियतमए अण्यकसायं गरो । एसा कमायरावती।

अपगतवेदी जीवोमें अनिवृत्तिकाण गुणस्थानके अवेदमागसे लेका अपीतिः फेवली गुणस्थान तकके जीवोका काल ओषके समान है ॥ २४९ ॥

प्योंकि, नाना और एक जीवकी अवेका जयम्य और उत्हृष्ट कालके साय भोषे कोई विदेशवा नहीं है।

इस प्रकार बेदमार्गणा समाप्त हुई।

कपायमार्गणके अनुवादमे क्रोचकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और होने कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमे लेकर अवमत्तसंयत तकका काल मनोयोगियों समान है 11 २५० 11

क्योंकि, सुप्रमें ट्रप्याधिकतयका अपलम्बन किया गया है। किन्तु वर्षायाधिकतर्थे अपलम्बन करने पर पिरोपता है। उसे कहते हैं। जैसे— क्रोपकवाणी मिण्यारि जीका यक जीवकी व्यापन काल एक समय है। वहां पर क्यायपिवर्णनं , गुनस्वात्विर्वर्गकं सीर सरकों कारा वक्त समयकी प्रक्रपणा कहना चाहिए। स्वापातक मेरोप कि सीर पर के हों पाया जाता है, क्योंकि, व्यापातके होने पर तो क्रोपकी ही उत्पंति होंगी है। जैसे— कोई सासाइनसम्बन्धरिय या सम्बन्धियणहर्षि, या सर्वयतस्वात्वरिय, स्वत्वन स्वत्वन क्षाय अपने स्वत्वन क्षाय अपने स्वत्वन क्षाय आपने क्षाय क्षाय अपने स्वत्वन क्षाय आपने स्वत्वन क्षाय आपने स्वत्वन क्षाय अपने क्षाय क्षाय अपने क्षाय क्ष

<sup>--</sup>१ भारतदेशनी साथन्यवर् । स. ति. १, ८,

६ क्याबादुवादेव चतुन्द्रशयाणी विश्वादरवाप्यवदान्ताती सबीवीमेवच् । ह. ति. १, ८,

काटालुगमे चदुकसाङ्काटपरूवणं ं एको मिच्चादिह्वी अण्यकसाएणस्टिहो, तस्स अद्वानसएण कापकसात्री आगदो, एगसा भोहेण सह दिहो । विदियसमए सम्मामिच्छचं असंजद्दसम्मचं संजमसंजमं अप्पमः भावेण संज्ञमं या पडिवण्णो । एसा गुणपरावची । एसी मिच्छादिही अण्णकृताएणच्छिदो वसादामलायण कोहकताई जादो । यगसमयं कोहेण सह दिहो । विदियसमय मरो अन्य वत्तावस्य उपवण्णो । पतो मर्गणेण पगसमञ्जा । कोहेण मदा णिरयगदीयण उपापेदस्यो, त्युप्पणार्जावाणं पढमं कोघोदयस्मुवलंमा । माणेण मदो मणुसगरीएण उपादेदको, ्युप्पण्णालं पदमसमारु माणोदयिणयमोयदेसा । मायारु मही विस्तिराहरूल उप्पादे-हो, तत्थुष्यव्याणं पडमसमए माओदयणियमीवदेसा । लीमेण मदी देवगदीएण उत्पाद-ी, तत्युष्पच्याणं पटमं चेय लोहोदओ होदि वि आहरियपरंपरागदुबदेसा'। एवं उण्डाणार्ण वि व्याद्व्य वचन्त्रं । एवं माण-माया छोमाणं वचन्त्रं । ववरि फसाय-पुण-

समयको मञ्जूषा दे। यक मिध्यादृष्टि जीय जो कि सन्य कवायमें पर्तमान था, उस कवायके जानका मक्याण है। यक भाग्याहार नाथ जा कि कार्य क्यायम यात्मान था, वस क्यायक काह्यकारी ग्रोमक्यायको मान्त हुमा। यक समय मह ग्रोपक्यायके साथ हाश्रीकर हुमा और कारहावस कामकावका भाषा दुवा। ५क समय वह बावस्वावका साथ हारा। वर हुना बार दितीय समयमें सम्पन्निरपायको भाषा भारपतसम्बन्धको, भाषा संपन्नासम्बन्धे, भणा 1 5775- 4 हिताव समयम सम्यामध्यात्यस्य भववा नात्यत्तरः वरावका, नववा स्वयान्यमम्। नवस मत्रमचमापके साथ संयमको मान्त हुमा। यह गुणस्थानपरिवर्तन है। एक मिस्पाहरि और जानस्थानम् वा । उस कवावके कालस्थते यह कोवकायों हो गया। यह समय भाव क्यायम पारा उस क्यायक कालकायल यह कायक्याया हा गया र एक समय को प्रकार के साथ दक्षिणेयर दुमा । युना दिशीय समयम मरा और माय क्यायम उपन्य व्यवनात्रका भाव सहितावर द्वारा प्रकार अभवत् वर्षा भाव वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा देण। यद मरणका व्यवसायक स्थाय द्वमा । काथकरायक साथ वस द्वमा वाव मरणागाल उत्तवा करामा खादिय, क्योंकि, मरकाम व्यवस होनेवाहे अविष्ठ सर्व मयम कोषकरायका जारण ज्याना ज्याहरू, व्यवस्त्र तर्राणां कारण दावपां ज्यानां राव अवस्त व्यवस्थित स्व उद्भुव वार्या जाता है। मानक्ष्मवेते मरा हुमा और मनुष्यातिमें कारण करानां वाहिए, . . . . परं पान भागा है। सानक्षावस मध्य हैया जाद स्वप्तवातम वादक कराना चाहिए, वयाहि, मञ्जूष्योम जलस हुए जीवाहि सचस समयम सानहत्वाके उदयह नियमक अपहरू प्रवास, भद्रप्याम वर्षाच इर जावार, अवस समयम मान्द्रपावर, वर्ववर निवसहा हरोहा देखा जाता है। मायाक्याचार महा हुमा और तिवंशातिम उत्यव कराना बाहिय, वर्वोह, 

ावध्याकः अवध्य हातकः अवधः वास्त्राकः भाषाकः वाष्ट्रकः वाष्ट्रकः वाष्ट्रकः वास्त्रकः वास्त्रकः वास्त्रकः वास्त्र कःवायसे महा हुमा जीव देवातिमं उत्पद्धः करामा खाहितः वयोहिः उत्तमं उत्पद्धः हात्रकः 1 भाषाच्या मध्य द्वारा भाष प्रभावता कार्यम् भाषाम् भाषाम् प्रभावतः अस्य उत्तर्भावः स्थितिहः सर्थे समय होसकारायका अस्य होता है। येला भाषावेयस्त्रप्रमान उपरेश है हसी जावक संधु मध्य लामक्यापका कहुत हाता है। पता भाषावपदरवागान वपाछ है हसा मकारते होत्र मुणक्याभोका भी कास जान कर कहना चाहित। हसा महार मानकार, भवारत वार प्रधानवायां का कार्य जान कर करून वाहर । क्या करा वाहरवार मायावायां का वाहरवार करा वाहरवार वाहरवार वा भारताच्याच्याः व्यासक्ष्याचाक पाल्याच्या भवत्याः कामा व्यास्यः । व्याप पाण पट हार करावपरिवर्तन, गुणवरिवर्तन, सरण और स्वामान, हन स्वारंक हारा एव सम्बद्धः हवस्या र नारद्वितिस्वनस्थानम् स्थानस्यस्यकानित्। को स्वः स्थः स्थः साम्रकान्यस्यः कर्तस्य यों को रुद

दोण्णि तिण्गि उनसमा केनचिरं कालादो होंति, णाणाजीनं सु जहण्णेण एगसमयं ॥ २५१ ॥

विद्ध वि कसाएस दोण्डि उबसामगा, अणियद्वीदो उबसि तिण्डं कसापणमनना लोमकसाए तिण्णि उससामगा, उबसंतकसाए लोमोदयामाता । एदेसि कसापणाणि गुणंपराविच-बाघादेहि एगसमञ्जा णस्य । छुदो १ तहाबिहुवएसामाता । किंतु अभिर्णे सहुमसांपराइयाणं चढंत-ओपरंत-पढमसमए मदाणं एगसमञ्जो ल्ब्नाह् । अपुन्तस १ ओपरंतस्स पढमसमए चेव । खुदो १ चढमाणञ्जप्रव्यस्स पढमसमए मरणामाता।

उकस्सेण अंतोमुहुतं ॥ २५२ ॥

सुरो १ चढंत-ओपरंतपञ्जयपरिणदजीवेहि अंतीमुहुनकालं एदेसि गुण्हाणामः सुष्णसुवलंमा ।

## एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २५३ ॥

क्रोध, मान और माया, इन तीनों कपायोंकी अपेक्षा दो उपशामक अर्थार क्रारे और नर्षे गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव, और लोभक्षायकी अपेक्षा तीन उपशाम अर्थात आर्ट्ये, नर्षे और दश्वें गुणस्थानवर्ती उपशामश्रेण्यारोहक जीव, कितने कात क होते हैं है माना जीवोंकी अपेक्षा जधन्यसे एक समय होते हैं ॥ २५१ ॥

कोषादि तीनों ही करायांने अपूर्वकरण और कतिश्वाकरण, ये वे गुजरणानक विद्यान करियान कीय होते हैं। क्योंकि, अनिमृत्तिकरण और किन्द्राक्तिरण, ये वे गुजरणानक करायांने अपूर्वकरण और कानिश्वाकरण, ये वे गुजरणानक करायां अपूर्वकरण अर्थित कार्यकरणाक अपूर्वकरण कीर प्रश्नाकरणाय गुजरणानक अपूर्वकरण कीर विश्व होते हैं, क्योंकि, उपसानक पाय गुजरणानमें लोमकरायक उद्यक्त अपाव के प्रशास कराया गुजरणानक कीर के प्रशास कराया गुजरणानक कीर कार्यकरणा महीं विश्व गुजरणानविद्यंति कराया कार्यकरणा कर्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कर्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कर्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कर्यों क्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कर्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कर्यों के प्रशास कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कराया कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कराया कार्यकरणा कराया कराय

उक्त जीवाँका उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहुर्त है ॥ २५२ ॥

क्योंकि, इरशामधेणी पर चड़ती भीर उतरती हुई वर्षायसे वार्णन जीर्वोधी होते. अन्तर्मुद्रने काल इन गुलक्यानोंके अशाय अर्थान् परिवृत्यं करसे वाया जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीरोंका जपन्य काल एक समय है।। १५३॥

र इंदोरप्रदर्शने xx देश्डडोभस्य च xx सामान्यीतः बातः । तः तिः रः ४०

ष्ट्रते ? तिण्हप्रवसामगाणं मरणेण एगसमओवरुंमा । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५४ ॥

फुटो र कसायाणपुरयस्य अंतायुद्वाको उत्तरि णिच्छरण विणासी होदि वि गुरुवेदेसा ।

दोणि तिण्णि खगा केवचिरं कालादो होति, णाणाजीयं पडुच्य जहण्णेण अंतोमहत्तं ॥ २५५ ॥

एस्य प्रात्मको किन्न रूनमेद १ उरुपेद - व ताव कतायपरावधीय प्राप्तमको रूनमिदि, रावगुवताममे सक्तायुद्धस्म जहण्यकारस्य वि अंतोष्ट्रहचर्यामाणुवदेसा । व गुणरात्वधीय वि प्राप्तमको, प्राप्तपद्धस्य करण्यकारस्य वि अंतोष्ट्रहचर्यामाणुवदेसा । व गुणरात्वधीय वि प्राप्तमको, प्राप्तपद्धस्य त्वायुद्धस्य उरुप्यसमेतरीत क्रमारा । व वाराविण, स्वगुवसमेतरीत वापादिण, स्वगुवसमेतरीत वापादिण, स्वगुवसमेतरीत वापादिण, स्वगुवसमेतरीत वापादिण, स्वर्णे क्रमारा । व सर्वेण वि, रावग्यसम्पत्रीत वापादिण, स्वर्णे क्रमारा । वित्राप्तमानिक विकास स्वर्णे क्षमानिक विकास स्वर्णे विकास स्वर्णे विकास स्वर्णे क्षमानिक विकास स्वर्णे विकास स्वर्णे क्षमानिक विकास स्वर्णे विकास स्वर्णे विकास स्वर्णे क्षमानिक स्वरत्य स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे क्षमानिक स्वर्णे क्षमानिक स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वरत्य स्वर्णे स

पर्योकि, अपूर्वकरण, भनिष्टृतिकरण भीर सृद्यसारगराय, इन सीनी उपसाधक जीवोंके सरणके साथ एक समय पाया जाता है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृहर्त है ॥ २५४ ॥

पर्योकि, करायोंके उद्यक्त अन्तर्श्वहर्ते कालते ऊरर निश्चवन विज्ञात होता है, इस प्रकार गुरुका उपरेश है।

अपूर्वकरण और अनिश्वविकाण, ये दो गुणमानवर्गी शयक तथा अपूर्वकरण अनिश्वविकाण और एएमसाम्पराप, ये सीन गुणसानवर्गी ध्यक किन्ने काल तक होने हैं ? नाना जीवॉकी अपेशा जयन्योर अन्तर्यहुर्त्त वक होने हैं ॥ २५५ ॥

सना जीवांकी अपेशा जघन्यसे अन्तर्गहुत तक हात है ॥ २५५ ॥ घोंका—हन सभीत क्षपन जीवोंके यक समयग्रमाण बाट क्यों नहीं राजा जाता है है

समाधान—जन भार्यकायर उत्तर कार्य है कि इन होनों या तीनों गुन्ध वानों में कार्याययिवनेतरे यह समय पाया जाता है, व्यक्ति, स्वयुक्त वा उप्तामकों मध्यों वृद्यायत क्यायते इस्त्रों कार्याय वार्याय कार्याय कार्य का

१ × × दरी: क्पवरी: वेरवक्षेत्रस्य च × बादाग्रीन: वाक: १ त. दि. १, ८.

उदाहरणं- एवको मिच्छादिङ्की सत्तमाए पुढवीए उववन्त्रिय ह समाणिय विभागणाणी जाहो । अप्पणी आउद्विदिमणुपालिय कार्य काउन निकास विभागाणं, अवज्ञत्तद्धाए तस्य विरोहा । एवमंत्रीमृहत्त्ववेतीसमागगेवस्त्रै णाणस्य उक्कस्मकाली होति ।

सासणसम्मादिद्री ओवं' ॥ २६५ ॥

णाणाजीवं पहच्च जहण्येण एगसमञ्जो, उद्यस्त्रेण सगरासीही एगजीर्व पहुच्च जहणीण एगसमत्री, उक्कस्त्रेण छ आवित्यात्री, इन्तेस् मेदामाबादो ।

आभिणिवोहियणाणि-सुद्रणाणि-ओधिणाणीसु 👯 🕻 पहुडि जाव सीणकसायवीदरागछदुमत्या ति ओर्घ ॥ २६६॥

इदो ? णाणेगजीवजहण्युक्कसमकालेहि एदेखि ओघादो विवेसामाग। स्र ओघिणाणिसंजदासंजदेगजीवुक्कस्सकालिंद अतिय विसेसो' । तं जहा− एको क्रॉं

उदाहरण— एक मिथ्यादृष्टि जीव सातवीं पृथिवीम उत्पन्न होकर बौर हाँ हाँ त्तियोंको सम्पन्न करके विमाग्राकी हुन्ना। अपनी आयुश्यितको परिपाटन कर केर हा करके निकला । तय उसका विभगवान नष्ट हो गया, क्योंकि, अपरातशल विनंति होनेका विरोध है। इस प्रकार अन्तर्भहने कम तेतीस सागरोपम विभागानका वृक्ष

विभंगज्ञानी सासादनसम्पग्टिष्ट जीवोंका काल ओवके समान है।। २६५॥ क्योंकि, नाना बीयोंकी संपेक्षा जयन्य काल एक समय, उरहर काल सानी हों वर्संच्यातगुणा, तथा एक जीवकी अपेशा जधन्य काल एक समय और उन्हेंद्र कर्ज

थायिक्षमाण, इस मकार थीच कालसे कोई मेद नहीं है।

आभिनियोधिकज्ञानी, शुरुवानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंपर्वतानी गुणस्यानमे छेक्टर श्रीणकपायशीतरागछब्रस्य गुणस्यान तक जीवाँका कार्र की समान है ॥ २६६ ॥

क्योंकि, नाना और एक जीयसम्बन्धी जधन्य और उत्कृष्ट बावही मेरे रात्रोक जीवोंके बालमें श्रीयस कोई विशेषता नहीं है। केवल, संपर्वती गुणस्यानसम्बन्धी एक जीवके उन्हर कालमें विदेशका है। केवल, मधांप्रधाना करता

र जानादनमञ्ज्ञ सामायोत्तः कातः । स. वि. १, ८.

२ व्यक्तिनीयङ्कृतार्थियनःपर्ययङ्ग्डानिनी साम्प्योतः बाउः। स. वि. है, ४०

६ मदिश " कवि कि विदेश " इति पाटः ।

कम्मिन्नो सण्णिसम्मुन्छिमपननच्यस् उत्त्रण्णो । छहि पन्नचीहि पन्नचपदी विसंती कालाणुगमे संजदकालपरस्कर्ण उदो संजमासंजमं पंडियज्ञिय मिर्ने संद्याणी जारो । तरो अंत्रेगृहूचं मेर्न ओपि-

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदःपहुडि जाव सीणकसायवीदरागः मत्या ति ओवं ॥ २६७ ॥ ा ६५ २ ५१ ५, ५, ५ . बुदे१ १ वमचावमचरांजदाणमुवसामगाणं सवगाणं च णाणेगजीवजहानुबस्सकालेहि ो भेदामात्रा ।

केवरुणाणीस सजोगिकेवरी अजोगिकेवरी ओषं ॥ २६८ ॥ इदा १ केनलणाणविरहिदसन्त्रीमि अनोभिकेनलीणमभावा । एवं जाजमगाजा समता।

पंजमाणुवादेण संजदेख पमत्तसंजदपहुडि जाव अजोगिकेविट

निवर्षेकी सत्ता रखनेवाला कोई एक और संबंद, सम्मूर्ण्डम, पर्यानकोंस करम ार्विवासि राजा राज्याचाला कार रहा जान राज्या राज्य ति सुनवानी हो गया। पुनः सहत्रपुनिके प्रधान् स्वाधिकाको उत्तर वना विषयानियोमें प्रमधनंपत्ते लेकर शीमक्षणपरीवसम्बद्धस्य गुणस्थान भारत भारत प्रतास १ । १ १ ० । प्रमान भीट सममत्त्रसंदर्भाका तथा उपसामक भीट सारवाँका सामा जीव

जाराव भीर जलार कालोंके साथ भाषावरूपणांस केरियेन मरी है। नियोमें सपीगिकेरली और अवागिकेरली जीवोंका बात जापके ममान

हेयत्वनसे रहित सर्पाणिकेवनी और अस्तिविचातियाँका समाव है। इस महार जानसार्गणा समात हुई।

गारी अनुवादन संपत्नीम प्रमाणसंपत्रने लेकर अयोगिरेक्ट्री तक विकालीप्टाव देवि " कृति वाटा ।

कावादिक वेरोपानस्थावसीय वेडावैदानतः स्थापनस्थानको विनदासां स्या कस्था

सामण्णसंजमे अवलंबिदे विसेसाणुवलद्वीदो ।

सामाहय-च्छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदपहुडि जाव यद्दि ति ओवं ॥ २७०॥

समञ्जो, उकस्सेण अंतीमृहुचं । दोष्ट्रमुवसामगार्ग जहप्लेण पाणेगजीवं पहुच त्तरामा प्रकरतार व्यवस्थित । वारवश्चनात्तराम वार्यव्यवस्था वारवानाः । उत्स्वस्य व्यवस्थानाः । उत्स्वस्य अस्ति अस्ति । वारविकासीयः वार्यवस्थानाः । उत्स्वस्य अस्ति । वारविकासीयः वार्यवस्थानाः । उत्स्वस्य अस्ति । वारविकासीयः वार्यवस्थानाः । उत्स्वस्य अस्ति । सदुत्तमिच्चेएण ओघादो भेदाभावा ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदा ओवं ॥ २७१ ॥

खुदो १ वाणाभीवं पहुच्च सन्यद्धा, एराजीवं पहुच्च जहण्लुक्कस्सेव एगसम्ब अंतोमुहुत्तमिच्चेदेहि विसेसामाया ।

खवा ओंघें ॥ २७२ ॥

<u> छ्टुमसांपराह्यसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराह्यसुद्धिसंजदा</u> *उनस*म

छदो ? सद्दमसांपराइयसुद्धिसंजदाणमुभयत्य संजमभेराभावा ।

पाया जाता ।

पर्योक्ति, संयमसामान्यके अवलंबन करने पर शोधके कालते कोई भेद नहीं

सामायिक और धेदोपस्थापनाद्यद्विसंयर्गोमें प्रमचसंयत गुणस्थानसे हेब्रा अनिष्ट्रचिकरण तकके जीवाका काल ओघके समान है ॥ २७० ॥ चर्योकि, प्रमत्तसंवत और अप्रमत्तसंवताका नाना जीवाँकी अवेक्स सर्वकाल है। एक अविकी मेपेसा जयन्य काछ एक समय है और उरहाट काल सन्तर्गृहते है। आउँ भीर नर्

शुष्यानवर्ती दोनों उपशासकाँका नाना और एक जीयकी अपसा जवन्य काल एक समर्व है, तथा उत्हर काल अन्तर्युहर्त है। बाहवें भीर नर्थे गुणस्थानवर्गी दोनों सक्तर्यक्ष नाव अवि सीर एक जीवकी अधेशा जयन्य और अरुष्ट काल अन्तर्भावना वाना वाना वाना काना जीवकी कालसे कोई भेद नहीं है। परिहारिविद्यादिसंपवोंमें प्रमत्तसंपत और अप्रमत्तसंपतोंका काल जोपके समार है।। ३७१॥

पर्योहि, माना जीवाँकी श्वेशा सर्वकाल, एक जीवकी अवेशा जवाय और उन्हर काछ यक समय और आतर्महर्न है, इस प्रकार ओयके कालसे कोई विरोपता नहीं है। घरममाम्पराधिकशिद्धंसंयनोमें धरममाम्पराधिकशिद्धांयन उपद्यापक श्रीर धपकोंका काल ओपके समान है ॥ २७२ ॥

पर्वोकि, गृहमसाम्परायिक गुलिसंपताके दोनों भेलियाँमें संपमके भेदका नमाव है।

```
t, 4, 204. 1
                                      पाटाणुगमे चनखुदंसणिकाटपरूवणं
                    जहानलाद्विहारसुद्धिसंजदेसु चहुडाणी ओयं ॥ २७३ ॥
                    हरो है ओघादेसेस चढुण्हं सुमहाणाणं संजमभेदाणुवलंगा।
                                                                                   1844
                   संजदासंजदा ओधं'॥ २७४॥
                  सममा एदस्स अत्यो ।
                  असंजदेसु मिच्छादिद्विषहुडि जान असंजदसम्मादिद्दि ति ओएं'
17-
          ॥ २७५ ॥
                एदस्स वि अत्थो अवधारिओघद्वागं सुगमे। ।
:11
             दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणील मिच्छादिट्टी केविचरं कालादो होति,
       णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धां ॥ २७६ ॥
             इदो ? चक्खदंसणिमिच्छादिद्विविदिदकालामाया ।
            यथारुवावविद्वारद्यद्धिनंपतोमें अन्तिम चार गुणस्यानशांत्रे जीबोर्सा कात ओपके
    समान है।। २७३॥
           चयों के, श्रोय भीर आदेशमें चारों गुणस्थानों के संवमों में कोई भेर नहीं पावा
          .
संयतासंयताँका काल ओयके समान है ॥ २८४ ॥
         इस स्वका अर्थ सुगम है।
        रेव प्राप्त को विश्व हिंदे गुणस्थानसे हेकर अर्तपवसम्पन्ति गुणसान वक
 अमंपर्वोद्धा काल ओपके समान है ॥ २७५॥
       कार जारक प्रयाप स्वाप के ...
जिन्होंने ओग्रसम्बन्धी बालको मलीभीति भवधारण किया है, यस सिन्धों हे लिय
इस स्वका अर्थ समग्र है।
     दर्शनमार्गणाके अनुवादमे चानुदर्शनी जीशमें मिध्याराष्टि जीश कितने काल तक
                      इस प्रकार संयमगार्गणा समाप्त हुई।
होते हैं ? नाना जीवोंकी अवेशा मर्वकाल होते हैं ॥ २७६ ॥
     चयाक, वश्वदर्शनां मिश्यार ए जायसि राटन कालका समाप है।
   हे दहेनानुवादन वसुदेशानु विकादनेताव बाव पहुंच कर काल , क हुन ,
```

## एगजीवं पहुच्च जहणीण अंतोमुहत्तं ॥ २७७ ॥

कुदो १ सम्मामिच्छादिहिस्स असंजदसम्मादिहिस्स संजदासंजदस्स संजदस्स वा दिहमग्गस्स भिष्ठलं गंतुण सञ्जजहण्णद्वमध्छिय गुणेवरं गदस्स अंतेष्ठद्वतकानुवर्णमा।

उकस्सेण वे सागरोवमसहस्माणि ॥ २७८ ॥

उदाहरणं— एगो अचनसुदंसणी भिच्छादिट्ठी चन्नसुदंसणीसु उपवण्णो। चनसु-दंसणी होद्ण वे सागरीवमसहस्साणि परिभमिय अचनसुदंसणं गरी। सहिअपन्वचेसु चनसुदंसणं णिव्यत्तिअपन्वनाणं व किणा उच्चदे १ ण, तम्हि भवे तस्य चनसुदंसण्य-जोगाभाव।। णिव्यत्तिअपन्यनाणं तम्हि भवे णियमेण चनस्यदंसण्य नोगर्यसमा।

सासणसम्मादिद्विषहुडि जाव स्त्रीणकसायवीदरागछटुमत्या ति

ओवं'॥ २७९॥

कदो १ चक्खदंसणविरहिदसासणादीणमभावा ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल अन्तर्मृहते है ॥ २८७ ॥ क्योंकि, इप्रमार्गी सम्यागमण्यादृष्टि, या असंयतसम्यग्दिए, या संयतासंयत्,या संयतके मिथ्यास्यको प्राप्त होकर यहां पर सर्थ जयन्य काल रह करके अन्य गणस्यातको

स्वतक मिथ्यात्वका प्राप्त हाकर वहा पर सब जयन्य प्राप्त होनेवाले जीवके अन्तर्महर्त काल पाया जाता है।

चक्षुदर्शनी मिथ्यादिष्टे जीवोंका उत्कृष्ट काल दो हजार सागरीपम है ॥ २०८॥ उदाहरण—कोर्र एक अचक्षुदर्शनी मिथ्यादिष्ट जीव चक्षुदर्शनियाँमें उत्पन्न हुण, भीर चक्षुदर्शनी दोकर दो हजार सागरीयम काल तक परिश्रमण करके अचक्षुदर्शनसे गाउ हो गया। (इस नकार स्वोक्त काल सिद्ध हमा।)

। (इस प्रकार स्थानः काळ ।सद्ध हुमा।) द्यंका — विदेत्यपर्यान्तकाँके समान छन्यपर्यानकाँमें चक्षदर्शन क्याँ नहीं कहा !

त्रका — निर्देशपायकार सनाम करन्यपायकार अञ्चलकार विद्वार पर सम्बन्ध समाधान — नहीं, क्योंकि, क्राध्यवर्षात्रकाँके उसी भवमें चश्चद्दीनोवयोगका अमाय पाया जाता है। किन्तु निर्देश्यवर्षात्वकाँके तो उसी भवमें नियमसे ही चश्चद्दीनोवयोग पाया जाता है।

्रसासादनसम्पग्दिष्टं गुणस्थानसे लेकर श्रीणकपायशीतरागछग्रस्य गुणस्थान वर्क

चभुदर्शनी जीवोंका फाल ओपके समान है ॥ २७९ ॥ वर्षोंक, चभुदरांनसे रहित सासादनादि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं ।

१ वृद्धजीत अति अवस्पेनान्तर्पूर्तः । छः नि. १. ८.

६ डन्डरेंन है लागरेपमन्त्रे । स. वि. १, ८.

६ सामाद्रवत्रव्यवद्यारीनां श्रीवद्यायान्तानां सामान्ये तः बालः। स. वि. १. ८.

अचनखुदसणीम् मिच्छादिट्टिपहुडि जाव सीणकसायवीदराग-छदुमत्या ति ओघं ॥ २८०॥ छदो १ अचनखुदसणिबरहिदसावरणजीवाणुक्तंमा। ओधिदसणो ओधिणाणिमंगों ॥ २८१॥

केवल्रदंसणी केवल्णाणिभंगो ॥ २८२ ॥ एदाणि देवि मुचाणि अवहारिदणाणाणुवादाणं मुगमाणि । एवं देमणमगणा सम्बा ।

टेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएस मिच्छा-दिट्टी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच सव्वद्धां ॥ २८३ ॥ एदो १ सन्वकलं विलेस्स्यिमच्छादिद्दांगं विरहामाता । एमजीवं पडुच्च जहण्णोण अंतोसहत्तं ॥ २८४ ॥

अवसुद्दीनियोमें विध्यारष्टि सुणस्मानसे ठेकर श्रीणक्यापदीतसग्रहमस्य गुण-स्मान दकका काल ओपके समान है ॥ २८० ॥

पर्योकि, भवश्वदर्गनसे रहित सायरण औव नहीं योथ जाते हैं। अवधिदर्शनी जीशेंका काल अवधिग्रानियोंके समान है।। २८१।। केवलद्रश्रीनी जीशेंका काल केवलज्ञानियोंके समान है।। २८२।। कानमार्गणाके बालात्रयादका अवधारण करनेयाले तिर्परोक्ष लिप ये होती हैं। एक रागम हैं।

इस प्रशाद दरीनमार्गणा समाप्त हुद्दे ।

त्रयामार्गणाके अनुवादेस कृष्णतेष्या, नीवतेष्या और काषोत्रतेष्यानेत्रे शोहोंने मिष्पारिष्ट जीव कितने काल तक होते हैं। नाना जीवोंको अपेक्षा सर्वेद्यात होते हैं॥ २८३॥

वर्षोहि, सर्वकाल ही सोना भनुम लेरुपायाले मिष्याहरि श्रीकों विरहता असाव है। एक जीवकी अवेक्षा तीनों अशुम लेह्यावाले जीकोंका जपन्य काल अन्तर्वहर्त

है।। २८४॥

र अवस्र्वेतितृ विव्यादश्यदिशीववयावानातां सावान्योताः वाष्ठः । सः वि. १, ८० व अवस्ति-वेतस्रवंतिनोतास्यि-वेतस्यातिवर् । सः वि. १, ८०

त व्यवस्थानकार्यात्राक्षात्राक्ष्यात्राक्ष्यात्राक्ष्यात्राक्ष्याः वर्षे वाकः । छ वि. १, ४. ४ एवत्रीरं प्रोतं वर्षात्राक्ष्यात्रात्रां । छ छि १, ४. किण्डलेसमाए ताव अंतीमुहुनपरन्यंग कीरदे । तं ज्ञा- पीटलेसमाए अल्लिस्स तिससे अद्वाखएण किण्डलेसमा जादा । सन्यलहुमंतीमुहुनमन्छिद्गं णीटलेस्सिन जादो ।। काउलेसिसाने किण्य होदि १ ण, किण्डलेसमाए परिणदस्स जीवस्स अर्णवस्त्र काउलेस्सापिणमणस्त्रीय अर्थमञ्जा

णीललस्साए उच्चेर्- ईत्यमाण-बहुमाणकिण्हलेस्साए काउलेस्साए व अच्छिदस्स णीललेस्सा आगदा । सच्चबहुण्णमंतीमान्छिय बहुण्णकालाविग्रेहण काउलेस्स किण्हलेस्स वा गदो, अण्णलेस्साममणासभवा । के वि आइरिया हीयमाणलेस्साए <sup>बेह</sup>

जहण्णकाले। होदि चि मणीति।

काउलेस्साए वि उच्चरे- हायमाणणीरलेस्साए तेउलेस्साए वा अन्छिर्स्स काउलेस्सा आगदा । तत्य सच्चाइण्णमंत्रीमुहुत्तमन्छिय जित् तेउलेस्सारी आगदो, ते णीललेस्सं णेदच्ये । अह णीललेस्सारी आगदी तो तेउलेस्साए णेदच्ये, अण्णहा संक्लिस-विसोहीयो आउर्तस्स जहण्णकालाणुव्यचीदो । एस्य जोगस्येव एगसमयो जहण्य-

पहले रुप्णलेहराके अन्तमुद्धतं कालकी महत्वणा की जाती है। यह इस मकार है— मीललेहरगामें वर्तमान किसी जीवके उस लेहरपाके काल हार हो जानेसे रुप्णलेहरगा हो गरी, और यह उसमें सर्पललु अन्तमुद्धतं काल रह करके नीललेहरगावाला हो गया।

शुका-एष्णछेदयाके पश्चात कापीतछेदयायाला वयों नहीं होता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, कृष्णलेश्याले परिणत जीवके तदनन्तर ही कांगेत-लेश्यारुप परिणाम शक्तिका होना असंगव है।

अवस्था परिमान शायका वामा जायका युक्त सहपणा करने हूँ— हीयमान हरणहेरण व अवधा धर्ममान कापोतहेरपाम विद्यमान किसी जीवके नीललेरपा आर्था। तह यह जीव असम सर्व अध्यय धर्ममान कापोतहेरपाम विद्यमान किसी जीवके नीललेरपा आर्था। तह यह जीव उसमें सर्व अध्यय अन्तर्मुहर्न काल रह करके जध्यय कालके लियोचे से प्रधासमय कापोन हेरपाको अपया हरणहेरपाको मात हुमा, पर्योक्ति, हन दोनों लेरपामों के सियाय उसके माय किसी लेरपाम आसमन असेनम है। किनने ही आचार्य, हीयमान लेरपाम ही जध्य कालके हैं।

भाव होता है, पना पहुंच हैं जाएन वालको कहते हूँ — हायमान नील्लेडरगाँम अपना अब कापोलेडरगाँम अधिक कापोत्सेडरगा आगर्त। यह आँव उस लेडगाँम सर्वश्रमन अन्तर्भुति काल रह करके, यदि तेकोल्डरगांस आगार्द हो नील्लेडरगाँम ले जाना चारिया और यदि नील्लेडरगाँस आगार्द हो। तेकोलेडरगाँम ले जाना चारिया। अन्यया संहें ग्रमाँ विशासिक आगरण करनेवाल जीवक जायन काल नहीं यन सकता है।

र्यका - यहां पर योगपरायर्तनके समान एक समयरूप अधन्य बाह क्याँ नहीं

र मन्दरी 'हायबान 'ह द्वि पाटः ।

**₹. ५.** २८५. 1

काली किण्य लब्मदे ? ण, जीग-कसायांणं व लेस्साए तिस्सा परावचीए गुणपरावचीए भरतेल जाघारेल वा एगसमयकालस्तासंभवा । ण ताव लेस्सापरावचीए एगसमञ्जा लन्मदि. अप्पिटलेस्साण परिणमिद्विदियसमण तिस्से विणासामावा, गुणंतरं गदस्स विदियसम्बद्ध लेस्संतरगमणाभावादे। च । ण गुणपरावचीष, अध्विदलेस्साव परिणदविदिय-सम्प गुणंतरगमणाभावा । ण च वाषादेण, तिस्ते वाधादाभावा । ण च मरणेण. अध्यिद-लेम्सार परिवदविदियसम्ए मरणाभावा ।

उनकस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २८५ ॥

पढेसिंमदाहरणाणि । तं जधा- णीललेस्साए अच्छिदस्स किण्डलेस्सा आगडा । तत्य सन्त्रकस्त्रमंत्रोग्रहत्तमन्द्रिय अधो सत्तमीए प्रत्यीए उत्तरण्णो । तत्य तैत्तीसं सागरी-बमाणि गुमिय उबट्टिदो । पञ्छा वि अंतोमुहुचकालं भावणवसेण सा चैव लेस्सा होदि । एवं देंहि अंतासुरूचेहि सादिरेयाणि तेचीसं सागरोगमाणि किण्हलेस्साए उक्करस-काली होडि 1

#### पाया जाता है है

समापान - नहीं, वर्षोंकि, योग और वर्षायोंके समान हेश्यामें हेश्याहा परिवर्तन अथया गुजरधानका परिवर्तन, अधवा मरण और व्याधातसे एक समय कालका वाया जाना असंमय है। इसका कारण यह है कि न तो छेदगापरिवर्तनके द्वारा एक समय पाया जाता है क्योंकि, विवक्षित छेड्यांसे परिणत हुए जीवके द्वितीय समयमें उस छेड्यांके विज्ञाहाका अमाय है। तथा इसी प्रकारसे अन्य गुणस्थानको गये हुए जीवके द्वितीय समयमें अन्य छेदयामें जानेका भी शमाय है। म गुणस्थानपरियतनकी अपेक्षा एक समय संमय है, क्योंकि. विवक्षित छेड्यासे परिणत हप अधिके हितीय समयमें अन्य गणस्थातके गमतना स्थान है। न व्याचातकी अपेक्षा ही एक समय संतय है, क्योंकि, वर्तमानलेर्योक व्याचातका अभाव है। और न मरणकी अवेशा दी एक समय संमय दे, पर्योक्त विवासित छेश्यासे वरियत हव जीवके दितीय समयमें मरणका सभाव है।

उक्त तीनों अग्रम लेडपाओंका उत्कृष्ट काल क्रमश्चः साधिक वैतीस सागरोपम, साधिक सत्तरह सामरोपम और साधिक सात सामरोपम प्रमाण है ॥ २८५ ॥

इनके उद्याहरण इस प्रकार हैं-- मीललेक्यामें विध्यमान किसी जीवके कृष्णलेक्या शागर । उसमें यह सर्वोत्राप अन्तर्महर्न काल रह करके मरण कर नीचे सावयाँ पृथियीमें इरपन हुमा। यहां यह तेतील सागरीपम बाल विताकर निकला। सो पाँछे भी अन्तर्महर्य काल तक भाषनाके पदासे कही है। हरपा होती है। इस मकार दी अन्तम्हतासे अधिक तेतीस सागरीयम कृष्णलेश्याका उत्कृष्ट काल होता है।

१ डलचेंन वयसिंहत्सप्तदहस्त्वसागारेवमानि सातिरेवानि । स. ति. १, ८.

f ŧ णीललेस्साए उच्चदे- काउलेस्साए अध्छिदस्स णीललेस्सा आगदा । मेतोमुहुचमन्छिद्ण पंचमीए पुढवीए उववण्णो। तत्थ सत्तारस सागरोवमाणि त गमिप उवविद्वते। उवविद्वदस्स वि अंतीसुदृत्तं सा चैव लेस्सा होदि। एवं व मृहुचेहि सादिरेयाणि सचारस सागरीयमाणि णीललेस्साए उनकस्सकाला होदि

काउलेस्साए उच्चदे- तेउलेस्साए अच्छिद्स्स सगद्वाए सीणाए व आगदा । तत्य दीहमंते।सुदूत्तमच्छिय तदियाए पुढवीए उववण्यो । तीए लेस सागरोत्रमाणि तत्थ गमिय उत्रवहिंदो । उत्रवहिंदसस वि सा चेत्र लेखा उ होदि । एवं दोहि अंतोष्ठहुत्तेहि सादिरेयाणि सत्त सागरावमाणि काउलेस्सार र काली होड़ि ।

# सासणसम्मादिङ्री ओघं' ॥ २८६ ॥

छुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्येण एगा समञ्जा, उक्करसेण रासीदो अस् गुणा पितदोवमस्स असंखेजनिद्मागा, एगजीवं पड्डच जहणीण एगा समयो, उ छ आवित्यात्री, एदेहि तिलेस्सागदसासणार्गं तदी भेदामावा ।

भव मीळटेरयाका काळ कहते हैं — कापातलेरयाम धर्ममान जीवके नीळटेर गई। उसमें उन्द्रष्ट सन्तर्गुहुतं रद्द करके यद जीय वांचर्या पूर्यथीम उत्पन्न दुमा। वर् वत्तरह सागरीयम काल उस लेक्याके साथ विताकर निकला। निकलने पर मी मन तक पडी ही छेदवा दोनी है। इस प्रकार दो अन्तर्गुहरोंसे अधिक सत्तरह सागरीय" रेडपादा उन्हण्ड काल होता है। भव कारोतछेड्याका उन्हार काल कहते हैं — तेजीलेड्यामें विद्यमान किसी जीवके

सरवाके कालके सीम हो जाने पर कापोललेख्या सागर । उसमें उल्लाह सन्तर्गृहर्त बार् कर मरण करके तृतीय गृधियोमें उत्पन्न हुआ। यहाँ पर उसी छद्यके साथ मात सामग्री चार दिनाकर निकला। निकलनेके प्रधान भी यही लेहना भन्तमुहन तक रहती है।

महार दो शत्त्रगुंहनोंने मधिक सात सागरीयम कागीतलेदवाका उन्हर काल होता है। उक्त तीनों अशुभ लेडपात्राने मामादनमध्याष्ट्रशि जीवोंका काल ओपके सम

है।। २८६ ॥ क्योंकि, नामा जीवोंकी धंपेक्षा जयम्यने एक समय, उन्दर्गते भवती गरि समेरवातमुक्ता वन्त्रावसका समेरवातयां साम काल दे। यक जीवनी संवेशा जवन्त्रवे हैं

समय भीर दल्कवेस सह आयर्जावमाण काल है। इस महारोग तीनों सनुम हेरापाँग मान दूर मामादनमध्यग्रहि जीवाँने कालका भाषमे काँदै भेद नहीं है।

१ वानादनवृत्त्वानान्त्रिकानान्त्रावानात्रां। वानान्त्रोतः, वाठा । वः वि. १, ४०

#### सम्मामिच्छादिद्वी ओघं ॥ २८७ ॥

कुरी १ णाणातीवं पड्डच जहणोण अंतीमुनुषं, उकस्मेण सगरासीदे। अक्षेत्रज्ञ-गुणी पलिदोवमस्स अक्षेत्रज्ञादिमागो, एगजीवं पड्डच जहण्युक्स्सेण अंतीमुनुचिमचेदेहि तरो भेदामाता।

असंजदसम्मादिद्वी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच सन्बद्धां ॥ २८८ ॥

सुगममेर्द सुनं ।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २८९ ॥

तं जहा-एगो असंबदसम्मादिष्टी बहुमागणीललेस्साए अच्छिदो किण्हलेस्सं गर्दे। तत्य सच्यजहण्यमंतोष्ट्रचमच्छिय पुणो शीललेस्सामागदो । शीललेस्साए उच्चेदे- हाय-मागिकण्डलेस्सओ शीललेस्सी जादो। ताए सच्यजहण्यमंतीष्ट्रदुनमन्जिय काउलेस्सं गदो। काउलेस्सार उच्चेदे- एगो सम्मादिष्टी हायमाणशीललेस्सिओ कातलेस्सं गदो। तत्य

उक्त वीनों अञ्चम लेदपायाले सम्परिमध्यादिष्ट श्रीबोंका काल ओपके समान है।। २८०।।

क्योंकि, नाना ओवॉडी अवेशा जयन्य काल मनगुर्तने, उरहर काल सपनी सारिते सर्वयातगुर्वा परयोपमका सर्वयातयां भाव दें। एक जीवशी भीशा जयन्य भीर उन्हर काल भग्नगुर्तने दें, इस प्रकार इनका भोयकालके कोई भेद नहीं दें।

<sup>.</sup> उक्त वीमों अग्रुम लेक्ष्यायले असंयवसम्यग्रहि जीव क्रिक्ने काल वक्त होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २८८ ॥

वद सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अरेक्षा उक्त जीगोंका जपन्य काल अन्तर्मुहर्त है ॥ २८९ ॥

क्रेसे— वर्धमान भीतिहरणमें विश्वमान कोर वक अधेवनसम्पर्शत जोव इन्छ-सेरवारो प्राप्त हुना। यहाँ पर सर्वमध्य अमन्तुर्ग काम रह करके पुत्रः मेरिसरफर्से आसवा। अब मीतिहरसाधा बात कहते हैं— दायमान हनगतिरसास कोर वस और मीतिहरणायास दोनाया। वस तेरवाम सर्वेष्ठम्य अग्युर्ग्त काम तक दरवर बारोक-हेरवाकी प्राप्त दोनाया। अब कापोनतिरयाका काल करते हैं— दायमान मीतिहरयाबास

१ अर्थमतमप्याद्दीनीमाजीवापस्था समैः कारः । सः तिः १, ८० ५ सुक्रमीर्थ मोत्रे अपन्येत्राचर्युर्द्धः । सः विः १, ८०

सञ्जडण्णमंतोष्ट्रह्वमिष्टिय तेउलेस्तिओ जादो । पुरुवं हायमाण-वड्टमाणनेउन्काउ हिंतो काउ-जीललेस्साणमागदाणं जहण्णकालो उचा, सो संपद्वि एत्य किण्य उच्चरं पाएण तस्सुवएसामावा ।

उकस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि ॥२

किण्डलेस्साए देखणाणि तेषासं सागरोत्रमाणि, णीळलेस्साए देखणसत्तासः स्वामाणि, काउलेस्साए देखणसत्त सागरोत्रमाणि। ' जहा उद्देसो तहा णिर्देसो णायादो उदाहरणाणि उद्देसपरिवाडीए णिद्सिते । तं जहा- एको अहावीसित्तसंतक्ष्मिन्छादिही सत्तमाए पुढबीए किण्डलेस्साए सह उववण्यो । छहि पउजवीति पउजविक्षित्र के विक्षात्रीति पायाचित्र के विक्षात्रीति स्वामाणि प्रसंति पायाचित्र के विक्षात्रीति स्वामाणि प्रसंति किण्डलेस्साए गामिय अतीष्ठहुत्वाससेस मिन्छन्तं गीत्र आउन्ने विविच्य विस्मारी, तिरिक्षो जादो । एवं छहि अतीष्ठहुत्वीह ऊष्णणि वेषीसं सागरोत्रमाणि विकेसार उक्तस्यकाली होदि ।

पक वर्तपतसम्बन्धिः जीव काषोतलेदयाको मात हुना । उसमें सर्वज्ञवन्य अन्तर्मुहन क रह करके तेजोलेदयाको मात हुना ।

र्युका रूपहरे हायमान तेजोलेहरग और वर्धमान कापोतलेहरगांसे कमझः कार् और नोल्लेहरगार्मे आपे दूर जीवींका जमन्य काल कहा है, सो यह अब यहां पर क्या न कहते हैं।

समाधान---नहीं, क्योंकि, प्रायः आजकल उस प्रकारके उपदेशका समाव है। उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल कुछ कम वेतीस सागरीयम, सचरह सागरी

और साव सागरीयम है ॥ २९०॥

कृष्णलेरवामें कुछ कम तेनीस सागरीयम, मीललेरवामें कुछ कम सत्तरह सागीगर कार वापानेरेयामें कुछ कम सत्तर सागरीयम कार है। सो 'जैसा उदेश होता है, इर्फ स्वारत्त निर्देश होता है 'दे स्व ग्यायानुसार हनके उदाहरण भी उदेशकी गरिवारीसे निर्देश करें वे द वर मकारते हैं— मोहकांकी अर्थाद महार्देश स्वार्था होते हों विश्व सानवीं शिवार्थ के मोहकांकी अर्थाद हमा। एटी वर्षालिशीस को हों हर्ष विश्व सानवीं शिवार्थ के राज्य किया हिमार्थ के साम उत्पार्थ हमा। एटी वर्षालिशीस को हों हर्ष दिशास ले तथा थिएत है हिसार्थ के प्रतिवार्थ के साम करार्थ किया कार्य कर हिमार्थ के साम करार्थ किया कर कर हर्ष साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम कर साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम कर साम कर साम कर साम करार्थ कर साम करार्थ कर साम कर

र इ.क्वेंच वक्कित बल्वरहब्ल्डारहोत्वरानि देशोतानि । स. जि. र, ४०

1883

एगा अद्वावीतसंवकिमात्रो शीललेस्साए पंचमपुदशिए हेड्डिमपरवहे उकस्साउद्विदिओ होद्ग उववण्णा। तस्य जहिन्यपा किण्दलेसा च ग, सन्धेसि शेरहपाणं तस्यतणाणं
तीए चेव लेस्साए अभावा। एककिट पस्थेदे भिष्णलेस्साणं कर्ध संभवो है विरोहामावा। एसा
अरुपा सञ्चरप जागिदन्दो। छदि पण्डनितिह पज्ज्ञचर्दो विस्तेती विसुद्दे। होद्ग सम्मर्च
पिडिचण्णा। आउड्डिदिमणुपालिय मुद्दो मणुरसा जादो। तस्य वि अवीमुद्दूर्च तीए चेव
लेस्साए अन्छिद्ग लेस्सेतरं गदो। पिछल्डनमंतोमुद्दुर्च शुन्धिल्लित् अतीमुद्दूर्च स्रोहिय
मुद्दसेसेलं क्रणाणि सम्बत्त सार्योज्ञमाणि असंवदसम्मादिद्वस्स शीललेस्साए उकस्तकालो
होदि। एसो निच्छादिही तदियाए युडशिए उकस्साउड्डिदिओ काउलेस्साओ होद्ग वववण्णो। छदि पण्डनीहि पण्डनवपदो विसती विसुद्दे। होद्ग सम्मच पदिवलित्य आउहिदिमणुपालिय मणुसो जादो। पण्डण वि अतीमुद्दुर्च सा चेव लेस्सा होदि। पिछल्लं

मेाहबर्मनी अहाईस प्रश्तियोंकी सत्तावाला कोई एक जीव नीललेहवाके साथ पांचर्या पृथियोंके अधस्तन प्रस्तारके उत्तरण प्राम्य

शंदा-पांचर्या पृथियोके मधस्तन प्रस्तारमें तो जधन्य रूप्णलेख्या होती है ?

समाधान — नहीं, पांचर्या पृथिषीके अधरतन प्रस्तारके समस्त नारकियोंके उक्षी ही लेरपाका भमाव है।

शैका - एक ही प्रस्तारमें दी भिन्न भिन्न लेखामाँका होना कैसे संभव है !

समाधान — पक ही परतारमें भिग्न भिन्न आयों के भिश्व भिन्न हेदवामों के होने में कोई विरोध नहीं है। (भर्वान् कुछ नारक्यिक उत्तरप्र मीहलेदया ही होती है, भीर कुछके जयन्य कुष्यत्रेदया होती है।) यहीं भर्च सर्वन्न जानका चाहिए।

इस प्रकार पांचर्श पृथिशीमें उत्पन्त हुमा यह औव छहाँ पर्याक्षणों स्वर्णन हो, विभाग छेकर तथा विद्युद्ध होकर सायक्षणको प्राप्त हुमा। यहां भवती माणुवियतिका परिपालन करके मरा भीर मञ्जूष हुमा। यहां पर भी भागनुहुन तक उसी पूर्वत्रपाक माण रह कर अन्य केदराको प्राप्त हुमा। इस प्रकार विछते मानुहुन को पूर्वके तेन मानुहुन्ति क का करको कह दूर सामाहुन से कम समाह सायवेशम सास्यतसम्पर्धाईक मोल्टेस्पाका उत्कर्ण बाल होता है।

यक विष्यादाष्टि औष तीसरी पृथिशीने यहां वी उन्हण मालुकारी निर्मत्वास्त तथा कार्यातलेहरायाला होकरके उत्यव हुआ, और छहाँ पर्यात्विकाले कर्मन्त्र हो, विश्वास हे, विशुद्ध होकर सम्बन्धवको प्राप्त करके और अपनी मालुकारी निर्मात्वेश सीन करके मतुष्य हुआ। वीछे भी भनतर्गुहर्त तक वहां ही लेहरा होती है। इन्हर्माक्षर साम्बन्धिकी

अंतोमुहुचं पुट्चिल्टितिसुं अंतोमुहुचेसु सोहिय सुद्धसेसेण ऊणाणि संच सागरोतमाणि काउन्हेम्साण तकम्मकाली होति ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिन्छादिद्वी असंजदसम्मादिद्वी केर चिरं कालादो होंति, णाणाजीव पडन्च सन्वद्धा ॥ २९१ ॥

सगममेदं सत्तं ।

एगजीवं पहुच्च जहणोण अंतोमुहृत्तं ॥ २९२ ॥

तं जघा— हायमाणपम्मलेस्साए अच्छिद्स्स समद्वाखण्ण तेउलेस्सा जागदा। तत्य सन्वनहण्णमंतोमुहृत्तमन्छिप काउलेस्सं पदि। एवमसंनद्दसम्मादिहिस्स नि वेउलेस्साण जहण्णकालो चत्रचत्री। पम्मलेस्साए उच्चदे— एक्को सुक्कलेस्साए हायमाणाए अच्छिरे। मिन्छादिही तिस्ते अद्वाखण्ण पम्मलेस्सिन्नो जादो। सन्वनहण्णमंतीमुहृतमन्छिद्ग वेउलेसंसं गदे। एवं जहण्णेण अंतोमुहृत्तं मिन्छादिही पम्मलेस्साए। एवमसंनद्दममादिहिस्स नि जहण्णकालो वत्त्वनो।

पहलेके तीन अन्तर्युद्धताँमेंसे घटा कर दोप यचे दुर अन्तर्युद्धताँसे कम सात सागरोपम कापातलेट्याका उरुप्ट काल होता है।

कापोतलेस्याका उत्हार काल होता है । तेजोलेस्या और पद्मलेस्यायालोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव किनने

फाल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २९१ ॥

. यह सूत्र सुगम है।

एक ओबकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जधन्य काल अन्तर्महर्त है ॥ २९२ ॥

जैसे— हायमान परालेश्यामें विद्यमान किसी मिष्यादृष्टि जीयके सपनी लेश्याके काल शय हो जानेसे तेजीलेश्या आगर्। उसमें सर्वज्ञयम्य अन्तर्गुहुनं काल रह करके वर कार्योनलेश्याको आप्त हो गया। इन प्रकार असंयतसम्यन्दृष्टि जीयके भी तेजीलेश्याचा ज्ञास्य काल कहना चाहिए।

मय पराहेदपाका जायन्य काल कहते हैं— कोई एक मिध्याविष्ट जीव दापमान शुक्कोदपाम थियमान था। उस होदयाके कालके क्षय दो जातेले यद पराहेदपावाला हैं। गया। यहाँ सर्थक्रमण्य स्थनमुहित काल रह करके क्षेत्रोहेदपाको मान्त हुमा। इस मनार असम्बद्ध सम्तर्मुहर्ग काल तक यद मिथ्याविष्ठ जीव पराहेदपाम रहा। इसी मकारते वर्तन यनसम्बद्धारि जीवका भी जायन्य काल करना चाहिए।

र मन्ति " संतीवरूपं वा चैद हरवा पृथ्वित्रतिव "दिन पाटा ।

क देखानकरेरावरीपित्राहरूनवंतननायाहरूनीतीनात्रीताहित्रमा सर्वेश काता ह छ. ति. १, ६.

३ प्रजीतं अति जयन्येनश्वर्दद्र्यः । स. सि. १, ८.

उनकस्सेण वे अट्टार्स सागरीवमाणि सादिरेयाणि ॥ २९३ ॥ तं वधा- एको मिन्छादिही काउनेस्मण अध्छिते । तिस्से अद्वाखरण वेउनेसिको जादो । तरस अंतोष्ठ्वस्मणि द्वाधरण वेउनेसिको जादो । तरस अंतोष्ठ्वस्मणि द्वाधरण वेउनेसिको जादो । तरस अंतोष्ठ्वस्मणि व्याधिक उत्तर एक्टिसिको जादो । नद्वा समादिरी पुष्टिम्हेलोहसूके अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण अन्याधरण वार्वस्मण क्राधरण अन्याधरण वार्वस्मण क्राधरण वार्वस्मण व्याधरण वार्वस्मण क्राधरण वार्वस्मण वार्वसम्मण वार्वसम्य सम्मण वार्वसम्मण वार्वसम्य

तेजोलेरपाका उत्कृष्ट काल सातिरेक दो सागरोपम और पद्मलेरपाका उत्कृष्ट काल सातिरेक अठारह सागरोपम है।। २९३।।

जैसे— यक निश्वादिष्ट जीव बायोग्हें स्वामंत्र धा । उस हे दशके बालक्षव से यह ते कोहे त्यायाला हो गया। उसमें कम्मतुं है रहस्त मरा भीर सीयमेहरूप उत्तम हुमा। यहां पर पर्योगमके सर्वश्यात्व भागते अधिक हो सागरीयम् बाल तक जीविन रह बर रसुत हुमा भीर उसकी ते जोहेरया नष्ट हो गई। इस महार पूर्वके मन्तर्नु हुने के स्वीक हो सागरीयम सीयमेहरूपकी मिण्यादिक्षकरणी उन्हण्ड स्थिति ते जोहेरपाकी साह हो गई।

हांका-भिष्याद्यां जायके तेजोलस्याकी उत्तरप्र शिथति मन्तर्गुहर्गसे कम धड़ाई सागरीयमञ्ज्ञाल वर्षी नहीं पार जाती है ?

समापान — नहीं, वर्षोकि, मिध्यादिष्ट या सम्बग्दांत्र जीवोंके द्वारा उपरित्त देवाँवें बांधी हुई भायुक्ते उद्यत्तेताधानके चान करके मिध्यादिष्ट जीव वर्षि मदारी तरह रहूर वहीं और हुई तेत करें, तो परयोगमके सर्वेटवातवें सागवे सम्बग्धिक दो सागरीयम करना है, वर्षोक्ति, सीयमेहरमाँ उरवय होनेवाते मिध्यादि जीवोंके इस उरकृष्ट रियनिसे स्रीयक्त आयुक्ती रिश्तोत स्वापन वरनेकी दाकिका ममाप है।

र्शका—यदि इस भदाई सामरोवम स्थितियाले देवींमें उत्पच हुए सम्यन्तिको मिश्यात्वमें ले जाकर तेजीलेश्याका उत्हृष्ट काल वह तो ?

समाधान — मही, क्योंकि, अन्तर्मुहते कम अदार्ग सागरीयमक्षी स्थितिकाले देखींमें उत्पन्न दुव सीधर्मनियाकी सम्यन्तिह देवके मिथ्यान्यमें अनेकी संभावनाका समाव है।

१ दल्बरेंच दे सारशेषवे बहादस च हादशेषवाचि हातिरेदानि १ ह. हि. १, ८,

1.7

तं पि कर्षं पच्चदे ? पल्डिदोनमस्स असंखेजजदिमागब्महियवेसागरीनममेचा सोहर्मामा मिन्छाइड्डि-आउड्डिरी होदि चि आइरियपरंपरागदीवदेसा । अधना अप्लेखनएने अष्ट्राइज्जसागरीयमाणि देखणाणि मिन्छादिहिस्स वि संभवति, भवणादिसहस्तारेतेरे हैं

मिच्छाइडिस्स दविहाउडिडियरुवणण्णहाणववरीदे। । असंबदसम्मादिहिस्स उच्चे- एको असंबदो सोहम्मीसाणदेवेस वे तागरारमा<sup>हि</sup> अंतामुहूनुणं सागरावमस्स अदं च आउवं करिय अंतामुहून् तेउलेस्सी होदूग कमेग करि करिय सोहम्मे उववण्णा । सगाहिदिमच्छिय प्रणा मणुसेसुववित्रय अंतामुहुर्व तीर बी टेस्साए परिणमिय पम्मलेस्तं काउलेस्तं वा गर्दा । लदाणि अंतेषुहुम्णअङ्गावलागरी वमाणि संपुर्त्णाणि । अहियाणि वा किण्ण होति क्षि उत्ते ण. प्रव्यावस्कालम्ब लद्द्रप्रते। महत्तादे। अद्भागगेतमभ्दि पहिदेतीमहत्त्वस्य बहत्त्वदेसा I

पम्मेलरगाए उच्चदे- एको भिन्छादिही यहमागतेवउलेसिओ सगदाए सीगा

यंदा - यह भी देशे जाता जाता है।

समापान-चारपेवमके सलेक्यतये भागने अधिक दो सागरीवमवमान सीवर्य हैं हात्रकरवर्षे विषयाद्विकी मायुस्यिति होती है। इस प्रकारका भाषाप्वरस्परागत वाहेश है मध्या मन्य प्रवेदानि वृक्त कम भद्दार नागरोपमकाल सीधा-दिशानकस्पयानी विश्वादि देशक भी संबद है, भन्यमा, भवनयानियोंने लगाकर सहस्रारकश्य तकके देवीमें मिश्याहि क्षेत्रके के। बकारकी मार्थास्थितिकी प्रस्ताया है। नहीं सहती थी।

थव अन्यतमध्यारिक उन्हाय नेत्रोलेश्याके कालको कहेन हैं— एक अर्थान कार-राष्ट्र और की धर्म देशान देवें में देश नागरेशाम और शन्तीहर्त कम नागरेशमध्ये क्षण्यान आयुरि बाँव करके एक अन्तर्गृष्ट्रने तेज्ञातिस्यायाला ही करके और बामेंस बर बर कील केंद्र स्त्र केंद्रिक कुमा। युना भवता भागुम्थित तक यहाँ रह कर भीर मनुर्यामें बलाई हेन्दर मार्ट्युर्ने तक उनी ही लेडपांसे परिणत हो। पश्चलेख्या या कारीतिलेखपाकी मान इ.स. १ इस ब्रहारेने करनसेंहुर्न कम पूरा भवाई खागरीपवदाल प्राप्त है। गया १

होडा-- प्रत्यकृतुर्वेस कम सदाई सांगरायमकाल्या भागक काल क्यों नहीं होता है।

समादात-सरी, वर्गीन, अर्गाई सागरामसालने साहि भीर समाप्ते हन्ये रेजिकार ब्राज्य हुन में वर्ष संगरितम कारामें पतिन सम्माहित का कारा वारश कार्य p=# 2 .

क्क क्कारेटरराके कर्युष्ट कारणकी करते हैं--- वर्धमान तेओलेलावाला के हैं क्क

पम्मलेसिस्त्रो जादो । दीहमेतीसुद्रुनद्धमन्छिय सदार-सहस्मारकप्यासियदेवेसु जनवण्णो।
तत्य अद्वारद्ध सागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंरोज्जिदमाणेणन्मिद्याणि जीविद्गण जुदस्स
णद्वा पम्मलेस्सा । अपंजदसम्मादिद्विस्त उपदे-एको संजदेर पम्मलेस्साए अतीस्रद्वय-मन्छिद्रो सदार-सहस्सादेवेसु अद्वारस सागरोवमाणि अंतीस्रुद्धन्णमद्धानारं च आउअं
स्मित क्षेण कालं किरिय सहस्मादेवेसु उत्तर्वाक्ष्य समिद्धियान्छिय चुदेर मण्यसो जादो ।
तत्य वि अंतीस्रुद्धं पम्मलेस्साए अन्छिय सुन्तर्वस्त वेउलेस्सं चा गदेर । सहाणि
अंतीस्रुद्धण्यद्धानारोवमेण अद्विपाणि अद्वारस सागरोवमाणि ।

सासणसम्मादिट्टी ओवं' ॥ २९४ ॥

कृदो १ णाणाजीवं पहुच्च जहण्येण एगसमक्षी, उकस्तेण सगरासीदो असंरोजन-गुणो पलिदोनमस्स असंरोज्जिदभागी, एगजीवं पहुच्च जहण्येण एगसमक्षी, उनकर्त्वेण छ जाविल्याओ, इच्चेटेहि तेउ पम्मलेस्सियसासणाणं तचे। भेदामाचा ।

#### सम्मामिच्छादिद्दी ओधं' ॥ २९५ ॥

मिष्यादिष्ट जीय भवने कालके कील होने पर पद्मेश्वरवायाला हो गया । और यहां इस रुद्यामें उत्तर अन्तर्मुहर्ने काल तक रह करके हातार-सहस्त्रारकल्यवासी देवीमें अल्प्स हुमा। यहां पर पत्योवमके असंस्थातये भागसे अधिक अटारह सागरीवम काल तक जीवित

रह कर च्युत हुमा, तब उसके पद्मलेख्या नष्ट हो गई।

क्ष सार्यमतसम्पर्कार जीवक वसलेहराका जारूए काल करने हैं— एक संयम वक्ष लेहरमाम सम्माहने काल तक रहा और शामार-सहस्रार देगोंमें भागाह सामार्यमा और सम्माहिन का वर्ष सामारिकारी आहुके योच करा, मानी माल कर, सहरा स्थापक्रफें देगोंमें वापन होकर और भागों स्थानियमाल वहां रह करके ज्युन हो मनुष्य होगाया। यहां एर भी सम्माहिन का स्थापन सम्माहिन स्थापन स्थापन में माल हमा। इस महार सम्माहिन का साथ सामारिकार मालत भीवक स्थापन सामारिकार हथा।

वैजोलेक्या और पद्मलेक्यावाले सासादनसम्यग्टिश जीवाँका फाल ओपरे समान

है।। २९४ ॥

स्पॅकि, नाना जॉर्योकी भवेशा जायन्यते यह समय भीर जन्मर्थने भवनी राशिते सत्तेनवातमुणा प्रत्योत्तरका सत्तेरवातयी माग काल है। यह जीवकी सरेशा जायन्तेत यह समय भीर उश्चर्यत एह भावतिस्त्राल बाल है। इस क्यते तेही साराह्यत्वरुपरिधारे कालका भोवाकरणाने कोई भेड़ नहीं है।

उक्त दोनों लेडवावाले सम्यग्निध्यादृष्टि जीरोंका काल ओपके समान है ॥२९५॥

१ सातादनवन्दारि-सन्यन्यादश्योः सामान्योतः वातः। स. ति. १, ८.

कुरो ? णाणाजीवं पड्डच जहण्णेण अंताष्ठहुचं, उनकस्सेण पछिदोनमस्स <del>वर्षसे</del> ज्जिदिसागो, एगजीवं पड्डच जहण्युत्रकस्सेण अंतोष्ठहुचंमिच्चेएहि तेउ-पम्मलेस्य-सम्मामिच्छादिडीणं तत्तो भेटाभावा।

संजदासंजद-पमत्त-अपमत्तसंजदा केविचरं कालादो होंति, णाणः जीवं पडुच्च सव्वद्धां ॥ २९६॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २९७ ॥

तत्य ताव संजदासंजदाणमेगासमयपरुवणा कीरदे- एक्को मिन्छादिट्टी असंबरः सम्मादिट्टी वा बहुमाणतेउलेसियो एगसमयो तेउलेस्साए अस्थि ति संजमासंजमं पिंड- वण्णो । एगसमयं संजमासंजमं तेउलेस्साए सह दिट्टं । विदियसमए संजदासंजदे। एम्पेलेस्स गदे। एसा लेस्सापराजची (१)। अथ्या एक्को संजदासंजदे। हाममाणपम-लेस्सियो एम्पेलेस्स या विद्यासंजदे। हाममाणपम-लेस्सियो एम्पेलेस्स या विद्यासंजदे। हाममाणपम-लेस्सियो एम्पेलेस्स या विद्यासम्य संजमासंजमगुणो अस्थि ति तेउलेसियो जादो। तेउलेस्साए सह संजमासंजमो एमसमयं दिट्टो। विदियसमए तीए लेस्साए हर

यद सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल एक समय है॥ २९७॥

इनमेंसे पहले संयतासंयतीके लेरपासायन्यी एक समयकी मक्कपण की जाती है—
वर्षमान तेजीलेरपायाला एक मिष्णादृष्टि अथवा मसंयत्तसायग्रदृष्टि जीय तेजीलेरपाके बावने
यक समय प्रदीप रह जाने पर संयमासंयमको प्राप्त हुमा। एक समय संयमासंयम तेजी
हेरपाके साथ दृश्योचर हुमा। दूसरे समय यह संयतासंयत वसलेरपाको प्राप्त हुमा।
वह लेरपायितनेनभावार्यो एक समयवी प्रकारणा है (१)। अथया, हायमान वपलेरपाकी
यक संयतासंयत वयोश्यां कलके सीण हो जाने पर एक समय संयासंयम युक्तस्याकी
स्वर्षाय रहने पर तेजीलेरपायाला हो। गया। तेजीलेरपाके साथ संयमासंयम प्रकारपाकी

पर्येशक, नाना डीवोंकी अपेक्षा ज्ञचन्य काल अन्तर्मुद्धते और उत्कृष्ट काल पस्पोपमध्य संसंघ्यातयां मागप्रमाण है। एक ओयको अपेक्षा ज्ञचन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुद्धते है। हर मकारसे तेजोदेस्या और पद्मश्रेद्रयायाले सम्यग्निष्यादृष्टि जीवोंका आध्यक्रपणांस कोर्र भेर नहीं है।

<sup>े</sup> उक्त दोनों लेश्यावाले संयतासंयत, प्रमक्तसंयत और अप्रमक्तसंयत जीव किर्तने काल वक्त होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २९६ ॥

<sup>.</sup> १ प्रोटा \* अरोप्ट्रां सुरूष-\* इति पातः । । १ प्रतिष \* विश्वादितीलं \* इति पातः ।

६ वर्ग नवर्गस्माप्यस्थानी मानाजांवारोष्ठ्या सद्देश बाह्य | स. सि. १, ४.

४ एकर व प्रति वस्पर्वतः स्वयः । स. वि. १, ८.

माराणुगमे तेउ-पम्महेरिसयमाङप्रस्तर्ग व्यवनदसम्मादिही सम्मामिन्छादिही सासणसम्मादिही मिन्छादिही या जादो । एसा युणवरावची (२)। मरण-वाषादेहि एरासमञ्जा ण लब्बदि । ि १६७

संपित पम्मलेसाए उच्चते । तं वपा- एगा मिन्छादिही असंबद-सम्मादिही वा बहुमाणपम्मलेसिओ पम्मलेसिद्धाए एमी समओ अस्पि छ प्रमाधिकां पहित्रणो । विदियसमय संजमार्यजमेण सह सुकत्रसं गदी । एसा वनगणना गुरुवा । भारत्वाच्या वनगणनाम वर अर्थनवस्त गुरुवा । पराव हेस्सावरावची (३)। अपना रहुमाणवेउलेस्सओं संजदासंजदो वेउलेस्सदाप खण्ण परमतिसिक्षी जाहो । एमसमयं परमतिसाए सह संजमार्थजमं हिंह, विदिपसमए अपन बन्धाः वादा । एता गुवपावची । अथवा संजदारं वर्षः वस्तावस्त्रः १४८। प्याप्तवस्य स्वयः स्व नवा जाना । पता प्रभवस्था । जपना प्रमाणकारा ध्यमाणकारकणस्याम ध्रमत हेस्सद्दाखरण प्रमहेस्तिजो जाहो । बिदियसमद प्रमहेस्सिजो चैन, हिंतु असंजद-सम्मादिही सम्माभिष्छादिही सासणसम्मादिही मिच्छादिही वा जाहे। । एसा गुणपरा-वन्त्रा १८)। मिच्छादिङ्कि असँबदसम्मादिङ्गिणङ्कालेस वेत-वम्मवेस्साणं केस्सा-गुण्यसक्वीओ च था १७/। १७ २०॥ १८ जा जनवर १ ण, वस्य एमसमयसंभवाभाव । वहुमार्वदाने वस्ति । अस्मिद्द्वा एमसमञ्जे किष्य उच्चदे १ ण, वस्य एमसमयसंभवाभाव । वहुमार्यदेवनेसादी

हुमा। दितीय समदमं उसी लेरपाके साथ शसंयतसम्बन्धि, या सम्याभिष्याहरि, या हुमा। प्रताय समदम उक्षा ल्ह्याक साथ अस्ववस्तान्त्राह, या सम्याप्तान्त्राह, व सासादनसम्याहिष्टि मयवा मिरवाहिष्टि हो गया। यह गुणस्थानवरियतनके द्वारा यह साराइनास्त्रपाहर क्याचा मध्या मध्याहर हा भया। यह अवस्थावपारपावक हारा पक समयको महत्रपाहर (२)। यहाँ पर मरण और स्वापातके द्वारा पक समय महीं पाया

भव प्रातेस्याके एक समयको मक्रपणा कहते हैं। असे— वर्षमान प्रातेस्यायाका वाद प्रश्नत्वाक एक समयका महत्त्वा कहत है। जन्न प्रवास प्रभन्धवावान होई एक प्रिच्याहरि, ह्याया अर्ह्मतसम्बद्धि जीय, प्रमहेस्योके कालमें एक समय मक्सेप कार एक भाष्यादार, वयया असवस्तान्यवादा जाव, वचलस्वाक कालम वक समय व्यवस्था रहने पर संवमासंवमको मात्र हुमा । द्वितीय समयमें संवमासंवमके साथ ही गुरूलेस्वाको रहत पर सवमालवमका प्राप्त हुआ। । हताय समयम सवमालवमक साथ हा शुक्रकर्यका मात हुमा। यह लेहरायरावर्तनतात्रस्थी यह समयही महत्यण हुर (३)। समया, पर्पमान भात हुमा। यह श्रद्धायस्थतमसम्बन्धा एक समयका अरूपणा हु। (२४। भयया, यथमान वैज्ञोलेस्पायाला कोई संयुगासंयत तेजोलेस्याके कालके स्य हो जानेत प्रस्तेस्यायाला हो नवालस्वायाला कार संपतास्थत तमालस्थाक कालक स्थ हा जानस प्रमत्स्थाया । यह समय प्रमतेस्थाके साथ संयमासयम हिंगोजर हुमा। कोट यह दिनीय समयमे भवा । एक समय वस्तर्यकः साय स्वमास्त्वतः राष्ट्रवायर द्वमा । बाद यह । इताय समयस अम्मस्त्रेयत हो गया। यह गुणस्थानपरियत्तेनकी अधेशा एक समयकी महत्वाय समयस् विकास का अवार वर पुष्टियानगर्यनाचा व्यवसायक समयका अवस्ता हुई। अस्य प्र विकास गुरू होते होते स्वतासंवत जीव गुरू हेरी होते पूरे ही जाने पूर प्यान श्रह्भ रुपायाला पार प्रपालपत भाव श्रह्म रुपाया पालक पूर हा आन पर राहेरवायाला हो गया दिनीय समयमं वह वयानेह्यायाला ही है, हिन्तु असंवतसम्परहि, स्वरंपायला हो गया महत्याय समयम यह प्रजन्दयायाला हो है, प्रश्तु स्वयंत्रसम्बद्धार या सम्बद्धिसम्बद्धाहि अथवा सासाहनसम्बन्धि, अभवा निम्पाहि हो गया। यह

र्वका - मिध्याराष्ट्र शाह असंयानसम्यास्त्रिः हत ही गुणस्थानीम तेत्र शीर पश्च-जका — ामस्वादाध कार मलवनलम्बादार, स्न ११ सुजस्वानाम तज्ञ भार एकः वायकि जीवोकी केरण भीर गुणस्थानसम्बन्धी परिवर्तनीको आग्रय करके एक समयकी

समापान -- नहीं, वर्षोकि, इन गुणस्थानोमें एक समयक्षी प्ररुपणाका क्षेत्रा संसव

पम्मलेखं गंत्ण विदियसमए उपरिमगुण्हाणं गच्छंताणं मिर पम्मलेस्साए एगसमञ्जा लन्मिद् । हायमाणवेडलेस्साए एगसम असंजदसम्मादिद्विमुणहाणे पडिवण्याणं वेउलेस्साए एगसमञ्जा लेस्साणं वि एगममञ्जो लब्मिद् िच उत्ते ण लब्मिद्, जदो । दिहीण एगसमयं लेस्साए परिणमिय त्रिदियसमण् अण्णगुणं ह एदाणि गुण्डाणाणि पडिवज्जंता वि लेस्माए एगी समग्री अतिय ङ्दो १ समावदो। हेट्टिमगुणहाणाणि संस्माए एगो। समञ्रो अस्यि नि

हाणं पहिचक्जीत, पमचसंबदी तहा संजमासंजमगुणहाणं किण्य प अघना गरिथ एत्य पडिसेही । पमचस्स उच्चर्दे- एको पमचो हायमाण-पम्मलेस्सार अधि स्रएण पमचद्वाए एगो समझो अस्थि चि तेउलेस्सिओ जारो एगसमः

षर्पमान तेनोटेरपासे पम्रटेरपानो ज्ञाकर द्वितीय समयमें उपा जाने पाले मिष्यादाष्ट भीर भसंयतसम्याद्धिः जीवानः पमन्द्रयाने साथ जात का भारताच्छा जार जात्रवाचान्त्राचा जात्रवाच वस्त्रवाच वाव जाता है। इसी प्रकार हायमान तेजीलेस्यामें एक समय अवसार रहने प जात का क्या अवस्य कायमान तजालस्थाम एक समय अवस्य रक्षण कार्यस्थानको साम होनेयाले जीवोके तेजीलस्थाके साम जाना है।

र्घेका—तेत्र भीर पमलेक्यांक समान ही कायोत भीर नीसलेक्या समय पाया जाना है, (फिर उसे क्यों नहीं कहा )?

ममायान — कापीन और नीळळेड्याके साथ एक समय नहीं पाया ज्ञान निस्पारिष्ट मयवा सर्भयतमस्यारिष्ट जीव वक समयमे विवादिन स्ट्याक हाता व हिनोव समयम भग्य गुणस्यानको, भया अथ्य तेर्याको नहीं जाने हैं। नया का स्थान विशास को कार्य प्राप्त बात का तथा मान व्यवस्था गया भाग के विशास करें मान होने बार्ट भी - बीच विचित्रत - धारण की गई सेहबाई कार्ट्स एक समय अव 

होंद्रा — भवनी अध्याम कह समय रहन वर प्रेम नीचे हे गुणस्थानक उ क्यों बहा क्या हामा है !

ममाधान - वसा ब्वभाव हा हे। अयवः, इस । वयवम काई वानवध नहा है 

ह्या । इस्त स्ट्रांट् कारायचा क्या यम्मभवन गुणाण कर हारमा वह सम्यास देश पर पूर् लक्षात्रवावाता ह सवा वह सम्म --

समए तेउलेस्सा चेत्र, किंतु संज्ञमासंज्ञमं असंज्ञमेण सह सम्मर्च सम्मानिच्छचं सासण-तम्म विच्छतं वा गदे। एसा गुणपरावची (१)। अथवा, अप्पमची तेउलेस्साए अस्तिही। \* \*\* विस्ते अप्यमचद्राए राष्ट्रण पमची जादो । पमची तेउलेस्साए सह एमसमयं दिहो । . \*\* विदियसमए गदी देशे जादी। एवं मरणेण (२)। पमचसंजदी वेउलेस्साए परिणिय विदियसमय् जेण लेखेरं ण मच्चित्, यमसमुणं पहिच्यमणो वि वेउलेसदाए . .. एनसमझे अधि वि व पडिवज्जिदि, तेम हेस्सावरावची वास्थि । अप्वमची हावपाव-पम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि ति पमची जादो । विदियसमय वि पमचा चेब, क्रित तेवलेस्सिन्नी जारी। एसा लेस्सायरावची (३)। अथवा पमची तेवलेस्साए ۔ अच्छिदो । तिस्ते अद्वास्तवव पम्मलेस्सा आगदा । पम्मलेस्साए सह पमची एगसमध् दिहो । विदियसमए पम्मलेसिओं चेव, किंतु अप्यमची जादी । एसा गुणवरावची । पम्महेसादाए अचिदी पमची विस्ते अदाखण्ण वेउहेस्सार परिणमिय विदिपसमर अप्पमचा किण्य कीरदे ? वा, होयमावालेस्साए अप्यमचगुवागहवाभावा । मिच्छचारिगुव

रुपम रहिगावर द्वमा। वधात द्विनीय समयमें तेजीलेस्या ही रही, किन्तु यह संयमा-क्षम हास्माचर देमा। प्रधात म्हलाय समयम समालस्या हा रहा, किन्तु यह स्वमान संद्रमको, भएवा मसंद्रमके साथ सम्बन्धको, भएवा सम्मामिकवास्वको, भएवा सासावस-त्यकात्रको, अववा विष्याययुणस्थानको मात्र होगया। यह एक समयहर गुणस्थानको विश्वतित है (१)। अथया, कोर् एक अनमससंवत तेनोलेक्यामें प्रतान था। उसी लेक्यों पारपवा व (१४४ मध्यम्, भार पण न्यमध्यपत तमाल्व्याम यतमान या। उसा लक्ष्याम रहते इद ही सममत्तुवास्थानके बातस्यसे यह ममत्तवेवन हो गया। वह ममत्तवेवन ्वा द्वर हा मनगण्य अरचात्र कालस्वर पर नमण्यपत् साम्या प्रवासक्त स्वाप्य प्रवासक्त साम्य प्रवासक्त स्वाप्य हिंगोवर हुमा। हितीव स्वाप्य मारा और देव होगवा। इस तमालक्ष्याक लाख यक तमय उपलक्ष्य हुमा (३)। प्रमत्तवंत्रत तमोलेक्ष्यके साथ ने पर महत्त्वा प्रकार करका पुरस्क कार्य क्षा एक समयवाद व माल्या कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य विकास होता कार्य के पूर्वित इसरी आय हेड्याको नहीं मात होता है, श्रीट्रामक परण्यामत हारूर १६ताव समयम प्रांच, दूसरा भाव द्रश्यका गहा मात होता है। सार मध्य स्थित गुण्ह्यामको द्राप्त होता हुआ भी तेमोठेरराके कातम दक्त साथ होता है। स्थार भवव त्यत यह लेखानाहरू। मही प्राप्त होता है। इस क्रारणले वहाँ पर केरवादा परिवास मही ल्ड च्यु ल्डाप्यात्रका पदा भागा देखा है। केण ज्ञार्यका पैका पर लक्ष्यका पारप्रवान नहीं |हावमान पहलेहरावाला केर्दि भ्रममत्तर्सवत, व्यवेहरवाके बालमें यक समय मवदिए रहने हावसान भम्बद्धपायाः। क्षा भम्भवात्वयतः भम्बद्धाः गालन प्रः वस्य स्वाधाः रहन ममत्त्रतेयतं हो गया। क्षितीय समयमं भी यह ममत्त्रतेयतं ही हहा, किन्तु नेमोलेस्याः मा होतवा। यह लेरवाहायभी वरिवर्तन है (३)। सथवा, कोई समस्रवेचन तेमोलेरवाहें ा हामचा। यद लहरात्वयस्या पारवातः ह १२४४ - व्यवस्थानः व्यवस्थानः समावस्थानः समावस्थानः समावस्थानः समावस्थानः सम समानः सा। उत्तरे उत्तः ते तोलेस्याके कालस्यतं पद्यलेस्या भागतः। पद्यलेस्याके साम् पद त्मात्र था। उत्तर उत्त वामावर्थाम राज्याच्या प्रमाण्या गाउँ । प्रमाण्याच्या वासंवर व्यक्त समय रहिमोद्धर हुमा। द्वितीय समयम यह वस्तिर्यासास ही रहा, हिन्यू धंका—वद्यत्वेहवाने. कालमें विषयान कोर्ट ममससंवत उस होस्याने कालकावरी

इयासे परिवामित होकर ब्रिलीय समयमें मनमत्तसंयन क्यों नहीं हो जाता ! 

किन्म पडिवन्जिर ? ण, तेउलेस्साए पडिय अंतीमुद्दुचमणस्किय हेट्टिमगुनमार्गानाः। जवन जपमची पम्मलेस्माए अन्छिरो अपमनद्वात्मएण पमची जारो। विरिक्तर मटो देवने गरो।

अन्यमचर्मजदस्य उरुनदे- मिन्छादिही अमंजदमस्मादिही संजदामंबद्दी १६६

संबद्धी वा बहुमान्येवलेस्तिओ तेवलेस्सद्धाए एगो समओ अशिथ वि अपनार्था वारे! विवलेस्सार सह एगममणे अप्यमणे दिही। विदिवसमण् प्रमलेस्सियो बारे! प्रमलेस्सार सह एगममणे अप्यमणे दिही। विदिवसमण् प्रमलेस्सारी बारे! प्रमलेस्सार स्वाप्त प्रमलेस्सारी एगममण्याप्त हा अधि विवस्त स्वाप्त स्वाप्त

स्यापान - मही, प्रयोकि, बीपमान लेक्प्रके साथ भवमत्तुणस्थानके वर्ष वर्षका स्थाप है।

र्वेडरे — मेर उक्त प्रकारका अति विषयास्य साहिक लीवीह गुणस्पानको वर्गी हरी अन्य के अन्य है है

स्यापान - वरी, प्रांतिक, तेश्रोनेत्यामें गिर करके सामगुंदर्न रहे विशे श्री<sup>येड</sup> कुणस्यारीक सर्व करनेवर सनाव है।

कवण, बंदी कपमण्डेयन प्रयोग्ह्यामें विषयान था । यह प्रयागनवंत्रमृत्यानी कारकार कमण्डेयन है। स्वर 1 - यह द्विताय समयोग्निस स्वर्थीर नेपायको प्राप्त हुंगी।

भव बायस्थान है यह समावसायानी सिरवाशियारियो स्वरं है — वर्षाय के निवास गर में है विकास गर में स्वरं मान स्वरं मा

षि अप्यमचा जादो । विदियसमण् अप्यमचा चेन, वित्त सुक्तितेसं गदो । एसा लेस्सा-परावची (१)। अपवा अप्यमचा द्वायमाणातुक्तिलेसगो सुक्तिलेस्सदाखण्ण प्रमलेसिसगो जादो । विदियसमण् प्रमलेस्साण् सद्धं पमचगुणं पढिवणो । एसा गुणपरावची (२)। अपवा पमचो प्रमलेस्साण् अच्छिदो पमचदाण् रीणाण् प्रगतमपं जीविद्मत्यि चि अप्यमचा जादो । विदियसमण् मदो देवचं गदो । एवं मरणेण (२)।

उक्कस्समंतोमुहत्तं ॥ २९८ ॥

र्षं कपा- संबद्दानंत्रशे पमचसंबदो अप्पमचसंबदो वा वेड-पम्मठेरसासु अप्पिद-रुस्साए परिणमिय सञ्जूकरसमंत्रीसृहचमच्छिय अणप्यिद्रहेरसं गद्दो।

सुनकलेस्सिएस मिच्छोदिट्टी केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पड़च्च सन्बद्धो ॥ २९५ ॥

इदो र तिसु वि कालेसु सुक्क्रलेस्सियमिन्डादिङ्गीणं विरहाभावा ।

कालमें एक साय ध्वयोग रहने वर अवमत्तसंवत हो गया। यह द्वितीय समयमें अवमत्तसंवत ही रहा, विश्व गृहक्षेत्रस्यको मान्त हो गया। इस मनार यह केरवायरियतेन हुमा (१)। अथवा, हायमान गुक्तकेरवाथला कोई अवमत्तसंवत औय गृहक्षेत्रयको कालस्वसे व्यक्तरायाला हो गया। दिनाय समयमें व्यवदेशके साथ प्रमाणन केरवायाला हो गया। दिनाय समयमें व्यवदेशके साथ प्रमाणक्यानको प्राप्त हुमा। यह गुणस्थान-विश्वविकायमान केरिया हो प्रमुख्यान-विश्वविकायमान केरिया हो प्रमुख्यान विश्वविकायमान केरिया हो प्रमुख्यान विश्वविकायमान केरिया हो प्रमुख्या हुई (२)।

मधया, कोई प्रमत्तसंयत पदानेदशार्मे विषयान था। यह प्रमत्तकालके शीण हो जाते पर, तथा एक समयप्रमाण जायनके होर रहने पर ध्रयमत्तर्भयत हो गया, दूसरे समयमें मरा भीर देवत्वको प्राप्त हो गया। यह मरणके साथ एक समयकी प्रक्रपण दुर्र (३)।

तेत्रोलेदया और वद्यलेदयावाले संयतासंयत, प्रमचसंयत और अप्रमचसंयतींका

उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्त है ॥ २९८ ॥

जैसे— कोई संयतास्यत, भवाग प्रमस्तवत, श्रवण अत्रमस्तवत श्रीव तेषो-रुद्धा और पद्मरुद्धाओं मेंसे विवासित हिसी पक रेद्धामें परिणत होकर और सर्वोत्तर अन्तर्महर्तकाल रह करने श्रविवासित रूद्धाको प्राप्त हो गया।

शुक्क देश्यामें मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अवेधा

सर्व काल होते हैं ॥ २९९ ॥

क्योंकि, तीनों ही कालोंमें गुहलेश्याधाले मिथ्याहाँए जीवोंके विरहका समाय है।

र दलवेंगान्तवहुर्तः। सः मिः १, ४०

२ शहदेश्यानां भिष्पारप्टेर्नानाबीवापेस्या सर्दः हातः । हः हिः १, ८.

Chillies or management with

एउसंडागमे जीवहाण

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं'॥ वं वधा- एको मिच्छादिही बहुमागपम्मलेसिमो सग बाहो । सन्त्रबहुणमंतीमुहुत्तमन्छिय पम्मलेसं गही, अर्णलेस वनकस्तेण एककत्तीसं सागरोवमाणि सादिररे

वं जया-एक्को दन्यलिंगी दन्यसंज्ञममाहरपेण उपियो पम्मतेस्यार अच्छिर्स्स विस्ते अदासत्त्व सुक्कतस्सा आगरा। भागावराम अञ्चलका विकास अवस्था अभागावरा अस्ति । कार्ज करिय उनिसमीनेज्जेस उन्त्रज्ञिय सगहिदि गीमय गुरी तनर वारो । एवं पडिमार्टनीयुद्रमेण सादिरेमण्करुमीस सामरोउसमेस पुनक्तम्पुनकस्मकाली होदि।

सासणसम्मादिटी ओघं'॥ ३०२ ॥

पारक्षात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रः । प्रतिकारमानि अञ्चनहरे । कृशे ओपसं १ वाणानीवं पहा टक बीरही प्रवेषा उक्त जीरोका जपन्य काल प्रन्तर्ग्रहर्त है। क्रमान वर्षात्र वर्षाः आस्ति अवन्त्र वाल अन्तव्यक्षः व ॥ वर्षात्र वर्षात्र वर्षाः इति विश्वास्ति अवि सपती

कार व्यवस्था (स्वाद्यायामा पार भागावाय पार भागावाय है। स्वाद्ये हो होने हो के देश होने हो के देश है। स्वाद्ये स्वत्ये स्वाद्ये स्वत्ये स्वाद्ये स् कारा शंक्य है। वर्री है। एक नेत्रवासाने मिष्यादृष्टि भीगोका उत्कृष्ट काल माणिक इक्त

हैल - वह द्वार्णाती शानु द्वारायमक माद्वार्यम उर्थाम धेरेपर बीपहर बचारायाम् विधासाम् भा । इसके उस लेदबाह कालस्थाने सुक्र उदया म अक्षान है बाज रह बर, बाजबी बरके, वर्गारम में रंगकीं है उपा हीकर, अपनी कारणार्थित के पात के कार्य हिम्महर कार्य हुआ और हती अगमें ही अव्येदवायाना हागया। इस प्रकार प्र होतेह साथ सम्मद हरनान सामग्रावणमाण विश्वामानीत गृह रेगास क

्टाइन्डरपातान्त्र मामादनमस्यासीत् नीशीहा काल अगिरहे गमान दे॥ इ दहा कर रहे रहता हम परका मनुष्ण काती ह देश- व्यक्त च भावानः इतः भन्तव है।

महत्याचे काचा कावाचा भागमा कामा काम वक्त समय भीत उत्तर t er coemires corre

समग्रो, उक्स्मेण पलिदोवमस्स असंतेष्ठजदिमागो, एगजीर्व पद्वन्य जहण्णेण एगसमग्रो, उपकस्सेण छ आवलियाग्रो, इचेटेडि तटे। भेदामाता ।

सम्मामिन्छादिद्री ओधं ॥ ३०३ ॥

इरो १ गानेगजीवजहण्युक्कस्सकालेहि सह ओघसम्मामिन्छादिद्वीहितो भेदाभावा। असंजदसम्मादिद्री ओघं ॥ ३०४ ॥

इरते ? षाणात्रीर्व पहुत्त्व सम्बद्धा, प्राजीव पहुत्त्व जहण्णेव अंतीप्रुत्त्वं, उकस्तेण वेषीर्तं सागरोत्रमाणि साहिरेपाणि, इन्त्रदेहि विसेसामात्रा । णवरि पञ्जबहिषणए अवसं-विज्ञमाणे अरिष विसेसी एत्थ । इदी ? पश्चिममणुससहगदअंतीमुङ्ग्तेण सादिरेगनुबर्लमा । ओपग्दि देवशपुरुवकोडीए साहिरेगचदंसणादे। ।

संजदासंजदा पमत्त-अपमत्तसंजदा केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सल्बद्धां ॥ ३०५ ॥

सगमभेदं सर्व ।

पस्योपमधा ससंख्यातयां भाग है। एक जीवकी श्रेपशा अधन्य काल एक समय, भीर उत्कृष्ट काल एवं भावलिश्रमाण है। इस प्रकार भोधसे इसके कालमें कोई भेद नहीं होनेसे भोषपना बन जाता है।

शुक्त हेरपायाले सम्पर्धिमध्यादृष्टि जीवोंका काल ओपके समान है ॥ ३०३ ॥ क्योंकि, नाना जीव भीर पक्त जीयसम्बन्धा जवन्य भीर उरहर कालोंके साथ भीय-सम्पर्धिमध्यादृष्टि जीवोंसे कोई भेद नहीं है ।

शुक्तदेरपात्राले असंपादसम्पारिट जीवोंका काल जोपके समान है ॥ २०४ ॥ पर्वारिक, नाना जीवोंकी क्षेत्रात पर्यक्तल है, एक जीपकी क्षेत्रात ज्ञापन काल काल कुर्ति है, उच्छ कर कार सारिक नेतीत सारागित्र है, रम करात्ते कोई विदेशना नहीं है । किन्तु केवल पर्यावार्धिकनपके व्यवस्थान करने पर यहाँ विदेशित है । यह रस महार्थिक प्रवाद्यावयों होनेवाली शुक्तदेशकों एक व्यन्तर्गृहर्वके साथ उच्छ कालकी सालिक मा पर्वा जाती है । किन्तु कोचमें देशोन पूर्वकीटोंके साथ उच्छ कालकी सालिक मा पर्वा जाती है । किन्तु कोचमें देशोन पूर्वकीटोंके साथ उच्छ कालकी सालिक मा पर्वा जाती है ।

गुरुरुरपायाले संपतासंपत, प्रमचसंपत और अप्रमचसंपत जीव कितने काल तक होते हैं ? माना जीवोंकी अवेध्या सर्वकाल होते हैं ॥ २०५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

t xx संवतावंदतस्य नानाजीवापेसवा सर्वः कातः। स. नि. १, ८.

### एगजीवं पदुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३०६ ॥

वं जधा- एको पमचसंजदो हायमाणसुकलेरिसगो एगो समञा सुकलेरसाए अत्यि संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदो चिव, किंतु पम्मलेरसं गदो । एग लेस्सापरावची (१) । सेसगुणद्वाणेहिंतो संजमासंजमं पडिवञ्जंताणं सुकलेरसाए एगसमग्रे प लम्भिदे । छुदो ? वहुमाणसुकलेरसाए संजमासंजमं पडिवञ्जाणं विदियसमए पमलेरसाए गमणामावा । अथवा संजदासंजदो वहुमाणपम्मलेरिसगो विस्से अद्वाखएण संजमा संजमद्वास्य एपमो स्वर्मा संजम्म संजम्म संजम्म संजम्म अर्थि विद्यसम् सुकलेरिसग्रे वेष्

पमचस्त उचर्दे एको अप्पमचो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सद्वाए एगो समजो अत्यि चि पमचो जादो । विदियसमए पमचो चेत्र, किंतु लेस्स पराविदा। एसा लेस्सापरावची (१) । अथवा एको पमचो बहुमाणपम्मलेस्सिगो पम्मलेस्सद्वाए सप्य सुक्कलेस्सिगो जादो । विदियसमए (सुक्कलेस्सिगो ) चेत्र, किंतु अप्यमचो जाहो।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जावोंका जधन्य काल एक समय है ॥ ३०९ ॥

भव प्रमम्भवतके वक समयकी प्रकारण करते हैं- हायमान शुक्रहेरयायाला कोई वर्ष सप्रमम्भवत शुक्रहेरयाके कालमें वक समय भवीन रहते वर प्रमम्भवय हो गया। विशेष समयम वह प्रमम्भवयत ही ग्रा. स्थितु लेश्या परियतित हो गर्ग। यह लेश्यारिवर्गनतामधी वक्त समयकी प्रकारण हुई (१)। स्थात, वर्षमान वस्रहेरयायाला कोई वक्त प्रमम्भवत्त और, वक्तहेरवाके कालस्वत्ते शुक्रहेरयात्राला हो गया। जिनीय समयमें यह (शुक्रहेशयाक्ता)।

र क्यार प्रते करनेतेर, बारा । व. वि. र. ८.

एसा गुणपरावची (२) । अघवा अप्पमचे। हायमाणसुक्केडेरिसमो सुक्केडेस्सद्वाए सह पमचे। जाटो । विदियसमए मदे। देवचं गदे। ( ३ ) ।

अप्पमचस्स उरुपरे- एको पमचे। सुक्कतेस्साए अप्टिटो, सुक्कतेस्साए सह अप्पमचो जारो। विश्विसमय मदो देवचं गदो (१)। अधवा अपुष्यकरणो ओर्दातो सुक्क-केस्सिगो अप्पमचो होट्ण मदो देवो जादो (२)। एत्य एगसमयर्भगगरूवणसाहा-

दो हो य तिषिण तेऊ तिषिण निया होति पम्मठेनसाए । दो निग दगं च समया बोदच्या सक्तरेरसाए ॥ ११ ॥

<del>उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं' ॥ ३०७ ॥</del>

कुरो १ सुक्कलेस्साए परिणमिय उक्कस्समंत्रीमुद्दुचमस्टिय पम्मलेस्सं गराण-मुक्कस्सकाञुबर्लमा ।

है, किन्तु भवमचर्मयत हो गया। यह गुनस्थानतस्थन्यी परिवर्तन है (२)। भएवा, हावमान गुरुक्तरपायात्रा केर्द्र भवमचर्तवत, शुरूक्तरपाके ही बालके साथ प्रमचसंवत हो गया। चुना इसरे समयमें मरा भीर देवत्वको प्रास्त हुना (६)।

भव अप्रमाससंवतके एक समयकी प्रस्तवना करते हैं— गुहरेरचाम विषमात केहि एक प्रमाससंवत श्रीव गुहरेरचामें तिषमात केहि एक प्रमाससंवत श्रीव गुहरेरचाने साथ ही भवामसंवत हो गया। यह दिनीय समयमें मार भीर देखावते। प्राप्त हुआ होते आहुं अपराप्त हुआ होते आहुं करता हुआ होते आहुं करता हुआ होते आहुं करता हुआ होते आहुं करता हुआ होते आहुं कर स्वाप्त स्

ते में दिरवाचे हो, हो और बीन समयभग होते हैं। यस देरवाचे तीन विक वर्षान् तीन, तीन और तीन समयभग होते हैं। तथा, ब्युट्ट रेपाचे हो, बीन और दो समयभग

द्देंति हैं, पेसा जानना चाहिए ॥ ४१ ॥

विशेषि — ऊगर को पक्तसमयसम्बन्धी सनेवः विकार बताये गये हैं, रनका र्याकरण इस प्रकार के से में हैं, रनका र्याकरण इस प्रकार है — से मोटेरसासकारी देशवेषार है। सेन, प्रकासंकर है दे एक उत्तर में होते हैं एक उत्तर में होते हैं एक उत्तर में होते हैं एक उत्तर में एक उत्तर के तीन सेन होते हैं एक उत्तर प्रकाशी देश सेवत के तीन सेन, प्रमुख्य पति होते सेन सेन प्रकार के तीन सेन, इस प्रकार कुछ (३ + ३ + ३ = ९) में। सेन होते हैं। हुद्र तरपासकारी देश सेवत के ते सेन, प्रमुख्य सेवत होते सेन भी रूप प्रमुख्य सेवत होते सेन, इस प्रकार कुछ (३ + ३ + २ - ७) सान सेन जानना पादिय ।

उक्त बीनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मृद्रवे है ॥ ३०७ ॥

वर्षीकि, सुद्रुकेरवासे परिवन होकर अन्तर अन्तर अन्तर्महर्ने रह कर पहाटेरपाके अन्त इय अविके अन्तर काल पावा जाता है।

१ दलर्पेयालहाँ(हैं। इ. वि. १, ८,

# एगजीवं पडुन्च जहण्णेण एगसमयं'॥ ३०६।

र्वं जघा- एको पमचसंजदे। हायमाणसुकलेस्सिगो एगे। समजा चि संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदे। चेत्र, किंतु पम्म हेस्तापरावची (१)। सेसगुणहाणेहिंतो संजमासंजमं पडियज्जंताणं सुफ्तेस टब्मिरि । बुदो ? बहुमाणसुक्छेस्साए संजमासंजमं पडिवण्णाणं विदियस गमणामावा । अथवा संजदासंजदो वहुमाणवम्मलेसिसो। विस्से अद्वा पंजमद्वाए एगी समभी अतिय नि सुक्लेस्सिओ जादो । विदियसमए सुक कितु अप्पमत्तमानेण संनमं पडिनण्णो । एसा गुणपराननी (२)।

पमचस्य उच्हे- एको अप्पमची हायमाणसुक्रकेसिमी सुक्रकेस समझो अत्यि वि पमची जादी । विदियसमार पमची नेव, किंतु केस्ता व एमा हेस्सापरावधी (१) । अथवा एको पमचो वहुमाणपरमहोस्मिमो परमहोसार पुरुक्तेसिंगो जादो । विदियममव (सुपक्तिसिंगो ) चेत्र, किंतु अध्यमणे

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जायोंका जपन्य काल एक समय दे ॥ ३०६। कैंगे - हायमान गुरुलेस्वायाला एक ममत्त्रांगत श्रीय, गुरुलेस्वाहे हाल तमय रोष रहते पर संग्यासंयम् हुमा । जिमीय समयम यह संयमासंयम है। है। इंदर्गहों मान हो गया : यह तद्याहा एक समयम यह भवनास्थल का का रेकारहा का ना हा गया । यह अद्याका यक गामवाग्रकाचा पाटवान व १६०० का वैद्यानीत संवमासंवमकी मान्त्र होनेवाल जीवोक्ते जुज्जलेदयाका वक्त समय नहीं वावा जाना हराहि, क्षेमान गुम्रेल्ड्याके साथ संवधानंवमको माल होनेवाले भीगोह रिमीय सव

इन्द्रहरूपम् ममन्द्रा ममाव है। सवया कोई संवनासंवन वर्धनान वमहरूपाता है। है। हेरराहे बालस्वत भीर संवमाधंवमक बालमें वक्त समय मथराव रहते वर बहु गुरू हे ह्याबाह्य है। गया। हिनीय समयमें यह शुक्र छे रवायाला है। है, विश्व भवानमा बहे साथ विद्याची मान्त्र हुमा। यह गुणक्यानपतिवननगरकात्री यह समयदी महत्वाह है।)

अब मनगर्भवगृष्ट एक समयकी प्रकृषणा करते हैं - हाथमान गृक् देवरायामा बार्ग देव साम्बद्धमंत्रत्र राष्ट्रियो हे हालमें यह समय अवशा करत है - हाथमान गुरू वहवायाला छ। ०-१ कि वहने यह समय अवशाप रहने पर ममभागत हो तथा । तुनीर सम्बद्ध वह ममस्मयन ही रहा, हिन्तु अरुवा परिवर्तिन हा गर्र । यह अस्थापनवन हा गया १४०० हरू सम्बद्धी यह प्रमा हुई (१)। सम्प्रा, वर्षमान वस्त्रेहराना श हाई वह प्रमानावान और इक्ट्रेडर हे बाट्स्यमे गुण्ड देन्यानामा है। गया । जिनीय गमयमें यन (गृह भरवानामा) है।

र कुरतीय प्रश्ने बर्गन्तीय व्यवस्था हैया थिए हैं, है,

एसा गुणपरावची (२)। अथवा अप्पमचो हायमाणसुनकलेस्सिगो सुनकलेस्सद्धाए सह पमचो जादो । विदियसमए मदो देवचं गदो ( ३ )।

अप्पमचस उरुपरे- एवो पमचो सुक्कलेस्साए अध्विदो, सुक्कलेस्साए सह अप्पमचो बारो। विदियसमय मरो देवचं गदो (१)। अथवा अपुर्वकरणो ओदरीतो सुक्क-लेसिगो अप्पमचो होर्ग मरो देवो बादो (२)। प्रथ एगसमयमंगपुरुवणाहा-

दो दो य निष्णि तेऊ तिष्णि तिया होति पम्मलेस्साए ।

दो तिग दुगं च समया बोद्धव्या सक्किल्साए ॥ ४१ ॥

उक्स्सेण अंतोमुहत्तं ॥ ३०७ ॥

हुदो १ सुकरुतेस्सार् परिणमिय उक्तस्समंत्रीष्टृहुत्तमध्ळिय पम्मलेस्सं ग्रदाण-प्रकासमञ्जलकार्थमा ।

रै, किन्तु भन्नमचर्मयत हो गया। यह गुजस्यानसम्बन्धी परिवर्तन है (२)। अथवा, हायमान गुरुक्तरपायाला कोर्र भन्नमचर्सयत, गुरुक्तरपाके ही कालके साथ प्रमचसंयत हो गया। पुनः इसरे समयमें मरा थीर देखको प्राप्त हमा (३)।

अव शममससंवतक पक समयकी प्रक्रपण करते हैं— गुक्तुलेखामें विद्यमान कोई एक प्रमत्तसंवत जीव गुक्तुलेखाने साथ ही अवमत्तसंवत हो गया। यह द्वितीय समयमें मरा भीर देखाको प्राप्त हुआ (१)। अथया गुक्तुलेख्यायला श्रेणीसे उत्तरता हुआ कोई सपूर्व-करणसंवत अवमत्तसंवत होकर मरा होरे देय हो गया (२)। यहां पर एक समयके मंगीकी मठपण करनेवाली गाया इस महार हैं—

ते कोठिरयाके दो, दो और तीन समयभंग होते हैं। वसठेरयाके तीन त्रिक अर्घात् तीन, तीन और तीन समयभंग होते हैं। तथा, शुद्धछेरयाके दो, तीन और दो समयभंग होते हैं, वेसा जानना चाहिए ॥ ४१ ॥

विद्येपार्थ — जरूर को एकसमयसम्बन्धी भनेक विकस्य बताये गये हैं, उनका स्पर्धाकरण इस मक्तार है— तेजोडोस्सासम्बन्धी देशसंवतके हो गंग, मससंवतक हो से हो सामसंवतक हो से हो सामसंवतक हो से हो सामसंवतक हो से हो सामसंवतक हो हो हो स्वाक्टरण-सम्बन्धी देशसंवतक तीन भंग, प्रसामसंवतक हो हो है। प्रकटरण-सम्बन्धी देशसंवतक तीन भंग, प्रसामसंवतक तीन भंग, इस मकार कुळ (३ + ३ + ३ = ९) मी भंग होते हैं। गुक्रुळेस्यासम्बन्धी देशसंवतक हो भंग, प्रमास-सम्बन्धित तीन भंग भीर अग्रमसंवतक हो भंग, प्रमास-सम्बन्धित हो भीर अग्रमसंवतक हो भीर, प्रसामकार कुळ (२ + ३ + २ - ७) सात भंग जानना चारिए ।

उक्त तीनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्प्रहर्त है ॥ २०७ ॥

क्योंकि, शुक्तकेस्यासे परिणत होकर उत्छए अन्तर्गुद्धर्त रह कर पद्मलेस्याको प्राप्त हुए जीवोंके उत्छए काल पाया जाता है।

१ दत्कवेंनान्तर्युर्द्धतेः । सः विः 🗸 🚓

चदुण्हमुवसमा चदुण्हं खबगा सजोगिकेवली ओधं ॥ ३०८ ॥

इदो १ एदेसिमोधे वि सुक्कलेस्सं मोनूण अण्यलस्यामाया ।

एवं टेस्सामग्गणा समता I भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिही केवितरं कालादो होंते, णाणाजीवं पहुच सव्वद्यां ॥ ३०९ ॥

सगमभेदं सत्तं ।

वसिदो ॥ ३१० ॥

तं जहा- मवियत्तं दुविहं, अणादिसपज्जवसिदं सादिसपज्जवसिद्मिदि । पुरुवमः

लद्भाम्मचस्स अणादिसपञ्जयसिदं। सम्मचं लहिऊण मिच्छचं गद्रस सादिसपअविदं।

समानं है ॥ ३०८ ॥

यह सत्र सुगम है।

शमायं है ।

धाहिए ! )

अणादिचादो अकट्टिमस्स ण विणासो चे ण, अण्णाणस्य कम्मवंघस्य य अणादिस्य वि

एगजीवं पडुच्च अणादिओ सपज्जवसिदों सादिओ सपज्ज

शुक्रकेश्यात्राले चारों उपशामक, चारों श्रवक और सयोगिकेश्टीका काल और्व

क्योंकि, इन गुणस्यानवाठोंके बोधमें भी शुक्क देश्याका छोड़कर अन्य टेस्याका

इस बकार छेदयामार्गणा समात हुई। भव्यमार्गणाके अनुवादसे मञ्यासिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने कार्र

एक जीवकी अपेक्षा अनादि सान्त और सादि-सान्त काल है ॥ ३१० ॥ जैसे- मव्यत्य दो प्रकारका है, अनादि-सान्त और सादि-सान्त । पूर्वे नहीं मह हुवा है सम्यक्त्य जिसको, ऐसे जीवके बनादि-सान्त मय्यत्य होता है। सम्यक्त्यको प्राप्त

मुंका-जो यस्तु सनादि है, यह अल्लिम होती है और उसका विनाश नहीं होता। (इसल्टिप मिष्याग्यको अनादि होनेसे अकृतिमता सिद्ध है, फिर उसका विनाश नहीं होते

समाधान-नहीं, क्योंकि, भद्यानका और कमेंदन्धका, उनके धनादि होते हुए मी।

१ मध्यादुरादेन मध्येषु निष्पार्ष्टनीतार्जनारेश्वया सर्वः काळः । स. छि. १, ८. ६ पुक्रवीनारेश्वया हो अंगी, जनादिः सप्यंत्रतानः, सादिः सप्यंत्रशतम । स. सि. १, ८.

तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं !। ३०९ II

करके निष्यात्वको गये हुए जीवके सादि-सान्त मध्यत्य होता है।

 $\eta_1$ 

विणासुवलमा । अकारणचारी ण तस्य विणामी च ण, अवादिवंचनवद्वकम्मकारणचारी। å विशास्त्रवाचा । अकारणवास्त्रं च पर्यास्त्रवाचाः च न्यु अन्यास्त्रवास्त्रकाः च कान्यकारणवास्त्रवास्त्रिद्धाणं प सिद्धाणं मिच्छचार्त्रज्ञमक्रमायज्ञासकृष्टमायविद्धियाणं ण संस्रोते पर्णमन्त्रिय, तदी स वादिण विष्णां भगकापात्रभावनाम् । वाद्याः विष्णां सम्बद्धम् वि सादि मिनियमं होदि, पुटर्वं वि तार्यं मिनि साह भावपण । वा वाववण्यावन परंग व साहर नाववण कावन हुए व पान पान प्रमुख्या है एस्य परिकारी सुपदे- वा संसाह निवादिदानिह अस्मिद्य महियकं माहि प्रवाशिक्षा । पूर्व पारवारा अवन् ज कतार विवासकारक जाल्याह्रण भावपक गान् उचेहे । या च ते संसार जित्रहीते, महामत्रचादी । जित्त गहिदसम्बद्धीवस्य महिसक ज्यहा च च व सवार भागवाम गढानवचावा । १००८ गाहवानवच्यावरम नावच्य साहि उद्युदे । य च ते पुरुषाच्यि, साहिसांतरवेहरम युटेसाँडम अयाहिर-अर्जेन मह साद उपर । ण य व अन्यमात्य, साम्यावन्त्रद्वम अन्याद्य अन्याद्य अन्याद्य अन्याद्य प्रविचित्रं मित्रं चे वा, मित्रं पहेच तस्य मित्र्यस्य । स ९४ पावस्था । अध्यास्त्राह्मेषा नावयय गान प्रमुणाय प्रध्य प्रस्त गान्यवस्या । व पर्ति पहेच सम्मनग्रह्मेषा निषा अर्ववसंसारम् जीवस्य मति मतियम्, निराहा । आणादि-अर्णतेण वि मनियनेण होदण्डी, अल्लहा मण्डनीववीणप्रदेशनारी। अधि भणेता जीवा जीदि या पत्ती ममाण परिणामी । भाववारं कहपडरा जिनीरवासं व संखिते' ॥ ४३ ॥ विनादा पाया जाता है।

र्चेहा — कारणरदित परवुका विनास गरी होता है. हरादिए शहान या कर्मकार भी विनाश महीं होना चादिए !

समाधान-नहीं, क्योंकि, भवान या क्रमेंकावहा कारण सनादिकायनक्य कर्व ही है। धनात्वात् वान् व्यवस्त भागात्र वात्र व धना — विद्यास्य, व्यवस्त्र वात्र वीत्र वीत्र वे कात्र व्यवस्त्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात् जीवोज्ञा पुना संसारमें पान गर्दी होता है, हसदिए भ्राया का दिनामन की है। और व भावारत प्रभा र स्वारम् अस्त गढा हता। कः हरणान्य स्वयंत्र राहरणान्य नहा है। कर व प्रतिस्वासस्यकारी जीवके भी भाषाय साहि होता है। क्योंदि, सहयक्षको हातिह पूर्व है, हक्ष

जीवमें भागाव पापा जाता है ? भवता वाचा वाता ॥ . समाधान – भव उक्त माद्योद्याका परिदार बटन ई – ससारमें दुव, ब्यांटवर बा.हे.

समाधान - अब उथा माहाकाका पारदार पटा ह -- गाहारम उपा कारवर मान बाले निम्न जीवांकी भवेदाति भावत्वकी स्वादि नहीं बहु सकते, क्यांकि कम्मीकार्वे नह पाल स्वयं जायाना नारभासः सम्मानकः स्थाद मदा यह सकतः कदासः बसाधकः व स्टू ही जानसे ने संसादमें पुत्रा लोहनद सदी भाते। किन्दु गदण विचा है सम्मानको हिन्दो हा जानक व समारम पुना कादकर गद्दा भाग । १००३ घटण १० घा इ. साम्य व्यवसा १८०० १ ऐसे जीवके माध्यम्बद्धी सादि कहते हैं। सथा, वह पूर्वने भी नहीं है, वहाँकि, इस साहितसम्ब भाषायहे पूर्ववर्ग उस समाहि महाम अस्पानहे साथ वह पका विशेष है। ह पूपका जह भागानुःभाग स्वयन्त्रः राज्यस्य का व्यवस्था । चेदा — पहेस्टे आयापने औं यह साम सार दिया जाट, तेः क्या टार्डि है ह

चित्राच्याचे व्याप्त कालिको अदेशास इसह सामन्त्राच्या उपहरू हिन्द करू संस्थात — महा, क्यान , स्थान व मध्याम क्या स्थापनास्य उद्देश हिन्द करू है । देवनिष्ठे अवेशा सम्बन्धाहणक दिना भतन संस्था है के स्था स्थापनास्य उद्देश हिन्द करू हैं। बराजाक। अध्यक्ष सारवष्ट्रचारककः । वता अतल्य असारा ज्ञ वर काल्य अस्यक कर्रः ज्ञाना जा रहता, वयादि साम प्राप्त स्थान है अस्म वर्षः कर्रः कर्रस्य कर्रः भाग जा रहकता, वधाव प्रशा भागमधावदाच चाना हु आदाय प्रवृत का कारण्या अनाहि अवन्य भी होना पहेगा अन्यया अध्य जोडी विद्यातः असा क्षण्या कारण्या

संबर्ग था हाता धर्मा संस्थाता संघर माधार गर्थाकः अन्य सन्त होता। संस्था येथे अस्तरमञ्जल जीत है कि प्रशास संघोत। यहार सन्त सन्त होता। संस्था परं भवानामध्य जान है। व (जाहाम मधान: प्रधान मधान कहा कहा कहा है। जो हुचित आबोधों भति हमुरुताहै कारण कही भी विशादक कासक करा है। कहा कि

#### एयणिगोदसरिरे जीवा दश्यप्यमाणदे। दिहा ( सिद्धेहि अर्थतगुणा सन्वेण विवीदकाटेण ॥ ४३ ॥

इचारिसुपर्दसणादो य । ण च मोवखमगच्छंताणं मवियतं णित्य ति वोतं जुर्ण, मोवखगमणसिस्ममातं पहुच्च तेसि मवियत्तुचदेसां (३)। ण च सत्तिमंताणं सन्वेसि पि वचीए होदन्यभिदि णियमो अतिय सन्वस्त वि हेमपासाणस्स हेमपज्जाएण परिणमण्यसंगां । ण च एवं, अणुबरुमा । णिट्चूदं गुन्छमाणो वि ण बोव्छिज्जिद मन्त्रतारि पि क्यमेदं णन्वदे ? तस्साणंतियादो । सो रासी अणंता उच्चह, जो संते वि वए ण णिहादि, अण्णहा अणंतववएसो अण्त्यओ होज्ज । तम्हा तिविहेण मवियत्तेण होदन्वमिदि । ण च स्तेण सह विरोहो, सर्ति पटुच्च सुने अगादिसांत्तुवएसा ।

जो सो सादिओ सपञ्जवसिदो तस्स इमो णिहेसो ॥ ३११ ॥

. पक निगोदशारीरमें द्रव्यप्रमाणसे जीय सिद्धांसे तथा समस्त व्यतीत कारके समर्थीसे अवन्तराणे देखे गये हैं ॥ ४३ ॥

्रसादि सुत्रीके देखे जानेसे भी भव्य जीवीके विच्छेदका सभाव सित्र है। तथा, मोहको नहीं जानेवाले जीवीके भव्यपना नहीं होता है, ऐसा भी कहना युक्त नहीं है, क्योंकि, मोहर गमनकी दाकिके सद्भावभी स्पेशा उनके भव्यक्त पाये जानेका उपदेश है। तथा यह भी कोई नियम नहीं है कि भव्यवभी दाकि रस्त्रेनवाले सभी जीवोंके उसकी व्यक्ति होना है। स्थादिण, सन्यथा, सभी सर्वणीयाणिक स्वर्णवर्षाय पित्रमनका प्रसंग प्राप्त होगा है हिन्दु हम प्रकार है देखा नहीं जाता है।

ग्रंका-निर्वात (मोक्ष) को आनेके कारण निराज्यपात्मक मध्यराशि विच्छेरकी

प्र.प्त नहीं द्वीगी, यद कैसे जाना ?

समाधान—फ्योंकि, यह राशि अनस्त है। और यहाँ राशि अनस्त कही जाती हैं, जो व्ययके होते रहने पर भी समान्त नहीं होती है। अन्यया, किर उस राशिकी अनन्त संज्ञा मनयेक हो जायगी। इसविद सम्बन्ध तीन मकारका हैं। होना चादिए। तथा धर्के साथ भी कोई पिरोप नहीं आता है, पर्योकि, राजिकी अपेक्षा सूत्रमें मन्यस्यके अनीहर सान्तताका उपदेश दिया गया है।

ं उक्त वीन प्रकारोंमेंसे जो भन्यस्य सादि और सान्त है उसका निर्देश<sup>स्य</sup> प्रकार है ॥ २११ ॥

१ गी. बी. १९६. १ व प्रती 'मनिवशुक्तंबदेना ' इति पाठः ।

१ मानदारत बोग्या के बीहा है रही महत्रिया। व हु कहरियमे निषमा हार्न वनबारहारति है यो. मी. भूद. ४ तर हारिर सर्पराली अवस्वित्वर्गर्गर । स. हि. १, ६,

विष्टं मिर्पाणं मन्त्रे जो सादिसपन्जवसिदो मित्रिजो तस्य हमा णिदेसो पहन्या पणावणा चि उत्तं होदि। अपना मित्रिपाणं ज मिन्छतं तं दृतिहं, अणादिसपन्जवसिद् सादिसपन्जवसिद्मिदि। तत्य जो सो सादिओ सपन्जवसिद्द मिन्छादिद्वी तस्य हमा णिदेसो चि वत्तव्यं। पुष्टिनस्टम्ह पुण अत्ये जो सादिओ सपन्जवसिदो मिन्छादिद्वी तस्य मिन्छत्तस्य हमो णिदेसो पहनेदर्को।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१२ ॥

वं जचा- सम्मादिही दिहमागो विच्छत्तं मंत्रण सच्चबद्दप्णमंतामुदूषमान्छप अष्णगुणं गरो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ३१३ ॥

वं जहा- एको जणादियमिन्छादिही तिश्यि करलालि करिय मन्मचं पहिक्यो । वेण सम्मचेण उप्पञ्जमालेण जणेता संसारा छिण्यो संत्री अद्योग्यटपरियद्दमेचो करो । उत्तसमसम्मचेण जहण्यमंत्रीसुद्वचम्हिष्य उत्तसमसम्मचद्राय छात्रद्वियसमाए आसानं गैत्य मिच्छचं शेदय्यो । अह्वा उत्तसमसम्मादिही चेव मिच्छचं शेत्व अद्योग्यन्तरियई

सादि-सान्त मिध्यातका अपन्य काल अन्तर्भृहुर्त है ॥ २१२ ॥

जैसे— रहमार्ग कोई सरवारिह जीव मिरवायको मान रोकर सर्वप्रदेश मान-मुंदर्त काल रह करके अन्य गुजरधानको बला गया। साहि-सान्त मिथ्यारका उत्कृष्ट काल देखेल अर्थपुट्टवरिवर्डन है ॥ १११ ध

तीर — कोर्ट एक मनाहि मिथाराष्टि जीव तीनों वरणाहे वरहे सारव्यको जाव दुमा। जावम होनेके साथ ही जम सारवसवसे मनाव सीनार जिम होना हुना मधुरूत-परिस्तृत बातमात्र ५८ दिया गया। उद्याससारव्यके साथ सर्वज्ञम्य ममुदूर्त बात रह कर जयामसारवस्य के बातमें प्रदूष्ण में पर दह जोते पर उसी जीवधे साराव्यक्त स्थानमें है जाहर विश्वास्त्र से जाता बादिश। मध्यन, उद्यासस्यार्ट जीव ही मिथारवही जाहर दियास्त्र से

सीन प्रशारके अन्योंके मध्यमें जो सादि-सानत सध्य है, उसका यह निर्देश है, सर्यान् उसको यह प्रश्नमणा या प्रकारता की जाती है। समयत, प्रश्न जीवोंके जो विश्वास है, यह दो प्रकारका होता है-(१) प्रजादि-सानत, और (१) सादि-सानत । उनसेंसे जे सादि सीर सानत विश्वासिट है, उसका यह निर्देश है, पंसा कहना वाहिए। तथा पहले कर्यों जो सादि-सानत अध्य कहा है, उसके विश्वास्यका यह निर्देश है, प्रसा करवल करना वाहिए।

१ बलर्बेबार्वदास्त्रास्त्रास्त्रात्ते देशोवः । व हि. १. ८.

देख्णं मिच्छेतेण प्रियद्विय अतिष्ठेहुत्तांवसेते संसारे सम्मचे पंतृण अर्णताणुवेषी विष्ठेवेः इंप विस्तिमिय देतणमोहं खविय पमचापमचंत्रावचमहस्सं करिय अधापमचकाणं काउन अपुन्त्रो अणिपट्टी सुहुमी सीणो सज्ञोती अज्ञाती होद्ग विद्वो जारो । जारं देखणम्बः पोमाठपंत्रियकं ।

सासणसम्मादिद्विषद्वृद्धि जाव अजोगिकेविल ति ओयं ॥३१८॥ करो ? सासणादीनं भविषयं मोनून अन्यासमसम्बा ।

अभवसिद्धिया केन्नचिरं कालादो हॉति, णाणाजीनं पडुच्च

सन्बद्धा ॥ ३१५ ॥

कुदो ? अन्वयत्तादो ।

एगजीवं पहुच्च अणादिओ अपज्जवसिदों ॥ ३१६ ॥ छंदोः? मिच्छचं मोन्म वस्स ग्रमेवरममगामात्रा ।

एवं भवियमग्गणा समता।

सन्तर्भुद्दर्तमात्र संवारके रोप रहने पर सम्पन्त्यको प्रदाव करके, पुतः अनन्तालुवन्धो क्यावका विसंयोजन करके, पद्मान् विधाम ले, दर्शनमोहको लगण कर, प्रमच और अप्रमच ग्रुप-स्थानसम्बन्धी सहलां परिवर्तनीको करके, अध्यायनुत्तकरण कर अपूर्वकरण, स्रातन्त्रिकरण स्वस्तास्वराय, स्त्रीणकराय, स्थोगी और अयोगी हो करके सिद्ध होगया। इस प्रकास देवील अर्थवृद्धक्रपरिवर्तन काल सिद्ध हुमा।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तकका काल ओयके समान

है।। ३१४॥

पर्योकि, सासादनादि गुणस्थानवर्ती जीवोंके भ्रव्यत्वको छोडकर अन्यका होता, सर्थात् भ्रमप्यपना, असमव है।

अभव्यविद्ध जीव कितने काठ तक होते हैं ? .नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल इसम्बद्धि जीव कितने काठ तक होते हैं ? .नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल इति हैं !! ११५ !!

।। २२ ४ ।। श्र्योंकि, अमय्य भीयोंका य्यय ही नहीं होता ।

एक जीवकी अपेक्षा अमर्स्योका अनादि और अनन्त काल है।। ३१६ ॥ क्योंकि, मिष्यायको छोड़कर ममस्यके मन्य गुजस्यावमें जानेका समाय है। इस मुकार मध्यमार्थना समाग्र हर्ष।

६ बालादवसम्बन्धशापयोगहेबस्यन्तानी सामान्योतः काठः । स. सि. १, ८० २ सम्बन्धानाययापपर्यवसानः । स. सि. १, ८०

बाटाणुगमे सम्मादिद्विवाङ्गरूपणं सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिङ्गि-सङ्घसम्मादिङ्गीस् असंजदसम्मादि T Britishik पहुंडि जाव अजोगिकेविल ति ओर्घ ॥ २१७॥ بتأزع الزع णवरि सहयसम्मादिष्टिः संजदासंजदेस अधिय भेदी। तं मणिस्सामा । ण चेमा भदी सुके कि होते हैं। णवार (वहंपतानमाराष्ट्र-सम्भावनद्य जारव महार व माण्यामा र जा महा स्वव अवस्तिवेदी, समेहिद्दिसेससामम्ममयसंविष ओपमिदि गिरेसादी । तं नहा- एमा देसे जनराजवा पामादिही मणुमेश्ववीत्रय अत्रोमहुचनमहिष्णानमादिअहवस्य मानिप सेत्रमा-णाहुन। था सन्मापुरु गञ्चापनाजन ज्यान्यस्य प्रणाहुन्यस्य हुन्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य त्वम पाठ्याच्य जाणाद्वरः । पर्वति अतीमुकुचिहि अन्महियअहुवस्महि उजीपरं पुलकाहिसंबमा-सम्मादहा जादा । पद्धः अवाधद्वपाद अन्माद्द्यश्चरमाद्द्र अग्य सुन्यस् संजयमञ्जूपालिय मदो देवो जादो । एरचेत्र विसेमो, णीट्य बुळान्य कत्य वि । <sup>युवालकु</sup> निर्मादिहीस असंजदसम्मादिहिणहुडि जाव अव्यमत्तसंजदा ति ओधं ॥ ३१८ ॥ . इ.से ? वाणेमजीवजहण्णुकस्पकालेहि सस्यगुणहाणाणं औषगुणहालेहिनो भेरासावा। सम्यवस्वमार्गणाके अञ्चवादसे सम्यार्गिष्ट और धाविकमम्यार्गियों क्रमंबवसम्य हरिष्टि गुणस्तान्त्रे तेकर अपीमिक्रेवसी गुणमान् तरका कार आपके ममान है ॥३१०॥। उपायात एका जनावाकारण गुरुष्तात प्रकार कार जारक गामन व सर्वता वर्षोहि, बीधे गुणस्यावते लेहर ऊपरने सभी गुणक्यानारा सपने सहते वास नेपाल, जाय राजरणानतः कार अवस्त समा राजरणानामः अवन आहत बाल् जीव बार एक जीवके जमारा और उक्कर बालका भाग्य करके सामानि जीनेक सम

1.2 455. 1

उवसमसम्मादिहीस असंजदसम्मादिही संजदासंजदा केवितरं

कालादो होंति, णाणाजीनं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१९ ॥ वं जहा- सच्छ जणा बहुआना मिन्छादिहिलो उनसमसम्मवं पहिन्ना। उवसमसम्मचढाए छावलियसेसाए सच्चे आसाणं गदा। अंतरं गरं।

उक्कस्सेण पिटदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।। ३२० ॥

र्तं जहा- सचह जणा बहुआ वा मिच्छादिहिणो उवसमसम्मर्च पहिवण्या। तत्व अंतोम्रहचमन्छिय वेदगसम्मचं सम्मामिच्छचं साम्रणसम्मचं मिच्छचं वा गदा । एदस्र एगा सलागा णिविखविद्व्या । तस्समए चैव अष्णे मिच्छादिद्विणो उवसमसम्मर्तं पिड-विजय तरम अतामुद्रुचमन्छिय चदुण्हं गुणहाणाणमण्यद्रं गदा । विदियसनामा ट्रहा होदि । एवं ति्णा चचारि आर्दि गतुण परिदोवमस्य असंखेजजदिमागमेतात्रो सरागात्री रुव्मति। तं कर्षं णव्यदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो । एदाहि सरागाहि उवसमसम्मर्ग्द गुणिदे सगरासीदो असंखेजजगुणी अर्णतरकाली होटि ।

जपग्रमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव दितने काठ वक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर्ग्रहर्त काल होते हैं ॥ ३१९ ॥

जैसे— सात बाठ जन, या बहतसे मिध्यादृष्टि जीव उपरामसम्यक्त्वको प्राप्त हुए, ्या व प्रदानसम्बद्धाः स्वाप्त । व विद्वार्ति । । । । । । । । व प्रदानसम्बद्धाः । । । ५० श्रीर वरदानसम्बद्धाः के कावने इंड शावद्यमित्याण कावके श्वविष्टि रहने पर समीते समी सासादनगुपस्थानको प्राप्त हो गये श्रीर पुनः श्वन्तरको प्राप्त हुए।

उपश्चमसम्यग्दृष्टि असंयत और संयतासंयतोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल परयोपमके असंख्यातवें माग है ॥ ३२० ॥

जैसे—सात बाउ जन, बयवा बहतसे मिथ्याहरि औव उपरामसम्यक्तको मान्त हुए। दसमें बन्तमहूर्त रह करके वे सब वेदकसम्बन्धको, या सम्बन्धियात्वको, या सामादन सम्यक्तको, अथवा मिथ्यात्वको प्राप्त हुए । इसकी एक शहाका स्थापित करना चाहिए। उसी समयमें ही अन्य भी मिथ्यादाष्ट्र जीव उपदामसम्यक्तको मान्त होकर, उसमें अन्तर्मुहर्व रह कर, पूर्वोक्त चार गुणस्यानामेंसे किसी एक गुणस्थानको मात हुए । यह दूसरी दाटाध भात हुई। इस प्रकारसे तीन चारको सादि लेकर प्रत्योपमके ससंख्यात्ये मागमात्र ग्रलाकार माप्त होती हैं।

शंका-यह केसे आना जाता है कि उपशामसम्बन्धकी हालाकाएँ प्रशोपमके वसंस्थातमें भागमात्र होती हैं ?

समाधान-वाचार्यपरम्परागत उपदेशसे यह जाना जाता है।

इन छन्य ग्रहाकाओंसे उपधामसम्यक्त्यके कालको गुणा करने पर अपनी राधि<sup>छे</sup> थसंस्थातगुणा अन्तररहित उपशामसम्यक्तवका काल होता है।

र सीरहरिष्टनस्वन्तेतु अर्थवद्रवन्तराष्ट्रवेवद्राधवद्रवीर्तानाबीवरोक्षया अवन्येनस्टर्युर्द्धः। स. वि. १,४० ६ शहरीन परवीपवालक्षेत्रमागः । स. वि. १, ८,

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तंं ॥ ३२१ ॥

तं जहा- एको मिन्छादिङ्की उवसमसम्मर्च पडिचण्णो, अवरो देससंजमेण सह तै चेव पडिवण्गो, सन्वज्ञहण्गमद्भान्छिप उनसमसम्मचद्वाप छात्रलिपानसप्ताप आसार्ण गदा। एसो दोण्डं पि जहण्णकालो।

उक्कस्सेण अंतोमुहत्तं' ॥ ३२२ ॥

तं जहा- दो मिच्छादिहिंगो। तत्य एगी उवसमसम्मर्च, अवसे देससंजमं पहि-बण्णो । सन्युकस्समंते।मुदुषद्रमन्छिय दोष्णि वि तिण्हमण्णद्रं गदा।

पमत्तसंजद्रपहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्या ति केव-चिरं कालादा होति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥३२३॥

ते जहा-पमच-अप्पमचाणं ताव उधदे। सचह जणा बहुआवा उदसमसम्मादिहिनी उवसमतेडीदा ओदरिय पमचापमचा होद्व एगसमयमन्त्रिय कालं करिय देवा जादा । अपुन्वकरणस्य ओद्रामाणीहे, अणिपहि-गुहुमसांपराह्याणं चढणोवरणकिरियावाबदेहि, उवसंतरस चढेतेहे अध्यिद्युणपडिवणाविदियसम्य महिह स्रोबेहि एगसम्या बत्तम्य ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जपन्य काल अन्तर्भुहर्त है ॥ ३२१ ॥

जैले -- यक बिष्यादृष्टि जीय उपरामसम्बक्त्यको मात दुमा। दूसा। देशानवमके साय उसी उपरामसभ्यक्त्यको मात हुमा । दोना ही जीव सर्वमधन्य काछ अपने अपने गुल-रयानोंमें रह करके उपरामसम्बक्त्यक कालमें छह भाषतियां भवरोप रह जाने पर सासाहन-गुणस्थानको माप्त हुए। यह दोनों गुणस्थानीका ज्ञघन्य काल है।

यक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भुहुर्व है ॥ ३२२ ॥

जैसे- दो मिण्यादि जीव है। उनमेंसे एक जपरामसम्बन्धको भीर दूसरा जार है। सन्यान्य जाय है। उनमार यह उपरामसन्यशयध्य मार्ट हुसरा देशसंयमको प्राप्त हुमा। यहाँ वे दोनों ही ओव सर्योक्टर मानमुहर्नकास रह करके साय-मिनप्यास्य, मिन्यास्य, मायवा वेदकसम्यवस्य, इन सोनोमेंसे किसी पक्रो मास हुए।

प्रमुचसंयवसे लेकर उपग्रान्वकपायबीवराग्रहभस्य गुणस्तान वक उपग्रममध्याराष्ट्र जीव कितने काल तक होते हैं। नाना जीवाकी अवेधा जयन्यसे एक समय होते हैं।।११३।। वह इस प्रकार है- उनमेंसे पहेले प्रमत्त और अप्रमत्तसंवतीकी एक समयकी मक्रपणा करते हैं - सात आठ जन, अथपा बहुनसे उपरामसन्परित जीव, उपरामधेनीस बतर कर ममत्तत्वत और अप्रमत्तत्वत होकर, यहां पर एक समय रह करके. माच कर देव हुए। अपूर्वकरण गुणस्थानवालेके उतरते हुए, अनिवृत्तिकरण और सहमसाम्बराधिक शुणस्थानवालोंके आरोहण और अवनरण, इन दोनों ही किया माँगें हते हुए, तथा उपरामक कपायके खड़ते हुए विवसित गुणस्थानको मान होकर द्वितीय समयम मरे हुए ब्लाइके हारा पक समय की प्रक्रपण करना बाहिए। र प्रजीर प्रति जयन्यभी प्रदेशाल ईतुर्वे । स. हि. १, ८,

६ प्रवतात्ववरोध्युवीहरवतवाती च बाताबीबोहेक्स दृष्ट्येगोहस्स च प्रवर्नेरेक दृश्य । ₹. 18. €, «. f zit . Wittatigang . 4ib eit: 1

डक्कस्सेण अंतो<u>म</u>ृहत्तं<sup>'</sup> ॥ ३२४ ॥

पमचापमचाणं तात्र उच्चेदे- सत्तद्र जणा बहुआ वा दंसणमेहिणीयउवसामगा चारित्तमोहणीयउवसामगा वा पमत्तावमत्त्रगुणे पडिवण्गा। तेसु अतोमुद्रत्तद्भान्छिय अन्त-गुण गृदा । तम्ह चेव समय अण्ये उत्तसमसम्मादिहिणो पमनापमनगुण पहित्रण्या । एवमेरम संखेजजमलामा लब्मीत । एदाहि पमचापमचढं मुणिदे वि अंतीमुहुचं नेत होदि । कुरो ? अंतोम्रहु चिमिदि सुचे उदिहु चादो । एवं चेव चदुण्हमूवसामगाणं वि वचन्त्रं।

एगजीवं पडुच्च जहण्गेण एगसम्यं ॥ ३२५ ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२६ ॥ एदाणि दो वि सत्ताणि सगमाणि, णाणाजीवजहण्याकरसकालपरुवणाए पर-विदत्तारो ।

सासणसम्मादिडी ओधं ॥ ३२७ ॥ सम्मामिन्छादिद्री ओघं ॥ ३२८ ॥

मिच्छादिद्री ओघं ॥ ३२९ ॥

उक्त गुणस्यानवर्ती उपरामसम्यग्दष्टि जीवाँका उत्क्रष्ट काल अन्तर्महर्त है॥३२४॥ बनमेंसे परछे प्रमृत्त और भन्नमत्तसंयनीका काळ कहते हैं— सात शाह श्रीव अधवा बहुनमे जीय, चाहे य दर्शनभोहनीयकर्मके उपशामक हो, अधवा चाहे छारित मोहनीयकमेके उपरामन करनेवाले हों. प्रमत्त भीर भवमत्तागणस्थानको प्राप्त हए। उन होती शुक्तरपानोंमें भरतमुंहर्न काल रह करके भन्य गुणस्थानको मात हुए। उसी ही समयमें मार्च मी दरशामसन्यासीय जीव जामण भीर भाग्रमानांवन गुणस्वानको प्राप्त हुव । इस प्रकारने वहाँ पर संस्थात द्वाराकार्य मात्र होती हैं। इन द्वाराकार्योंसे ममक्तयंत्र भीर भग्रमकर्मवने कालको गुजा करने पर मी भारामुँहर्न ही होता है, क्योंकि, गुयम 'भारामुँहर्न' देना वर् कहा दया है। इसी प्रकारसे खारों उपतामकीका भी काल कहना चादिए ।

एक जीवकी अवेशा उक्त जीवोंका जयस्य काल एक समय है॥ ३२५॥

उक्त जीवोंका उन्क्रप्ट काल अन्तर्गृहते है ॥ ३२६ ॥

वे दोनों ही सूत्र सुराम है, क्योंकि, इनका मध नाना आयोक अधाय मीर प्रकृष कारकी प्रवरणामें प्रवरण दिया जा गवा है।

मामादबम्पर्राष्ट्र जी शोंका काल औपके समान है।। ३२७॥ सम्बन्धियाद्य द्वितीका काठ औषके समान है।। ३२८।। नियस्टि बीवीका काठ श्रीयके समान है ॥ ३२९ ॥

r 2 44472 (f. 1 8. fe. r. c. क काराव्यक्त दे जान देवारा है। बाद रही तो माना में ला कारा है के हैं।

ओयन्हि उत्तसासणादीर्णं सम्मत्राणुशदन्दि उत्तसासणादिविण्डं गुणद्वाणार्नं च भेदामावा ।

एवं सम्मनगगगा समना।

साण्णियाणुवादेण सण्णीमु मिन्छादिही केविचरं कालादी होति. णाणाजीवं पहुच्च सब्बद्धां॥ ३३० ॥

सगममेदं सुचं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहृत्तं ॥ ३३१ ॥ एदं पि मुत्तं सुगमं चेय, बहुसी प्रश्विदशाही ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ३३२ ॥

ते अधा- एगे। असण्यी सण्यीत उपवर्णी सामगेषममदपुषनं नन्धेर महिष पूरी अस्षित्रचं गरो ।

सासणसम्मादिद्विपहडि जान श्लीणकसायनीदरागछरमत्या वि ओर्घ ॥ ३३३ ॥

भोधमें बढ़े गये सालाइनसम्पर्धाः भादि भाग गुणव्यानार्थः बाल्डम्प्रनादः है.ह शास्त्रवरयमार्गणाके अनुवाहमें कहे गये सामादनसम्बद्धि आहि तीन गुणक्यकारी बाह प्रकृतनाका परस्परमें काई भेद नहीं है।

इस प्रकार सम्यव चरार्गणा समाप्त हुई ।

संतामार्गणाके अनुवादमे संशी जीवोमें मिध्यादृष्टि जीव किनने बान तह होते दें १ नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥ ३३० ॥ यह सूत्र सुगम है।

एक जीरबी अरेखा गंदी मिध्यादृष्टि जीरोका जयन्य कार अन्तर्दर्श है । १११। यह शुब भी गुरुम ही है, वर्णोंक, पहते बहुत बार मध्यम किया हा कवा है। na श्रीवशी अवेशा गंत्री मिध्यादृष्टि श्रीबोबा उत्बृष्ट बात शासनंदरपत-

पूथकृत्व है ॥ ३३२ ॥

क्षेर- कोई यह असंदी जीव संदिर्वीत उत्तव हुआ और सामग्रेटर एक्ट्रक के

आत तर यह संविवामें ही भ्रमण बरने पुरा भर्तकि वरो बाह हुआ।

सामादनमृत्यादाधिने तेवर श्रीयवदायर्शनसाम्बद्धम् गुद्यस्य तद में दिसे कालप्रस्पना ओपके नमान है ॥ २११ ॥

र बंबायुरावेद कवितु शिक्यराय याचे तिवाराचा मा पुन्दर १ व. व. व. व् देवली स्थादा राषा काणा । इ. लि. वे. व

सण्णिसासणादीणं ओघसासणादीणं च सण्मित्तं पिंड मेदामावा । असण्णी केवचिरं कालादो होति. णाणाजीवं पद्धन्त्र सन्बदां

11-338 11

सगममेदं सत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण ख़हाभवग्गहणं ॥ ३३५ ॥ तं जहा- एगो सण्णी असण्णीस उप्पन्जिय सुदामयग्गहणमेतकालमन्त्रिय

माणात्तं गढो । उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं' ॥ २२६ ॥

तं जघा- एगो सण्णी मिच्छादिई। असण्णी होदण आवलियाए असंसेज्जिरिः

मागमेचवाग्गलपरियद्दी तत्थ परियद्दिद्ग सिष्णितं गदी । एवं सरिणमगाणा समत्ता ।

ुआहाराणुवादेण आहारएस मिच्छादिटी केवचिरं कालादे। होंति,

णाणाजीवं पडुच्च सब्बद्धां ॥ ३३७ ॥ क्योंकि, संशी सासादनादिकोंका और योग सासादनादिकोंका संक्रित्वके प्रति कोर्र

भेद नहीं है। असंज्ञी जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते

ដំ ព ३३೪ ព यह सत्र सगम है।

एक जीवकी अपेक्षा असंत्री जीवोंका जघन्य काल क्षुद्रमवग्रहणग्रमाण है ॥३१५॥ असे — कोई एक संश्री जीर्य असंबियों में उत्पन्न होकर अदमयप्रहणमात्र काल रह

करके संक्षित्यको मात हो गया। एक जीवकी अपेक्षा असंज्ञिपोंका उत्कृष्ट काल अनन्तकालात्मक असंख्यात

पद्रलपरिवर्तनप्रमाण है ॥ ३३६ ॥ जैसे— कोई एक संबी मिण्यादृष्टि जीय असंबी होकर, आयरीके असंव्यात्य माप-

मात्र पहल्परिपतंत्रातक उन्होंमें परिश्रमण करके संक्रियको प्राप्त हुआ । रस मकार संबीमार्गणा समात हुई।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिध्यादृष्टि जीव कितने काल वक होते हैं ! नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ३३७ ॥

र अमंदिनां विष्याददेनीनाजीनार्रेश्वया सर्वः कालः । सः वि. १. ८. ६ एक मेर्च प्रति सदायेन हरमदम्बन् । छ- छि. १, ८,

३ बन्दर्वेनानन्तः कालोध्यंक्षेत्राः प्रक्रपरिकाः । स. वि. १, ८. प्र बाहारातुवादेव आहारकेत्र विष्यारहेर्नामात्रीवविष्ठया सबैः काठा १ स. सि. १, ८.

₹, ५, ३४१.]

सुगममेदं सुचं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुर्चं ॥ ३३८ ॥

पदं वि सुचं सुगमं चेय, जोपन्डि उचत्थादी ।

उनकरसेण अंगुलस्स असंस्वेज्जदिमागो असंस्वेज्जासंखेज्जाओ ओसिपिणि-उस्सपिणों ॥ ३३९ ॥

ते जहा- पको मिन्छादिही विगाई कार्ण उपवण्णा । अंगुलस्म असंनेजिहिसार्ग असंग्रेजा ओसिपिणि उस्तिरिणीयमार्ग तत्य परिमिय आहार्गा जहा । इन्ते अवसाणे विगाई करिय जणाहारिषं गहे । एवमाहारिमिन्छादिहेस्य उपहस्यकाले विद्यो होटि ।

...र सासणसम्मादिद्विष्पहुडि जाव सजोगिनेत्रिल ति ओपं' ॥३४०॥ इरोर वाचेगभीनतहण्युकस्पकालेहे बाहारितासवार्यनं बोपयासवार्याहे बेरासारा।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिर्भगों ॥ ३४१ ॥

यह सत्र समप्त है।

यह पुत्र सुराम है। एक जीवर्की अपेक्षा आहारक मिध्यारिट जीवोंका अपन्य कात अन्त्रहुँहुँ है।। ३३८ ।।

यह राज भी सुगम ही है, क्योंकि, भोषमें इसका भर्च कह दिया गया है।

उक्त जीवींका उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यात्वर्षे मागरमाण असंख्यालक्ष्मणाः अवसर्विची और उत्सर्विची है ॥ ३३९ ॥

जैरि— यक विश्वादि जीव विश्वद वर्ड (बाहारक विश्वदादियों) वन्तव इमा बिश्वको सर्वववादि आग्रमाण सर्ववशातासंत्र्यान बदर्शायी और कर्मादिन तक वनमें परिश्रमण करता हुमा माहारक रहा शुद्धा क्षार्यमें विश्वद वर्ड माहारक वर्डेश क्रा हुमा इस प्रवारते साहरक विश्वादि सेवीवा क्रान्ट काल विक्र दो काला है।

सासादनसम्पारीट गुणस्थानसे लेकर संपीतिकेवली गुणस्थान एक के काहतकोचा

फाल ओप है समान है।। १४०॥

वर्षोति, नाना और यक जीवसारक्षी ज्ञान्य और बच्च वास्त्री करका कात्रन सारादमस्यागहीर बाहि गुणस्यारींचा भोध सासार्त्राहि गुणस्थाबीडे बाह्ये साथ केर्य मेर सर्हे हैं।

अनाहारक श्रीकोका काल कार्ययकापपोतियोके समान है ॥ १४९ ॥

१ एक्ष्मी का के के का के का कि के कि के

t aufeigemettenin meetrieter anderengen 18. ft. 1. 4

g deret einreitz ein ja ft. t. c.

४ बहात्त्वेत्र हिन्दल्लीबाँबार्यन्त्रात्वां कृतः । दुक्रांच हाने क्षत्र स्थेतः क्षत्रः । बच्येन वह

इरो १ मिन्छारिही गागाबीवं पद्रन्य सम्बद्धं होति, एंगंबीवं पद्रेन्सं अरुषेर एगा समजा, उदस्तेण निन्ति समयाः साराजसम्मादित्री असंबदसम्मादित्री वालावित परुच्य बर्च्नेय एगसमुत्री, उदरुरतेण आवित्याए असंरोज्बदिभागी, एगबीरं परुष हैइंन्येन एमसेमबी, उन्हेस्सेन वे समयाः सयोगिकेवंतीणं वावाजीवं परुना बर्लेक किनिय समया, उक्करसेय संसेजसमया, एकजीवं पड्ट्य जदण्युक्करसेय विश्वि सम्म इबेर्न्डि अनाहारमिरछादिद्विआदीयं कम्मइयकायज्ञागिमिरछादिहिआदीदिता विवेतामारा।

## अजोगिकेवर्हा ओघं' ॥ ३४२ ॥

हुरी ? पाणाजीवं पद्म जहरणुक्तस्तेण अंतीमुहुर्च, एमजीवं पद्ग्य जहरणुक्ड-स्तेय पंतरम्स्वस्तरुव्वारयकाती इच्चेरेहि भेराभाषा ।

> ( एरं अज्ञानम्बन्ध समस्य । ) ए रे कालाणिओ।गुडारं सम्मर्गः ।

क्योंकि, धनादारक सिथ्यारवि साना जीयोंकी भपेशा सर्वकाठ होते हैं. एक जीउडी कोक्ष अवन्यने यह समय होते हैं, भीर उक्त्येंसे तीन समय होते हैं। अनाहारक साम प्र कारण्यार भीर अनेपनमायादवि माना जीवीकी भाषा जगराम एक समय, बन्दर्ने अपद र के अर्थवनात्र वे मान, एक श्रीवची अपशा श्राप्यने एक समय और उ'वर्षने हैं करन तक हैं ते हैं, संवेशिकेयजीका काल साना अधिकी भवेशा अध्ययमें तीत समय भी र वर्षे ने संस्थात समय है, तथा यह जीवही भीशा जगन्य भीर अपूर्व काल तीन समर्वे रण प्रकार समानारक मिश्यारिय सान् जीयोंका कार्यणकाययाती विकास है शारि fefrere: ware \$ 1

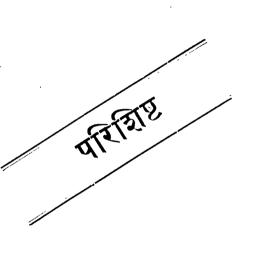
कर इन्द्र क्रयोशिद्रक्तीहा काल और्ष्ट्र ममान है ॥ ३४२ ॥

क्यों के जन्म जीगों की क्योक्स जमन्य और उन्हाए काल अन्तर्में है। यह जीवंडी कोरका करन्य कीर उन्तर काल प्रांच हरून प्रश्नारीत उत्तरारण कालते समान है, हर्न प्रचार के स्वयंत्राच्यांक के हैं किए कही है।

> ( इस प्रकार बाहरमार्गता श्रमात हरें।) इस ब्रहण इप्यानुयोगदार समाप्त हुआ।

mant gung fie geringenn wir eine gereichte fie babt, unb geneun geneut gefreie are, i mente un acces for an anti- colo flores, i expense an a derign abfe th mair canne avercuse : sees a - good gra as marica fe to e

e arrive ad ex co, e.e. e. e. o. o.





# १ खेतपरूवणासुत्ताणि ।

स्त्र	संख्या सूत्र	वृष्ठ	स्त्र संख्या	ग्र	মূষ
?	खेषाणुगमेण दुविहो णि आदेसेण य ।	दिसो, ओपेण २	१० पंचिदियति सेच, लोग	तिक्सअपन्त्रचा स्मि असंस्रेज्ञदिमा	केदढि गे। ७३
	ओधेण मिच्छाइट्टी है सम्बहोगे ।	१०	मणुसिषीर्	र मणुस-मणुनपः रुम्च्छार्हिष्पदृद्धि	লা <b>ৰ</b>
ą	सासणसम्माइहिप्पहुडिः केवित चि केविड रो असंरोजबिभाए।	चे, लोगस्स	असंखेब्द	ही केवडि खेचे, हो देमाये । टी केवडि खेचे, बं	७३
ß	सजोगिकेवली केवांडे र असंवेजजीदेशांगे, असं	रेचे, होगस्स	<b>१३</b> मणुमञ्जवङ	ला कराइ स्पान्त रचा केरहि री मंदिरजदिमांगे ।	
પ	भागेसु, सञ्चलोगे वा । आदेसेण गदियाणुवादे	86		रवेगु भिच्छादिद्विष्य इसम्मादिद्वि वि वे	
	गदीण णेखण्य मिच्छ जाव असंजदसम्माहिह खेचे, लोगस्स असंयेव	ति केवडि	१५ एवं भरण	(स अमेग्रेकदिमांगे वासियप्पहुद्धिः अ बरिमगेवज्ज्ञदिमाणः	rr <b>t</b>
Ę V	एवं सचगु पुढवीगु वेश विश्वित्रागदीए विश्विते	(या। ६५ गुमिच्छा-	षासिपदेवा १६ अणुदिसादि	चि। जाद सम्दद्वीय	03 [ <del>[</del> -
ć	दिही केवडि खेचे, सन् सातणसम्माद्गद्विषद्विड संबदा चि केवडि खे	जाव संजदा- ते, लोगस्स	दिही केवटि उज्जिदिमाने ।		ति- ८१
٠٩	असंक्षेत्रज्ञदिभागे । पंचिदिपतिरिक्स-पंचिदि पज्जल-पंचिदिपतिरिक	यतिरिक्स- , तञ्जीविवीस	सेच, मध्य	वा अध्यक्षा हेर विकास	< ?
	मिच्छाइड्डिप्पहुडि जा संजदा केदडि खेते, से खेरजदिमागे।	द संबद्धा-  े	प्रवचा अप	दिय-घडोरिदेश हरने स्टब्स च बेचिट के सेस्ट्रिक्सिये ।	

9,

सत्र संस्था सत्र सत्र संरक्ष सत्र १९ पंचिदिय-पंचिदियपञ्जत्तरस मिन्छा-२७ सजीमिकेवली ओर्च । इंद्रिप्पहडि जाय अजोगिकेविल चि २८ तमकाइयअपज्जना पंचिदियआः केवडि खेत्रे, लोगस्स असंखेजदि-जनवार्ग भंगो । भारे। ८६/२९ जोगाणवादेण पंचमणजोगिःपंच-२० सजोगिकेवली ओयं। 35 विजोगीम मिन्छादिद्विषहि २१ पंचिदियअपज्जत्ता केनडि खेत्ते, जाव सजीगिकेवली केवडि खेरी, लोगस्स असंखेजजदिभागे । लोगस्य अर्थक्षेत्रज्ञदिभागे । C19 २२ कायाणुबादेण प्रदविकाहया आउ-<sup>१</sup>० कायजोगीसु मिच्छाइड्डी ओवं। काइया वेउकाइया वाउकाइया, ३१ सासणसम्मादिद्विषद्ढि जाव सीण-वादरपुढविकाइया बादरआउकाइया कसायवीदरागछदुमत्या केवडि : बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया खेचे, लोगस्स असंखेनजदिमागे। १०१ बादरवणष्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तः ३२ सजोगिकेवली और्घ। स्तेव अपञ्जचा, सहमपुद्धविकाइया ३३ ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइद्वी सहमञाउकाइया सहमतेउकाइया ओधं । 808 सहमयाउकाइया तस्सेव पज्जना ३४ सासणसम्मादिङ्विष्पहुडि अपज्जता य केवडि खेत्ते, सन्ब-सजोगिकेवली लोगस्स असंखेजिदि-लोगे । मागे । ୯७ १०५ २३ बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया २५ औरालियमिस्सकायज्ञागीस वादरतेउकाइया भादस्वणफदि-च्छादिही ओधं । 204 काइयपचेयसरीरा पज्जचा केवडि ३६ सासणसम्मादिङ्की असंबदसम्मा-खेचे, होगस्स असंखेज्जदिभागे। दिही सजोगिकेवली केवाडि खेचे, २४ बादरवाउकाइयपजचा केवडि खेचे. लोगस्स असंखेजबदिभागे। लेगस्स संखेरजदिभागे । ९९|३७ वेउव्यियकायज्ञोगीसु मिच्छाइद्वि-३५ वणप्फदिकाइयणिगोदजीवा बादरा प्पहाडि जाव असंजदसम्मादिही सद्भा पञ्जनापञ्जना केवांडे खेत्ते, लोगस्त असंखेजदि-खेचे, सव्वलोगे । १०० मागे। 806 २६ तसकाइय-तसकाइयपज्जनएसु मिन ३८ वेउव्यियामस्सकायजोगीसु मिच्छा-च्छाइड्डिप्पहुडि जान अजीगि-दिही सासणसम्मादिही असंजद-केवित वि केविड खेचे, लोगस्स सम्मादिही केवडि खेत्ते, लोगस्म असंखेजनदिमागे। असंखेरजदिमागे । 709

Ų٣ ३९ आहारकायज्ञागीसु आहारमिस्स-प्रष्ठ स्ट्रम संवया (E) कापजागीमु पमचसंबदा केरडि |५१ पाणाणुवाईण मदिञण्णाणि-सुंदन वार्याम् अवस्ति विश्वास्य १०० ५२ सामणसम्मादिही और्छ। 9 ४० कम्महयकायज्ञामीसु मिच्छादही अण्याणीसु मिन्छादिही ओपं। ४१ सासणसम्मादिही असंजदसम्मा-५३ विभेगण्णाणीसु मिन्छादिही सासण-सम्मादिहीं केवडि खेचे, लोगस्त ४२ सजोगिकेवली केवडि खेते, लोगस्स असंसेजजदिमागे । 110 असंसेज्जेषु मागेसु सन्बतीगे वा। १११ आभिणिचोहिय सुर-ओहिणाणीसु 49 ń ४३ वेदाणुबादेण इत्यिवद-पुरिसवेदेस असंजदसम्मादिहिष्णहुहि मिच्छाहाँहुपहुडि जान अभियही र्वीणकसायबीदरागछदुमस्या के केनडि संते, लोगस्त असंसे विंड खेचे, लोगस्स असंवेज्बदिः वजदिमागे । भागे। ४४ गर्बुसयवेदेसु मिच्छादिहिपाहुडि ५५ मणवज्जवणाणीस 222 119 जाव अणिपद्धि ति और्ष । पहुडि जाव सीणकसायवीदराम-पमचसंज्ञद-४५ अवगद्वेदएसु अणियद्विष्वहुडि छदुमत्या लेगस्त अतंत्रेजिदिः 8821 जान अजोगिकेन्सी केनीड रोने, भागे। लोगस्स असंखेरजीईमागे । ५६ केवलणाणीमु सजोगिकेवली ओपं। १२० ४६ सजोगिकेवली ओपं। 219 ५७ अजोगिकेवली औषं । ४७ कसायाणुबादेण कोघकसाह माण-११३/५८ संजमाणुबादेग संजदेस पमच-कताइ-मायकमाइ-लोभक्तमाईगु संजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवली मिच्छादिही ओपं। ओपं । ८ सासणसम्मादिङ्किपकृडि ११३ ५९ सजोगिकेवली ओपं। अणियाद्दि सि के बडि स्वेते, लोगस्म १२४ ६० सामास्य चेदोवहावणसुद्धिमंबदेस असंखेजजदिभागे । ? **?** ? पमत्तमंज्ञरूपहुडि जार अणिपहि णवरि विससो, लोमकमाईसु ११४ चि ओएं। श्रद्भमांपराइयसुद्धिमं बदा उव-६१ परिहासुद्धियंजदेस पमतः अप्र-समा खबा केनडि खेते, लोगस्म मत्तमंत्रदा केनडि खेते, लीगस्त षसंसेज्जिदिभागे । अवंसेज्जिदिभागे । किसाईस चर्डाणमोछं । ११६ ६२ सहममांपगद्यसुद्धिमंजदेसु सहम-मापराइयम्।द्वेमं बद् उक्तः-

्रव । हन्यास्वताने

(8)	~ <b>प</b> ि	रोरीष्ट -	
ध्वतं संख्या : ध	त्र पृष्ठ	स्त्र संख्या	## · 'I
केविड खेचे, लोगस्य मागे। ६३ जहानस्वाद्विहासमुद्धि हाणमोधं। ६४ संजदासंजदा केविड व असंखेजनिदमागे। ६५ असंजदेस मिच्छादिह्य ६६ सासणसम्मादिही स् दिही असंजदसम्मादि ६७ दंसणाजुबादेण च मिच्छादिद्विष्णमुद्धि व	त असंखेजहि- १२३ (संजदेस चदु- १२४ वेचे, लेगगस १२४ । जोपं । १२५ म्मामिच्छा- हो जोपं । १२५ मसुदंसणीस	७५ सुक्कलेस्सिएर जाव खीणकस केवडि खेने, ज्जादेमागे । ७६ सजोगिकेवली ७७ मविषाणुवादेण मिन्छादिडिप्पर् मेक्टी ओपं । ९८ अमवसिद्धिप स केवडि खेने, सा	पवीद्रशास्त्र असंवे- होगस्त असंवे- श्रोषं । ११ ंमवितिद्वेष्ट (डि जाव अजोगि- मिच्छादिही व्यतेष्ट् । १३२ सम्मादिष्ट-सर्य-
क्ष्मायवीदरागछदुमस्य रोषे, लोगस्य असंदेश ६८ अपनन्तुरंसगीतः ओपं। ६९ मानगमम्मादिद्विष्यद्वाः रोगकमायवीदरागछदु	म्बदिमागे । १२६ मेच्छादिद्वी १२०	सम्मादिहीस अ प्पहुदि जाव अजी १ सजीगिकेवली औ १ वेदगसम्मादिहीस दिहिप्पहुदि जाव केवृदि रोसे, लोग	गिकेवली जोपं। १११ वं। ११४ जसंजदमम्मा- जपमचसंबद्धा
आप ।  ७० बोर्टिनमी बोरिनानि  १९ केन्टर्नमी केन्द्रमानि  १९ केन्टर्नमी केन्द्रमानि  १९ केन्स्यान्तर्भ हिन्द्रहैरि  हेन्स्यान्तर्भ हिन्द्रहैरि  १६ स्वायनमाहिद्री मध्य  १६ अवंबद्यनमाहिद्री  १३ देवेरिन पन्तरमहिन्द्रम्	१२० ८२ मंगो । १२० मंगो । १२० मय-बीत- मिच्छा- ८२ ग्रांमिच्छा- ८५ श्रोप । १२८ ८६ मुम्बद्धा-	मागे । र उपममगम्मादिद्वीर् दिहिष्पकृष्टि जाव वीदरागळकुमत्था लेगारत अमेलेज्जा सागणमम्मादिद्वी २ मम्माभिष्टादिद्वी और्थ । मण्डिपादिक्वी और्थ ।	११४ उथमंत्रकायः उथमंत्रकायः वेश्विद्धः रोपे, रेषामे । ११४ मोर्पे । ११५ रोपे । ११५
केरडि सेते, होताम्य अयं स्रोते ।	नम्बाद-	रोगस्य अपनेकाद्वि अगन्ति देशीः सेने,	वार्षे । १३६

16	11-11-	4-112	, viii - 4		(7
स्र संग्या गृष	Æ	ध्य	संस्था	स्प	. A
८८ आहाराणुवादेण आहाराणम् मिन्छा- दिद्वी जोपं । ८९ सासणसम्मारिष्टिप्पहुद्धि आव सजोगिहेवली फेनडि खेले, छोगस्स असंस्वेज्बदिशामा । ९० जनाहाराष्ट्रमु सिन्छादिद्वी ओपं ।	130	9.5	दिष्टी अजीगि स्रोगस्य असं	किरली केरडि खेरे खेडजदिमागे ।	, १३८
फोस <sup>र</sup>	गपरू	ग्ग	सुत्ताणि		٠,
•	_	•	-		
सूत्र संदेश सूत्र .	ą.	सुत्र	संबदा	स्य	á8
१ पोमणाणुगमेग दुविहा चिर्ता, अपिण आदेतेग य ।  २ ओपण विच्छादिहीहि केवडियं खेचं पोलंद, सन्यतीयो।  ३ सामणवाममादिहीहि केवडियं सेचं पोलंद, सन्यतीयो।  ३ सामणवाममादिहीहि केवडियं सेचं पोलंद, सामणे।  अह चारह चोर्तमागा वा देवणा।  ५ सम्मामिन्छारिह—अनंवरसम्मा-  इहिहि केवडियं सेचं पोलंद, सामणे।  ६ अह चोर्तमागा वा देवणा।  ७ संबदालंबदेहि केवडियं सेचं पोलंद, सामणे।  ६ अह चोर्तमागा वा देवणा।  ७ संबदालंबदेहि केवडियं सेचं पोलंद, सामणे।  ८ उच्चेर्तमागा वा देवणा।  ८ उच्चेरतमागा वा देवणा।  ८ उच्चेरतमागा वा देवणा।  ८ उच्चेरतमागा वा देवणा।	१४१ १४५ १४८ १४९ १६६ १६७	१० ११ १२ १३	होत्तस्य असंदे स्वोभिक्षेत्रत्तीं पोसिद्गं, होत्तरः असंदेशा वर्षाः अदेवेण वर्षाः क्षेत्रविद्याः असंदेव्यादिक्षः असंदेव्यादिक्षः असंदेव्यादिक्षः स्वाप्तानम्बद्धाः सामगो। । चंत्रस्यादिक्षाः समगीर्थन्तिः समगीर्थन्तिः समगीर्थन्तिः समगीर्थन्तिः	देडबिंदिभागी । दि केराडियं दोगें दि केराडियं दोगें दि केराडियं दोगें भागा,सञ्ज्ञारेणों वा देवाचुजारेल भिरयद्व देवाचुजारेल भिरयद्व देवाचुजारेल भिरयद्व ते पोसिदं, लोगास्त ते पोसिदं, लोगास्त ते पोसिदं, लोगास्त ते पोसिदं, लोगास्त देवाच्या । द्विद्धि केराडियं दोगें स्वा या देवाला । देविस्त । दिक्षि असंस्वान्या- दर्शि स्वी प्रेसं पेसिदं	१७० १७१ १७३ १७७ १७७

स्व संस्था **१**६ परमाए प्रस्कृति बोख्सु मिन्छा-सम प्रष्ठ स्व संस्था रहिष्दुहि वात्र असंबद्धमान रिई।हि केनडियं सेवं पोसिदं, स्य फोमि<del>ङ</del>् लोगस्य असंसेज्बदिः त्रामसः असंसम्बद्धिमागी । 77 मागो । १७ विदिषादि जान छहीए प्रदर्शए २७ असंबर्सम्मादिहि-संबर्धवेदि १८२ ₹+£ षेग्रस्य विच्छारिद्धि सामग्रमस्माः केनडियं खेचं पोसिदं, लोगस रिहारि केनडियं मेंने फीमिर्दे, असंसेज्जिदिमागी । लेगस्य असंगेरबदिमागी। २८ छ चोहनमामा वा देयमा। १८ इस ने तिलेश चनारि पंच मोहम-२९ वंशिदियतिरिक्ग्वःवंविदियतिरि-माना वा देखमा। **ब**मनज्ञत्त-जो।विनीतुः मिच्छा-**१९** मध्यानिष्णादिहि-प्रमंत्रहमस्मा-दिहीदि केवडियं रहेनं कोमिरं, दिहाँ है स्टिन मेन वीमिर्द, 24 लोगस्य अवंशेजनदिमागो। लेकम् अस्तिव्यक्तिमानी । २० महानोगी वा । २० सम्बद्ध इत्तर केरदरम् मिन्छा-277 <sup>११</sup> मेमाणं निरिष्मागदीणं भंगो। हिर्देश कर देने मेचे बोगिई, 211 ३२ वंशिदियनिविवसमामामामाहिकाः र्गेजात अवसम्बद्धियामा । 211 न्द्रे छ चीरमसामा वा देवमा। डियं मेमं फोमिर्द, लोगस्म अवनेकादिमागा । ६० वाचकसम्बद्धाः हे सम्मामिन्छाः ३३ मञ्ज्ञोमी वा । हिट्टिन्सम्बर्गमानिद्वीर हेर-211 १४ मणुनगरीलः मणुन-मणुनरञ्जनः दिवं भेनं चेत्रमं, नेतमन 214 मयानियोगु मिन्द्रादिशीह केर अस्ति। श्री सम्बा धः विश्वभूमाः वृद्धिकाम् विन्छाः डिय होनं वीनिर्दे, मीग्रहम अर्थः से स्त्रदिमागी । हिहें दे इस्ट्रेंग सम्बद्ध <sup>इत् मह</sup>रहोगी या । FE. 3!1 वेश कृष्टराज्यक वृत्ति है । १९४७ मृत् ६६ मामममुद्रमादिक्वीद केर्राह्य अन वात्वर, जामस्य वसमावार र प्रदेश अवस्थित है ant, ने सम्बद्धानम् राज्यम् १० वन च १वनामा वा १पना . १०३ इट स्टब्स्वर्गिन्द्रविद्वाद्वीद्वर्गद्वी tamanati terrina महत्त्वराहा इंग्डन तम र सिंद, रामक्य सम्बद्धाः स्थान

,

(८)	- વાં	रेशिष्ट ′		
स्य संख्या ,स्य	पृष्ठ	स्त्र संख्य	ा स्	x . •
केविडियं खेचं फोसिदं, लोगस्स असंखेडनदिमागो । ५९ संख्यलोगो या ।	२४३ . <b>२</b> ४३	खेर्च मागो ६८ सच्यर	पोसिदं, होगस्स ।	
६० पंचिदिय-पंचिदियपज्जनएमु मि- च्छादिईाहि केन्नडियं सेचं पोसिदं, लोगस्स असंसेज्जनिदमागो । ६१ अङ्क चोदसमागा देखणा, सब्द-	२४४	से तं भागा	•	ा संवेजदि- दूपर
लागा वा।  ६२ सासणमामादिष्टिपमृहि जान अज्ञोगिकेत्रलि चि और्ष।  ६२ सज्ञोगिकेत्रली और्ष।  ६२ सज्ञोगिकेत्रली और्ष।  ६४ पंचिदियत्रपज्ञचएहि केत्रहियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंखे-		सहुम-५ हियं हे ७२ तसकाइ मिच्छा केविल	दिकाइयणिगोद्द पञ्चच-अपञ्चच गेर्च पोसिदं, सन् प्य—तसकाइयप् देट्टिप्पहुद्धि जाव चि ओधं।	ाएहि केव- वस्तोगो । २५३ गज्जवएस अजोगि- २५४
	१४६ १४६	9३ तसकाहर अपज्जर	गअपञ्जनाणं । गणं मंगो ।	पैचिदिय- २५४
६६ कायाणुबादेण पुरुविकाइय – आउकाइय – तेउकाइय-वाउकाइय- बादरपुद्धविकाइय-वादरआउकाइय- बादरपुद्धविकाइय-वादरआउकाइय – बादरवणफादिकाइयपचेषम्यार- तस्वेव अपज्ञच-ग्रहुमपुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविकाइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविक्याइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुमतुद्धविक्याइय- ग्रहुमआउकाइय-ग्रहुम्	9	१४ जोगाणुक बचित्रोर्ग हियं रहे असंखेडन असंखेडन श्रे अङ्ग चोह होगो वा संसद्धांत्रन संस्वासंज	ादेण पंचमणजी वेष्ठ मिच्छादिई। वेषं पोिछदं, दिसागो । समागा देखणा, । नादिहिष्पदृढि दा ओषं।	गि-पंच- हि केव- होगस्स २५५ सन्ब- २५५ जाव २५६
पेरिदं, सब्बलेगो । ६७ बादरपुटविकास्य-बादरश्राडकास्य- बादरतेडकास्य-बादरशास्का- स्पत्रवेषसरीरपन्त्रवण्हि केवटियं		केवलीहि वे लोगस्स अ	प्पहुडि जावःस हरडियं रोत्तं पं संसेज्जदिमागो । । मिच्छादिष्टी अं	ोसिदं, । २५७

ष्रीसगपस्त्रगासुत्ताणि पृष्ठ सूत्र संख्या

,,

२५९

दर **७९** सासणसम्मादिहित्पद्वृहि स्रीणकसायबीदरागछदुमत्या औषं। २५८ ८० समोगिकेवली मार्प। < श्रोतालियकायज्ञामीसु मिच्छारही ८२ सासणसम्मादिहीहि केवडियं रोचं पासिदं, लागस्स असंरोजनाद-भागो। ८३ सच चोदसमागा वा देखणा। २६० ८४ सम्मामिन्छादिहीहि फेनडियं सेचं पोसिदं, लोगस्स असंवेज्जदि-,, मागो । ८५ असंबदसम्मादिहीहि २६१ संजदेहि केवडियं रोचं पोसिदं, संजदा-लोगस्य असंग्रेजनदिमागी। २६३

राष संचया

८६ छ चोइसमामा वा देखगा। ८७ पमचसंबद्ध्यहुद्धि जाव सजीगि-केवलीहि केवडियं रोवं पीसिई, लोगसा असंखेजनदिमागी।

८८ ओरालियमिस्त्रकायजोगीतु मिच्छा-दिद्री ओपं। ८९ सासणसम्मार्हि-असंबदसम्मार्हि-२६३

सजोगिकेवलीहि केवडियं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेळिदमागे।। २६४ ९० वेउव्निपकापजोगीम् दिझीह पे.बहियं खेतं

पोसिदं, लोगस्य असंखेरजदिः भागो।

? अह तेरह चोहमभागा वा देवणा। ., २६७

सामणसम्मारिही ओधं।

QТ

९३ सम्माभिच्छादिही असंजदसम्मा-दिद्री ओपं। ९४ वेउच्चियमिस्सकायजीमीमु मिन्छा-₹5७ दिष्टि-सासणसम्मादिष्टि-असंजद-सम्मादिहीहि फेबडियं होचं पोसिदं, लोगस्स असंखेळादि-

w

९५ आहारकायजोगि-आहारमिस्स-कायजोगीमु पमत्तसंजदेहि केव-हियं खेचं पोसिदं, लोगस्स असंखेडजदिमागी । ९६ कम्मइयकायज्ञामीसु मिन्छादिही

९७ सामणसम्मादिहीहि खेचं फोसिदं, लोगस्स असंखे-केवहियं ज्जदिमागो । ९८ एकशारह चोहसभागा देखणा। ₹७, ९९ असंजदसम्मादिहीहि खेव फोसिदं, लोगस्स असंसे॰ ज्जिदिभागो । °° छ चोइसमागा देखणा ।

१०१ सजोगिकेवलीहि केवहियं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेजना भागा, सञ्जलोगी या । १०२ वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिस-₹७१ वेदएसु मिच्छादिहीहि केबहियं येतं फोसिदं, लोगस्स असंखे ज्जिदिमागो ।

१०३ अह चोहसमामा देखणा, सम्बन लोगो। वा । 30

ध्य संख्या प्रष्ठ सूत्र संख्या ध्य १३१ अजागिकेवली ओपं। २८५,१४४ जोधिइंसणी जोधिणाणिमंगी । २८९ १३२ संजमाणुबादेण संबदेगु पमच-१४५ केवलदंसणी केवलणाणिभंगी। २९० संबद्पपुढि जाव अजोगिकेवित १४६ लेस्साणुबादेण किण्डलेस्सिय-वि ओंषं । णीललेसिय काउलेसियमिन्छा-,, १३३ सजोगिकेवली औषं। ,, दिही ओपं। १३४ सामाइयच्छेदोवहावणसाद्विसंब-\*\* १४७ सासणसम्मादिई।हि केवडियं देश पमत्तमंबदप्पहाँड ভাৰ रोतं पोसिदं, लोगस्स असंखे-अणियदि चि ओधं। २८६ ज्जदिमागी। १३५ परिहारगुद्धिमंजदेशु पमच-अप्प-१४८ पंच चत्तारि वे चोइसंभागा मत्तमंत्रदेहि के बहियं रहे नं पोसिदं. वादेखगा! लोगस्य असंदेश्जदिभागो । 11 3 " १४९ सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मा-१३६ सुदुममांपराइयसुद्धिमं बहेस सह-दिई।हि केवडियं खेचं फोसिदं. मसांपराइय-उवसमा रावा ओषं। २८७ लागस्स असंरोजनिद्यागा । २९३ १२७ बहानगादविहारसदिसंबदेस च-१५० चेउलेस्सिएस मिच्छादिद्वि- : :: दहाणी आधं। ,, ११८ सँजदासंबदा ओएं। सासणसम्मादिङ्घीहि केवडियं 17 १३९ असंबदेशु भिच्छाइद्विषदृढि जाव खेचं पोसिदं, होगस्स असंखे-असंजदसम्मादिष्टि चि ओपं। २८८ ज्जदिभागी। १४० दंसणाणुवादेण चक्युदंसणीसु १५१ अह णव चोइसमागा वा देख्णा। २९५ मिच्छादिष्टीहि केवडियं खेचं १५२ सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मा-पोसिदं, लोगस्य असंसेजंदि-दिहाहि केवडियं खेलं फोसिदं, भागो । लोगस्स असंधेअदिमागो। ,, १४१ अह चे इसभागा देखणा सब्द-१५३ अह चोइसभागी वा देखणा। सोगे। वा । १५४ संबदासंबदेहि केवडियं खेसे ,, ,, १४२ सासगसम्मादिद्विष्पदुडिहि जाव पोसिदं, लोगस्स असंरोज्जदि-र्रीणकसापनीदरागछद्रमत्था वि भागो । ₹94 ओपं । २८९ १५५ दिवह चोदसभागा वा देखणा। १४३ अचनखुर्नगणीस मिच्छादिद्धि-१५६ पमत्त-अपमत्तसंजदा ओयं। २९७ पहुडि जाव खीगकसाय-१५७ पम्मलेस्सिएसु मिन्छाइद्विप्पहाडि वीदरागछदुमत्था चि ओपं। जार असंजदसम्मादिहीहि केन-

((१२)) परिशिष्ट

हिपं खेर्च पोसिंद, लोगस्स असंखेज्जदिमागो । १९०१ संजदार्यजदेहि केन्नडिपं खेर्च पोसिंद, लोगस्स असंखेज्जदिमागा वा देयुणा । १९०१ संजदार्यजदेहि केन्नडिपं खेर्च पोसिंद, लोगस्स असंखेज्जदिमागा वा देयुणा । १९०२ संजदार्यजदुक्त जाव उत्यसंत सम्मादिष्टी जोर्य । १९०२ संग्रियामानि हिप्ति जोर्य । १९०२ संग्रियामानि हिप्ति केन्नडिपं खेर्च पोसिंद, सम्मामिन्द्रादिक्त जाव अन्नोरिक्ति के जोर्य । १००२ संग्रियामानि हिप्ति केन्नडिपं खेर्च पोसिंद, सम्मादिष्टी जोर्य । १००२ संग्रियामानि हिप्ति केन्नडिपं खेर्च पोसिंद, सम्मादिष्टी जोर्य । १००२ संग्रियामानि हिप्ति जार्य क्रियामानि हिप्ति जोर्य । १००२ संग्रियामानि हिप्ति जार्य संग्रिय संग्रिय पोसिंद । १००२ संग्रिय संग्रिय पोसिंद संग्रिय पोसिंद । १००२ संग्रिय संग्रिय पोसिंद । १००२ संग्र	सूत्र संख्या	- स्प		पृष्ठ	स्य	संग्या		ग्य	. 1
१५८ अह चोहसमागा वा देखणा । १५९ संजदासंजदेहि केवडियं खेंचं पोतिदं, लोगस्स असंग्रेज्बदि- मागो । १५० पंच चोहसमागा वा देखणा । १६९ पमच-अपमचसंजदा आंधं । १५० संजदासंजदरण्डुढे जाव उवसंत- कतायवीदरागण्डुमच्येहि केव- हिष् सुक्केलेसिएसु मिच्छादिहि- प्यहुढि जाव संजदासंजदेहि केव- हिष संच चोसिदं, लोगस्स असंग्रेज्बदिमागो । १६३ छ चोहतमागा वा देखणा । १६३ छ चोहतमागा वा देखणा । १६४ पमचसंजदप्रहुढि जाव सजोगि- केविह चि ओपं । १६५ मिच्छादिहिपहुढि जाव अजोगि- केविह चि ओपं । १६५ मिच्छादिहिपहुढि जाव अजोगि- केविह चि ओपं । १०० सामगासमादिही ओपं । १०० सामगासमादिही ओपं । १०० सामगासमापिद्धा असंग्रेज्वदिमागो । १०० सहिणपण्डादेण सम्गादिही आंचं । १०० सहिणपण्डादेण सम्गादिही आंचं । १०० सहिणपण्डादेण सम्गादिही अवं पोर्विदं, लोगस्म असंग्रेजविमागो । १०० सह्यासमापा देखणा, सम्ब लोगो वा । १०० सह्यासमापिद्धा असंग्रेज लोगो वा । १०० सह्यासमापा देखणा, सम्ब लोगो वा । १०० सह्यासमापा देखणा, सम्ब लोगो वा । १०० सह्यासमापा देखणा, सम्व लोगो वा । १०० सह्यासमापा देखणा, सम्ब लोगो वा । १०० सह्यासमम्बाप्तिह्या असंव लोगा वा । १०० असंव लोगायमम्बाप्तिह्या असंव लोगायमम्बाप्तिही असंव लागायमाव	ं डिपं असंद	ं खेर्च पोसिदं, बेज्जदिमागो ।	लोगस्त						
पासिदं, होगस्स असंसेज्बदि- भागो।  १६० पंच चोइसमागा वा देखणा। १६१ पमच-अपमचसंजदा ओर्ष। १९९ १६२ सुक्केटिसएसु मिन्जादिहु- पहुटि जाव संवरांतेनदेहि केव- हिषं सेचं पोसिदं, होगस्स असंसेज्बिद्दिमागो। १६६ सुक्केटिसएसु मिन्जादिहु- पहुटि जाव संवरांतेनदेहि केव- हिषं सेचं पोसिदं, होगस्स असंसेज्बिद्दिमागो। १६६ सुक्केटिसागो।। १६६ प्रस्वसंजदपहुटि जाव स्रजोगि- केविट चि ओर्ष। १०० साजपाणुवादेण मणीसु भिच्छा- दिहीहि केविट सेसं सेचं पोसिदं, होगस्स असंसेज्बिद्दिमागो। ॥ १६५ मिन्जादिहुपहुटि जाव अवोगि- केविट चि ओर्ष। १०० साजपाणुवादेण सण्णीसु भिच्छा- दिहीहि केविट सेसं सेचं पोसिदं, होगस्स असंसेज्बिद्दमागा। ॥ १५० सावपाममापिट्ट पहुटि जाव प्रसालपुवादेण सम्मादिहुपहुटि जाव अवोगिकविट चि ओर्ष। १०० सहणपीहि केविट सेसं चेपिदं, होगस्त असंसेज्बिद सेसं चेपिदं, होगस्त असंसेज्बिद सेसं चेपिदं, होगस्त असंसेज्विट सेसं चेपिदं, होगस्त असंसेज्विट सेसं चेपिदं, होगस्त असंसेज्विट सेसं चेपिदं, सन्वरोगो। ॥ १८० सहलास्वर्व सेसं चेपिदं, सन्वरोगो। ॥ १८० सहलास्वर्व सेसं चेपिदं, सन्वरोगो। ॥ १८० सहलास्वर्व सोचं पोसिदं, सेचं पोसिदं, होपस्वर्व सोचं पोसिदं, सेवं पोसिदं, होपस्वर्व सोचं पोसिदं, होपस्वर्व सोचं पोसिदं, सार्वाय समापिट्ट स्वर्व वाच सोचं। १८० सहलास्वर्व सोचं पोसिदं, होपसंवर्व पोसिदं सेवं पोसिदं, होपसंवर्व पोस्वर्व सेवं पोसिदं, होपसंवर्व पोस्वर्व सेवं पोसिदं, सेवं पोसिदं, होपसंवर्व सोचं पोसिदं, होपसंवर्व सोचं पोसिदं, होपसंवर्व सोचं पोसिदं, होपसंवर्व सोचं पोसिदं	१५८ अह	चोइसमागा वा वे	युगा ।	17	1	चि अ	ोयं ।		301
सामी । २९८ १६ व चोइसमागा वा देषणा । १९९ १ पमच-अपमचसंजदा जोर्थ । २९९ १६ सुक्कलेस्सिएस मिच्छादिट्टि — प्यहुढि जाव संजदास्जदेहि केव- हियं सेचं पोसिदं, लोगस्य असंखेज्जदिमागो । १८६ १ सुक्कलेस्सिएस मिच्छादिट्टि — प्यहुढि जाव संजदास्जदेहि केव- हियं सेचं पोसिदं, लोगस्य असंखेजजदिमागो । १८६ १ सम्पानं व देणा । १८६ १ सम्पानं व देणा । १८६ १ सम्पानं व देणा । १८६ १ सिच्छादिट्टि प्यहुढि जाव अजोगि- केवि वि जोर्थ । १८८ सामण्याम्पादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगि- केवि वि जोर्थ । १८८ सामण्याम्पादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगि- व सम्पादिट्टी सम्पादिट्टी सम्पादिट्टी आसंजदसम्पादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगिकेविल वि जोर्थ । १८८ सामण्याम्पादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगिकेविल वि जोर्थ । १८८ सामण्याम्पादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगिकेविल वि जोर्थ । १८८ सामण्यामादिट्ट प्यहुढि जाव अजोगिकेविल वि जोर्थ । १८८ सामण्यामादिट्ट पहुढि जाव संजदादमागीदिट पहुढि जाव संजदादमागिट्ट पहुढि जाव संजदादमागिट पहुढि जाव संजदादमागिट्ट पहुढि जाव संजदादमागिट पहुढि जाव संजदादमागिट संवर्ष पोविदं, लेविल संवर्ष येचे पोविदं, लेविल संवर्ष संवर्ष पोविदं, लेविल संवर्ष येचे पोविदं, लेविल संवर्ष पोविदं, लेविल संवर्ष येचे पोविदं, लेविल संवर्ष येचे पोविदं, लेविल संवर्य संवर्प पोविल संवर्प येचे पोविदं, लेविल संवर्य संव	१५९ संबद	त्रमंजदेहि केवडि	यं सेतं	•	१७२	उवसः	<b>सम्मा</b> दिष्ट	ीमु अ	मंत्रद-
१६० पंच चोइसमागा वा देखणा। ,, १६१ पमच-अपमचसंजदा जोर्थ। २९० १६२ सुक्केटेसिएसु मिच्छादिहि— प्णडुटि जाव संजदासंजदेदि केव- हियं सेचं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो। ,, १६३ छ चोइसमागा वा देखणा। ,, १६३ छ चोइसमागा वा देखणा। ,, १६४ पमचसंजदप्षाहे जाव सजीगि- केविल लोगं। ,, १६५ मिच्छादिहिप्पहुटि जाव अजोगि- केविल ले लोगं। ,, १६५ ममचाप्रावदिण ममसादिहिप सम्मादिहिप केविल ले लोगं। ,, १६५ सममामादिहिप्पहुटि जाव अजोगि- केविल ले लोगं। ,, १६५ सममामादिहिप्पहुटि जाव अजोगिकेविल केविल ले लोगं। ,, १६५ सदस्यस्मादिहिप्पहुटि जाव अजोगिकेविल केविल ले लोगं। ,, १६५ सदस्यस्मादिहिप असंजद्भप्पादिहिप्पहुटि जाव अजोगिकेविल केविल ले लोगं। ,, १६५ सदस्यस्मादिहिप असंजद्भप्पादिहिप्पहुटि जाव अजोगिकेविल केविल ले लोगं। ,, १६५ सदस्यस्मादिहिप असंजद्भप्पादिहिप्पहुटि जाव स्वादिष्ट केविल ले			सिन्बदि-		)	सम्मा	दिही ओपं	ł	11
१६१ पमच-अपमचसंजदा आर्थ । १९९ हिथं सेवं पोसिंदं, लोगस्य असंखेज्जदिमागो । १०७ सामणाम्यारिट्टी आंप । १०७ सामणाम्यारिट्टी आंप । १०० सिन्यारिट्टी स्वार्थ सेवं पोसिंदं, लोगस्य असंखेज्जदिमागो । १०० अह चोदसमागा देवणा, सन्य लोगो वा । १०० अह चोदसमागा वे । १०० अह चोदस		• •		२९८	१७३	संबदा	मंजद्ष्यहुति	हे जाब उ	वसंत-
१६२ सुक्केलिसएस मिन्डादिहि-	१६० पंच	चोइसभागा वा व	म्या ।	,,	1				
पहुटि जाव संजवासंजविद्वि केव- विषे सेचं पोसिदं, लोगस्स असंखेजजिद्देमागो ।  १६३ छ चोद्रवमागा वा देखणा ।  १६४ पस्तवं पोसिदं, लोगस्स असंखेजजिद्देमागो वा देखणा ।  १६४ पस्तवं प्रावृद्धि जाव सजोगि- केवि चि जोपं ।  १६५ प्रतिवाखवादेण मवसिदिएसु  मिन्छाविद्विपदुद्धि जाव अजोगि- केवि चि जोपं ।  १०० सह्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाया				२९९	]	हियं	सेचं पोर्	भेदं, छी	
पहिंद जाव संजदासंजदिद केव- विषे सेचें पोसिदं, होगसस असंखेजजिदभागो । " १६३ छ चोदसमागा वा देखणा । " १६४ पमतसंजदप्यहुद्धि जाव सजोगि- केविह ति जोपं । २०० १६६६ अमर्यामा देखणा । महासिद्धिस्य मिच्छादिद्विप्यहुद्धि जाव अजोगि- केविह ति जोपं । २०० १६६६ अमर्यामादिद्विप्यहुद्धि जाव अजोगि- केविह ति जोपं । २०० १६६६ अमर्यामादिद्विप्यहुद्धि जाव अजोगि- केविह ति जोपं । २०० १८० सासणसम्मादिद्विप्यहुद्धि जाव संजागि- केविह केविह्य संम्यादिद्वी अप्याप्य सम्यादिद्वी अप्याप्य सम्याप्य सम्यादिद्वी अप्याप्य सम्यादिद्वी अप्याप्य सम्याप्य सम्यादिद्वी अप्याप्य सम्याप्य सम्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्य सम्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्याप्य सम्य सम्य सम्य सम्याप्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम्य सम	१६२ सुक्त	लेसिएस मिर	ग्रदिद्रि-			असंखे	<b>ज्जदिमागो</b>	1	•
असंखेरजदिभागो । "१६३ छ चोइतमागा वा देखणा। "१६४ पमचसंजदप्यहुढि जाव सजोगि- केवि चि जोपं। "१०० सिग्गियायुवादेण सम्मीसि हिप्सु मिन्छादिहिपसुढि जाव अजोगि- केवि चे जोपं। १०० सह चोइतमागा देखणा, सन्वर्ण सम्मादिहिपसुढि जाव अजोगि- केवि चे जोपं। १०० सह चोइतमागा देखणा, सन्वर्ण सोसिर्द, सन्वरंगो। "१०० सह चोइतमागा देखणा, सन्वर्ण सोसिर्द, सन्वरंगो। "१०० सामणसम्मादिहिप्सुढि जाव सोणकसायवीदराग्छदुमत्या अर्थे। १०० सम्मादिहीसु असंजद- सम्मादिही जोपं। १०० सहरायुवादेण आहारत्यमु मि- च्छादिही जोपं। १०० सहरायुवादेण आहारत्यमु मि- च्छादिही जोपं। १०० सहरायुवादेण आहारत्यमु मि- च्छादिही जोपं। १०० सामणसम्मादिहिपसुढि जाव संजदार्यमु स्वर्ण सम्मादिहीसु असंजद- सम्मादिही जोपं। १०० सहरायुवादेण आहारत्यमु मि- च्छादिही जोपं। १०० सासणसम्मादिहिपसुढि जाव संजदार्यमु से स्वर्ण स्वर्ण प्रोतिदं, सन्वरंगों। १०० सामणसम्मादिहिपसुढि जाव संजदार्यमु से स्वर्ण स्वर्ण प्रोतिदं, सन्वरंगों। १०० सामणसम्मादिहिपसुढि जाव संजप्ति से क्विटिपं खेपं पोविदं, से स्वर्ण से से पोविदं, से से पोव					१७४	सासण	सम्मादिद्वी	ओषं ।	₹ 0 ₹
१६३ छ चोइतमागा वा देखणा। १६४ पसर्वसंबरप्पहृढि जाव संजोगि- केवि वि जोपं। १६५ सवियाणुवादेण मवसिदिएसु मिल्छादिष्टिपदृढि जाव अजोगि- केवि वि जोपं। १०० अह चोइतमागा देखणा, सन्वर लोगा वा। १०० अह चोइतमागा विद्यासामा देखणा, सन्वर लोगा वा। १०० अह चोइतमागा विद्यासामगा विद्यासामगा देखणा, सन्वर लोगा वा। १०० अह चोइतमागा विद्यासामगा विद्यासामगा देखणा, सन्वर लोगा वा। १०० अह चोइतमामगा विद्यासामगा व	्डिय <u>ं</u>	खेचं पोसिदं,	लोगस्स		१७५	सम्मार्ग	मेच्छादिङ्की	ओर्घ ।	11
१६४ पमतसंजदप्यहुढि जाव सजोगि- केविं वि जोपं।  १६५ मिव्याणुवादेण मवसिदिएस  मिन्छाविद्विप्यहुढि जाव अजोगि- केविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव प्रीसिदं, सञ्चलोगो।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव अजोगिकेविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव अजोगिकेविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव आपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० आहण्याचिक्र वाद्वेप पोषिदं, सच्यलोगो।  १०० अह चोहसमाग देखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वेख	असंस	वज्जदिभागो ।		,,	१७६	मिच्छ।	दिद्वी ओषं	1	22
१६४ पमतसंजदप्यहुढि जाव सजोगि- केविं वि जोपं।  १६५ मिव्याणुवादेण मवसिदिएस  मिन्छाविद्विप्यहुढि जाव अजोगि- केविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव प्रीसिदं, सञ्चलोगो।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव अजोगिकेविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव अजोगिकेविं वि जोपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लोगा वा।  १०० सामणसमायिद्विप्यहुढि जाव आपं।  १०० अह चोहसमागा देखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० आहण्याचिक्र वाद्वेप पोषिदं, सच्यलोगो।  १०० अह चोहसमाग देखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वेखणा, सच्यः लीगा वा।  १०० अह चोहसमाग वेखणा, सच्यः लीगा वेख	१६३ छ चं	ोइसमागा वा देस	<b>्वा</b> ।	,,	१७७	संग्गिय	गणुत्रादेण स	नण्गीसु हि	विद्या-
केवि च जों । ३००   १६५ सिवपाणुवादेण सवसिदिएसु      सिच्छादिद्विप्पदुि जाव अजोगि- केवि च जों । ३०२   १६६ अमवसिदिएदि केविडयं खेवं गोसिदं, सच्चलोगो । १८९ आह्र चोहसमागा देवणा, सच्च छोगो वा । ॥ १६६ अमवसिदिएदि केविडयं खेवं गोसिदं, सच्चलोगो । १८९ आह्मापुवादेण सम्मादिद्विपदुि जाव अजोगिकेविछ चि जोपं । ३०२   १६८ खरयसम्मादिद्विपदुि आसंजद- सम्मादिद्वी आंपं । १८९ आह्मापुवादेण आह्मापुवादेण साम्मादिद्वी आपं । १८९ आह्मापुवादेण आह्मापुवादेण सिच्छादिद्वी जोपं । १८९ सामणास्माप्रीद्विपदुि जाव स्वाप्यादेण हो । ॥ १६९ संदर्भ अन्यप्यादेण असंजद- सम्मादिद्वी अव अजोगि- केवलीहि केविडयं खेचं गोसिदं, होगस्स असंखेजविद्यागो । १०२			_			दिहीहि	केवडियं	खेवं पो	सिर्दं,
मिन्छादिट्टिप्पहुढि बाब अज्ञोगि- केवित चि जोषं। २०१ १६६ जमवासिदिएई केविडियं खेतं पोसिदं, मञ्जलोगो। , ,, १६७ सम्मवाणुवादेण सम्मादिट्टीसु असंजदसम्मादिट्टिप्पहुढि बाव अज्ञोगिकेवित चि जोषं। २०२ १६८ सदससम्मादिट्टीसु असंजद- सम्मादिट्टी जोषं। १०५ १६८ सदससम्मादिट्टीसु असंजद- सम्मादिट्टी जोषं। १०५ १६६ संजदासंजदरपहुढि जाव ज्ञोगि- केवितीहि केविडियं खेतं पोनिदं, होगस्स असंखेज्जदिमागो। २०३				₹००		लोगस	। असंखेन्त्र	दिभागा	! "
केविति वि आयं। ३०१ १६६ अमवासिद्विएदि केविदियं खेतं पोसिदं, सञ्चलोगो। , ,, १६७ सम्मचाणुवादेण सम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्विण्युद्धि वाव अज्ञीगिकेविति वि आपं। ३०२ १६८ खर्यसम्मादिद्वीसु असंजद- सम्मादिद्वी आपं। ३०२ १६८ खर्यसम्मादिद्वीसु असंजद- सम्मदिद्वी आपं। ३०२ १६९ खंद्रस्वा अपं। ३०२ १६९ खंद्रस्व अपं। ३०२ १६९ खंद्रस्व अपं। ३०२ १६९ खंद्रस्व अपं। ३०२ १६९ संव अपं। ३०३ १६९ संव अपं। ३०३ १८२ सासणसम्मादिद्विण्युद्धि वाव संजदा अपं। ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	१६५ मवि	राणुवादेण मव	सिद्धिएस		१७८	अह चे	दिसमागा है	देख्णा, स	म्ब <b>•</b>
१६६ अमवसिद्धिएहिं केविडियं खेतं योसिर्द, सन्वलोगो । "१९७ सम्मवाणुवादेण सम्मादिहीसु असंजदसम्मादिहिप्दुित जाव अजोगिकेविल कि ओपं । २०२ १६८ सहस्यम्मादिहीसु असंजदसम्मादिहीसु असंजदसम्मादिहीसु असंजदसम्मादिही ओपं । "१८१ सहस्यसम्मादिही औपं । "१८६ संजदासंजदरपहि कोपं । "१८६ संजदासंजदरपहि जाव अजोगिकेविल केविहियं खेतं पंगिवदं, होगस्स असंखेज्जदिमागो । ३०३ केविहियं खेतं पंगिवदं, केविहायं खेतं पंगिवदं, स्वयं खेतं पंगिवदं, केविहायं खेतं पंगिवदं खेतं पंगिवदं, केविहायं खेतं पंगिवदं पंगिवदं खेतं चेविं पंगिवदं खेतं पंगिवदं खेतं चेविं पंगिवदं खेतं चेविं पंगिवदं खेतं चेविं	ं मिच्ह	ग्रदिद्विप्पद्वदि जाः	र अज्ञोगि-	- {		लोगो :	स ।		**
पोसिर्द, सञ्चलेगो । ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	, केवरि	हे चि ओ यं।	1	३०१	१७९	सासण	समादिहिष	यहुद्धि	<b>রা</b> র
१६७ सम्मताणुवादेण सम्मादिहीस असंजदसम्मादिहिण्युद्धि वाव अजोगिकेविल वि जोपं। २०२ १६८ सहस्यसम्मादिहीसु असंजद- सम्मादिही ओपं। " १६९ संजदानेजदरपहुद्धि जाव जोगि- केवलीहि केवहियं खेर्च पोविदं, होगस्स असंखेज्जदिमाणा। २०३	१६६ अमन	ासिद्धिएहिं केवहि	यं खेतं	į		सीणक	मायवीदराग	ाउँ <b>दु</b> मत्य	
असंजदसम्मादिहिष्पहृदि जाव अजोगिकेवित ति जोपं। ३०२ १६८ सहस्यसम्मादिही असंजद- सम्मादिही ओपं। १६९ संजदानं जदप्पहृदि जाव जोगिं। केवरीहि केवहिषं खेर्च पोनिदं, होगस्स असंकेज्जदिमागा। ३०३	पोसि	दं, सञ्बद्धोगो ।	•	,,		ओंधं ।			₹°0
अज्ञिगिकेवित वि शोर्ष । ३०२ १६८ सहस्यसम्मादिद्वीस असंबद- सम्मादिद्वी ओपं । ,, १६९ संबदासंबदरपहुढि जाव अज्ञोगि- केवलीहि केवडियं खेपं पोसिदं, होगस्स असंखेजनदिमागो । ३०३	१६७ सम्म	चाणुवादेण सम	<b>મા</b> વિદ્વીસુ	ļ	१८०	असुण्धी	हि केवडियं	खेचं पोर्	<b>बेदं</b> ,
१६८ सरयसम्मादिष्टीस् असंबद- सम्मादिष्टी ओपं। ,, १६९ संबदासंबदपपुढि जाव अजोगि- केवलीहि केवडियं खेपं पोसिदं, होगस्स असंखेजनदिमागो। ३०३				- [		सन्दलो	गो ।		Ħ.
सम्मिदिही और्ष । १६९ संजदार्गजरपहुढि जाव अजोिन केवरीहि केवडियं खेचं पोतिदं, होगस्स असंखेजनदिमागो । ३०३ केवरीहि केवडियं खेचं पोतिदं,	अजेत	गिकेवील चि ओष	11	१०२					
१६९ संजदासंजदरपहुढि जाव अजोगि- कैवलीहि केवडियं खेचं पोसिदं, होगस्स असंखेजनदिमागी। ३०३ केवलीहि केवडियं खेचं पोसिदं,			असंजद-	- 1		•••			•
के बरीहि के बहियं खेषं पोतिरं, १८३ पमचसंतर्पहुढि बाब सजीिं स्रोगस्स असंखेर बिमागा । ३०३ के बरीहि के बहियं सेचं पोसिरं,			••	,, }					वाव
होगस्स असंखेज्जदिभागी। २०३ केवलीहि केवडियं खेचं पोसिर्दः				- {					-
१७० ममानक्ष्या आसः। २०४। सामस्य असलक्ष्यार्मानाः ॥									
	देवव समा	गक्यण आया	3	081	,	ગવસ્લ	असल्बन	કુંનાના ક	"

पजारस्त्याश्वाणी  स्व संस्था प्र पृष्ठ प्र संस्था प्र  १८५ अणाहारत्यु कम्मद्यकापज्ञोगिः  भेगो ।  ३०० असंदिन सेंग पोसिदं सेंग  १८५ प्रवितिसेंसा, अज्ञोगिकेनसीहिः असंदिनजिद्यागो ।	(१६) प्रष्ठ गस्स २०९
काल्परूचणासुत्ताणि ।	•
र काळाणुगमेण दुविहों जिहेती, अर्थावन्त वा द्वार के व्यवस्था प्राप्त अर्थाप्त आहेत्या या श्री अर्थावन्त के विहेती जिहेती, आणाजीर्य पहुच्च अर्थाप्त अर्थावन्त के विहेती के व्यवस्था विहेती के विहेती के व्यवस्था विहेती के विहेत	३४२ ३- ३४४ १- १४५ दो - १४५ २४६ ३४७

, , ,	′									
सूत्र हं	ग्या	सूत्र		पृष्ठ	सूत्र	संग्या		ग्य		ĮŦ
् स् <b>२१</b> उ	मर्य । क्कस्सेण	पहुच्च बहुणे । अंत्रीमुहुन् ।		३५० ३५१		मामणम् दिद्धी अ अमंजदस	र्ष । म्मादिही	व	: व्यक्तिं	46
Ę	ॉति, णा गसमयं	वसमा केवचिरं गाञीवं पडुच्च । । अंताम्रहुत्तं ।	जह <b>ण्लेण</b>	३५२	₹८	कालादो सब्द्रहाः। एगजीवं । मुद्रुतं ।	,		अंगे-	#  48
२४ ए ं स	गजीवं मयं ।	। जवाश्चरुकः । पहुच्च जहन्नो। : अंतोम्रहृत्तं ।	ग एग-	" ३५३ ३५४		उक्कस्सेण देखणाणि पढमाए उ	I			"
<b>२६</b> च	दुण्हं खः वरं काल	अतासुहुस । (गा अजोगिकेव गदो होति, ण ग्णेण अंतोसुहर्स	ली केन- ाणाजीवं			णेरइएस कालादी सन्बद्धा ।	मिच्छारि	ही केव	विरं	६०
<b>२७</b> उ २८ ए	क्कस्सेण	.जाया जतासुहुत् अंतोसुहुत्तं । डुच्च जहणीण	ा अंतो-	"	धर :	एगजीर्व प मुहुत्तं । उक्कस्सेण	सागरोव	मं ति णि	<i>।</i> सृच	,
२९ उ ३० स	- क्कस्सेण जोगिकेव	अंतोमुहुत्तं । स्री केवचिरं ।।जीवं पहुच्च स		,,	: 3 <b>₹</b> €	दस सचारस् रमाणि । रासणसम्म	गदिही		॥ छा-	
३१ ए मु	गजीवं प हुत्तं ।	हुच्च जहण्णेण	अंतो-	,,	28 3 \$	देड्डी ओधं प्रसंजदसम्म रिंति, पाण	गदिही के जीवं पडु	च्च सब्बर	द्वा। #	•
३३ आ ग्र	दिसेण व दीए जेरा	पुन्वकेाडी देख दियाणुवादेण (एसु मिच्छादिह	णिरय- ही केय-		मु १६ उ	(गजीवं प  हुत्तं    कस्संस	गरोवमं	तिण्णि स	३६१ च	l
ः पर् ३४ एः	ुच्च सब् ाजीवं पर्	दो होंति, णा वद्धा। इच्च जहण्णेण	₹	40	द स ७ ति	स सत्तार गगरोवमारि गरिक्खगदी	(स. वार्व गे देखणां ए तिरिक्य	ोस वेची णि ! वेसु मिच्छ	स # 1+	٠
-	हुत्तं । कस्सेण	वेचीसं सागरोव		46		द्धी केवरि शाजीवं प			, 3€₹	

			4	10150	141131	311.4		(17)	,
स्य	संक्या	स्व		प्रम	सूत्र	संबया	स्य	Ã.	3
86	एंगजीवं प सहचे।	हुच्य जह	णेण अंदो-				ाइम जहण्येण अर्त विश्यि परिदोध		,
४९	उपकस्सेण पोग्गलपरिष		हमसंखेज्जा	३६४		विणि	पित्रेविमाणि, गाणि देखणाणि 1		
40	सासणसम्म दिष्टी ओधं		मामिच्छा-	,,	١.	संजदासंज	दा ओपं। देश्विराधपञ्जवा	३७१	
५१	असंजदसम्म होति, णाण	।दिही केव					गदो होति, पाः	गर्जीर्व	
५२	एगजीवं प् सहसं ।	दुष्य जहा	णेण अंतोः		ι	एगजीवं प	बद्धाः १ <b>इच</b> जदम्पेण खु	तम्ब- रामब-	
ષર	उदकस्सेण।	तिण्णि पति	दोवमाणि।	"	Fie	स्महणं । जयस्योग	। अंतोसुहुचे ।	" 308	
ષષ્ઠ	संजदातंत्रद होति, णाण				ĘÇ	मणुमगर्भ	। जानुदुव । हि मणुस-मणुसद ह मिष्डादिष्टी ब	ज्ञच-	
ષ્ષ	एगजीवं पर् मुद्रुचं ।	रुच जहण	ोण अंदो-	,,		पालादी ह	होति, पाणाश्चीदे		
	उबक्संसण			,,		सम्बद्धाः । सम्बद्धाः ।	हुन्य ब्रहणीय	42. 42.	
ધ્ 9	पंचिदिवति तिरिक्सपनः जोविकीमु कालादो हो	बत्तः पंचिति मिच्छादिई	यतिरिक्य- वे केशियरं वि पटुच्च		<b>90</b>	मुहुत्तं । उपग्रसेण पुरुषकेशिङ	दिश्य बहुण्याय दिश्यि पनिदेश पुधरेणस्मीदेयानि शादिही केवनिरंका	" मावि । १७१	
40	सब्द्राः । एयजीवं पहु मुहुत्तं ।	टम अहणे		<b>? ? .</b> .	1		राजी <b>र्य पर्च्य द्रह</b>		
	उपकर्ष हि पुरुषकोडिपुः				93 0	गर्जाई ।	अंतेषुहुचे । १९२च दहक्देश १	,, Ur	
•	सासणमम्मा दिष्ठी ओर्घ	1	:	ξξ.		त्मये । इक्कस्मे स	आर्थिसके।		
	असंबदसम्म कालाश हो। सप्बद्धाः।				o e i	म्मामेच	परिहा केरारेण करन की पहुरूच दरको	र्र द	

321

सत्र संख्या सत्र सब संक्रम स्रत ७६ उवंकस्सेण अंतोमहर्च । 3641 ९१ असंजदसम्मादिदी केव चिरं ७७ एगजीवं पडुच्च जहणीण अंती-कालादी हाँति, णाणाजीवं पहर सहसं । 305 सन्दर्भ । ७८ उदकस्सेण अंतोमहत्तं। ९२ एमजीवं पड्डच जहणीण अंती-•• ७९ असंजदसम्मादिङ्डी केवचिरं कालादो महत्तं । हाँति. णाणाजीवं पदच्च सच्वद्धा । ९३ उक्तरमं तेत्तीमं सागरोवमाणि। •• ८० एगजीवं पड्च्च जहणीण अंती-९४ भवणवासियप्पद्दडि जाव सदार-म्रहत्तं । 319.9 सहस्सारकप्पवासियदेवेस मिन्छा-८१ उनकस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि. दिझी असंजदसम्मादिही केवचिरं तिण्णि पलिदेविमाणि सादिरेयाणि. कालादो होति. णाणाजीवं पहुच तिाण्य पलिदोवमाणि देखणाणि । सब्बद्धा । ८२ संजदासंजदणहाडि जाव अजागि-९५ एगजीवं पहच्च जहण्णेण अंदोः केवलि चि ओवं। 306 मुहर्त्त । ८३ मणसअपन्जचा केवचिरं कालादी ९६ उक्करसेण सामरोवमं पलिदोवमं होंति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्णेण सादिरेयं वे सत्त चोहस सोलस खदाभवग्गहणं । ३७९ अङ्गारस सागरीवमाणि सादिरे-८४ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंबे-याणि । ज्जदिमागो । " ९७ सासणसम्मादिङ्की सम्मामिच्छा-८५ एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खहा-दिही ओर्घ । ३८५ भवग्गहणं । ,, ९८ आणद जाव णवगेवज्जविमाण-८६ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । वासियदेवेस मिच्छादिही असं-,, ८७ देवगदीए देवेस मिच्छादिही केव-जदसम्मादिही केवचिरं कालादी चिरं कालादे। होंति, णाणाजीवं होति. गागाजीवं पद्रच सञ्चद्वा। पहुच्च सब्बद्धा । 3८0 ९९ एमजीवं पहुच्च जहणोण अंतो-८८ एगजीवं पहुच्च जहण्लेण अंतो-महत्तं । सर्चं । १०० उक्कस्सेण बीसं वाबीसं तेबीसं ८९ उद्रस्येण एकचीतं सागरोवमाणि। ३८० घउवीसं पणबीसं छच्चीसं सर्चाः ९० सामगसम्मादिष्टी सम्मामिच्छा-वीसं अहावीसं एगूणवीसं धीसं .364 ः दिही ओपं। ३८१ एक्क्सीसं सामरोवमाणि ।

	য	Partie (	गामुचा	<b>ি</b>		( \$0 ),	
स्ट्य संस्था	प्र	ār	सूत्र	संग्या	स्त्र	18	
दिष्टी और १०२ अणुद्धि- जपंत-जपं यासिपदेवे	मादिद्दी सम्माभिच्छा- रं । -अणुत्तरविजय-बद्- त-अवराजिद्दविमाग- सु असंजदसम्मादिद्दी जलादो होति, णाणा-	₹८६	११३	उवस्सेण अंगुः भागो असं ओसप्पिण-उस बादरेइंदियपञ् काटादे। होति, सम्बद्धा ।	खेज्जासंखेज्ज सप्पिणीओ । एषा केर्ना	ओ ३८ <b>९</b> चेर्र	
जीवं पहुच १०३ एगजीवं प चीसं, व	च सन्बद्धाः। इन्च बहुष्येण ए चीसं सागरीवमाण	"	११४ ११५	एगजीवं पद्ध सुदुर्च । उकस्सेण संस्		्र , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	
सागरावम	मचीस, तेचीस लिं। .	" ₹८७	११६	स्साणि । षादेरेइंदिपञक कालादा होति,	णाणाजीवं पड्		
, असंजदसः	देविमाणवासियदेवेसु नादिष्टी केवचिरं रिति, णाणाजीवं पहुच		११७ ११८	सन्बद्धाः । एगजीवं पहुच भवग्गहणं । उक्कस्त्रेण अंते	जहण्येण सुद् ।मुहुत्तं ।	T- #*	
वेचीसं सा	हुच्च बहण्णुवकस्सण गरोवमाणि । देण प्रदेदिया केवचिरं		{२∘ ा	सुदुमण्डंदिया हेंति, णाणाजीवं रगजीवं पडुच सवस्महणे ।	पहुंच सन्बद्धा	i ₹९४ ″ [•	
पदुच्च सर १०८ एगजीवं प	हुच्च जहण्णेण खुद्दा•		१२१ र १२२ र	न्दरगढ्य । उनकस्सेण असंग रहुमेईदियपज्ञा राहादी होति, ।	षा केविय	ŧ "	
पोग्गलपरि	अणंवकालमसंखेज्ज- पट्टं ।	"	स् १२३ व	ख्बद्धाः । (यजीवं पद्दसः (हुत्तं ।		**	
होति, जाज	या केवचिरं कालादो ।जीवं पहुंच सब्बद्धाः।		१२५ स्	क्कस्तेण अंदो। हुमेर्द्रियअपञ जलादी होति, प	ता केवचि		
१११ एगजीव प सवस्महणे	हुच्च जहण्णेण सुद्दा- ।	,,		ालादा हा।त, प व्यद्भा ।	॥यामाय पंडुर	₹९६	
		\			, -	1	1

<b>च्</b> त्र संख्या	स्व	Яß	मूत्र	संख्या	<b>ন্</b> যু	r	
१२६ एगजीव सर्वगाहर	्प्रदेशं जहण्णेण खुदाः गं ।	३९६			गदेण पुढविः वेडकाऱ्या		
१२७ उन्हस्से	ण अंतामुदुनं ।	३९७	1	केवचिरं	कालादी हैं। च संब्यदा	नि, णाग	
बीइँदिय-	तीईदियां चउरिंदियां, -तीईदिय-चउरिंदिय	:	१४०		पहुँच्यं जहा	_ / .	F
, पाणीजी	क्षेत्रचिरं कालादे। होति, वं पद्रच्य सम्बद्धा ।	"	1	उद्धरमेण	असंखेडा र		. ,
	पडुच्च जहण्णेण खुद्दा- गं, अंतोमुहुनं ।	,,	१४२	कार्या	वेकाइया व बादरतेउकाइ	या बादर	
१३० उद्कर्से स्साणि ।	ग संखेज्ञाणि वाससह-	,,,		पचेयसरि	त बाइरवणप रा केविद्य	कालाद	1
पज्जुना	चीइंदिय-चउरिंदिया अ- केवचिर्र कालादो होति,	٠,		एगजीवं प	गाजीवं पहुंच गहुच्च जहण		
१३२ एगजीवं	र्ग पहुंच सम्बद्धा । पहुंच्च जहण्णण सुद्दा-	३९८	१४४		कम्महिशी	4 *	. 11
भव्गाहर १३३ उक्कस्प्रेर	ग अंतोष्ठहुचं ।	," ३९९	!	काइय-बाद	काइय-बाद (रवेडकाइय-	। दूरवाउ-	.'
च्छादिही	पंचिदियपज्ञचएमु मि॰ केयचिरं कालादो		1	पचेयमशीर		वेजियरं	,
११५ एगंजीव	णाजीवं पंड्य सन्वद्धाः पंडुच्च जहण्णेण अंती-	"	;	सब्बद्धाः ।	वि, पार्पाजी ———		৪০३
	ग सागरीयमसहस्याणि	.	3	पृदुर्च ।	र्डुच्चं जहणो ू		৪০৪
सागरीवा		800		सहस्साणि			,,
अञ्जीगिके	मादिहिप्पदृष्टि जाव विजियोगे।	,,	ą	ताऱ्य-बादर	हाइय-बादरः वेउकाइय-बा	द्रशाउ-	
<b>१३८ पं</b> चिदिया अपरतत्त		,,	य प	हार्य-न्याः चियसरीरः	द्रवणप्यःदिव स्पज्यसा	ाइय-− केवेचिर्द	

ध्य संस्था **फाउपरूवणायुत्ताणि** G7 कालादो प्रष्ठ एवं संस्था (45) होति, पद्ग्य सम्बद्धा । णाणाजीवं स्व १६० सासणसम्मादिड्डिप्पह्रुडि १४९ एमजीन पहुन्च जहणीम सुद्दा--- 88 शजोगिकेवित चि औषं। १६१ तसकाइयअपन्जचाणं पंचिदिय-१५० उपकरसेण अंतोमुहुत्तं । ےہ2 १५१ सहमप्रदिवकाइयाः सहमञाउः ,, अपन्तचभंगो । १६२ जोगाणुबादेण पंचमणजोगि-पंच-,, कार्या सुद्भवेउकार्या सहम-वचिजागीस मिन्छादिही असंजद-बाउकाइया सहुमवणप्फदिकाइया सम्मादिही संजदासंबदा पमच-सङ्मणिगोद्जीता तस्सेव पजता-संजदा अप्यमचसंजदा सजीगि॰ पंज्ञचा सुहुमेहादियपुज्ञच-अप-फेनली केनचिरं फालादो होति, ज्जनाणं भंगो । णाणाजीवं पहुच्च सन्बद्धा । १५२ वणप्पादिकाइयाणं १६३ एमजीन पहुच्च नहण्णेण एगः मंगो । . १५६ णिगोद्बीचा केवचिरं कालादो १६४ उनकस्तेण अंतोग्रहुचं । 808 होति, णागाजीनं पहुच सन्नद्वा। १६५ सासणसम्मादिही और्ष । १५४ एगजीनं पहुच्च जहल्लेन खुद्दा-" ४१४ १६६ सम्माभिच्छादिही ,, मनग्गहणं । कालादी होति, णाणात्रीवं पहुच ५५ उक्करसेण अङ्काहजादी पीमाल-जहण्णेण एगसमयं। " १६७ उक्तस्सेग पलिदीवमस्स असंदोः १६ बाररणिगोदजीवार्ण बादरपुद्रवि-जनदिभागी। काइयाणं भंगो। १६८ एगजीनं पहुच्च जहण्जेण एगः ७ वसकाह्य - वमकाह्यपञ्जनव्सु 800 मिच्छादिडी केत्रचिरं कालादी १६९ उक्कस्सेण अंतोमुहुचं । होति, णाणाजीनं पहुच सन्बद्धा। 858 १७० चदुण्हमुबममा चदुण्हं एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अती-केनिर कालादी हाँति, णाणा-सद्तं । र्जातं पहुच्च जहण्जेण एगसमयं। कस्तेण वे सामरोवम*महस्माणि* १७१ उनक्रसमेण अंतीसृदुर्गः । व्यकोडिपुधचेणस्महियाणि, वे १७२ एमजीवं पहुच्च जहच्चेण एम-गरोवमसहस्साणि । ४०८ १७३ उदकस्येण अनोसुरुनं ।

`सत्र सं*एया* स्रव सत्र संख्या १७४ कायजोगीस मिच्छादिही केव-सत्र |१८७ एमजीवं परुच्च जहल्लेल एम-चिरं कालादो होति, णाणाजीवं समञ्जा । पदच सम्बदा । ४१५ १८८ उनकस्तेण छ आवलियाओ सम-१७५ एगजीवं पद्दच जहण्णेण एग-समयं। ऊणात्रो । १७६ उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेला १८९ असंजदसम्मादिङ्री केत्र*चिरं* पोगगलपरियङं । कालादो होति, णाणात्रीवं पदुच्च १७७ सासणसम्मादिहिष्पद्रडि जाव जहण्मेण अंतोमहत्तं । •• सजोगिकेविछ चि मणजोगि-१९० उक्कस्सेण अंतीमृहत्तं । मंगो । १९१ एगजीवं पद्रच्च जहण्णेण अंतो-886 १७८ ओरालियकायजोगीस् मिच्छा-महत्तं । दिही केवचिरं कालादी होंति, 225 १९२ उक्कस्बेण अंवोग्रह्चं । णाणाजीवं पद्रचं सब्बद्धा। १९३ सजोगिकेवली केवचिरं कालादी १७९ एगजीवं पहच्च जहण्णेण एग-,, होंति, णाणात्रीवं पदुच्च जहर समयं । प्णेण एगमुम्यं। 8\$5 १८० उकस्सेण वानीसं वाससहरसाणि 223 १९४ उक्कस्सेण संखेज्जसम्यं । देखणाणि । १९५ एमजीवं पड्डच जहण्युक्यस्मेण १८१ सासणसम्मादि। द्वेप्पहाडि ,, एगसमञ्जो । सजोगिकेविल चि मणजोगिमंगी। १९६ वेउन्त्रियकायज्ञोगीस मिन्छीदद्वी १८२ ओरालियमिस्सकायजोगीस मि-असंजदसम्मादिद्वी च्छादिझी केवचिरं कालादी होंति, **केव**चिरं कालादो होति, णाणाजीनं पहुच णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धा । ४१९ सन्बद्धा । १८३ एमजीवं पदच्च जहण्णेण खदा-प्रश्प १९७ एगजीवं पहुच्च जहण्णेण एगः मवग्गहणं विसमञ्जां। समओ । १८४ उदरसीण अंतोमुद्र्च । ,, ६९८ उक्कस्सेण अंतोमुद्रुचं । १८५ सासणसम्मादिष्टी **ये** विशे १९९ सासणसम्मादिही ओर्घ । कालादो होति, णाणाजीवं पट्टच २०० सम्मामिन्छादिष्टीणं मणजोगिः जहण्मेण एगसमयं। मंगो । ८६ उनहस्सेण पछिदोत्रमस्य असंसे-२०१ वेउन्त्रियमिस्सकायजोगीतु मि॰ ज्जदिमागी। च्छादिही असंजदसम्मादिही

	व	उटपस्य	ળાલુત્તા	णि			(11)
स्य संख्या	स्व	वृष्ठ	स्य	संख्या	स्त्र		र्ष्ष
जीवं प	कालादो होति, णाणा- इच जहण्णेण अंतोग्रहुचं !	४२६	<b>२१६</b> २१७	कम्मइ्य		मिच्छा-	
<b>ज्ज</b> िस्	ोण पलिदोवमस्स असंखे• गगो । ( पहुच्च जहुम्मेण अंतो-	४२७	२१८	णाणाञी	विर्वि कालादी वं पडुच्च संव्य पडुच्च जहणी	द्यो	,,
मुहुचे । २०४ उनकस्ते २०५ सासगर	ोण अंदे।मुहुचं ।	४२८ ४२९	२१९	समयं । उक्कस्से	ग विष्णि समय मादिही असंज	πł	8 **
कालादो खहुण्लेष	होति, णाणाजीवं पडुच्च । एगसमपं । तेण परिदोवमस्स असंखे-	,,		दिही के पापाजी	म्माद्धा अस्य चिरं कालादे। रं पहुच्च बहुणे	Eild,	•
<b>ज्जदिम</b>		,, yş.	२२१	समयं । उदकस्य ज्जदिमा	ग आवितयाए गो ।	असंखे-	४३५ ुम
२०८ उनकस् ऊगाओ		"		समयं !	पहुच्च जहण्ये । वे समय ।	ग्ष्ग-	834
केत्रविश जीवं प्	तपञ्जेगीसु पमचसंबदा काटादो होति, णाणा- इच बहुण्येण एगसमयं।	४३१	२२४	सजोगिव हाँति, प	वही केविदं शणाबीदं पहुच्च वेग समयं ।		,
२११ एगजी <sup>ई</sup> मुदुर्च ।		"	२२५ २२६	उक्कस्सेष एगक्रीवं	। संक्षेत्रत्रसमयं पटुरुच अहण्या	_	1) ))
<b>२१</b> ३ आहारा संजदा	तेण अंबोमुद्रुषं ! मेरसकायजोगीस पमच- केनचिरं कालादो होति,	४३२	२२७	दिह्यी के ब	ण इतियेषेदएस विरं कालादी	Tild,	
मुदुर्च । २१४ उपकर	सेण अंतोग्रहुचं ।	11	२२८	एगद्रीवं । मुदुर्च ।	पहुच्च सम्बद्ध रहुच्च जहच्चेप	अंदो-	11 5 6 5 6
२१५ एगर्जाः सुहुचं ।	रं पहुच्च ज्ञहण्णेण अंवोन				। पितरोबममदा मादिङ्की जोपं ।		eic
						J	see and the see

```
(42)
              सम संस्था
            . २२१ सम्मामिन्छादिही और्ष ।
                                                 पृष्ठ स्व संग्या
             २३२ अमंजरसम्मादिही
                                               ४३८/२४६ एमतीवं पुरुष नहमान अंत
                 कालादी होति, णाणाजीनं पदुच
                                       देवित्रां
           २३३ एगबीवं पहुन्च बहुष्णेण अंती-
                                                    २४७ उनहस्तेण नेचीम मागरावमानि
                                                        देखगाणि ।
        ्रेवस उन्तरसेण पणवण्णपलिदोबमाणि
                                                  २४८ संबदासंबद्ध्यहुडि बाव अणि-
                                                       यदि ति औषं।
        २३५ संजदासंजद्रपद्दृडि जान अणि-
                                                 २४९ अपगर्नेद्रण्सु अणियद्विष्वहुद्धि
            योंड ति और्च।
                                                     नाव अनोगिकेनिल नि जोवं । ४४४
     ्रेव प्रतिसंबद्ध मिन्छादिही केन-
                                               २५० कमायाणुवादेण
           ,चिरं कालादो होति, णाणावीवं
                                                                     कोधक्रमाइ-
                                                    माणक्रमाइ-मायक्रमाइ-लोम-
           पडुच्च सव्बद्धा ।
                                                 कमाईसु मिच्छादिद्विषादुदि वाव
    १३७ एगजीनं पडुच्च जहण्णेण अंती-
                                                  अप्पमचसंबदा वि मगनोगि-
                                      85°
                                                  मंगा ।
   २३८ उक्कस्सेण सागरीनमसद्युचर्च । ४४८
                                           २५१ दोष्णि तिरिग उन्यमा केनिर्न
  २३९ सासणसम्मादिहिषहुहि जान
                                                          होति, पागात्रीनं
      अणियहि वि औषं ।
                                               पद्वच्च जङ्जीण एगसमयं।
 २४० णबुंसयवेदेसु मिच्छादिही केवचिरं
                                         २५२ उक्करमेण अंतीमृहुचं ।
                                        २५३ एगजीनं पहुच्च जहणीग एगः
      कालादो होति, णाणानीनं पहुच
     सव्यद्धा ।
                                       २५४ उक्कस्सेण अंतोमुहुचं ।
२४१ एगजीनं पड्डच बहुप्लेण अंती-
                                      २६५ दोलेग विलिंग खना केनिर्वा
४२ उनकस्तेण अर्णतकालमसंसेङ्ग
                                           कालादी होति, पाणानीने पडुच
                               १८४
                                          वहण्मेण अंतोषुहुचं ।
  पोरमस्परियञ्चं ।
                                    २५६ उन्हर्सण अंतामुहुत्तं ।
रै सासगसम्मादिही और्य ।
<sup>हे सम्मामिच्छादिही</sup> ओ<del>एं</del>।
                                   २५७ एगजीनं पहुच्च नहर्णेण अंते-
                               ,,
                                                                    886
अर्वजदसम्मादिङ्ठी
                              "
                                  २५८ उक्ऋस्मेण अंतोमुद्रुचं ।
म्बलादा होति, पाणानीन पहुच
                                 २५९ अकसाईस चुदुङाणी ओपं।
                                २६०. षाणाणु बादेण महिअण्गाणि-सुर्-
                                     अन्माणीसु मिच्छादिङ्की औषं।
```

२६? सासणसम्मादिष्टी ओषं। पृष्ठ**े स्**त्रं संख्या (48.2) २६२ विभंगणाणीसु मिच्छादिही केव .... ४४९/२७३ जहानखादनिहारसुदिसंबदेसं चिरं कालादी होति, णाणाजीव 27 चंद्रहाणी और्ष । ı ii पहुच्च सम्बद्धा । २७४ संजदासंजदा जोषं। २६३ एगजीनं पहुंच्च जहणीण अंती-843 ६७५ असंबद्धः मिच्छादिहिणहाह ,, २६४ उरुऋस्सेण तेचीसं सागरीयमाणि . , असंजदसम्मादिहि वि ओंचें। " २७६ दंसणाणु बीदेण २६५ सासणसम्मादिही ओर्घ । २६६ अभिनिवोहियणानि-सुरुणानि-मिन्छादिहीं केविचरं कालादी चन्तु संगीत ४५, होति, णाणामीतं पहुच सम्बद्धा। ओधिणांणीतुं असंजदसम्मादिहि-२७७ एगजीर्न पहुच्च जहणीण अती-पंदुढि जाव सीणकसायवीदरामः सहसं । छद्रमत्या वि औषं। २७८ उकस्सेण वे सागरीवमसंहरसानि। २६७ मणपंजनगाणीसु पमत्तसंनद् 848 २७९ सासणसम्मादिहिष्पद्वि ,, प्पहुंडि जार्ब खीणकसायबीदरागं-खीणकं सायबीदराग हुई मन्या वि छदुमत्या वि औषं । ओर्ष । २६८ केवलंगांगीस ४५१/९८० अचनसुद्धणीं में मिच्छादिहिं-सबोगिकें वहीं अजोगिकेवली ओषं। ९९इडि जावं सीणक्यापंबीदः १६९ संजमाणुवादेण संजदेश पमच-रागछरुमत्या चि ओपं। • संजद्तपहुडि जान अजोगिकेवित २८१ ओधिरंसणी जोधिगाणि मंगो । वि ओएं। 844 २८२ केवलदंसणी केवलणाणिमंगी। ° सामाह्य च्डेदोवहावणसुद्धिमंत्र-२८३ लेस्माणुबादेण देस पमसमंजद्दपहुडि किण्दलेसिय-पीललेसिय-बाउलेस्बिएमु वि-अणियहि ति ओपं। च्छादिही केवचिरं कालादी होति, परिहारमुद्धिभंजदेम पमच-अप्प-४५३ णाणाञ्चीवं पहुट्य मध्यद्वा । मचसंबदा ओधं। २८४ एमबीर पहुच्च प्रक्षिण अने:-खङ्गमांपगह्यसुद्धिमं घदे**त स**ङ् वर्षापराह्यसाद्भित्रदा उदयमा २८५ उ४ इस्सेण नेवीस सवास्य सव का ओएं। मागरांदमानि माहिरदादि । २८६ मासणसम्मादिई। मोषं।

... अर्थनामिस्तानिक्ताना

G3

....

(38);		परिशिष्ट	
ध्य संख्या	- सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सत्र प्र
२८७ सम्मापि २८८ असंजद्दसः होंति, णा २८९ एगजीवं ॥ ४९० उक्कस्सेण सागरोवम २९१ वेउल्लिस्ट्री केविर्धि के जीवं पहुच १९२ एगजीवं प् सम्मापिच्ड २९६ संत्रदासंबद् संवद्दा केवा पणाजीवं प् स्टुचं । २९८ उक्कस्मर्भव २९७ एगजीवं प् स्टुचं । २९८ उक्कस्मर्भव २९९ सक्वर्हस्य प्राचीवं प् रूट्चं ॥ २९८ उक्कस्मर्भव २९० एगजीवं प् रूट्चं ॥ १९८ उक्कस्मर्भव २९९ सक्वर्हस्य १९८ उक्कस्मर्भव २९९ एगजीवं प्	स्वादिद्वी ओषं । मादिद्वी केवचिरं कालादे गातीवं पड्डच्य सक्वदा। गड्डच्य सक्वदा। गड्डच्य सक्वदा। गड्डच्य सक्वदा। गड्डच्य सक्वदा। ग्रंच्य सक्वदा।	१८ असंजदसम्मादिः १८ असंजदसम्मादिः १८ संजदासंजदाः १८ संजदासंज्ञानीयं पद्वासंज्ञानीयं पद्वासंज्ञानीयं सार्वः १८ संजदासंज्ञानीयं सार्वः १८ संज्ञानीयं सार्वः	ते आये । १०० ही आये । १०० ही आये । १०० ही आये । १०० ही होति, । सन्बद्धा । १०० हुन्दे । १०० हुन्
बमाणि सारि	रयाणि। "	अपरजनसिद्री ।	**

रुष संख्या	æ	r	रुष	सूत्र	संख्या	स्त्र		प्रष्ठ
३१७ सम	<b>चिणुवदिण</b>	सम्मादिही		1330		वादेण सण्णीशु		
सङ्	पसम्मादिहीमु	असंबद्-		ł	दिट्ठी फेब	चिरं कालादी	होति,	
सम	गदिद्विष्पहुद्धि उ	राव अजोगि-		l	णाणाजीवं	पहुच्च सब्बद्धा	1. 80	4
केवा	ति चि ओषा		४८१	३३१	एगजीवं प	दुच जहण्येण	अंतो-	
३१८ वेदग	।सम्मादिहीसु अ	(संजदसम्भा-			मुदुर्च ।			,
दिहि	पहुडि जाब अ	प्पमचसेबदा	.			सागरोवमसदप्र	वर्ष ,,	,
	जोर्षं ।	•	,,	३३३	सासणसम्म	।दिहिष्प <b>हु</b> डि	ज़ाब	
३१९ उस	मसम्मादिद्वीतु	अमंत्रहरू	"			वीदरागछदुमत्य	ां चि	
	गदिही संजदा				ओर्घ ।		1)	,
	कालादी होति			३३४		क्षिरं कालादे। ह	र्गित,	
	ा अहण्येण अंते		४८२			ाइच सन्बद्धा ।	.88	Ę
	इसेण पहिदोवा			३३५		ुच्च जहणोण <b>र</b>	हुदा-	
	स्त्रण पालदावर देभागीः ।	મસ્સ ગસસ-	l		मवस्महण ।		11	
	२मानाः। तीर्वे पद्वच्य ज्ञ	milm sish	"	३३६		अर्णतकालमसंखे	उज	
२२६ एगः सहस्		શ્વામ અલા-	१८३		पोग्गलपरि		15	
	र । इस्सेण अंतोमुद्द	å i	- 1	३३७	आहाराणुवा			
			"			केवचिरं कार		
	सिंबदप्पहुढि व		1			जीवं पहुच्च सन्त		
	यवीदरागछुदुम		-	३३८		च जहण्येण उ		
	फालादो होति,				मुहुचे (			3
	च जहण्णेण ए					अंगुलस्स अस		
	सेण अंत्रोमुहुत्तं		858			संखेज्ञासंखेज्ज	সা	
	विं पहुरूच जह	्णण एग-	- [		ओसप्पिण-			
समय		• .	**		सासगसम्मा		राव	
	स्सेण अंदोग्रह		21			त्रं वि ओपं । जन्मसम्बद्धाः	Br. 11	
	वसम्मादिष्टी अ		1	₹8€	अणाहारपस् भंगेर ।	कम्म <b>र्</b> यकायजी		
३२८ सम्म	ामिच्छादिही अ 	114 1	<b>"</b> ∫	dos	सप्ताः अजैभिकेत्रह	रे स्टीचें ।	855	
						1 411 1	500	

# २ अवतरण-गाथा-सूची

•									
म्र	संख्या	माया	রির	अन्यत्र कह	্ ক	म संस्था	माया	83	अन्यत्र क
ę	अरिय सर्ण अपग्यणिर आगासं स	गरणह	ર	गो. जी. १९ अभिघा. र	126	जह गेण	<b>हर</b> परियहं पु	हिं- ३३४	चन्द्रश
•	थावडियः			उद्गृह कसायपाहु अद्याप	3 3 3 3	ण य परि प य म	वेरं वा किः रेणमृद्द सर्वे र रद्द णेव संज	मे। ३१५ म-३४९	गा. जी. ५३
	<b>र</b> हसलागा उच्छासानां						ाणा द्यियं ( स्था जहण्या		स.त. १,६ स. सि. १
ર્	उपाउंति हि	पर्वति य मा	त ३३७	स. त. १,११		गिर्भा	त्या सङ्ख्या		्०. सो. औ ट्रीका. ५६
32	उवसमसम उवसमसम प्रवक्ते	मचदा जद्द	२४१ ३४२	·	103	÷ ÷ -	वया छत्तीस तिष्यि वेऊ	300	गा. औ. १२३
80	पकारस छ पकारसयं वि	सत्त य	816	गे। क.१८५	123	निमेपाण	ड़ा जया रिक i सद्दश्राणि बसुराणे	316	वे.सा.२४ <b>९</b>
₹8	पक्षं तिय स	च दस तह	355	गे. जी. १९६	१२	पण्पासं	तु सहस्सा हाणि बहुसो	રરૂપ રરૂક મે	i. i. i. i. i.
<b>ন্</b> ধ	<b>द्योस</b> जिल्ल	-उस्स्रिपणी	<b>333</b>	र सि, २,६० गे. सी. ५६०. टीका.			रम्द्रेपदरोः	५१ य १० वि	(० (संस्कृतः च्छापा) १. प. १,९३.
R	काछे। परिष	गममयो	३१५ वं	चा. गा. २४. चा. गा. १०८ कसायपाहुडे	११ र	म्द्रे कप्रे	य छन्नीव- वम्होसरे य	३१६ मृ २३५	
9	खेचं खलु व गद्दणसम्बद्ध	यागा <del>र्</del> स	4): 0 332	यःसायपाहुइ यदाप.		ग्राहरस्	यिग्गे असं-	বি.	. ए. ५, ३६. . सा. ३१६. ।धंसमता )
	गद्दणसमयाः गुणजोगपरा				१६ ह	वित्र जोवं	ोभृदे अयो	२५१ मी	ਤੀ. <b>१</b> ९०
14	गेयञ्चाणुर्वा	रेमया जय-	२३६		३८ इ	राणदा के	धिद्धा मायद		बद्धाप-
13	चंदा(य-गरे छयेव सहस	साई सयार-			1	ह-तऌस	मास-मदं	अं .	य. १,१६५ ७.११,१०८
4	<b>छ</b> न्यचनयाः	हाण शरधाः	३१५ ग	ो. जी. ५६०.	<b>१</b> ६	"		48	**

पहाँ माम संस्था गापा १९७ अन्यत्र पहाँ	
२३ सन्यदिह छोगखेते १३३ स. सि. २,१०. गी. औ. ५६० टीका.	

१० मूलं मञ्ज्ञेण गुणं २१ जे.ए.१६ ŧ٩ 48 ६३ रोहणो बस्रतामा घ 316 १८ सध्ये वि धीगाला खलु १२ रोद्रः श्वेतध मैत्रध 316 ७ होगी सक्तिमें छाउ ११ वि. सा. ४, १४ सावित्रा धुर्यसंहरा ८ स्टेव्यस्स य विक्यंको ११ अंपू. प. ११, १५ सिजार्थः विद्यमेनध १०७. २० सदुमहिदिनंतुत्तं भासः ३३१ गाः औ. ५१०. ध लोवायासपदेशे पदेशे ३१५ गो. जी, ५८८ źisi. १० बर्चीसं सोहरोग भट्टा- २३५ ६ सीलह मोलसहिं गुणे १९९ ८ विक्लंभवगाइमगुण- २०९ वि सा. ९३. १२ संस्थे पुण बारह जीय-११ चेदण क साय-चेउन्प्रिय २९ गी. जी. १६७ | ३० संने घए ज जिहादि १३ व्यासंतायकृत्याचरून- ३५ ६ टेडा माति उपरि धेता: ११ अंब. प. ११. ९ व्यासं पोष्टदागुणितं ter. 18

गाधा-संद क्षेषु गुलमधेषु वर्गलं ६०० रुपोनमादिलगुण-१५९, १९९, ६०१ व्यासार्धश्रीतार्थकं w

1

# प्रश्न मगरीएस

મન લહના		
१ भवववेषु	प्रयुक्ताः	दाःदाः

४ सस जय गुज्ज पंच य १९४

१६ समयो राजिहिनयोः

७ सम्भायसद्धावाणं जीवा- ३१७ पंबा. गा. २३. ८ समग्रे शिमितो बहा ३१७ पंचा, गा. ६५,

त्रम संख्या

गाया

१७ मुह∙भूमिधितेसाम्ह दु १ मुद्दसदिद्दम्लमद्धं

पुछ अन्यत

188

समग्रवेष्यवि धर्तस्ते इति म्यायान् । ९ सीरहामस्य मधुहामा स्य।

६ विम्ह्रवालयक्ताधारीय

'४ ही.व गुष्ययोग्नेनेय सहय-

त्ययः द्वीतं स्थापान् ।

235 १४ ५ जरा बहेते: लहा विहेती। to, ( by 212, \$33, 800. 14.

# ४ प्रन्योहेस

•	
•	<b>ৰূ</b> ষ
१ अप्पाबहुगसुत्त	
रै. तसरासिमस्सिद्ण युत्तर्यचपाषदुगसुन्तादो णज्जदे।	१३२
२ करणाणिओगदुत्त	
<ol> <li>ण व सत्तरज्ञुवाहस्टं करणाणियोगसुत्तविद्धं, तस्त तत्य विधिष्पिडि</li> </ol>	•
मेपामावृद्धि ।	
. ३ कालसुर्व	
र. 'ये सच इस चोइस सोटसट्टारस य बीस वावीसा' पदीप गाहाप सब पदस्स सुचस्स किण्ण विरोहो होदि? ण होदि विरोहो, निण्णविसयत्तादो। त	:     २८४
जहा- युवं सुवं यंघप्पडिषदं। कालसुवं पुण संतमवेक्तिय ट्विट्सिंदि।	•
४ सुद्दावंघसुच	
र क्युज्यमिदि पीर्धिदियतिरिक्स-पत्रमत्तः नोणिशिकोदिसिय-वैतरदेव-भ्रय- हारकोलेहि खुद्रावेषसुत्तिसिद्धि अकृतुनुमन्नगपदरे मागे हिदे पदाओ रासीओ	
संधेदामो होन्त । ज च पर्व, जीवाणं छेदामावा। ं २. खुदार्वधिम उपयादपरिजयसासणाजमेक्कारहचीहसमागपोसणपरूचयः	
सुचाहो च मध्यदे ।	२०६
५ खेचाणिओगदार	
१. पदेसि चेय खेचाणिमोगदारोघम्हि उत्तपस्यणाय तुह्या।	<b>ર</b> ક્ષ્ય
६ गाहासुच (कसायपाहुड )	
१. ' बाविटिय अणागारे '(३६-३८) इदि गाहासुचादी (कसायपादुङ)	३९१
৩ জীবহ্বাব	
<ol> <li>आंवट्टाणादिस् द्य्यकाला ण स्तो कि तस्सामाया ण योचुं सकिन्तदे,</li> </ol>	
सर्थ छर्ववपदुष्पायणे अहियारामाथा ।	114
८ जीवसमास	
<ul> <li>श्रीचलमासाय वि उर्च—' छप्पंचणविद्यार्ण</li> </ul>	114
९ शिरयाउर्वधमुत्त	
१. ' यसं विष सच दस ' हिंद निरपाउवंघतुत्तारी ।	166

(२५)
दृष्ट
311
£>3

### १० तपत्थमुत्त (सन्तार्थमुत्र)

 तद गिर्डापिए।इरियण्यासिक्तश्रम्यक्ति वि' वर्षनापरिणामित्रवा परन्य-परस्ये च कालस्य ' इदि दृष्यकाले। प्रविदेश ।

#### १६ तिलीयप्राभी

र, यसा तणाभोगासंनेत्रज्ञपादियज्ञंत्र्योग्रह्सण्यमहिद्दीशयायस्वरूपोनः राज्यच्छेर्यमाणग्रिस्याथिदी च भग्ग इतिभोवंदनयरंत्रशाल्याणिती, केवले व्र तिभोवंदनयरंत्रशाल्याणिती, केवले व्र तिभोवरणानित्वालालाहिजोहित्यदंत्रसामहारत्युर्वाशयम् । वर्षास्त्रम् वरस्तिस्त्रम् वरस्तिस्ति

#### १२ दयाणि जोगहार

रे. कि च बस्याणियामहास्यवज्ञाणीक पुन्तेहिम उपरिमावियामा मन प्रमुख-पुर्वते, अपगासमुद्रिद्दरीयनादे।

२. दण्याणिमीगदारे वि साथ यमगुणहाणस्वकत प्रमाणस्वकारी व । १६६६।

#### १३ परियम

. जिल्लामित देवसायरमधाली जंदर्शकोर्डणांग व वचारियांच नांगवांच रुजुरेडणांगिति विश्वमित एर्ड पदाणां दिल्ला विटारों है वेट्ल शह दिवरणांह, हेनु मुनेल यह ला विटाराहि । तेलहार पदलालगर महत्ते वायदं ला वर्ष रहारणांह, तस्त मुक्तिस्त्रकारि । जा मुक्तिक्ते पदालं होहि, आप्यतंत्रहार।

२. रत्रम् सत्तापुणिश कालेकी, का धीमश कावर्र, केटीव मुक्तिरक्रकरर प्रवाहीची होडि सि परियामस्त्रिक सामास्त्रियसम्मेत विशेष्ट्रवसन हो।

६. के वि भारतिया चम्मदिहारी चारमदिश परिवाम करण्या के वण्डे बारजीवपारमवलीयेव चारमदिशीय चेप चम्मदिशियणाभिष्ठीत, एक कटेन।

४. इक्किट्रियायित्यायः शरीलेक्किट्रियायेन सुर्वित वारर्राद्धः करा कि परिवामययोग्यासस्य प्रति विरस्ति हिल्लास्थलः क्षेत्रकाने, सुलाकुन्धिः परिवाम वपूर्वः सुर्वे हिन्दि मार्थेयः व्यवस्थलायकातः ।

#### १४ वंदन्दियाहर

१. दुनं च पंदािपराष्ट्रंद्र—'काली सि व वदण्तेः 'इन्य हि १-४ सावः १. दुनं च पंदािपराष्ट्रंद्र वददारकारुसमार्थे यतः— सन्यादस्यादायः .

Ate Ata

1-1

1:4

. . 1

\*\*\*

**७०, दादा**.

ęų

#### १५ वसाणसत्त

१. बंगुलस्स संस्क्षेत्रज्ञिमागमेत्त्रग्रह्यितिस्यवद्दराद्वे सेटीय सर्वक्षेत्रज्ञिः मागमेत्त्रभोगादणियप्येदि गुलिदे तस्य ज्ञत्यित्रो रासी तत्त्वियमेत्रात्रो विस्यगद्याः भोगाणप्रश्रीय पयडीशो.......ति सगणमत्त्रादो ।

२. महामच्छोगाहणभिह एगयंघणयञ्चछःजीयाणिकायाणमिथाचं कथं णञ्यदे ?

बगगणभ्दः उत्तत्रप्याबहुगादे।

### १६ वेदणाखेत्तविघाण

१. 'प्याजीवस्स जहण्णोगाइणा वि अंगुळस्स असंबेज्जिद्दिमागेमचा 'चि वेदणांबचविद्याणे पद्मविदचारो ।

२. पत्तेयसरीरपञ्जचन्नहण्णोगाहणादो पीहंदियपञ्जचनहण्णोगाहणा असी खेडजगुणा चि कुदो णध्येदे ? येदणाखेचियहाणस्हि बुचयोगाहणदंडयादो । १७. मंताणियोगस्य

१७ सताणआगदार १. अदि सासणा प्रदेवसमु उष्पञ्जेति, तो तत्य दें। गुणठाणाणि होति ! ण

रै. जोर्र सासणा पहेंदियह उत्पत्रजात, तो तत्य दी ग्रुणहाणांण होति। ज च पर्य, संताणिज्ञोगहारे तत्य पक्षमिण्डादिहिशणश्रदुत्याण्यते । २. पर्द पि चनकाणं संत दच्यास्तविषद्धे ति ण वेच्छी। १५६

## ५ पारिभापिक शब्दसूची

स्वना—पदी शब्दोंके केलट उन्हीं पृष्ठीका उन्हेंस किया गया है जहां उनके विषयमें क्षेट्र विरोध कहा गया पाया जाता है।

PRIT	पद्धा गमा	वाना जाता द्		
शब्द		da	য়ন্দ্	23
	अ		वाशान	Jey Ste
वक्रमभाव		<b>३</b> २७	अणुवत	-
<b>शहतयुग्मजग</b> नत <b>र</b>		<b>१८</b> ५	वित्रसंग	२३, २०८
<b>यह</b> विम		११, ४७६	अनीतकालविद्योपितक्षेत्र शतीतागागतवर्तमान—	१४५
थस् <b>यराशि</b>				186
भगूदीतमहणादा		३२७, ३२९	मर्तान्द्रय मर्तान्द्रय	१५८
धविचद्रव्यसर्गन	_			200
अच्युतकस्य	<b>१</b> ६५,	१७०, २३६	सर्थ	163

	पारिभाविः	क <b>रान्दग्</b> ची	(%)	
शन्द	पृष्ठ	शन्द	ås	
भदा	३१८	मपनयनधु प्रसादी	909	
<b>वर्ध</b> नृतीयक्षेत्र	३७, १६९	थपनपनराश्चि	*00	
वर्षत्तीयद्वीपसमुद्र		मपर्याप्त	\$1	
भधोलोक		<b>अपराजित</b>	10	
<b>अधोलोकदेशक</b> ल		भवरीतसंसार	113	
<b>मधोलोकप्रमाण</b>	३२, ४१, ५०		\$4,48.43,40,103,	
<b>अधः</b> शृतकरण	334. 340	ļ	१३६, १३०	
स्रधःमधृत्तविद्योधि	336	भपवर्तनायान	AES	
धघस्तनाचित्र.स्प	1.0	) भवित	141, 146	
भग्तरकाल	\$150	सर्पपारण	11%, 1%3	
<b>अ</b> न्तर्मुहर्त	३२४, ६८०	भगूधकरणदरणक	115	
भनम्त	110	भपूर्वकरणगुणस्थान	141	
धनग्तकाल	\$90	अवदास्तर्ते जनसारी <b>र</b>	<b>%</b> C	
भनग्तव्यपदेश	<b>V</b> Sc	शभितित्	110	
अमन्तानुषम्धी	११६	भभिष्यतिज्ञनन	\$58	
भनर्षित	<b>298, 29</b> 6	गभेद	twy	
थनपर्या	देश	ममूर्व	544	
थनयस्यामसंग	163	भयन	210, 244	
शनाकारोपयीग	398	मयोगी	111	
धनादि	४३६	भएँमन्	1tc	
बनादिमिश्याद्दष्टि	इर्प	<b>अ</b> रच	315	
<b>शतहारक</b>	YCS.	NIX)WIETOT	٠, ٩٩	
थनिवृश्चिकरण -	224, 240		84	
व्यमिष्ट्रीत्तशपदः		मवश्रिप्नयसंग	\$1.0	
<b>मनुष्</b> धि	<b>2</b> 99	वश्रमें समुग्धिन <b>टोड</b>	to	
सतुगम	<b>९, १</b> ६६ ।	भवताहरूलस्य	ć	
अनुसरविमान	२१६, १८६ ।		\$16, \$4, \$4	-
<b>अगु</b> दिदाधिमान	CE. 286, 280, 266		WX, %c	
भनुसंवितासा	<b>131</b> ,	मध्याहताविष्य	4.45	i
भग्योग्याभ्यस्य	१५९, १९१, ६०६ :	भवगारामान	41	
भपश्येष		रक्षिश्च	\$4. Pt	
भपनामणीपनामण		रस्केष	***	
ध्रपत्र मयुट्टु तियम	(40.	भ <b>ष()</b> रकात	6.5%	
	, e		أهجي والكبرياك والمرابي	;
	· ` `		· //	-

7	३२	١
ι	२९	,

( ३२ )	परि	शिष्ट े	
`য়ন্দ্ৰ	पृष्ठ	शब्द	Ą
<b>अवस्त्रासन्न</b>	. ২३	अयंतचतुरस्रक्षेत्र	$\boldsymbol{B}$
अवसर्पिणी		आयतचतुरस्रहोकसंस्था	न ्रेष्
व्यविभागप्रतिच्छेद्		आयाम	१३, १६५, १८१
<b>अविसंवाद</b>	१५८	आरण	१६५, १७०, २३६
अष्टमपृथियी	९०, १६४	आवितका	83
अष्टार्विशातिसत्कार्मिक- ३४९,			३१७, ३४०, ३९१
	३७५, ३७७, ४३९		৩৫
	४४३, ४६१	आदारकसमुद्रात	٠ ٦٤
असङ्गावस्थापनाका <b>ल</b>	३१४		३३६
बसंयम	૪૭૭	आद्वारशरीर	8'1
बर्सयमग्रहुलता	२८	_	
<b>यसं</b> यतसम्यग्दिष्	३५८		
वसंख्येयराशि	३३८		५७, ७१, १९९, ३४१ ३१९
आ		रन्द	
आकादा आकादा	८, ३१९	इन्द्रक	१७४, २३४
<b>या का दाय दे</b> दा	१७६	ξ	
<b>आगमद्भ्यकाल</b>	३१४	<b>ई</b> शान	२३५
<b>बागमद्रश्यक्षेत्र</b>	eq	<b>ई</b> षःप्राग्भारपृथियी	\$\$\$
आगमद्रव्यस्पर्शन	<b>ર</b> ઘર	-	
<b>धागमभाषका</b> ल	३१६	उ	
बागमभावशेत्र	ঙ	उच्छेणी	20
बागमभावस्पर्शन		उत्तानशय्या	कुण्ड १७१
माज्ञाकतिष्ठता		उत्पत्तिक्षेत्र	4.49
भादिस्य		उत्पत्तिशेषसमानशेषान्तर	311
मादेश	१०, १४३, ३२२		189
<b>थादेशनिर्देश</b>	१४५, ३२२		40
भाषार		<b>उत्तराभिगुलकेय</b> ली	10
माधेय		<b>उ</b> ग्सर्विगी	13, 20, 40, 141
<b>बातुपूर्वीनामधर्म</b>		उरमेध	११, २०, ५०, ६१
धानुपूर्वीश्रायोग्यक्षेत्र		उन्संघरति	48
शःतुपूर्व विवास । वाये। ग्य <b>से</b> त		उस्सेघद्दतिगुणित	27.
या रापा		उत्सेषगुणकार	1A
भापन	११, १७२।	इन्सेघयोज्ञन	

	पारिभागिक	शम्दम्ची	(\$ <b>5</b> ,),
शन्द	•মূত্র	<b>अस्य</b>	<del>पू</del> र्व
बासेघांगुल	98, 150,.164	<del>भागान</del>	-
जसेघांगुलममाण		श्चन	<b>{</b> <0
उदयादिनियेक	240		<b>280, 29</b> 9
<b>उद्</b> रतेन	વેલ	र र	
<b>उद्रे</b> ध	रैंड	(५३,क्षत्रायसाह	33.5
उपक्रमणकारः	<b>હ</b> શ, કુર્વ	पक्षवित्रकेशवीचारगुहुत्यात	358
उपमामणकासगुणकार	<b>C4</b>	4.4.42	918
<b>उपपा</b> र	नद, १६६, २०५	धकन।रकावासविष्कस्म	tes
उपचार	२०४, ३३९	रे	
'खपपादकाल	\$29	रेराय <del>ग</del>	
'उपपाद्धेत्र	<b>64</b>		A.4
'उपपाद्धेत्रप्रमाण	184	সী	
• उपपाद क्षेत्रायाम	હર	भाष	S. (89, 211
'उपपादभ्षतसम्मुखपृत्तक्षेत्र	१७२	भोधनिद्धा	tr's \$44
ंडपपादयोग 'डपपादरादि।		भोषप्रस्पना	£'-9.
	31	শ্ব	
'खपपादस्पर्शन अपमालोक	१६५	आ भौदारिकसारीर	
उपमासाद 'डपरिमडपरिमप्रयेयक	रेटर	भारतारकतारार भारतारकतीरम्भम्मद्रस्यरोज	4.4
उपरिमाधिकस्य उपरिमाधिकस्य	- 1	मापचरारकमा <i>दःसद्दश्य</i> द्दश्य	o o
उपारमायबस्य उपरामधेणी	101	<b>z</b> i	
. उपरामसमा उपरामसम्बद्धाः उपरामसम्बद्धाः	१५१, ४४३	र्मग्रह	
	84	र्भे गुरुगणना	10
41414 (144 41415) BE 1	IAN BRE FRAN		•-
<b>खपदास्तव</b> ज्ञात	₹58, 82 <b>३</b>	T.	
<del>दपश</del> ामक	212, WV4.	स्यन स्थारमम्बद्धाः	£44' \$15
<u>'डवार्च</u> दुइलपरिवर्तन	111	। पारसम्बद्धाः । पारसम्बद्धाः	٠,
क्रम्बास	3.5	K(at	44.414
ड		रकताथा	4+1
अपर्यं कवाटच्छे दुसका निष्पन्न	₹ <b>3</b> ₹ •	n <del>d</del>	₹#
<b>अ</b> र्वलोक	9, 2421		<b>9</b> -5
इत्त्वं हो व दो चपाल		म वि∙र	u:
प्रश्वेती क्षयमाण	\$2, ¥1, 41'¢		11
इर्व्यंद्रस		देशकोष	
য		น่ะกะ	3.0
<u>इत्</u> यानि	دو, دو. ۱۰۰ ه	र र्वेद	\$1, 8°
			V 19
,			

(48)	परिशिष्ट 🗀
( \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	11/1/100

शन्द	<b>ह</b> ह	शन्द	8
कर्मभूमिप्रतिमाग	<b>२</b> १४	(क्रोघादा	118
कर्मपुद्रल		कांडक	<b>४१</b> ५
कमें पुद्रलपरियर्तन	200 304	कांडर्जुगति	७८, २१९
कर्माञ्च	8100	कुंडलपर्वत	191
कर्मस्थिति	३९०, ४०२, ४०७		310
कर्मस्थितिकाल	322	क्षपक	ં વૃષ્ણ, ક્ષક
करप		क्षपकथेणी	ત્રરૂપ, ઇજા
<b>फ</b> स्पवासिदेघ		क्षपकश्चेणीमायोग्या <u>ं</u>	
कपाय	30.8	क्षापकसम्यग्हारि	વરાશય . ૧૦૦
कपायसमुद्रात	વદ. શેદદે	क्षायिकसम्यग्हाष्ट्र क्षीणकयाय	बुब्ह, बेर्स
कापिष्ठ	234	क्षाणकपाय श्रुद्रमय	स्वयः र ११ द्वरा
कार्मणवर्गणा	332	शुद्र भव शुद्र मयप्रहण	३७१,३७९,३८८,३९१
कार्मणशरीर	રક, શેરેપ	<b>शुद्रमयप्रदण</b>	# 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
काययोग	39.8		६, दश
कायस्थितिकाल	232	क्षेत्रपरिवर्तन	354
कायोत्सर्ग	40	क्षेत्रपरियर्तनकाळ	334
दाल '	३१८, ३२१	क्षेत्रपरिवर्तनवार	15
कालपरिवर्तन	324	क्षेत्रपारयतम्यार द्वेत्रफल	<b>{</b> cº
<b>कालपरियर्तनका</b> ळ	इदेष्ट	क्षेत्रफलरालाका	194
वालपरिवर्तनवार	358	क्षेत्रफलर्सकलना	રં••
<b>कालसंसार</b>	333	क्षेत्रसंसार	111
कालस्पर्धन	181	के न समार के न स्पर्शन	tyt
काराणु	384	क्षत्र स्परान	`````
<b>कारागुगम</b>	३१३, ३२२	<b>क्षेत्रा</b> तुगम	
• काले <b>।इक्समुद</b>	<b>140, 198, 194</b>	1	ख
बाहा		खातफल	१२, १८१, १८१
<del>ब</del> ुखरील	१९३, २१८		.,
<b>कृतपुग्म</b>	148		ग
. इति		गगन	
<b>क</b> रीक् <b>रण</b>		<b>ਜਵ</b> ਲ	हुन्दू, दर्द हुन्दू
, कृष्णादिमिच्याग्यकास		गण्छराशि	643
बेयरशान	19.8	गण्छसमीकरण	عني عود ا
<u>केवलदर्शन</u>	24.5	नशित	113
केवितसमुद्रान		सम्बिकास्त	1 200
चोराचेरी चेरी	<b>१</b> ५२		10
		गुणकार	123
क्रीपक्षाणका	830	गुणकारशस्त्र स	

	पारिभा	के शन्दस्ची	(-१५)	
चन्द <b>्र</b>	দুষ	शस्द	पृष्ठ	
गुणकारशासकासंकल	ना <sup>.</sup> २०	\$1	-	
<b>-गुणपराकृत्ति</b>	8.9. 830, Ha	। वित्रायुग्दकाल	ਲ ਂ	
गुणस्थितिकाल	12	, । छन्नायुष्ककाल	£23	
-गुणान्तरसंक्रमण	1 12		ভ্ৰ	
-गुहाकाचरित		्रे <sup> </sup> जगप्रतर	१८ ५२, १५०, १५१,	
-गृशीतमहणाद्या	33		१५५, १६९, १८०, १८४,	
गृदीतप्रहणाद्वाशास्त्र ।	ग इं≷्		१९९, २०९, १०२, १३३	
<b>गोमूत्रकग</b> ति	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		to, tc, tcu	
गोरिद्दशेत्र	7	अधन्यायगाद्दना	42, 33	
-शीणभाष	9.01 19.01	अम्बद्धाप	840	
प्रद	ξυ·	जम्बुडीपशेत्र जम्बुडीपच्छेर्नकः	<b>878</b>	
प्रे <b>वेपक</b>	77'	जम्बूडीपदालाका जम्बूडीपदालाका	१५५	
	*4*	जयम्त -	166	
	प	जया	ાત	
<b>घनफ</b> ळ	20	जाति	156	
घनरञ्जु :		जिहे <b>न्द्रिय</b>	103	
<b>घनले</b> क	tc, tcu, 245		. 19.0	
<b>घनलेक्समाण</b>	فره	ज्योतिसम्बद्धानमान	**	
धनांगल	रु, ४३, ४४, ४५, १७८	รนิโด้เต เพลากลร์วา	141	
<b>घरोगुलगुणकार</b>	**	ज्योतिष्यसासादमसा	व १६०	
घनागणप्रमाण	,,	रवर	यामशेष १५०	
घनौगुलभागद्दार	90			
यातशुद्रभयमञ्ज	<b>૧</b> ૧૨		₹	
भागे हिंद्य	298	<b>सहरीसंस्थान</b>	₹₹, ₹₹	
	च			
चसुरिन्द्रिय	29.1		₹	
चतुर्धपृथिषी	أة	तज्ञवसामान्य	1	
चतुर्थसमुद्दशेष -		तद्य्यतिरिक्त बोधायः	इद्देष ३१५	
चतुर्वरागुणस्थाननिबद्ध	. 195	तद्यितिरिक्तनेश्च सम		
चतुरसञ्जलनानानस्य चतुरस्र		तरेबाहरय	<b>₹</b> }	
चतुरस्य चन्द्र	१७८ १५०, ३१९	aict	१५१	
चन्द्र <b>विम्बद्धाला</b> वा	240	तास्त्रभाष	V•	
वित्रा	<b>= 10</b>	तालपुरासंदधाव जिल्ल	१८ ६१	
विभाउपरिमत <b>छ</b>	585	तिर्यक्शेष	1!s	
		3,11		
			e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	

			SIFIZIE
. •		`- '	

तिर्यक्लोक ३७, १६९, १८३ वृद्धेत्र तिर्यक्लोकमाण ४१, १५० वृद्धातकम्बली तिर्यमातिमायोग्याञ्चपूर्व १५६ वृद्धातकम्बली तिर्यमातिम त्रिक्त १५६, १८० वृद्धात्रम तिर्यम्भवत् १९४, २०७ वृद्धात्रम त्रियेव २०० वृद्धात्रम पृतीयपूर्वियो ८९ वृद्धात्रम	हाइ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
तिर्यम्पतिमाणि ४१, १५० दिशतकेषाठी तिर्यम्पतिमाणेग्याञ्चपूर्वी १७६ दिश्वसमुद्रीत १७६ तिर्यम्पति १९६ ११ हत्य १९६१, ३ तिर्यम्पति १९६ १९६ १९६ हत्यकाल १९६ १९६ हत्यकाल	一次の 計画 をならればい
तिर्यमातिप्रायोग्यानुपूर्वा १७६ दंश्यमुद्धांत तिर्यम्प्रतर १११ द्रम्य १९६३, व तिर्यम्बरधानसरधानसेत्र १९४, २०४ द्रम्यकाल तिर्येच २२० द्रम्यकाल पुतीयपूर्वियो ९९	を
तिर्यगणतर १११ द्रन्य १६१, १ तिर्यग्दरधानसरधानसेत्र १९४, २०४ द्रत्यकाल तिर्येच २२० द्रत्यक्षेत्र पृतीयपृथियी ९ ततीयपिर्धार्थाभ्यन्तत्र २२०	報号 電視 電視 電影 電影 でいる でいる でいる でいる でいる でいる でいる でいる
तियम्बरधानसरधानस्त्र १९४, २०४ द्रव्यकाल तियेव २२० द्रव्यक्षम मृतीयपूर्वियी ९ द्रव्यक्षम ततीयपर्विद्योक्षमन्त्रक २२० द्रव्यक्षम	हाइ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
्तियन २२० इच्छोत्र कृतीयपूर्वियी ८९ इंड्यंस्य ततीयपरिधीर्वाकंतन्त्रक ३२० -	्रे इंदेर इंदेर इंदर इंदर इंदर १४१
मृतीयपृथियी ८९ द्वंध्यस्य नतीयपृथियो <i>र्कार्यन्त्रस्य</i> २२५	इंहें इंसे इंकेट ४४८ १४१
नतीयपशिवीक्षप्रमन्त्रनात्रः २०५	इस् २०८ ४२८ १४१
	ર∘ંડ કરડ <b>ર</b> કાર '••
तुनसंगरीर २४ द्वयारवतन	કરડે રકા ',,
.तेजसदारीरसमुदात २७ इंच्यलिंग ४२७, र	₹¥₹ '**
तोरण १६५ ह्वंस्पूर्धन	٠,,
• ६२० प्रवस्त्रात	,,
त्रिकोणक्षेत्र १३ द्रव्यार्थिकनय ३, १४५, १७०, ३	,२२,
त्रितमयाधिकायली ३३२ ३३७,६	844
वैराशिकमम धंट द्रव्यार्थिकमकपणा	48
	•
द प	
दशनमहन्तर इस्य ।	e e
4144	38
दाधान्त २१ वर्गाव	į,
।देवस इंश्जू इंश्जू इंश्जू इंश्जू	
(वर्श) १२६) -	30
हितीयर्दे हरियत ७२ <mark>ज्या</mark>	٧t
हितीयपृथियी ८९ 🖰	
दिर्समेयाधिकायसी : ३३२ न	
314113414110 4(6)444	48
्रष्टप्रान्त २२ नन्दा	15
देवकुद देव-	**
हेरारेच १६ त्रप्रदेशक विभाव	Ct.
क्रेंगकर १०० मिमकाल	1
देवपथ द्वामसंत्र	
द्दानराक ५३।नानरपरान ,,	,
द्दानराष्ट्र ५६/नारक	30.
दैस्य ६८/नारशसर्वावास १० 'दंड ६०/नारशायास	
३० १०   गारकावास	

	. ^ .			
	पारभार	रेक सन्दस्ची	(30)	
शन्द	98	र शन्द		
माही	-	· · ·	<b>१</b> ८	
. गाला निशेष	. 38	८ पर्यायार्थिकमरूपर	TT \$40	
निगोइडीय	۲, (۱۶	<b>!</b>		
निगोद्द्यारी <b>ट</b>		६ पर्व	२०७, २५६	
-निचितकम		८ पस्य .	110	
-निमिप		६ पच्योपम	९, १८५, ३८५ ९, ७७, १८५, ३१७,	
निर्देश	380			
.निःस् <b>र्धा</b> क्षेत्र	९, १४४, ३२३	पस्योपमहातपृथकाः	7 ¥3.5	
निस्सरणाः मकते क्र	্	परयंकासन	86	
· नैकत		पद्यात्रतमिष्यान्य	\$86	
नोमागमद्रध्यकाल् -	३१८	पाणिमुकागति		
ने।भागमद्भवस्यकाल ने।भागमद्भवस्यक्रीन	३१४	पारमाधिकनोकमेटर	त्यक्षेत्र ७	
नो भागमभाधकाल	₹83	।वड	tes	
नोभागमभावकाल नोभागमभावक्षेत्र	315	पुरस्परिवर्तन	₹₹¥, ₹<<, ¥•₹	
, मोबायममाध्यक्तंत्र , मोबायममाध्यक्तंत्र	v	पुद्रसपरिवर्तनकाल	173, 128	
्गानायममायस्पदान - मोकर्मद्रस्य	700	पुरुलपरिवर्तनवार	***	
मोकर्मपर्याप	Ę	पुरलपरियर्तनसंसार	iii	
मोकर्म <u>पुत्रल</u>		पुरकरहीय	₹ <b>९</b> ५	
4144926	३३२	पुष्करहीपार्ध	₹५•	
मोकर्मपुद्र <b>स्परियर्तन</b>	<b>१</b> २५	पुरस्रसमुद	899	
		पुष्पद्रम्स । पे	***	
	4	2-2-2	150	
पदर	३१७, ३९५	[युकाटा	243, 240, 246, 246,	
पद्मग	२१२ 🕽	(पॅकोटीपृथकःय (पॅकोटीपृथकःय (पॉभिमुखकेयली	\$50, \$32, Voo, Voc	
परप्रत्यय	રશ્ય 🖁	(याममुखबादस किमी	4.0	
परमाणु	२१४ <b>१</b> २१ १	।यय। यक्तववितर्कतीयार-	\$1.0	
परमार्थकाल				
परिधि	१२, ४३, ४५, २०२, ६२२	Charles L.	471	
परिधिविष्यस्म	40.61	d Statistics of the	418	
-परिमंडलाकार	*** 44	<b>यमपुराधाद्या</b>	લ	
पर्यन्त पर्याप्त	१९ चंद	शीरा	tac	į
		विद्यपिषंगातिः	100	į
पर्यादित	242	मायोग्यानुपूर्वी	<b>₹</b> •.₹	•
पर्याय	३३० प्रस		253	
पर्यायनय		ोर्च क	₹3¥, ₹₹¥	,
पर्यायार्थिकज्ञन पर्यायार्थिकनय	\$86 ILA	तिथि इस्	205	ï
प्रयाचाचन नय	वे, १४% १७०, १६२, प्रता	रगत्र बला	25	
	बस्त्र  महत	रगतवे पति शेष	44	
			- 19 m	
	•		2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	

शब्द	ye.	राप्ट	ŢĮ.
प्रतरसमुद <del>्धात</del>	•	•	•
मतराकार -		<b>ब्रह्मोचर</b>	रश
मतराव <b>डी</b>	२०४		
	३८९	·	355
નવલાયુલ	१०, ४३,४४,१५१,	·1	84
<del></del>	१६०, १७२	भरत	c
मतरांगु <b>लमाग</b> हार	९८	मयनयासिउपपादक्षेत्र	62
प्रविमाग	८२	मयनयासिक्षेत्र	0.
<b>मत्यक्ष</b>		मयनवासिजगप्रणधि	
मयमपृथियी		मयनवासिजगमूल	£ £3
प्रधमपृथिवीस्वस्थानक्षेत्र	१८२	मवनवासित्रायोग्यातुपूर्वी	430
<b>प्रस्ववस्थान</b>	,,	मयनयासी	१६२
भत्यासचि	3/4/4	मयनविमान	**
प्रत्यासम्बद्धिपाकानुपू <b>र्वी</b> फल	१७५	मथपरिवर्तन	<b>ब्</b> र'ः
प्रधानभाव	. 183	मवपरिवर्तनकाळ	<b>3</b> 33
प्रभापरल	€0	<b>मयपरिवर्तनयार</b>	**
प्रमचापमचपरावर्तस <b>हस्र</b>	রুপ্ত	मधस्यिति	इ३३, ३९८
प्रमाण .	३९६	ਸ਼ <b>ਾਇ</b> /ਰਿਵਾਲ	327, 395
प्रमाणघ्नांगुळ	इंद्रा	TITLE	84.
प्रमाण <b>छो</b> क	122	WITH THE PARTY OF	१४२
प्रमाणराशि	<b>७१, ३४१</b>	मञ्यद्भवस्परान मञ्यनोबागमद्रव्यकाल	348
प्रमाणवाषय		मञ्चराशि मञ्चराशि	338
धमाणांगुङ	४८, १६०, १८५		ડર
<b>भूमेयत्व</b>	188	मान	315
<b>म्येष</b> ्	१९१	मार्ग्य	316
<b>श्र</b> यस्ततेज्ञसद्यरीर	٦٤].	मान्य मायकाछ	3/3
प्रस्तार		मायकाल मायक्षेत्र	1
फ		मायक्षेत्रागम	i
फलराशि		मायपरिवर्तन	233
व			358
बल	₹₹.	नायपरिवर्तनकारु नामपरिवर्तनवार	-
वदायुष्कधात	3/3:	नावपःस्वतनबार गवसंसार	**
धदायुष्यमतुष्यसम्यग्दरि	<b>દ</b> ્	गवमनार 	323
यादरनिगोदमविष्टित	<b>44</b> ?	गयममार गयभ्यतिकाल 	183
यादगस्थिति	३९०, ४०३:	तयस्परांच 	18
वादस्य	12, 24, 202	iu iu	217
<u> थारापंकि</u>	141		6
वंधायरी इ.स.	****	(मि 	tvs
24.44	4 <b>3</b> '4' Ĥ	1	•

	पारिभागिः	प्त शन्दसूची	(३९)
शन्द	£3	शस्द	23
भेदमरूपणा	540	र मिधद्रव्यस्पर्शन	=:
भोगभूमि	201	र मुक्तमारणान्तिक	£83
मोगभूमिप्रतिभाग	15.	- युक्तमारणान्तक - सुक्तमारणान्तिकरा	्र १७५, २३०
भोगभूमित्रतिमागद्वीप	571	- वुक्तमारणाम्तकस्य १ मुक्त	•4
मोगम्मिसंस्थानसंस्थित		मुखमतरांगुङ	१४६
भंग	735 011	. मुख्यवसा <u>त</u> ुळ मुख्यवस्तार	४८
भंगप्ररूपणा		अटुर्न	(3
धमरक्षेत्र		मूल मूल	३१७, ३९०
म	44	मृतावसमास मृतावसमास	१४१
म भरवमक्षेत्रकल			23
मध्यमगुणकार	<b>१</b> ३		५१
मध्यमग्रीतपत्ति	84	रूर्गसंस्थान गुर्गसंस्थान	**
मध्यमधातपास मध्यमयिस्तार	źño	मृदंगाकार -	६२
मध्यमायस्तार मध्यलोक	स्र	Dr.	tt, tt
मध्यलाक स्तुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी		मेदमल केदमल	163
	१७६	मेरपर्यत	208
ग्नुष्यत्येक् प्रमाण ग्नोषोग	ધર		<b>२१८</b>
म्नायाम ररण			9.4
रदण सद्दामतस्यक्षेत्र	, ,,	*******	tte
ग्हामतस्यक्षेत्रस्यानः	25		_ a
हाशुक्त	19		य
।यधमस्य ।यधमस्य	२३५	4H	219
त्तवभस्य तिगद्धाः		यादवितक्षमसंग 	<b>१</b> ८
।।गदा ।।नुपक्षेत्र	368	āa.	210
।।तुपक्षत्र ।।तुपक्षेत्रस्यपदेशाम्यथानुप	005	याग योगनिरोध	¥33
।।तुपक्षत्रव्यपदशान्ययानुप ।।तुपोत्तरपर्यत	10 tot	योगपराष्ट्रशि योगपराष्ट्रशि	141
		याग्य योग्य	¥• <b>९</b>
ा <u>न</u> ुयोचरशैल	640, 464		144
ायादा	265	_	t
गरणान्तिककाल	AS	राजु राजुपछेर्नस	88, 88, 88%, 883
ारणास्तिकदेशेत्रायाम गरणास्तिकरादिः	**	रञ्जूष्य <b>रम्यः</b> रञ्जूषतर	\$44
रणान्तकसादा रणान्तिकसमुद्रात	28, 282	(vgua€ ræ	tue, ter
स्पान्तकसमुद्यात स्त	220, 294		٧٠ <b>૨</b> ١૨
ादेन्द्र	484	रिस <b>ा</b>	\$15
रध्यात्व	111, 14c, 833		848
स्याखादिकारण स्थाखादिकारण	E8 1	FΨ	₹••
ध्यमद्वाद्या	१६९, १६८,	हपम्होप	840
	<i>/-</i>		are a c

( 8ô.)			- परि	रिशिष्टे	
शब्द			ââ	शब्द	źa.
रूपोनायछिका			83	विक्षोभ	. 388
रोहण .				विगूर्वणादिऋदिमाप्त	<b>₹30</b>
री <del>ट्र</del>				विग्र्यमानएकेन्द्रियराशि	a
रंद			,, 16	विग्रह	દ્દક, રેજ
	ਰ			विब्रह्मित	२६, ३०, ४३,८०
<b>स्थिसम्पद्ममुनिवर्द</b>	()			वित्रहगतिनामकर्म	838
			११७	विजय	३१८,३८६
ल्यसत्तम			191	विदिशा	1 438
<b>स्य</b>			410	ਰਿਵੇਟ	8,4
स्यवसमुद			140, 198	Darinarile	**
टयणसमुद्रक्षेत्रफल ———			र९५, १९८	विदेहसंयतराशि विकास	334
सम्तव			२३५	विनादा विन्यासफाम	91
रुगिछिक्रगंति			२९	14·410404	<b>130</b>
रेदगावराष्ट्रति 			४३०, ४३१	विमान	189
रोफ 	_	_	९, १०	विमानतल	223
<b>हो</b> चनाठी	२०,	۷٦,	१४८, १६४	विमानशिखर	201
2			१७०, १९१		3(0
<u>स्थिप्रप्रवसमुदात</u>			વર, કરૂદ		₹⊌'4
स्वित्रदर				विदेशय	88, 84, 883
रोड्यमाण रोडाहारा			१४६, १४७		\$ ( , & ), \si
शास्त्रकारः सोबाहोत्त्रविद्याग				<b>थिकम्मचतुर्माग</b>	ď
रामारामायमाय रोमाचा			44	विष्कम्मयर्गुगुणितरम्ब	
सम्बद्धाः				विष्करमयगंद्रश्युणकरणी	۷۰.
	य		i	[बरकस्मम्बीगुणिनधेणी	(1
eń.			२०, १४६	विष्यामार्थ	111
चर्यम			200	विसयाजन	£13
वर्गमूल			२०२	विस्तार	\$4 \$4
वसनदेश			34.2	विद्यानीयवय	
दर्गमानविशिष्टशेष				विदायोगदिनामकर्म	13
वर्धवनु मन्दिमध्यान्त	राञ			विद्यारयम्यम्यान	28, 22, 261
बर्धिनगाँ छ			₹'5¥	वृत्र	20%
વર્ષ			\$ 50	<i>কু</i> ব	14, 26
वर्षायस्य				वेत्रायन	11, 11
क्षंसरय				वेशमनमंहियन	30
क्ष्यक्षक राज्य			٦,	वरनागमुदान	28, 40, 20, 14
दण्यस् <b>व</b>				वशान्तरमंत्रान्ति	160 231
राषु राधम			11.		શો
4.47			114,	वरंपर	***

	पारिभारि	कि शब्दसूची	(n)
शब्द			(# <b>{</b> )}
200	64	३ शब्द	98 -
वैकियिकसमुद्धात विकास	₹8. 18	६ सस्य -	£0 -
धे जयन्त घरोचन	₹₹९, ३८	सदुक्लमदुबाह	<b>188</b> .
वराचन घरघरेत्र	ં રો	८ सद्भावस्थापनाकाल	१८७
धरधद्य ध्यन्तरदेव		सप्तमपृथियी	३१४
व्यन्तरद्व	१६	र सप्तमपृथियीनारकः;	₹0
<b>ब्यन्तरदेवरादि</b>		समचतुरस्र	<b>१</b> ६३
<b>स्यन्तरदेयसासादम</b>	सम्य <b>र</b> ्धि-	and B(ex	٠. 4
₹1	स्थानक्षेत्र "	समपरिमंडलसंस्थित समय	<b>રે</b> હર
ध्यस्तरायास	१६१, २३।	समय समानजातीय	310, 310
<b>व्यक्षित्र</b>	¥6, 32e	समानजाताय समीकरण	113
<b>ध्ययद्वार</b> काल	310	समाकरण समीकृत	106
ध्याच्यान	७९, १४४, १६५, ३ <i>५</i> १	समाद्यत	48
ध्याघात	Ros	समुद् <u>धात</u> ्	
<b>देवापकः</b>		समुदानकेषाठेजीवप्रदेश समुदानकेषाठेजीवप्रदेश	
<b>व्यास</b>			141
ध्यं जनपूर्याय		ा अभाग्यान्य स्थापानाः सम्प्रदायविरोधारादाः सम्प्रकृतः	<b>१</b> ५८
	য	सम्पन्न व राज्य	340
शत .		सम्यग्मिच्याख सम्यग्मिच्यादाष्ट्र	••
शतसङ्ख	449	सयोगमध्यादाष्ट्र सयोगिकाल	
शतार .	220	सयोगी	14.5
दालाका	V3's U211	तर्यक्षेक्षप्रमाण	334
दालाकासंकलना	04.7 008	वर्षा <b>कारा</b> वर्षा <b>कारा</b>	¥₹
शक्षिपरि <b>धार</b>		વર્ષા થાં વર્ષા પૈસિસ્ટિ	tc .
शालभंजिका	956 2	र्वावसिद्धियान	₹¥•, ₹c3
शुक्र	2 <b>4</b> 4	ग्यायासाद्धावमा <b>न</b>	<t< td=""></t<>
दांखशेत्र	24/6		141
धेणी	98, co 8		<b>534</b>
धेणीवद	138 Dan 6	हानयस्थानसम्बद्धाः सामयस्थानसम्बद्धाः	***
भेरत	1(८ स	<b>अट</b>	
भोत्रेस्ट्रिय	३९१ स		रेण, रेट्य रेट्य, ३१७,
4		***	\$co, \$co
पश्चा	!ea	गरोपमरातप्रयक्ष	Roo' ARF' ACA
पुरूरपणमानिषम	31C. \$25 RI	म्तरोपडमण्यार	5 to
यप्रपृथियी	सा	दशसामान्य	1
	सा	ध्य	19.
<b>4</b>		पक	***
सवित्तद्रम्यस्पर्धन	१४३ ंसा	नमुसार	415
			والمعطوعة المسترين

₹₹,

111	
शब्द	पीर्रिसप्ट
साम्परायिक	पृष्ठ <sub>री</sub> व्द
सारकः	
साधेत्र	३९१ संस्थाननामकर्म
सासाउना	्रा वस्यानां केल्ला
वासाइक्राफ्ट- ०	राष्ट्रास्ट ५७ / ८ ।
सासादनमारणान्तिकर सासादनसम्यक्त	(Simme
सासादनसम्यक्तपृष्टाः सिद्	77 \ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\
सिद्धसेन	₹₹५/ <i>द</i>
सिदार्थ	445/4000
सुगन्धर्य	३१९ स्थापनास्पर्शन
HETTON .	, हियति
सहमस्यक	. 2-1-5-
च्चाँहोत्रफन	३३६ स्पर्शनातुमम
प्यंगुल	१६ स्परानानुगम
ध्पंक्षेत्र	१०, २०३, २१२ स्पर्धानोन्द्रिय १०, २०३, २१२ स्वयंग्रमपर्यंत
ध्यं	र १९२ ह्ययंत्रमपूर्वत
सीयमं	
ener.	
सीपमीवमानशिखरस्य प्रदेह सीपमीवि	२३५ स्ययंत्रमपर्यतोपरिममाग
सीधमादि सीधमादि	२२० स्थयंम्रमणसमुद
411.02	२२० स्थिम्सणसमुद्र १६२ स्थयंभ्रमणसेत्रफल १४४, १९० स्थयंभ्रमणसमुद्रावेस्क्रमम १५० स्थान
राष्ट्रमा	१४४. ३०० स्ययंभरमणा
संबंधयाति	स्यम्यान
संयगतारी	३३८ स्यस्थानक्षेत्रमेलायनियपान स्यस्थानकारमञ्ज्ञायनियपान
संयनासंयत्रत्रसेष	५३ स्वर्यानस्वरम्
CI VICTORIA	१६९ <sup>हयस्थानस्यस्थानसाति</sup>
	३३८ स्यरधानश्चेत्रमेहापनियपान ४५ स्वरधानस्वरधान ४६९ स्वरधानस्वरधानराशि
सं <b>व</b> मासंवम	302
वंशीग	483. 300 (42)
र सर	१४४ हुनारान १९७, १९५ हुनारान
इंग	३१७, ३९% दुनारान
•	१६७, ३९५ हेन्यास १७, ३९५ हेनुयास १७ देमपायाण
	• - दमरायाण





